श्री
प्रतिक्रमण सूत्र

तथा

नवस्मरण अने देववंदनादि जाष्यत्रय.

अर्थसहित.

अने चैत्यवंदन, थोय स्तवन, सद्यायादि युक्त.

आ ग्रंथ

समस्त जैनबंधुउने प्रतिदिन अवश्य उपयोगी

जाणी तेने यथामति संशोधन करीने

श्रावक ज्ञीमसिंह माणकें

श्रीमोहमयी पत्तन मध्यें

निर्णयसागरनामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो छे.

संवत् १९४४ ना ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी. सन १८८८.

प्रस्तावना.

आ प्रतिक्रमण जे छे, ते षडावश्यकरूप छे, तेमां प्रथम सामायिक, बीजो चतुर्विंशतिस्तव, त्रीजुं वंदनक, चोथुं प्रतिक्रमण, पांचमो कायोत्सर्ग अने छठुं प्रत्याख्यान, ए छ प्रकारनी आवश्यकक्रियालक्षणनुं कारिताकरण छे, ते विशेषें करी गृहस्थाश्रमीनो धर्म छे. तिहां संध्याकालने विषे जिनपूजनानंतर श्रावक जे छे, ते साधुनी, पासें अथवा पोषधशालाने विषे जइने प्रतिक्रमण करे, ए प्रतिक्रमण शब्द, आवश्यकविशेषवाची छे, तो पण आहीं सामान्यतायें करी षड्विध आवश्यक क्रियाने विषे रूढ छे. ते छ आवश्यकमध्यें पहेलुं सामायिक जे छे, ते आर्त्तरौद्रध्यानपरिहार रूप धर्म ध्यानकरणें करी शत्रु, मित्र, पाषाण तथा कांचनादिकने विषे समजावरूप छे, माटे प्रारंजमां कह्युं छे, बीजो चतुर्विंशति स्तव, एटले चोवीश तीर्थंकरनां नामकीर्त्तनपूर्वक गुणकीर्त्तन तेनुं कायोत्सर्गने विषे मनमां अनुध्यान होय छे माटे तेने बीजुं कह्युं छे. त्रीजुं वंदनक एटले वांदवा योग्य एवा धर्माचार्यने पच्चीश आवश्यकें विशुद्ध, बत्रीश दोष रहित नमस्कार करवो, ते पण युक्तज छे. चोथुं प्रतिक्रमण ते शुजयोगथकी अशुजयोगने विषे गमन करनारने फरी पाछुं शुजयोगमांज क्रमण करवुं, तेने प्रतिक्रमण कहीयें, एटले मोक्ष फल आपनारा एवा शुजयोगने विषे निःशल्य थवुं तेने प्रतिक्रमण कहीयें. तिहां मिथ्यात्व थवाथी तथा असंयम थवाथी तथा कषाय थवाथी अशुज योग थाय, ते अशुजयोगना विछेदने माटे जे निंदाद्वारें करीने अशुजयोगनिवृत्तिरूप पडिक्कमणुं करवुं, ते अतीत काल विषयिक पडिक्कमणुं जाणवुं, तथा संवरद्वारें करीने वर्त्तमान काल विषयिक पडिक्कमणुं जाणवुं अने अनागतकाल विषयिक पडिक्कमणुं पण संवरद्वारें करीने छे, माटे तेमां पण दोष नथी. ए रीतें त्रिकाल विषयिक प्रतिक्रमण सिद्ध थाय छे, ए प्रतिक्रमणविधि कोइ स्थानकें रूढी, कोइ स्थानकें षडावश्यक क्रियामां घटमान छे, ते प्रतिक्रमण, पांच प्रकारें छे, तेमां एक दैवसिक, बीजुं रात्रिक, त्रीजुं पाक्षिक, चोथुं चातुर्मासिक अने पांचमुं सांवत्सरिक छे. ते पांच प्रकारना प्रतिक्रमणनो विधि यथावकाश

आ पुस्तकमां दाखल कर्यो छे, परंतु वशेषविधि जिज्ञासुजनोयें प्रतिक्रमण हेतुगर्जादिक, अन्य ग्रंथोथकी जाणी लेवुं.

हवे ए प्रतिक्रमण रूप जे षडावश्यक छे, ते दिवस दिवस प्रत्यें उन्नय कालने विषे श्रावकें करवुं अने वली नड्क प्राणीयें तो अन्यासने अर्थें पण करवुं. परंतु एवी रीतनी आशंकाउ करवी नहीं के " जेणें कोइ पण व्रत अंगीकार कर्युं नथी एवा नड्क जीवने व्रतना अतिचारोनो असंन्नव छे, तेम छतां पण तेनी शुद्धिरूप प्रतिक्रमण करवुं, ते तेने अनुचित छे? अथवा तेने ते प्रतिक्रमणना पाठनो उच्चार करवो पण योग्य नथी, तथा जेने व्रतोना अतिचारो लागता नथी, एवा नड्क जीवो जो अतिचार विना पण पाठनो उच्चार करे, अथवा प्रतिक्रमण पण करे, तो तेने साधुना पंच महाव्रतोना अतिचारनो उच्चार करवानो पण प्रसंग थाशे ? " एवी एवी शंकाउ करवी नहीं. कारण के जेम कोइ नड्क जीवने जैनमार्गमां प्रवेश कराववाने अर्थें दीक्षानुं विधान करावीयें छैयें, तेनी पेठें नड्क जीवने प्रतिक्रमण करवुं पण युक्तज छे, जो पण ते नड्क जीवें कोइ व्रत अंगीकार कर्युं नथी तो पण तेवा जीवने ते व्रत करवानुं अश्रद्दधानादिक पणुं तो पूर्वे छेज तेथी तेने ते व्रतोना अतिचारोनो उच्चार करवा थकी अश्रद्दधान विपरीत प्ररूपणादिक विषयनुं प्रतिक्रमण करवुं, तेतो तेणे अंगीकरेलुं ज छे. ते विषे आज पुस्तकना (१५५) मा पेचमां पडिसिद्धाणं करणे इत्यादिवंदितासूत्रनी अडतालीशमी गाथानो अर्थ जोइ लेवो, अने ते माटेज श्रावकनी अगीयार प्रतिमा तथा साधुनी बार प्रतिमा जेणे अंगीकार करेली नथी, एवा साधु मुनिराज पण प्रतिक्रमण करतां " इगारसहिं उवासगपडिमाहिं, बारसहिं निरकुपडिमाहिं " एवी रीतनो पाठ नणे छे, परंतु ते प्रतिमा ते साधुयें कांइ अंगीकार करेली होती नथी, तेथी तेना अतिचारोनो असंन्नव छतां पण तेनो पाठ नणे छे. तेम नड्कने पण व्रतना अतिचारनो असंन्नव छतां पण तेनो पाठ नणवामां असंबंधपणुं कांहि नथी, कारण के नगवानें पण एक व्रतना अंशने अंगीकार करनार श्रावकथी मांमीने संपूर्ण बार व्रत पर्यंतने अंगीकार करनारा श्रावकोने वास्ते एकज प्रकारनुं प्रतिक्रमण कहेलुं छे, परंतु प्रत्येक व्रत वालाने वा

स्ते जूडुं जूडुं प्रतिक्रमणसूत्र बांधेलुं नथी, अने जो जद्रक जीवने प्रतिक्र मण करवानी प्रजुनी आज्ञा न होत तो जूदां जूदां एकादिक व्रतोना धारक श्रावकोने माटे पण जूदां जूदां प्रतिक्रमण करवां जोतां हतां, परंतु तेतो कह्यां देखातां नथी. प्रतिक्रमण सूत्र तो मात्र साधु अने श्रावक ए बे आश्रयीज डे, ते पण एटला वास्ते जूदां डे, के अणुव्रत वाला साधुने जे वातनी मनाइ करेली डे, तेवी वातोनुं जे श्रावकें आचरण करवुं, तेनो प्रपंच कहेवा सारु श्रावकनुं प्रतिक्रमण जूडुं डे, तेथी ते विशेषें करी श्रावकने घणुं उपयोगमां आवे तेवुं डे ते माटे श्रावकना प्रतिक्रमणें करीनेज श्रावक प्रतिक्रमण करे डे, अहीयां घणा हेतु तथा दृष्टांतो डे, परंतु प्रस्तावनाना विस्तारजयथी अधिक विलेखन कर्युं नथी, माटे कोइ पण प्रकारनी आशंका कस्या विना जद्रक जीवें पण षडावश्यक रूप प्रतिक्रमण,प्रतिदिवस उजय कालें अवश्य करवुं; एज महानंदनो हेतु डे. किं बहु विलेखनेन.

विज्ञापना.

आ पंचप्रतिक्रमण सूत्र नामक पुस्तकनी त्रीजी आवृत्ति डापी प्रसिद्धतामां मूकतां सर्व सज्जन विद्वज्जनोनी समक्ष हुं सविनय प्रार्थना करुं बुं के, आ तृतीयावृत्तिमां यद्यपि नवी प्रस्तावना लखवानी जरूर हती, तथापि प्रस्तावनामां जे कांइ ड आवश्यकनुं सामान्यथी स्वरूप दर्शाववुं जोइयें, तेटलुं स्वरूप प्रथमनी, प्रस्तावनामांज दर्शावेलुं होवाथी फरी नवीन प्रस्तावना न लखतां पूर्वेनीज कायम राखीने जे कांइ न्यूनाधिक लखवानी जरूर डे, ते आहीं विज्ञापनामांज लखुं बुं.

बीजी आवृत्तिमां जे जे सूत्रां अर्थ सहित डपेलां हतां, ते सर्व सूत्रां अर्थसहित सुधारीने आ आवृत्तिमां डाप्यां डे, तथा प्रथमादिवृत्तिमां मन्ह जिणाणंनी सञ्चायना अर्थ डापवा रही गया हता ते पण आ ग्रंथमां डाप्या डे. वली जेम ए नवकार, पंचिंदि तथा इरियावहियी मांमीने यावत् जेटलां सूत्रां अर्थसहित डपेलां डे, ते सर्वे श्रावक जाइउने सांऊ सवारना पडिक्कमणानी क्रियामां हरहमेश उपयोगी डे, तेमज देववंदन, गुरुवंदन अने पच्चरकाण, ए त्रणे जाष्य पण सर्वे साधु श्रावकने प्रतिदिन अवश्य उप

योगमां आवे तेवा छे,केम के ए त्रणे जाष्योनो अनुक्रम,साधुश्रावकनी क्रियाने अनुसरतो छे. जेम के पहेला जाष्यमां श्रीजिनेश्वरना देरासरने वंदन करवा नो सविस्तर विधि कह्यो छे, अने बीजा जाष्यमां श्रीगुरु महाराजने वंदन करवानो सविस्तर विधि कहेलो छे, तथा त्रीजा जाष्यमां कर्म परिशाटनने अर्थे साधु तथा श्रावकने नवकारसि आदिक पच्चरकाणो नित्य प्रत्यें करवा नी आवश्यकता छे, तेनो सविस्तर विधि कहेलो छे, माटे ए त्रणे जाष्य पण सर्व कोइने अवश्य खपमां आववा योग्य होवाने लीधे उपयोगी छे, परंतु ते जाष्यो बीजी आवृत्तिमां छपायां न हतां माटे ए जाष्यो, सविस्तर अर्थसहित आ पुस्तकना पृष्ठ ३७४ थी मांमीनें पृष्ठ ५१२ सुधी पृष्ट १२७ मां छाप्यां छे. ते जाष्योनी अनुक्रमणिका यद्यपि विशेष विस्तार पूर्वक करी नथी, तो पण प्रत्येक जाष्यनां जेटलां द्वार बांधेलां छे, तेटलां द्वारोनी अनुक्रमणिका संक्षेपथी बीजा ग्रंथोनी अनुक्रमणिकानी साथें करेली छे.

वली द्वितीयावृत्तिना प्रतिक्रमणमां पृष्ठ ४९६ मूलनां छे, तथा टाइट लपेच, प्रस्तावना अने अनुक्रमणिकाना मली शोल पेच छे, सर्व मली ५१२ पृष्ठ थयेला छे अने आ तृतीयावृत्तिमां उक्त त्रण जाष्यनो बालाव बोध वधारे छापवाने लीधे मूलना पेचमां वधारो थवाथी ६०० पृष्ठ मूल नां तथा टाइटल, प्रस्तावना अने अनुक्रमणिकामां पण वधारो थवाथी तेना चोवीश पेच थयेला सर्व मली पेच ६२४ थया माटे प्रथमना प्रतिक्र मण करतां आ प्रतिक्रमणमां पृष्ठ ११२ नो वधारो थयो छे.

मुहपत्तिनी पच्चीश पडिलेहणा तथा शरीरनी पच्चीश पडिलेहणा तथा देववांदवाना बार अधिकार, इत्यादि वातो सर्व जाष्यमां सविस्तर छपाइ ग याथी आमां जूदी छापी नथी तथा जूदी जूदी एकवीश सज्झाउ अने चार पां च स्तवन एमांनां केंटलांएक बीजुं दोढ रूपैयानी किम्मतनुं मूलपाठे प्रति क्रमण छाप्युं छे,तेमां छपाइ गयाथी आमां दाखल कर्यां नथी. तथापि जा ष्य त्रण छापवाथी आ ग्रंथ आगलना पुस्तकथी घणो महोटो थवा आ व्यो छे तेथी किम्मतमां जेटलो वधारो करवो जोइयें तेटलो कर्यो नथी.

आ पुस्तकमां नवकार, पंचिंदि तथा इरियावहि सूत्रथी मांमीने देवसि कादिक पांचे प्रतिक्रमणोमां जे कांइ सूत्रां बोलाय छे, ते सर्व सूत्रां घणा ज विस्तरित अर्थ सहित दाखल करेलां छे, तथा नवकारसी आदिक पच्च

स्काणो अर्थसहित, तेमज अजितशांति स्तवनादि नव स्मरण अर्थ सहित, तेमज बीजां पण चैत्यवंदनो, थुइउ, स्तवनो, सज्झाउ, गौतमस्वामिना रास आदिक जे जे घणाज अवश्योपयोगी प्रकरणो छे, ते सर्व यथामति संशोधन करीने छापेलां छे, तेनुं विशेष वर्णन अहींयां लखवाने बदले गुणीजनोने आ संपूर्ण ग्रंथ फुरसद लइने वांची जवा नीज हुं प्रार्थना करुं छुं.

तेमज आ ग्रंथमां केटला एक पडिक्कमणा संबंधि सूत्रोना अर्थ छाप्या छे, तेमां वांचनार सज्जनोने संस्कृतनो बोध थवा सारु तथा ते पदोनो अर्थ स्पष्ट समजाय एवा हेतुथी प्रथम मागधी शब्दोना संस्कृत शब्दो करीने पछी तेनो प्राकृतमां अर्थ लख्यो छे, वली जे ठेकाणे कोइ वांचनार जनने आशंका उत्पन्न थवा योग्य कथन आवेलां छे, ते ठेकाणे ग्रंथांतरथी जोइने तेवी केटलीएक आशंकाउनुं निवारण पण करेलुं छे.

तथा प्रतिक्रमण करवानो विधि वगेरे महान् ग्रंथोना अनुसारथी बीजी रीतें लखी, तेमां शब्दोनी रचना जूदी रीतें करीने तैयार कस्यो हतो, परंतु प्रथमना घणां एक पुस्तकोमां जे विधि छपाइ गयेलो छे, तेथी ते केटली एक रीतें साधारण जनोने समजवामां अवगड पडवाना जयथी छाप्यो नथी, तथा पडिक्कमणामां अमुक सूत्र पछी अमुक सूत्र कहेवाय छे, तेनां कारणो दर्शावनारो तथा एवीज रीतें बीजी पण केटलीएक बाबतोने दर्शावनारो एक थोकडो बनावी राख्यो हतो पण तेनी सुमारे बे हजार श्लोक संख्या होवाथी आग्रंथ,अतिगौरवने पामतो देखवामां आव्यो माटे ते जेम बीजी आवृत्तिमां छपायो नही तेम आमां पण छपायो नही.

तथा प्रतिक्रमणनां छए आवश्यक उपर सात नयादिक नव द्वार उतारवां जोइयें. तेने बदले जूलथी आगलना पडिक्कमणामां जेम चार प्रमाणनुं एक द्वार रही गयुं छे, तेम आमां पण रही गयुं छे तथा तेवाज प्रकारनी आगलनी बीजी आवृत्तिना पडिक्कमणामां सुधारो करतां वली बीजी कोइ नवीन जूलो पण बुद्धिदोषादिकना सद्भावें महाराथी अवश्य रहीउ हशे, तेमज समेतशिखर जिनवंदियें ए स्तवन (५३५) मा पेचमां छपायुं छे तेम छतां जूलथी फरी पाछुं (५६०) मा पेचमां पण छपायुं छे, ए दृष्टिदोषथी पुंनरुक्ति थइ छे तथा बीजे पण केटले एक ठेकाणे ऱ्हस्व,

दीर्घ, कानो, मात्रा, अनुस्वार वगेरेनी चूक तथा अक्षरादिक न्यूनाधिकनी भूल चूक मनुष्यमतिथी आ आवृत्तिमां पण अवश्य रहेली हशे, तथा म्हारी मंदबुद्धिना प्रभावथी क्यांहीएक अर्थमां पण अशुद्धता रहेली हशे, किं बहुना ? म्हाराथी आ ग्रंथ छापतां जे कांइ जिनवचन विरुद्ध छ पायानी आचरणा थइ होय, ते संबंधि म्हारो जे कांइ सूक्ष्म, बादर अपराध थयो होय, ते सर्व अपराधनुं दुष्कृत, आ पुस्तक वांचनारा साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकाना संघ समक्ष हुं मिथ्या करुं छुं, अने तेमनी पासेंथी ते अपराधनी हुं क्षमा मागीने वली हुं प्रार्थना करुं छुं के आ पुस्तकमां म्हाराथी थयेली भूलो ते साहेबोएं सुधारीने वांचवी ॥

श्री

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श

ष स ह क्ष ज्ञः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः

घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः

ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू	ङे	ङै	ङो	ङौ	ङं	ङः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ञ	ञा	ञि	ञी	ञु	ञू	ञे	ञै	ञो	ञौ	ञं	ञः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः

न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः

प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः

फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः

ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ बं बः

भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भं भः

म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः

य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः

र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः

ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः

व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः

श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ शं शः

ष षा षि षी षु षू षे षै षो षौ षं षः

स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः

ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः

क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः

ज्ञ ज्ञा ज्ञि ज्ञी ज्ञु ज्ञू ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः

अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका.



अनुक्रमांक.	ग्रंथोनां नाम.	पृष्ठांक.

देववंदनादि भाष्यत्रयानुक्रमणिका.

अनुक्रमांक. ग्रंथोनां नाम. पृष्ठांक.

अथ स्तवनोना समुदायनी अनुक्रमणिका.

॥ अथ सद्यार्ठनी अनुक्रमणिका ॥

अथ संधिसूत्राणि।

सिद्धो वर्णसमाम्नायः। तत्र चतुर्दशादौ स्वराः। दश समानाः। तेषां द्वौ द्वावन्योन्यस्य सवर्णौ। पूर्वो ह्रस्वः। परो दीर्घः। स्वरोऽवर्णवर्जो नामी। एकारादीनि संध्यक्षराणि। कादीनि व्यंजनानि। ते वर्गाः पंचपंच। वर्गाणां प्रथमद्वितीयौ शषसाश्च घोषाः। घोषवन्तोऽन्ये। अनुनासिका ङञण नमाः। अन्तस्था यरलवाः। ऊष्माणः शषसहाः। अः इति विसर्जनीयः। अं इत्यनुस्वारः। पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौ पदम्। अस्वरं व्यंजनम्। परं वर्णं नयेत्। अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत्। लोकोपचाराद्ग्रहणसिद्धिः। इति संधिसूत्रेषु प्रथमश्चरणः॥ १॥

॥ श्रीगोडीपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ अथ ॥

श्रीपंचप्रतिक्रमणादिसूत्राणि सार्थानि प्रारंभः



तत्र

॥ प्रथमं नवकारमांगलिकरूपम् ॥

॥ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्व साहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति नमस्काराः ॥ १ ॥

अर्थः—हवे प्रथम सर्व मांगलिकनुं मूल, श्रीजिनशासननो सार, अगीआर. अंग अने चौद पूर्वनो उद्धार, सदैव शाश्वत एवो श्रीपंच परमेष्ठिने नमस्काररूप महामंत्र श्रीनवकार छे, तेनो प्रारंभ करीयें छैयें. त्यां प्रथम श्री अरिहंतपदनुं मंगल वर्णवीयें छैयें. (णमो अरिहंताणं के०) नमोऽरिहद्भ्यः एटले (अरि के०) रागादिक वैरी प्रत्यें .(हंताणं के०) हणनार एवा, बारगुणें करी सहित समवसरणने विषे बिराजमान विहरमान तीर्थंकर जे श्री अरिहंत, ते प्रत्यें (नमो के०) नमस्कार थाउ. एनो सविस्तर अर्थ कहे छे.

इहां नमः ए नैपातिक पद छे. ते द्रव्य तथा भावना संकोचने अर्थें छे. कहेलुं छे के " नेवाइयं पयं दव्वं भावसंकोयण पयत्थो " माटें नमः ए पद वडे, कर, चरण अने मस्तके करी सुप्रणिधान रूप नमस्कार थाउ. एटले कर शिर अने पादादिकनुं जे हलन, चलन ते द्रव्यसंकोच जाणवो. अने विशुद्ध मननो नियोग ते भावसंकोच जाणवो. एटले द्रव्य अने भावथी नमस्कार थाउ, एम कह्युं. एवो नमस्कार कोने थाउ? तोके अरिहंतादि प्रभुउने नमस्कार थाउ. अहिंआं जूदा जूदा त्रण पाठ छे. एक ण

मो अरहंताणं, बीजो णमो अरिहंताणं, त्रीजो णमो अरुहंताणं. ए त्रणे पाठना भिन्न भिन्न अर्थो कहे छे.

प्रथम (णमो अरहंताणं के०) नमोऽर्हद्भ्यः जे अतिशय पूजाने अर्हंति एटले योग्य छे ते अरहंत कहियें. अर्थात् अमरवरनिर्मित एवा अशोकादि आठ माहाप्रातिहार्यरूप पूजानें जे योग्य छे, तेने अरहंत कहियें. ए विषे आवुं वचन छेः—“अरहंति वंदण नमं, सणाइ अरहंति पूअसक्कारं ॥ सिद्धिग मणं च अरहा, अरहंता तेण वुच्चंति ॥१॥” ए माटें तेउने नमस्कार थाउ.

तथा अरिहननात् अरहंत एटले संसाररूप गहनवनने विषे अनेक दुःखोने पमाडनार एवा मोहादिक शत्रुने हणवा थकी अरहंत कहीयें. तथा रजोहननात् अरहंत एटले जेम वादलां, सूर्यमंडलने ढांकी मूके छे, तेम आत्माना ज्ञानादिक गुणने ढांकी मूके, एवां चार घातिकर्मरूप रज, तद्रूप शत्रूने हणवाथकी अरहंत कहियें. तथा रहस्याभावत् अरहंत एटले दूर थयुं छे निरवशेष ज्ञानावरणादि कर्मनुं पारतंत्र्य जेने विषे अने न हणाय एवुं अद्भुत केवल ज्ञान अने दर्शन, तेणें करी निरंतर प्रत्यक्षपणे करी जाणनारा एवा भगवानने रहस्यनो अभाव छे एटले जेनाथी कांइ छानुं नथी माटें अरहंत कहियें. आ अरहंत पदना त्रणे अर्थ, पृषोदरादिनी पेठें. सिद्ध थाय छे. ए माटे तेउने नमस्कार थाउ.

अथवा (अ के०) अविद्यमान छे (रह के०) एकांत रूप देश अने (अंत के०) मध्यभाग गिरि गुफादिकनो जेने एटले समस्त वस्तुसमूहग तप्रछन्नपणाने अभावें करी अरहोंतर कहीयें, अर्थात् सर्वविदित पणुं छे जेने एवा अरहोंतर भगवान् तेउने नमस्कार थाउ.

अथवा (अ के०) अविद्यमान छे एटले नथी (रह के०) रथ जे स्यं दन ते सकल परिग्रह उपलक्षणभूत जेने अने (अंत के०) विनाश एटले विनाशना करनारा जे जरादि उपलक्षणभूत ते जेमने अविद्यमान छे माटे अरहांत एटले अरथांत कहीयें, एवा अरहांत प्रभुउनें नमस्कार थाउ.

अथवा अरहयद्भ्यः एटले प्रकृष्ट रागादिहेतुभूत एवा मनोज्ञ अने अमनोज्ञ जे विषय तेना संपर्कथकी पण वीतरागादिक जे पोतानो स्वस्वभाव छे, तेने छांमता नथी, तेमाटें अरहंत कहियें. एवा अरहंत प्रभुउने नमस्कार थाउ. यतः “ थुइ वंदण मरहंता, अमरिंदनरिंदपूयमरहंता ॥

सासयसुहमरहंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥१॥" ए प्रथम पदनो अर्थ थयो.

हवे (णमोअरिहंताणं के०) नमोऽरिहद्भ्यः ए बीजा पदनो अर्थ करे छे. त्यां (अरि के०) आठ कर्मरूप शत्रुने (हंताणं के०) हणनारा एवा श्रीअरिहंत प्रत्यें नमस्कार थाउ. ए विषे आवुं वाक्य छे "अठविहं पिअ कम्मं, अरिभूयं होइ सयलजीवाणं ॥ तं कम्ममरिहंता, अरिहंता तेण वुच्चंति ॥ १ ॥" ए गाथानो भावार्थः—आठ प्रकारनां जे कर्म छे, ते सर्व जीवोने अरिभूत एटले वैरीरूप छे, एवा कर्मरूप वैरीने हणनार छे, माटे अरिहंत कहेवाय छे. ते प्रत्यें नमस्कार थाउ.

तथा अरिहंतना सहायथी मोक्षरूप नगरने पमाय छे. माटे सार्थवाहनी उपमा, तथा एमना आश्रयथकी भवसमुद्रनो पार पमाय छे, माटे निर्यामकनी उपमा तथा प्राण, भूत, जीव अने सत्व, ए चार प्रकारना जीवोने माहण माहण एवो शब्द कहे, माटे सर्व जीवो उपर कृपा छे, तेथी निर्वाणरूप वन प्रत्यें पहोचाडे छे माटे महागोपनी उपमा, ए त्रण उपमा सार्थक छे. ते श्री अरिहंतनेज छाजे छे. एवा श्रीअरिहंतने ए सर्व जीवलोकने विषे लोगुत्तम भावे करी तेमज नमस्कार थाउ.

तथा, राग, द्वेष, परिसह, उपसर्ग, एटलाने जे नमावे एटले पांचे इंद्रियना त्रेवीश विषय, चार कषाय, बावीश परिसह तथा आत्मोत्थित अने परकृत एवी बे प्रकारनी वेदना अने अनुलोम तथा प्रतिलोम, एवा बे प्रकारना उपसर्ग इत्यादिक शत्रुने हणनार तेमाटे अरिहंत कहियें. ते प्रत्यें नमस्कार थाउ. एवा अरिहंतने मन, बचन अने कायानी एकाग्रतापणे नमस्कार करतो थको जीव, भवनां सहस्रो थकी मूकाय, भावसहित नमस्कार करतो थको बोधिना लाभने पामे. ए बीजा पदनो अर्थ थयो.

हवे (णमोअरुहंताणं के०) नमोऽरुहद्भ्यः ए त्रीजा पदनो अर्थ कहे छे. तिहां अरुहद्भ्यः अहीं (रुह् बीजतंतुसंताने) ए धातुनुं रुह पद छे एटले क्षीणकर्मबीजपणा थकी जेमने फरी संसार मध्यें (रुहंत के०) उपजवुं (अ के०) नथी एटले अरुहंत कहियें अर्थात् बीजनुं विस्तारपणुं नथी. हवे कोइ पण भव करवो नथी माटे अरुहंत कहीयें, उक्तं च "दग्धे बीजे यथात्यंतं, प्रादुर्भवति नांकुरः ॥ कर्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति भवांकुरः ॥ १ ॥" अर्थः—जेम कोइ बीज छे ते अत्यंत पणे अग्नि

यें करी बल्युं होय, तेने वाव्यां थकां तेनो अंकुरो प्रगट न थाय, तेम अहीआं पण कर्मरूप बीजे करी फरी संसार मध्यें अवतार रूप अंकुरो ऊगे ले, ते कर्मरूप बीजने बाल्या थकी संसाररूप अंकुरो प्रगट न थाय, नवा नव न करे माटे अरुहंत कहीयें. एवा अरुहंतने नमस्कार थाउ.

एवा लक्षणोवाला नगवानने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे ले. महानयंकर जे आ नवरूप गहनवन तेने विषे च्रमण करवाने बीक पामेला एवा जीवोने अनुपम आनंदरूप जे परम पद तडूप जे नगर, तेना मार्गने देखाडवापणानुं परमोपकारीपणुं ले जेने विषे तेमाटे तेने नमस्कार करवो योग्यज ले. अहीआं नमः शब्दना योगथी व्याकरणरीतिथी चतुर्थी विनक्ति जोइयें, ते लेकाणे जे षष्ठी ले ते प्राकृतसूत्र थकी प्राकृत शैलीना वश थकी ले, तेमां षष्ठीनुं बहुवचन ले ते अद्वैतव्यवछेदेकरी अर्हद्बहुत्वना ख्यापनने माटे ले. तथा विषय बहु पणायें करीने नमस्कार करनारने फलातिशय ज्ञापनने माटे ले, ए श्रीअरिहंतने चंड्रमंमलनी पेरे श्वेतवर्णे ध्यायियें. ए नावमंगल करतां पंच परमेष्ठिपदमां प्रथम अरिहंत पदनुं मंगल वर्णव्युं॥ ए पहेली संपदा एक पदनी थइ. संपदा एटले ज्यां अर्थसमाप्तिनो अधिकार होय, ते संपदा जाणवी; तथा ज्यां विशामो लश्यें, ते विशामाना स्थानकने संपदा कहियें. एम सर्वत्र जाणवुं ॥१॥

हवे बीजुं सिद्धपदनुं मंगल वर्णवे ले. (णमोसिद्धाणं के०) नमः सिद्धेन्यः अहीआं (सित् के०) बद्ध एटले चिरकालनो बांधेलो एवो जे अष्टकर्मरूप काष्ठनो नारो, तेने जाज्वलमान शुक्लध्यानरूप अग्नियें करी जेणे (ध्मातं के०) धम्यो ले बाल्यो ले नस्म कीधो ले तेने निरुक्तिना विधि प्रमाणे सिद्ध कहीयें. एवा सर्व सिद्धने महारो (णमो के०) नमस्कार होजो. अथवा षिधु धातु, गतिने अर्थें ले, ए वचनथी अपुनरावृत्तियें एटले पाछुं न अवाय एवी रीते मोक्ष नगरी प्रत्यें गया, ते सिद्ध कहेवाय, अथवा निष्ठितार्थ थया ते सिद्ध, अथवा शिक्षा करनार शास्त्रकथक थया, ते सिद्ध अथवा शासनने प्रवर्त्तावनार थइने सिद्धरूप मांगल्यपणा प्रत्यें अनुनव्या ते सिद्ध कहीयें. अथवा नित्य अपर्यवसित अनंत स्थितिने पामवा पणा थकी सिद्ध कहीयें अथवा जेनाथी गुणोनुं समूहपणुं नव्य जीवोने उपलब्ध थाय ले माटे सिद्ध कहियें, ए विषे आ वचन प्र

माण छे, "ध्मातं सितं येन पुराणकर्म्म, योवा गतो निर्वृतिसौधमूर्ध्नि ॥ ख्या तोऽनुशास्ता परिनिष्ठितार्थो, यः सोऽस्तु सिद्धः कृतमंगलो मे ॥१॥" ए श्लो कमां उपर जेटलां सिद्धनां लक्षणो कह्यां, तेटलांनो समुच्चय, वर्णनरूपें छे.

ए सिद्ध परमात्माने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे छे, ए वि नाशरहित एवो अनंत चतुष्क एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा वीर्य, ए गुणो जेउने प्रगट थया ते ज्ञानदर्शन सुखवीर्यादिक गुण युक्तपणे करी स्वविषय प्रमोदप्रकर्ष उत्पादनें करी आनंद उत्पादन करवाने लीधे नव्य जीवोने अत्यंत उपकार हेतु पणुं छे माटे ते सिद्धने नमस्कार, करवा योग्य छे. ए श्रीसिद्ध नगवानने उगता सूर्यनी पेरें रक्तवर्णें ध्यायियें. एवा सिद्धने नमस्कार करतां पंच परमेष्ठि मंगलमां बीजुं मंगल जाणवुं. ए बी जुं पद अने बीजी संपदा थई ॥ २ ॥

हवे आचार्यपदनुं त्रीजुं मंगल कहे छे. (णमो आयरियाणं के०) नम आचार्येभ्यः आ एटले मर्यादायें तद्विषय विनयरूपें करी चर्यते एटले से वियें अर्थात् जिनशासनना अर्थनी उपदेशकतायें करीने, ते उपदेशकता नी आकांक्षा करनारा जीवो जेने सेवे छे तेने आचार्य कहीयें. तेने (णमो के०) नमस्कार थाउ. उक्तं च " सुत्तब विक्लखकण, जुत्तो गब्स्स मेढि नूउ अ ॥ गणतत्ति विप्पमुक्को, अबं वाएइ आयरिउ ॥ १ ॥

अथवा ज्ञानाचारादिक पांच प्रकारनो आचार, अथवा आ एटले म र्यादायें चार एटले विहार ते आचार एवा आचारने पालवामां पोतें साधु एटले नला चतुर छे तथा प्रकर्षें करी बीजाने ते आचार पलाववानो उ पदेश कहेवाथकी तथा उत्कृष्ट पणे बीजा साधु प्रमुखने ते आचार देखा डवाथकी आचार्य कहीयें. उक्तंच ॥ " पंचविहं आयारं, आयरमाणा त हा पयासंता ॥ आयारं दंसंता, आयरिया तेण वुच्चंति ॥ १ ॥ "

अथवा (आ के०) ईषत् एटले अपरिपूर्ण जे (चार के०) हेरिक एटले शिष्य ते आचार ते चारकल्प कहियें. एटले युक्तायुक्त विनाग निरू पण करवामां अनिपुण एवा विनेय जे शिष्य तेने विषे (साधु के०) न ला यथार्थ शास्त्रार्थ उपदेशकपणें करीने ते आचार्य कहेवाय छे.

एवा आचार्यने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे छे. आचारनो उपदेश करवाथकी परोपकारीपणुं जेमने प्राप्त थयुं छे तथा छत्रीश छत्रीशी

गुणें करी सुशोभित, युगप्रधान, सर्वजनमनोरंजक, जगज्जीवमां जव्य जी वने जिनवाणीनो उपदेश आपी प्रतिबोधिने कोइने सम्यक् पणुं पमाडे ले, कोइने देशविरतिपणुं पमाडे ले, कोइने सर्वविरतिपणुं पमाडे ले तथा कोइएक उपदेश सांजलीने जइकपरिणामी थाय ले. एवा उपकारना कर नार, शांत मुइाना धारक, क्षणमात्र पण कषायें ग्रसित न होय माटें ते प्रजुउ, नमस्कार करवा योग्य ले.

वली ते आचार्य नित्यें प्रमादरहित थकां अप्रमत्त धर्मना कथक ले. वली राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, जक्तकथा, सम्यक्त्वढिलणीया अने लठी चारित्रढिलणीया, एवी विकथाना वर्जक ले. वली अमल अमायी ले. तथा सारणा, वारणा, चोयणा, अने पडिचोयणादिकें करी शिष्यादिकने प्रवचननो अन्यास करावनारा ले अने साधुजनने क्रिया धरावता थका ले. वली जेम सूर्य अस्त थयां गृहने विषे घटपटादिक पदार्थ न देखाय; पली दीपकथकी सर्व पदार्थ दृष्टिगोचर आवे, तेम अहिंआं केवलज्ञान जास्कर समान श्रीतीर्थंकरदेव मुक्ति गया थकां त्रण जुवनना पदार्थना कथक दीपकसमान एवा श्रीआचार्य ले, एवा श्रीआचार्यने जे जव्य प्राणी निरंतर नमस्कार करे, ते प्राणी धन्य जाणवा, तेमने जवनो क्षय तुरत थाय. वली ते आचार्य प्रजुउयें कृपा करीने जे हितनां वचन कह्यां होय, ते वचनोने हृदयथी अणमूकतो थको रहे, ते प्राणी विशेषे शुद्धिसहित जलो आचारवंत थाय. ए श्रीआचार्यने सुवर्णवर्णे ध्यायियें. एवा आ चार्यने नमस्कार करवाथी पंचपरमेष्ठिमंगलमां त्रीजुं मंगल जाणवुं ॥ ए त्रीजुं पद अने त्रीजी संपदा थइ ॥ ३ ॥

हवे उपाध्यायपदनुं चोथुं मंगल वर्णवे ले. (णमो उवज्झायाणं के०) नम उपाध्यायेन्यः (उप के०) समीप रह्या तथा आव्या एवा जे साधु प्रमुख ते प्रत्यें जे (अज्झाय के०) अध्याय एटले सिद्धांतनुं अध्ययन करावे, तथा जेनी समीपें आवी अधीयते नाम जणाय ले ते उपाध्याय कहियें. ते जणी (णमो के०) नमस्कार थाउ.

अथवा जेना उप समीपमां आधिक्येन गम्यते एटले अधिकपणायें जवाय ले, अथवा इक् स्मरणे एवा धातुना अर्थमां स्मरण कराय ले सूत्र थकी जि नप्रवचननुं जेथकी ते उपाध्याय कहियें. ए विषे आवुं प्रमाण ले. " बार

संगो जिणरकाउ, सद्याउ कहिउ बुहेहिं ॥ तं उवइसंति जम्हा, उवद्यायाा ते ण वुच्चंति ॥ १ ॥ अर्थः—द्वादशांगी, श्रीवीतरागें अर्थथी जांखी अने गण धरें सूत्रथी गुंथी, तेनो सद्याय करवो. ए रीतें बुध एटले पंमितें कह्युं ते जे कारण माटें ते द्वादशांगीने उपदेशे, ते कारण माटे ते उपाध्याय कहियें.

अथवा " उत्ति उवउंग करणे, जत्ति ज्झाणस्स होइ निद्देसे ॥ एएणहुंति उज्झा, एसो अन्नोवि पज्झाउ ॥ १ ॥ अर्थः—उकार जे ले, ते उपयोग कर वाने अर्थे ले,तेथी (उ के०) उव थयो अने उव पढी जज्झो ले, ते जकार वर्णे ध्याननो निर्देश कह्यो ले. एम उ अने ज ए बे अक्षर थकी उवज्झाय पद थाय ले. ए पर्यायार्थ ले.

वली पण पर्याय फेर नाम कहे ले. " उत्ति उवउंगकरणे, पत्ति अ पाव परिवज्झणे होइ ॥ जत्ति अ जाणस्स कए, उत्ति अ उसक्कणा कम्मे ॥१॥" अर्थः—उ वर्ण ते उपयोगने अर्थे ले अने प वर्ण ते पापनुं समस्त प्रकारें वर्जवुं तेने अर्थे ले, अने ज वर्ण ते ध्यान करवाने अर्थे ले. पुनः उ वर्ण तें कर्मथकी उसरवाने अर्थे ले. ए रीतें चार अक्षर मल्या थकां उपाज्झाउ था य ले, ते पण पर्यायांतरें उपाध्यायनुंज नाम जाणवुं.

अथवा उपाधान एटले उपाधि अथवा सन्निधि ते पासें वसवुं; ते उ पाधियें करीने अथवा उपाधिने विषे आय एटले लाज ले श्रुतनो जेउ थ की अथवा उपाधि एटले विशेषणादिकना प्रस्तावथकी शोजन उपाधिनो आय एटले लाज ले जेउथी ते उपाध्याय कहियें.

अथवा उपाधि तेज सन्निधि अने आय एटले इष्टफल एटले जेने वि षे दैवजनितपणे जे आय एटले इष्टफलो तेहना समूहनुं एक हेतु पणुं ले ए हेतुमाटें तेने उपाध्याय कहीयें.

अथवा आधि जे मननी पीडा, तेनो आय एटले लाज तेने अध्याय कहियें . अथवा अधि एटले टूंकी बुद्धि अर्थात् कुबुद्धि तेनो आय एटले लाज ते अध्याय कहियें. अथवा ध्यैधातु चिंताने अर्थे ले ए धातुनो प्रयो ग तथा नञ्नो अर्थ, कुत्सित एटले खराब एवो थाय ले, ए बे मली डु र्ध्यान एवो अर्थ सिद्ध थाय ले, एने अध्याय पण कहे ले ए उपरला अ ध्याय अथवा आध्याय तथा ए बन्ने जेउएं करी उपहत एटले हणायेला ले तेने पण उपाध्याय कहियें.

एवा श्री उपाध्याय पच्चीश गुणें करी शोभित, द्वादशांगीना पारंगामि, द्वादशांगीना धारक, सूत्र अने अर्थना विस्तार करवाने रसिक, एवा उपाध्यायने नमस्कार करवानो हेतुं शुं? त्यां कहे ने. संप्रदाय थकी आवेलां जे जिनवचन, तेनुं अध्यापन एटले नणाववुं करावे ने, एणें करी नव्य जीवोनी उपर उपकारीपणुं होवाथी नमस्कार करवा योग्य ने. ए श्रीउपाध्यायजीने मरकत मणिनी पेरें नीलवर्णें ध्यायियें, ए श्रीउपाध्यायजीने नमस्कार करवाथी पंचपरमेष्ठिमंगलमां उपाध्याय पदनुं चोथुं मंगल जाणवुं ॥ ए चोथुं पद अने चोथी संपदा थइ ॥ ४ ॥

हवे साधुपदनुं पांचमुं मंगल वर्णवे ने.(णमोलोएसव्वसाहूणं के०) नमोनमः लोके सर्वसाधुन्यः अढीद्वीप प्रमाण लोकमांहेला सर्वसाधुउने नमस्कार थाउ.

त्यां जे ज्ञानादिक शक्तियें करी मोक्षने साधे, तेने साधु कहियें, अथवा सर्व प्राणीमात्रने विषे समपणुं ध्यावे, तेने निरुक्तिन्यायेंकरी साधु कहियें. ए विषे आ वचन प्रमाण ने:—“ निव्वाण साहए जोए, जम्हा साहंति साहुणो ॥ समा य सव्वनूएसु, तम्हा ते नाव साहुणो ॥१॥” अर्थः—निर्वाण जे मोक्ष तेना साधवाना जे योग,ते प्रत्यें जे कारण माटें साधे,ते माटे ते साधु कहीयें. वली सर्वनूत जे चोराशी लाख जीवायोनि तेथी उपना जे जीव, ते सर्वसाथें समतापणुं जे धरे ने. ते कारण माटें तेने नावसाधु कहियें. अथवा संयमना सखाइ जे सत्तर नेद, ते प्रत्यें जे धारे, ते साधु कहियें, उक्तं च ॥ “ किं पिछसि साहूणं, तवं च नियमं च संयमगुणं वा ॥ तो वंदसि साहूणं, एयं मे पुछिउ स्सहु ॥ १ ॥ अर्थः—अरे प्राणी! साधु ते पोताना गुणें करीनेज साधु होय, तेमाटे तुं साधु नणी शुं देखे ने? एटले शुं तपश्चर्यानो गुण देखे ने? अथवा संयमना गुण देखे ने? ते गुण देखीने तेवार पनी तुं शुं साधु प्रत्यें वांदीश? एम हुं तुजने पूछुं छुं, माटे साधुने गुणेंज साधु देखीने वंदना करवी. उक्तं च ॥ विसय सुहनियत्ताणं, विसुद्धचारित्तनियमजुत्ताणं ॥ तच्चगुणसाहयाणं, साहूण किच्चुज्झायण नमो ॥ १ ॥ अर्थः—साधु केहेवा ने? तोके शब्दादिक पांच प्रकारना विषय तेनां जे सुख, तेथी निवृत्त्या ने, एटले वेगला थया ने तथा विशुद्ध निर्मल चारित्र अने विविध प्रकारना जे नियम, तेणें करी युक्त ने, वली (तच्च के०) तथ्य एटले साचा जे गुण तेना साधक ने,

कृतकृत्यपणुं थावाने अर्थे एटले मोक्ष पामवानां जे कार्य, तेहिज साधवाने उद्यमवंत पणुं छे जेमने एवा साधुउने नमस्कार थाउ.

वली साधु केहेवा छे ? "असहाइ सहायत्तं, करेति मे संजमं करंतस्स ॥ एएणं कारणेणं, णमामि हं सव्वसाहूणं ॥ १ ॥" अर्थः– जेनो कोइ सखाइउ न होय, तेना साधु सखाइया छे. एटले जेने कोइनुं सहाय नथी, तेनुं सहाय साधु करे, निःकारणबंधुसमान उपकारी एवा साधु ते (मे के०) मुज प्रत्यें अनादिनुं असंयमपणुं टाली संयमपणुं कर्त्ता छे. एटले इंद्रियनो निग्रह करावे, इत्यादिक कारणें करी "सव्वसाहूणं अहं नमामि" एटले सर्व साधु प्रत्यें हुं नमस्कार करुं छुं.

अथवा संयमकारी जनोने सहायता धारण करे, तेने साधु कहियें. निरुक्तियकीज 'निरुक्तं पदभंजनं' एटले सामायिकादि विशेषणें सहित एवा समतावंत साधु सर्व, ते अप्रमत्तादिक, पुलाकादिक, जिनकल्पिक, प्रतिमाकल्पिक, यथालंदकल्पिक, परिहारविशुद्धिकल्पिक, स्थविरकल्पिक, स्थितकल्पिक, स्थितास्थितकल्पिक, तथा कल्पातीत भेदोवाला प्रत्येक बुद्ध, स्वयंबुद्ध, बुद्धबोधित भेदोवाला अने भारतादिक भेदोवाला अथवा सुखमदुखमादिक विशेषित साधु ते सर्व साधुउ जाणवा. अहींआं सर्व गुणवंतने अविशेषें करी नमस्कार करवा पणाना प्रतिपादनने अर्थे सर्व शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे. एवी रीतें अर्हत् प्रमुख पदोने विषे पण जाणी लेवुं. अहींआं पांचमा पदने विषे सर्व पदनी पूर्त्ति करवी, ए माटे पण सर्व पद मेल्युं छे, एटले न्यायना सामान्य पणाथकी पांचे पदें सर्व शब्द सूचव्यो.

अथवा सर्व जीवोने हितना करनारा ते सार्व, तेहीज साधु अथवा सार्व शब्दें अर्हद्धर्म अंगीकार करनार साधुउ जाणवा, पण सार्व शब्दें बौद्धादिकना साधुउ ग्रहण करवा नही, ते सार्व साधु अथवा सर्व शुभ योगोने साधे, ते सार्व साधु, अथवा सार्व एटले अरिहंत ते प्रत्यें साधे, एटले तेउनी आज्ञाना करवा थकी आराधे, प्रतिष्ठापना करे दुर्नयना निराकरण थकी ते सार्व साधु कहियें.

अथवा श्रव्य एटले श्रवण करवा योग्य जे वाक्यो, तेने विषे साधु, अथवा सव्य एटले दक्षिण ते पोताने अनुकूल जे कार्य तेने विषे साधु एटले निपुण, ते श्रव्यसाधु कहियें, अथवा सव्यसाधु पण सव्व शब्दवडे

जाणी लेवा; सर्व शब्दनुं देश तथा सर्वताने विषे दर्शन छे माटें अपरिशेष सर्व थकी उपदर्शनने माटें लोक शब्द कह्यो छे.

अहींआं लोकशब्दें मनुष्यलोक सार्द्धद्वयद्वीपसमुद्रवर्त्ती, ऊर्ध्व नव शत योजन प्रमाण, अधः नीचें सहस्र योजन प्रमाण तथा वली कोइएक लब्धिवंत साधु मेरुचूलिका पर्यंत पण तपस्या करता थका होय. एम लोकने विषे जिहां जिहां साधु होय, ते सर्व साधुने माहारो नमस्कार थाउ.

ए साधुउने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे छे. मोक्षमार्गने विषे सहायता करनार होवाथी उपकारी पणाने लीधे नमस्कार करवा योग्य छे. स्तवना, प्रशंसा, गुणवर्णन करवा योग्य छे.

जेम भ्रमर, वृक्षना सुगंधी फूल उपर बेसे, तेनो थोडो एक पराग लेइ बीजे फूले जाय, एम अनेक फूले भमी भमीने पोताना आत्माने संतुष्ट करे, पण फूलने बाधा न उपजावे, तेम साधु पण अनेक घर भमी भमीने बेतालीश दोष रहित आहार शुद्ध गवेषी पोतानुं पिंमपोषण करे, पांचेंद्रिने पोताने वश राखे, पांचेंद्रिना विषयने झींपे, षट्कायजीवनी रक्षा पोते करे, बीजा पासे करावे, वली सत्तर भेद सहित संयमने आराधे, सर्वजीव उपर दयाना परिणाम राखे, अढार हजार शीलांग रथना धोरी, अचल, अभंग आचाररूप जेनुं चारित्र छे, एवा महंत मुनीश्वरने जयणायुक्त वंदीने पोतानुं जन्म पवित्र करीयें. वली नव प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाले, बार प्रकारे तप करवाने शूरा, आत्मार्थी तथा वली आदेश, उपदेश थकी न्यारा छे, जेने जनमेलननी ईहा नथी, वंदन पूजननी वांछा नथी, एवा मुनिनुं दर्शन तो जो पुण्योदय होय तो पामीयें, ए श्रीसाधुने आषाढना मेघनी पेरे श्यामवर्णें ध्यायियें. ए पांचमां पदरूप साधुमंगल वखाण्युं, एटले पांचमा पदनी पांचमी संपदा थइ ॥ ५ ॥ भावमंगल अनेक प्रकारे छे, तेमां ए पंच परमेष्ठीनुं प्रथम मंगल जाणवुं.

आशंकाः—ए पंच परमेष्ठीने जे नमस्कार करवो, ते संक्षेपे करवो, किंवा विस्तारे करवो? तेमां जो संक्षेपे नमस्कार कराय छे एम कहेशो, तो सिद्ध अने साधुउ प्रत्यें नमस्कार करवोज युक्त छे. केम के? ए बेहुने नमन करवाथकी अरिहंत, आचार्य अने उपाध्यायनुं पण ग्रहण थयुंज, कारण के ए अर्हदादिक त्रण जे छे ते पण साधुपणुं छोडता नथी, ते माटे.

अने जो तमे कहेशो के विस्तारें नमस्कार कराय छे? तो तेवारें ऋषभादिक चोवीशे तीर्थंकरोने व्यक्तिसमुच्चारण थकी एटले जूदुं जूदुं नाम लेइने नमस्कार करवो जोइयें.

समाधानः—अरिहंतने नमस्कार करवाथकी जे फल पामीयें, ते साधुनें नमस्कार करवाथकी फल न पामीयें, जेम मनुष्यमात्रने नमस्कार करवा थकी राजादिकना नमस्कारनुं फल न पामीयें, ते माटे विशेष थकी प्रथम श्रीअरिहंतनेज नमस्कार करवो युक्त छे.

आशंकाः—जे सर्वथी मुख्य होय, तेनुं प्रथम ग्रहण करवुं ए योग्य छे, तो तमे अहीआं पंच परमेष्ठीने नमस्कार करतां प्रथम श्रीअरिहंतने नमस्कार कीधो, परंतु जो प्रधान न्याय अंगीकार करीयें, तो अहीआं पंच परमेष्ठीमां सर्वथा कृतकृत्य पणे करी सिद्धने प्रधान पणुं छे माटे सिद्ध मुख्य छे, तेथी प्रथम सिद्धने नमस्कार करीने पछी अरिहंतादिकने आनुपूर्वीयें नमस्कार करवो युक्त छे.

समाधानः—सिद्धने पण श्रीअरिहंतना उपदेशथकी जाणीयें छैयें. वली अरिहंत, तीर्थप्रवर्तन करे, उपदेश आपीने घणा जीवोने उपकार करे अने सिद्ध पण श्रीअरिहंतना उपदेशथकीज चारित्र आदरी कर्मरहित थइ सिद्ध पणुं पामे माटे श्रीअरिहंतनेज प्रथम नमस्कार करवो योग्य छे.

आशंकाः— जो एम उपकारी पणुं चिंतवी नमस्कार करीयें, तो आचार्यादिकने पण प्रथम नमस्कार करवो युक्त थाशे? केम के कोइ एक समयें एनाथी पण अर्हदादिकनुं जाणपणुं थाय छे, माटे आचार्यादिक पण महोटा उपकारी छे, तेथी तेमने प्रथम नमस्कार करवो युक्त छे.

समाधानः— आचार्यने उपदेश देवानुं सामर्थ्य, श्रीअरिहंतना उपदेश्याथकीज होय छे, परंतु आचार्यादिक स्वतंत्र थका उपदेश थकी अर्थज्ञापकपणुं पडिवजता नथी, एटला माटे अरिहंतज परमार्थे करी सर्व अर्थ ज्ञापक छे तेथी, प्रथम नमस्कार करवा योग्य छे. वली आचार्यादिक तो अरिहंतनी पर्षदा रूप छे. माटे आचार्यादिकोने प्रथम नमस्कार करी पछी श्रीअरिहंतने नमस्कार करवो, ए योग्य न कहेवाय, ए विषे आम कह्युं छेः— "पुव्वाणुपुव्वि न कमो, नेवय पच्छाणुपुव्वि एस नवे ॥ सिद्धाईआ पढमा, बीआ ए साहुणो आइं ॥१॥ " अरहंता उवएसेणं, सिद्धाणं जंति तेण अरि

हाई ॥ एवि कोई परिसाए, पणमित्ता पणमई रन्नोत्ति ॥ २ ॥" पूर्वे जेटला प्रश्न उत्तर कह्या, तेनो संबंध ए गाथाउ मध्ये छे, तेमाटें लोकमां पण पर्ष दाने प्रणाम करीने पछी राजानें कोइ प्रणाम न करे, तो अहीं आचार्यादिक तो सर्व पर्षदा रूप छे अने श्रीअरिहंत ते राजा रूप छे माटे प्रथम राजाने प्रणाम कह्या पछी पर्षदाने प्रणाम कराय छे, ए रीते श्रीअरिहंतने नमस्कार कह्या पछी आचार्यादिकने नमस्कार करवो युक्त छे, एम सिद्ध थयुं, एटले पांत्रीश अक्षरे श्रीनवकार पांच पदरूप मूल मंत्र कह्यो. हवे आगले चार पदनी चूलिकामांहे ए मूलमंत्रनो प्रजाव कहे छे.

(एसोपंचणमुक्कारो के०) एषपंच नमस्काराः (एसो के०) ए जे अ रिहंतादिक संबंधी (पंच णमुक्कारो के०) पांच नमस्कार छे. एटले नमस्कार पंचक छे, ते केवो छे? तोके (सवपावप्पणासणो के०) सर्वपापप्रणाशनः (सवपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेनो (प्पणासणो के०) प्प णास एटले विनाशनो करनार छे. अहीं छठा अने सातमा, ए बे पदनी छठी अने सातमी, ए बे संपदा थई. वली ते नमस्कारपंचक केहेवो छे? तोके (मंगलाणंचसवेसिंपढमंहवइमंगलं के०) मगलानां च सर्वेषां प्रथमं जवति मगलं एटले सर्व मंगलोमां (पढमं के०) प्रथम एटले मुख्य, मंगलं के०) मंगल मांगलिक एटले कल्याणकारक (हवइ के०) छे.

एटले मंगल बे प्रकारनुं छे. एक ड्व्यमंगल, ते लौकिक मंगल, अने बीजुं जावमंगल ते लोकोत्तर मंगल जाणवुं. तेमां दधि, अक्षत, केसर, चंदन, दूर्वादिक, ते लौकिक मंगल छे. ए मंगल अनेकांतिक तथा अनात्यंतिक जा णवुं. ते पण एक नाममंगल, बीजुं स्थापना मंगल, अने त्रीजुं ड्व्यमंगल. ए त्रण मंगलथी वांछितार्थ सिद्धि न थाय. अने ए थकी विपरीत एकांत मं गल तथा आत्यंतिक मंगल, ते जावमंगल जाणवुं. ए मंगल, विशेषें इष्छि तार्थसिद्धिनुं कारक छे माटे पूजनीय छे, प्रधान छे. ते जप, तप तथा नि यम प्रमुखजेद जिन्नपणे करी अनेक प्रकारनुं छे. तेमां पण अति उत्कृष्ट मं गल, ए पंच परमेष्ठिनमस्काररूप छे, माटे ए विशेषे करी ग्रहण करवुं. ए थकी मोक्षरूप सुखनी प्राप्ति थाय छे. परमेष्ठीने मंगलपणे, लोकोत्तम पणे, शरणयोग्यपणे ग्रहवाय छे. उक्तं च ॥ अरिहंता मंगलं, सिद्धा मं गलं, साहु मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ इति ॥ ए चूलिकानां

बार पदमां तेत्रीश अक्षर छे, आठमां अने नवमा, ए बे पदनी मलीने एकज आठमी संपदा थइ माटे एमां विश्रामनां स्थानक रूप संपदा आठ छे अने पद नव छे तथा बधा मली लघु अक्षर एकशठ छे. अने गुरु अक्षर सात छे, सर्व अक्षर अडशठ छे. इति मंगलम् ॥

हवे ए चूलिकामध्ये केटला एक (हवइ मंगलं) ने स्थानके (होइ मंगलं) कहीने बत्रीशज अक्षर माने छे, परंतु एना मूल तेत्रीश अक्षर छे. यदुक्तं श्रीमहानिशीथसिद्धांतें "तहेव इक्कारस पय परिछिन्नति आलावग तित्तीस अरकरपरिमाणं ॥ एसो पंचणमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलंति चूलं. तेणेव कमेण छठ सत्तमठम दिणेसु आयंबिलेहिं अहिज्जिज्जा" तथा प्रवचनसारोद्धारेऽप्युक्तं "पंच परमिठिमंते, पए पए सत्त संपया कमसो ॥ पज्जंत सत्तरस्कर, परिमाणा अठमी नणिया ॥ १ ॥" गाथा (७ए) मी. यद्यपि हवइ मंगलने स्थानकें होइ मंगलं एवो पाठ कहेवाथकी अर्थविच्छेद कांइ नथी, तथापि हवइ मंगलं एवोज पाठ कहेवो. केमके नमस्कारावलिकाग्रंथमध्यें कह्युं छे के, कोइ कार्यविशेष उपने थके जेवारें चूलिकानुंज ध्यान करियें, तेवारें बत्रीश दलनुं कमल रची एकेको अक्षर, एकेकी पांखडीयें स्थापवो अने तेत्रीशमो अक्षर, मध्यकर्णिकायें स्थापीने ध्यान करवुं. माटे जो होइ मंगलं एवो पाठ कहियें, तो चूलिकामां बत्रीशज अक्षर थाय, ते बत्रीश अक्षरें बत्रीश पांखडीज पूराय, तेवारें मध्यनी कर्णिका खाली रही जाय. इत्यादिक अनेक सिद्धांत युक्ति छे. ते मध्यस्थपणे विचारवुं.

हवे ए पंच परमेष्ठीने नमस्कार करीने एमना एकशो ने आठ गुणरूप मंत्रनो जाप करीयें, ते गुणो आ प्रमाणे छे:—"बारस गुण अरिहंता, सिद्धा अठेव सूरि छत्तीसं ॥ उवज्झाया पणवीसं, साहू सगवीस अठसयं ॥ १ ॥ अर्थः—अरिहंतना बार गुण, सिद्धना आठ गुण, आचार्यना छत्रीश गुण, उपाध्यायना पच्चीश गुण अने साधुना सत्तावीश गुण, ए सर्व मली (अठसयं के०) एकशो ने आठ गुण थाय. ते आवी रीतें:—

तिहां श्रीअरिहंत प्रभुनां आठ प्रातिहार्य, तथा चार मूलातिशय, मली ने बार गुणो जाणवा. तेमध्यें प्रथम आठ प्रातिहार्य कहे छे.

उक्तं च:—"किंकिल्लि कुसुमवुठि, देवझुणि चामरासणाइं च ॥ नावलय

नेरि ढत्तं, जयति जिण पाडिहेराइं ॥ १ ॥" अर्थः—नगवंतने सहचारि होय माटे प्रातिहार्य कहियें, अथवा इंडना आदेशकारी जे देव, तेउनुं जे कर्म, तेने प्रातिहार्य कहीयें. ते आठे प्रातिहार्य, देवतानां करेलां जाणवां. तिहां प हेलुं १ (किंकिल्लि के०) अशोकवृक्ष, ते ज्यां श्रीनगवंत विचरे, समोसरे, तिहां महाविस्तीर्ण, कुसुमसमूहलुब्धभ्रमरनिकरें शीतल, सब्राय, मनो हर, विस्तीर्ण शाखावालो, नगवाननुं जेटलुं देहमान होय तेथी बारगुणो, अशोकवृक्ष, देवता करे, तेनी नीचें बेसीने धर्मदेशना नगवान् आपे.

२ (कुसुमवुट्ठि के०) फूलनी वृष्टि एटले जल तथा स्थलने विषे उत्पन्न थयेलां फूलो जेवां के श्वेत, रक्त, पीत, नील तथा श्याम, ए पांच वर्णोनां विकश्वर सरस सुगंधमय, नीची बीटें अने ऊंचे मुखें एवां सचित्त फूलो नी वृष्टि समवसरणनी पृथिवीने विषे चोफेर एक योजन मध्यें गोठण प्रमाण देवताउ करे ले, अहींआं फूलविषे मतांतर ले, ते कहे लेः—कोइ एक तो अचित्त फूल कहे ले तथा कोइ एक तो किहां एक फूल उपर जाली बंध कहे ले, वली कोइ एक तो क्यांएक क्यारारूप ले, एटले ज्यां साधु, मनुष्य अने देवता बेसे ले, त्यां पुष्पवृष्टि नथी अने शेष चोफेर स्थानकें ले, एम मतांतर ले. परंतु ते मध्यें अचित्त फूलना कथक तो डुर्मति ज्ञिन वचनना उत्थापक एवा ढूंढक लोको जाणवा, अने शेष बे मतांतरनो पण निषेध ले, केमके समवसरणमां सर्वत्र फूलनी वृष्टि तो होयज ले पण ते फूलोने जे बाधा नथी उपजती तेनुं कारण तो अचिंत्य शक्तिना धणी एवा श्रीनगवंतनुं माहात्म्य जाणवुं. एम श्रीआवश्यक चूर्णिमध्यें कह्युं ले. तेनी श्रीआवश्यक निर्युक्तिनी वृत्ति, श्रीमलयगिरि महाराजनी करेली. तेमां साख दीधी ले, माटे पुष्पवृष्टि समवसरणमध्यें सर्वत्र देवताउ करे ले.

३ (देवझुणि के०) दिव्यध्वनिः एटले नगवान् जेवारें दूध साकरथी मीठाश वाला अत्यंत मधुर स्वर वडे सरस अमृतरससमान समस्त लोकने प्रमोदनी देवा वाली एवी वाणीयें धर्मदेशना दीये ले. तेवारें देव ताउ ते नगवंतना स्वरने पोतानी ध्वनिवडे अखंम पूरे ले. यद्यपि मधुर मां मधुर पदार्थथकी पण प्रनुनी वाणी मध्यें रस घणो ले, तोपण नव्य जीवना हितने अर्थें प्रनुजी जे देशना आपे ले, ते मालवकोश रागें करीनेज आपे ले, अने ते मालवकोश रागें जेवारें देशना आलापे, तेवारें

परमेश्वरनी बन्ने बाजुयें रहेला देवता, ते मनोहर वेणुवीणादिकना शब्दे करीने ते वाणीने विशेषे मनोज्ञ करे, एटले जेम कोइ सुस्वरे गायन करतो होय, तेनी पासे वीणादिकने शब्दे ध्वनि पूरीयें, तेम अहीआं देवता करे, तेने दिव्यध्वनि नामा प्रातिहार्य कहियें.

४ (चामर के०) चामर एटले केलिना स्तंजने विषे जेम तंतुना निकर लागा होय तेनी पेरे मनोहर जेना दंमने विषे अनेक रत्नना समूह लागेला होय ते रत्नना किरणे करी जाणीयें, इंद्रधनुष्यने विस्तारतो होय नही ? एवा रत्ने करी जडित सुवर्णनी मांमी सहित श्वेत चामरो समवसरणमां जगवंतने देवताउ थकी विंजाय डे.

५ (आसणाइंच के०) आसनानि च एटले आसन जे सिंहासन ते अनेक रत्नी चूनीयें करी बिराजमान सुवर्णमय मेरुना शृंगनी पेरे उंचुं अने कर्मरूप वैरीना समूहने जाणीयें बीवरावतुं होय नही ? एम साक्षात् सिंहरूपे शोजायमान एवुं सुवर्णमय सिंहासन देवताउ करे, तेनी उपर बेशीने जगवान्, देशना आपे.

६ (जावलय के०) जामंमल नामा प्रातिहार्य, ते श्री जगवंतनी पूंठने विषे शरद् रुतु संबंधि सूर्यना किरणनी पेरे जोतां दोहिलुं एवुं अत्यंत देदीप्यमान श्रीवीतरागना मस्तकने पाछले जागे जामंमलनी पेरे जामंमल होय एटले (जा के०) कांति तेनुं मंमल एटले मांमलुं करे, तेने जा मंमल कहीयें. जामंमल न होय तो प्रजुना मुख सन्मुख जोवाय नही.

७ (जेरि के०) जेरी, ढक्का, डुंडुनि, ए एकार्थ डे जेणे पोताना जांकार शब्दे करीने विश्वनुं विवर जर्युं डे, एवा जेरी, ढक्का शब्दायमान करे डे. एटले हे जनो ! तमे प्रमादने डांमिने श्रीजिनेश्वर प्रत्यें सेवो, ए जिनेश्वर ते मुक्ति नगरीयें पहोंचाडवाने सार्थवाह समान डे. ए रीते जेरिनो शब्द त्रण जगतनां लोकने कहे डे. एम हुं जाणुं बुं, एवी डुंडुनि एटले आकाशने विषे कोडो गमे देवतानां वाजित्रो दिव्यानुजावे वाजे डे.

८ (डत्त के०) डत्रं, डत्रनामा प्रातिहार्य ते त्रण जवनने विषे परमेश्वर पणानुं जणावनार, शरत् कालना चंद्रमा तथा मचकुंदनी पेरे उज्ज्वल, एवी मोतीनी मालायें करी बिराजमान, एवा त्रण डत्र प्रजुने मस्तके डत्रातिडत्र प्रत्यें धरे. समवसरणनी निश्रायें चार जोडी चामर, अने बार डत्रो

होय छे, ए आठ प्रातिहार्य कह्या. उक्तं च ॥ अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः, दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥ भामंमलं डुंडुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥१॥ ए आठ प्रातिहार्य ते श्रीअरिहंतना आठ गुणो कहेवाय छे.

तेमज चार मूल अतिशय छे, ते आ प्रमाणेः—पहेलो अपायापगमातिशय, बीजो ज्ञानातिशय; त्रीजो पूजातिशय तथा चोथो वचनातिशय. तत्र प्रथम अपायापगमातिशय, ते बे प्रकारे छेः—एक स्वाश्रयी ने बीजो पराश्रयी तेमां स्वाश्रयी बे प्रकारे छेः—अपाय कहेतां उपद्रव ते द्रव्य अने भाव ए बे प्रकारे छेः—तेमां द्रव्यथी जेमने सर्व रोगो अपगम एटले क्षय थइ गया छे अने भावथी अंतरायादिक अढार दोष थकी रहित थया छे ते आ प्रमाणेः— १ दानांतराय, २ लाभांतराय, ३ वीर्यांतराय, ४ भोगांतराय, ५ उपभोगांतराय, ६ हास्य, ७ रति, ८ अरति, ९ भय, १० शोक, ११ जुगुप्सा, एटले निंदा, १२ काम, १३ मिथ्यात्व, १४ अज्ञान, १५ निद्रा, १६ अविरति, १७ राग, १८ द्वेष, ए अढार दोषो श्री वीतरागना क्षय थइ गया छे. ए स्वाश्रयी अपायापगमातिशय कह्यो. हवे पर आश्रयी अपायापगमातिशय आ प्रमाणेः—ज्यां भगवंत विहार करे त्यां आसमंतात् भागे सवाशो योजन सुधीमां प्रायें करी रोग, वैर, ऊंदर प्रमुखनो उपद्रव, मारी, मरकी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, पोताना सैन्यनो भय तथा परना सैन्यनो भय. एटला वानां थाय नही, ए पर आश्रयी जाणवो.

बीजो ज्ञानातिशय तें आवी रीते जाणवो. भगवान् केवल ज्ञाने करी लोकालोकनुं स्वरूप सर्व प्रकारे जाणे छे. सर्व प्रकारे देखे छे; कोइ प्रकारे कांइ भगवानथी अज्ञात रहेतुं नथी, तेथी भगवान् ज्ञानातिशयवंत जाणवा.

त्रीजो पूजातिशय आ प्रमाणेः—भगवंतने राजा, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती, भवनपतिदेव, व्यंतरदेव, ज्योतिष्कदेव तथा वैमानिक देवता प्रमुख जगत्रयवासी भव्य जीवो पूजा करवानी अभिलाषा करे छे. अर्थात् श्रीतीर्थंकर सर्वपूज्य छे माटे ए त्रीजो पूजातिशय जाणवो.

चोथो वचनातिशय आम जाणवोः—भगवंतनी वाणी संस्कारादिक गुणे करी सहित होय छे. माटे मनुष्य, तिर्यंच तथा देवताउने अनुयायि होय, ते एवी रीते संस्कारने पामे छे के, सर्व भव्य जीवो पोतपोतानी भाषाना अनुसारे तेनो अर्थ समजी जाय छे. जेम एक भिल्ल, पोतानी त्रण स्त्री स

हित एकदा प्रस्तावें वनमां जतो हतो, तेने मार्गमां एक स्त्रीयें कह्युं मुजने हरण हणीने आणी आपो, बीजीयें कह्युं मने अत्यंत तृषा लागी ले माटें पाणी लावी आपो अने त्रीजीयें कह्युं के गीत गायन कही संजलावो. ए त्रणेने जिल्लें कह्युं के, (सरो नथी) एम एक उत्तर कह्यो. त्यारें पहेली समजी के, सरो एटले बाण नथी. बीजी समजी के, सरो एटले सरोवर नथी. त्रीजी समजी के, सरो एटले मधुरस्वर नथी. एम एक उत्तरथी त्रणे स्त्री समजी गइ, ए दृष्टांतें प्रजुनो वचनातिशय पण जाणवो. ए जिनेंडनी वाणीना पांत्रीश गुणो ले, ते विस्तारना जयथी लख्या नथी. ए चार अतिशय, आठ प्रातिहार्य साथें मेलवतां श्री तीर्थंकरना बार गुणो थया.

हवे सिद्धना आठ गुणो विवरीने कहे ले:—गाथा "नाणं च दंसणं चेव, अव्वाबाहं तहेव सम्मत्तं ॥ अरकयठिइ अरूवी, अगुरु लहु वीरियं हवइ" अर्थः—प्रथम (नाणंच के०) ज्ञानावरणीय कर्म क्षय थइ जवाने लीधे ज्ञाननी उत्पत्ति थयाथी तेना प्रजावें लोकालोकना स्वरूपने विशेष प्रकारें जाणे ले. बीजो (दंसणंचेव के०) दर्शनावरणीय कर्मनो क्षय थई जवाथी केवल दर्शननी उत्पत्ति थवाने लीधे तेना योगें लोकालोकनुं स्वरूप जली प्रकारें देखे ले, त्रीजो (अव्वाबाहं के०) सर्व प्रकारनी बाधा पीडाथकी रहित, एटले वेदनीय कर्म क्षय थई जवाथी नैरुपाधिक अनंत सुखनी उत्पत्ति थाय ले. ते सुख आवुं ले के:—व्यवहारीआनां सुख, राजानां सुख, बलदेवनां सुख, वासुदेवनां सुख, चक्रवर्त्तीनां सुख, असंख्याता जवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देवोनां सुख, बार देवलोकना देवतानां सुख, नव ग्रैवेयकना देवतानां सुख, पांच अनुत्तर विमानवासी देव, ए सर्वेनां सुख ते थकी अनंतगुणुं अधिक सुख, सिद्धना जीवोने ले. ते सुखनो अनुजव सिद्धविना बीजा कोइने पण थइ शके नही. जेम मूंगो शाकर खाय, तेनो स्वाद पोतें जाणे पण बीजाने कही शके नही, तेम सिद्धना सुखने केवलज्ञानी जाणे ले पण ते सुख वचनातीत ले, माटें मुखथी कही शके नही. चोथो (तहेवसम्मत्तं के०) तेमज मोहनीय कर्मनो क्षय थइ जवाने लीधे क्षायिक सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थाय ले, ते सिद्धने विषे यथावस्थित होय ले. पांचमो (अरकयठिइ के०) आयुःकर्मनो क्षय थयाथी अक्षयस्थिति थाय ले. सिद्धना जीवने पर्याय वडे सादि अनंत

स्थिति छे माटे अक्षयस्थिति कहेवाय छे. छठो (अरूवी के०) रूपथकी रहित छे. उपलक्षणथी वर्ण, गंध, रस तथा फरसथकी पण रहित जाणियें. एटले सिद्ध पांच वर्णमांना एके वर्णे कहेवाय नही ; बे गंधमां कोइ गंधनो सिद्धमां संजव नथी; पांच रसमां एके रस सिद्धनेविषे न होय अने आठ स्पर्शमांनो एके स्पर्श सिद्धने न होय. एटले नामकर्मना क्षयथकी एउनो तादात्म्य संबंध सिद्धनेविषे नहि होवाने लीधे ए अरूपी गुण कह्यो छे. सातमो (अगुरुलहु के०) गोत्रकर्मनो क्षय थइ जवाथी सिद्ध जारी पण नथी तेम हलका पण नथी एटले (अगुरु के०) सिद्धने उंच गोत्र न होय तथा (अलहु के०) सिद्धने नीच गोत्र न होय एटले सिद्ध, कार्मिक सन्मान तथा सत्कार रहित होय छे, अर्थात् विषयता संबंधें करी स्वाजाविक पूजा सत्कारें करी रहित छे अने आठमो (वीरियं के०) अंतराय कर्मनो क्षय थवा थकी वीर्यांतरायना क्षयने लीधे सिद्धने स्वाजाविक आत्मानुं अनंत बल होय छे, ते बल एवुं के लोकने अलोकमां तथा अलोकने लोकमां करी नाखे पण सिद्ध ते बलने फोरवे नही. फोरव्युं पण नथी अने फोरवशे पण नही. कृतकृत्य थया छे माटे तादृश वीर्यनें फोरवे नही. ए आठ, सिद्धना गुण थया.

हवे आचार्यना छत्रीश गुणो आवी रीतेः–" पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंजचेरगुत्तिधरो ॥ चउविहकसायमुक्को, इअ अढारसगुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वयजुत्तो, पंचविहायारपालणसमत्थो ॥ पंच समिउ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥ " अर्थः–(पंचिंदियसंवरणो के०) स्पर्शनेंद्रिय प्रमुख पांच इंद्रियो, तेउना स्पर्शादिक मुख्य पांच विषयो तथा ते विषयोना अवांतर त्रेवीश जेदो थाय, तेमां जे पोताने अनुकूल प्रीतिकारी होय तेउनी उपर राग न धरे अने जे प्रतिकूल अप्रीतिकारी होय तेउनी उपर द्वेष न करे, ते माटे पंचेंद्रियना संवरयुक्त एम कह्युं. एम प्रत्येक इंद्रियना विषयने विषे राग तथा द्वेषना अजावें रहे ए प्रमाणे पांचे इंद्रियना विषयो विषे करतां, पांच गुणो थया. (तह के०) तथा (नवविहबंजचेर के०) नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी (गुत्तिधरो के०) गुप्तिने धारण करणार, तेमां प्रथम, गाय प्रमुख पशु, नपुंसक तथा स्त्री थकी रहित एवा स्थानकने विषे रहे, बीजुं, स्त्रीनी कथा, वार्त्ता, प्रीतियुक्त

सरागपणे करे नही; त्रीजुं,जे आसनें स्त्री बेठी होय ते ठेकाणें बे घडी पर्यंत ब्रह्मचारी पुरुष बेसे नही, अने जे आसननेविषे पुरुष बेठो होय, तिहां स्त्री त्रण प्रहर सुधी बेसे नही; चोथुं,स्त्रीना अंगोपांग, रागसहित निरखे नही; पांचमुं,नींतप्रमुखने आंतरे स्त्री पुरुष बन्ने सूतां होय अथवा कामविषे वातो करतां होय, त्यां बेशी न रहे; छठुं पूर्वावस्थामां स्त्रीनी साथें कामक्रीडा कीधी होय, तेनुं स्मरण न करे; सातमुं,सरस स्निग्ध आहार न लिये;आठमुं, नीरस आहार पण अति मात्रायें वजन उपरांत न लिये; नवमुं, शरीरनी शोजा विजूषा न करे. ए नव प्रकारें ब्रह्मचर्य मन, वचन, कायारूप त्रिक रण शुद्धपणें पाले. ए नव गुणो अने प्रथम कहेला पांच मली चौद गुणो थया. क्रोधादिक चार कषाय ते चारित्रना घातक परिणामविशेष जाणवा. ए चार कषाय थकी मुक्त एटले मूकाणा छे, एउना जेदोनुं विस्तारें करी विवरण कर्युं नथी. ए चार गुण मली अढार गुण थया. (इ अअढारस गुणेहिं संजुत्तो के०) ए अढार गुणोएं करी संयुक्त जाणवा ॥१॥ हवे बीजा अढार कहे छेः–(पंचमहव्वयजुत्तो के०) पांच महाव्रतें करी युक्त. तेमां प्रथम "सव्वाउ पाणाइवायाउ वेरमणं" एटले मन, वचन अने कायायें करी छ निकायना जीवोने पोतें हणे नही, बीजानी पासें हणावे नही तथा हणनाराने अनुमोदना दिये नही, तिहां पृथिवी, हरमजी, वानी, हरियाल प्रमुख खरलें वाटे नही, वटावे नही, पोताने अर्थें. वाट्युं होय ते लीये नही तथा पाणी पोताने अर्थें उन्हुं कर्युं होय ते लीये नही, बीजाने लेवरावे नही तथा कोइ लेतो होय तें प्रत्यें रूडो जाणे नही, ले नारनी साथें वसे नही, दिवसनुं आणेलुं पाणी, रात्रें तथा विहांणे वावरे नही, अग्निसंबंधी दीवो, फानस तथा अगर उखेवो इत्यादिक करे नही, करावे नही, अनेरायें कीधुं आदरे नही, आदरनारनी सायें वसे नही तथा मोरपीछी अने लूगडा प्रमुखें वायरो करे नही, करावे नही, करतो होय, तेंने वारी राखे, वायरो करवो आदरे, तेनी सायें वसे नही. वनस्पति, नील, फूल तथा जाडुआं उपर चाले नही तथा धान्यप्रमुख साधुने अर्थें रांध्युं होय, ते वोहोरे नही तथा आंबानो रस घोल्यो होय, खडबूजा प्रमु ख मोख्यां होय, तेने वोहोरे नही तथा त्रस कायनी विराधना थाय, माटे

रात्रे चालें नही. गृहस्थने घेर तथा उपाशरे अणपडिलेह्यां वस्त्र राखे नहीं, ए प्रथम महाव्रत कह्युं.

२ " सव्वाउ मुसावायाउ वेरमणं." क्रोध, लोन, नय तथा हास्यादिक थी द्रव्य, क्षेत्र, काल अने नाव संबंधें मन, वचन तथा कायाएं करी पोतें जूंठुं बोले नही, बीजाने जूठुं बोलावे नही तथा जूठुं बोलनारने अ नुमोदे नही, एटले स्वनावें तथा कार्य उपने तथा पोतानो शिथिलाचार ढांकवाने अर्थे तथा आदेशादिकनी वात करतां तथा गृहस्थनुं मन राख वाने अर्थे जूठुं कदापि बोले नही. ए बीजुं महाव्रत कह्युं.

३ " सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं " पारकुं अदत्त, पोतें तृणमात्र पण लिये नही,परने लेवरावे नही तथा लेताने अनुमोदे नही. एटले तीर्थंकर अदत्त, गुरुअदत्त, स्वामिअदत्त तथा जीवअदत्त, ए चार प्रकारनां अदत्त छे, तिहां पोताने अर्थे रांधेलो आहार लीये तथा असुजतां वस्त्र, पात्र प्रमुख लीये,तेने तीर्थंकर अदत्त सहित गुरुअदत्त ए बे अदत्त लागे,अने गृहस्थें अणआप्युं तथा मनपांखे आप्युं लीये, तेने स्वामिअदत्त सहित तीर्थंकर अ दत्त लागे, अने फासुकरणमां पाणी प्रमुख सजीव वस्तु वोहोरे, त्यां जीव अदत्तसहित तीर्थंकरअदत्त लागे. ते लिये नही, लेवरावे नही तथा ले ताने अनुमोदे नही, ए त्रीजुं महाव्रत कह्युं.

४ " सव्वाउ मेहुणाउ वेरमणं. " अढार नेदें ब्रह्मचर्य पाले. ते आ प्र माणेः—औदारिक काम, ते मनुष्य तथा तिर्यंचनी स्त्री संबंधी तेने मन, वचन तथा कायाएं करी सेवना करे नही, परने करावे नही तथा करताने अनुमोदना न दिये. एमज नव नेद वैक्रियना ते देवताउनी स्त्रीविषे जा णी लेवा. ए अढार नेदें ब्रह्मचर्य पाले एटले कोई प्रकारनी स्त्री जातिनी सायें आलाप, संलाप तथा अतिपरिचय न करे. केमके एम कस्याथी व्रतनो नंग थाय छे अनें बीजो कोइ देखे तो जिनशासननी हेलना करे अने घणो द्वेषी होय तो गाममां बकवाद करे तेथी निंदा थाय ए चोथुं महाव्रत कह्युं.

५ "सव्वाउ परिग्गहाउ वेरमणं." नव विध परिग्रह तथा धातुमात्र मूर्छा रूपें राखे नही, धर्म सहायक उपकरणोथी अधिक उपकरणो राखे नही, बीजाने रखावे नही अने राखताने अनुमोदन दिये नही. जे साधु होय,ते औधिक चौद उपकरण तथा औपग्रहिक जे संथारो,उत्तरपट्ट,मांमो प्रमुख छे

ते स्वप प्रमाणे राखे परंतु गृहस्थने घरे गांठडी बांधीने तो सर्वथा राखेज नही अने जो गृहस्थने घेर राखे तो तेने पांच महाव्रत मांहेलुं एक पण महाव्रत छे एम न जाणवुं अने तेने नावसाधु पण न कहीयें, जो कहीयें तो मिथ्यात्व लागे. ए पांचमुं महाव्रत कह्युं. सर्व मली त्रेवीश गुणो थया.

हवे (पंचविहायारपालणसमत्थो के०) पांच प्रकारनो आचार पालवाने समर्थ होय. तेमां प्रथम ज्ञानाचार एटले ज्ञान पोते नणे, परने नणावे, पोते लखे, बीजानी पासेथी लखावे, पोते ज्ञानना नंमारा करे, परनी पासेथीं करावे अने जे ज्ञाननुं पठन प्रमुख सारो उपयोग करतो होय, तेनी उपर राग धरे. एम ' काले विणए ' इत्यादि गाथा वडे कह्युं छे, ते जाणी लेवुं. बीजो दर्शनाचार. ते पोते सम्यक्त्व पाले, बीजाने सम्यक्त्व पमाडे अने सम्यक्त्वथी पडतो होय तेने हेतुयुक्तिना वचने करी स्थिर करे, ए ' निस्संकिय निक्कंखिय ' इत्यादिक बे गाथायें करी जाणवुं. त्रीजो चारित्राचार. ते पोते चारित्र पाले, बीजाने चारित्र पलावे. जे कोइ शुद्ध चारित्रने पालतो होय तेने अनुमोदे, ते 'पणिहाण जोगजुत्तो' इत्यादिक बे गाथायें करी समजवो. चोथो तपआचार. ते पोते बार नेदे तप करे, बीजाने तप करावे, जे कोइ बार नेदना तपने करतो होय तेने अनुमोदे, ते ' अणसणमूणोअरिया ' ए गाथावडे जाणवुं. अने पांचमो वीर्याचार ते पंचाचारने विषे शक्ति फोरवे, पडिक्कमणुं पडिलेहण, धर्मानुष्ठानने विषे बलवीर्य गोपवे नही. ते अणगुहिअ बलवीरिउ, ए गाथा थकी समजी लेवुं. ए पांच आचाररूप पांच गुणो मली अठावीश थया.

(पंच समिउ के०) पांच समितिउ एटले ईर्यासमिति, नाषासमिति, एषणासमिति, आदाननिक्षेपणसमिति, तथा पारिष्ठापनिकासमिति. तिहां ईर्यासमिति ते धोंसरा प्रमाण दृष्टियें जोतो चाले, संधिदिशे उपयोग राखे, नाषासमिति ते सर्वथा सावद्य वचन न बोले, निरवद्य वचनज बोले, जो धर्मोपदेश प्रमुख न आपे, तो अंतरायकर्म उपार्जन करे, माटे मुखे मुहपत्ती राखी क्रोधादिक रहित वचन बोले. एषणासमिति ते आधाकर्मादिक बेतालीश दोष रहित आहार करतां अंगालिक दोष प्रमुख मांमलाना पांच दोष टाले. 'आदानमंमनिक्षेपणासमिति' ते दृष्टियें जोइ पूंजीने मात्रा प्रमुख लीये तथा मूके. 'पारिठावणिआसमिति' ते लघु नीति तथा वडी नीतिने द

ष्टियें जोइ पूंजीने "अणुजाणहजस्सुग्गहो" ए पद कहीने परठवे, पठी त्रण वार वोसिरे कहे, मात्रे प्रमुखे चिंजेली नूमी उपरे परठवे तो पंचेंड्यिनी घातनो करनार जाणवो. ए पांच मली तेत्रीश गुणो थया. (तिगुत्तो के०) त्रण गुप्तिउं एटले देशथी अथवा सर्वथी जे योगनी निवृत्ति तेने गुप्ति कहियें. ते त्रण प्रकारे ठेः—मनोगुप्ति, वचनगुप्ति तथा कायगुप्ति. तेमां वली मनोगुप्ति त्रण प्रकारे ठेः—असत्कल्पनावियोगनी, समताजाविनी तथा आत्मारामता. तेमां आर्त्त तथा रौड् ध्यानने अनुयायि ते शत्रु तथा रोगादिक माठी वस्तुनी अपेक्षायें हिंसादिक आरंज संबंधी जे मनोयोगनी निवृत्ति ते असत्कल्पनावियोगनी मनोगुप्ति कहियें. ए गुप्ति, प्रसन्नचंड्रादिक साधुनी पठे अशुज ध्यान तथा अशुज जावनाथी मनने निवृत्तावववाने प्रस्तावे थाय ठे. बीजी सिद्धांतने अनुसारे धर्मध्यानने अनुयायि जावनायें करी सहित परलोक साधक एवी समता परिणामरूप जे मनोयोगनी निवृत्ति, ते समताजाविनी मनोगुप्ति कहियें. ए गुप्तिनो अवकाश शुज जावना तथा शुजध्यानना अनिमुख काले होय. त्रीजी शैलेशीकरण काले सकल मनोयोगनी निवृत्ति, ते आत्मारामता मनोगुप्ति जाणवी. हवे बीजी वचन गुप्ति बे जेदे ठेः— एक मौनावलंबिनी ने बीजी वाग्नियमिनी. तेमां पहेली ए जे संज्ञा, होंकारो, खोंखारो, पाषाण तथा काष्ठनुं फेकवुं, नेत्रपल्लवी तथा करपल्लवी प्रमुखनें ठांमवे करी मौन करवुं, अथवा सकल जाषायोगनुं रूंधवुं, ते मौनावलंबिनी जाषागुप्ति कहियें. ए गुप्ति, ध्यान तथा पूजाना काले होय ठे. बीजी जणवुं, जणाववुं, पूठवुं, प्रश्ननो उत्तर देवो, धर्मोपदेश देवो, परावर्त्तना प्रमुखने काले यतनापूर्वक तथा शास्त्रने अनुसारे मुखे वस्त्रादिक देइने बोलतां जे सावद्ययोगनी निवृत्ति, ते वाग्नियमिनी जाषागुप्ति कहियें. त्रीजी कायगुप्ति ते बे जेदें ठेः—एक चेष्टानिवृत्तिरूप तथा बीजी यथासूत्रचेष्टानियमिनी. तेमां प्रथम कायोत्सर्गावस्थायें काययोगनी स्थिरता अथवा सकलकाय योगनुं रूंधवुं ते चेष्टानिवृत्तिरूप कायगुप्ति कहियें. बीजी शास्त्रना अनुसारे सूवुं, बेसवुं, मूकवुं, लेवुं, जवुं, आववुं, ऊनुं रहेवुं. इत्यादिक ठामे कायायें करी पोताने ठंदें प्रवृत्तती चेष्टाथी निवृत्ते, तेने यथासूत्रचेष्टानियमिनी कायगुप्ति कहियें. इहां गुप्तिने काले जे शुद्धोपयोग ते जावगुप्ति कहियें, ए त्रण गुप्तिउं अने प्रथमना तेत्रीश मली

(छत्तीसगुणोगुरुमज्झ के०) छत्रीश गुणें करी सहित गुरु मुज प्रत्यें थाउ.
हवे श्री उपाध्यायजीना पच्चीश गुणो कहे छेः—अगीयार अंग तथा बार उपांग, ए त्रेवीशने जणे तथा जणावे अने चरणसित्तिरी, तथा करणसित्तिरी ए बेहुने शुद्ध रीतें पाले, ए सर्व मली पच्चीश गुणो जाणवा.
हवे साधुना सत्तावीश गुणो कहे छेः—"छवय छक्काय रक्खा, पंचिंदिय लोह निग्गहो खंती ॥ जावविसोहि पडिले, हणाय करणे विसुद्धीय ॥१॥ संजम जोए जुत्तो, अकुसल मण वयण काय संरोहो ॥ सीयाइ पीडसहणं, मरणं उवसग्गसहणं च ॥ २ ॥" अर्थः—६ (छवय के०) पांच महाव्रत तथा छठुं रात्रिजोजनविरमण, ए छ व्रत पाले; १२ (छक्कायरक्खा के०) पोताना आत्मानी पठें छकायनी रक्षा करे; १७ (पंचिंदियलोहनिग्गहो के०) पांच इंद्रियो तथा छठो लोज तेनो निग्रह करे, १० (खंति के०) क्षमा करे, २० (जावविसोहि के०) जावविशुद्धि ते चित्तनी निर्मलता करे, २१ (पडिलेहणायकरणेविसुद्धीय के०) बाह्य उपकरणादिकनुं पडिलेहण विशुद्धियें उपयोगसहित करे, २२ (संजमजोएजुत्तो के०) संयमना योग, तेणें करी सहित, एटले संयमने अनुकूल एवा समितिगुप्त्यादिरूप योगने आदरे, अविवेक, विकथा, निद्रादिक प्रमाद योगने छांमे, एटले २५ (अकुसलमणवयणकायसंरोहो के०) माठे गमें मन, वचन तथा काय प्रवर्त्तता होय तेउने रोकी राखे, २६ (सीआइपीडसहणं के०) शीतादिक बावीश परिसहनी पीडाने सहन करे, २७ (मरणंउवसग्गसहणंच के०) मरणांत उपसर्ग सहे पण धर्म मूके नही. ए साधुना सत्तावीश गुणो जाणवा. ए सर्व, पांच परमेष्ठीना मलीने एकशो ने आठ गुणो थया.
हवे श्री नवकारनो महिमा कहे छेः—गाथा "नवकार इक्क अरकर, पावं फेडेइ सत्त अयराणं; पन्नासं च पएणं, सागर पणसय समग्गेणं ॥१॥ जो गुणइ लरक मेगं, पूएइ विहीइं जिण नमुक्कारं ॥ तिछयरनाम गोअं, सो बंधइ नत्नि संदेहो ॥ २ ॥ अठेवय अठसया, अठसहस्सं च अठ कोडीउ ॥ जो गुणइ जत्तिजुत्तो, सो पावइ सासयं ठाणं ॥ ३ ॥ ए श्री नवकारने जावसहित विधियें जपतां श्रीगुरुदत्त आम्नाय आस्थान विशेषें करी इह लोकें अने परलोकें समस्त वांछित फलनी सिद्धि थाय.
॥ इति श्री नवकारनो बालावबोधः संपूर्णः ॥

हवे जेम साधुनें एक अहोरात्रमां सात वार चैत्यवंदन करवुं कह्युं छे, तेम श्रावकने पण सम्यक्त्वनी शुद्धिने अर्थें नित्य प्रत्यें जघन्यथी त्रणवार, पांच वार अने उत्कृष्टथी सात वार चैत्यवंदन करवुं कह्युं छे,तेम वली गुणवंतनी नक्तिने अर्थें गुरुने वांदणां देवां तथा सर्व ज्ञानादि पंचाचार विशुद्धिने अर्थें सांज तथा सवार मली बेहु कालें त्रस स्थावर प्राणीयें करी रहित एवा प्रेक्षित प्रमार्जित स्थानकने विषे गुरुसाक्षिक ब आवश्यक रूप प्रतिक्रमण करवुं, कारण के गुरुसाक्षिक अनुष्ठान, अत्यंत दृढ थाय छे, माटे गुरुसाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं. तिहां ए सर्व क्रिया करवी. अने जो गुरुनो अनाव होय तो स्थापनाचार्यनी स्थापना मांमीने ते स्थापना आगल सर्व क्रिया करवी. कारण के आ, दुःखमकाल पांचमो आरो ते मांहे स्थापनानो आधार छे, एम श्रीजिनशासनने विषे दीपक समान श्री जिननद्रगणिक्षमाश्रमण तेमणें कह्युं छे के, गुरुनो उपदेश तेना उपदर्शनने निमित्तें जेम जिनने विरहें श्रीजिनेश्वरनी प्रतिमानी सेवना छे, तेम गुरुना विरहें गुरुनी स्थापना करवी, जेम राजाने अनावें प्रधान राजकाज चलावे छे, तेम गुरुने अनावें स्थापनाचार्यनी गुरुनी पेरें सेवा करवी. ए विनयनुं कारण छे, माटे ते गुरुस्थापनानो पाठ कहे छे.

॥ अथ पंचिंदिय ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो, तह नव विह बंनचेर
गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ अ
ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १॥ पंचमहव्वय जुत्तो,
पंचविहायार पालण समत्थो ॥ पंचसमिउ ति
गुत्तो,बत्तीस गुणो गुरु मज्ऊ॥ २ ॥ इति ॥ १ ॥

अर्थः—(पंचिंदिअ के०) पांचेंडियना शब्दादिक त्रेवीश विषय अनें बशें बावन विकार प्रत्यें (संवरणो के०) संवरणहार एटले रोकनार, (तह के०) तथा (नवविह के०) नवविध एटले नव प्रकारें (बंनचेर के०) ब्रह्मचर्य एटले शीलव्रतनी (गुत्तिधरो के०) गुप्तिना धरनार, एटले शीलनी नव वाडना पालनार, (चउविह के०) चतुर्विध. एटले चार प्रकारना (कसाय के०) क्रोधादिक कषाय थकी (मुक्को के०) मुक्त छे,

एटले मूकाणा छे (इअ के०) ए त्रण, गुरुविशेषण मांहे रह्या जे (अठा रसगुणेहिं के०) अढारे गुण, तेणें करी (संजुत्तो के०) संयुत एटले स हित ॥ १ ॥ (पंचमहव्वयजुत्तो के०) प्राणातिपातादिक पंचाश्रवना त्रि विध त्रिविध त्यागरूप पांच महाव्रतें करी युक्त सहित, (पंचविहायारपाल णसमत्थो के०) ज्ञानादिक पंचविध आचार पालवाने समर्थ,सावधान (पं चसमिउ के०) ईर्यादिक पांच समितिएंकरी समित एटले युक्त, (ति गुत्तो के०) मनोगुप्त्यादिक त्रण गुप्तियें करी गुप्त, एटले गोप्यो छे, पाप थकी आत्मा जेणें ए सात,गुरुना विशेषणो मांहे रह्या जे (छत्तीस गुणो के०) छत्रीश गुण, तेणें करी संपन्न ते (गुरू के०) गुरु छे, एटले स्वामी छें, (मझ के०) माहारो. ए गुरुशब्दनो निरुक्तिथी अर्थ कहे छे. जेम केः– (गु के०) अज्ञान पाप तेने (रु के०) रूंधे, तेने गुरु कहियें. एनो वि स्तारें अर्थ, उपर पंचपरमेष्ठीना अर्थना विवरणप्रसंगें यथानुक्रमें एज बे गाथाउना वर्णनरूपें कर्यो छे, माटे अहीं फरी विस्तार्यो नथी, संक्षेपें ज अर्थ कर्यो छे, एमां गाथा बे छे, पद आठ छे, गुरु एटले बेवडा एवा जारे अक्षर दश छे, लघु एटले बेवडा वर्ण नही एवा अक्षर सित्तेर छे. सर्व मली ए सूत्राना अक्षर एंशी छे. इति गुरुस्थापनायुगलगाथार्थः ॥१॥

आ सूत्रने विषे पांचेंद्रियना त्रेवीश विषयना बशें बावन विकार कह्या छे, जेणे करी जीवने कर्मबंध थाय छे, ते जेदो विवरीने देखाडे छे.

१२ प्रथम कर्णेंद्रियना बार विकार थाय छे. ते आवी रीतें के, ए इंद्रि यना एक सचित्त शब्द, बीजो अचित्त शब्द अने त्रीजो मिश्रशब्द, ए त्रण विषय छे, ते अनुक्रमें मयूर, कोकिल प्रमुखना सचित्त शब्द तथा मृदंग ताल प्रमुखना अचित्तशब्द तथा पुरुष अने स्त्री मध्यें वस्त्रादिक मिश्र जेरी नफेरी प्रमुखना मिश्र शब्द, ए त्रण शुज अने त्रण अशुज मली छ थाय. ते छ रागें अने छ द्वेषें मली बार श्रोत्रेंद्रियना विकार थाय.

६० बीजा चक्षुरिंद्रियना शाठ विकार थाय छे, ते आवी रीतें के, ए इंद्रियना पांच वर्ण रूप पांच विषय छे, तेमां रत्नादिकना पांच शुज अने केशादिकना पांच अशुज मली दश जेद थाय, ते सचेत रत्नादिकना अने अचेत गुली प्रमुखना तथा मिश्र ते स्त्री,पुरुष प्रमुखना ए त्रण जेदें त्रिगुणा करता त्रीश जेद थाय, ते रागें अने द्वेषें बमणा करतां शाठ जेद थाय.

१२ त्रीजा घ्राणेंद्रियना बार विकार थाय छे. ते आवी रीतें के, ए इंद्रियना एक सुरभिगंध अने बीजो दुरभिगंध, एवा बे विषय छे, ते वली सचित्त पुष्पादिकनो शुभ गंध छे, अने लशणादिक सचित्तनो अशुभ गंध छे, तेमज अचित्त कस्तूरी प्रमुखनो शुभ गंध छे अने अचित्त विष्टादिकनो अशुभ गंध छे तथा मिश्र ते पद्मिनीस्त्रीप्रमुखनो शुभ गंध अने शंखिनीस्त्रीप्रमुखनो अशुभ गंध, एम शुभाशुभ ए बे गंधने सचित्त,अचित्त अने मिश्रें गुणतां छ भेद थाय, तेने राग अने द्वेषें गुणतां बार भेद थाय.

७२ चोथा रसेंद्रियना बहोंतेर विकार थाय छे, ते आवी रीतें के, ए इंद्रियना विषय पांच छे तथापि अहीं छ रसना भेद लइने विकार करियें, तेवारें छ रस शुभ अने छ रस अशुभ मली बार थाय. तेने वली सचित्त, अचित्त ने मिश्र,एवा त्रण भेदें गुणतां छत्रीश थाय. ते छत्रीशने रागें अने द्वेषें बमणा करतां बहोंतेर भेदें रसेंद्रियना विकार थाय छे.

९६ स्पर्शेंद्रियना छन्नुं विकार थाय छे, ते आवी रीतें के, ए इंद्रियनो एक हलवो स्पर्श, ते अर्कतुल्य, बीजो गुरुस्पर्श ते वज्रादिक, त्रीजो मृदु स्पर्श ते हांसरुं प्रमुख, चोथो खरस्पर्श ते करवतधार तथा गोजिव्हा प्रमुख, पांचमो शीतस्पर्श ते हिमप्रमुख, छठो उष्ण स्पर्श ते अग्निप्रमुख, सातमो स्निग्ध स्पर्श ते घृतादिक, आठमो लूखो स्पर्श ते भस्मादिकनो. एवा आठ स्पर्शरूप आठ विषय छे, ते पुष्पादिक सचित्त अने माखण प्रमुख अचित्त तथा स्त्री पुरुष मिश्र, एम सचित्त, अचित्त अने मिश्रना भेदें त्रण गुणा करतां आठ त्रिक चोवीश थाय, ते चोवीश सारा अने चोवीश नरसा गणतां अडतालीश थाय,तेने वली राग अने द्वेषें गुणतां छन्नुं थाय. ए रीतें श्रोत्रेंद्रियना बार, चक्षुरिंद्रियना शाठ,नासिकाना बार,जिव्हाना बहोंतेर अने स्पर्शेंद्रियना छन्नुं, मली विकारना भेद बशें ने बावन थाय छे.

एं रीतें नवकारपूर्वक गुरुस्थापना करीने हवे इरियावही पडिक्कम्या विना चैत्यवंदन, सज्झाय, सामायिक, पोसह, पडिक्कमणुं, कांइ पण कीधुं सूजे नही. उक्तं च श्रीआगमे "इरियावहिआए अपडिक्कंताए न कप्पइ किंपि चेइयवंदण सज्झाआवस्सयाइकाउ" ते भणी प्रथम इरियावहि सूत्र वखाणीयें छयें. ते इरियावहिने धुरें खमासमण आपीयें, ते आवी रीतेंः—

॥ अथ खमासमण अथवा प्रणिपात ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जा
ए निसीहिआए मच्छएण वंदामि॥इति ॥३॥

अर्थः-(खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण ! एटले क्षमादिक दश विध यतिधर्मने विषे प्रधान सावधान एवा हे क्षमासहित श्रमण तपस्वी ऋषीश्वर साधुजी, एवा आमंत्रणें करी गुरुने बोलावीने कहियें के, तमारा चरणकमल प्रत्यें. (जावणिज्जाए के०) यापनीयया एटले शक्तिसहित एवी जे (निसीहिआए के०) नैषेधिक्या एटले आपणी तनु जे शरीर, तेणें करी (वंदिउं के०) वंदितुं एटले वांदवाने (इच्छामि के०) हुं वांछु छुं, इच्छुं छुं. एटलुं उना रहतांज कहियें. पछेवी, संमासा, बे जानु, ललाट, माथो हाथ अने भूमिका प्रमार्जी बे जानु, बे हाथ, अने पांचमुं ललाट, ए पंचांगें करी भूमि फरसतो थको (मच्छएण वंदामि) एवुं कहे, एटले (मस्तकेन वंदामि के०) मस्तकें करी तमोने हुं वांडं छुं,एम कहे. ए सूत्र मां त्रण गुरु, अने पच्चीश लघु, मली अठावीश अक्षरो छे ॥ ३॥

फरी उनो थइ बे हाथ जोडीने नीचें मुजब समाचारी कहे.

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृच्छा ॥

इच्छकार, सुहराइ, सुहदेवसि, सुखतप, शरीरनिरा बाध, सुख संजम जात्रा, निर्वहोछोजी, स्वामी शाता छेजी, भात पाणीनो लाभ देजोजी ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थः-(इच्छकार के०) इच्छा करुं छुं. (सुहराइ के०) सुखेरात्री,(सुह देवसि के०) सुखें दिवस, (सुखतप के०) सुखें तपश्चर्यामां (शरीरनि राबाध के०) शरीरसंबंधी निराबाध पणामां एटले रोगरहितपणामां (सुखसंजमजात्रा के०) सुखें संयमयात्रामां (निर्वहोछोजी के०) प्रवर्त्तो छो जी, स्वामीजी शाताछेजी ॥ ४ ॥ एवी सुखशाता पूछीने पछी एमज उनो थको बे हाथ जोडी इरियावहियंनो पाठ कहे. ते लखीयें छैयें.

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं ॥

अर्थः-(इच्छाकारेण के०) इच्छाकारि पूर्वक एटले तमारी इच्छा पूर्वक पण म्हारा वचनने बलात्कारें तथा दाक्षिण्य पणे नही, परंतु तमारी इच्छा होय तो (जगवन् के०) हे ज्ञानवंत ! महाजाग्य, पूज्य, (संदिसह के०) आदेश आपो आज्ञा करो, तो (इरियावहियं के०) चालवानो मार्ग तथा साधु श्रावकनो मार्ग,जे सर्वविरति देशविरतिरूप तेने विषे थइ होय, जे जीवबाधादिक सपापक्रिया तथा अतिचाररूप मलिनता ते पाप थकी निवर्त्तवानो जे साधु तथा श्रावकनो आचार छे, ते प्रमाणे हुं (पडिक्कमामि के०) प्रतिक्रमुं, निवर्त्तुं, पाछो वलुं. तेवारें गुरु कहे के (पडिक्कमह के०) एटले निवर्त्तो, पाप टालो. तेवारें शिष्य कहे के, (इछं के०) प्रमाण छे. एटले जेम तमें आज्ञा दीधी, तेमज हुं तमारो आदेश अंगीकार करुं छुं,मस्तकें चढावुं छुं. ए आदेश मागवाना सूत्रामां त्रण गुरु अक्षर अने त्रेवीश लघुं अक्षर छे, सर्व मली छवीश अक्षरो छे ॥

॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥

अर्थः-हुं पण एटलुंज (इच्छामि के०) अनिलषामि एटले वांछुं छुं, जे (इरियावहियाएविराहणाए के०) ऐर्यापथिक्या विराधनया एटले गमन छे प्रधान जेमां एवो जे मार्ग, तेने इरियापथ कहियें अने ते मार्गने विषे थती एवी जे जंतुउनी विराधना तेने ऐर्यापथिकी विराधना कहियें. अथवा ऐर्यापथिक ते साधु तथा श्रावकनो आचार एटले ध्यान मौनादिक जे जिक्षुनुं व्रत, तेने विषे थयेली जे आचारातिक्रमरूप व्रतने बाधा तेने ऐर्यापथिकी विराधना कहियें. तेनेज सपाप क्रिया कहियें. ते थकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमितुं एटले प्रतिक्रमवाने निवर्त्तवाने हुं वांछुं छुं इछुं छुं अहीं्यां पडिक्कमवाने अत्यंत उजमाल थयो, ए संबंधें पहेला बे पदनी अन्युपगम नामें प्रथम संपदा थइ. जे आलोचना लक्षण रूप कार्यनुं अंगीकार करवुं ते अन्युपगम संपदा जाणवी एमां लघु अक्षर छ तथा गुरु बे मली आठ अक्षर छे अने बीजी इरियावहियादिक बे पदनी निमित्त संपदा कही ते अंगीकार कृत वस्तुने उपजवाना कारण रूप छे माटे एनुं निमित्त एवुं नाम छे एमां पण बे पद छे,अने लघु अक्षर बार छे॥२॥

हवे ते विराधनारूप सपापक्रिया शुं करवाथी थाय? ते कहे छे.

॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥

अर्थः—(गमणागमणे के०) गमनागमने एटले पोताना स्थानक थकी परस्थानके जवुं, तेने गमन कहियें अने परस्थानक थकी पोताने स्थानके आववुं, तेने आगमन कहियें तेने विषे जे जीवोनी विराधना थइ होय. अहीं विशेष न कह्युं माटे ए सामान्य प्रकारे प्रायश्चित्त उपजाववा रूप एक पदनी त्रीजी उंघ ते सामान्य हेतु संपदा जाणवी. केमके जीवहिंसा उपजाववानुं सामान्यहेतु ते गमनागमन छे;एमां लघु अक्षर छ छे॥३॥

हवे त्यां परस्थानके जतां अने स्वस्थानके आववाने विषे विराधना केम थाय? ते कहे छे.

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥

अर्थः—(पाणक्कमणे के०) प्राण्याक्रमणे एटले बेंद्रिय, तेंद्रिय अने चौरिंद्रिय, जीवोनें प्राणी कहियें, ते जीवोने आक्रमण एटले पगें करी चांपवा थकी तथा (बीयक्कमणे के०) बीजाक्रमणे बीज एटले शालि, गोधूम, यंव, शरशवादिक सर्वजातिनां धान्य प्रमुख जे वाव्यां छतां उगी आवे, ते बीज जाणवां, तेने आक्रमण एटले पगें करी चांपवाथी तथा (हरियक्कमणे के०) हरिताक्रमणे, हरित एटले नीलवर्णवाली एवी जे मूलस्कंधादिक दश प्रकारनी वनस्पति, तेने आक्रमण एटले पगें करी चांपवा थकी. एमां पाछला बे पदे करी सर्व बीज अने सर्व वनस्पतिने विषे जीवपणुं कह्युं जे माटे जीवनां लक्षण, सर्व एउमां संपूर्ण दीठामां आवे छे, ते आ प्रमाणेः—मनुष्यना शरीरनी पेठे वनस्पतिनुं शरीर पण बाल, कोमल, तरुण तथा वृद्धता प्रमुखे करी सहित दीठामां आवे छे तथा जेम हाथ तथा पगादिक अवयवोयें करी मनुष्यनो देह वृद्धिने पामे छे, तेम शाखादिक अवयवोयें करी वृक्षनी वृद्धि पण थाय छे. तथा जेम मनुष्यादिक प्राणीयोमां जाग्रत् तथा निद्रा अवस्था दीठामां आवे छे तेम पुआड तथा आमली प्रमुख वृक्ष, चंद्रविकासिक तथा सूर्यविकासिकादिक कमल, अने अंबाडी पुष्पादिकमां निद्रा तथा जाग्रतादिक अवस्था दीठामां आवे छे. तथा लोभ, हर्ष, लज्जा, जय, मैथुन, क्रोध, मान, माया, लोभ, आहार,

उघसंज्ञा, इत्यादिक सर्व विकार, वृक्षोनें पण मनुष्यनी पेठे थता दीठामां आवे ठे. जेम के, श्वेत आकडानुं वृक्ष तथा बीज पलाशादिक वृक्ष, नूमिगत निधानने पोताना मूलनी जडे करी वींटी लिये ठे, ते लोजनो नाव जाणवो, वर्षाकालने विषे मेघनी गर्जना सांजलीने शीतल वायुना फरसे करी अंकुर उत्पन्न थाय ठे, ते हर्षनो नाव जाणवो. लज्जालु वेलि, मनुष्यना हाथ वगेरे अंगना स्पर्शथकी संकोचाई जाय ठे; ए लज्जा तथा नयनो नाव कहेवाय; अशोकवृक्ष, बकुलवृक्ष तथा तिलकवृक्षादिक नवयौवनस्वरूप सालंकार कामिनीना पगनी पानिना प्रहारे करी, तेना मुखनो तांबूलरस ठांटवाथी, तेना करेला सस्नेहालिंगन वडे तथा तेना करेला हावनाव कटाक्षविक्षेपेकरी तत्काल फलता दीसे ठे; ए मैथुनसंज्ञानो नाव जाणवो. कोकनद वृक्षनो कंद मनुष्यनो पग लाग्याथी हुंकारा मूके ठे; ए क्रोधनो नाव जाणवो. रुदंती वेल, अहो हुं ठतां आ लोको डुःखी कां थाय ठे? एवा अहंकारे करी निरंतर अश्रुपात करे ठे, केम के, तेना योगथी सुवर्णनी सिद्धि थाय ठे; माटे ए माननो नाव जाणवो. प्रायें घणुं करीने बधी वेलीयो पोत पोतानां फलोने पांदडायें करी ढांकी लिये ठे, ए मायानो नाव जाणवो. तथा नूमिका जलादिक आहारना योगे वृक्षोनी वृद्धि थाय ठे; अने ते विना दिवसे दिवसे कुमलाई जाय ठे. मनुष्यनी पेठे नागरवेलि प्रमुखने तिलवटी गोमय तथा डुग्धादिकना दोहला उपजे ठे. ते परिपूर्ण थया पठी पत्र, फल, फूल, तथा रसनी वृद्धि थाय ठे; ए पण आहारसंज्ञानो नाव जाणवो. वृक्षने पांमू, गांठ, उदरवृद्धि, सोजो तथा डुर्बलपणुं प्रमुख रोगे करी फूल, फल, पान, त्वचाने विकार दीसे ठे. तथा सर्व वनस्पतिना आउखां पोत पोताना नियतज होय ठे; इष्ट तथा अनिष्ट आहारनी प्राप्तियें करी वृक्षो पुष्ट तथा अपुष्ट थाय ठे; वेलीउ मार्गने मूकीने वृक्षनी उपरज चढे ठे; ए उघसंज्ञानो नाव जाणवो. इत्यादिक युक्तियें करी श्री आचारांगना पहेला श्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां सविस्तर जीवपणुं थाप्युं ठे. अहीं कोइ पूठे के, जो वनस्पति जीवरूप होय तो ठेदन तथा नेदन प्रमुख करतां कां रुदन करता नथी? अथवा नाशी जता नथी? एनो उत्तर ए ठे के, मनुष्यनी पेठे वनस्पतिने मुख, पग, तथा हाथ प्रमुख अवयवोनो अनाव ठे अने इया

वर कर्मना उदयथी नासवाने बनतुं नथी, तो पण तेउनें अव्यक्त वेदना होयज छे. जेम कोइ एक आंधलो, बहेरो, बोबडो, ठुंगो, पांगलो अने विषम वायुना विकारे करी थंन्नाणो थको सर्व अंगोपांगना व्यापाररहित एवो पुरुष होय, तेने कोइ ताडनप्रमुख करे, तो तेथी ते सहन थाय नही पण मुखादिकना अनावें रोइ तथा नाशी शके नही तथापि तेने वेदना तो थायज छे. ते माटे कोइ मोंहोटा अवश्य प्रयोजन विना वनस्पतिनी विराधना करवी नही (उसा के०) अवश्याय एटले गार, एथी आकाश थकी जे सूक्ष्म अप्काय पडे, तेनुं ग्रहण करवुं. ए सूक्ष्म अप्कायनी विराधना आकरी पापहेतु छे. एम जणावे छे. उक्तं च श्री आगमे "एगंमि उदगबिंदुमि, जे जीवा जिणवरेहि पन्नत्ता ॥ ते जइ सरिसिव मित्ता, जंबूदीवे नमायंति ॥ १ ॥" तथा (उत्तिंग के०) गर्द्दन्नाकार जीवो, नूमिनें विषे वृत्ताकार घर करीने रहे, अर्थात् नूमिने विषे गोल विवरना करनार जेनुं नुईया एवुं नाम होय छे, ते जाणवा. अथवा उत्तिंग शब्दें करी कीडीउनां नागरां पण जाणवां. (पणग के०) पनक एटले पांचवर्णी नील फूल जाणवां. (दगमट्टि के०) दकमृत्तिका एटले जे सचित्त नूमिकायें सचित्त पाणीने योगें करी कादव थाय, अर्थात् पाणी अने माटी, ए बे नेला मलेला कादा कीचड जाणवा अथवा दग एटले पाणी अने मट्टि एटले माटी एम बन्ने पदना अर्थ जूदा जूदा पण जाणवा. (मक्कडा के०) मर्कट एटले कोलीआवडाना (संताणा के०) संतान एटले जाल ए कोलीआवडानी जालने मर्कटसंतान कहियें. ए सर्व पांच अथवा छ जातिना जीवोने (संकमणे के०) संक्रमणं एटले पगे करी पीड्या थकी अथवा चांप्या थकी, पगादिकें करी मसलवा थकी, मथन करवा थकी, ताडन, तर्जन करवा थकी जे कांइ विराधना थइ होय. ए विशेष पणे बीजादि आक्रमण रूप चार पदनी इत्वर एटले विशेषहेतु नामे चोथी संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर बत्रीश अने गुरु अक्षर छ छे, सर्व मली अडत्रीश अक्षरो जाणवा॥४॥

हवे घणु शुं कहेवुं परंतु एकज पदे करी सर्व जीवोनी
विराधना कहियें छयें.

जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥

अर्थः–(जेमेजीवाविराहिया के०) ये मया जीवा विराधिताः एटले

जे कोइ जीवो में विराध्या होय, दुःखमांहे पाड्या होय, एमां जीव विराध्या एम सामान्यें कह्युं पण एकेंद्रिय,बेंद्रिय, इत्यादिक विस्तारें न कह्युं माटे ए सकल जीवना परितापरूप एक पदनी पांचमी संग्रहसंपदा जाणवी. एमां सर्व लघु अक्षर आठ छे ॥ ५ ॥

हवे ते कया जीव में विराध्या एटले दुःखीया कीधा? ते कहे छे.

॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥ ६ ॥

अर्थः—(एगिंदिया के०) एकेंद्रियाः एटले जेने शरीररूप एकज इंद्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पतिरूप पांच प्रकारना स्थावर जीवने एकेंद्रिय जाति कहियें, ते वली पांचे स्थावरना पण एकेंकाना अनेक भेद छे, ते जीवस्वरूप कुलकथकी जाणवा. हवे त्रसजीव कहे छे. (बेइंदिया के०) द्वींद्रियाः एटले जेने शरीर अने मुख ए बे इंद्रियोज होय, एवा कृमि, शंख. शीप, जलो, गंडोला, अलसीया प्रमुख जेने पग न होय तेने बेंद्रिय जीव कहियें. (तेइंदिया के०) त्रींद्रियाः एटले जेने शरीर, मुख तथा नासिका, ए त्रणज इंद्रियो होय एवा गदहिया, कुंथुआ, जू, लीख, मांकण, कीडी, मकोडो प्रमुख जेने आठंधिका पग होय अथवा जेने मुखाग्रे शिंग होय ते सर्व त्रेंद्रिय जीव जाणवा. (चउरिंदिया के०) चतुरिंद्रियाः एटले जेने शरीर, मुख, नासिका अने आंख, ए चारज इंद्रिय होय एवा माखी, कुती, मच्छर, डांस, विंछी, कोलीयावडा, चांचड, भमरी, टीड प्रमुख जे जे उडनारा जीव होय, जेने छ अथवा आठ पग होय. तथा मस्तकें शिंग होय, ते सर्व चतुरिंद्रिय जीव जाणवा. (पंचिंदिया के०) पंचेंद्रियाः एटले जेने शरीर, मुख, नासिका, आंख अने कान, ए पांचे इंद्रिय होय एवा जलचर ते मत्स्य कच्छपादिक तथा स्थलचर ते सिंहव्याघ्रादिक अने खेचर ते हंस मयूरादिक, पक्षीउ ए तिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव अने नारकी, ए सर्व पंचेंद्रिय जीव कहियें. ए पांच बोल मध्यें सर्व संसारी जीव आवी गया, एमां एकेंद्रिय, बेंद्रिय, एम जीवनां नाम कह्यां, तेथी ए एकेंद्रियादिक, जीवभेद देखाडवा रूप पांच पदनी जीव संपदा छठी जाणवी. एमां सर्व मली ए कवीश लघु अक्षरज छे. ॥ ६ ॥

हवे ए जीवोने केवी केवी रीतें विराध्या? तेनो प्रकार कहे छे.

अभिहयां, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थः-(अभिहया के०) अभिहताः तिहां अभि एटले सामा आवताने पगें करी हता एटले हण्या, अथवा उपाडीने परहा पटकाव्या एटले परहा नाख्या, तेने अभिहता कहियें तथा (वत्तिया के०) वर्त्तिताः एटले पूंजीने एकठा कीधा एक ढगले कीधा, अथवा धूलें करी किंवा कर्दमें ढांक्या, तेने वर्त्तिता कहीयें. तथा (लेसिया के०) श्लेषिताः एटले भूमियें घश्या तथा भींतादिकें लगाड्या अथवा लगारेक मसल्या तेने लेसिया कहियें. (संघाइया के०) संघातिताः एटले मांहो मांहे शरीरने मेलववे करी पिंमीभूत कीधा, एकठा मेलव्या तेने संघातिता कहियें, तथा (संघट्टिया के०) संघट्टिताः एटले थोडो स्पर्श करवे करी दुहव्या, (परियाविया के०) परितापिताः एटले समस्त प्रकारें ताप्या, पीड्या, परिताप उपजाव्यो, (किलामिया के०) क्लामिताः एटले गाढी किलामणा ग्लानी उपजावीने निस्तेज कीधा, निटोल कीधा, मार्या नही पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया के०) अवद्राविताः एटले उत्रासित त्रास पमाड्या अर्थात् शेष जीव रह्यो पण हाली चाली न शके,एवा कीधा, तथा (ठाणाउ ठाणं संकामिया के०) स्थानात् स्थानं संक्रामिताः एटले (ठाणाउ के०) एक स्थानक थकी उपाडीने (ठाणं के०) बीजे स्थानकें (संकामिया के०) संक्रमाव्या (जीवियाउववरोविया के०) जीविताद्व्यवरोपिताः मारिताः एटले (जिवियाउ के०) जीवितव्य थकी (ववरोविया के०) चूकाव्या जूदा कीधा, अथवा मार्या. ए अभिहया इत्यादिकें करी जे एकेंद्रियादिक जीवोनी विराधना थइ होय (तस्स के०) ते संबंधी जे अतिचार लाग्या, तेने (दुक्कडं के०) दुष्कृत एटले पाप कहियें, ते दुष्कृत (मि के०) मे एटले माहारुं मन, वचन, कायायें करी (मिच्छा के०) मिथ्या एटले निष्फल थाउ. हवे वली एवां पाप न करुं. इति भावः ॥ एमां अभिहया इत्यादिक विराधनानां नाम दीधां, माटे ए जीवादिक भेदने परितापना

विराधना रूप अगीआर पदनी विराधना नामें सातमी संपदा थइ. एमां लघु अक्षर एकावन, गुरु अक्षर ठ छे, सर्वाक्षर सत्तावन छे, हवे मिच्छा मिडुक्कडं ए पदनो अक्षरार्थ समासेंकरी कहे छे. जेमकेः—" मित्ति मउव च्छत्ते, छत्तिय दोसाणछायणे होइ ॥ मित्तिय मेराइट्ठिउ, डुत्ति डुगंछामि अप्पाणं ॥ १ ॥ कत्तिय कडमे पावं, डत्तिय डवेमि तं उवसमेणं ॥ एसो मिच्छा डुक्कड, पयरकरच्छो समासेणं ॥ २ ॥" अर्थ—(मित्तिमउवच्छत्ते के०) मिकार जे छे ते मृडु सुकुमाल अहंकाररहित पणाने अर्थें छे, (छत्तियदोसाणछायणेहोइ के०) छकार जे छे ते, दोषना ढांकवाने अर्थें छे. (मित्तियमेराइट्ठीउ के०) मिकार जे छे, ते मर्यादामां रहेवाने अर्थें छे. (डुत्तिडुगंछामिअप्पाणं के०) डुकार जे छे, ते पापकारि आत्माने डुगंछवाने माटें छे. (कत्तियकडमेपावं के०) ककार जे छे ते में जे पाप कीधुं तेने (डत्तियडवेमितंउवसमेणं के०) डकारें करी दहुं छुं, बालुं छुं, उपशमावुं छुं. (एसोमिच्छाडुक्कड के०) ए मिच्छा मिडुक्कडंनो (पयरकरच्छोसमासेणं के०) पदाक्षरार्थ, समासें करीने कह्यो.

ए इरियावहिने सम्यक् प्रकारें मन,वचन अने कायायें करी त्रिकरण शुद्धें पडिक्कमतां मिच्छाडुक्कडंना देनारने क्षणेकमां मृगावतीनी पेरें सर्व कर्मोनो क्षय थाय. तिहां सर्व मली पांचशे ने त्रेशठ जातिना जीवो छे, तेनी साथें मिच्छामिडुक्कडं दइयें, तेवारें अढार लाख, चोवीश हजार, एकशोने वीश एटला मिच्छामिडुक्कड देवाय, ते आवी रीतेंः—तिहां प्रथम पांचशोने त्रेशठ स्थानकें जीव उपजे छे, ते स्थानकोनुं विवरण करे छेः—

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय तथा वाउकाय. ए चार स्थावरने सूक्ष्म तथा बादर करतां आठ भेद थाय. अने पांचमा वनस्पतिकायना त्रण भेद छेः—एक सूक्ष्म निगोद रूप तथा बे प्रकारनी बादर, एक प्रत्येक ने बीजी साधारण, ए पांच स्थावरना मलीने अग्यार भेद थया; तथा बेइंद्रिय, ते इंद्रिय ने चउरिंद्रिय,ए त्रणे विकलेंद्रिय कहेवाय छे. ए संमूर्छिमज होय छे. ए त्रण पेला अग्यारनी साथें मेलवीयें एटले चौद भेद थाय; ते चउद पर्याप्ता तथा चउद अपर्याप्ता मली अठावीश भेद थाय. हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना दश भेद कहे छेः—तेमां सर्व प्रकारना मत्स्यादिक जलचरनो एक भेद. थलचरना त्रण भेद, तेमां एक घोडा प्रमुख चतुष्पाद, आशीविष प्रमुख उरःपरिसर्प, अने गोह प्रमुख भुजपरिसर्प ए थलचरना त्रण

नेद अने चार प्रकारना खेचरनो एक नेद, ए सर्व मली पांच गर्नज अने पांच संमूर्छिम मली दश नेद थाय. ए दशने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणीएं त्यारें वीश नेद थाय. ए वीशमां पेला अठावीश मेलवीयें, त्यारें अडतालीश थाय. ए तिर्यंचना नेद जाणवा. हवे नारकीना नेद कहे ले. रत्नप्रना, शर्कराप्रना, वालुकप्रना, पंकप्रना, धूमप्रना, तमप्रना तथा तम तमप्रना, ए सात नरकना नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली चौद नेद थाय; तेमां पाछला अडतालीश मेलीएं. त्यारें बाशठ थाय. हवे मनुष्यना नेद आ प्रमाणेः—पांच नरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह, ए कर्मनूमिना पंदर नेद; पांच हेमवंत, पांच हिरण्यवंत, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तरकुरु, ए अकर्मनूमिना त्रीश नेद अने छपन्न अंतर द्वीपो कहेवाय ले. ए छपन्ननी साथें पेला कर्म नूमिना पंदर तथा अकर्मनूमिना त्रीश मेलवीयें, त्यारें एकशोने एक नेद मनुष्य जातिना थाय एमां गर्नज मनुष्यना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली बशेंने बे नेद थाय अने तेनी सार्थे एकशो ने एक अपर्याप्ता संमूर्छिम मनुष्यना नेद मेलवीएं, त्यारें त्रणशें ने त्रण नेद थाय. अने बाशठ प्रथम तिर्यंचना कह्या, ते सर्व एकठा कस्याथी त्रणशें ने पांशठ नेद थाय.

हवे देवताना एकशो ने अठाणुं नेद कहिये बैएंः— प्रथम परमाधामिना पंदर, दश नुवनपति, आठ व्यंतर, आठ वाणव्यंतर, दश ज्योतिषी, तेमां पांच चर ने पांच स्थिर जाणवा. त्रण किल्बिषिया, दश तिर्यक्जृंनक, पांच नरत तथा पांच ऐरवत, ए दश क्षेत्रना दश वैताढ्यने विषे "अन्ने पाणे सयणे, वड्ढे लेणयपुप्फफलपुवा ॥ बहुफल अविवत्ति जुआ, जंनगा दसविहा हुंतीति जंनकाः ॥ १ ॥" नव लोकांतिक, बार देवलोकना, नव ग्रैवेयकना, पांच अनुत्तर वेमानना, ए सर्व मलीने नवाणुं थया ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता, ए बे नेदें करतां एकशो ने अठाणुं नेद थाय. तेने पाछला त्रण शो ने पांशठमां नेलीएं, त्यारें पांचशो ने त्रेशठ सर्व जीवो नां उत्पत्तिस्थानक थाय. तेने 'अनिहया' इत्यादिक दश पद वडे दश गुणा करियें, त्यारें पांच हजार छशें ने त्रीश थाय ; ते वली राग ने द्वेषथी बमणा करियें, त्यारें अग्यार हजार बशे ने शाठ थाय; ते मन, वचन ने कायायें करी त्रण गुणा करियें, त्यारें तेत्रीश हजार, सातशें ने एंशी था

य; ते करवा, करावववा तथा अनुमोदनथी त्रण गुणा करियें, त्यारें एक लाख, एक हजार, त्रणशें ने चालीश थाय. ते अतीत, अनागत तथा व र्त्तमान कालें करी त्रण गुणा करियें,त्यारें त्रण लाख चार हजार ने वीश थाय. ते अरिहंतनी साखें, सिद्धनी साखें, साधुनी साखें, देवनी साखें, गुरुनी साखें, तथा आत्मानी साखें, ए बनी साथें ब गुणा करियें त्यारे अढार लाख, चोवीश हजार, एक शो ने वीश, मिछामिडुक्कड थाय. एवी रीतें जीवने खमत खामणां कीजें, ए इरियावही पडिक्कमतां शुभ ध्यानें करी अनेक घोर पाप विलय थाय ॥ ५ ॥

हवे ए आलोया पडिक्कम्या जे अतिचार, तेनुं उत्तरीकरण एटले वली विशेष शुद्धि करवाने अर्थें काउस्सग्ग करवाने वां बतो थको तस्सउत्तरीनो पाठ कहे, ते आवी रीतेंः—

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं, पायछित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं क म्माणं निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ६ ॥

अर्थः—हवे एवी रीतें आलोवतां, पडिक्कमतां पण जे कांइ पापसहि त आत्मा रह्यो होय, (तस्स के०) तेनीज वली विशेष शुद्धिने अर्थें जे कांइ आगल करवुं, तेने (उत्तरीकरणेणं के०) उत्तरीकरण एटले विशेषें करी वली उपर शुद्ध करवुं तेने उत्तरीकरण कहियें, ते आगल तो हवे काउस्सग्ग करवुं बे माटे कायोत्सर्गे करवे करीने विशुद्धि करुं बुं, एटले जे अतिचारनुं आलोयण प्रमुख पूर्वें कीधुं बे तेनी वली वशेष शुद्धिने अर्थें कायोत्सर्ग करुं बुं, वली ते कायोत्सर्ग तो (पायछित्तकरणेणं के०) शुद्ध प्रायश्चित्त करवे करीने होय, एटले गुरु पासें पाप आलोवीयें, पछी गुरुयें दीधुं एवुं जे आलोयणानुं तप, तेने प्रायश्चित्त कहियें. प्रायः घणुं चित्त ए टले मन अथवा जीव तेने शोधे बे, तेने प्रायश्चित्त कहियें अथवा पापने बेदे, तेने प्रायश्चित्त कहियें. ते काउस्सग्गने करवे करी पाप बेदाय, आत्मा पापरहित थाय. वली ते प्रायश्चित्त पण (विसोहीकरणेणं के०) विशेषें

शोधवुं तेने विशोधीकरण कहियें एटले आत्मानो पापरूप अंतर मल जे अतिचार, तेना टालवाथी एटले निर्मलता करवे करीने विशोधी होय वली ते विशोधीकरण पण विशल्य होय, तो थाय, त्यां कहे छे. (विसल्ली करणेणं के०) गया छे मायादि त्रण शल्य जेनाथी तेने विशल्य कहियें एटले एक मायाशल्य, बीजुं नियाणशल्य, अने त्रीजुं मिथ्यात्वशल्य, ए अंतरंग त्रण शल्यने टालवा थकी थाय. ए उत्तरीकरणादिक चार हेतुयें करी एटले ए चार निमित्तें करीने शुं करवुं छे ? तोके (पावाणं कम्माणं के०) संसार हेतु जे ज्ञानावरणीयादिक पाप कर्मो छे, तेउने (निग्घायणट्ठाए के०) निर्घातनार्थाय एटले उछेदन करवाने अर्थें (काउस्सग्गं के०) कायव्यापार त्यागरूप कायोत्सर्ग प्रत्यें (ठामि के०) तिष्ठुं छुं, कायाने एक ठामें करुं छुं, केमके जे स्थानकें कायानो व्यापार करवो कह्यो होय, तो ते स्थानकें जीव शुं नही करे ? अर्थात् सर्वकांइ करे. ए माटे कायाना व्यापारने छांडुं छुं. एमां तस्सउत्तरीकरणेणं इत्यादिक पाडक्कमवाना शब्दो कह्या माटे ए छपदनी आठमी पडिक्कमण नामे संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर उगणचालीश, गुरु अक्षर दश, सर्वाक्षर उगणपच्चाश छे. ए बे सूत्रोना गद्य पाठ छे गाथा बंध नथी माटे ए बेहु सूत्रोमां संपदा आठ, पद बत्रीश, गुरु अक्षर चोवीश, लघु अक्षर एकशो ने पंचोतेर, सर्व मली एकशो ने नवाणुं अक्षरो छेः–

हवे ए आगल एक ठामें काउस्सग्ग करुं ए पदे करी एवी प्रतिज्ञा करी के, कायानो व्यापार न करुं, तो हवे बीजो शरीरनो कोइ पण व्यापार कस्याथी प्रतिज्ञानो भंग थाय, तेमाटे काउस्सग्गमां नीचें कहेला आगार मोकलां राख्यां छे,ए आगारें करी काउस्सग्गनो भंग न थाय ते कहे छे.

॥ अथ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुछाए ॥१॥

अर्थः–(अन्नत्थ के०) अन्यत्र ते बीजे ठामें एटले हवे जे उछ्वासादिक आगारो कहेशे, ते आगार वर्जीने बीजे स्थानकें कायानो व्यापार करवानो नियम करुं छुं. हवे ते आगारोनां नाम कहे छे, (ऊससिएणं के०) उछ्वासितात् एटले मुखें तथा नासिकायें करी ऊंचो श्वास लइयें. तेने

उच्छ्वास कहियें. ते टालीने अन्यत्र बीजो कायव्यापार करवानो नियम छे अर्थात् ऊंचो श्वास लेतां म्हारो काउस्सग्ग जंग न थाय. एम आगल पण सर्व पदें जाणी लेवुं. (नीससिएणं के०) निःश्वासितात् एटले जे मुखें तथा नासिकायें करी नीचो श्वास मूकीयें, तेने निःश्वास कहियें, ते नीचो श्वास मूकतां म्हारो काउस्सग्ग न जांगे, ए बे आगार, अशक्यपरिहार जणी मोकला कीधा, (खासिएणं के०) कासितात् एटले खांसी उधरस आवे थके (छीएणं के०) छिक्कितात् एटले छींक आवे थके (जंजाइएणं के०) जृंजितात् एटले बगासुं आवे थके एटले जेवारें खांसी, छींक अने बगासुं आवे, तेवारें जीव रक्षा जणी मुखें हाथ देतां म्हारो काउस्सग्ग न जांगे. (उड्डुएणं के०) उद्गारितात् एटले उम्कार आवे थके (वायनिसग्गेणं के०) वातनिसर्गात् एटले वायसंचय ते अधोद्वारें जे वायु निकले तेने वातनिसर्ग कहियें, ए जेवारें उद्गार तथा वातप्रवर्त्तन करे तेवारें जीव रक्षा जणी मुखद्वारें हाथ देतां मुहपति प्रमुख देवानी जयणा करतां काउस्सग्ग न जांजे, (जमलिए के०) देहज्रमेः एटले ज्रमरी, चक्री, फेर अकस्मात् आवे, तेने जमलि कहियें. (पित्तमुछाए के०) पित्तमूर्छायाः एटले पित्तने प्रकोपें करी मूर्छा आवे, तेने पित्तमूर्छा कहियें. ए ज्रमरी अनें मूर्छा आवे थके जो नीचें न बेसे तो उनो थको पडे, तेथी आत्मविराधना तथा संयमविराधना थाय, तेमाटे ज्रमरी, मूर्छा आव्याथी तिहां बेसवुं पडे तेथी म्हारो काउस्सग्ग जंग न थाय. अहीं सुधी एकेका आगारनां नाम दीधां, माटें ए नव पदनी प्रथम एकवचनांत आगारसंपदा थइ. एमां लघु अक्षर आडत्रीश, अने गुरु अक्षर छ छे, सर्व मली चुम्मालीश अक्षर छे.

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसं
चालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ ७ ॥

अर्थः—(सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेन्योऽङ्गसंचारेन्यः एटले सूक्ष्म जे अंगनो संचार ते हालवुं करे, शीतादिक वेदनायें करी रोमोत्कंप उपजे तेथी शरीरनो संचार थाय, (सुहुमेहिंखेलसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेन्यः श्लेष्मसंचारेन्यः एटले शरीरमांहे जे सूक्ष्म श्लेष्मनो संचार थाय, मुखना थूंकनुं चालवुं तथा कफनुं गलवुं थाय, (सुहुमेहिंदिठिसंचा

लेहिं के०) सूक्ष्मेभ्यो दृष्टिसंचारेभ्यः एटले सूक्ष्म जे दृष्टिनो संचार मिषो न्मिषादिकें चक्षुने हलाववा थकी थाय. अहीं सुहुमेहिं प्रमुख पदमांहे बहु आगारनां नाम दीधां माटे ए त्रण पदनी बहुवचनांत आगार नामें संपदा जाणवी. एमां लघु उंगणत्रीश अने गुरु एक, मली त्रीश अक्षरो बे.

एवमाइएहिं आगारेहिं अन्नग्गो, अ
विराहिउ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥

अर्थः—(एवमाइएहिंआगारेहिं के०) एवमादिकैः आगारैः एटले एव मादिक जे पूर्वोक्त बार आगार कह्यां, ते आदें देइने अंही आदि शब्द थकी बीजां पण चार (आगारेहिं के०) आगार लेवां,तेनां नाम कहे बे. एक तो वीजली अथवा दीपकादिकनी उजेहि एटले अग्निना अजवा लानो प्रकाश आपणा शरीर उपर पडे, तो उढण वस्त्रादिक लेवुं पडे अ थवा बीजे स्थानकें जवुं पडे,तेथी महारो काउस्सग्ग न नांजे. बीजो मा र्जार तथा उंदरादिक प्रमुख, आगल जता आवता होय, दोडता होय, तथा मुख आगल पंचेंद्रियजीवनुं बेदन, नेदन थतुं देखे, तो बीजे स्थान कें जवुं पडे तेथी काउस्सग्ग न नांगे. त्रीजो अकस्मात् चोरनी धाड आ वी पडे, अथवा राजादिकना नयथी बीजे स्थानकें जवुं पडे आघा पाग थवुं पडे, तेथी काउस्सग्ग न नांगे,तथा चोथो अग्नि लागे अथवा घरनी नींत खडहडती पडती जाणीयें तथा पोताने अने पर जे साधु आदिक तेने सर्पादिक दंख मारे अथवा सिंहादिकना उपद्रव थता जाणे, इत्यादिक अनेरा पण जिहां विलंब करतां घणीज धर्मनी हानि थति देखीयें तो तिहां अणपूगो काउस्सग्ग पारतां थकां पण काउस्सग्ग न नांगे,ए चार आगार अपवाद मार्गें जाणवां, पण उत्सर्गें न जाणवां. एनी साथें पूर्वोक्त बार आगार मेलवीयें तेवारें शोल आगार थाय, ए सर्व शोल आगरोयें करीने काउस्सग्ग पारतां थोडीशी विराधना थतां पण ए व्यापार करतां महारो काउस्सग्ग (अन्नग्गो के०) अन्नग्नः एटले सर्वथा अखंमित (अविरा हिउ के०) अविराधितः एटले थोडोशो देशथी पण न विराध्यो, अर्थात् देशथी पण अविराधित एवो अखंमित संपूर्ण (काउस्सग्गो के०) कायो त्सर्ग ते (मे के०) महारे (हुज्ज के०) होजो, एमां एवमाइ इत्यादिक

आगार कह्यां, माटें ए ठ पदनी त्रीजी आगंतुक आगार संपदा जाणवी. एमां लघु एकवीश, अने गुरु चार, मली पच्चीश अक्षर छे ॥ ३ ॥

हवे ए काउस्सग्गनो वखत आंके छे, एटले एवो कायोत्सर्ग केटली वार सुधी होय ? ते कहे छेः—

जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ॥ ४ ॥

अर्थः—(जावअरिहंताणंभगवंताणंनमुक्कारेणं के०) यावदर्हतां भगवतां नमस्कारेण एटले (जाव के०) ज्यांलगें (अरिहंताणं भगवंताणं के०) श्री अरिहंत भगवंत पूज्य तेने (नमुक्कारेणं के०) नमस्कार सहित एटले नमो अरिहंताणं एवो उच्चार करी (न पारेमि के०) न पारयामि, नही हुं पारुं, एटले कायोत्सर्गना पार प्रत्यें न पामुं समाप्त न करुं त्यां सुधी जाणवुं, एमांजाव अरिहंताणं इत्यादिक पदमां काउस्सग्गनुं मान कह्युं. तेथी ए चार पदनी कायोत्सर्गने अवधिमर्यादारूप कायोत्सर्गविधि नामें चोथी संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर वीश अने गुरु अक्षर एक, सर्व मली एकवीश अक्षरो छे ॥४॥

तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

अर्थः—(तावकायं के०) तावत्कायं एटले (ताव के०) त्यांलगें (कायं के०) म्हारी कायाने शरीरने (ठाणेणं के०) स्थानेन एटले एक स्थानकें स्थिरपणे ऊभुं राखीने (मोणेणं के०) मौनेन एटले वचनने रुंधवे करीने (झाणेणं के०) ध्यानेन एटले ध्यान ते धर्मने विषे मननुं स्थिरपणुं अर्थात् नवकारादिकने विषे एकाग्रध्यान तेणें करीने (अप्पाणंवोसिरामि के०) आत्मानं व्युत्सृजामि एटले (अप्पाणं के०) पोतानी काया ते प्रत्यें (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं, एटले हुं तजुं छुं. अर्थात् काउस्सग्गरहित पणा थकी अने सावद्य व्यापारपणा थकी कायाने वोसिरावुं छुं. एमां तावकायं इत्यादिकमां शरीर स्थिर राखवानुं कह्युं, माटे ए ठ पदनी पांचमी स्वरूपसंपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर ओगणीश अने गुरु अक्षर एक, सर्व मली वीश अक्षरो छे. तथा ए काउस्सग्गने सूत्रें अन्नब ऊससिएणंथी मांमीने अप्पाणंवोसिरामि लगें बधी मली संपदा पांच छे, छवीश पद छे, लघु अक्षर एकशो सत्तावीश छे, अने गुरु अक्षर तेर छे, सर्वाक्षर एकशो चालीश छे ॥ ५ ॥ ६ ॥ हवे ए काउस्स

ग्गमां उंगणीश दोष टालवा तेनां नाम लक्षणसहित कहियें बेयें. (१) घोडानी पेरें एक पगे शरीरनो नार आपी, बीजो पग वांको करी रहे, (२) वायरे हलावेली वेलडीनी पेरें क्षणें क्षणें उरहुं परहुं फोले, कंप्या करे, (३) थांजाने अथवा नींतने आधारें अडक्यो थको काउस्सग्गें रहे, (४) उपरले माले मस्तक अडावी रहे, (५) जेम नीलडी वस्त्र रहित थकी आगले विनागें हाथज आडो आपे, तेम काउस्सग्ग करतो बे हाथने आगल आणी राखे, (६) नवपरणीत वधूनी पेरें नीचुं माथुं करे, (७) बेडी घाल्यानी पेरें पग पहोला करे अथवा बे पग मेलावी नेला करे,पण जिनमुद्रामां जेटलुं आंतरुं कह्युं बे,तेटलुं न करे. (८) नानि थकी चार अंगुल नीचें अने जानु थकी चार अंगुल उपर, चोलपट पहेरवुं कह्युं बे, तेम न करे, परंतु नानि उपर अने जानु हेठल वस्त्र पहेरी काउस्सग्ग करें, (९) मांस मशकादिकना नय थकी चोलपट्टादिकें करी हृदय ढांकीने काउस्सग्ग करे, (१०) गाडलानी उंधनी पेरें पगनी बे पानी मेलवीने आगल बे पग विस्तारी काउस्सग्ग करे, अथवा बे पगना बे अंगुग मेलवीने पाबला पानीना नाग तरफ बेहु पग विस्तारे, (११) संयति महासतीनी पेरें बेहु स्कंध उपरें वस्त्र उढे, जे नणी काउस्सग्गमां दक्षिणस्कंध उघाडो कीधो जोइयें, ते न करे, माटें ए दोष. (१२) घोडाना चोकडानी पेरें रजोहरण, आगल आडुं आपी, काउस्सग्ग करे, (१३) वायसनी पेरें आंखना फोला कीकी उरहा परहा फेरवे,(१४) कोठनी पेरें पेहेरवाना वस्त्रनो एकठो पिंम करी बेहु पगनी वचालें चांपे, (१५) नूतावेशनी पेरें मस्तक कंपावे, (१६) मूंगानी पेरें हुं हुं करे, (१७) नवकार लोगस्सनी संख्या करवाने अर्थे नमुह ते पापण अथवा आंगुली हलावे, ते नमुहंगली दोष जाणवो (१८) मदिरानी पेरें बड बड करतो काउस्सग्ग करे, (१९) अपेक्षा विना अरहुं परहुं जोतो वानरनी पेरें होठ बे हलावतो काउस्सग्ग करे, ए काउस्सग्गना उंगणीश दोष मध्यें आठमो, नवमो, तथा अगीआरमो ए त्रण दोष महासती साध्वीने न लागे, केम के तेनुं वस्त्रावृत शरीर होय, तेमाटे. पण एटलुं विशेष जे साध्वी प्रतिक्रमणादि क्रिया करे तो मस्तक उघाडुं राखे, अने वधू दोष नेलीयें, तेवारें चार दोष श्राविकाने न लागे, शेष पंदर दोष

लागे. ए सर्व दोष टालीने काउस्सग्ग करवो. तथा श्रीसिद्धांतमां तो सर्व क्रिया साधु आश्रयी कही छे. तेमाटे नाजिथी चार अंगुल नीचें चोलपट्टो पहेरवानुं राखे तथा बे कोणीयें चोलपट्टो झाली राखे, कंदोरा न बांधे. इत्यादिक सर्व साधु आश्रयी छे. ए कायोत्सर्गने विषे " चंदेसु निम्म लयरा " लगे, लोगस्सना पच्चीश पद चिंतवियें, अने काउस्सग्ग पूरो थयां पछी " नमो अरिहंताणं " कहीने काउस्सग्ग पारीयें ॥ इति ॥ ६ ॥

हवे ए काउस्सग्ग पार्या पछी तो " सिद्धासिद्धं " पर्यंत संपूर्ण लोगस्सनो पाठ प्रगट कहेवो जोइयें, माटे ते कहे छे.

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे. धम्म तित्थयरे जिणे ॥
अरिहंते कित्तइस्सं. चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

अर्थः— अर्हि (अरिहंते के०) अर्हतः एटले कर्मरूप शत्रुने हणवा थकी निर्दोष पणुं प्राप्त थयुं छे जेमने एवा अरिहंतने (कित्तइस्सं के०) कीर्त्तयिष्ये, एटले नामोच्चारण पूर्वक हुं स्तुति करीश. हवे ते अरिहंत तो राजादि अवस्थाने विषे द्रव्य अरिहंत पण होय छे, ते माटें भावार्हत्व प्रतिपादनने माटें (केवली के०) केवलिनः एटले उत्पन्न थयुं छे केवल ज्ञान जेमने, एवानुं कीर्त्तन करीश. अर्थात् भावार्हतनुं कीर्त्तन करीश. आ केवल ज्ञानना पदें करीने प्रभुनो ज्ञानातिशय सूचव्यो. हवे ते तीर्थं करोनी संख्या कहे छे. (चउवीसंपि के०) चतुर्विंशतिमपि एटले ऋषभा दिक चोवीश परमेश्वरनुं तो नामोच्चारणपूर्वक कीर्त्तन करीश अने अ पि शब्द थकी अन्य तीर्थंकरो जे महाविदेहादिक क्षेत्रोने विषे छे, तेनुं पण कीर्त्तन करीश. ते कहेवा छे ? तोके, (लोगस्सउज्जोअगरे के०) लोकस्य उद्योतकरान् एटले पंचास्तिकायात्मक लोकने केवलज्ञान रूप प्रदीपें करीने उद्योतकरणशील छे,एवानुं कीर्त्तन करीश. हवे जे अनुपकारी होय, तेने कोइ सेवे नही माटे एमना उपकारी पणाना प्रदर्शनने अर्थे कहे छे. (धम्मतित्थयरे के०) धर्मतीर्थंकरान् एटले धर्म ते उक्तस्वरूप अने तीर्थ एटले जेनाथी तराय छे ते तीर्थ कहियें, एवो धर्म प्रधान जे तीर्थ तेने धर्मतीर्थ कहियें, ते धर्मतीर्थ करवानुं शील छे जेमनुं तेमनुं कीर्त्तन

करीश. अहीआं तीर्थकरान् एवो पाठ न कह्यो अने धर्मतीर्थकरान् एवो पाठ कह्यो छे, ते एटला माटें के नद्यादि शाक्यादि संबंधी जे द्रव्यतीर्थ अधर्म प्रधान छे, तेनो परिहार करवानुं छे शील जेमनुं तेमने धर्मतीर्थकर कहियें. तेमनुं हुं कीर्त्तन करीश. अर्थात् देव, मनुष्य, असुरयुक्त एवी पर्षदा मांहे सर्व भाषा परिणामि एवी वाणीयें करी धर्मतीर्थने प्रवर्त्तावनारा एवा प्रभुछे छे, तेमने हुं स्तवीश. आ पदें करीने प्रभुनो पूजातिशय तथा वचनातिशय सूचव्यो. हवे चोथो अपायापगमातिशय कहे छे. (जिणे के०) जिनान् एटले रागद्वेषादिकने जीतनारा, तेमनुं कीर्त्तन करीश ॥ १ ॥ ए श्लोकमां लघु छवीश, अने गुरु छ, सर्व मली बत्रीश अक्षरो छे.

हवे कीर्त्तन करतो छतो आगली त्रण गाथायें चोवीशे
तीर्थंकरोनां नाम कहे छे.

उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

अर्थः—ऋषभमजितं च वंदे, संभवमभिनंदनं च सुमतिं च ॥ पद्मप्रभं सुपार्श्वं, जिनं च चंद्रप्रभं वंदे (उसभं के०) श्रीऋषभदेव प्रते (अजियंवंदे के०) श्री अजितनाथ प्रत्यें हुं वांडुं छुं. (च के०) वली (संभवं के०) संभवनाथ प्रत्यें, (अभिणंदणं के०) अभिनंदननाथ प्रत्यें, (च के०) वली (सुमइं के०) सुमतिनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (पउमप्पहं के०) पद्मप्रभस्वामी प्रत्यें, (सुपासं के०) सुपार्श्वनाथ प्रत्यें, (जिणं के०) कर्मशत्रुने जीतनार एवा, (च के०) वली (चंदप्पहं के०) श्रीचंद्रप्रभ प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडुं छुं ॥ २ ॥ ए गाथामां लघु अक्षर साडत्रीश, अने गुरु अक्षर बे, सर्व मली उगणचालीश अक्षरो छे.

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ॥
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

अर्थः—(सुविहिं के०) श्रीसुविधिनाथ प्रत्यें, (च के०) वली एमनुं बीजुं नाम (पुप्फदंतं के०) पुष्पदंत छे ते प्रत्यें, (सीअल के०) श्रीशीतलनाथ प्रत्यें, (सिज्जंस के०) श्रीश्रेयांसनाथ प्रत्यें, (वासुपुज्जं के०) श्रीवासुपूज्य स्वामी ए त्रण तीर्थंकर प्रत्यें, (च के०) वली (विमलं के०) श्रीविमल

नाथ प्रत्यें, (अणंतं के०) श्रीअनंतनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (जिणं के०) कर्मशत्रु प्रत्यें, जीपनार एवा (धम्मं के०) श्रीधर्मनाथ ते प्रत्यें, (च के०) वली (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें, (वंदामि के०) वांडुं बुं ॥३॥ ए गाथामां बत्रीश लघु, अने चार गुरु, मली ठत्रीश अक्षरो ठे.

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

अर्थः—(कुंथुं के०) श्रीकुंथुनाथ प्रत्यें, (अरं के०) श्रीअरनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथ प्रत्यें, (वंदे के०) वांडुं बुं. (मुणिसुव्वयं के०) श्रीमुनिसुव्रतस्वामी प्रत्यें, (नमिजिणं के०) श्रीनमिजिन प्रत्यें, (च के०) वली (वंदामि के०) वांडुं बुं. (रिठ्ठनेमिं के०) श्री अरिष्टनेमि प्रत्यें, (पासं के०) श्रीपार्श्वनाथ प्रत्यें, (तह के०) तथा (वद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्यें, हुं वांडुं बुं. आ श्लोकमां जे ठेल्लो चकार ठे, ते पादपूरणार्थ ठे ॥ ४ ॥ ए गाथामां लघु एकत्रीश, अने गुरु चार, मली पांत्रीश अक्षरो ठे. एम त्रण गाथायें करीने श्रीऋषभादिक चोवीश तीर्थंकरने वंदना करी, हवे पूर्वोक्त " उसन्न मजियं च " इत्यादि त्रणे गाथाउनो समुदायार्थ तो सुगम ठे परंतु पदना अर्थनुं विवंजन कराय ठे, ते बे प्रकारें ठे, एक सामान्यथकी अने बीजुं विशेष थकी. तेमां सामान्यथकी तो जे अर्थ बधाय तीर्थंकरोमां पामीयें जेमके (उसन्नं के०) ऋषन्नं एटले (ऋषति के०.) गछति अर्थात् जे परमपद प्रत्यें (गछति के०) जाय ठे,तेने ऋषन्न कहियें. तथा उद्दत्वादौ एणें करी उत्व करे ठे, ते (उसहः के०) वृषन्नः आ रीतें पण अर्थ करियें तो वर्षति एटले सीचें ठे, देशनारूपजले करीने दुःखाग्नियें करी ज्वलित एवा जगतनें ते ऋषन्न ए अर्थ सर्व तीर्थंकरोमां व्याप्त ठे. अने जे विशेषार्थ ठे ते एकज तीर्थंकरना नामनुं निमित्त ठे ते विशेषार्थ कहे ठे.

१ पहेला श्री ऋषन्न देवने हुं वांडुं बुं, ते नगवानना बेहु ऊरुनें विषे वृषन्ननुं लांबन हतुं माटे वृषन्न नाम दीधुं तथा सर्व तीर्थंकरोनी माता प्रथम स्वप्नमां हस्ती देखे, अने एमनी जननीयें प्रथम स्वप्नमां वृषन्न दीठो माटें वृषन्न कहियें तथा धर्मनी आदिना करनार माटे बीजुं आदिनाथ नाम कहि

यें. एवीरीतें सर्व तीर्थंकरोना प्रथम सामान्यार्थ अने बीजा विशेषार्थ नामो जाणवा. एमनी विनीता नगरी, नाभिराजा पिता, श्रीमरुदेवी माता, पांचशें धनुष्यप्रमाण शरीर, चोराशीलक्षपूर्वायु, सुवर्णवर्ण देह, वृषभ लांछन.

२ बीजा श्रीअजितनाथने हुं वांदुं छुं, अजित एटले परीसहादिकें करी निर्जित तथा भगवानना माता, पिता प्रथम कोइ वारें द्यूतरमण करतां हतां, तेवारें राणी बाजी हारी जती हती अने राजानी जीत थती हती, अने भगवान् गर्भे आव्या पछी भगवाननी माता जीतवा लागी अने राजा हारवा लाग्यो. एवो गर्भनो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, जितशत्रु राजा पिता, विजया राणी माता, साडाचारशें धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोंतेर लक्ष पूर्वायु, सुवर्णवर्ण देह, हस्ती लांछन.

३ त्रीजा श्रीसंभवनाथने हुं वांदुं छुं, एटले प्रकर्षे करीने चोत्रीश अतिशयना गुणो जेने विषे छे ते माटे संभव कहियें, अथवा जे, ए प्रभुनी स्तुति करे छे, तेने (सं के०) सुख (भव के०) थाय छे तेमाटे संभव कहियें, तथा भगवान् गर्भगत थये थके अधिक सस्य एटले धान्यनो संभव थयो माटे संभव कहियें एटले देशमां दौर्भिक्ष्य हतुं, ते भगवान् गर्भे आव्याथी अणचिंतव्यो मेह वूठो, धान्यनां वाहाणो आव्यां, अणचिंतव्यो पृथवीमां धान्यनो संभव थयो, तेथी संभव नाम दीधुं, एमनी श्रावस्ती नगरी, जितारिराजा पिता, सेना राणी माता, चारशें धनुष्य प्रमाण शरीर, शाठ लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, अश्व लांछन.

४ चोथा श्रीअभिनंदन प्रभुने हुं वांदुं छुं. एटले (च के०) वली देवेंद्रादिकोयें जेमनुं अभिनंदन थाय छे, तेथी अभिनंदन तथा प्रभु गर्भे आव्या तिहांथी आरंभीने प्रतिक्षण शक्राभिनंदन छे, एटले गर्भे आव्या पछी इंद्र महाराज आवी स्तवी स्तवीने जता, अर्थात् इंद्रे अभिनंद्या, प्रशंस्या ते माटे अभिनंदन नाम, माता पितायें दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, संवरराजा पिता, सिद्धार्था राणी माता, साडात्रणशें धनुष्य प्रमाण शरीर, पच्चाशलाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, वानर लांछन.

५ पांचमा श्री सुमतिनाथने हुं वांदुं छुं. (च के०) वली शोभन छे मति जेमनी तथा प्रभु गर्भे आव्याथी तेमनी जननीनी सुनिश्चित भली मति थइ छे, ते आवी रीतें के, एक वणिकनी बे स्त्रीउ हतीउ, तेमां न्हानीने

पुत्र हतो अने महोटी वंध्या हती, अने ते बोकरानुं प्रतिपालन बन्ने मा ताउ करती हतीउ, एम करतां ते वणिकें अकस्मात् काल कर्यो, तेवारें महोटी स्त्री धननी लालचें कहेवा लागी जे पुत्र महारो बे, अने जेनो पुत्र, तेनुं धन थाय. एवी चाल बे, माटे धन पण महारुं बे, तेमज न्हानीनो तो दीकरो हतोज तेथी तेणें कह्युं के पुत्र महारो बे अने धन पण महारुं बे ए रीतें बन्ने शोक्योनी वढवाड थइ, ते वढती वढती दरबारमां गइ, त्यां राजाथी पण चूकादो न थयो, तेवारें गर्जना माहात्म्य थकी राणीने चूकादो करवानी जली बुद्धि उत्पन्न थइ तेथी युक्ति करीने राणीयें कह्युं जे, बन्ने शोक्यो मलीने धन अर्द्धो अर्द्ध वेंची ल्यो, तथा बोकराना पण बे जाग करी अर्द्धो अर्द्ध वेंची ल्यो, ते सांजली न्हानी स्त्री जे सगी माता हती, ते बोली के महारे द्रव्य जोश्तुं नथी अने बोकराना कांइ बे जाग थाय नही, महारे पुत्रनो तथा धननो खप नथी, एनेज सोंपो, एनो बे तें महारोज बे, एवुं सांजली राणी बोली के ए पुत्र न्हानी स्त्रीनो बे, केम के पुत्रनुं मृत्यु थाय त्यां सुधी पण महोटी स्त्रीथी ना कहेवाणी नही अने न्हानी स्त्रीनो पुत्र बे तेथी तेणें मारवानी मनाइ करी, माटे एने पुत्र अने धन बेहु स्वाधीन करो अने महोटी स्त्रीने घरथी बाहेर काढो. एवी न्याय करवानी बुद्धि उपनी माटे सुमतिनाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, मेघरथ राजा पिता, सुमंगला राणी माता, त्रणशें धनुष्य प्रमाण शरीर, चालीश लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्णवर्ण देह, क्रौंच लांबन.

६ बठा श्रीपद्मप्रजने हुं वांडुं बुं. पद्मप्रज एटले निःकंपताने अंगीकार करीने पद्मना समूह सरखी बे, प्रजा एटले कांति जेमनी तेथी पद्मप्रज कहियें, तथा गर्जें आव्या पबी एमनी माताने पद्म एटले कमलनी शय्यायें शयन करवानो दोहोलो उपन्यो, ते देवतायें पूर्ण कर्यो, तेना महिमाथी पद्मप्रज नाम दीधुं तथा पद्म सरखुं रक्तवर्णें जगवंतनुं शरीर हतुं, माटे पद्मप्रज कहियें. एमनी कोशंबी नगरी, धरराजा पिता, सुसीमा राणी माता, अढीशें धनुष्य शरीर, त्रीश लाख पूर्वायु, सुवर्णवर्ण देह, पद्म लांबन.

७ सातमा श्रीसुपार्श्वनाथने हुं वांडुं बुं सुपार्श्व एटले रूडां बे पार्श्व जेमने तथा जगवान् गर्जगत थये बते तेमनी जननी पण सुपार्श्वा थयी एटले राणीनां बेहु पासां रोगें करी कोढीआं हतां, ते सुवर्णवर्णें घणां

सुकुमाल थयां, माटे सुपार्श्वनाम दीधुं, एमनी वाराणसी नगरी, सुप्रतिष्ठ राजा पिता, पृथवीराणी माता, बशें धनुष्य प्रमाण शरीर,वीश लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, स्वस्तिक लांछन.

८ आठमा श्रीचंद्रप्रभने हुं वांडुं बुं. वली चंद्रना सरखी जेनी प्रभा छे चंद्रसमान वर्ण छे, तथा परमेश्वर गर्भगत थये छते एमनी माताने चंद्रपान करवानो दोहोलो उपन्यो, ते प्रधानें बुद्धियें करी पूर्ण कर्यो,एवो प्रभाव जाणी चंद्रप्रभ एवुं नाम दीधुं. एमनी चंद्रपुरी नगरी, महसेन राजा पिता, लक्ष्मणा राणी माता. एकशो पचाश धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख पूर्व आयु, श्वेतवर्ण देह, चंद्र लांछन.

९ नवमा श्रीसुविधिनाथने हुं वांडुं बुं. एटले शोभन छे विधि जेनो अर्थात् सर्वस्थलें छे कौशल्य जेमनुं, ते सुविधि कहियें, तथा भगवान् गर्भ गत छतेज तेमना माता, पिता, भला विधियें करी धर्ममां प्रवर्त्यां. एवो गर्भनो प्रभाव जाणी सुविधिनाथ नाम दीधुं. वली मचकुंदना फूलनी कली सरखा उज्ज्वल प्रभुना दांत हता,माटे बीजुं पुष्पदंत एवुं नाम दीधुं. एमनी काकंदी नगरी, सुग्रीवराजा पिता, रामा राणी माता, एकशो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, मगरमछ लांछन.

१० दशमां श्रीशीतलनाथने हुं वांडुं बुं. समस्त जीवोना संतापने हरण करे छे, माटे शीतलनाथ तथा भगवानना पिताने पित्तदाहरोग हतो, ते भग वान् गर्भे आव्या पछी राजाना शरीर उपर राणीयें हाथ फेरव्यो, तेथी रोग उपशांत थयो, शरीरें शीतलता थइ ते माटे शीतलनाथ नाम दीधुं. एमनुं भद्दिलपुर नगर, दृढरथ राजा पिता, नंदा राणी माता, नेवु धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, श्रीवत्सलांछन.

११ अगीआरमा श्री श्रेयांसजिनने हुं वांडुं बुं. सर्वजगतने श्रेय एटले हितना करनार माटे तथा सकल भवनने अत्यंत प्रशंसा करवा पणुं छे जेमनुं ते माटे श्रेयांस कहियें, ते पृषोदरादिकनी पेठें सिद्ध थाय छे. तथा राजाना घरमां परंपरागत देव अधिष्ठित शय्यानी पूजा थती हती ते शय्यायें जे बेसे, अथवा सुवे, तेने उपद्रव उपजे, ते भगवंत गर्भे आव्या पछी माताने ते शय्या उपर सूवानो दोहोलो उपन्यो तेवारें विचार्युं जे देव गुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय,परंतु शय्यानी पूजा तो क्यांहिं सांभली नथी,

एम चिंतवी शय्यानी रक्षा करनारें मनाइ कर्या छतां पण प्रभुनी माता, ते शय्या उपर सुतां, तेवारें गर्भना प्रभावथी अधिष्ठित देव शय्या मूकी जति रह्यो पछी राजा प्रमुखें ते शय्या वपराशमां लीधी, ए रीतें माताने श्रेय थयुं माटे श्रेयांस नाम दीधुं. एमनुं सिंहपुर नगर, विष्णुराजा पिता, विष्णा राणी माता, एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, षडंगी लांछन.

१२ बारमां श्रीवासुपूज्य स्वामीने हुं वांडुं छुं. वसु जे देवताविशेष ते मने पूजवा योग्य माटे वासुपूज्य कहियें, अथवा भगवंत गर्भे आव्या पछी वसु जे हिरण्य तेणें करी इंद्र महाराज आवी राजकुलने पूजता हता माटे वासुपूज्य, अथवा वसुपूज्य राजाना पुत्र माटे वासुपूज्य नाम दीधुं छे, एमनी चंपा नगरी, वसुपूज्य राजा पिता, जया राणी माता, सीत्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोंत्तेर लाख वर्षायु, रक्तवर्ण देह, महिष लांछन.

१३ तेरमा श्रीविमलनाथने हुं वांडुं छुं. जेने निर्मलज्ञादिक छे तेमाटें विमल कहियें अथवा कर्ममलरहित माटे विमल कहियें, तथा प्रभु गर्भे आव्याथी तेमना नगरमां कोइ स्त्री भर्त्तार, दहेरे आवी उतर्यां, तेमांथी स्त्री पाणी पीवाने अन्यस्थानकें गइ एटलामां, एक व्यंतरी देवी त्यां रहेती हती तेणे ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीठुं, तेथी तेने कामक्रीडा करवानी अभिलाषा थइ, त्यारे तेनी स्त्रीना जेवुं पोतानुं रूप विकुर्वी, ते व्यंतरी तेनी पासें आवी बेठी, एटलामा पोतानी खरी स्त्री पण आवी, तेवारें बन्ने स्त्रीने समान देखीने पुरुषें कह्युं जे एमां महारी स्त्री कोण छे? तेवारें पहेलीयें कह्युं के हुं ताहारी स्त्री छुं, अने बीजीयें कह्युं के हुं ताहारी स्त्री छुं, एम वढतां वढतां सर्व राजा पासें आव्यां, तेवारें राजा तथा प्रधान पण बेहु स्त्रीउने सरखा रूपवाली देखी निवेडो करी शक्या नही, परंतु राणीयें प हेला पुरुषने एक बाजू उभो राख्यो अने बेहु स्त्रीउने तेनाथी केटलेक दूर उभी राखीने बोली के जे स्त्री पोताना सत्यवचनना प्रभावथी भर्त्तारने स्पर्श करे, तेनो ए भरतार जाणवो, ते सांभली व्यंतरीयें देव शक्तिना प्रभावें पोतानो हाथ लांबो करी भर्त्तारने स्पर्श कर्यो, तेवोज राणीयें तेनो हाथ पकडीने कह्युं के तुं तो व्यंतरी छे माटे ताहारे ठेकाणे जती रहे. एवा जूदा जूदा चार न्याय करवाथी राणी विमलमतीवाली

कहेवाणी तथा प्रभु गर्भे आव्याथी मातानुं शरीर पण निर्मल थयुं, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी विमलनाथ नाम दीधुं, एमनुं कांपिल्लपुर नगर, कृत वर्मराजा पिता, श्यामा राणी माता, साठ धनुष्य प्रमाण शरीर, साठ लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, सुकर लांछन.

१४ चौदमा श्रीअनंतनाथ प्रभुने हुं वांदुं छुं. कर्मना अनंत अंश जेणें जींत्या छे अथवा जेने ज्ञान, दर्शन पण अनंतुं छे माटे अनंतनाम सार्थक छे. तथा गाममां आगल ताप आवता हता ते प्रभु गर्भे आव्या पछी,एमनी मातायें अनंत गांठना दोरा करी बांध्या तेथी ताप निवृत्त थयो तथा स्वप्नमध्यें जेनो अंत नही एवी महोटी रत्ननी माला दीठी, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी अनंतनाथ नाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, सिंहसेन राजा पिता, सुजशा राणी माता, पच्चाश धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, सिंचाणानुं लांछन.

१५ पंदरमा श्रीधर्मनाथ जिनने हुं वांदुं छुं, दुर्गतियें पडता प्राणीने धरी राखे, माटे धर्मनाथ, तथा प्रभु गर्भमां आव्याथी प्रभुनां मातापिता रूडी रीतें दानादि धर्मपरायण थयां एवो गर्भनो महिमा जाणी धर्मनाथ नाम दीधुं, एमनुं रत्नपुर नगर, भानुराजा पिता, सुव्रता राणी माता, पिस्ता लीश धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, वज्र लांछन.

१६ शोलमां श्रीशांतिनाथने हुं वांदुं छुं. स्वयमेव शांतिना करनार अथवा शांतिना योगथी अथवा शांतिरूप होवाथी शांतिनाथ तथा ते देशमां म रकीनो उपद्रव घणो हतो, ते प्रभु गर्भे आव्या पछी राणीयें अमृतना छांटा नाख्या, तेथी मरकीनी शांति थइ. तेना प्रभावथी शांतिनाथ नाम दीधुं, एमनुं गजपुर नगर, विश्वसेन राजा पिता, अचिरा राणी माता, चालीश धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, मृग लांछन.

१७ सत्तरमा श्रीकुंथुनाथने हुं वांदुं छुं. कु केहतां पृथिवी तेनें विषे स्थित माटे कुंथु तथा भगवान् गर्भमां आवे छते, तेमनी मातायें रत्नमय कुंथु उनी राशि पृथ्वीमां दीठी अथवा परमेश्वर जन्म्या पछी कुंथुआ प्रमुख न्हाना महोटा जीवोनी जयणा देशमां प्रवर्त्ती. माटे कुंथुनाथ नाम दीधुं, एमनुं हस्तिनापुर नगर, शूरराजा पिता, श्रीराणी माता, पांत्रीश धनुष्य प्रमाण शरीर, पंचाणु हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, छाग लांछन.

१७ अढारमा श्रीअरनाथने हुं वांडुं बुं. अरिहंत जेवा सर्वोत्तम पुरुष जे कुलने विषे उपजे,अने जेनाथी कुलनी वृद्धि थाय, ते पुरुषने वृद्ध पुरुषो अर एवुं नाम कहेडे तथा नगवान् गर्नमां आवे थके तेमनी मातायें स्वप्नमां सर्व रत्नमय अर एटले आरो तथा शुन दीठो माटे अरनाथ नाम दीधुं,एमनुं गज पुर नगर,सुदर्शनराजा पिता, देवी राणी माता, त्रीश धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, नंदावर्त्त लांछन.

१ए उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथने हुं वांडुं बुं. परिसहरूप मल्ल तेनो जय करवा थकी मल्लि कहियें तथा नगवान् गर्नें आव्या पडी माताने एक रुतुमां सर्व रुतुना सुरनि फूलनी शय्यायें सुवानो दोहोलो उपन्यो, ते देवतायें पूर्ण कर्यो माटे मल्लिनाथ नाम दीधुं. एमनी मिथिला नगरी, कुंनराजा पिता, प्रनावती राणी माता, पच्चीश धनुष्य प्रमाण शरीर, पच्चावन्न हजार वर्षायु, नीलवर्ण देह, कुंन लांछन.

२० वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामिने हुं वांडुं बुं. जे जगतनी त्रिकाला वस्थाने जाणे, ते मुनि कहियें. वली जेने शोनन व्रत छे तेने सुव्रत कहियें तथा नगवान् गर्नें आव्या पडी एमनी जननीयें मुनि सरखा शोनन श्रावकनां व्रत पाल्यां, एवो महिमा जाणी मुनिसुव्रत नाम दीधुं, एमनुं राजगृह नगर, सुमित्रराजा पिता, पद्मा राणी माता, वीश धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश हजार वर्षायु, कृष्णवर्ण देह, काछबानुं लांछन.

२१ एकवीशमा श्रीनमिजिनेश्वरने हुं वांडुं बुं.परिसह उपसर्गादिकने जेणें नमाव्या छे माटे नमि कहियें, तथा प्रज्ञु गर्नें आव्या पडी सीमाडिया राजा नगवंतना पिताना शत्रु हता ते चडी आव्या, गामने विंटी लीधुं, राजा आकुल व्याकुल थयो, निमित्तियाने पूछ्युं, तेवारें निमित्तियायें कह्युं के राणी सगर्ना छे तेने गढने कोसीशें चढावी वैरीउने दर्शन करावो, राजायें तेमज राणीने किल्ला उपर चढावीने शत्रुउने वांकी नजरें जोवराव्या, तेवारें वैरीउथी राणीनुं तेज खमायुं नही तेथी सर्व वैरी मान मूकी नगवंतनी माताने नमस्कार करीने कहेवा लाग्या जे अमोने सौम्यदृष्टियें करी जूउ. राणीयें सौम्यदृष्टियें जोइ माथे हाथ राख्यो, पडी सर्व राजाउ राणीने पगे लागी आज्ञा मागी पोत पोताने नगरें गया, ए रीतें सर्वराजा नम्या, एवो गर्ननो प्रनाव जाणी नमिनाथ नाम दीधुं. एमनी मिथिला नगरी,

विजयराजा पिता, विप्रा राणी माता, पन्नर धनुष्य प्रमाण शरीर, दश हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, नीलोत्पल लांछन.

२२ बावीशमा श्रीअरिष्टनेमि प्रभुने हुं वांडुं बुं. रिष्ट एटले पाप तेना नाशने विषे चक्रधारी सरखा हता माटे अरिष्टनेमि,तथा प्रभु गर्भे आव्या पछी प्रभुनी मातायें स्वप्नमां रिष्ट रत्ननी रेल दीठी. वली आकाशने विषे अरिष्ट रत्नमय नेमि एटले चक्रधारा उछलती स्वप्नमां दीठी माटे अरिष्टनेमि नाम दीधुं, बीजुं नाम श्रीनेमिनाथ. एमनुं सौरीपुर नगर, समुद्रविजय राजा पिता, शिवादेवी राणी माता, दश धनुष्य प्रमाण शरीर, एक हजार वर्षायु, श्यामवर्ण देह, शंख लांछन.

२३ त्रेवीशमा श्रीपार्श्वनाथने हुं वांडुं बुं. जे समस्त भावोने स्पृशति एटले जाणे छे माटे पार्श्वनाथ तथा एमनो वैयावृत्त्यकर जे पार्श्वनामा यक्ष तेना नाथ माटे पार्श्वनाथ अथवा प्रभु गर्भे आव्या पछी अंधारी रात्रे पोतानी पासें सर्प जतो (पासइ के०) दीठो ते सर्पना जवाना मार्गनी वचमां राजानो हाथ देखी राणीयें ऊंचो कीधो, तेथी राजा जागी उठ्यो ने बोल्यो के शा माटे हाथ ऊंचो कीधो? राणीयें कह्युं के में सर्प जतो दीठो माटे तमारो हाथ ऊंचो कीधो. राजा बोल्यो, तमें जूठुं बोलो छो. पछी सेवकने तेडी दीपक मंगावीने जोयुं, तो सर्प दीठो, तेवारें विस्मय पामी राजायें विचार्युं जे में न दीठुं, अने राणीयें दीठुं, ए निश्चे गर्भनो प्रभाव छे, एम जाणी श्रीपार्श्वनाथ नाम दीधुं. एमनी वाराणसी नगरी, अश्वसेन राजा पिता, वामा राणी माता, नव हाथनुं शरीर, एकशो वर्षायु, नीलवर्ण देह, सर्प लांछन.

२४ चोवीशमा श्रीवर्द्धमान स्वामीने हुं वांडुं बुं. जन्मथकी मांहिने ज्ञानादिकें वृद्धि पाम्या तेथी वर्द्धमान तथा प्रभु गर्भे आव्या पछी माता, पिता धनधान्यादिकना भंडार तथा देश, नगर, द्विपद, चतुष्पद, इत्यादि सर्व प्रकारनी ऋद्धियें करी वृद्धि पाम्या तथा सर्व राजाउ पण आज्ञामां वर्त्तवा लाग्या एवो गर्भनो प्रभाव जाणी वर्द्धमान नाम दीधुं तथा भगवंतें जन्म तांज मेरु पर्वत डाबा पगने अंगुठे कंपाव्यो, वली देवता सार्थे आमल क्रीडा करतां भगवंत आगलें देवता हार्यो, नाशीने इंद्र पासें गयो, भगवंत जीत्या. एम भगवंतनुं अनंत बल जाणीने श्रीमहावीर एवुं बीजुं नाम इंद्र

महाराजें दीधुं. एमनुं क्षत्रियकुंम नगर, सिद्धार्थ राजा पिता, त्रिशला राणी माता, सात हाथनुं शरीर, बहोंत्तेर वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, सिंह लांछन.

ए रीतें कीर्तन करीने चित्तनी शुद्धिने माटे प्रणिधान कहे छे.

एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमर
णा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

अर्थः—(एवं के०) ए प्रकारें (मए के०) म्हारे जीवें जे (अभिथु आ के०) अभिस्तुता एटले नामपूर्वक स्तव्या ते चोवीशे परमेश्वर केहेवा छे? तोके (विहुय के०) विधुत एटले टाल्या छे (रयमला के०) कर्म रूप रज अने कर्मरूप मल जेणें एटले जे कर्म इरियावहि क्रियायें करी बंधाय अथवा नवां बंधातां जे ढीलां कर्म तेने रज कहियें अने जे पूर्व बंध चिरकालनुं संचित निकाचित गाढ कर्म अथवा सांपरायिक क्रियायें करी बंधाय, तेने मल कहियें, ए बेहु प्रकारना कर्मने जेणें टाल्यां छे. वली केहेवा छे? तो के (पहीण के०) प्रक्षीण एटले अतिशय करीने क्षय कर्या छे (जरमरणा के०) जरा अने मरण जेणें एटले जे समय समय आयुष्य घटे, तेने जरा कहियें अने सर्वथा आयु घटीने प्राणनो वियोग थाय, तेने मरण कहियें. एवा जरा अने मरण, ए बेहु जेणें क्षय कर्यां छे एवा जे (चउवीसंपि के०) चतुर्विंशतिरपि एटले पूर्वोक्त ए चोवीशे जिनवर सांप्रत कालें थया अने अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थं कर पूर्ववत् लेवा, (जिणवरा के०) श्रुतधरादिक जिनोथकी प्रधान श्रेष्ठ एवा जिनवर (तित्थयरा के०) तीर्थंकरा एटले तीर्थंकरो ते (मे के०) म्हारा उपर (पसीयंतु के०) प्रसीदंतु एटले प्रसन्न थाउ, अर्थात् प्रसाद (कृपा) करवाने तत्पर थाउ. यद्यपि श्रीवीतराग छे, तेथी स्तुति करनार उपर प्रसन्न थता नथी, तेमज निंदा करनार उपर अप्रसन्न पण थता नथी तथापि स्तुति करनारने स्तुतिनुं फल मले छे, अने निंदा करनारने निंदानुं फल मले छे. जेम चिंतामणि, मंत्रादिकोयें करी शुभनी वांछा करनारने शुभफल मले छे अने अशुभनी वांछा करनारने अशुभ फल मले छे, यद्यपि जे न थीज प्रसन्न थता ते शी रीते प्रसन्न थशे? माटे वृथा प्रलापें करी भक्तिनो अतिशय थतो नथी; तथापि एम कहे छते पण दोष नथी, कारणके क्षीण

क्लेश छे ते जेम प्रसन्न थता नथी तेम तेमनी स्तुति पण वृथा थती नथी कारण के तेने सर्व जावनी विशुद्धि छे ॥ ५ ॥ ए गाथामां लघु चालीश अने गुरु एक, मली एकतालीश अक्षरो छे.

कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥
आरुग्ग बोहिलाजं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

अर्थः—(कित्तिय के०) कीर्त्तित छे, एटले नाम विशेषें करी जेने इंद्रादिक कीर्त्ते छे. स्तवे छे. (वंदिय के०) जे वंदित छे एटले इंद्रादिक जेनें विशुद्ध मन, वचन अने कायायें करी वांदे छे. पंचांग प्रणाम करे छे. (महिया के०) जे महित छे एटले इंद्रादिक जेनें प्रधान पुष्पादिकें करी अर्चे छे, पूजे छे, एवा (जे के०) जे तीर्थंकर (ए के०) ए सुतीर्थे ज्ञानदृष्टिवंत ते प्रत्यक्ष (लोगस्सउत्तमा के०) लोकने विषे उत्तम प्रधान एवा (सिद्धा के०) श्री सिद्ध जगवंत थया एटले निष्ठितार्थ थया, एवा हे उत्तम सिद्ध जगवंत ! तमे मुजने (आरुग्ग के०) द्रव्य आरोग्यता तथा जाव आरोग्यता, त्यां द्रव्य आरोग्यता ते रोगरहित पणुं अने जाव आरोग्यता ते सिद्धपणुं जाणवुं. ते सिद्धपणुं (बोहिलाजं के०) श्री जिनधर्मनी प्राप्तिनो लाज थाय तेवारें पमाय छे माटे श्री जिनधर्मनी प्राप्तिनो लाज थवाने अर्थें (उत्तमं के०) उत्कृष्ट अत्यंत उंची एवी (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि ते ज्ञानादिक रत्नत्रय तेने विषे एकता परम स्थिरता ते प्रत्यें (दिंतु के०) द्यो, आपो एटले समाधि अनेक प्रकारें तारतम्यतायें अधिक न्यून छे माटे अत्युत्कृष्ट समाधि द्यो ॥ ६ ॥ आ गाथामध्यें लघु त्रीश, अने गुरु छ, सर्व मली छत्रीश अक्षरो छे.

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सा
गरवरगंजीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥८॥

अर्थः—(चंदेसु के०) चंद्रसमुदाय थकी (निम्मलयरा के०) निर्मलतर एटले अत्यंत निर्मल (आइच्चेसु के०) आदित्य एटले सूर्य समुदाय थकी पण (अहियं के०) अधिक (पयासयरा के०) प्रकाशना करनार (सागरवर के०) प्रधान छेलो स्वयंजूरमण नामा समुद्र तेनी पेरें (गंजीरा के०) गुणें करी गंजीर छे. एवा जे (सिद्धा के०) अष्टकर्मरहित सिद्ध, ते

(सिद्धिं के०) सिद्धि एटले मुक्ति ते (मम के०) मुजने (दिसंतु के०) द्यो, आपो ॥ ७ ॥ आ गाथामां लघु तेत्रीश, अने गुरु चार, सर्व मली साड त्रीश अक्षरो ठे, अने ए चोविसत्ताने विषे प्रथमनो एक श्लोक अने पठ वाडेनी ठ गाथा मली सात गाथाउ ठे, पद अठावीश ठे, तेमां लघु अक्षर बशें उंगणत्रीश, तथा गुरु अक्षर सत्तावीश, मली सर्वाक्षर बशें ने ठप्पन्न ठे तथा सव्वलोएना चार अक्षर एनी साथें मेलवीयें तेवारें बशें ने साठ अक्षरो थाय. इति नामस्तवसूत्रार्थः ॥ ८ ॥

॥ अथ करेमिजंते, अथवा सामायिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि जंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चरकामि,
जाव निअमं पज्जुवासामि, डुविहं, तिविहेणं,
मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवे
मि, तस्स जंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहा
मि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ए ॥

अर्थः—(जंते के०) हे जदंत,जयांत,जवांत,पूज्य,एटले सुखकारक कल्याण कारकपणा थकी जदंत कहियें तथा सात प्रकारना जयनो अंत करवाथकी जयांत कहीयें तथा चातुर्गतिक रूप संसारनो उच्छेद करवाथकी जवांत कहियें तथा पूजवा योग्य माटे पूज्य कहियें. एवी रीतें गुरुनुं आमंत्रण करीने सर्व कार्य करवां. हवे कहे ठे के,तमारा समीप वर्त्तमान काल आश्रयी (सामाइयं के०) सामायिक प्रत्यें एटले (सम के०) ज्ञानादिक गुण तेनो (आय के०) लाज ठे जेने विषे अथवा (सम के०) रागद्वेषरहित एवो जे जीव, तेने सम्यक् ज्ञानादिक गुणनो ठे (आय के०) लाज जेने विषे ते रूप जे व्रत, ते सामायिक व्रत कहियें अथवा समता परिणामरूप प्रशमसुख तद्रूप सामायिक प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं एटले समता परिणाम आणुं ! वली अनागत काल आश्रयी तो (सावज्जं के०) सावद्यं एमां अवद्य एटले पाप, तेणें करी स एटले सहित एवा जे (जोगं के०) योग एटले मन, वचन अने कायाना व्यापार, अर्थात् पापसहित जे मन, वचन कायाना योग, ते प्रत्यें (पच्चरकामि के०) हुं पच्चरकु ठुं. निषेधुं ठुं. एटले

त्यागुं छुं. ते क्यां सुधि? तो के (जाव के०) ज्यां सुधी (निअमं के०) सामायिक व्रतना नियम प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं एटले सेवुं, अर्थात् ज्यां सुधी सामायिकनो काल, जघन्यतो एक मुहूर्त्त प्रमाण छे तेने विषे हुं पर्युपासुं एटले रहुं, त्यां सुधि (डुविहं के०) करवा कराववा रूप ए बे प्रकारनो जे सावद्य व्यापार, ते प्रत्यें (तिविहेणं के०) त्रिविधें करी एटले त्रण प्रकारें करी ते त्रण प्रकारनां नाम कहे छे. एक (मणेणं के०) मनें करी, बीजो (वायाए के०) वचनें करी, त्रीजो (काएणं के०) शरीरें करीने, (नकरेमि के०) नही हुं पोतें करुं, (नकारवेमि के०) हुं बीजा पासें न करावुं, (तस्स के०) ते अतीतकाल संबंधी जे सावद्य व्यापार रूप पाप, ते प्रत्यें (जंते के०) हे जगवंत! आपनी समीप (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं एटले ते पापथकी हुं निवर्त्तुं छुं मिछामि डुक्कड देउं छुं. (निंदामि के०) आत्मा साखें हुं निंडुं छुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं छुं, एटले विशेषें निंडुं छुं (अप्पाणं के०) पूर्वकालसंबंधी डुष्ट क्रियाकारक एवो जे म्हारो आत्मा, तेने ते डुष्ट क्रिया थकी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं एटले विशेषें करीने तजुं छुं, अहींआं साधु जावनियमंने स्थानकें जावजीवं बोले छे. अने डुविहंने स्थानकें तिविहं बोले छे. अने "सव्वं करतंपि अन्नं न समणुजाणामि" एवा बे पाठ अधिक बोले छे, अने श्रावकने तो एक मुहूर्त्तनुं सामायिक छे तेमां पण पुत्र, स्त्री, वाणोतर प्रमुख जे सावद्यव्यापार करे छे, ते व्यापारने पोतें अण करतो छतो पण तेनुं अनुमोदन छे. ए मन, वचन अने कायायें करी करुं नहीं, करावुं नहीं. ए छ बोल आश्रयी श्रावकने (१३८४१२८७२००) एटला जांगा उपजे, ते ग्रंथांतर थकी जाणवा ॥ इति सामायिकसूत्रार्थः ॥ १ ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

॥ सामाइअ वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो ॥
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआवारा ॥ १ ॥
सामाइअंमि उ कए, समणोइव सावउ हवइ ज
म्हा ॥ एएण कारणेण, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥

सामायिकविधिं लीधूं, विधिं पारिउं, विधि करतां जे कोइ अविधि हुउ होए, ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

अर्थः–(जाव के०) ज्यां सुधि (मणे के०) मन, एटले जीव तें (नियमसंजुत्तो के०) सावद्य व्यापारना नियम एटले पच्चरकाणने विषे संयुक्त (होइ के०) होय, एटले सम्यक् प्रकारे जोडेलो होय. वली (सामाइअवयजुत्तो के०) सामाइक व्रतने विषे संयुक्त होय, त्यां सुधि ए जीव, (असुहंकम्मं के०) अशुन्न कर्मने (छिन्नइ के०) छेदे, (जत्ति आवारा के०) जेटली वार (सामाइअ के०) सामायिक करे, तेटली वार अशुन्न कर्म प्रत्यें छेदे. अथवा ज्यां सुधी सावद्य व्यापारने विषे मनमांहे नियम संयुक्त होय, तेटली वार सामायिक व्रतनो धणी कहेवाय ते जेटली वार सामायिक व्रत लीये, तेटली वार अशुन्न कर्मने छेदे ॥ १ ॥ (उ के०) तु एटले वली (जम्हा के०) जेमाटे (सामाइअं मि कए के०) सामायिक करती वखत (सावउ के०) श्रावक जे छे, ते (समणोइव के०) श्रमण एटले साधु समान (हवइ के०) होय, (एएणकारणेणं के०).एणें कारणें (बहुसो के०) घणी वार, (सामाइयं के०) सामायिक प्रत्यें जे तत्वना जाण होय, ते (कुज्जा के०) करे ॥ २ ॥

अहींआं केटलाएक एम कहे छे के सामायिक,दिन प्रत्यें त्रय कालज करियें, पण अधिक न करियेंतेने निषेधे छे. जे न्नणी " सामाइयंमिउकए" ए गाथा श्री न्नद्रबाहु स्वामी चौद पूर्वधरप्रणीत आवश्यकनिर्युक्ति मांहेली छे, एमां सामायिक करतां श्रावक, मनें, वचनें अने कायायें करी करे नही, करावे नही,ते न्नणी साधु समान तो होय. पण साधु निटोल नही कहेवाय अने श्रावकने अनुमति मोकली छे तथा श्रावकें देशथकी पोसह लीधो होय अने सामायिक छते पण आधाकर्मी आहार गृहस्थने मोकलो मूक्यो छे, जे न्नणी श्रीनिशिथचूर्णी मध्यें एम कह्युं छे जे, " जंच उदिठ कडं, तं कड सामाइउ विन्नुं जइय " अने साधु तो आधाकर्मी आहार कोइ पण रीतें लीये नही, ते न्नणी साधु निटोल न कहेवाय, तोपण सामायिकने विषे रहेला श्रावकने साधु सरखो कहियें ए कारण माटे " बहुसो सामाइयं

कुक्का " एटले घणां सामायिक लेवां एम कह्युं, जेवारें वखत मले तेवारें सामायिक लेवो, उक्तं च "जाहेखणिउताहे, समाइअं करेइ" तथा श्री आवश्यकचूर्णी, श्रावकने प्रज्ञप्तिवृत्त्यादिक घणा ग्रंथो मध्यें वारंवार सामायिक लेवो, एम कह्युं छे. "सामाइअ पोसह संठिअस्स, जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेक ॥१॥" अर्थः—सामायिक तथा पौषध लीधे थके जीवनो जे काल जाय, ते सफल जाणवो अने शेष काल जे छे, ते संसार उपार्जन करवानो कारण जाणवो ॥ १ ॥ १० ॥

॥ अथ सव्वलोए ॥

॥ सव्वलोए, अरिहंत० ॥ करेमि० ॥ वंदण० ॥ १ ॥ इति ॥ ११ ॥

अर्थः— त्रण जवननां चैत्य वांदवा निमित्तें काउस्सग्ग करवा वांछतो सव्वलोए कहे. त्यां सर्वलोक शब्दें अधोलोक, ऊर्ध्वलोक अने तिर्यक् लोक, ए त्रण लोकमांहें जे (अरिहंतचेइआणं के०) श्रीअरिहंतनां चैत्य, प्रतिमारूप छे, एटले आठ क्रोड, सत्तावन लाख, बशेंने ब्याशी शाश्वतां प्रासाद छे. तेमां पंदरशें क्रोड, बेंतालीश क्रोड, अठावन लाख, छत्रीश हजार अने एंशी, एटलां जिनबिंब छे, तेने (वंदणवत्तिआए के०) वांदवादिक निमित्तें (करेमिकाउस्सग्गं के०) हुं काउस्सग्ग करुं छुं ॥ ११ ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इछाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करुं ॥
इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्क
ण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगजावविअक्कण॥
अठावय संठविय, रूव कम्मठ विणासण ॥ च
उवीसंपि जिणवर, जयंतु अप्पडिहयसासण ॥१॥

अर्थः—हवे श्रीवीतराग देव कहेवा छे? तो के (जग के०) जव्य जीव, तेमना मनोवांछित अर्थ पूरवा माटे (चिंतामणि के०) चिंतामणिरत्न समान छे. एटले चिंतामणि जेम मनोवांछित पूर्ण करे छे, तेम प्रजु पण आश्रित जव्य प्राणिउनी सर्व वांछा पूर्ण करे छे, वली (जग के०) निकट जव्य जीवोना जे (नाह के०) नाथ छे, केमके जे जीव, धर्म पाम्या नथी

तेने धर्मने विषे जोडे ले अने जे जीव, धर्म पाम्या ले, तेना धर्मनी रक्षा करे ले, माटें नाथ ले. वली (जग के०) समस्त लोकमांहे हितोपदेश देवाथकी (गुरु के०) महोटा ले, वली (जग के०) षड्जीवनिकायना जे (रस्कण के०) रक्षक ले, प्रतिपालक ले, वली (जग के०) समान बोधवंतना तथा सकल जंतुना जे (बंधव के०) महोटा विवेकवंत नाइनी पेरें नाई ले. वली (जग के०) मोक्षानिलाषी साधु प्रमुखना जे (सब वाह के०) सार्थवाह ले, महोटा व्यापारी ले, शा थकी? जे संसाररूप कांतार थकी पार पमाडीने अनंत लानानुं स्थानक, एवा मोक्षरूप नगर प्रत्यें पहोचाडे ले. वली (जग के०) षड्द्रव्य तथा जीवादिक नव पदार्थना (नाव के०) रहस्य दर्शाववाने विषे जे (विअरकण के०) विचक्षण ले, माह्या ले, अनंत ज्ञान पणा माटे विचक्षण ले. वली (अंठावय के०) अष्टापद पर्वतनी उपर नरतेश्वरें (संठविय के०) संस्थापित कर्यां ले (रूव के०) रूप एटले बिंब जेनां, वली (कम्मठविणासण के०) ज्ञानावरणादिक आठ कर्मनो कीधो ले विनाश जेणें, एवा ते (चउवीसंपिजिण वरा के०) चोवीश जिनवर तें अपि एटले निश्चें (जयंतु के०) जयवंता वर्त्तो, सर्वे उपरें वर्त्तो. (अप्पडिहयसासण के०) अप्रतिहतशासन एटले कोइथी हणाय, रोकाय नही एवुं जेनुं शासन ले अर्थात् शिक्षावचन रूप उपदेश ले॥ १॥

कम्मनूमिहिं कम्मनूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरि सय ॥ जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नव कोडिहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि॥ बिहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणह कोडि सहस उअ ॥ थुणिजिअ निच्चविहाणि ॥ २ ॥

अर्थः—(कम्मनूमिहिं के०) असि, मषी, अने कृषि रूप कर्म जिहां वर्त्ते ले, एटले असि, मषी अने कृषि, ए त्रण. तेमां तरवार प्रमुख शस्त्रनी ज्यां प्रवृत्ति होय, तेने असि कहियें अने लिखित प्रमुख ज्ञान ज्यां होय, तेने मषी कहियें तथा क्षेत्र, वाडी प्रमुखें ज्यां आजीविका होय तेने कृषि कहियें. ए त्रणें करी जिहां आजीविका चाले ले, तेने कर्मनूमिका कहियें.

(कम्मजूमिहिं के०) ते कर्मजूमिनां जरतादिक पन्नर क्षेत्रने विषे (उक्को सय के०) उत्कृष्ट पदें (जिणवराण के०) जिनवरो एटले जे तीर्थकरो डे, (पढमसंघयणि के०) प्रथम संघयण जे वज्रकृषजनाराच तेना धणी एवा (सत्तरिसय के०) सप्ततिशत एटले एकशोने सीत्तेरनो समुदाय, (विहरंतलप्नइ के०) विचरतो लाजे, ते श्रीअजितनाथनी वारें एटला लाजे, वली (नवकोडिहिंकेवलिण के०) केवलज्ञानी जगवाननी नव कोटि होय, तथा (कोडिसहस्सनव के०) नव सहस्रकोटी (साहु के०) साधु (गम्मइ के०) जिनागमथकी जाणियें अने (संपइ के०) संप्रति एटले वर्त्तमान कालें (जिणवरवीस के०) श्रीसीमंधरस्वामी प्रमुख वीश जिनवर विचरता पामियें, तथा (मुणिबिहुंकोडिहिं के०) बे क्रोड मुनि, (वरनाण के०) प्रधान केवल ज्ञानना धरनार, एवा केवल ज्ञानी वली (कोडिसहस्सडुअ के०) द्विसहस्र कोटि (समणह के०) श्रमण एटलें साधु विचरे डे, ते सर्वेनें (थुणिजिअ के०) थुणीयें स्तवियें, (निच्च विहाणि के०) नित्य प्रजातें सूर्योदयें निरंतर स्तवीयें ॥ २ ॥

जयउ सामी जयउ सामी ॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित
पहु नेमि जिण ॥ जयउ वीर सच्चउरि मंमण ॥ जरु
अच्छहिं मुणि सुव्वय ॥ मुहरि पास डुहडुरिअखंमण॥
अवरविदेहिं तिच्छयरा॥चिहुंदिसि विदिसि जिं केवि॥
तीआणागय संपइअ, वंडुं जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥

अर्थः– हवे श्री (सत्तुंजि के०) शत्रुंजय तीर्थ उपरें (सामीरिसह के०) श्री कृषजस्वामी (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो, वली (उज्जित के०) श्रीगिरनारजी उपर (पहु के०) प्रजु एटले सामर्थ्यवाला एवा (सामी नेमिजिण के०) स्वामी श्री नेमिजिनेश्वर ते (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो, वली (वीर के०) महावीर स्वामी ते (सच्चउरीमंमण के०) सत्यपुरी एटले साचोर नगर तेना मंमण एटले आजूषणरूप ते जयवंता वर्त्तो, वली (जरुअच्छहिं मुणिसुव्वय के०) श्रीजरूच नगरने विषे श्री मुनिसुव्रत नाथ अने (मुहरि के०) मुहरि गामना नायक, (पास के०) श्रीपार्श्वनाथ, ए जिन पंचक

केहेवुं छे ? तो के (दुहदुरियखंमण के०) दुःख अने दुरित जे पाप तेनुं खंमन एटले विनाश करनारुं छे, (अवर के०) अपर एटले बीजा (विदेहिं के०) पांच महाविदेहने विषे जे (तिबयरा के०) तीर्थंकर छे, (चिहुं दिसिविदिसि के०) पूर्वादि चार दिशि· अने अग्निकोणादि चार विदिशि, ए आठने विषे (जिंकेवि के०) जे कोइ पण (तीआणागयसंपइअ के०) अतीतकाल, अनागतकाल अने संप्रति जे वर्त्तमानकाल, ए त्रण काल संबंधी (जिणसवेवि के०) सर्वे जिनेश्वर ते प्रत्यें पण (वंदुं के०) हुं वांदुं छुं ॥ ३ ॥

हवे निरंतर स्मरणने अर्थें शाश्वता जिनप्रासादनी संख्या कहे छे.

॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्का छप्पन्न अठ को
डीउ ॥ बत्तीस बासिआइं ॥ पाठांतरं ॥ बत्ती
सय बासिआइं, तिअ लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥

अर्थः–(अठकोडीउ के०) आठ क्रोड, (लख्काछप्पन्न के०) छप्पन लाख, (सत्ताणवइसहस्सा के०) सत्ताणु सहस्र, (बत्तीसबासिआइं के०) बत्रीशशें ने ब्याशी, एटला (तिअलोए के०) त्रण लोकने विषे (चेइए के०) चैत्य एटले जिनप्रासाद छे, ते सर्व प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांदुं छुं ॥ ४ ॥

हवे पूर्वोक्त शाश्वता प्रासादोने विषे एकंदर प्रतिमानी संख्या कहे छे.

॥ पनरस कोडि सयाइं, कोडी बायाल लख्क
अडवन्ना ॥ छत्तीस सहस असिई ॥ पाठांतरं ॥
असिआइं, सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥

अर्थः–(पनरसकोडिसयाइं के०) पन्नरशें कोडी एटले पंदर अब्ज, वली (कोडीबायाल के०) बेंतालीश क्रोड, (लख्कअडवन्ना के०) अठावन लाख, (छत्तीससहसअसिई के०) छत्रीश हजार अने उपर एंशी, (१५४२५८३६०८०) एटला पूर्वोक्त जिनप्रासादने विषे (सासयबिंबाइं के०) शाश्वतां जिनबिंब छे, ते सर्व प्रत्यें (पणमामि के०) हुं प्रणमुं छुं ॥५॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिबं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सवाइं वंदामि ॥६॥इति॥१३॥

अर्थः-(*सग्गे के०) स्वर्गे एटले ऊर्ध्वलोकने विषे, (पायालि के०) पाताले एटले अधोलोकने विषे, (माणुसे लोए के०) मानुष्ये लोके एटले तीर्छालोकने विषे, (जाइंजिणबिंबाइं के०) जे जिन तीर्थंकरना बिंब छे, (ताइंसवाइं के०) ते सर्व जिनबिंब प्रत्यें किं बहुना घणुं शुं कहियें ? (जंकिंचि के०) जे कांइ त्रण लोकने विषे परमेश्वरनां (नामतित्थं के०) नामरूप तीर्थो छे ते प्रत्यें पण (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

एम चैत्यवंदन कह्या पछी, पंचांग प्रणाम करी बेशीने बेहु जानु भूमियें लगाडी हाथें एकेक अंगुली मांहो मांहे करी कोशने आकारें बे हाथ करीने पेट उपर बे हाथनी कोणी राखीयें, तेने योगमुद्रा कहियें. ए समुस्त ठकुराई प्रमुख लक्षणें करी सहित छे, एवी योगमुद्रा साचवतो " नमुत्थुणं अरिहंताणं " इत्यादिक शक्रस्तव दंमक कहे. इंद्र, जेवारें परमेश्वरने स्तवे, तेवारें ए नमुत्थुणंनो पाठ कहेतो थकोज स्तवे छे, एवी स्थिति छे, तेमाटे एने शक्रस्तव कहियें छैयें. तेनो पाठ कहे छे, अहींआं केटलाएक एवुं कहे छे के नमुत्थुणं कहेतां थकां डाबो जानु उंचो करियें, अने जमणो जानु भूमियें लगाडीयें, ते युक्त नथी. केमके श्रीमहानिशीथना तृतीयाध्ययनमां कह्युं छे के, " जिणपडिमाविणवस्सिय, नयणेण विरईय वरकमंजलिणा ॥ भूमिनिहि उजय जाणुणा सक्कछउ पढियवो ॥१॥ "इति ॥ अने श्रीकल्पसूत्र मध्ये इंद्रआश्री श्रीमहावीरने अधिकारें " वामजाणु अचेइ दाहिणजाणु धरणितलसिकट्टइ " एवो पाठ छे, तिहां इंद्र ठाकुर छे ते भणी चतुरंग प्रणाम करे, एवुं कारण कह्युं छे, तथा श्रीज्ञाताधर्मकथांगमध्ये धर्मरुचि महात्मायें आराधनाने अवसरें बेठां थकांज नमुत्थुणं कह्युं छे. तिहां ते धर्मरुचि महात्माने नागश्रीनुं आपेलुं विषमय कडवुं तुंबडुं परठवता घणी विराधना दीठामां आवी तेथी ते तुंबडानुं तेमणे पोतेज आहार कर्यो तेनुं विष परिणमतां थकां शरीरनी शक्ति मंद थइ. तेमाटे पर्यंकासनें बेठां थकांज नमुत्थुणंनो पाठ कह्यो छे, ए कारण जाणवुं.

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥

अर्थः-(नमुत्थुणं के०) नमोस्तु एटले नमस्कार हो,अहीं नमः पदवडे

नमस्कार, अबु एटले अस्तु जवतु ए पदवडे हो, तथा णं अक्षर जे छे, ते वाक्यालंकारने अर्थें छे, जेम अलंकारें करी स्त्री शोजे, तेम णंकारें करी वाक्य शोजे छे,ते नमस्कार कोने हो ? तोके (अरिहंताणं के०) श्री अरिहंतने हो. अहीं जूदा जूदा त्रण पाठ छे, एक तो इंडादिक देवोनी करेली पूजाने योग्य तेने अरहंत कहियें, बीजो कर्मरूप वैरीने हण्या माटे अरिहंत कहियें, त्रीजो फरी संसारमां अवतरवुं नथी माटे अरुहंत कहियें, तेने नमस्कार थाउ. हवे ते श्री अरिहंतजी तो नामादिक जेदें करी अनेक प्रकारें छे, माटें अहीं जावअरिहंतने नमस्कार करवाने अर्थें आगल पद कहे छे. (जगवंताणं के०) जगवद्भ्यः एटले जगवंतने हो. ए जग शब्द, ते छ प्रकारें छे. एक समस्त ठकुराइ, बीजुं रूप, त्रीजुं यश, चोथी लक्ष्मी, पांचमो धर्म अने छठो प्रयत्न, ए छ वानां अरिहंतमां उत्कृष्ट छे. तिहां जक्ति नम्रतायें करीने देवोयें शुजानुबंधी महाप्रातिहार्य करण लक्षण, तेने समग्र ऐश्वर्य कहियें. तथा सकल स्वस्वप्रजावविनिर्म्मित अंगुष्ठरूप अंगार निदर्शनातिशयें करी जे सिद्ध, तेने रूप कहियें, तथा राग, द्वेष, परीसह, उपसर्ग सहनरूप पराक्रम थकी उत्पन्न थयुं जे त्रैलोक्यानंदकाल प्रतिष्ठ, तेने यश कहियें, तथा घातिकर्मना उच्छेदरूप पराक्रमें करी प्राप्त थयुं जे केवल लोकोत्तरनिरतिशय सुख तेनी संपत्तियें करी युक्त तेने उत्कृष्ट लक्ष्मी कहियें, तथा सम्यक्दर्शनादि रूप अने दान, शील, तपोजावनामय, तेने धर्म कहियें, तथा परमवीर्यें करी उत्पन्न थयुं जे एक रात्रिक्यादिक महाप्रतिमा जावहेतु, तेने प्रयत्न कहियें, ए छ प्रकारनुं छे जग जेमने,ते जगवान् कहियें, तेमने नमस्कार थाउ. एवा जगवंत ते विवेकी पुरुषोने स्तववा योग्य छे माटे ए बे पदनी प्रथम स्तोतव्य संपदा जाणवी. एमां लघु तेर अने गुरु एक, सर्व मली चौद अक्षरो छे ॥ १ ॥

हवे स्तववा योग्यनुं सामान्य हेतु कहेवा माटे कहे छे.

॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

अर्थः—वली ते श्री अरिहंत केहेवा छे? ए प्रकारें आगल पण हवे पछीना सर्व पदोने विषे कहेवुं. (आइगराणं के०) आदिकरेभ्यः एटले सर्व तीर्थंकर पोत पोताना तीर्थें द्वादशांगीनी आदिना करनार छे तेमाटे आदिकर कहियें. यद्यपि ए द्वादशांगी, निरंतर छे तथापि तेमां अर्थनी अपेक्षायें तो नित्य

छे परंतु शब्दनी अपेक्षायें तो स्वस्वतीर्थमां श्रुतधर्मादिकनुं करवुं अविरुद्धज छे. हवे ए पण कैवल्यप्राप्त्यनंतर अपवर्गवादिउयें ते अतीर्थकरज कहेवाय छे? तो त्यां कहे छे के, (तिथ्थयराणं के०) तीर्थकरेभ्यः जेणेकरी संसारसमुद्र तराय छे ते तीर्थ एटले प्रवचन तथा तेना अव्यतिरेक संबंध थकी संघ पण तीर्थ कहियें, वली गणधर पण तीर्थ कहियें, एटले प्रवचनकथकपणा थकी तथा चतुर्विध श्री संघरूप तीर्थना करवाथकी तथा प्रथम गणधर रूप तीर्थ ना करवा थकी, तीर्थकर कहियें. हवे ए तीर्थकरपणुं पण श्री अरिहंतने अन्यउपदेशपूर्वकपणे नथी, एटला माटे आगल पद कहे छे. (सयंसंबुद्धाणं के०) स्वयंसंबुद्धेभ्यः (सयं के०) पोतानी मेलें (सं के०) सम्यक् प्रकारें (बुद्ध के०) तत्त्वना जाण थया एटले परोपदेश विना पोतानी मेलें नव्य सामग्रीना परिपाकथकी बोध पामेला जाणवा, यद्यपि नवांतरने विषे तथाविध गुरु संनिधान थकी अवबोधित छे, तथापि तीर्थंकर जन्मने विषे परोपदेशनी अपेक्षा नथीज. अने जो पण तीर्थंकर जन्मने विषे लोकांतिक देवताना वचनथकी "नयवं तिथ्थं पवत्तेहि" ए लक्षणवाली दीक्षाने पामे छे, तो पण जेम राजा होय ते नाट प्रमुख स्तुति करनाराउना वचनमां रहेतो छतो पण स्वतंत्रताने त्याग न करतो थको पोतानुं कार्य करे छे; तेम ते तीर्थंकरो पण पोतानी स्वतंत्रतायेंज प्रव्रज्या ग्रहण करे छे,तेमाटे सयंसंबुद्धाणं कहियें.एमां स्तववा योग्यना सामान्य हेतु कह्या माटे ए त्रण पदनी उघ एटले सामान्यहेतु नामें बीजी संपदा जाणवी. एमां लघु चौद अने गुरु बे, सर्व मली शोल अक्षरो छे ॥ २ ॥

हवे ए बीजी संपदानां अर्थनें विशेषें दीपाववा माटे त्रीजी विशेष हेतु संपदामां पूर्वोक्त स्वयंसंबुद्धपणुं तो कोइ सामान्य जनने पण होय छे, परंतु नगवंत तेवा पुरुष नथी, नगवंत तो सर्व पुरुष मांहे उत्तम छे. तेमाटे आगल पुरुषोत्तमपणुं देखाडवाने पद कहे छे.

पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥

अर्थः-(पुरिसुत्तमाणं के०) पुरुषोत्तमेभ्यः पुरुषोने विषे उत्तम प्रधान एटले धैर्य, गांनीर्य, औदार्य, परोपकार, इत्यादिक गुणें करी उत्तम छे प

रंतु बीजा जीवनी पेरें क्रूर, कृपण, मलीन बुद्धिना धणी नथी, अहीं पुरि एटले शरीर तेने विषे जे शयन करे. ते पुरुष जाणवो. ते शरीरने विषे वास करनारा जे सत्त्व तेमने विषे सहज जव्यत्वादिक जावथकी श्रेष्ठ माटे पुरुषोत्तम जाणवा. तथा सवार्थ विना सर्व संसारी जीवोने परमार्थ करवानुं बे व्यसन जेने तथा उचितक्रियारूप दानेंकरी युक्त बे माटे पुरुषोत्तम कहियें. हवे ए पुरुषोत्तमपणानेज सिंहादिक उपमात्रयें करी समर्थतो थको आगल कहे बे. (पुरिससीहाणं के०) पुरुषसिंहेन्यः एटले पुरुष मांहे सिंहसमान बे, अर्थात् जेम सिंह, शौर्यादिकगुणे करी युक्त होय बे, तेम जगवंत पण कर्मरूप शत्रूने शूरतायें करी बेदनारा बे, क्रूरतायें करी क्रोधादिकने उच्छेदनारा बे, सहनतायें करी रागादिकने उच्छेदनारा बे वीर्ययोगें करी तपश्चर्यामां प्रवर्त्तनारा बे तथा अवज्ञा परीसह उपसर्गने विषे एमने जय नथी, इंद्रियवर्गने विषे खेद नथी तथा श्रद्धाए करी संयम मार्गने विषें निःप्रकंपता बे. अथवा जगवंत १ बौद्ध, २ नैयायिक, ३ सांख्य, ४ वैशेषिक, ५ जैमिनीय, अने ६ मीमांसक, ए परवादीरूप हस्तीउनुं मथन करनारा बे तेमाटे पुरुषसिंह कहीयें. (पुरिसवरपुंमरीयाणं के०) पुरुषवरपुंमरीकेन्यः एटले पुरुषोने विषे वर प्रधान पुंमरीक कमल समान बे, एटले पुंमरीक कमल, जेम कचराथी उत्पन्न थाय बे, जलमां वृद्धि पामे बे, अने ते बन्नेनो त्याग करी उपर वर्त्ते बे, प्रकृतियें करी सुंदर होय बे, जुवनलक्ष्मीनो निवास बे, चक्षु प्रमुखने आनंदनुं घर बे, उत्तमगुणना योगें करी विशिष्ट तिर्यंच, मनुष्य अने देवोयें करी सेवन कराय बे तेने सुखनुं हेतु थाय बे. तेम श्रीअरिहंत जगवंत पण, कामरूप जे कचरो एटले मातानुं रुधिर अने पितानुं वीर्य, ते थकी उत्पन्न थया, दिव्यजोगरूप जलेंकरी वृद्धि पाम्या, पढी बेहुनो त्याग करी वर्त्ते बे, पोतें सुंदर बे, केवल ज्ञानादिक गुणना योगें करी जव्यजीवो सेवे बे, तेने मोक्षसुखना हेतु थाय बे, (पुरिसवरगंधहत्थीणं के०) पुरुषवरगंधहस्तिन्यः पुरुषोने विषे वर प्रधान गंधहस्ती समान बे एटले जेम गंधहस्तीना गंधें करी ते देशमां विचरनारा बीजा क्षुद्र हाथीउ नाशी जाय बे, तेनी पेरें जगवानना विहाररूप पवनना गंधथकी परचक्र, डाजक्ष, मारी प्रमुख उपद्रवरूप जे गज बे, ते जागी जाय बे माटे पुरुषवरगंधहस्ती कहीयें.

एम सिंह, पुंमरीक अने गंधहस्ती, ए त्रण उपमा थकी पुरुषोत्तम कहि यें,एमां पुरुषमांहे उत्तम कह्या माटे ए चार पदनो पूर्वोक्त सामान्य हेतु संपदा थकी इत्वर एटले विशेषहेतु नामें त्रीजी संपदा जाणवी. एमां लघु त्रीश अने गुरु बे, सर्व मली बत्रीश अक्षरो छे ॥ ३ ॥

हवे चोथी उपयोग संपदामां जे पूर्वे जगवानने पुरुषोत्तमज कह्या परंतु ते केवल पुरुषोत्तमज नथी,त्यारें केवा छे? ते कहे छे.

॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अर्थः–(लोगुत्तमाणं के०) लोकोत्तमेज्यः सर्व लोकने विषे उत्तम छे. अहीं लोक शब्दें करीने सर्व जव्य लोकज ग्रहण करवा, ते जव्य लोकोने कल्याणना करनार छे. ए माटे लोकोत्तम कहियें. हवे जे लोकमां उत्तम होय, तेतो नाथ कहेवाय, ते आगले पदें देखाडे छे. (लोगनाहाणं के०) लोकनाथेज्यः एटले लोकना नाथ छे. अहीं लोक शब्दें करीने आसन्नसिद्धि जीव लेवा, (आसन्न के०) नजीक छे सिद्धि जेने एवा जव्य जीवोना नाथ छे एटले तेने योगक्षेमना करनार छे, केम के अलब्धधर्मीने धर्मनेविषे जोडवो, तेने योग कहियें, अने लब्धधर्मीने जेम कुशल वर्त्ते, तेम करवुं, तेने क्षेम कहियें. अर्थात् जे धर्म पाम्या नथी तेने पमाडे छे अने जे धर्म पाम्या छे तेनी रक्षा करे छे, ए रीते योग अने क्षेम, ए बेहु वानां प्रजु करे छे माटे लोकना नाथ कहियें. तिहां तात्विक नाथपणुं केवा प्रकारें थाय, ते कहे छे. (लोगहियाणं के०) लोकहितेज्यः लोकने हितना करनार छे, अहीं लोक शब्दें सर्वसंव्यवहारी प्राणिवर्ग लेवो, तेने सम्यक्दर्शन प्ररूपण, रक्षणरूप योगें करी हितना करनार छे, अथवा षड्विध जीवनिकायनी रक्षादिकने करवे करी ते हितकारक छे माटे लोकने हितना करनार कहियें. हवे ए नाथपणुं अने हितपणुं ते यथावस्थितसमस्तवस्तुसमूहप्रदीपन थकीज होय, तेमाटें आगल पद कहे छे. (लोगपईवाणं के०) लोकप्रदीपेज्यः अहीं लोक शब्दें संज्ञी पंचेंद्रिय जीव, जेने धर्मनी आस्था छे ते लेवा. तेमने देशनादिक करवे करीने अज्ञानमिथ्यास्वरूप अंधकार टालवा माटे प्रदीप समान छे. अहीं संज्ञी जीवोने विषे प्रदीपपणानी उपपत्ति छे, परंतु

असंज्ञीने विषे नथी: केम के अंधप्रत्यें प्रदीपपणुं वृथा छे ते माटें. तथा (लोगपज्ञोयगराणं के०) लोकप्रद्योतकरेन्यः अहीं लोक शब्दें विशिष्ट चौद पूर्वने जाणनारा लोक ग्रहण करवा ते गणधर चौद पूर्वधर जाणवा तेमना हृदयने विषे द्वादशांगीरचनारूप बोधना प्रकाश करवापणानी उप पत्ति छे एटले तेने सूर्यसमान छे, अर्थात् प्रनुना "उपन्नेश्वा, विगमेश्वा, धुवे श्वा," एटली त्रिपदीने वचनें करीज गणधरने एवी बुद्धि उत्पन्न थाय छे के जेथकी ते नवां अगीआर अंग अने चौद पूर्वनी ते वखतेंज रचना करे छे, माटे लोकप्रद्योतकर कहियें. एमां लोगुत्तमाणं इत्यादिकें करी लोक मां उत्तम कह्या माटें सामान्यस्तवनानो जे उपयोग तेनो हेतु कह्यो तेथी ए उपयोग संपदा चोथी जाणवी. एमां लघु सत्तावीश अने गुरु बे,सर्व मली उगणत्रीश अक्षरो छे ॥ ४ ॥

हवे ए पूर्वोक्त संपदाने विषेज विशेष हेतुरूप पांचमी उपयोगहेतु संपदा कहे छे. पूर्वोक्त लोकप्रद्योतकर एवा विशेषणयुक्त तो सूर्य,हरि, हर, ब्रह्मादिक पण तत्तीर्थिकमतें करीने होय छे, त्यारें ते प्रनुमां विशेष शुं? ते आगलना पदें करी कहें छे.

॥ अनयदयाणं, चक्कुदयाणं, मग्गदया
णं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥

अर्थः—(अनयदयाणं के०) अनयदेन्यः एटले इह लोक, परलोकादिक सात नयरहित एवुं जे अनयपद, तेना दातार अथवा सर्व प्राणीनां जे नय, तेना परिहारवाली एवी दया अनुकंपा छे जेने अथवा जे अपकारी प्राणापहरणरसिक उपसर्गकारक एवा जीवोने पण नय न आपे माटे अनयद कहियें. ए प्रमाणे सर्व प्राणीने अनय देनारा,एवा हरि, हर, ब्रह्मादिक न होय. हवे ए प्रनु केवल अपकारीने अथवा ते अपकारीथी अनेरा बीजा जीवोने अनर्थपरिहारमात्रज करे छे, एटलुंज नहीं पण अर्थप्राप्ति पण करे छे तद्दर्शनार्थ कहे छे. (चक्कुदयाणं के०) चक्षुर्देन्यः सम्यक्ज्ञानरूप लोचनना दातार. तथा चक्षु शब्दें विशिष्ट आत्मधर्मरूप तत्त्वाव बोध वस्तुत्वदर्शनें धर्मकल्पद्रुमनी बीजनूत एवी श्रद्धारूप कल्याणचक्षु ते नगवान्थकी प्राप्त थाय छे, तथा अज्ञानांध जीवने श्रुतज्ञानरूप चक्षु

आपे बे. कहेवुं बे के चक्खुष्मंत तो तेज नर जाणवा के जे श्रुतज्ञानरूप चक्षुयें करीने सम्यक्रीतें हेय उपादेय नावने जाणे, माटे श्रुतचक्षुने देनारा ते चक्षुद कहियें ए रीते चक्षु आपी, तेथी ते प्रज्जुनुं श्रुतचक्षुदत्व उपकारीपणुं कह्युं. हवे निर्वाणमार्गदत्व उपकारीपणुं कहे बे, (मग्गदयाणं के०) सम्यक्दर्शनादिक रत्नत्रयरूप जे मोक्षनो मार्ग बे, तेना दातार; जेम कोइ एक अटवीमां नूला पडेला वटे मार्गुनुं धन, चोर लोकोयें लूंटीने तेने उन्मार्गें पाड्यो होय पबी तेने कोइ सत्पुरुष वस्त्र, धन प्रमुख आपी खरो मार्ग देखाडी, तेना स्थानकें पहोचाडे तेम, आ संसार रूप अटवीने विषे नविक जीवरूप साथना धर्मधन रूप संबलने महामोहादिकनी धाडें लूंटी मिथ्यात्वादिक पाटा बांधीने कर्मस्थितिरूप कुमार्ग अटवीमां नाख्या, तेने परोपकारी एवा नगवंत ते मिथ्यात्वादिक पाटा कापी, धर्मसंबल आपी, रत्नत्रयीरूप शुद्ध मार्गें चलावी शाश्वतस्थान प्रत्यें पहोचाडे बे. हवे तेवा मार्ग प्रत्यें पोहोचाडे, ते परमोपकारी कहेवाय? ते माटे परमोपकारीपणुं देखाडवाने कहे बे. (सरणदयाणं के०) शरणदेन्यः एटले जन्म, जरा अने मरणप्रत्यें पमाडनार एवो कर्मरूप नूप, ते थकी बीक पामनारा जीवने शरणना दातार बे अर्थात् जेम वैरीना नयथकी बीक पामेला पुरुषने कोइ उत्तम पुरुष शरण राखे, तेम दुर्गतिना नय थकी बीक पामनार पुरुषने नगवंत शरण राखे. अहीं शरणशब्दें करी नयार्त्तत्राण एटले संसाररूप दुर्मार्गने विषे प्राप्त थयेला अने अत्यंत प्रबल रागादिकें करी पीडा पामेला एवा जनोने तत्त्वचिंतवनरूप अध्यवसाय जेणें करी मोक्षप्राप्ति थाय तेना दातार. हवे ते शरणद पणानेज आपीने पबी शानो लान आपे बे? ते माटे आगल कहे बे. (बोहिदयाणं के०) बोधिदेन्यः एटले बोधि ते जिनधर्मप्राप्ति तेने देनारा ते बोधिद कहियें. एमां पूर्वे कहीजे उपयोग संपदा तेना अर्थने अनयदयाणं इत्यादिक हेतु सन्नावें करी दीपाव्युं माटे ए पांचमी तद्धेतु संपदा अथवा उपयोगहेतु संपदा जाणवी. एमां लघु पच्चीश अने गुरु बे, सर्व मली सत्तावीश अक्षरो बे ॥ ५ ॥

एम अनयदान, चक्षुर्दान, मार्गदान, शरणदान, अने बोधिदान ए सर्वने नगवंतना धर्मनी प्राप्तियें करी पाम्यो, ए माटे प्रज्जुनुं धर्मदत्व आगल कहे बे. तथा स्तोतव्य संपदाने विषेज विशेषें करी उपयोग संपदा पण कहे बे.

धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं॥ ६ ॥

अर्थः- (धम्मदयाणं के०) धर्मदेन्यः यथायोग्य साधु श्रावक संबंधी धर्मना दातार ले. इहां धर्म एटले चारित्रधर्म ग्रहण करवो, ते बे नेदें ले. तेमां सर्व सावद्ययोगविरतिलक्षण, ते साधुनो धर्म अने देशविरतिलक्षण ते श्रावकनो धर्म, ए पण नगवानथकीज प्राप्त थाय ले यद्यपि धर्मना अन्य हेतुनो सद्नाव ले खरो, तथापि तेनुं प्रधानत्व नगवानने विषेज ले, केम के एनी देशना अन्यथा होय नही, माटे धर्मद कहियें. हवे धर्मदायकपणुं तो धर्मना उपदेशथकी होय, तेमाटेज आगल पद कहे ले के, (धम्मदेसियाणं के०) धर्मदेशकेन्यः पूर्वोक्त जेने जेवो धर्म योग्य होय तेने तेवो साधु श्रावक संबंधी धर्म तेना देशक एटले उपदेशना करनार ले. माटे धर्मदेशक कहियें. (धम्मनायगाणं के०) धर्मनायकेन्यः एटले धर्मना नायक अर्थात् धर्मने वश करवाथकी तथा ते धर्मनुं फल जे अरिहंत पदवी ले, तेने नोगववाथकी अथवा कोइ धर्मनो व्याघात करे, तो करवा न दीए माटे धर्मनायक कहियें, तथा (धम्मसारहीणं के०) धर्मसारथिन्यः धर्मना सारथि ले, केम के जेम सारथि रथस्थनी तथा रथिकनी अने अश्वोनी रक्षा करे ले तेम श्री अरिहंत पण चारित्र धर्मनां जे अंग तेमनुं रक्षण तथा उपदेश करे, नव्यजीवरूप रथसमूह तेने कुमार्गें चालवा न आपे, कुमार्गें जाताने पाला वाले, एक मोक्षमार्गने विषेज चलावे माटे धर्मसारथि कहियें; तथा (धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं के०) धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्तिन्यः धर्म तेज प्रधान श्रेष्ठ ले चार गतिरूप संसारना अंतनुं करनार एटले मिथ्यात्वादिक नावशत्रु तेमने उछेद करवानुं कारण तद्रूप धर्मचक्रें करीने जे वर्त्ते ले,विचरे ले अर्थात् उत्कृष्टधर्म तेज चारगतिना अंतकरवारूप चक्र तेणें करी सहित वर्त्ते ले, ते धर्मवरचातुरंतचक्रवर्ती कहियें. एमां पूर्वोक्त उपयोगहेतु संपदाना गुण दीपाववा निमित्तें कारण सहित स्तववा योग्यनुं स्वरूप कह्युं. माटे ए लही सविशेषोपयोगहेतु संपदा जाणवी एमां लघु उंगणत्रीश, अने गुरु सात सर्व मली लत्रीश अक्षरो ले. ॥ ६ ॥

हवे यथार्थस्वरूप प्रकटार्थ देखाडवा रूप सातमी संपदा कहे ले.

अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥

अर्थः—हवे ते धम्मदयाणं इत्यादि प्रकृष्ट विशेषण समूह तो ज्ञानादिकयोग थकी होय, त्यां ज्ञानातिशयत्व कहे छे. (अप्पडिहय के०) अप्रतिहत एटले ज्ञायकपणाथकी कोइथी हणाय रोकाय नहीं एवुं जे (वर के०) प्रधान (नाण के०) ज्ञान ते विशेषोपयोग अने (दंसण के०) दर्शन ते सामान्योपयोग तेहना (धराणं के०) धरनार छे, तेंने अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं कहियें. हवे एवी ज्ञानसंपत्तिमान्तो कोइ एक छद्मस्थ पण होय परंतु ते मिथ्या उपदेशकपणा थकी उपकारी न होय माटे निश्छद्मपणुं प्रतिपादन करतो थको कहे छे तथा अप्रतिहतज्ञानपणुं केम उपन्युं? ते पण कहे छे. (विअट्टछउमाणं के०) व्यावृत्तछद्मन्यः अहीं (विअट्ट के०) निवृत्त्युं छे जे थकी (छउमाणं के०) छद्मस्थपणुं एटले कपटपणुं, शठपणुं अथवा आवरणपणुं, ते ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय अने अंतराय, ए चार घनघातिकर्म जेथकी क्षय थइ गयां छे तेने व्यावृत्तछद्मा कहियें. एमां अप्रतिहतवरनाणदंसणधरत्वें करी तथा व्यावृत्तछद्मतायें करीने प्रथम स्तोतव्य संपदाने विषेज सातमी स्वरूपहेतु संपदा कही. एमां लघु वीश अने गुरु बे, सर्व मली बावीश अक्षरो छे ॥ ७ ॥

हवे ए "भ्रांतिमात्रमसदविद्या" एवां वचनथी अरिहंतप्रभुने कल्पित अविद्यावादीउ परमार्थें करी अजिनादिक कहे छे. तन्निरासार्थ तथा पूर्वोक्तव्यावृत्तछद्मस्थपणुं रागादिकनाजयथी थायज छे. माटे ते आठमी संपदायें कहे छे.

॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥

अर्थः—(जिणाणं जावयाणं के०) जिनेभ्यो जापकेभ्यः एटले (जिणाणं के०) रागादिक वैरीनुं जींतवापणुं छे माटे जिन कहियें, अर्थात् ए प्रभुने विषे रागादिक शत्रुनुं अस्तित्व नथी. तथा (जावयाणं के०) जापकेभ्यः एटले भव्य जीवोने पण सदुपदेशें करी रागादिक शत्रुथकी मूकावनार छे, माटे जापक कहीयें. अहीं एवा जापक पण काल करणवादीउयें भावथकी अतीर्ण कहेवाय छे तेना निरासार्थ कहे छे. (तिन्नाणंतारयाणं के०) तीर्णेभ्यस्तारकेभ्यः एटले पोतें संसारसमुद्रथकी तस्या, अने

भव्य जीवो प्रत्यें संसार समुद्रथकी तारनार छे. अर्थात् सम्यग् ज्ञानदर्शी नचारित्र रूप नावें करीने पोतें भवार्णवथी तऱ्या छे तथा अन्य भवि जीवनें तारे छे माटे संसारपारगतने कालावर्त्तनपणुं घटतुं नथी माटे ते तीर्ण अने तारक जाणवा. अहिं तेवानें पण ज्ञानवादी एवा मैमांसिकभेदवाला पुरुषो, अबुद्ध कहे छे ? तेना निराकरणार्थ कहे छे. (बुद्धाणं के०) बुद्धेभ्यः पोतें तत्त्वना जाण थया. (बोहयाणं के०) बोधकेभ्यः एटले भव्य जीवोने स्वपरस्वरूपनो बोध करावनार, (मुत्ताणं के०) मुक्तेभ्यः एटले पोतें चातुर्गतिकविपाक विचित्र कर्मथकी मूकाणा तथा (मोअगाणं के०) बीजा भव्य प्राणीने कर्मथकी मूकावनार छे, ए जिनत्वजापकत्व, तीर्णत्वतारकत्व, बुद्धत्वबोधकत्व, मुक्तत्वमोचकत्व, एणें करी स्वपरहित सिद्धि छे तेथी पोताने तुल्य परने फलना आपनार कह्या,ते माटे ए स्वतुल्य फलकारी एवी चार पदनी आठमी निजसमफलद नामे संपदा जाणवी. एमां लघु पच्चीश,अने गुरु त्रण, सर्व मली अठावीश अक्षरो छे ॥ ८ ॥

हवे श्री अरिहंत मोक्ष गया, ते अवस्था आश्रयीने नवमी संपदा कहे छे.

सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत म
क्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं,
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥

अर्थः–(सव्वन्नूणं के०) सर्वज्ञेभ्यः एटले सूक्ष्म बादर एवा सर्व जगत् संबंधी भाव तेना ज्ञात जाण एटले सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः सर्वने जाणे तेने सर्वज्ञ कहियें, (सव्वदरिसिणं के०) सर्वदर्शिभ्यः एटले सर्व सूक्ष्म, बादर, जगत्ना भाव तेने प्रत्यक्षनी पेरें देखे, अहींआं सर्व पदार्थ सामान्य अने विशेषरूप छे, तो पण प्रथमसमयें विशेषरूप जाणे माटे सर्वज्ञ अने तेवार पछी बीजे समयें सर्व पदार्थ सामान्यपणे देखे, माटे सर्वदर्शी जाणवा. अहींआं कोइ आशंका करे के प्रथम समयें ज्ञानोपयोग अने बीजे समयें दर्शनोपयोग कह्यो छो, तेवारें ज्ञान समयें दर्शननो अभाव अने दर्शन समयें ज्ञाननो अभाव थवानो प्रसंग आवशे ? तेनें कहीयें के, सर्वज्ञ केवलीने सर्वदा निरंतर ज्ञान दर्शननी लब्धि छतां पण स्वभावथी एक समयें बे उपयोगनो असंभव छे, क्षायोपशमिक भावें पण एमज

देखाय छे, केमके चार ज्ञानना धणीने पण एक समय एक ज्ञाननो उप योग होय, तेवारें बीजा त्रण ज्ञाननो अनाव न होय अहींआं घणी वक्तव्यता छे, परंतु ग्रंथगौरवना नयथी नथी लखता. हवे ए प्रकारना सर्व विशेषणें करी युक्त मुक्त छे, तो पण मुक्तवादीउयें नियत स्थानस्थ, ते कहेवाता नथी त्यां कहे छे. (सिव के०) शिव एटले सर्वोपद्रवरहित छे, माटें शिव कहियें. (मयल के०) अचल एटले स्वानाविक प्रायोगिक चलनक्रिया रहित छे माटे अचल, स्थिर अने अकंपित कहियें. (मरुय के०) अरुज एटले व्याधिवेदनथी रहित तथा तेना बंधनरूप शरीर अने मन नो अनाव छे माटे अरुज रोगरहित कहियें. (मणंत के०) अनंत एटले अ नंत ज्ञानादिक चतुष्टयें करी युक्त छे माटे अनंत कहियें. (अरकय के०) अ क्षय एटले सर्वकाल विनाशनो अनाव छे निरंतर निश्चल छे माटे अक्षय कहियें. (मवाबाह के०) अव्याबाध एटले अकर्मत्व छे माटे समस्त प्रकारें बाधारहित छे (मपुणराविति के०) अपुनरावर्त्ति अपुनः एटलें नथी वली आवृत्ति एटले पाछुं आववुं जेथी अर्थात् जे गति थकी फरी सं सारने विषे अवतार लेवो नथी, एवी (सिद्धिगइ के०) सिद्धिगति छे, (ना मधेयं के०) नाम जेनुं ए शिवमयलथी मांमीने सात विशेषणसहित एवुं (ठाणं के०) स्थानक प्रत्यें (संपत्ताणं (के०) संप्राप्तेन्यः एटले पाम्या छे, अर्थात् मोक्षनगर प्रत्यें पाम्या छे, एवा अरिहंत नणी (णमो के०) नमस्कार थाउ. अहींआं बीजी वार णमो पद आव्युं ते पदें पदें नमस्का र जणाववाने अर्थे छे. तथा आहिं स्तुति करी छे, माटे पुनरुक्ति दोष पण नथी कारण के, सज्झाय, ध्यान, तप, कायोत्सर्ग, उपदेश, स्तुति अने उत्तमना गुणनां वखाण, एटले स्थानके पुनरुक्तिनो दोष कह्यो नथी. वली ते श्रीअरिहंत केहेवा छे ? तोके (जिणाणं के०) अंतरंगरागादिक रिपुवर्ग प्रत्यें जींपनार तथा (जीयनयाणं के०) इहलोकादिक सात नय प्रत्यें जींप नार छे, ते सात नयनां नाम कहे छे. मनुष्यने मनुष्यनुं नय, ते प्रथम इहलोकनय जाणवुं. मनुष्यने देवतादिकनुं नय, ते बीजुं परलोकनय जाणवुं. रखे कोइ महारुं कांहिं लीयें ? ते त्रीजुं आदाननय जाणवुं, रखे म हारी आजीविका हणाय ? ते चोथुं आजीविकानय जाणवुं. नींत प्रमुख पडवानो शब्द सांनली बीक पामे, ते पांचमुं अकस्मात् नय जाणवुं.

रखे ने मुजने मरण आवे ? ते रहुं मरणजय जाणवुं. अपयश पामवा थकी बीक राखे, ए सातमुं अपयशजय जाणवुं. ए सवन्नूणं इत्यादिक वाक्य मोक्षमां वे, तेहवुं स्वरूप कह्युं माटे ए त्रण पदनी मोक्षसंपदा जाणवी. एमां लघु एकावन्न अने गुरु सात, सर्व मली अगवन्न अक्षरो वे ॥ ए ॥

ए श्री शक्रस्तवमांहे अनेक विद्यामंत्र गोपव्या वे ते गुरु आम्नायें जाणीयें, ए नमुत्थुणं करीने जगवंतने जन्म कल्याणादिकने विषे इंड स्तवे वे माटे एने शक्रस्तव कहियें. एमां सर्व मली संपदा नव वे, पद तेत्रीश वे, वर्ण चोत्रीश लघु, अने अगवीश गुरु, सर्व मली वर्णो ने बाशव अक्षरो वे. ए समवसरणें बेगा विहरमाण तीर्थंकर देव जे जावजिन वे तेनें स्तववारूप प्रथम अधिकार कह्यो. एटलो शक्रस्तव श्रीगणधर देवनो करेलो जाणवो.

हवे इव्यअरिहंत जे श्री तीर्थंकर देवनां दलियां ते पण वंदनीय वे. जेम श्रीजरतेश्वरें श्रीमहावीरना जीवने मरीचिना जवें वांद्यो, ते जणी तें इव्यअरिहंत कहियें. एवा त्रिकालवर्त्ती इव्य अरिहंत जे होय, तेमने वांदवाने अर्थे पूर्वाचार्यकृत गाथा कहे वे.

॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ जविस्संति णाग
ए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा, सवे तिविहेण
वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

अर्थः—(जेअ के०) ये एटले जे जिन,(अईआ के०)अतीताः एटले अतीत कालने विषे थया, एवा (सिद्धा के०) सिद्धाः सिद्ध जगवंत एटले जे अतीत कालने विषे तीर्थंकर पदवी पाली मोक्षे पहोता (अणागएकाले के०) अनागत कालने विषे (जे के०)ये एटले जे जिन,(जविस्संति के०)जविष्यंति एटले थाशे सिद्धपर्याय पामशे, (अ के०) वली (संपइअ के०) सांप्रतिक एटले सांप्रत वर्त्तमान कालने विषे (वट्टमाणा के०) वर्त्तमानाः सांप्रत कालें वर्त्तमान चोवीशीयें श्रीऋषज प्रमुख चोवीश तीर्थंकर थया अथवा महाविदेह क्षेत्रने विषे विहरमान जे श्रीसीमंधर प्रमुख वीश तीर्थंकर जयवंता वे तेने वर्त्तमान कहियें. ते (सवे के०) सर्व जिन प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधेन त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायानी एकाग्रतायें करी (वंदामि के०) हुं वांडं बुं ॥ इव्य अरिहंत जो नरकादि गतिमां होय तो पण

ते जावअरिहंतनी पेरें वांदवा योग्य छे, अहिं नामजिन अने जावजिन पण इव्यमां स्थापन करी वांदवा. आ गाथामां लघु एकत्रीश, गुरु चार, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे. ते पूर्वला साथें मेलवतां लघु. (२६५) अने गुरु (३२) मली (२९७) अक्षरो थाय ॥ १० ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ॥
सवाइं ताइं वंदे, इह संतो तछ संताइं ॥ १ ॥ १४ ॥

अर्थः—(उड्ढे के०) ऊर्ध्वलोकने विषे (अ के०) वली (अहे के०) अधोलोकने विषे (अ के०) वली (तिरिअलोए के०) तिर्छालोकने विषे (जावंति के०) जेटली (चेइआइं के०) चैत्यानि एटले जिनप्रतिमा छे. (ताइंसवाइं के०) तानि सर्वाणि एटले ते सर्व प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडं बुं, ते कहेवो थको हुं वांडं बुं? तोके (इहसंतो के०) अहींआ रह्यो थको, अने कहेवी ते जिनप्रतिमा? तो के, (तछ के०) तिहां त्रण लोक मांहे (संताइं के०) बती बिराजमान रही छे, एटले ऊर्ध्वलोकें वैमानिक मांहे (८४९७०२३) एटलां चैत्योने विषे (१५२९४४४७६०) जिनप्रतिमा छे, तथा ज्योतिषी मंध्यें असंख्याता प्रासाद अने असंख्यातां बिंब छे तथा अधोलोकें जवनपति मध्यें (७७२००००००) प्रासाद छे. तिहां (१३८९६००००००) बिंब छे. तेमज व्यंतरमां असंख्याता प्रासाद अने असंख्यातां बिंब छे तथा तिर्यक्लोकमां (३२५९) प्रासाद, तिहां (३९१३२०) एटलां शाश्वतां जिनबिंब छे अने अशाश्वातानुं कांहिं गणित नथी, ते हुं अहींआं बुं अने ते चैत्य तिहां छे, तेने अहींआंथकी हुं वांडं बुं. आ गाथामां चार पद छे, चार संपदा छे, लघु बत्रीश अने गुरु त्रण, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि ॥

जावंत केवि साहू, जरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सवेसिं
तेसिं पणउ, तिविहेण तिदंमविरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

अर्थः—(जरह के०) पांच जरत, (एरवय के०) पांच ऐरवत, (अ के०) वली (महाविदेहे के०) पांच महाविदेह, ए पंदर क्षेत्रने विषे (जावंत के०)

जेटला (केवि के०) कोइ पण (साहू के०) साधु छे, (तेसिंसवेसिं के०) ते सर्व साधु, साध्वी जणी महारो (पणउ के०) नमस्कार थाउ. ते साधु केहेवा छे ? तो के (तिविहेण के०) त्रिविध एटले मन, वचन अने कायायें करीने (तिदंम के०) अशुज मन, वचन, कायारूप त्रण दंमथकी (विरयाणं के०) निवर्त्त्यां छे एटले जे जीवनुं मन, कुध्याने वर्त्ते ते मनोदंम, सावद्य वचन बोले ते वचनदंम अने काया कुव्यापारें प्रवर्त्तावे, तेने कायदंम कहियें. ए त्रण दंम जाणवा ॥ एमां चार पद, चार संपदा, लघु साडत्रीश अने गुरु एक, सर्व अक्षर आडत्रीश छे. पूर्वली गाथाना मेलवतां उगणोत्तेर लघु, चार गुरु, सर्व अक्षर तहोंत्तेर छे ॥१॥१५॥

॥ अथ उपसर्गहर स्तवन ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥१॥

अर्थः—जेना शासननुं (उवसग्गहरं के०) दुःखसंकटादिक उपसर्गनो हरनार, एवो (पासं के०) पार्श्वनामें यक्ष छे सेवक जेनो एवा श्री (पासं के०) पार्श्वनाथ स्वामीप्रत्यें (वंदामि के०) हुं वांडुं छुं. अथवा राग, द्वेष अने मोह ए त्रणना करेला जे जन्म, जरा अने मरणरूप उपसर्ग, ते प्रत्यें प्रजु पोतें हरनार छे. एवा (पासं के०) प्राशं एटले प्रशब्दें करी गइ छे, आशं शब्दें करी आशा वांछा जे थकी एवा श्री पार्श्वनाथ प्रत्यें हुं वांडुं छुं. वली श्री पार्श्वनाथ केहेवा छे ? तोके, (कम्मघणमुक्कं के०) कर्मना घन एटले समूह ते थकी मुक्त छे, रहित छे अथवा शुद्धचेतनरूप चंद्रमाने ढांकनार एवो कर्मरूप घन एटले मेघ तेथकी मुक्त छे रहित छे. वली श्री पार्श्वनाथ केहेवा छे ? तोके, (विसहर के०) विषधर जे द्रव्यथी तिर्यंच सर्प, ते संबंधी जे (विस के०) विष. एटले दृष्टिविष, आशीविष, लालविषादिक ते प्रत्यें (निन्नासं के०) निर्नाश एटले अतिशयें करीने नाशना करनार छे. अथवा जावथी विषधर ते मिथ्यात्वी जीव संबंधी जे विष, ते मिथ्यादृष्टि पणुं जे अनादि अनंत कालनो महामोहरूप सर्पनुं विष, ते जावथी सर्व आत्मप्रदेशें व्याप्युं छे, एवुं जे मिथ्यात्वरूप विष, तेना अतिशयें करी नाशना करनार छे. वली श्री पार्श्वनाथ केहेवा

छे? तो के (मंगल के०) दुःखनो विलय, उपद्रवनिवृत्ति तेने मंगल कहियें तथा (कल्लाण के०) सुखनी वृद्धि तेना (आवासं के०) आवास छे आ गाथामां लघु बत्रीश अने गुरु पांच, मली साडत्रीश अक्षरो छे ॥१॥

हवे मंत्रगर्जित एवुं जे आ स्तवन, तेनो महिमा कहे छे.

विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥
तस्स गह रोग मारी, दुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥

अर्थः—(जो के०) जे (मणुउ के०) मनुष्य, श्री पार्श्वनाथना नाम गर्जित एवो (विसहरफुलिंगमंतं के०) विषधरस्फुलिंगनामा अढार अक्षरनो मंत्र जे एहीज स्तोत्रमांथी निकले छे, ते मंत्र प्रत्यें (सया के०) सदा सदैव निरंतर (कंठे के०) कंठने विषे (धारेइ के०) धरे, स्मरे, (तस्स के०) तेहना (गह के०) सूर्यादिक ग्रह, (रोग के०) कफ कुष्ठजलोदरादिक रोग, (मारी के०) मर्की उपद्रव, (दुठजरा के०) दुष्ट दुर्जन एवा शत्रु तथा एकांतरिया प्रमुख ज्वर, ते (उवसामं के०) उपशम नाव प्रत्यें एटले नाश प्रत्यें (जंति के०) पामे आ गाथामां छत्रीश लघु अने बे गुरु, मली आडत्रीश अक्षरो छे ॥ २ ॥

॥ चिठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ॥
नर तिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥

अर्थः—अथवा हे नाथ! ए ताहारो जे (मंतो के०) विषधर स्फुलिंग नामें जे मंत्र, ते तो (दूरे के०) दूर एटले वेगलो (चिठउ के०) तिष्ठतु एटले रहो पण (तुज्झ के०) ताहारो (पणामोवि के०) प्रणाम एटले नमस्कार करवो ते पण (बहुफलो के०) बहुफल एटले घणां एवा सौजाग्य, आरोग्य, धन, धान्य कलत्र, पुत्र, द्विपद, चतुःपद, चक्रवर्त्ति अने इंद्रादिकनी पदवीना फलनो आपनार (होइ के०) छे, तेहीज कहियें छैयें. इह लोकना फलनुं तो शुं केहेवुं? पण तमोने नमस्कार करनार जे सम्यग्दृष्टि जीव छे, ते प्रायें वैमानिकदेवोमां उत्पन्न थाय छे अने कदाचित् पूर्वबद्धायु छतां जवपरंपरायें करीने जीव, (नरतिरिएसुवि के०) नर एटले मनुष्यने विषें अथवा तिर्यंचने विषे उत्पन्न थाय छे, तो पण त्यां तेने शारीरिक

तथा मानसिक डुःख अने दारिद्र प्राप्त न थाय, केम के जो मनुष्यमां उपजे, तो रोगादिकें रहित थाय अने समस्त हितार्थे करी संपत्तिमान् थाय माटे तेने शारीरिक अने मानसिक डुःख प्राप्त न थाय तथा ऋद्धि समृद्धि वान् होय माटे दरिद्री पणे न होय अने तिर्यंचमां उपजे, तो पण कनक, रत्न, चिंतामणि, कल्पद्रुम, पट्टतुरंगम, जयकुंजरादिने विषें उपजे, तिहां पूजा पामे. अथवा ते मनुष्य पण केहेवो? तो के तिरिए एटले पशु समान एवा बाल गोपाल कृषीवलादिक तेने विषें पण कदाचित् कर्मना वशथकी उपजे, कोण उपजे? तो के तुम प्रत्यें प्रणामनो करनार एवो (जीवा के०) जीव, तो तिहां पण (डुरकदोगच्चं के०) डुःख अने दारिद्र प्रत्यें (नपावंति के०) न पामे आ गाथामां लघु तेंत्रीश अने गुरुचार सर्व मली साडत्रीश अक्षरो ठे ॥ ३ ॥

॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवप्नहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

अर्थः—(चिंतामणि के०) चिंतामणि रत्न थकी अने (कप्पपायवप्न हिए के०) कल्पपादप एटले कल्पवृक्षथकी अधिक एवो (तुह के०) तमारा (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व दर्शनने (लद्धे के०) पामे ठते, (अविग्घेणं के०) विघ्न रहित पणे (जीवा के०) नव्य जीव, (अयरामरं के०) अजर एटले ज्यां जरा नथी अने अमर एटले ज्यां मरण नथी, एवुं (ठाणं के०) स्थान, ते प्रत्यें (पावंति के०) पामे, पण तमारुं सम्यक्दर्शन पाम्या विना कोइ जीव, मोक्ष प्रत्यें पामे नहीं आ गाथामां लघु उंगणत्रीश, अने गुरु ठ, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो ठे ॥ ४ ॥

॥ इअ संथुउ महायस, नत्तिप्नरनिप्नरेण हिअएण ॥ ता
देव दिज्ज बोहिं, नवे नवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

अर्थः—(महायस के०) हे महायशः! एटले हे त्रैलोक्यव्यापकयशः! (नत्तिप्नर के०) नक्तिने समूहें करी (निप्नरेण के०) पूर्ण नरें एटले नक्तिना समुदायें करी परिपूर्ण नर्खुं एवुं, (हिअएण के०) हृदय एटले चित्त तेवा चित्तें करी में सेवकें (इअ के०) ए प्रकारें तुजनें (संथुउ के०) संस्तुत एट

ले स्तव्यो. (ता के०) ते कारण माटे (देव के०) हे देव ! निज स्वरूप रूपवनने विषे क्रीडाना करनार एवा (पासजिणचंद के०) हे पार्श्वजिनचंद्र! एटले समीप रह्या जे श्रुतधरादिक जिन तेने विषे चंद्रमा समान एवा हे श्री पार्श्वनाथ ! तमे मुज भणी (भवेभवे के०) जन्म जन्मने विषे एटले ज्यां सुधी हुं मुक्ति प्रत्यें नहीं पामुं, त्यां सुधी (बोहिं के०) बोधि एटले जिनधर्मनी प्राप्ति ते प्रत्यें (दिन्न के०) दीउ एटले आपो. किं बहुना एटले शुं घणुं कहुं? आ गाथामां लघु चोत्रीश, अने गुरु चार, सर्व अक्षर आडत्रीश छे ॥ ५ ॥ सर्व मली पांचे गाथामध्यें पद वीश, संपदा वीश, गुरु एकवीश, लघु एकशो चोशठ, सर्वाक्षर एकशो पच्चाशी छे॥

हवे आ उवसग्गहरं स्तोत्र शा माटे अने क्यारें थयुं ? तेनुं कारण लखे छे. वराहमिहिरनो जीव मरी व्यंतर देवता थयो, तेणें संघमां मरकी विकुर्वी, संघें श्रीभद्रबाहु गुरुने वीनव्या, तेवारें गुरुयें ए महामंत्रमय उवसग्गहर स्तोत्र करी आप्युं, एना भणवा गणवा तथा सांभलवा थकी मरकी उपशम पामी, पछी लोक निरंतर उवसग्गहरं भणवा लाग्या, तेवारें धरणींद्रने प्रत्यक्ष आववुं पडतुं हतुं, माटे धरणींद्रें गुरुने विनति करी के हे भगवन् ! सर्वलोक उवसग्गहरं स्तोत्र भणे छे, तिहां निरंतर मुजने आववुं पडे छे माटे प्रसन्न थइ छठी अने सातमी गाथा भंडारी मूको अने बाकीनी पांच गाथायेंज श्रीसंघनी आर्त्ति भांजीशुं. एवुं सांभली गुरुयें बे गाथा भंडारी मूकी,बाकी आ पांच गाथाज राखी,ते आज सुधी प्रवर्त्ते छे.

ए स्तवन कह्या पछी साम सामी आंगुली मेली मोतीयें भरेली शीपना संपुटना आकारें बे हाथ जोडी ललाटदेशें लगाडीयें, तेने मुक्ताशुक्तिमुद्रा कहियें. केटला एक आचार्य कहे छे के, बे हाथ जोडी ललाटें न लगाडीयें, एम बे मत छे पछी ए मुद्रायें जयवीयराय कहियें, तेनो पाठ लखे छे ॥१६॥

॥ अथ जयवीयराय ॥

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावउ भयवं ॥
भवनिव्वेउ मग्गा, णुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥

अर्थः—(वीयराय के०) हे श्रीवीतराग ! (जगगुरु के०) हे जगत्रय गुरो ! तुमें (जय के०) जयवंता वर्त्तो, ए वीतरागादिक आमंत्रण, ते त्रिलो

कनाथ एवा जगवानने बुद्धिना सन्निधापनार्थे ले. (तुह्पनावउ के०) तमारा प्रजावथकी एटले तमारा सामर्थ्यथकी (ममं के०) मह्तारे (होउ के०) थाउ, (जयवं के०) हे जगवन्! ए जे संबोधन ले ते जक्त्यतिशयना ज्ञापनने माटे ले. ह्वे ते शुं थाउ ? त्यां कहे ले. एक तो (जवनिवेउ के०)जव निर्वेद थाउ, एटले अत्यंत डुःखदायक बंदीखाना समान एवो जे जव संसार तेथी उदासपणुं थाउ, एटले हुं संसारमांहेथी निकलुं, चारित्रधर्मने आ दरुं, एवो जे जाव तेने जवनिर्वेद कहियें ते मह्तारे थाउ. कहेलुं ले के जव थकी अनिर्विण्ण (जेने निर्वेद नथी) ते मोक्षने योग्य नथी. अने बीजुं (मग्गाणुसारिया के०) मार्गानुसारिपणुं थाउ. एटले कदाग्रह्ने त्याग करी ताहारा मार्गने अनुसारें चालवुं, तेवा मार्गानुसारी पुरुष संबंधी गुणो, तेनी प्राप्ति थाउ. त्रीजुं (इठफलसिद्धि के०) इष्ट एटले वांठितफल तेनी सिद्धि थाउ एटले शुद्ध आत्मधर्म ले, ते साधु अथवा श्रावकने इष्ट ले ते माटें तेने विषे सदा उपयोगनी पूर्णता तेनी सिद्धता ते मह्तारे थाउ आ गाथामां लघु बत्रीश अने गुरु चार, सर्व मली चालीश अक्षरो ले ॥ १ ॥

॥ लोगविरुद्धच्चाउ, गुरुजणपूआ परबकरणं च ॥
सुह गुरु जोगो तवय, ण सेवणा आजव मखंमा ॥२॥

अर्थः—तथा चोथो (लोगविरुद्धच्चाउ के०) लोक विरुद्धनो त्याग थाउ, एटले जे कार्य जिनागमथी विरुद्ध होय अने साधु श्रावक जे कार्यने निषेधे, निंदे, तथा जे कार्यथी धर्मनी हेलना थाय, एवां कर्त्तव्य जे परनिंदा, चोरी, परस्त्रीगमनादिक, ते सर्व लोकविरुद्ध कार्य कहियें तेनो त्याग थाउ तथा पांचमो (गुरुजण के०) मातापितादिक तथा धर्मना दातार जे सद्गुरु इत्यादिक महोटानी (पूआ के०) पूजा जक्ति करवी थाउ. यद्यपि गुरुपदे करीने आचार्यनुंज ग्रहण थाय, तथापि अहिं मातापितादिकनुं पण ग्रहण करवुं, ठठुं (परबकरणंच के०) परार्थ एटले पर संबंधी जे अर्थ तेनुं करण. एटले करवुं एटले परोपकार करवो ते मह्तारे थाउ अथवा (परार्थ के०) मोक्ष तेनुं (करण के०) साधन जे ज्ञानादि रत्नत्रय ते मह्तारे थाउ. ए प्रमाणे परहितार्थादिक करण आ जीवलोकनुं सारजूत पुरुषार्थनुं चिन्ह थये उते लौकिकने विषे लोकोत्तर धर्माधिकारी थाय ले. ते कहे ले.

सातमो (सुहगुरु केο) शुभगुरु जे शुद्धप्ररूपक कालानुसारें शुद्धक्रियाना खप करनारा गुरु तेनो (जोगो केο) योग एटले समागम म्हारे थाउ. आठमो (तव्वयण केο) तद्वचन एटले तेहीज सद्गुरुना वचननी अथवा जिनवचननी (सेवणा केο) सेवा एटले आराधना थाउ. ते क्यां सुधी थाउ ? तो के मारे ज्यां सुधी (आनवं केο) संसार छे, त्यां सुधी थाउ. ते सेवना केवी रीतें थाउ ? तोके (अखंमा केο) अखंम परिपूर्ण जेथी परगुणमां चित्त प्रवेश करे नहीं सदा निज गुणमां ज चित्त वर्त्ते, अथवा ए आठ वानां ज्यां सुधी हुं संसारमां रहुं त्यां सुधी मुजने थाउ. किं बहुना ए गाथामां लघु पांत्रीश, गुरु चार, सर्वाक्षर उंगणचालीश छे ॥ २ ॥ ए बे गाथा श्रीगणधरजीनी करेली छे, एमां प्रणिधान मननी समाधिनी याचना करी, ते प्रायें करीने निःसंगाभिलाषरूपत्व छे, ए बे गाथामां पद आठ छे, संपदा आठ छे. एकोत्तेर लघु अने आठ गुरु सर्व मली उंगणाएंसी अक्षरो छे. बेजावंतना मेलवतां १५२ थाय.

हवे आगली त्रण गाथा पूर्वाचार्यकृत छे माटे मुख आगल बे हाथ जोडी देव वांदवानी समाप्तियें कहे, ते कहे छे,

वारिज्जइ जइवि निआ, ण बंधणं वीअराय तुह समए ॥
तहवि मम हुज्ज सेवा, नवे नवे तुम्हचलणाणं ॥ ३ ॥

अर्थः–(वीअराय केο) हे श्रीवीतराग ! (तुह केο) तमारा (समए केο) सिद्धांत तेने विषे (जइवि केο) यद्यपि एटले जो पण (निआण बंधणं केο) नियाणानुं बांधवुं एटले अमुक राजादिकनी पदवी हुं पामुं. एवा निदाननी वांछानुं करवुं, तेने (वारिज्जइ केο) वार्युं छे, निषेध्युं छे (तहवि केο) तथापि एटले तो पण हुं एटलुं मागुं छुं जे (तुम्हचलणाणं के) तमारा चरणोनी (सेवा केο) नक्ति, ते (मम केο) म्हारे (नवेनवे केο) जन्म जन्मने विषे (हुज्ज केο) होजो ॥ ३ ॥ आ गाथामां लघु आडत्रीश, गुरु त्रण, सर्व मली एकतालीश अक्षरो छे ॥

॥ डुक्खखउ कम्मखउ, समाहिमरणं च बोहिलानो अ ॥
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणामकरणेणं ॥ ४ ॥

अर्थः—एक (डुरकरकउ के०) शारीरिक अने मानसिक एटले शरीर संबंधी डुःख अने मननां डुःख तेनो क्षय तथा बीजो (कम्मरकउ के०) अष्ट कर्मनो क्षय, एटले मोहनीयादिक अशुजकर्मनो क्षय, त्रीजो (समाहिमरणं के०) समाधिमरण, (च के०) वली चोथो (बोहिलाजो अ के०) बोधिबीजनो लाज ते जिनधर्मनी प्राप्तिनुं थावुं, एटले क्रियासहित सम्यक् ज्ञानदर्शननो लाज. अकार पादपूरणार्थे छे. (एअं के०) ए चार बोल, (मह के०) माहारे (संपज्जउ के०) संपद्यतां एटले थाउ. पण शुं करीने थाउ ? तोके (तुहनाह के०) तुम नाथ प्रत्यें एटले हे नाथ ! तुज प्रत्यें (पणामकरणेणं के०) प्रणाम करवे करीने एटला वानां मुजने थाउ आ गाथामां लघु चोत्रीश, गुरु पांच, सर्वाक्षर उंगणचालीश छे, ॥ ४ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

अर्थः—हवे जिनशासनने मांगलिक जणी संस्कृत श्लोकें करी आशीर्वाद आपे छे. (जैनंशासनं के०) जैन एवुं शासन ते श्रीजिन तीर्थंकर संबंधीयुं शासन एटले आदेश. (जयति के०) जयवंतुं वर्त्ते छे, ते कहेवुं छे ? तोके (सर्वमंगलमांगल्यं के०) सर्व मंगलमांहे मांगलिक छे, एटले जैनशासन विना बीजी कोइ मांगलिक वस्तु नथी अने दर्पण, रूपुं, पुत्रमुख, गायमुखादिकनुं जोवुं, तथा दधि, गोल, पुष्प, चंदन, अक्षत, दूर्वादिकने जे लोक मांगलिक कहे छे, ते सर्व जूठी कल्पना जाणवी. कारण के ते ऐहिक मंगल छे, ने जैनशासन पारलौकिक मंगल छे. वली ते जैनशासन कहेवुं.छे ? तोके (सर्वकल्याणकारणं के०) सर्वकल्याणनुं संपूर्ण कारण एटले सुखवृद्धिनुं कारणछे. वली (सर्वधर्माणां के०) सर्व धर्मोना मध्यमां (प्रधानं के०) प्रधान छे मुख्य छे ए श्लोकमां जारे त्रण अने लघु उंगणत्रीश मली बत्रीश अक्षरो छे. ॥५॥ एमां जीव दयानी मुख्यता छे ते जणी, ए पाछली बे गाथा अने एक श्लोक मली त्रण थइ. तेमां बार पद, बार संपदा, लघु एकशो एक अने गुरु आगीआर, सर्व मली एकशो बार अक्षरो छे. अने ए जयवीयरायनी सर्व मली पांच गाथा थइने पद वीश, संपदा वीश, लघु १७२ गुरु उंगणीश, सर्व मली १९१ अक्षरो छे. ए रीतें सूत्र, अर्थ, संपदा, पद, अक्षर

शुद्धनो उच्चार करतां देव वांदवामां ध्यानने बलें जीव तीर्थंकर गोत्र मेघर थराजानी पेरें उपार्जन करे ॥ इति जयवीयराय सूत्रार्थः ॥ इति ॥ १७ ॥

हवे पंचाग प्रणाम करी उनो थइ पगें जिनमुद्रा अने हाथे योगमुद्रा साचवतो थको चैत्यस्तव दंडक कहे, ते लखे छे ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

अरिहंत चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अर्थः–(अरिहंतचेइआणं के०) अरिहंतचैत्यानां एटले अहीं अरिहंत शब्दें नावअरिहंत लेवा, तेमनी चैत्य शब्दें. चित्तने समाधिनी करनार प्रतिमा समजवी, ते प्रतिमाने वंदनादिने अर्थें (करेमिकाउस्सग्गं के०) करोमि कायोत्सर्गं एटले हुं कायोत्सर्ग करुं छुं, ए संबंध. एटले एक स्थानकें रही मौन करवुं, ध्यान धरवुं, एटला वानां विना बीजी क्रियानो त्याग करवो, तेने काउस्सग्ग कहियें. ए बेपदें करी अरिहंतनां चैत्य वांदवा निमित्त काउस्सग्ग करीश माटे अरिहंत वांदवानी अंगीकाररूप प्रथम अन्युपगम एटले अंगीकार संपदा जाणवी एमां पद बे, लघु तेर अने गुरु बे, सर्व मली पंदर अक्षरो छे ॥१॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥ २ ॥

अर्थः–हवे श्री तीर्थंकरनी प्रतिमाने वंदन आदिक जे जे निमित्तें काउस्सग्ग करवो, ते निमित्त कहे छे. (वंदणवत्तिआए के०) वंदनप्रत्ययं एटले प्रशस्त मन, वचन अने कायानी प्रवृत्ति त्रिधा शुद्धियें प्रणामनुं करवुं ते थकी जे निर्ज्जरारूप फल थाय छे, ते फलने निमित्तें अर्थात् परमेश्वरनां चैत्य वांदतां जे पुण्य थाय, ते पुण्य, काउस्सग्ग करतां मुजने होजो. अहीं प्राकृत नणी वत्तिआए एवो शब्द थयो छे. एम काउस्सग्ग करतां मुजने फल होजो. इत्यादि नाव, आगले पांचे पदें जाणवो. (पूअणवत्तिआए के०) पूजनप्रत्ययं एटले गंध, कपूर, कस्तूरी, फल, फूल, चंदनादिकें पूजानुं करवुं, ते थकी जे निर्ज्जरारूप फल थाय छे. ते फलने अर्थें काउस्सग्ग करुं छुं. (सक्कारवत्तिआए के०) सत्कारप्रत्ययं एटले सत्कार ते नलां वस्त्र, आनरणादिकें करी पूजवुं, ते थकी जे निर्ज्जरारूप

फल थाय बे. ते फलने अर्थें काउस्सग्ग करुं बुं. (सम्माणवत्तिआए के०) सन्मानप्रत्ययं सन्मान एटले स्तवन,स्तोत्रप्रमुखें करी प्रभुना गुणग्राम कहेवा थकी जे निर्झरारूप फल थाय बे, ते फलने अर्थें (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्ग प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं बुं. अहींआं कोइ कहेशे के श्री अरिहंतनी प्रतिमाने वंदन, पूजा, सत्कार अने सन्माननना फलनी प्रार्थना शा वास्ते करो बो? तेनी आशंका टालवाने हवे आगल पद कहे बे, (बोहिलाभवत्तिआए के०) बोधिलाभप्रत्ययं एटले परभवे श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिने अर्थें प्रार्थना करीयें बेयें. वली कोइ कहेशे के श्रीजिन धर्मनी प्रार्थना पण शा वास्ते करो बो? तेमाटे आगल पद कहे बे के, (निरुवसग्गवत्तिआए के०) निरुपसर्गप्रत्ययं एटले जन्म, जरा अने मरणादिक उपसर्गथी रहित एवुं जे मोक्षरूप स्थानक ते स्थानकने निरुपसर्ग कहियें, ते पामवाने अर्थें काउस्सग्ग करुं बुं. एमां वंदणवत्तिआए इत्यादिकमां श्रीअरिहंतनां चैत्यवंदनादिक करतां जे फल होय, ते फल, ए काउस्सग्गथी होजो, एनिमित्त कह्या तेमाटे ए ब पदनी बीजी निमित्तसंपदा जाणवी एमां पद ब बे, लघु बत्रीश अने गुरु नव, सर्व मली पीस्तालीश अक्षरो बे. ॥ २ ॥

हवे ए काउस्सग्ग जे बे, ते श्रद्धादिकें करी रहित कस्यो थको फलने न आपे, परंतु श्रद्धादिकें करी सहित कस्यो थको इष्ट फलने आपनार थाय बे, माटे जेणें करी काउस्सग्ग सफल थाय,तेनी त्रीजी संपदा कहे बे.

॥ सद्धाए, मेहाए,धीईए धारणाए, अणुप्पेहाए,वद्भमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥ १८ ॥ अन्नब० ॥

अर्थ–(सद्धाए के०) श्रद्धया ते ए काउस्सग्ग श्रद्धायें करी एटले पोतानी आस्ताथी करुं, पण कोइनी जोरावरीथी नहीं, (मेहाए के०) मेधया एटले मेधायें करी ते हेय उपादेय परिज्ञानरूप निर्मल बुद्धियें करी एटले सारा मागानां फल जाणीने करुं पण मूर्ख पणे नहीं. (धीईए के०) धृत्या एटले धृतियें करी अर्थात् चित्तनी स्थिरतायें करी मनने. स्वस्थपणे करी करुं; पण राग, द्वेष, चपलतायें करी नहीं करुं. (धारणाए के०) धारणया एटले धारणायें करी अर्थात् श्रीजिनेश्वरना गुण धारतो थको अणविसारतो थको करुं, पण शून्य पणे नहिं करुं. (अणुप्पेहाए

के०) अनुप्रेक्षायें करी एटले श्रीजिनेश्वरना गुणने वारंवार चिंतवतो थको करुं, श्रीजिनगुणार्थ विचारतो थको करुं पण विकल पणे नहीं करुं, (वड्ढमाणीए के०) वर्द्धमानया एटले वृद्धिने पामती एवी श्रद्धा, मेधा, धृति, धारणा अने अनुप्रेक्षा, ए पांचे बोल तेणें करी सहित थको (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्ग प्रत्यें (ठामि के०) हुं करुं बुं ॥ ३ ॥ एमां सद्धाए इत्यादिकमां श्रद्धादिक पांच बोल वृद्धिवंता थवाना हेतु कह्या,माटे ए सात बोलनी त्रीजी हेतुसंपदा जाणवी ॥ एमां पद सात. लघु चोवीश अने गुरु पांच, मली उगणत्रीश अक्षरो छे. अहीं सुधी बधां मली पन्नर पद थया, त्रण संपदा थइ तथा तहोंत्तेर लघु अने शोल गुरु, मली नेव्याशी अक्षरो थया तथा एने छेडे अन्नबउससिएणं इत्यादिक काउस्सग्ग दंमक संपूर्ण कहियें. तेनो अर्थ, प्रथम लखाइ गयो छे, ए बेहु मलीने आठ संपदा, तेंतालीश पद, लघु अक्षर बशो,. गुरु उगणत्रीश सर्व मली बशें ने उगणत्रीश अक्षरो छे. ॥ इति ॥ १० ॥

हवे जेणें करी सकल पदार्थ जाणीयें एवो प्रदीपसमान श्रीसिद्धांत तेने संस्तववो जोइयें, तेमध्यें पहेली गाथायें तेना प्ररूपक श्रीतीर्थंकर देवने स्तवे छे.

॥ अथ पुक्करवरदीवड्ढे लिख्यते ॥

॥ पुक्करवर दीवड्ढे, धायइसंमे अ जंबुदीवे अ ॥
जरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

अर्थः–(पुक्कवरदीवड्ढे के०) पुष्करवर नामा त्रीजो द्वीप तेनो अर्द्ध एटले पुष्करवरद्वीपार्द्धने विषे बे बे, तथा (अ के०) वली (धायइसंमे के०) धातकिखंम नामा बीजो द्वीप. ए द्वीपमां धाइडी वृक्षना खंम एटले वन ते घणां छे माटे द्वीपनुं पण तेहीज नाम जाणवुं, तेने विषे पण बे बे, तथा (जंबुदीवेअ के०) जंबुद्वीपने विषे एक, एक, ए रीतें अढी द्वीप संबंधी (जरह के०) पांच जरत क्षेत्र छे, तेने विषे, वली (एरवय के०) पांच ऐरवत क्षेत्र छे, तेने विषे, वलि (विदेहे के०) पांच महाविदेह क्षेत्र छे, तेने विषे, (धम्माइगरे के०) धर्मनी आदिना करनार एवा जे श्री सीमंधरस्वामी प्रमुख विहरमाण जगवंत छे ते सर्वे प्रत्यें (नमंसा

मि के०) हुं नमस्कार करुं बुं ॥ १ ॥ ए गाथामां लघु चोत्रीश, गुरु त्रण, सर्वाक्षर साडत्रीश ठे ॥ ए विरहमान जिनने वांदीने हवे सिद्धांतने स्तवे ठे

॥ तमतिमिरपमलविद्धं–सणस्स सुरगणनरिंदमहिअ
स्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥२॥

अर्थः–(सीमाधरस्स के०) सीमा एटले जीवने धर्मनी मर्यादाने विषे धरी राखे, पण कुमार्गे वर्त्तवा न आपे, एवो जे सिद्धांत ते प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडुं बुं, ते सिद्धांतरूप श्रुतज्ञान केवुं ठे ? तो के (तम के०) अज्ञान रूप जे (तिमिर के०) अंधकार, तेना (पमल के०) समूह, ते प्रत्यें (विद्धंसणस्स के०) विध्वंस एटले विनाशनो करनार ठे, अर्थात् अज्ञान रूप अंधकारना समूह प्रत्यें नाशनो करनार ठे,अथवा (तम के०) बद्ध, स्पष्ट अने निद्धत कर्मना पमल जे समूह अने (तिमिर के०) निकाचित्त कर्मना (पडल के०) समूह ते प्रत्यें विनाशनो करनार ठे. वली ते सिद्धांत केहेवो ठे ? तोके (सुरगण के०) देव समूहना तथा (नर के०) मनुष्यना जे (इंद के०) इंद्रो तेणें (महिअस्स के०) अर्च्यों ठे, पूज्यो ठे. वली ते सिद्धांत कहेवो ठे ? तोके (पप्फोडिअ के०) प्रस्फोटित एटले अत्यंत पण करीने त्रोडी ठे अर्थात् फोडी नाखी ठे (मोहजालस्स के०) अविवेकी जनोनी अज्ञानरूप मोहजाल एटले मिथ्यात्वजाल जेणे एवो ठे. अहीं श्रुतज्ञानने सीमाधर कह्यो ठे तेनुं कारण ए ठे के सीमा एटले मर्यादा ते मर्यादाने विषे सर्व पदार्थप्रत्यें धरी राख्या ठे स्थापी राख्या ठे, माटें एवा सिद्धांतने हुं वांडुं बुं ए गाथामां लघु चोत्रीश, गुरु ठ,सर्व मली चालीश अक्षरो ठे,॥ २ ॥

हवे वली पण ए श्रीसिद्धांतना गुणोपदर्शनपूर्वक सिद्धांतमां प्रमाद न करवो, एवो विषय देखाडे ठे ॥

॥ वसंततिलका छंद ॥

॥ जाई जरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खल
विसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवनरिंदगणच्चिअ
स्स, धम्मस्स सारमुवलप्प करे पमायं ॥ ३ ॥

अर्थः–(धम्मस्स के० (धर्मस्य एटले श्रुतधर्म जे श्री सिद्धांत तेनो (सारं के०) सामर्थ्य एटले श्रुतज्ञान जाणवानी शक्ति अथवा श्रुतज्ञाननुं

(सारं के०) महिमा तेने जाणी, तेना रहस्य पामवानी शक्ति, ते प्रत्यें (उवलप्न के० (उपलन्य एटले पामीने (को के०) कोण नव्य जीव विवेकी पुरुष, (पमायं के०) प्रमाद एटले आलस प्रत्यें (करे के०) करे, अर्थात् जाण एवो कोइ पण पुरुष, प्रमाद न करे. वली ते श्रुतधर्म केहवो ले? तो के (जाईजरामरणसोग के०) जाति एटले जन्म, तथा जरा, मरण अने शोक, ते प्रत्यें (पणासणस्स के०) प्रनाशनस्य एटले अतिशयें करीने नाशनो करनार ले, अहीं मरण पामीने फरी संसार मध्यें उपजवुं तेने जन्म कहीयें, तथा जरा ते वृद्धावस्थानी प्राप्ति, तथा मरण ते प्राणनाश, तथा परवस्तुनो वियोग थाय, तेवारें मन मांहे खेद, दुःख धरवुं अने शुद्ध आत्मधर्मथी उदासपणुं राखवुं, तेने शोक कहीये. वली ते श्रुतधर्म कहेवो ले? तो के (कल्लाण के०) कल्य एटले आरोग्य तेने अणति नाम केहेनार ते कल्याण कहियें. ते कल्याणनुं कारक, ते पण अल्प नही, परंतु (पुरकल के०) पुष्कल एटले संपूर्ण (विसाल के०) विस्तीर्ण एवुं जे मोक्षसंबंधी (सुह के०) सुख, तेनो (आवहस्स के०) करनार ले, एटले आपनार ले, वली ते श्रुतधर्म केहेवो ले? तोके (देव के०) वैमानिक अने ज्योतिषी देवता संबंधि तथा (दाणव के०) नवनपति अने व्यंतर देवता संबंधि तथा (नर के०) मनुष्यसंबंधि जे (इंद के०) इंद्रो तेना (गण के०) समूह तेणें (अच्चियस्स के०) अर्च्यो ले पूज्यो ले, स्तव्यो ले, एवो जे श्रीसिद्धांत, तेने विषे प्रमाद करतो जीव,मासतुसानी पेरें ज्ञानावरणीय कर्म बांधे, माटे प्रमाद अप्रमादनां फल जाणीने सिद्धांतने विषे प्रमाद न करवो. तेवा प्रमादी मूर्ख ज्ञानरहित जीवनां आठ लक्षणो कह्यां ले, ते कहे ले. प्रथम लक्षण ए जे चिंतारहित होय, बीजुं घणुं नो जन करे, त्रीजुं मनमां लज्जा पामे नही, चोथुं रात्रिदिवस सुखें सुइ रहे, पांचमुं कार्याकार्य विचारवाने बहेरो होय, लठुं मान, अपमानने विषे समान होय, सातमुं प्रायें रोगरहित होय, आठमुं शरीरें करी दृढ स्थूल बलवंत होय, ए आठ गुणें करी मूर्ख सुखें जीवे ले, पण ते मूर्ख एम चिंतवे नही जे अनेक शास्त्र सुनाषित सिद्धांतरूप अमृतरसें करी कानने उत्सव करतां जेना दिवस जाय ले, एवा पंमितनुं जन्म, तथा जीवितव्य सफल अने सुकृतार्थ ले. एवा पंमितें करी पृथिवी शोने ले अने बीजा पशुसमान वि

नयविवेकरहित, पुरुष तो पृथ्वीने विषे जारजूत बे,ते शा कामना जाणवा? इत्यर्थः ॥३॥ आ काव्यमां लघु सुडतालीश,गुरु नव,सर्व बप्पन्न अक्षरो बे॥

॥ शार्दूलविक्रीडित बंद ॥

सिद्धे नो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नरगण, स्सप्भूय जावच्चिए ॥ लोगो जब पइठिउ जगमिणं, तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स जगवउ ॥ करेमि काउस्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ इति ॥१ए॥

अर्थः-(नो के०) हे ज्ञानवंतलोको ! तमे जुउ (सिद्धे के०) सिद्धाय एटले फलना अव्यजिचारपणायें प्रतिष्ठित तथा नय निक्षेप प्रमाणादिकें करीने जे सिद्ध एटले निष्पन्न करेलो बे, अथवा जे, कुतर्करहित स्याद्वादरूप बे, वली जेने आराधीने जव्य जीव मोक्षफल प्रत्यें पामे बे. एवो (जिणमए के०) जिनमताय एटले जिनमत अर्थात् श्रीतीर्थंकर देवनो प्रकाशेलो जे सिद्धांत,बे तेने (पयउ के०) प्रयत्न एटले आदरसहित थको हुं, (णमो के०) नमस्कार करुं बुं. ते जिनमतना प्रसादथकी मल्हारे (संजय के०) संयम एटले चारित्र, तेने विषे (सया के०) सदा निरंतर, (नंदी के०) समृद्धि वृद्धि थाउ, ते संयम केहेवो बे ? तोके (देवं के०) वैमानिक देवो, (नाग के०) नागेंद्रादि ते पातालवासी जवनपति देवो, (सुवन्न के०) सुपर्ण जे गरुडो तथा ज्योतिषी देवो, (किन्नर के०) व्यंतर देवो, ए चार प्रकारना देव, तेना (गण के०) समूहने जे (स्सयप्भूजाव के०) सद्भूतजावें एटले सत्य जावें करी (अच्चिए के०) अर्च्यो, पूज्यो बे. वली (जब के०) जे जिनमतने विषे (लोगो के०) त्रिकाल ज्ञान, (पइछिउ के०) प्रतिष्ठ्युं बे,कह्युं बे. वली जे सिद्धांतने विषे (तेलुक्क के०) अधोलोक, ऊर्ध्वलोक अने तिर्च्छालोक, ए त्रण लोक मध्यें (मच्च के०) मृत्य एटले मनुष्य, (असुरं के०) जवनपति प्रमुख सर्व देवता अने उप

लक्षणथी नारकी, तिर्यंच पण लेवा. ए प्रकारनुं (जगमिणं के०) आ जगत् ज्ञेयत्वें प्रतिष्ठ्युं छे. एटले ए सर्व लोकनुं ज्ञान, जे शास्त्रमां थाप्युं छे अर्थात् आ सर्व जगत्, जे सिद्धांतना बलें करी जणाय छे, एवो (धम्मो के०) सिद्धांतरूप श्रुतधर्म, ते (वड्ढउ के०) वृद्धियातु, वृद्धिने पामो. ते श्रुतधर्म नित्य पणा माटे अर्थ आश्रयी सदैव (सासउ के०) शाश्वतो छे तथा (विजयउ के०) परवादीउने जींपवा थकी विशेष पणे करी जय वंतो छे, वली (धम्म के०) चारित्र धर्मनुं (उत्तर के०) प्रधानपणुं जेम थाय, तेम ते श्रुतधर्म, (वड्ढउ के०) वृद्धिने पामो. एमां फरीने जे (वड्ढउ) ए पद छे, ते ज्ञानवृद्धि करवी, एम देखाडवा माटें छे ॥ ४ ॥

(सुअस्सभगवउ के०) हे भगवंत ते श्रुत सिद्धांतने आराधवाभणी अथवा एवा श्रुतसिद्धांतरूप भगवंत तेने आराधवा भणी अथवा (भगवउ के०) महिमावंत जे सिद्धांत तेने आराधवाने निमित्तें (करेमि काउस्सग्गं के०) हुं काउस्सग करुं छुं, पछी वंदणवत्तिआए इत्यादिक पाठ भणीने कायोत्सर्ग करे, तेनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥ इति श्रुतस्तवसूत्रार्थः ॥ ए काव्यमां लघु एकशठ, गुरु पंदर, सर्वाक्षर छोंतेर छे, "सुअस्स भगवउ" एटले सुधी गणतां लघु सडशठ, गुरु शोल, सर्व मली त्याशी अक्षरो छे. ए चारे गाथाउना मली लघु एकशो त्याशी, गुरु तेत्रीश मली सर्व अक्षर बशो ने शोल छे. एमां बे गाथा तथा काव्य पण बे छे ॥ इति ॥ १० ॥ हवे सर्वक्रियाना परंपराफलभूत जे सिद्ध, तेने नमस्कार करवा माटें कहे छे.

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥
लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥

अर्थः—(सिद्धाणं के०) सर्व अर्थ सिद्ध कस्या छे जेणें, तेने सिद्ध कहियें. हवे ते सामान्यथी कर्मसिद्ध, विज्ञानसिद्ध, विद्यासिद्ध, ए पण सिद्ध केहेवाय छे? त्यां कहे छे के, (बुद्धाणं के०) बुद्धेभ्यः एटले ज्ञानवडे तत्त्वना जाण अर्थात् समस्त जगत्त्रयना स्वरूपने जेणें जाण्या छे. वली (पारगयाणं के०) पारगतेभ्यः एटले संसारसमुद्रना पार प्रत्यें पाम्या छे, अथवा सर्व कार्यनो पार एटले अंत, ते प्रत्यें पाम्या छे मांटे सिद्ध

कहियें. (परंपरगयाणं के०) परंपरागतेभ्यः एटले परंपरायें करीने अर्थात् मिथ्यात्व गुणस्थानकथी मांमीने अनुक्रमें चउदमा अयोगी गुणगणा सुधी चडीने मोक्ष प्रत्यें पहोता अथवा कर्मना क्षयोपशमादिकथी प्रथम शुद्ध सम्यक्दर्शन, पछी सम्यक्ज्ञान, पछी सम्यक् चारित्र पामी क्षपकश्रेणि करी. एवी परंपरायें करी अनुक्रमें मोक्षें पहोता, (लोअग्गमुवगयाणं के०) लोकाग्रमुपगतेभ्यः एटले लोकाग्रने विषे उपगत एटले पहोता सिद्धक्षेत्र प्रत्यें पाम्या, एवा (सव्वसिद्धाणं के०) सर्वसिद्धेभ्यः एटले तीर्थ, अतीर्थादिक नेदें पंदर प्रकारना जे सर्व सिद्ध, ते प्रत्यें (सया के०) सदा निरंतर (नमो के०) नमस्कार थाउ. आ गाथामां लघु त्रीश, अने गुरु पांच, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे ॥ १ ॥

हवे ढुकडा निकट उपकारी माटे वर्त्तमान तीर्थंकर शासनना नायक श्री महावीर स्वामी छे. तेनी स्तुति नणे छे.

॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥

अर्थः—(जोदेवाणविदेवो के०) योदेवानामपि देवः एटले जे देवोनापण देव छे,ते देवाधिदेव कहियें. वली (जं के०) जेमने (देवा के०) वैमानिक प्रमुख चार निकायना देवताउ,ते (पंजली के०) हाथ जोडी मस्तकें चडावीने (नमंसंति के०) नमस्कार करे छे. वली (देवदेव के०) देवताउनो देव जे इंद्र,तेणें (महिअं के०) पुष्पादिकें करी पूज्या छे. (तं के०) ते (महावीरं के०) श्रीमहावीरस्वामी प्रत्यें (सिरसा के०) मस्तकें करीने (वंदे के०) हुं वांदुं छुं आ गाथामां सर्व मली चोत्रीश लघु अक्षरोज छे. ॥ २ ॥

हवे नमस्कारनुं फल देखाडवाने आगल गाथा कहे छे.

इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥
संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥

अर्थः—(जिणवर के०) सामान्य केवलीउने विषे एटले श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी प्रमुख ते जिन कहियें, ते मध्यें वर एटले प्रधान एवा केवलज्ञानी नगवान् तेने जिनवर कहियें. ते केवलीउने विषे (वसहस्स के०) वृषन सरखा छे एटले तीर्थंकर नाम कर्मना उदयथकी प्रधान छे. त्यां शंका

करे छे के एवा तो रुषनादि चोविशे तीर्थकरो ग्रहण थाशे, तो त्यां कहे छे. के (वद्धमाणस्स के०) श्रीवर्द्धमान स्वामी लेवा तेने नावें करीने (इक्कोवि न मुक्कारो के०) एक वार पण नमस्कार कर्यो होय, एटले घणा नमस्कार तो अलगा रह्या, तथापि एक वारनो नमस्कार करवाथी पण दुःखें पार पमाय, एवो जे (संसारसागराउ के०) संसारसमुद्र ते थकी (तारेइ के०) तारे छे, एटले मोक्षपदवी आपे छे. ते कोने तारे छे? तोके (नरं के०) नर प्रत्यें अने (व के०) वली (नारिं के०) नारी प्रत्यें (वा के०) अथवा कृत्रिम नपुंसक प्रत्यें तारे छे. अहीं कोइएक दिगंबरमतानुसारी स्त्रीने मोक्ष नथी, एम कहे छे. ते जूठुं कहे छे, केम के, मोक्षनुं कारण जे ज्ञान, दर्शन,अने चारित्ररूप रत्नत्रयी छे तेनुं आराधन करवुं तो, पुरुष तथा स्त्री बेहुने विषे समान छे, ते तो प्रत्यक्ष दीठामां आवे छे, माटे स्त्रीने मोक्ष जवामां कांइपण प्रतिबंध नथी॥आ गाथामां लघु एकत्रीश अने गुरु पांच, सर्व मली छत्रीश अक्षरो छे॥३॥ए त्रण गाथा श्रीगणधरजीनी करेली छे ते माटे नियमपूर्वक कहेवी.

हवे आगली आवश्यक चूर्णीमांहेली बे गाथा, गुरुपरंपरागत छे, ते पण कहेवी, तेमां पहेली गाथायें श्रीगिरनारपर्वतमुखमंमन सकलविघ्नसमूहविहंमन, एवा श्रीनेमिनाथ नगवान्, तेमनी स्तुति कहे छे.

उर्जिंत सेलसिहरे, दिरका नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि ॥४॥

अर्थः–(उर्जिंतसेलसिहरे के०) उर्जिंत शैलशिखरनी उपर एटले गिरनार पर्वतना शिखरनी उपर सहस्राम्रवन मांहे जेनां त्रण कल्याणक थयां छे, ते कहे छे, एक (दिरका के०) दीक्षाकल्याणक, अने बीजुं (नाणं के०) ज्ञानकल्याणक, त्रीजुं (निसीहिआ के०) सकलव्यापार निषेधवा नणी निषेधिका एटले मोक्षकल्याणक, ए त्रण कल्याणक, (जस्स के०) जे स्वामीनां थयां छे. वली (धम्मचक्कवट्टिं के०) मिथ्यात्वादिक नाव शत्रुनो उछेद करवाथकी धर्मचक्रवर्त्तीसमान, (तं के०) ते (अरिठनेमिं के०) श्री अरिष्टनेमि नगवानने (नमंसामि के०) हुं नमस्कार करुं छुं ॥ आ गाथामां लघु सत्तावीश अने गुरु सात, मली चोत्रीश अक्षरो छे. ॥४॥

बीजी गाथा श्री अष्टापद प्रमुख तीर्थने नमस्कार करवा जणी कहे छे.

चत्तारि अठ दस दो, अ वंदिआ जिणवरा चउवीसं ॥
परमठनिठिअठा, सिद्धा सिद्धं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ २० ॥

अर्थः—अष्टापद पर्वत उपर जरत चक्रवर्तीयें करावेलो एवो जे चतुर्मुख प्रासाद तेने विषे जेनां प्रतिबिंब बिराज्यां छे, त्यां दक्षिण दिशिने विषे संजवादिक (चत्तारि के०) चार अने पश्चिमदिशिने विषे सुपार्श्वजिनादिक (अठ के०) आठ तथा उत्तरदिशिने विषे धर्मजिनादिक (दस के०) दश तथा पूर्वदिशिने विषे रुषजजिनादिक (दोअ के०) बे, ए सर्व एकठा मेल वीयें, तेवारें (जिणवराचउवीसं के०) चोवीश तीर्थंकरो वर्तमान चोवीशीना थाय, ते केहेवा छे? तो के (वंदिया के०) वंदित छे एटले जेने इंद्रादिक वांदे छे माटे वंदित छे, वली (परमठ के०) परमार्थे करी, पण कल्पना मात्रें नही, एटले सत्यार्थ पणे करी जे (निठिअठा के०) निष्ठितार्थ थया छे, एटले (निष्ठित के०) स्थिर अचल कर्युं छे (अर्थ के०) सर्व प्रयोजन जेणें अर्थात् जे कृतकृत्य थया छे तथा (सिद्धा के०) सिद्ध थया छे, एटले पूर्ण फलने पाम्या छे एवा रुषजादिक चोवीशे जिनवर ते (मम के०) मुजने (सिद्धिं के०) सिद्धि एटले मोक्ष, ते प्रत्यें (दिसंतु के०) द्यो, आपो ॥५॥ ए गाथामां लघुं उंगणत्रीश, गुरु आठ, मली साडत्रीश अक्षरो छे. ए गाथा जे प्रकारें श्रीगौतम स्वामीयें अष्टापद पर्वतनी उपर जइने देवनी वंदना करतां करतां करी छे ते प्रकारेंज निबंधन थयेली छे. ए सिद्धस्तवमां बधी मलीने पांच गाथा छे, वीश पद छे, वीश संपदा छे, लघु एकशो ने एकावन अने गुरु पच्चीश, मली एकशो ने छहोत्तेर अक्षरो छे ॥ २० ॥

हवे सवञ्जउचियकरण एम परमेश्वरें कह्युं छे. तेमाटे उचित करवा जणी श्रीवीतरागना वैयावच्चगर एवा जे सम्यक्दृष्टि देवता तेना प्रत्ययने अर्थे काउस्सग्ग करवा सारु आवी रीतें कहेवुं, ते कहे छे ॥

॥ अथ वेआवच्चगराणं ॥

वेआवच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिठिसमाहिगराणं ॥ १ ॥ इति ॥ २१ ॥ करेमि काउस्सग्गं अन्नछ० ॥

अर्थः—श्रीजिनशसानतुं (वेआवच्चगराणं के०) वैयावच्च एटले सार

संज्ञाल चिंताना करनार सान्निध्यकारी एवा जे गोमुख, यक्ष, अने चक्रेश्वरी प्रमुख, (संतिगराणं के०) सर्वसंघने शांतिना करनार, कुडोपद्रवने उपशमना करनार, (सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं के०) सम्यक्दृष्टि जीवोने समाधि एटले चित्तनी एकाग्रताना करनार, एवा देवो आश्रयीने ॥१॥ (करेमि काउस्सग्गं के०) हुं कायोत्सर्ग करुं बुं. अहीं वंदणवत्तिआए इत्यादिक पाठ न कहीयें जे जणी ते यक्षादिक देवो अविरति पणे छे माटे वांदवा पूजवा योग्य नथी तेथी 'अन्नब उससीएणं' इत्यादिकज कहियें, अहींआं देवतानो काउस्सग्ग करतां मिथ्यात्व लागे छे, ए रीतें केटलाएक कहे छे, ते जूठुं कहे छे, केमके श्रीहरिभद्रसूरिकृत ललितविस्तरानी वृत्ति तथा श्रीहेमाचार्यकृत योगशास्त्रवृत्ति तथा आवश्यकचूर्णी मध्यें देवतानो काउस्सग करवो प्रगटज कह्यो छे, तथा श्रीवयरस्वामीयें गोष्ठामाहिल्ल निन्हवने अर्थें तथा सुजद्रा श्राविकायें चंपानगरीनी पोल उघाडवाने अवसरें तथा मनोरमा श्राविकायें, सुदर्शन श्रेष्ठीने शूलिनुं संकट पडे थके देवताना काउस्सग्ग कीधा छे एम घणे स्थलें सांजलियें छैयें, माटे सम्यक्दृष्टि जीवोनें देवतानो काउस्सग्ग करवा थकी कांई पण दूषण नथी आ सूत्रमध्यें अढार लघु, अने चार गुरु, मली बावीश अक्षरो छे ॥ १ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥ इति ॥ २२ ॥

अर्थः—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु ए पांच परमेष्ठिने म्हारो नमस्कार हो. ए सूत्र चौद पूर्व मांहेलुं छे एवो प्रघोष छे, ते जणी स्त्री जणवा न पामे ॥ १ ॥ इतिं ॥ २२ ॥

॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ इंद्रवज्रा छंद ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम्॥माया
रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥

अर्थः—(वीरं के०) श्रीवीरजगवान् प्रत्यें (नमामि के०) हुं नमस्कार करुं बुं. ते श्रीवीर केहेवा छे? तो के (संसार के०) चातुर्गतिकने विषे

संसरवुं एटले जमवुं तेने संसार कहियें. ते संसाररूप (दावानल के०) वन अग्नि तेनो (दाह के०) ताप, ते तापने उलववाने (नीरं के०) पाणी समान ठे. वली केहेवा ठे? तो के (संमोहधूली के०) मोह एटले अज्ञान तद्रूप धूली एटले रज तेने (हरण के०) हरण करवाने (समीरं के०) पवन समान ठे तथा (मायारसा के०) कपटरूप जे रसा एटले पृथ्वी तेने (दारण के०) विदारवाने उखेडवाने (सार के०) प्रधान अत्यंत तीक्ष्ण एवा (सीरं के०) हलसमान ठे. वली केहेवा ठे ? तो के (गिरिसार के०) मेरुनी पेरें (धीरं के०) जे धीर ठे, अचल ठे एटले पोताना स्वरूपने विषे अचल ठे, एवा वीर जगवान् ठे. आ श्लोकमां सर्व अक्षर चुम्मालीश ठे, तेमां जारे अक्षर कोइ पण नथी. ॥ १ ॥

॥ वसंततिलका छंद ॥

॥ जावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलक-
मलावलिमालितानि ॥ संपूरिताजिनतलोकसमी-
हितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥

अर्थः—(तानि के०) ते प्रसिद्ध (जिनराजपदानि के०) जिनराजनां चरण, ते प्रत्यें (कामं के०) यथेछपणे (नमामि के०) हुं नमुं छुं नमस्कार करुं छुं, ते श्रीजिनराजनां चरण केहेवां ठे? तो के (जाव के०) जावें करीने (अवनाम के०) नम्या एवा जे (सुरदानवमानव के०) सुर ते वैमानिक अने ज्यौतिषिक देवता, तथा दानव ते पातालवासी जवनपति तथा व्यंतर देवता अने मानव ते मनुष्य, तेना जे (इन के०) स्वामी ठाकुर तेना (चूला के०) मस्तकने विषे जे मुकुट तेनी उपर रहेली एवी जे (विलोल के०) देदीप्यमान (कमलावलि के०) कमलनी श्रेणिउ तेणें, (मालितानि के०) पूजित कर्यां ठे, एटले पूज्यां ठे. वली ते श्रीजिनराजनां चरण केहेवां ठे? तो के (संपूरित के०) सम्यक् प्रकारें पूर्यां ठे (अजिनतलोक के०) त्रिकरण शुद्धियें करी नमनार एवा जे जक्त लोको जव्य जीवो तेनां (समीहितानि के०) मनोवांछित जेणें एवां ठे. आ श्लोकमां अक्षर छप्पन ठे, जारे अक्षर कोइ पण नथी. ॥ २ ॥

॥ मंदाक्रांता छंद ॥

बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरल लहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

अर्थः–(वीर के०) श्रीवीरजिन संबंधी जे (आगम के०) सिद्धांत ते रूप (जलनिधिं के०) समुद्र ते प्रत्यें, (सादरं के०) आदरसहित (साधु के०) सम्यक् प्रकारें (सेवे के०) हुं सेवुं बुं, ते श्रीवीरागमजल निधि केहेवो बे ? एवी रीतें सर्व विशेषणोनी साथें कहेवुं, (बोधागाधं के०) बोध जे ज्ञान तेणें करीने अगाध एटले गंभीर बे, अथवा अगाध एटले अर्थें करीने गंभीर एवो बोध एटले यथार्थज्ञान बे जेने विषे, एवो बे. वली (सुपद के०) "धम्मोमंगलमुक्किठं" इत्यादि सुंदर पदोनी (पद वी के०) श्रेणी रचना ते रूप (नीरपूर के०) पाणीनो पूर जे समूह, तेणें करीने (अभिरामं के०) शोभायमान बे, मनोहर बे. वली कहेवो बे? तो के (जिवाहिंसा के०) जीवदयारूप एटले षट्काय जीवोनी रक्षारूप (अविरल के०) अंतररहित एवी (लहरी के०) लहेरीयो एटलें तरंगो तेना (संगम के०) परस्पर मलवे करीने (अगाह के०) अगाध एटले अपार बे देहस्वरूप जेनुं, एटले बेदन भेदन करी नही शकाय एवो अने अगाध महागंभीर (देहं के०) देह एटलें शरीर बे जेनुं, एवो वली (चूला के०) श्री सिद्धांतोनी जे चूलिकाउ बें, ते चूलिकारूपिणी (वेला के०) वेलो बे जे समुद्रने विषे, वली जे (गुरु के०) महोटा एवा जे (गम के०) सरखा पाठ ते रूप (मणी के०) रत्न तेणें करी (संकुलं के०) संकीर्ण बे भरेलो बे, वली ते समुद्रनो (दूर के०) अत्यंत दूर बे (पारं के०) पार,जेनो एटले जेनो कांठो घणो दूर बे, केम के समुद्रनी पेरें सिद्धांतनो पार पामवो महादुर्लभ बें,एटले संपूर्ण श्रुतज्ञानी अथवा केवल ज्ञानी विना बीजाथी जेनो पार पमाय नही, एवो (सारं के०) प्रधान बे, पूज्य बे माटें. आ श्लोकमां सर्व अक्षर अडशठ बे, भारे अक्षर कोइ नथी. ॥ ३ ॥

॥ स्रग्धरा छंद ॥

आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला, झं
काराराववसारामलदलकमलागारनूमीनिवासे ॥ बायासंन्ना
रसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसंदोहदेहे नव
विरहवरं देहि मे देवि सारं ॥ ४ ॥ इति ॥ ७३ ॥

अर्थः-(देवि के०) हे श्रुतदेवि ! (मे के०) मुजने (सारं के०) प्रधान एवो (नवविरह के०) संसारनो जे विरह तेने मोक्ष कहियें, तेनो (वरं के०) वरदान एटले मोक्षसंबंधि वरदान, तेने (देहि के०) दे, आप. अहीं पांच संबोधनयुक्त एवी देवी बे,माटे ते पांच संबोधन कहियें बैयें. प्रथम (आमूल के०) मूल लगें (आलोल के०) चपल ते मोलतुं एवुं, वली (धूली के०) मकरंद सुगंधना कणीआ तेना (बहुल के०) घणा (परि मल के०) सुगंध, तेने विषे (आलीढ के०) आसक्त मग्न एवा जे (लो ल के०) चपल (अलि के०) भ्रमराउ तेनी (माला के०) श्रेणी तेना (झंकार के०) गुंजार तेना (आराव के०) शब्द तेणें करीने जे(सार के०) प्रधान बे, एवुं, वली (अमल के०) निर्मल एवां (दल के०) पांदडां तेणें करीने सहित एवुं (कमल के०) जे कमल, तेनी उपर, (आगार के०) भुवन बे एटले घर बे जेनुं, तेना मध्यभागनी (भूमी के०) भूमिने विषे शयन, चेन करवानी अतिरमणिक शय्या बे तेने विषे (निवासे के०) निवास बे एटले वसवुं बे.जेनुं ए प्रथम पदें करी प्रथम संबोधन जाणवुं. हवे वली (बाया के०) कांति तेनो जे (संभार के०) समूह ते समूहें करी (सारे के०) प्रधान बे माटे हे बायासंभारसारे ! ए बीजा पदें करी बीजुं संबोधन जाणवुं. वली (वरकमल के०) प्रधान कमल बे जेना (करे के०) हाथने विषे तेनो संबोधने हे वरकमलकरे ! ए त्रीजुं संबो धन जाणवुं. वली (तार के०) देदीप्यमान एवा (हार के०) हारें क रीने (अभिरामे के०) सुंदर बे हृदय जेनुं अथवा (तार के०) नेत्रनी कीकी बे (हार के०) सुरनरने हारनारी जेनी तेणेंकरी (अभिरामे के०) सुंदर बे, अहीं हे तारहाराभिरामे ! ए चोथें पदें करी चोथुं संबोधन जा णवुं. हवे (वाणी के०) द्वादशांगीरूप वाणी तेनो (संदोह के०) समूह

तेहीज छे. (देहे के०) शरीर जेनुं, अहीं हे वाणीसंदोहदेहे! ए पांचमा पदनुं पांचमुं संबोधन जाणवुं, आ श्लोकमां सर्व अक्षर चोराशी छे, जारे अक्षर कोई नथी. ॥४॥ सर्व चारे गाथाना मली पद शोल छे, संपदा शोल छे, सर्व मली बशें ने बावन्न अक्षरो छे, एमां कोइ जारे अक्षर नथी ॥२३॥

॥ अथ कल्लाणकंदनी स्तुतिप्रारंभः ॥

॥ तिहां श्री जिनपंचकने वांदवानी पहेली थुइ कहे छे ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ॥
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥

अर्थः—(कल्लाणकंदं के०) कल्याण एटले सुखवृद्धि तेना कंदं एटले मूल छे एवा, (पढमंजिणंदं के०) प्रथम जिनेंद्र श्रीऋषभदेव ते प्रत्यें तथा बीजा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ ते प्रत्यें (तओ के०) तेवार पछी त्रीजा (मुणिंदं के०) मुनिओनें विषे इंद्र समान एवा जे श्री (नेमिजिणं के०) नेमि जिनेश्वर ते प्रत्यें, वली त्रण भुवनने विषे (पयासं के०) प्रकाशना करनार, एवा जे (पासं के०) श्री पार्श्वनाथ ते प्रत्यें, वली चोथा (सुगुण के०) ज्ञानादि, दयादि अने क्षमादि, इत्यादिक अनेक गुण तेने सुगुण समूह कहियें, तेनुं (इक्कठाणं के०) एक अद्वितीय स्थानक एवा; (सिरिवद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमान भगवान् ते प्रत्यें (भत्तीइ के०) भक्तियें करीने (वंदे के०) हुं वांदुं छुं. आ काव्यमां लघु चालीश, गुरु चार, मली चुम्मालीश अक्षरो छे. ए जिनपंचकने वांदवा रूप प्रथम थुइ थइ ॥ १ ॥

हवे सर्व तीर्थंकरोने वांदवानी बीजी थुइ कहे छे.

अपारसंसारसमुद्दपारं, पत्तासिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे
जिणंदा सुरविंदवंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥

अर्थः—(सव्वेजिणंदा के०) सर्वे जिनेंद्र जे छे, ते मुजने (सिवं के०) शिव जे मोक्ष, तेने (दिंतु के०) द्यो, आपो. ते समस्त जिनेंद्र केहेवा छे? तो के (अपारसंसारसमुद्दपारं के०) नथी जेनो पार एटले छेडो एवो जे संसाररूप समुद्र तेना पार प्रत्यें अंत प्रत्यें (पत्ता के०) प्राप्ता एटले पाम्या छे. वली ते सर्वजिनेंद्र केहेवा छे? तोके (सुरविंद के०) देव

ताउंना वृंद एटले समूह, तेने जे (वंदा के०) वांदवा योग्य ने. वली ते सर्वे जिनेंद्र केहेवा ने ? तोके (कल्लाणवल्लीण के०) कल्याणरूप वेलीना (विसालकंदा के०) विस्तीर्ण महोटा कंद ने मूल ने,. वली ते शिव कहेवुं ने ? तोके (सुइक्कसारं के०) शुचि एटले पवित्र जे वस्तुउ ने, तेनुं एक सार ने, अर्थात् जाणियें एक सारज काढेलो होय नहीं ? एवुं ने. आ काव्यमां लघु अडत्रीश तथा गुरु न, मली चुम्मालीश अक्षरो ने ॥ २ ॥

हवे ज्ञानवर्णनपूर्वक जिनमतनमन रूप त्रीजी थुइ कहे ने.

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवाइदप्पं ॥
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

अर्थः–(जिणाणं के०) जिनानां एटले जिन जे ने तेमना (मयं के०) मत एटले श्री जिनमत प्रत्यें (निच्चं के०) नित्य एटले सदा निरंतर (नमामि के०) हुं नमुं बुं, ते श्री जिनमत कहेवुं ने? तो के (निव्वाणमग्गे के०) निर्वाण जे मोक्ष, तेना मार्गने विषे एटले मोक्षनगरनो ज्ञानादिरत्नत्रयरूपं जे मार्ग ने ते मार्गने विषे पहोंचाडवाने (वर के०) प्रधान एवुं (जाण के०) यान एटले रथ तेनी (कप्पं के०) कल्प एटले समान ने. वली ते जिनमत केहेवुं ने ? तो के (पणासिय के०) अतिशयपणे करीने नाश कस्यो ने (असेस के०) संपूर्ण (कुवाइ के०) कुवादीउ एटले पाखंमीउ नो (दप्पं के०) दर्प एटले अहंकार जेणें, एटले कुवादीउ जे अन्यदर्शनीउ तेना अहंकारने जेणें संपूर्ण नाश कस्यो ने, एवुं जिनमत ने. वली जिनमत केहेवुं ने ? तो के (बुहाणं के०) बुधानां एटले जे पंमितो ने, तेने (सरणं के०) शरण ने. आधारभूत ने, जेम पक्षीउने आकाश आधारभूत ने, तेनी पेरें जाणवुं. वली ते श्री जिनमत केहेवुं ने? तोके (तिजग के०) त्रण जगतने विषे (प्पहाणं के०) प्रधान ने. एमां लघु अडत्रीश अने गुरु न, सर्व मली चुम्मालीश अक्षरो ने. ॥ ३ ॥

हवे शासनना अधिष्ठायिक देव, देवीना वर्णननी चोथी थुइ कहे ने.

कुंदिंदुगोक्कीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥ ४ ॥ इति॥ ७४ ॥

अर्थः-(सा के०) ते (वाएसरी के०) वागीश्वरी एटले श्रुतदेवी सरस्वती (अम्ह के०) अमने (सया के०) सदा निरंतर, (सुहाय के०) सुखाय एटले सुखने माटे, थाउ. इति शेषः ॥ हवे ते वागीश्वरी केहेवी छे? तो के (कुंद के०) मचकुंद जातिनां फूल, (इंदु के०) चंद्रमा, (गोक्कीर के०) गायनुं दूध तथा (तुसार के०) हिम, ए चारनी पेरें उज्ज्वल छे, (वन्ना के०) वर्ण जेनो, वली ते वागीश्वरी केहेवी छे? तो के (सरोज हत्था के०) सरोजहस्ता छे. तिहां (सरोज के०) कमल तेणें करी सहित छे (हत्था के०) हाथ जेनो एटले हाथमां कमल धारण कर्युं छे. वली ते वागीश्वरी केहेवी छे? तो के (कमले के०) कमलमां (निसन्ना के०) वेसवुं छे, रेहवुं छे जेनुं एवी छे. वली ते वागीश्वरी केहेवी छे? तो के पुत्थय वग्गहत्था छे. तिहां (पुत्थय के०) पुस्तकनो जे (वग्ग के०) वर्ग एटले समूह, ते (हत्था के०) जेना हाथने विषे छे. वली ते श्रुतदेवी केहेवी छे? तो के (पसत्था के०) प्रशस्ता एटले श्रीसंघनी नक्ति विद्यादानादिक करवा थकी, प्रशस्त छे उत्तम छे ॥ ४ ॥ आ गाथामां लघु पांत्रीश, तथा गुरु नव, सर्वाक्षर चुम्मालीश छे, ए चारे गाथामां पद शोल, संपदा शोल, लघु एकशो एकावन्न, गुरु पच्चीश, सर्वाक्षर एकशो छोंतेर छे ॥ इति ॥२४॥

॥ अथ स्नातस्यानी स्तुतिप्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथमं वर्द्धमानस्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे, रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया, वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१॥

अर्थः-(शच्या के०) इंद्राणी जे तेणें (मेरुशिखरे के०) मेरु पर्वतना शिखरने विषे (स्नातस्य के०) नवराव्या अने (अप्रतिमस्य के०) निरुपम

एवा (विभोः के०) वीरभगवान् तेना (शैशवे के०) बालकपणाने विषे (रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या के०) रूपनुं आलोकन जे जोवुं ते थकी उपन्यो एवो जे विस्मय केहतां आश्चर्य तद्रूप आहृत एटले भोगव्यो एवो जे रस केहतां पारो, तेनी जे भ्रांति तेणें करी (भ्रमच्चक्षुषा के०) भ्रमती नाम अरही परही थाती छे चक्षु जेनी एवी इंद्राणीयें (नयनप्रभा धवलितं के०) नेत्रनी प्रभा जे कांति तेणें करी धवलित एटले उज्ज्वल कर्युं एवुं (यस्य के०) जे प्रभुनुं (वक्त्रं के०) मुख ते (क्षीरोदक के०) क्षीरसागरनुं जल, तेनी (आशंकया के०) आशंकायें करीने (उन्मृष्टं के०) लूछ्युं छे, एवा (श्रीवर्द्धमानोजिनः के०) श्रीवर्द्धमानजिन जे श्रीवीर भगवान् (सः के०) ते (पुनःपुनः के०) वारंवार (जयति के०) उत्कृष्ट वर्ते छे ॥१॥

॥ अथ द्वितीया सर्वजिनस्तुतिः ॥

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांभोभृतैः, कुंभै
रप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः ॥ येषां
मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः, सर्वैः स
र्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥

अर्थः—(सर्वैः के०) सर्व एवा (सर्वसुरासुरेश्वरगणैः के०) सर्व नाम समग्र सुर, असुर तेना ईश्वर जे इंद्र, तेना गण जे समूह, तेमणें (हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांभोभृतैः के०) हंस जे राजहंसो तेनी अंस जे पांखो तेणें करी हत नाम उफाडी एवी पद्मरेणु जे कमलनी रज, तेणेंकरी कपिश नाम रातुं पीलुं थयुं एवुं क्षीरांभ जे क्षीरसमुद्रनुं जल तेणेंकरी भृतैः नाम भर्या एवा अने(अप्सरसांपयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिःके०)अप्सराउना पयोधर जे स्तन तेमनो भर जे समूह तेनी साथें प्रस्पर्द्धिभिः एटले अतिस्पर्द्धाना करनार एवा (कांचनैः के०) कांचनना (कुंभैः के०) कलशोयें करीने (मंदररत्नशैलशिखरे के०) मंदर रत्न जे मेरुनामा शैल जे पर्वत, तेना शिखरे नाम शिखरने विषे (येषां के०) जे जिनोनो (जन्माभिषेकः के०) जन्माभिषेक, ते (कृतः के०) करेलो छे, (तेषां के०) ते सर्व जिनोनां (क्रमान् के०) चरणकमल प्रत्यें (नतोऽहं के०) हुं नमेलो छुं ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीया द्वादशांगस्तुतिः ॥

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाङ्गं विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३ ॥

अर्थः-(अर्हद्वक्त्रप्रसूतं के०) अर्हत् जे अरिहंत तेनुं वक्त्र जे वदन ते थकी प्रसूतं नाम प्रगट थयुं, अने (गणधररचितं के०) गणधर केहतां गणधरोयें रचितं नाम रचना कर्युं अने (चित्रं के०) आश्चर्यकारि तथा (बह्वर्थयुक्तं के०) बह्वर्थ ते घणा अर्थो तेणें करी युक्तं नाम सहित तथा (बुद्धिमद्भिः के०) बुद्धिमंत एवा (मुनिगणवृषभैः के०) मुनिगण एटले साधुउनो समुदाय तेना वृषभ एटले नायकोयें (धारितं के०) धारण कर्युं एवुं अने (मोक्षाग्रद्वारभूतं के०) मोक्षरूपगृह तेनुं अग्रद्वार केहतां मुख्यद्वार समान तथा (व्रतचरणफलं के०) व्रत अने चरण, जे चारित्र तेनुं फल बे जेमां एवुं, अने (ज्ञेयभावप्रदीपं के०) ज्ञेय भाव ते जाणवा योग्य भाव् तेने विषे प्रदीप नाम दीपकसमान एवुं अने (सर्वलोकैकसारं के०) सर्व लोकने विषे एकसारं केतां अद्वितीयसारभूत एवुं (अखिलं के०) समग्र (विशालं के०) विशाल एवुं (द्वादशांगं के०) द्वादशांगरूप (श्रुतं के०) सिद्धांत तेने (भक्त्या के०) भक्तियें करीने (नित्यं के०) निरंतर (अहं के०) हुं (प्रपद्ये के०) अंगीकार करुं बुं ॥ ३ ॥

॥ अथ कार्यसिद्धिप्राप्त्यर्थं चतुर्थं सर्वानुभूतिनामा यक्षस्तुतिः ॥

निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं, मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी, यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशातु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति ॥ २५॥

अर्थः-(निष्पंकव्योमनीलद्युतिं के०) निष्पंक एटले वादले रहित एवुं

व्योम जे आकाश, तेनी द्युति जे कांति तेना सरखी नील एटले श्याम छे कांति जेनी एवो, तथा (अलसदृशं के०) अलस एटले मदघूर्णित छे नेत्र जेना तथा (बालचंद्राजदंष्ट्रं के०) बालचंद्र एटले बालचंद्रमानी आभा जे कांति तेना सरखी दंष्ट्रा एटले दाढो छे जेनी एवा (मत्तं के०) मदोन्मत्त, अने (घंटारवेण के०) घंटाना रवेण नाम शब्दनी साथें (प्रसृतमदजलं के०) प्रसृत नाम प्रसरतुं एवुं जे मदजल एटले मदवारि तेप्रत्यें (समंतात् के०) सर्व जगाए (पूरयंतं के०) पूरावतो एवो (दिव्यनागं के०) दिव्यरूप नाग जे हस्ती ते प्रत्यें (आरूढः के०) बेठो एवो छतो (कामरूपी के०) स्वेच्छाचारी तथा (कामदः के०) काम जे मनोरथ तेने देनारो एवो (सर्वानुनूतिः के०) सर्वानुनूतिनामा (यक्षः के०) यक्ष छे, ते (गगने के०) आकाशनें विषे (विचरति के०) विचरे छे ते (मम के०) मुजने (सदा के०) निरंतर, (सर्वकार्येषु के०) समग्रकार्योने विषे (सिद्धिं के०) सिद्धिने (दिशतु के०) आपो ॥ ४ ॥ इति ॥ २५ ॥

॥ अथ गुरुवांदणां प्रारंभः ॥

हवे गुरुवंदन वखाणियें छैयें. ते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारें छे. तिहां प्रणाममात्र जे फेटा वंदन, ते जघन्यवंदन कहियें, अने जे खमासमण आपी विधियें करी वांदियें, ते थोज वंदनने मध्यमवंदन कहियें, तथा उत्कष्ट तो द्वादशावर्त्त वंदन गुणवंत गुरुने पगे आपीयें. ते आवी रीतें.

त्यां गुरुने वांदणा देतां उंघो, मुहपत्ती, ए बे उपकरण साधुने जोइयें, अने श्रावकने मुहपत्ती, तथा चरवलो ए बे जोइयें. ए मुहपत्ती अने रजोहरण लेवाना अक्षर, साधुने तथा श्रावकने साधारण पणे श्रीअनुयोग द्वार सूत्रनी वृत्तिमध्यें प्रकटज छे तथा केवल श्रावक आश्रयी पण आवी रीतें अक्षर कह्या छे, “ सामाइय कडस्स समणोवासगस्स चउविहे धम्मोवगरणे पन्नत्ते. तं जहा ठवणायरियत्ति मुहपत्तीअत्ती जवमालियत्ति दंमपाउपुछणगंचत्ति ” ए आलावो श्रीअनुयोगद्वारनी चूर्णी मध्यें छे, तथा वली जो “मुहपत्तियं अपडिलेहित्ता वंदणं देई गोयमा तस्स गुरुअं पायछितं हविज्जा ” ए आलावो व्यवहारचूर्णी मध्यें छे. तथा “ गंतु पोसह सालाए, ठवितु ठवणायरियं ॥ मुहपत्तिअं पमज्जंतो, सीहो गिण्हइ पोसहं ॥ १ ॥” ए श्लोक विवाहचूलिका ग्रंथें सिंहश्रावकने पोसह ले

वाने अधिकारें ले, तथा “ पावरणं मुत्तूणं, गिण्हीता मुहपत्तिअं ॥ वच्छ काय विसुद्धीए; करेइ पोसहाइयं ॥ १ ॥ ” ए श्लोक श्री व्यवहारचूर्णी मध्यें ले. इत्यादिक वचन थकी ए बे उपकरण टाली बीजां कल्पक, कांबली प्रमुख साधुने तेमज पलेडी प्रमुख श्रावकने कांहि पण राखवी न सूजे. तथा लेहेडे वांदणां दीधां न सूजे अने साधवीने तथा श्राविकाने वस्त्र होय ते थकां वांदणां देवानो व्यवहार ले, त्यां प्रथम खमासमण देइ, आदेश मागी, मुहपत्ती पडिलेही, शरीरनी पच्चीश पडिलेहणा करी, ए मुहपत्तीनी पच्चीश पडिलेहणा तथा शरीरनी पच्चीश पडिलेहणानी गाथा अर्थसुधां आ पडिक्कमणामां आगल आवशे; मूलगे नांगे पोताना पगने चरवले करी पूंजवा.

हवे वांदणां देतां जे पच्चीश आवश्यक साचववां जोइयें, ते विगतें करी कहे ले. गुरुथी चार दिशायें उंठ उंठ हाथ प्रमाण साधु श्रावकनी अपेक्षायें अवग्रह राखवो एटले पोताना देहप्रमाण ते अवग्रहनुं क्षेत्र जाणवुं, अने साधवी तथा श्राविकानी अपेक्षायें तेर हाथनो अवग्रह जाणवो, ते मध्यें कोइ कार्यने अर्थे आचार्यनी अनुज्ञा मागीने अवग्रहमांहे प्रवेश करवो, ते आवी रीतें के अवग्रह बाहिर रह्यो शिष्य, पणछ चडावेला धनुष्यनी पेठें नम्रकाय लतो बे हाथ जोडी मुखें मुहपत्ती आपी, “ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए” एटलुं कहेतो पोतें गुरुने वांदावानी इच्छा जणावे. पली लगारेक नीचो नमीने “अणु जाणह मे मिउग्गहं ” कहे, ए नीचुं नमवारूप प्रथम आवश्यक जाणवुं, पली वली शिष्य मुख्यथकी निसीहि कहेतो रजोहरणें करी आगली नूमि पूंजतो प्रमार्जतो अवग्रह मांहे प्रवेश करे, ए अवग्रहमांहे प्रवेश करवारूप बीजुं आवश्यक जाणवुं. पली संडासादिक पडिलेहतो अधुगडो बेशीने गुरुना चरण समीपें रजोहरण मूकी, डावे हाथे मुहपत्ती लेइ ते मुहपत्तीयें करी डाबा कर्णथी आरंनीने दक्षिण कर्ण पर्यंत ललाट पूंजी प्रमार्जी वली तेणें करीज डावो जानु पूंजी तिहां मुहपत्ती मूकी ‘ अहोकाय ’ इत्यादिक कहेतो त्रण आवर्त्त करे ते आवी रीतें के बेहु बाहु लांबा करी, पसारी, कूर्परें साथल अणस्पर्शतो गुरुना चरण उपरें संलग्न, बेहु हाथनी दशे आंगुली लगाडतो मुखें (अ) अक्षर कहे, पली तेमज दश आंगुली पोताने ललाटें लगाडतो (हो) अक्षर कहे, ए बेहु अक्षरें एक आवर्त्त थाय. तेमज वली (का) अने (यं) ए बेहु अक्ष

रने उच्चारवे बीजो आवर्त्त थाय. तेमज वली (का) अने (य) ए बे अक्षरें त्रीजो आवर्त्त थाय. पठी संफासं शब्द कहेतो गुरुना पगे मस्तक लगाडे. वली बेहु हाथ कमलकोशने आकारें जोडी, माथे चडावी "खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो" एवो पाठ कहे. पठी बेहु हाथ मस्तकथी उतारी जत्ता भे इत्यादि कहेतो वली पण त्रण आवर्त्त करे, तिहां पूर्वली पेरें दश आंगुली समसमी करी, गुरुने पगें हाथ लगाडतो पहेलुं (ज) अक्षर मंदस्वरें कहे, बीजुं हाथउपाडतो (त्ता) अक्षर मध्यम स्वरें कहे, त्रीजुं (भे) अक्षर ललाटें हाथ फरसतो उंचे स्वरें कहे. ए त्रण स्थानकें त्रण अक्षर उच्चारतां प्रथम आवर्त्त थाय. तेवी रीतेंज वली (ज) (व) (णि) ए त्रण अक्षर त्रिविध सादें करी त्रण स्थानकें उच्चारतां बीजो आवर्त्त थाय. तेमज वली (ज्जं) (च) (भे) ए त्रण अक्षर पूर्व रीतें उच्चारतां त्रीजो आवर्त्त थाय, एवं ठ आवर्त्त थया. पठी बे हाथ अने मस्तक गुरुने पगें लगाडी "खामेमि खमासमणो. देवसियं वइक्कमं" कहे, पठी उन्नो थइ रजोहरणें करी पाठली भूमि प्रमार्जतो मुखथकी "आवसिआए" कहेतो थको अवग्रहथी बाहेर नीकले ए अवग्रह मध्येथी बाहेर नीकलवा रूप आवश्यक जाणवुं. पठी उन्नो रही बे हाथे योगमुद्रा पगें जिनमुद्रा साचवतो "पडिक्कमामि खमासमणाणं" इत्यादिक संपूर्ण ठेहेडा पर्यंत सूत्रनो उच्चार करे. एमज वली बीजुं वांदणुं पूर्वली रीतेंज करे, पण एटलुं विशेष जे बीजे वांदणे "आवसिआए" ए पद न कहे, एटले अवग्रहथी बाहेर नीकलवुं नही. स्थानकेंज उन्नो रही "पडिक्कमामि खमासमणाणं" इत्यादिक सूत्रनो उच्चार करे. ए वांदणां देतां मनोगुप्ति एटले मनमांहे एक ध्यानपणुं करवुं. वचनगुप्ति एटले बे वांदणांनी वचमां बीजुं कांही बोलवुं नही, कायगुप्ति एटले शरीर आघुं पाछुं हलाववुं नही. ए त्रण गुप्तिरूप त्रण आवश्यक जाणवां. तथा "खमणिज्जोभेकिलामो" इत्यादिक कहेतां जे, मस्तकें बे हाथ चडावीयें ठैयें, तेने यथायात आवश्यक कहियें. जे भणी जन्मसमयें जेम बालक बे हाथ मस्तकें चडावी. नेज जन्मे ठे, तेम ए पण ठे, ते भणी यथाजात एवुं नाम जाणवुं.

हवे ए पच्चीश आवश्यकनो शरवालो मेलवे ठे. बेहु वांदणे थइ बेवार नीचुं नमवा रूप बे, बेहु वांदणांना बार आवर्त्त, गुरुचरणें चार वखत

मस्तक नमाडवुं ते रूप चार, बे वार अवग्रहमां पेसतां नीचुं नमवा रूप बे, एकवार अवग्रहथी बाहेर नीकलवा रूप एक, बीजे वांदणे अवग्रहथी नीकलवुं नथी माटे एकज कह्युं. त्रण गुप्ति अने एक यथाजात एवं प च्चीश. आवश्यक ते अवश्य करवां माटे आवश्यक एवुं नाम कहेलुं छे. ए गुरुवंदन संबंधि विशेष बोल आश्रयी विचार, गुरुवंदनभाष्य, तथा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथमां छपाइ गयाथी अहींआं विस्तार कर्यो नथी.

हवे वांदवाने उजमाल थयेलो एवो शिष्य, विधिपूर्वक मुहपत्ती पडिलेही वली पोतानुं शरीर पडिलेही लगारेक काय नमावतो बे हाथें उंघो, चरवलादिक ग्रहण कर्यां छे जेणें एवो अवग्रहथी बाहिर रह्यो थको मुखें मुहपत्ती देइ आ प्रमाणें वांदणांना सूत्रनो पाठ कहे, ते कहे छे.

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥

अर्थः–(खमासमणो के०) हे क्षमादिक गुणें प्रधान ! अहींआ क्षमा ते सहन कहियें तथा श्राम्यति एटले संसारना विषयने विषे जे खिन्न छे अथवा तपश्चर्या करे छे, तेने श्रमण कहियें, एटले सहन शील जे श्रमण तेने क्षमाश्रमण कहियें, आदि क्षमा शब्दना ग्रहणें करीने मार्दव, आर्यवादिक गुणोनी पण सूचना करी छे. वली क्षमा शब्दें करी तेमने वंदनयोग्यत्व सूचन कर्युं छे, एवा हे क्षमाश्रमण ! तमोने (जावणिज्जाए के०) यापनीयया एटले जेणें करी कालक्षेप करीयें काल गमावियें तेने यापनीया कहियें, ते शक्तीयें करी सहित एवी (निसीहिआए के०) नैषेधिक्या एटले प्राणातिपातादिकथी निवृत्तिरूप प्रयोजन छे जेमां, तेने निषेधिकी तनु एटले शरीर कहियें. अर्थात् जीवहिंसादिक निवृत्तिरूप प्रयोजनवालुं शरीर जाणवुं. आ ठेकाणे नैषेधिक्या ते विशेष्य छे अने यापनीयया ते विशेषण छे एटले पोतानी शक्तीयें करी सहित एवुं निषेधिकी जे शरीर, तेवा शरीरे करी तुमने (वंदिउं के०) वांदवाने (इच्छामि के०) अभिलषामि एटले हुं इच्छुं छुं, वांछुं छुं. ए पदेंकरीने बलाभियोगनो त्याग करवानी सूचना करी, एटले हे श्रमणगुणयुक्त ! हुं शक्तिसमन्वित छतो प्रतिषेध करी छे पापक्रिया जेणें एवो थको तमोने वांदवाने इच्छुं छुं. ए प्रथम शिष्यनुं वचन सांभलीने ते वखतें जो गुरु कोइ कार्यमां विक्षेपचित्तवंत होय

तो ' तिविहेण ' एवो शब्द कहे एटलें मन, वचन अने काया, एम त्रिविधें करी संक्षेपेंज वांदो. एवा अर्थवालुं गुरुनुं वचन सांजली शिष्य पण संक्षेपेंज वांदे अने जो गुरुनुं चित्त, कोइ कार्यादिकमां विक्षेप न होय तो 'ढंदेण, एवो शब्द कहे एटले महारें निराबाध ठे सुखशाता ठे माटे जेम तमारो ढंद एटले अनिप्राय होय, इछा होय तेम वांदो. ए प्रथम गुरुवचन जाणवुं. ए पांच पदनुं प्रथम स्थानक थयुं ॥ १ ॥

पठी शिष्य तिहांज रह्यो थको, लगारेक नीचो नमीने नीचें प्रमाणें पाठ कहे.

अणुजाणह, मे, मिउग्गहं ॥ २ ॥

अर्थः—गुरु पांखनी चारे दिशायें (मिउग्गहं के०) मित अवग्रह एटले मान करेलो एवो जे स्वदेहप्रमाण अवग्रह, एटले साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्र, तेमांहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुजने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो एटले आज्ञा आपो, ए बीजुं शिष्यनुं वचन सांजलीने गुरु कहे. (अणुजाणामि के०) हुं आज्ञा आपुं ढुं. ए बीजुं गुरुनुं वचन जाणवुं. ए त्रण पदनुं बीजुं स्थानक थयुं ॥ २ ॥

हवे बार पदनुं त्रीजुं स्थानक कहे ठे.

निसीहि, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो, ने, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुन्नेण, ने, दिवसो, वइक्कंतो ॥ ३ ॥

अर्थ—पठी शिष्य निसीहि केहेतो थको एटले (निसीहि के०) एक गुरुवांदणां विना निषेध्यो ठे अन्यक्रिया रूप व्यापार जेणें एवो ठतो मित अवग्रहमांहे विधिपूर्वक प्रवेश करीने बेशीने संमासां पूंजी रजोहरण पग उपर मूकी अने मुहपत्ती साधु माबा ढीचण उपरें मूके तथा श्रावक चरवला उपर मूके, ते मूंकीने बे हाथ पोताना ललाटें लगाडी गुरुनां चरण प्रत्यें स्पर्शवाने अर्थे आवी रीतनो पाठ कहे, ते कहे ठे. (अहोकायं के०) अधःकायं एटले अधः प्रदेशनो ठेहलो नाग, तेने पग कहियें. अर्थात् हेठी काय ते गुरुना पगलक्षण जाणवी. ते तमारा पग प्रत्यें (काय के०) महारा हाथ अने ललाटें करी रूडी रीतें (संफासं के०) स्पर्शवुं ठे तेनी आज्ञा आपो. ते गुरुनी आज्ञा पामीने गुरुनां चरण प्रत्यें पोताने हाथे तथा मस्तकें करी रूडी रीतें स्पर्शे, पठी उंचो थइ

मस्तकें बे हाथ चडावी गुरुनी संमुख दृष्टि राखी, "खमणिज्जो ने" इत्यादिक पद कहे, ते आवी रीतें के, हे नगवंत! तुमारां चरण स्पर्शता जे कांइ आपने (किलामो के०) क्लम एटले जे कांइ ग्लानि उप जावी होय, खेद उपजाव्यो होय, एटले मह्रारे जीवें जे कांइ तमारे शरीरें पीडा उपजावी होय, ते पीडारूप जे खेद, तेने (ने के०) नवद्भिः एटले तमोयें (खमणिज्जो के०) खमवा योग्य ठे. एटलुं कहीने पठी वली पण शिष्य, दिवससंबंधि क्षेम कुशलनुं स्वरूप गुरुने पूठे, ते आवी रीतें:— (बहुसुनेण के०) बहुशुनेन एटले बहु शुनें करीनें क्षेमकुशलें करीने अर्थात् घणा समाधिनावें करीने (ने के०) नवतां एटले तमारो (दिव सो के०) दिवस, निराबाधपणे (वइक्कंतो के०) व्यतिक्रांत थयो, एटले वीत्यो, तमे केहेवा ठो? तो के (अप्पकिलंताणं के०) अल्प ठे क्लांत एटले ग्लानिपणुं जेमने एवा, अर्थात् अल्पवेदनावाला एवा तमे ठो. अहीं रात्रिना अनुष्ठानने विषे राइउ 'वइक्कंतो' अने पाक्षिकना दिवसने विषे 'पक्खो वइक्कंतो' तथा चौमासीना दिवसने विषे 'चउमासिउ वइक्कंतो' तेमज संवत्सरीना दिवसने विषे 'संवच्छरो वइक्कंतो' एवा पाठ कहेवा. ए त्रीजुं शिष्यनुं वचन थयुं.ए सांनलीने गुरु कहे के,तहत्ति एटले तथेति अर्थात् जेम तमें पूठ्युं,तेमज अमारो दिवस समाधिमांहेज गयो ठे॥ इति.नावः॥ ए त्रीजुं गुरुनुं वचन जाणवुं. ए बार पदनुं त्रीजुं स्थानक थयुं॥ ३॥

ए रीतें शरीरसंबंधि सुखशाता गुरुने पूठीने हवे वली शिष्य तपनिय मादिकसंयमसंबंधि वार्त्ता गुरुने पूठवाने अर्थें गुरुना पगने विषे पोतानुं ललाट फरसतो आवर्त्त करतो, आवी रीतें पाठ कहे, ते कहे ठे.

जत्ता, ने॥ ४॥

अर्थः—हे करुणासमुद्र! (जत्ता के०) तप, नियम, संयम, स्वाध्याय रूप यात्रा, ते (ने के०) नवतां एटले तमारे अव्याबाध पणें वर्त्ते ठे? ए चोथुं शिष्यनुं वचन थयुं, ते सांनलीने गुरु कहे के, (तुब्नंपि वट्टए के०) तुन्यमपि वर्त्तते एटले जेम मुजने वर्त्ते ठे. तेम तने पण वर्त्ते ठे? ए गुरुनुं पण चोथुं वचन जाणवुं. ए बे पदनुं चोथुं स्थानक थयुं॥ ४॥

जवणिज्जं, च, ने॥ ५॥

अर्थः—(च के०) वली नियममां राखवा योग्य पदार्थ संबंधि वार्त्ता, शिष्य पूछे छे (जवणिज्जं के०) यापनीयं एटले इंद्रिय अने नोइंद्रियोना उपशमादिक प्रकारें करी निराबाध शरीर, (भे के०) भवतां एटले तमारुं छे ? अर्थात् इंद्रिय अने नोइंद्रियोयें पीडित नही एवुं तमारुं शरीर छे ? ए पांचमुं शिष्यनुं वचन सांभलीने गुरु कहे, (एवं के०) एमज छे, ए गुरुनुं पण पांचमुं वचन जाणवुं. ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक थयुं ॥ ५ ॥

खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कम्मं ॥ ६ ॥

अर्थः—वली शिष्य, रजोहरण उपर हाथ तथा मस्तक मूकीने कहे के, (खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण ! (देवसियं के०) दिवस संबंधि (वइक्कम्मं के०) व्यतिक्रम एटले अवश्यकरणीय विराधनारूप महारो अपराध, ते प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खामुं छुं. ए छठुं शिष्यनुं वचन सांभलीने गुरु कहे के, (अहमविखामेमि के०) अहमपि क्षमयामि एटले में पण सारणावारणादिक करवाने विषे,जे प्रमाद कीधो होय,ते हुं पण तने खमावुं छुं. ए गुरुनुं पण छठुं वचन थयुं, एटले छ शिष्यनां वचन प्रश्नरूपें अने छ गुरुनां वचन उत्तर रूपें कह्यां, ए चार पदनुं छठुं स्थानक थयुं ॥ ६ ॥ ए छए स्थानकना मलीने उगणत्रीश पद थयां ॥

पछी शिष्य, पगे जिनमुद्रा अने हाथे योगमुद्रा साचवतो उभो रही. वली पाछली वातनेज विशेष पणे पूछतो नीचे प्रमाणे कहे.

आवसिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि, मिछाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सवकालिआए, सवमिछोवयाराए, सवधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो, मे, अइआरो, कउ, तस्स, खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति ॥ २६ ॥ अहींआं बीजी वारने वांदणे 'आवसिआए' ए पद न केहेवुं ॥

अर्थः—हवे शिष्य, रजोहरणें करी पाछली नूमिका पूंजी मितअवग्रहथी बाहेर नीकलतो “आवसियाए पडिक्कमामि” कहे तो थको निकले एटले (आवसिआए के०) अवश्य कर्त्तव्य जे चरणसित्तरी अने करणसित्तरी रूप क्रिया पडिलेहण प्रमुख व्यापार, ते सेवतां, पालतां, जे अतिचार लाग्यो होय, मातुं आचर्युं होय, ते थकी (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, निवर्त्तु बुं. (खमासमणाणं के०) क्षमाश्रमण संबंधिनी (देवसिआए के०) दिवसने विषे थइ, एवी जे (आसायणाए के०) आशातना खंमना, ते आशातनायें करीने. ते केवी आशातनायें करीने? तो के (तित्तीसन्नयराए के०) तेत्रीश आशातना मांहेली अनेरी कोइ एक पण आशातनायें करीने, वली केवी आशातनायें करीने? तो के (जंकिंचिमिडाए के०) जेकांइ कूडुं आलंबन लइने मिथ्यानाव वरताव्यो होय, ते किंचित् मिथ्यानावरूप आशातनायें करीने, वली बीजी पण केहेवी आशातनायें करीने? ए रीतें आगल पदें पदें कहेतां जवुं, (मणडुक्कडाए के०) मनःसंबंधि जे डुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करीने, अर्थात् प्रद्वेषमनें करी तथा (वयडुक्कडाए के०) वचनसंबंधि डुष्कृत ते असन्य पुरुषादिक वचनें करी जे डुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करी, (कायडुक्कडाए के०) कायासंबंधि ते आसन, गमन स्थानादिक जे डुष्कृत एटले पाप ते, रूप आशातनायें करी, (कोहाए के०) क्रोधनाव ते विनयच्रंशादिक जे डुष्कृत एटले पाप ते रूप आशातनायें करी, (माणाए के०) मानरूप आशातनायें करी, (मायाए के०) मायम एटले कपट ते रूप आशातनायें करी, (लोहाए के०) लोनरूप आशातनायें करी, (सवकालियाए के०) सर्वकाल ते अतीत, अनागत अने वर्त्तमानकालने विषे गुरुनां अविनयादिक जे थयां, ते रूप आशातनायें करी. अहिंआं कोइ पूछे, जे अनागत कालनी शी आशातना थइ? तेने कहियें जे अनागत कालें कदापि कोइ समयें गुरुने आमंत्रणें कोइ एक प्रकारें अनिष्ट अविनयादिक थइ जाय, एवुं चिंतव्युं होय, तत्संबंधि अनागत कालनी आशातना जाणवी. (सवमिछोवयाराए के०) सर्व मिथ्याउपचाररूप एटले सर्व कूड, कपट, क्रियारूप आशातनायें करीने, (सवधम्माइक्कमणाए के०) सर्व धर्म ते आठ प्रवचनमाता रूप अथवा सर्व धर्मनी जे करणी तेने अतिक्रमवा उल्लंघवारूप आशातनायें करीने

ए पूर्वोक्त प्रकारनी सर्व (आसायणाए के०) आशातनायें करी, (जो के०) जे, (मे के०) म्हारे जीवें, (अइआरो के०) अतिचार दोष, (कओ के०) कर्यो होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते अतिचार प्रत्यें (खमा समणो के०) हे क्षमाश्रमण ! तुमारा समीपें (पडिक्कमामि के०) हुं प्रति क्रमुं बुं, मिछामिडुक्कड देउं बुं. फरी तेम हुं नहीं करुं, (निंदामि के०) डुष्ट कर्मकारी आत्माने हुं निंडुं बुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखे हुं गर्हुं बुं एटले विशेषें निंडुं बुं. (अप्पाणं के०) डुष्ट पापिष्ट आत्मा प्रत्यें (वोसिरामि के०) हुं वोसिरावुं बुं, एटले बोडावुं बुं. अर्थात् आशातना करवी, ते काल संबंधि पाप सहित आत्माने हुं त्यागुं बुं. ए प्रथम वांदणुं थयुं. तेमज बीजुं वांद णुं पण एवीज रीतें जाणवुं परंतु तेमां एटलुं विशेष जे, तिहां अवग्रहथी नीकलवुं नथी, माटे त्यां आवसियाए एवो पाठ न केहेवो, ॥ ७ ॥ ए वां दणांना सूत्रमध्यें पच्चीश आवश्यक, अठावन पद, तथा पच्चीश गुरु अने बशे ने एक लघु, सर्व मली बशें ने बविश अक्षरो बे. इति गुरुवंदनसूत्रार्थः ॥ ए रीतें सर्व बोल साचवतो जे गुरुने जावस हित वांदणां आपे, तेनां अनेक जवना संच्यां कर्म, क्षय थइ जाय. परंतु जाव विना अल्प फल होय. जेम श्रीकृष्ण, जावसहित साधुने वांदतां.क्षा यिक सम्यक्त्व पाम्या, तथा सातमी नरक योग्य शिथिल आयुःकर्म उपा र्जन कर्युं हतुं, ते संक्रमण करणें करी टालीने त्रीजी पृथिवी योग्य कीधुं, अने वीराशालवीने ड्व्यथी वांदणां देतां मात्र पोताना स्वामीनी अनुव र्त्तना टाली, पण बीजुं कांइ फल थयुं नहीं ॥ इति सुगुरुवांदणा ॥ २६ ॥

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमि अ,चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥

अर्थः-(नाणंमि के०) ज्ञानने विषे, (दंसणंमि के०) दर्शनने विषे (अ के०) वली (चरणंमि के०) चारित्रने विषे, वली (तवंमि के०) तपने विषे, (तहय के०) तथा (विरियंमि के०) वीर्यने विषे, (आयरणं के०) जे आचरण एटले व्यापार, तेने (आयारो के०) आचार कहियें. अथवा ए ज्ञानादिक पांचनुं जे आचरण एटले व्यापार, तेने आचार क

हियें, जेम ज्ञान आश्रयी ज्ञानाचार, ए रीतें सर्वने विषे केहेवुं. (इअ केo) ए प्रकारें (एसो केo) ए प्रत्यक्ष, (पंचहा केo) पंचधा एटले पांच प्रकारें आचार, ते (नणिउ केo) श्रीतीर्थंकरें कह्यो छे ॥ १ ॥

हवे त्यां प्रथम ज्ञानाचार कहे छे.

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे ॥
वंजण अब तडुनए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥

अर्थः–प्रथम (काले केo) जे कालें, जे अवसरें, जे नणवानुं होय, ते कालें तेज अवसरें तेज नणवुं, तेने काल कहियें. बीजो (विणए केo) ज्ञानीनुं अन्युबान वंदनादिक उचित साचववुं तेने विनय कहियें, त्रीजो (बहुमाणे केo) ज्ञानी तथा ज्ञानने विषे अंतरंग प्रेम करवो, तेने बहुमान कहियें. चोथो (उवहाणे केo) नवकारादिक सूत्रोना तपोविशेष उपधान योग्यनुं वहेवुं, तेने उपधान कहियें. (तहय केo) तथा पांचमुं (अनिण्हवणे केo) नणावनार जे विद्यागुरु, तेने उलववो नहीं विसारवो नहीं, तेने अनिण्हवण कहियें. बहो (वंजण केo) सूत्र अक्षर, शुरू नणवो खोटुं न नणवुं, शुद्धोच्चार करवो, तेने वंजण कहियें. सातमो (अब केo) अर्थ शुरू नणवो, आठमो (तडुनए केo) सूत्र अने अर्थ, ए बहु शुरू नणवां, ए (अठविहो केo) आठ प्रकारें (नाणमायारो केo) ज्ञानाचार जाणवो. ए आठ प्रकारें ज्ञानना आचार जेम कह्या छे, तेमज करियें. तेने ज्ञानाचार कहियें, अने तेथी विपरीत करियें, तो अतिचार लागे ॥ २ ॥

हवे दर्शनाचार कहे छे.

निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ दिठीअ ॥
उववूह थिरीकरणे, वछल्ल पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥

अर्थः–प्रथम श्रीवीतरागना वचनमां शंका न करवी. एकांतें सत्य मानवुं ते (निस्संकिअ केo) निःशंकित पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, बीजो स्याद्वादरूप श्रीजिनमत विना बीजा अन्यमतनी आकांक्षा एटले वांछा न करवी, लगारेक तप क्षमादिक गुण देखी, परदर्शननो अनिलाष करवो नहीं,

ते (निक्कंखिअ के०) निःकांक्षित पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, त्रीजो धर्मना फलमां संदेह न आणवो, एटले श्रीजिनधर्मने विषे क्रिया अनुष्ठानादिक ना फलने विषे संदेह करवो नहीं, अथवा साधु, साधवीनां मलमलिन शरीर तथा वस्त्र देखी, डुगंछा करवी नहीं निंदा करवी नहीं, ग्लानि कर वी नहीं, ते (निवितिगिछा के०) निर्विजुगुप्स पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. चोथुं अज्ञानी, मिथ्यात्वीनां क्रिया, कष्ट, कांइ करामत चमत्कार देखीने तेनी उपर व्यामोहित न थावुं, तथा ए लोकोमां पण कांइक छे? एवो पण मनमां विचार न करवो तथा श्री जिन शासनने विषे नवतत्त्व समाचारी प्रमुखमां मुंफावुं नहिं, तेमां प्रवीण होवुं, ते (अमूढदिठीअ के०) अमूढदृष्टि पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. पांचमुं सम्यक्त्वधारी गुणवंतना अल्प गुणनी पण श्र द्धापूर्वक प्रशंसा करवी, मुखें करी प्रकाशवी, ते (उववूह के०) उप बृंहक पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. छठुं श्रीजिनधर्मथकी पडता प्राणीने सहाय आपीने धर्ममां स्थिर करवो अथवा जे जीव, श्रीजिनधर्म नथी पाम्या, ते जीवने हितोपदेशादिकनुं सहाय आपीने श्रीजिनधर्मने विषे स्थापवो, स्थिर करवो, ते (थिरीकरणे के०) स्थिरीकार पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, सा तमो साधर्मिकनी विशेष भक्ति करवी तथा सर्व जीवने विषे करुणा, मैत्री भावना करवी, ते (वच्छल के०) वात्सलपुरुषनुं लक्षण जाणवुं, आठमो जे रीतें अन्य दर्शनी लोक पण जैनशासननी अनुमोदना करे, मिथ्यात्व मत मूकीने जैनमतने आदरे, तेम करवुं, एटले एवां कार्य करवां के जे थकी जैनशासन दीपे, घणां लोक बोधबीज पामे, ते (प्पभावणे के०) प्राभाविक पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, ए (अठ के०) आठ लक्षण दर्शनाचार नां जाणवां. आहिं लक्षण शब्दें आचार ग्रहण करवो. एवी रीतें प्रवर्त्तवुं, तेने दर्शनाचार कहियें, एथी विपरीत प्रवर्त्ते, तो अतिचार लागे ॥ ३ ॥

हवे चारित्राचार कहे छे.

पणिहाण जोगजुत्तो, पंचाहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥
एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥

अर्थः—(पणिहाणजोग के०) प्रणिधान एटले स्थिरयोग, संयम व्यापा र, तेणें करी एटले एकाग्र सावधान पणें करी मन, वचन तथा कायना

योग सर्व चारित्र पालवाने विषे (जुत्तो के०) युक्त होय एवो, (एसचरित्ता यारो के०) ए चारित्राचार, ते (पंचहिंसमिईहिं के०) पांच समिति तेणें करी, तथा (तिहिंगुत्तीहिं के०) त्रण गुप्ति तेणें करी (अठविहो के०) अष्टविध एटले आठ प्रकारें (होइ के०) छे, ते (नायव्वो के०) जाणवो. ते अष्ट विधजे पांच समिति अनें त्रण गुप्तिनां नाम आगल नवकारना अर्थमां श्री आचार्यनां विशेषणमां आव्यां छे माटे अहीं नथी लख्यां. ए आठ बोलें प्रवर्त्तवुं, तेने चारित्राचार कहियें, अने ए पांच समिति अने त्रण गुप्ति न पाले,तो चारित्राचारना अतिचार लागे,तेमाटे साधुने निरंतर अने श्रावकने सामायिक पोसह लीधे ए पांच समिति अने त्रण गुप्ति अवश्य पालवी ॥४॥

हवे तपाचार कहे छे.

बारसविहंमिवि तवे, सप्भिंतर बाहिरे कुसलदिठे ॥
अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥

अर्थः-(सो के०) ते (तवायारो के०) तपाचार, ते (बारस विहंमि वि तवे के०) बार प्रकारना तपने विषे अपि एटले निश्चें (नायव्वो के०) जाणवो. ते तपाचार केहेवो छे ? तो के (अगिलाइ के०) ग्लानि भाव एटले दुगंछा भाव रहित छे एटले तप करतां दुगंछा करीने तेनो भंग करें नही, वली (अणाजीवी के०) अशनादिक आजीविकायें करी रहित छे, एटले हुं जो तप करुं, तो तपस्वी कहेवाउं? पेट भराइ चाले? मने लोको तपस्वी जाणी धन प्रमुखवडे महारी भक्ति करे ? एवी बुद्धिथी तप न करवुं, वली ते द्वादशविध तप केहेवुं छे ? तो के (सप्भिंतरबाहिरे के०) छ भेद अभ्यंतर, अने छ भेद बाह्य सहित छे. वली केहेवुं छे ? तो के (कुसल के०) तीर्थंकरोयें (दिठे के०) उपदिष्टयुं छे, प्रकाश्युं छे एवा तपमां प्रवर्त्तवुं, तेने तपाचार कहियें, एथी विपरीत प्रवर्त्ते, तो अतिचार लागे ॥ ५ ॥

हवे ए तपाचारमां बाह्य तपना छ भेद विवरीने कहे छे.

अणसण मूणोयरिया, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ ॥
कायकिलेसो संली, णयाय बज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥

अर्थः-पहेलुं (अणसणं के०) अशनादिक चार आहारनो त्याग थोडा

काल लगें करवो अथवा जावजीव पर्यंत करवो, ते अनशन तप जाणवुं. बीजुं (ऊणोयरिया के०) ऊनोदरिका एटले वस्त्र, पात्र, उंणां, करवां अथवा नूख करतां पांच सात कोलिया उंणा जमवा तथा कषायनी न्यूनता करवी, तेने ऊनोदरिका तप कहियें. त्रीजुं (वित्तीसंखेवणं के०) इव्यादिक चार प्रकारना अनिग्रहें करीने जे वृत्ति एटले आजीविका तेनो संक्षेप करवो तेने वृत्तिसंक्षेप तप कहियें. जेम के साधु होय, ते इव्यादिक चारथी संक्षेप करे, त्यां वोहोरवा जतां साधु घरनी संख्या करे, जेम के पांच, सात अथवा एटलेज घेरथी जो सूजतो आहार मले तो लेवो, न मले तो उपवास करवो अने श्रावकें तो सवारनुं पच्चरकाण करतां दश, पंदर,किंवा जेटलां इव्य मोकलां राख्यां होय तेमांथी वली बे त्रण इव्य उंणां करे एवा प्रकारना अनिग्रह करे, तेने वृत्तिसंक्षेप तप कहियें. चोथुं (रसच्चाउ के०) विगयादिक रसनो त्याग करवो एटले ठ विगयमांथी एक बे विगयनो त्याग करवो, तथा लीलोतरी प्रमुखनो जे नियम लेवो, तेने रसत्याग तप कहियें. पांचमुं (कायकिलेसो के०) कायोत्सर्ग करवो, वीरासन, पद्मासन, तथा उत्कटासनादिक आसन करवां, जेम तेम कायाने पीडवी. टाढ तापनी आतापना लेवी, लोच कराववो, उघाडे पगें चालवुं; नूमि उपर शयन करवुं, इत्यादिक प्रकारें करीने शरीरने कष्ट देवुं, तेने कायक्लेश तप कहियें. ठहुं (संलीणयाय के०) विषय कषायने उदीरवा नही, जे उदय आव्या तेने निःफल करवा अशुन्न योगनुं निवारवुं, शुन्न योगमां प्रवर्त्तवुं ; स्त्री, पशु, नपुंसकरहित स्थानक सेववुं, कुकडीनी पेरे हाथ, पग, प्रमुख अंगोपांग संवरी राखवा, तेने संलीनता तप कहियें. ए ठ प्रकारें (बज्यो तवो के०) बाह्यतप (होइ के०) ठे ॥ ६ ॥

हवे प्रथमकहेला अन्यंतर तपना ठ नेद विवरीने कहे ठे.

पायच्छित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सप्ताउ ॥
जाणं उस्सग्गो विञ्, अप्निंतरउ तवो होई ॥७॥

अर्थः—प्रथम (पायच्छित्तं के०) दोष लागे थके गुरु गीतार्थनी आगल सरल मन वडे पापरूप अपराध प्रकासे. पठी ते अपराधनो निवारण

करवाने अर्थें गुरु जे आलोचनादिक एटले प्रायश्चित्तादिक आपे, ते रूडी रीते करे, तेने प्रायश्चित्ततप कहियें.

बीजुं (विणओ के०) ज्ञानादिक सात प्रकारनो विनय करवो, ते विनयतप, अथवा वली आठ प्रकारें गुरुनो विनय करवो, ते कहे छे,एक गुरुने देखी उना थवुं, बीजुं गुरुने आवता देखी सामे जवुं, त्रीजुं गुरुने देखी हाथ जोडी मस्तकें चढाववा, चोथुं गुरुने बेसवाने आसन आपवुं, पांचमुं पोतें आसने बेसवानुं मूकी देवुं, छठुं ज्यां सुधी गुरु उना होय, त्यां सुधी उना रहेवुं, सातमुं गुरुने वांदणां देवां, गुरुनी पर्युपासना एटले सेवा करवी, विसामण करवा, तथा आठमुं गुरु जाय, तेवारें तेनी पाछल वोलाववा जवुं, ए आठ प्रकारें पण विनयतप कहियें.

त्रीजुं (वेआवच्चं के०) वैयावृत्य तप करवुं, ते आहारादिक आणी आपवा, केड पगादिक चांपवा प्रमुख आचार्यादिक दश पुरुषोनी नक्ति करवी, एटले आचार्य, ग्लान, बाल, वृद्ध, तपस्वी, नवदीक्षित साधु, साधर्मी, कुल, ते जे एक आचार्यनां संतान तेने कुल कहियें, तथा गछ, ते जे घणा आचार्यनां संतान एकठां थयेलां होय, तेने गछ कहियें, तथा संघ, ते साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका तद्रूप ते संघ. ए दशनुं जे . वैयावृत्त्य करवुं, तेने वैयावच्च तप कहियें. (तहेव के०) तेमज वली.

चोथुं (सज्जाओ के०) वांचनादिक पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवो, तेने स्वाध्यायतप कहियें. त्यां एक वांचना एटले नणवुं, बीजी पृछना ते संशय टालवानें पूछवुं, त्रीजी परावर्त्तना एटले वीसरी गयेलुं संनारवुं. चोथी अनुप्रेक्षा एटले तत्त्वचिंतवना करवी, पांचमी धर्मकथा एटले तीर्थंकरादिक गुणिजननी कथा करवी. ए पांच नेद, सज्झायतपना जाणवा.

पांचमुं (झाण के०) ध्यानतप ते आर्त्त रौद्रध्याननुं निवारवुं अने धर्म तथा शुक्ल, ए बे शुन ध्याननुं ध्याववुं, एवा बे प्रकारें ध्यानतप जाणवुं.

छठुं (उस्सग्गो के०) परवस्तुनो त्याग करवो, कर्मना क्षय निमित्तें कायोत्सर्ग करवो, तेने कायोत्सर्गतप कहियें. (अपि के०) निश्चें, ए छ नेदें (अप्निंतरउतवो के०) अन्यंतर तप (होइ के०) छे ॥ ७ ॥

अणिगूहिअ बल विरिउ, पडिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ॥
जुंजइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥८॥ इति ॥२७॥

अर्थः-(अणिगूहिअ के०) अनिगूहित छे, अणढांकेलुं छे एटले प्रगट छे, (बलविरिउ के०) बल वीर्य जेनुं, वली (जो के०) जे (जहुत्तं के०) यथोक्त एटले जेम श्रीतीर्थंकर देवे कह्युं छे, तेमज (पडिक्कमइ के०) पराक्रम करे छे, एटले उद्यम करे छे. अर्थात् शरीरनुं बल अने मननुं वीर्य, ए बेहुने अणगोपवतो थको मनमां उत्साह धरतो थको, वचनें धर्मव्यापार करतो छतो, खेदने अणपामतो थको, धर्मने विषे उद्यम करे छे. वली जे (आउत्तो के०) उपयुक्त थको, एटले सावधान थको, (जहाथामं के०) पोताना बलने अनुसारें यथाशक्ति प्रमाणें (जुंजइ के०) जोडे, लागे, एटले प्रवर्त्ते, ते शानेविषे प्रवर्त्ते ? तो के धर्मकार्यने विषे प्रवर्त्ते, ते (वीरिआयारो के०) वीर्याचार, (नायव्वो के०) जाणवो. ए त्रण प्रकारें वीर्याचार कह्यो ॥ ८ ॥ इति ॥ २७ ॥ हवे आ नीचें लखेली गाथा मुनिराज, काउस्सग्गमां चिंतवे. ते लखियें छैयें.

सयणासणन्नपाणे, चेइय जइ सिज्ज काय उच्चारे ॥ समिई जावण गुत्ती, वितहायरणे अईयारो ॥ १ ॥ अर्थः-(सयण के०) सुवाना संथारिआ प्रमुख, (आसण के०) बेसवाना आसन, बाजोठ प्रमुख, (अन्नपाणे के०) अशन, पान, खादिम, स्वादिम, (चेइय के०) चैत्यवंदन, (जइ के०) यति, ते साधुजक्ति-अन्युष्ठानादिक, (सिज्ज के०) शय्या, वसति, उपाश्रय, (काय के०) लघुनीति, ते पीशाब, (उच्चारे के०) वडी नीति ते थंमिल परठववानो विधि, (समिई के०) ईर्यादिक पांच समिति, (जावण के०) अनित्यादिक बार जावना तथा पंच महाव्रतनी पच्चीश जावना, (गुत्ती के०) त्रण गुप्ति ए सर्व बोल, (वितह के०) वितथपणें एटले असत्यपणे विपरीत पणे (आयरणे के०) आचरवा थकी अंगीकार करवा थकी (अईयारो के०) अतिचार होय, एटले ज्ञानादिक आत्मगुण मलिन थाय ॥ इति गाथार्थः ॥ १ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ देवसिअं आलोउं लिख्यते ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं ॥ इच्छं आलोएमि जो मे देवसिओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति २८ ॥

अर्थः–(भगवन् के०) हे भगवन्! (इच्छाकारेण के०) पोतानी इच्छायें करी पण कोइना बलात्कारें नही, (संदिसह के०) मुजने आदेश आपो. (देवसिअं के०) दिवससंबंधि जे अतिचार उपन्या, ते प्रत्यें (आलोएमि के०) आ एटले मर्यादायें करी अथवा समस्तपणे करी लोएमि एटले हुं प्रकाशुं छुं. अहींआं रात्रि होय, तो राइसंबंधि अतिचार प्रकाशुं छुं. एम केहेवुं. ए रीतें शिष्य कहे, तेवारें गुरु कहे के आलोह, एटले आलोचो प्रकाशो. पछी शिष्य कहे, (इच्छं के०) हुं पण इच्छुं छुं, तमारुं वचन अंगीकार करुं छुं. (आलोएमि के०) हुं आलोउं छुं, एटले मर्यादायें करी, संपूर्ण भावें करी हुं प्रकाशुं छुं. (जो के०) जे (मे के०) मह्यारे जीवें, (देवसिओ के०) दिवस संबंधिओ (अइआरो के०) अतिचार दोष (कओ के०) कीधो होय, एटले लगाड्यो होय, ते अतिचार, अनेक प्रकारें छे. माटे तेना प्रकारो कहे छे. (काईओ के०) कायासंबंधी (वाईओ के०) वचन संबंधी (माणसिओ के०) मनःसंबंधी एटले काया, वचन अने मनः संबंधिओ अतिचार छे. तेमां प्रथम काया अने वचन संबंधि अतिचारनुं स्वरूप कहे छे. (उस्सुत्तो के०) उत्सूत्र एटले जिनागमथी विरुद्ध बोलवुं, ते हेतुथी उत्पन्न थयुं तथा (उम्मग्गो के०) उन्मार्ग ते क्षायोपशमिक भावरूप मार्ग, ते प्रत्यें अतिक्रमी उल्लंघीने औदयिक भावें करी एटले मिथ्यात्व कषायादिक भावें करी कीधो थाप्यो, जे उन्मार्ग, ते उन्मार्गना

योगें करी नीपन्यो जे (अकप्पो के०) अकल्पः एटले कल्प जे विधि ते चरणकरणव्यापार, ते थकी अ एटले रहित ते अकल्प कहियें. ते अकल्पपणाना हेतुथकी उत्पन्न थयो जे (अकरणिज्जो के०) अकरणीय एटले जे करवा योग्य नही, एवा कार्यने करवे करी, एम अहींआं हेतुहेतुमद्भाव छे, ते आवी रीतें के, जेमाटें उत्सूत्र, ते माटेज उन्मार्ग; अने जेमाटे उन्मार्ग, तेमाटेंज अकल्प, जेमाटे अकल्प, तेमाटेज अकरणीय कहियें. एटले काय अने वचनसंबंधि अतिचारनुं स्वरूप कह्युं. हवे मनःसंबंधि अतिचारनुं स्वरूप कहे छे. (डुज्झाउ के०) डुर्ध्यान ते चित्तने एकाग्रपणे आर्त्त, रौद्रध्याननुं ध्याववुं. ते जेमाटे डुर्ध्यान,तेमाटेज (डुविचिंतिउ के०) डुर्विचिंतित एटले जे चलचित्तपणे करी डुष्ट अशुनकार्यनेज मनमां चिंतववुं, जेमाटे ते डुर्विचिंतित, ते माटेज (अणायारो के०) अनाचार कहियें. एटले जेथकी व्रतादिकनो सर्वथा नंग थाय,जेमाटे ते अनाचार,तेमाटेज (अणिच्छियव्वो के०) अनेष्टितव्यःएटले जे इछवा वांछवा योग्य नथी,जेमाटे ते अनेष्टितव्य, तेमाटेज (असावगपाउग्गो के०) नथी श्रावकने प्रायोग्य एटले श्रावकने उचित नथी. इति मनःसंबंधि अतिचार. हवे ए सर्व अतिचार,शाने विषे लगाड्या होय? ते कहे छे.

(नाणे के०) निजपर सत्तारूप वस्तुनुं यथार्थ जाणपणारूप जे ज्ञान. तेने विषे, (दंसणे के०) देवादिक त्रण तत्त्वनुं साचुं श्रद्धानरूप जे दर्शन, तेने विषे, (चरित्ताचरित्ते के०) कांइएक विरतिरूप, कांइएक अविरतिरूप एवुं जे देशविरतिरूप श्रावकनुं चारित्र. तेने विषे, अथवा ज्ञानादिक निजगुणमांहे देशथकी जे स्थिरता, ते रूप जे चारित्राचारित्र तेने विषे. एहीज वली कहे छे. (सुए के०) श्रुत सिद्धांतने विषे अकालें स्वाध्याय इत्यादिक अतिचार लगाड्यो होय, (सामाइए के०) सम्यक्त्वरूप सामायिकने विषे जिनवचनने विषे शंकादिक अतिचार लगाड्यो होय. ए चारित्राचारित्रसंबंधि अतिचार, प्रतिन्नेदें करी कहे छे. (तिन्हंगुत्तीणं के०) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति, ए त्रण गुप्तिने अणपालवे करी, (चउन्हंकसायाणं के०) क्रोध, मान, माया अने लोन, एवा चार कषायने करवे करी (पंचन्हमणुव्वयाणं के०) एक स्थूलप्राणातिपातविरमण, बीजुं स्थूलमृषावादविरमण, त्रीजुं स्थूलअदत्तादानविरमण, चोथुं स्थूलमैथुनविरमण, पांचमुं स्थूलपरिग्रहविरमण, ए पांच अणुव्रतमांहेथी

तथा (तिन्हंगुणव्वयाणं के०) एकदिशिपरिमाणव्रत, बीजुं उपन्नोगपरि न्नोगपरिमाणव्रत, त्रीजुं अनर्थदंमविरमणव्रत, ए त्रण गुणव्रतमांहेथी तथा (चउन्हंसिरकावयाणं के०) एक सामायिकव्रत, बीजुं देशावकाशिक व्रत, त्रीजुं पौषधोपवासव्रत, चोथुं अतिथिसंविन्नागव्रत, ए चार शिक्षाव्र तमांहेथी, घणुं शुं कहियें? परंतु (बारसविहस्स के०) ए पूर्वोक्त द्वादशविध एटले बार प्रकारना व्रतरूप (सावगधम्मस्स के०) श्रावक संबंधि जे धर्म ते मांहेथी महारे जीवें (जंखंमियं के०) जे खंम्युं, एटले देश थकी न्नंग कीधो, (जंविराहियं के०) जे विराध्युं एटले सर्वथकी न्नंग कीधो, (तस्स के०) तेहनुं (डुक्कडं के०) डुष्कृत एटले पाप, ते (मि के०) महारे जे लाग्युं ते (मिछा के०) मिथ्या थाउ, एटले निष्फल थाउ ॥ १ ॥ एमां लघु अक्षर एकशो उंगणचालीश अने गुरु अक्षर उंगण त्रीश, सर्व मली एकशो ने अडशठ अक्षरो छे ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ सात लाख ॥

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेंडि य, बे लाख तेंडिय, बे लाख चौरिंडिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंडिय, चौद ला ख मनुष्य, एवंकारें चोराशी लाख जीवायोनिमांहे मा हारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मने, वचने, कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ २७ ॥ एनो अर्थ सुगम छे ॥

॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान,

आठमे माया, नवमे लोज, दशमे राग, इगिआरमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अन्याख्यान चौदमे पैशुन्य, पन्नर मे रति अरति, शोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषा वाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानकमां हिं माहारे जीवें जे कोइ सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सर्वे मने, वचने, काया यें करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३० ॥

अर्थः—परजीवना प्राणनो नाश चिंतववो ते प्रथम प्राणातिपात. जूठुं बोलवाना परिणाम, ते बीजो मृषावाद. पारकी वस्तु धणीना दीधा विना चोरी लेवानी रुचि, ते त्रीजुं अदत्तादान. विषयसुखनी वांछारूप परिणाम ते चोथुं मैथुन. नव प्रकारें बाह्य अने चौद प्रकारें अभ्यंतर परिग्रहनी वांछा. ते पांचमो परिग्रह. कोइनी उपर आकरा तीव्र परिणामें क्रोध करवो, ते छहो क्रोध. आठ प्रकारें मद करवो, ते सातमुं मान. कपटसहित लोकने देखाडवा रूप धर्मकरणी करवी, ते आठमी माया. धन, शरीर, कुटुंब, परिवाररूप सं पदाने एकठी करवानी तथा राखवानी घणी वांछा, ते नवमो लोज. पौज लिक परवस्तु उपर राग धरवो, ते दशमो राग. पोताने अणगमती वस्तु उपर अरुचिजाव, ते अगीआरमो द्वेष. कोइ पण कारणें क्लेश करवानी रुचि, ते बारमो कलह. परजीवने अण दीठुं अण सांजल्युं आल देवुं, ते तेरमुं अन्याख्यान. पारकी चाडी करवी, ते चौदमुं पैशुन्य. सुख डुःख आ वे हर्ष शोक धरवो, ते पंदरमुं रति अरतिनामा पापस्थानक कहियें. गु णी किंवा निर्गुणी जीवनी निंदा करवी, ते शोलमो परपरिवाद कहियें. अं तरमां बीजी वात होय अने बाहेर मुख थकी मीठुं बोलवुं, इत्यादिक अ नेक प्रकारें बल करीने लोकोने ठगवाना परिणाम, ते सत्तरमो माया मृ षावाद. पांच प्रकारें मिथ्यात्व सेववा रूप परिणाम, ते अढारमुं मिथ्यात्व शल्य नामा पापस्थानक जाणवुं. ए अढार प्रकारें जे जीवने चित्तमां पाप रूपजाव उत्पन्न थाय, तेने जावपाप कहियें अने ते जावनी चिकाशें करी

जे जीवने सत्तायें कर्मनां दलीयां लागे, तेने द्रव्यपाप कहियें, ते द्रव्यपापनां दलियां सत्तायें बंधाणां, ते आगल नावपणे तिर्यंच तथा नारकीना नव पामीने व्याशी प्रकारे नोगवाय ॥ १ ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ अथ देवसिअपडिक्कमणे गउं ॥

सवस्सवि, देवसिअ, डुच्चिंतिअ, डुप्नासिअ, डुच्चि
ठिअ, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३१ ॥

अर्थः—आ सूत्रनो अर्थ, आगल सवसविनामा साडत्रीशमुं सूत्र आवशे, तेना अंतर्गत आवी जाशे, माटे अहीं नथी लख्यो ॥ १ ॥ ३१ ॥

॥ अथ श्रावकपडिक्कमणसूत्र अथवा वंदितासूत्र ॥

वंदित्तु सव सिद्धे, धम्मायरिये अ सवसाहू अ ॥ इ
च्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥

अर्थः—(सव के०) सर्व सर्वज्ञ एटले सर्व वस्तुने जाणे, सर्वने हित वांबक एवा तीर्थंकर तेमने, तथा (सिद्धे के०) सिद्ध जे अष्ट कर्मनाक्षय थकी पूर्ण थयां ठे अर्थ प्रयोजन जेमनां तेमनें, तथा (धम्मायरिए के०) धर्माचार्य जे श्रुतचारित्ररूप धर्म, तेना आचारने विषे श्रेष्ठ तथा धर्मना दातार, तेमने, तथा (अ के०) च शब्द थकी उपाध्याय जे सिद्धांतना नणावनार ते पण लेवा, तेमने, तथा (सवसाहू के०) सर्व साधु ते स्थविरकल्पिकादिक जिनकल्पी प्रमुख अनेक प्रकारना साधु मोक्षना साधनार तेमने, (अ के०) अकार ते समुच्चयार्थवाचक ठे. एटले ए पांच पद जे ठे, तेमने (वंदित्तु के०) वांदीने नमस्कार करीने एटले ए पांचेने सर्व विघ्नोपशांतिने माटे वंदन करीने, (सावगधम्माइआरस्स के०) श्रावक धर्मने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, ते थकी एटले एकशो ने चोविश अतिचार थकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमवाने निवर्त्तवाने (इच्छामि के०) हुं इबुं बुं, वांबुं बुं. अहिं अतिचार शब्दनो अर्थ आवीरीतें ठे के जे आत्माना गुणने मलिन करे, तेने अतिचार कहियें ॥ १ ॥

हवे सामान्यप्रकारें सघला व्रतना अतिचार. पडिक्कमवाने अर्थें कहे ठे.

जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥

अर्थः—(वयाइयारो के०) बार व्रतना अतिचार पंचोतेर छे, केम के अगीआर व्रतना तो प्रत्येकें पांच पांच अतिचार छे अने एक सातमा व्रतमध्यें कर्मादानना पंदर अतिचार अंतरजूत आवे छे,अने पांच मूल सातमा व्रतना अतिचार मेलवतां वीश थाय. ए रीतें सर्व मली पञ्चोतेर अतिचार थाय, (तह के०) तथा (नाणे के०) ज्ञानना आठ अतिचार, ते 'काले विणए' इत्यादिक आठ प्रकारें ज्ञानाचार, तेने विपरीत पणे आचरवा थकी होय, (दंसणे के०) दर्शन सम्यक्त्वना तेर अतिचार छे. तेमां शंकादिक पांचने सेववा थकी पांच अतिचार तथा ' निस्संकिय निक्कंखिय ' इत्यादिक आठ प्रकारें दर्शनाचारने अणसेववा थकी आठ अतिचार, सर्व मली तेर अतिचार थाय तथा (चरित्ते के०) चारित्राचारना आठ अतिचार, ते पांच समिति अने त्रण गुप्तिने अणपालवाथकी अथवा विपरीत पणे पालवाथकी थाय, (अ के०) च शब्द थकी तपाचारना बार अतिचार, ते 'अनशन ऊणोदरी' इत्यादिक बार प्रकारनो तपाचार तेने विपरीत पणे आचरवा थकी होय, वीर्याचारना त्रण अतिचार, ते छती सामर्थ्यें मन, वचन अने कायायें करी धर्मने विषे उद्यम अणकरवाथकी होय, अने संलेषणा मरणांत आराधनाना इह लोक परलोकनी वांछा इत्यादिक पांच अतिचार छे. ए सर्व मली एकशो चोवीश अतिचारमध्येंथी (सुहुमो के०) सूक्ष्म ते जे जाणवामां नहीं आवे, ते जाणवो. (अ के० वली (वा के०) अथवा (बायरो के०) बादर जे प्रगट जाणवामां आवे, ते जाणवो. ए सूक्ष्म अथवा बादर अतिचार मांहेलो (जो के०) जे अतिचार, (मे के०) माहारे हुउं होय, (तं के०) ते अतिचार प्रत्यें (निंदे के०) आत्मसाखें हुं निंदुं छुं. हवे वली नहीं करुं. (च के०) वली (तं के०) ते अतिचार प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरु समक्ष हुं गर्हुं छुं एटले निंदुं छुं ॥ २ ॥

हवे जे जे व्रत छे, ते ते व्रतना अतिचार पण प्रायें परिग्रहथकी उपजे छे, तेमाटे प्रथम सामान्यपणे परिग्रह आश्रयीने पडिक्कमवाने कहे छे.

दुविहे परिग्गहंमि सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥

अर्थः–(डुविहे के०) बे प्रकारना (परिग्गहंमि के०) परिग्रह छे, तिहां एक द्विपद चतुष्पदरूप सचित्तपरिग्रह, अने बीजो द्रव्य तथा आनूषणादिक ते अचित्तपरिग्रह जाणवो. तथा एक बाह्यपरिग्रह ते धनधान्यादिक नवविध जाणवो अने बीजो अभ्यंतरपरिग्रह ते कषाय, नोकषाय, मिथ्यात्वरूप चौद प्रकारनो परिग्रह छे. तेनी उत्पत्तिनुं कारण, (सावज्जे के०) पापसहित एवा (अ के०) वली (बहुविहे के०) बहुविध कृषि प्रमुख अनेक प्रकारना जे (आरंने के०,) आरंन, तेने (करणे के०) पोतें करवायकी (कारावणे के०) अनेरा पासें करावयकी (अ के०) बीजा आरंन करनाराने अनुमोदवा थकी जे महारे अतिचार लाग्यो होय, (देसियंसवं के०) ते सर्व दिवससंबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, एटले ते अतिचारथकी हुं निवर्त्तु बुं ॥ ३ ॥

हवे प्रथम ज्ञानाचारना अतिचार आलोवे छे.

जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसछेहिं ॥
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥

अर्थः–(इंदिएहिं के०) स्पर्शनादिक पांच इंद्रिय मोकलां राख्यां तेणें करीने तथा (चउहिंकसाएहिं के०) क्रोधादिक चार कषायें करी, (अप्पसछेहिं के०) अप्रशस्त एटले मागो मिथ्यात्वादिक औदयिक नाव तेना उदयें करी, (रागेण के०) रागें करी, (व के०) अथवा (दोसेण व के०) द्वेषें करी, अहिं व पादपूरणार्थ छे. (जं के०) जे ज्ञानातिचार रूप अशुन कर्मने (बद्धं के०) बांध्युं होय उपार्ज्युं होय, (तं के०)ते ज्ञानातिचाररूप अशुन कर्म प्रत्यें (निंदे के०) आत्मानी साखें हुं निंडुं बुं, (च के०) वली (तं के०) ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं बुं, निंडुं बुं ॥ ४ ॥

हवे सम्यक् दर्शनना तथा चक्षुर्दर्शनना अतिचार आलोवे छे.

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणानोगे ॥
अनिउगे अ निउगे, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ ५ ॥

अर्थः–(अणानोगे के०) अनुपयोग थकी (अनिउगे के०) राजानां

आदेश तथा घणा लोकना आग्रहथकी. इत्यादिक अभियोग आगार थकी (अ के०) वली (निउगे के०) पराधीन आजीविका चलावता जेनुं दासपणुं करीयें, तेनी आज्ञाथकी तथा, मंत्री, श्रेष्ठी, तेनी आज्ञा थकी, मिथ्यादृष्टि संबंधि रथ, यात्रा प्रमुख जोवाने अर्थें, कौतुक जोवाने अर्थें एटले मिथ्यात्वीनां देव, देहेरां प्रमुखने विषे उत्सवादिक जोवाने (आगमणेनिग्गमणे के०) आगमन, निर्गमन करवुं एटले जावुं तथा आववुं तथा (ठाणे के०) मिथ्यात्वीने स्थानकें उन्नुं रहेतां, (चंकमणे के०) तिहांज अरहां परहां फरतां, जे अतिचाररूप पाप बांध्युं, ते (पडिक्कमेदेसियंसवं के०) ते सर्व दिवस संबंधिआ अतिचार लाग्या होय, तेथी पडिक्कमुं छुं निवर्त्तुं छुं. अहींआं प्राकृत शैलीना वशथकी वकारनो लोप थाय छे, तेमाटे 'देसियं सवं' पाठ कह्यो छे, परंतु 'देवसियं सवं' पाठ कह्यो नथी. वली आ ठेकाणे प्रनातें 'राइयं' एवो पाठ कहियें, अने पक्किएं 'पक्कियं' एवो पाठ कहियें, तथा चउमासिएं 'चउम्मासियं' एवो पाठ कहियें, तथा संवत्सरियें 'संवछरियं' एवो पाठ कहियें ॥ ५ ॥

हवे सम्यक्त्वना अतिचार आलोवे छे.

संका कंख विगिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु॥
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ ६ ॥

अर्थः—प्रथम जीवादिक नव तत्त्वनेविषे जीव छे, किंवा नथी? तथा जिनन्नाषित वचननेविषे ए साचुं हशे, के केम हशे? एवो संदेह करवो तेने (संका के०) शंका जाणवी, बीजुं अल्प स्वल्प क्षमादिक, अहिंसादिक गुण, परदर्शनीमां देखीने ते उपर अनिलाष उपजे, ते (कंख के०) कांक्षा कहियें, त्रीजुं दानादिक धर्म कर्यानुं फल हशे, के नहीं होय? रखे फोकट प्रयास करवो पडतो होय? एवो संदेह धरवो, अथवा साधु, साधवीनां शरीर, वस्त्र मलिन देखी छुगंछा करे. ते (विगिछा के०) विद्वज्जुगुप्सा कहियें. चोथो (कुलिंगीसु के०) कुलिंगीमिथ्यात्वीने विषे (पसंस के०) प्रशंसा करे, ते प्रशंसा कहियें. (तह के०) तथा पांचमो कुलिंगी मिथ्यात्वीने विषे संस्तव, परिचय करे, ते (संथवो के०) संस्तव कहियें.

ए दर्शनमोहनीय कर्मना क्षायोपशमादिक पणा थकी उत्पन्न थयो जे जिनप्रणीत तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मानो शुजपरिणाम, तेने (सम्मत्तस्स के०) सम्यक्त्व कहियें, तेना ए पांच (इआरे के०) अतिचार जाणवा. ते आश्रयीने जे (देसियं के०) दिवससंबंधि पाप बांध्युं ते, (सव्वं के०) सर्व (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं बुं ॥ ६ ॥

हवे चारित्राचारना अतिचार आलोवे बे.

बक्कायसमारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥
अत्तठा य परठा, उजयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥

अर्थः—चारित्रना अतिचार प्रतिक्रमवानी आदिमां बक्काय समारंज आश्रयी दोषने निंदियें बैयें. (अत्तठा के०) आत्माने अर्थे एटले पोताना जोगने अर्थे अथवा आत्मार्थ एटले मुजने आम करवाथी पुण्य थशे? एवी जोली बुद्धियें साधुने आपवाने अर्थे, (य के०) वली (परठा के०) प्राहूणादिक परने अर्थे अने (उजयठा के०) निज पर ए बेहुने अर्थे अशनादिक आहारने (पयणे के०) पचवते एटले पोतें रांधते (अ के०) वली (पयावणे के०) पचावते एटले बीजा पासें रंधावते (अ के०) अ शब्द थकी बीजा रांधता होय तेनें अनुमोदन देते, एम (बक्काय के०) पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति अनें त्रस, ए बक्कायजीवोना (समारंज के०) समारंज, परिताप, उपद्रव हुवे बते अथवा बक्कायनें विषे अयत्नायें प्रवर्त्तवा थकी, (जे के०) जे कर्मबंधरूप (दोसा के०) दोष लाग्या होय, (चेव के०) एव शब्दें निश्चें च शब्दे पर उपर द्वेष करवा थकी जे अतिचार दोष लाग्यो होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडुं बुं ॥ ७ ॥

त्यां सामान्यप्रकारें चारित्रातिचार प्रतिक्रमवानें अर्थे बार व्रतना अतिचार कहे बे.

पंचन्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिन्हमइयारे ॥
सिरकाणं च चउन्हं, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ ८ ॥

अर्थः—(पंचन्हमणुव्वयाणं के०) स्थूल प्राणातिपातादिक एवा पांच अणुव्रत, तेनें विषे, (च के०) वली (तिन्हं के०) दिशि परिमाण आदिक त्रण

(गुणव्वयाणं के०) गुणव्रत, तेने विषे तथा (चउन्हंसिरकाणं के०) सामायिक आदें देइने चार शिक्षाव्रत, तेने विषे, (च के०) वली तप, संलेषणादिकने विषे जे (अइयारे के०) अतिचार लाग्यो होय, ते अतिचार आश्रयी, (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं. (देसियंसव्वं के०) दिवस संबंधि सर्व अतिचार प्रत्यें. अहीं पांच अणुव्रत ते पांच मूलगुण कहियें अनें ते पांचने विशेष गुण करनारा दिशिप्रमाण प्रमुख त्रण गुणव्रत जाणवां; वली चार शिक्षाव्रत, ते थोडा कालना मानवालां जाणवां. ते जेम शिष्यने विद्या जणावीने अभ्यास करावववा योग्य छे, तेम ए सामायिकादिक चार शिक्षाव्रतने विषे पण सदा उद्यम करावववा योग्य छे ॥ ८ ॥

हवे प्रथम स्थूलप्राणातिपातविरमणनामा अणुव्रत कहे छे.

पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥
आयरिअमप्पसछे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥

अर्थः-(पमाय के०) पांच प्रकारना प्रमाद तेने विषे, (प्पसंगेणं के०) अत्यंत पणे प्रसंग एटले प्रवर्त्तवुं, तेने प्रमादप्रसंग कहियें. तेणें करीने तथा आकुटयादिकें करीने (अप्पसछे के०) अप्रशस्त अशुभ भाग एवा अज्ञानमिथ्यात्व कषायादिक औदयिक भाव हुए छते, (थूलग के०) स्थूल बादर मोटको जे जावुं, आववुं, फरवुं, इत्यादिक लक्षणें करी प्रगट जणाय छे, तथा संकल्प निरपराधि निरपेक्ष, बेंद्रिय, तेंद्रिय, चउरिंद्रिय, पंचेंद्रिय, त्रस जीव ते संबंधि (पाण के०) आयु, इंद्रिय, प्राण, तेनां (अइवाय के०) अतिपात एटले विनाश तेनी (विरईउ के०) विरति निवृत्ति, तेथकी (आयरिअ के०) जे अतिक्रमवुं उल्लंघवुं ते (इछ के०) अहींआं (पढमेअणुव्वयंमि के०) प्रथम अणुव्रतने विषे अतिचार जाणवां. अथवा स्थूलप्राणातिपातनिवृत्ति प्रत्यें आश्रयीने जे जे दोष (आयरियं के०) आचर्यो सेव्यो होय, ते आगली गाथामां पडिक्कमिश ॥ ९ ॥

हवे प्रथम व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

वह बंध छवि छेए, अइभारे भत्तपाणवुछेए ॥
पढम वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १० ॥

अर्थः—कषायना वश थकी द्विपदादिक जीवने लाकडी प्रमुखें निर्दयता यें करी, एक (वह के०) वधवुं, हणवुं, ताडवुं, प्रहार देवो, घायल करवो बीजो (बंध के०) दोरडादिकें करी बांधवुं, त्रीजो (छवि के०) बलद समा रवा, शरीरना कान अने नासिकादिक अवयवोने (छेए के०) छेदवा, चोथो थो डा जार उपाडवानी शक्तिवाला एवा पोठीआ गाडला वृषजादिकोनी उपर लोजना वशथकी (अइजारे के०) अतिजारनुं आरोपण करवुं. एटले तेनी उपर घणो जार नाखवो, पांचमो (जत्तपाणवुछेए के०) जात पाणीनो व्युछेद करवो, अंतराय करवो, ए (पढमवयस्सइआरे के०) प्रथम व्रतना पांच अतिचार, ते आश्रयीने जे महारे अतिचार लाग्यो होय, (स व्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें, (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निंदुं छुं. आ ठेकाणें कोइ शंका करे के, प्राणातिपातविरम णव्रतवालाने वधादिकनो अतिचार लागे नहीं, कारण के प्राणातिपात श ब्दें करी वधादिक ग्रहण थाय नहीं, तेथी वधादिक करे तो पण तेने प्राणा तिपातविरमणव्रतनो अतिचार लागे नहीं? त्यां कहे छे के, मुख्यतायें क रीने तो प्राणातिपातनुंज पच्चरकाण कर्युं छे, परंतु वधादिकनुं प्रत्याख्यान कर्युं नथी, तो पण परमार्थें ते वधादिकनुंज प्रत्याख्यान जाणवुं, का रण के ते वधादिकने प्राणातिपातनुं हेतुत्व छे, ते हेतु माटे ते वधादिक करवा थकी प्राणातिपातव्रतजंग थाय, तेथी ते प्राणातिपातविरमणव्रत वालाने वधादिकनुं पच्चरकाण योग्य छे ॥ १० ॥

हवे बीजुं अणुव्रत कहे छे.

बीए अणुवयंमि, परिथूलग अलिअवयणविरईउ ॥
आयरिअमप्पसछे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥

अर्थः—एक कन्यालिक ते कन्याआश्रयी जूठुं बोलवुं, सुलक्षणीने अप लक्षणी कहेवुं अने अपलक्षणीने सुलक्षणी कहेवुं, एमां द्विपद संबंधि जे जूठुं बोलवुं, ते सर्व जाणी लेवुं. बीजुं गोवालिक ते गौआश्रयी जूठ बो लवुं, एटले थोडा दूधवालाने घणा दूधवाली कहेवी अने घणा दूधवालीने थोडा दूधवाली कहेवी. एमां कोइपण चतुष्पदसंबंधि जे जूठुं बोलवुं ते सर्व लेवुं. त्रीजुं जूम्यालिक ते जूमिआश्रयी जूठ ते पारकी जूमिने पोतानी

नूमि कहेवी तथा इव्यादिक संबंधि जे जूतुं बोलवुं ते सर्व एमां आवे ले, चोथो न्यासापहार ते पारकी थापण वस्तु राखीनें जूतुं बोलवुं जे में तो नथी राखी. पांचमुं मत्सरने लीधे अथवा लांच लेइने मोटकी कूडी साक्षी नरवी तथा कूडा करहानुं काढवुं, विश्वासघात करवो, ए सर्व एमां आव्युं. इत्यादिक जेमां राजा दंमे, लोक नंमे, एवो (परिथूलग के०) अतिशयें करी मोटको (अलियवयण के०) अलिक वचन मृषावाद तेनी (विरईउ के०) विरति ते थकी (आयरिअं के०) जे अतिक्रमवुं, उल्लंघवुं ते (बीएअणुव्वयंमि के०) बीजा अणुव्रतने विषे अतिचार थाय; ते अतिचार, शुं होवाथी थाय? तो के (इब के०) एहीज व्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादने प्रसंगें करी (अप्पसत्थे के०) अप्रशस्त अशुन नाव हुए बते थाय, अथवा मोटका मृषावादनी विरति प्रत्यें आश्रयीने (आयरियं के०) जे दोष आचस्यो होय, एटले आ व्रतमध्यें जे दोष लगाडयो होय, ते आगली गाथायें पडिक्कमीश.

अहीं कोइ कहेशे के अदत्तादानविरमणव्रतमां न्यासापहारनी वात आवशे, तेवारें अहीं लखवाथी पुनरुक्ति थाय ले. त्यां कहे ले के, प्रधानत्वें करी तो न्यासापहार ते वचननुं खोटुं बोलवा पणुंज ले, तेथी ए मृषावाद पणुंज थाय ले तेमाटे अहीं मृषावाद आश्रयी लख्युं ले.

तथा वली न्यासापहार अने जूठी साक्षीपणुं, ए पूर्वोक्त द्विपदादिक अलीकना अंतरनावमां आवी जाय ले, तो पण लोकने विषे ए बेहुनुं अत्यंत ग्रहण करेला पणुं ले, माटे अहीं ए बेनुं जूदुं ग्रहण कस्युं ले ॥ ११ ॥

सहस्सा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥
बीअ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १२ ॥

अर्थः—(सहस्सा के०) सहसात्कारें अणविचास्युं कोइने माथे जूतुं आल देवुं एटले कोइना उपर आ चोर ले, इत्यादिक कहीने कलंक चढावयुं, ते प्रथम सहसान्याख्यान अतिचार तथा कोइने एकांतें ढानी वात करतां देखीने कहे के, तमें अमुक अमुक राजविरुद्ध विचार करो लो? बोलो लो? ते बीजो (रहस्स के०) रहस्यान्याख्यान अतिचार जाणवो. तथा पोतानी स्त्रीयें आपणा उपर विश्वास आणीने कांइ ढानी वात आपणने कही होय, ते वात बीजा आगल प्रगट करे, एटले ते साचुं वचन

होय तोपण परने पीडाकारी थवाथी जूठुं जाणवुं, ते त्रीजो (दारे के०) स्वदारमंत्रभेद अतिचार जाणवो, तथा अण जाण्यां औषध मंत्रादिक बतावे अथवा कोइने कष्टमां पाडवाने अर्थे कूडी बुद्धि आपे, ते चोथो (मोसुवएसे के०) मृषा उपदेश अतिचार कहियें,तथा (अ के०) वली कूडा कागल लखवा, खोटां खत करवां तथा खरा अक्षर भांजी खोटा अक्षर लखवा, बीजानी मोहोर मुद्रा भांजवी, इत्यादिक मषीभेद सर्व एमां आवे छे, ते पांचमो (कूडलेहे के०) कूट लेख अतिचार कहीयें. (अ के०) अकार पादपूरणार्थे छे. ए पांच, (बीअवयस्सइयारे के०) बीजा व्रतना अतिचार, ते आश्रयी जे महारे अतिचार लाग्यो होय, ते (सव्वंदेसियं के०) सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं. ॥ १२ ॥

हवे त्रीजुं अणुव्रत कहे छे.

तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईउ ॥
आयरिअमप्पसत्थे,इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥

अर्थः—जे थकी राजानो दंम पामीयें, एवुं खातर खणी गंठडी छोडी, तालां,पडकूंची,पडी जडी वस्तु धणी जाणी राखवी,रखाववी,मार्गे जाताने लूंटवो,इत्यादिक (थूलग के०) मोटको, (परदव्वहरण के०) परनो द्रव्य ते धन हरवानी (विरईउ के०) विरति थकी (आयरिअ के०) अतिक्रमवुं उल्लंघवुं ते (तइएअणुव्वयंमि के०) त्रीजा अणुव्रतने विषे अतिचार थाय, ते अतिचार शुं होए थके थाय? तो के (इत्थ के०) एहीज तृतीयव्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादना प्रसंगे करीने (अप्पसत्थे के०) अप्रशस्त अशुभभाव हुए छते थाय॥१३॥ते अतिचारोने आगली गाथायें प्रगट कहे छे.

त्रीजा अणुव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ ॥
कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १४ ॥

अर्थः—(तेन के०) चोर तेनी (आहड के०) आहृत एटले हरण करेली अर्थात् चोरेली वस्तु, तेने लेवी एटले चोरनी आणेली केशर कस्तूरीआदिक बहुमूल्य वस्तु तेने सोंघी जाणी लीए, ते प्रथम स्तेनाहृत अतिचार

जाणवो. बीजो (प्पउंगे के०) चोरने खरचादिक संबल-सहाय आपवुं, सखाइ मेलवी आपवो, चोरीनी प्रेरणा करवी, ते बीजो प्रयोगातिचार जाणवो, तथा त्रीजुं (तप्पडिरूवे के०) तत्प्रतिरूप वस्तु करीने वेचवी एटले खोटी वस्तुने खरी वस्तुने रूपें करी, खरीने नावें वेचवी तथा वस्तुमां नेल संनेल करवो, एटले खरा मोतीमां खोटां मोती, सोनामां त्रांबुं, केशरमां कसुंबो, कस्तुरीमां मेल, घृतमां तेल, गहूंना लोटमां जुवारनो लोट, गोलमां राख, अर्द्ध जूनां वस्त्रने निखरावी, रंगावी, तेने नवां करी वेचवां अथवा कारमी माटी एवी जे सिंदूर,कपूर,अफिणादिक वस्तु होय तेने खराने मूलें वेचवी, सूत्र, कपासादिक पाणीयें नींजवीने वेचवा. लविंग, जायफलादिक मांहे दूधनुं पोतुं देवुं,इत्यादिक तत्प्रतिरूप अतिचार जाणवो, तथा चौथुं (विरुद्धगमणे के०) विरुद्धगमन ते दाण चोरी प्रमुख राजविरुद्ध आचरवुं, जेथी राजा दंम लीए, बंदीखाने नाखे, ते विरुद्धगमन अतिचार जाणवो. पांचमो (कूडतुलकूडमाणे के०) कूडां तोला, अने कूडां मापां राखे, एटले अधिका उंगां काटलां, वाट तथा तोलां, त्राजुआं, पाली. माणां, गजादिकनुं राखवुं, त्यां अधिकें लेवुं अने उंबे देवुं, ए कूडतुल कूडमान अतिचार जाणवो. अहीं यकार समुच्चायार्थें बे. ए त्रीजा व्रतना पांच अतिचार, ते आश्रयी जे महारे अतिचार लाग्यो होय. (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं बुं निंडं बुं ॥१४॥

हवे चोथुं अणुव्रत कहे बे.

चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईउ ॥
आयरिअमप्पसत्थे, इब पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥

अर्थः—(निच्चं के०) नित्य सदैव निरंतर, (परदार के०) परनी बीजानी दार एटले स्त्री तेनी साथें, (गमण के०) गमन करवानी एटलें कामजोग जोगववानी (विरईउ के०) विरति, ते थकी (आयरिय के०) जे अतिक्रमवुं उलंघवुं ते, (चउत्थेअणुव्वयंमि के०) चोथा अणुव्रतने विषे अतिचार जाणवो, ते अतिचार शुं हुए बते थाय? (इब के०) एहीज परस्त्रीगमनत्यागरूप चोथा अणुव्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादने प्रसंगें करी, (अप्पसत्थे के०) अप्रशस्त अशुजनाव हुए बते

थाय, अथवा परस्त्री सेववानी व्रती प्रत्यें जे (आयरिअं के०) अतिचार आ चर्यो होय, सेव्यो होय, ते आगली गाथामां नाम लइने पडिक्कमीश ॥ १५ ॥

॥ चोथा अणुव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥
चउछ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १६ ॥

अर्थः—प्रथम (अपरिग्गहिया के०) अपरिगृहीता एटले जेने बीजा कोइयें ग्रहण करेली न होय, परणेली न होय, ते कुमारिका, अथवा जेनो धणी मृत्यु पाम्यो होय, ते विधवा, तेनी साथें मैथुन सेववुं, तेमज श्राविका पण कुंआरा अथवा रांमेला पुरुषनी वांछा करे, तो तेने पण अतिचार लागे. बीजो (इत्तर के०) इत्वर ते कोइएक पुरुषें वेश्यादिकने स्त्रीने स्थानके राखेली होय, तेनी साथें मैथुन सेववुं, तेमज स्त्री पोतानी शोक्यनो दिवस होय तेनुं निवारण करी भर्त्तारने सेवे, तेने बीजो अतिचार लागे. त्रीजुं (अणंग के०) कामक्रीडा, ते जेम के, परस्त्रीनी साथें हास्य, कुतूहल करवां तथा तेनुं कुच मर्दन, मुखचुंबन, उष्ठदशन आलिंगनादिक करवुं, कंदर्पना चोराशी आसन सेववां, पुरुषचिन्ह टाली साथलें अंगुष्ठादिके करी मैथुन सेववुं, ते त्रीजो अतिचार. चोथो (वीवाह के०) विवाहकरण ते पोतानां छोरु टालीने यश लेवाने अर्थें परना विवाह, सगाइ, लगन करवां, करावववां, कंन्यादान देवुं, देवरावववुं, नात्रुं जोडवुं. पांचमुं (तिव्वअणुरागे के०) कामभोगने विषे तीव्र अनुराग करवो, अत्यंत अभिलाषनुं करवुं, कामभोगने अर्थें दूध, दहिं, घृतादिक, बंग,त्रांबुं, फलाद प्रमुख धातु तथा अनेक औषधीपाक मजून रसादिक काम दीपाववानी वस्तु खावी, वापरवी. ए पांच. (चउछव यस्सइयारे के०) चोथा व्रतना अतिचार, ते आश्रयी जे महारे अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निंडुं छुं ॥ १६ ॥

हवे पांचमुं अणुव्रत कहे छे.

इत्तो अणुव्वए पं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥
परिमाणपरिछेए, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥

अर्थः—(इत्तो के०) ए चोथा व्रत कह्या उपरांत स्थूलपरिग्रहपरि

माण नामें पांचमुं अणुव्रत कहियें ठेयें. (इअ के०) ए परिग्रहपरिमाणव्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादने प्रसंगें करीने, (अप्पसत्थंमि के०) अप्रशस्त अशुन्नजाव थये ठते, (परिमाणपरिच्छेए के०) परिग्रहना परिमाण प्रत्यें परिच्छेद करे ठते एटले उल्लंघन करवाथकी (पंचमंमिअणुवए के०) धनधान्यादिक नवविध परिग्रहना परिमाणरूप पांचमा अणुव्रतने विषे, जे अतिचार (आयरिअ के०) आचर्यो होय, एटले लगाड्यो होय, ते आगली गाथामां पडिक्कमीश ॥ १७ ॥

धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥
डुपए चनप्पयंमि, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ १८ ॥

अर्थः—प्रथम (धण के०) चार प्रकारनां धन ठे, तेमां एक गणवारूप धन, ते पूगी, नालीएर प्रमुख जे गणीने वेचाय ते. बीजुं धरिम एटले तोलवारूप धन, ते गोल, खांम, प्रमुख तोलीने वेचाय, ते जाणवुं. त्रीजुं गजें तथा पालीयें करी मापीने वेचाय, ते मापवारूप धन ते कापड, जमीन, तेल, दूध, घृत, प्रमुख. चोथुं परीक्षा करीने जे लेवाय, वेचाय, ते रूपुं, नाणुं, धन, रत्नादिक, माणिक्य, मोती प्रमुख जाणवां. ए चार प्रकारें धन अने (धन्न के०) धान्य ते गोधूम, चोखा, अडद प्रमुख जाणवां. ए बेहुना करेला परिमाणथकी उल्लंघवुं एटले नियम उपरांत थयुं जाणीने ज्यां सुधी आगलुं वेचाय नहीं, त्यां सुधी बीजाने घेर रखावे अथवा संचकार आपी मूके, कोग अथवा मूडानुं परिमाण कीधुं होय तो ते न्हानाने बदले महोटा बंधावे, ते प्रथम धनधान्यपरिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो. बीजो(खित्त के०)क्षेत्र, ते हलें खेडी नूमि,ते क्षेत्र,ते त्रण प्रकारनुं ठे. एक अरहट्टने पाणीयें नीपजे, ते सेतुक्षेत्र, बीजुं वरसादने पाणीयें निपजे, ते केतुक्षेत्र,त्रीजुं जे बेहुना पाणीयेंथी नीपजें,ते उन्नयक्षेत्र जाणवुं. ए त्रण प्रकारनां क्षेत्र जाणवां. तथा (वत्थू के०) वास्तु ते घर, हाट, वखारप्रमुखनी नूमि, ते पण त्रणप्रकारें ठे. एक तो जे जमीन खोदीने नीचें नोंयरादिक करियें, ते खातनूमि, बीजी मालियादिक जे उंचां चडावीयें, ते उच्छ्रित नूमि, त्रीजी ज्यां खणवुं, चणवुं, बेहु वानां करीयें एटले नोंयरुं पण करियें अने उपर माल पण चणावीयें. तथा ग्राम नगरादिक पण एमां आ

वे, ते खातोत्थित भूमि जाणवी. ए बेहुना परिमाणथी उल्लंघवुं, ते आवी रीतें के, एक क्षेत्र मोकलुं होय अने बीजुं लेवरावे, तेवारें नियम भंगना भयथी पूर्वेला क्षेत्रनी वाड भांगीने बन्नेनुं एक क्षेत्र करी मूके; तथा घर, हाट, व खार, प्रमुख अधिका थतां देखीने वचमांनी भींत तथा मोभ पाडीने एक करी मूके, ए क्षेत्र वास्तुपरिमाणातिक्रम बीजो अतिचार जाणवो, त्रीजुं (रुप्प के०) रूपुं, (सुवन्ने के०) सोनुं, ए बेहुना परिमाणथी उल्लंघवुं एटले रूपुं, सोनुं, अधिक थतुं देखीने भार्यादिकना नाम उपर करी मूके ते रुप्प सुवन्नपरिमाणातिक्रम नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. (अ के०) वली (कुविअपरिमाणे के०) कुपित ते आल कचोला प्रमुख एटले सोनुं, रूपुं, टालीने बाकी समस्त धातुना त्रांबडा, थाली, कलशीआ, वाटका, चरू, खाटला, पाटला प्रमुख समस्त घरवखरी जे होय ते, ते सर्वेने नियम उ परांत अधिक थतां देखीने भांगी नखावी महोटां करीने संख्यायें तेटलांज राखे, ते कुवियपरिमाणातिक्रम चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो (दुपए के०) द्विपद ते गाडी, दास, दासी, रांधणी, वाणोतर प्रमुख अने (चउप्पयं मि के०) चतुष्पद ते गाय, घोडा, भेंश प्रमुख जाणवां. ए बेहुना परिमा णथी उल्लंघवुं, एटले नियम उपरांत थता जाणी गर्भग्रहण घणुं मोहोडुं करावे, तथा वेचे ते पांचमो द्विपदचतुःपदपरिमाणातिक्रम अतिचार जाण वो. ए पांचमा व्रतना पांच अतिचार ते आश्रयी जे महारे कोइ अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबंधि अतिचार प्रत्यें (प डिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं बुं, निंदुं बुं ॥ १८ ॥

हवे त्रण गुणव्रतमां प्रथम दिक्परिमाणव्रत कहे बे.

गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उर्ड्ढं अहे अ तिरिअं च ॥ वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९॥

अर्थः—(दिसासु के०) ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि अने पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ए चार दिशि तथा चार विदिशि, ए आठने तीर्छि दिशि कहियें, तेने विषे (गमणस्स के०) जावाना (परिमाणे के०) परिमाण एटले सो योजन अथवा तेथी न्यूनाधिक पर्यंत जावानुं परिमाण करेलुं होय, ए रूप प्रथम गुणव्रतने विषे (उ के०) तु शब्द थकी जे अतिचार लाग्यो होय, ते आ

गले निंदियें बैयें. प्रथम (उर्ड्ढ के०) ऊर्ध्वे उंची दिशिना परिमाण प्रत्यें उल्लंघवुं, बीजुं (अहेअ के०) अधो एटले नीचि दिशिना परिमाण प्रत्यें उल्लंघवुं, वली त्रीजुं (तिरियं के०) तिर्छिदिशिना परिमाण प्रत्यें अतिक्रमवुं,उल्लंघवुं अथवा नियमभंगना भयने लीधे वाणोतर प्रमुखने मोकलवो, चोथुं (वुड्डि के०) क्षेत्रनी वृद्धि एटले सर्व दिशिउना परिमाण शो, किंवा बशो योजन पर्यंत जावाना सरखा करेला छे, पछी कोइ कार्य पडे, तेवारें एक दिशियें कार्यविशेषें पच्चाश योजन वधारवां, बीजी दिशियें पच्चाश योजन घटाडवा, ते चोथो क्षेत्रवृद्धिनामा अतिचार जाणवो. पांचमो (सइ अंतरद्धा के०) स्मृत्यंतर्द्धा ते मार्गमांहे स्मृतिनो भ्रंश थाय एटले संदेहकारी एक विचार उपजे के,शुं आ दिशि महारे सो योजन मोकली राखेली छे? के पच्चाश योजन मोकली राखेली छे ? एवी शंका छते पच्चाश योजन उपरांत जावुं. ते पांचमो अतिचार अने सो योजन उपरांत जावुं ते अनाचार व्रतभंग जाणवो. ए पांचमो स्मृत्यंतर्द्धानामें अतिचार. (पढमंमिगुणव्वए के०) प्रथम गुणव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं ॥ १ए ॥

हवे बीजुं उपभोग परिभोग परिमाण गुणव्रत कहे छे.

मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंध मल्ले अ॥
उवभोगपरीभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥

अर्थः—जे वस्तु उप एटले एकवार सेवाय तथा मुखादिकमां शरीरमां प्रवेश कराय एवी वस्तु, जेम के खान, पान, फूल, विलेपन प्रमुख जे वस्तु तेनो भोग ते उपभोग. तथा परि एटलें बाहिरथी वारंवार सेवियें, ते परिभोग वस्तु. ते वस्त्र, आभरण, भवन, स्त्री प्रमुख जाणवां ए उपभोग परिभोग परिमाणनामा बीजुं गुणव्रत बे प्रकारें छे. एक भोजन थकी, बीजुं कर्मथकी, तेना वीश अतिचारने प्रथम सामान्यपणे निंदियें बैयें.

(मज्जंमिअ के०) मदिरा, (मंसंमिअ के०) मांस, बे चकारथकी बीजापण अभक्ष्य द्रव्य ग्रहण करवां. जेवां के मधु, माखण, अनंतकाय प्रमुख. (पुप्फे के०) केरडां, मउडादिकनां फूल, (अ के०) चशब्दथकी कुंथुआदिक त्रस जीवें करीने सहित एवा नागरवेलीनां पान प्रमुख जाणवां. तथा (फलेअ

के०) वली जांबू, बीलां, पीलूडां, पीचु, बोर, पाकां करमदां, ए फल सर्व अ
नक्ष्य वस्तु छे, श्रावकने खावा पीवा योग्य नथी. ए वस्तु खाधामां वपरा
य छे, ते कही, एटले अंतर्नोगवस्तु सूचवी. हवे बाहिरना नोगमां आवे ते
वस्तु कहे छे. (गंध के०) बरास, अतर, अबीर, कपूर, अगर, तगर, धूपादि
क जाणवां. (मल्लेअ के०) फूलादिकनी माला, ते केतकी चंपकादिकनां फूल
नी जाणवी. तथा च शब्दथकी अन्य सर्व नोग्य वस्तु, जेवी के, सचित्तद्रव्य
विगयादिक वस्तु पण लेवी. ए सर्व वस्तु, करेला प्रमाणथकी विपरीत पणे
अनुचित पणे आसेवन करते थके एटले नोगवते थके (उवनोगपरीनोगे
के०) उपनोगपरिनोग नामें (बीअंमि गुणव्वए के०) बीजा गुणव्रतने विषे
जे अतिचार लाग्यो होय, ते सर्व प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदु छुं ॥ २० ॥

हवे विशेषथी ए व्रतना नोग उपनोग आश्रयी पांच अने कर्म आश्र
यी पंदर, मलीने वीश अतिचार छे, ते पडिक्कमियें छैयें. त्यां प्रायः श्रावक
सचित्त वस्तुनो तो त्यागीज होय माटे तेनी अपेक्षायें करी प्रथम नोजन
आश्रयी अतिचारपंचक पडिक्कमियें छैयें.

सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥
तुच्छोसहि नरकणया, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २१ ॥

अर्थः–(सच्चित्ते के०) सर्व समस्त सचित्तनो त्याग करीने अथवा स
चित्तनुं परिमाण कर्युं होय, तेथी उपरांत प्रमादने वशें सचित्त वस्तुनो
आहार करवो, ते प्रथम सचित्ताहारनामें अतिचार जाणवो. बीजो (पडि
बद्धे के०) सचित्त प्रतिबद्ध ते सचित्तनी सार्थे बांधेली वस्तु एटले जोडें
लागेलो गुंदर, छलिया सहित रायण अने गोटली सहित आंबां, तेनुं मुखमां
घालवुं, जेम वृक्षमांथी उखेडीने गुंदरने अचित्तनी बुद्धियें वापरे, अथवा
आंबाने गोटली सहित अने रायणने छलिया सहित मुखमां घाले, ते स
चित्तप्रतिबद्धनामें बीजो अतिचार जाणवो, तथा त्रीजो (अपोल के०)
अपकाहार एटले जेने अग्निनो संस्कार कीधो न होय, एवी सचित्त मिश्रि
त काची वस्तु, जेवी के, तुरतनो पीशेलो लोट, अणचाल्यो लोट इत्या
दिक अपोल जाणवी. ए विषे सिद्धांतमां कह्युं छे के, अणचाल्यो लोट, श्रा
वण अने नादरवा महीनामां पांच दिवस मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय.

आश्विनमासें चार दिवस मिश्र रहे. कार्तिक, मार्गशीर्ष अने पौष ए त्रण मासें त्रण दिवस मिश्र रहे, तथा माहा अने फाल्गुनें पांच प्रहर मिश्र रहे, चैत्रे, वैशाखे चार प्रहर मिश्र रहे. ज्येष्ठ तथा आषाढें त्रण प्रहर मिश्र रहे, इत्यादिक मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय. ते काचो लोट, तेने पीशेलो जाणीने अचित्त बुद्धियें लीये. इत्यादिक सचित्त शंकित वस्तुनुं नक्षण करवुं, ते अपक्वौषधिनक्षणनामें त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो (डुप्पोलियंच के०) डुःपक्काहार ते कांइक काचा अने कांइक पाका एवा उंला, उंबी, पोंक, पापडी प्रमुख वस्तु, तेनो (आहारे के०) आहार करवो नक्षण करवुं, ते डुःपक्वौषधिनक्षणनामें चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो (तुछोसहिनरकणया के०) तुछौषधिनक्षण ते मग प्रमुखनी कोमल फली तथा बोर प्रमुख तुछ असार वस्तु जे घणी खाधाथी पण तृप्ति न थाय, एवी जे औषधि कुलीफलीरूप तेने अचित्त करी वापरे, तो तेनें तुछौषधिनक्षण नामें पांचमो अतिचार लागे, जेने सचित्त वस्तुखावानो नियम होय, तेने ए पांच अतिचार संनवे. ए बीजा गुणव्रतना नोजन विषयिक पांच अतिचार, ते आश्रयी जे म्हारे अतिचार लाग्यो होय, (सवंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं, प्रतिक्रमुं छुं निंदुं छुं.

हवे जे गृहस्थ आजीविकाना हेतुयें कुव्यापार करे, तेने पण नोगोपनोगज कहियें. ते इंगालादिक पांच कर्म, दंतादिक पांच वाणिज्य, अने यंत्रादिक पांच सामान्य, एवं पंदर कर्मादान छे, ते अत्यंत घणा कर्मो उपार्जन करवानां कारण छे, तेमाटे एने श्रावकें जाणवां, पण आचरवां नहीं. ते पन्नर कर्मादान आश्रयीने पंदर अतिचार बे गाथायें करी कहे छे.

इंगाली वण साडी, नाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥
वाणिज्जं चेव य दं,त लक्ख रस केस विस विसयं ॥ २२ ॥

अर्थः—प्रथम काष्ठ बाली अंगारा करी वेचवा तथा सोनार, कुंनार, लोहार, नाडनुंजा, कंसारादिकनां अग्निसंबंधि जे कर्म, ते (इंगाली के०) अंगारकर्म.

बीजुं वनस्पतिनुं निपजावुं, छेदवुं, नेदवुं, छेद्यां अण छेद्यां आखां वन वेचवां, पान, फल, फूल, लीलां तृण, काष्ठ अने कंद वेचवां, वाडी, वनखंम करवा, आजीविका हेतुयें कण दलावे, पीसावे, ते बीजुं (वण के०) वनकर्म.

त्रीजुं गामां प्रमुख बनावी बनावीने वेचे, तथा गाम्मांना अवयव धोंसरी धोंसरा समोल प्रमुख, घडावीने वेचे, वेचावे, ते (साडी के०) शकटकर्म.

चोथुं गाम्मां, बलद ऊंट, नेश, खर, वेसर, घोडा, घर, हाट प्रमुख राखीने नाडे आपवानुं आजीविकानिमित्तें करे, ते (नाडी के०) नाटिक कर्म.

पांचमुं जव, चणा, गोधूम, मग, अडद, प्रमुख धान्यनो साथवो करवो, तथा तेनी दाल करवी, तथा शालि प्रमुखना चोखा करवा, तथा पृथिवी काय प्रमुखनो फोड, तोड करवो एटले कूवा, वापी, तलाव प्रमुख खणवा, खणाववा, ऊंम लोकोनुं, तथा शिलाटनुं काम करवुं,हल दंतालीयें करी नूमि खेडवी, खाण खणाववी, टांकुं खणाववुं, कृषी करवी, इत्यादिक जेटलो पृथिवीनो आरंन, ते सर्व (फोडी के०) स्फोटिक कर्म जाणवुं. (कम्मं के०) ए पांच सामान्य कर्म, ते प्रत्यें श्रावक (सुवज्झए के०) अत्यंत पणें वर्ज्जे.

हवे पांच कुवाणिज्य कहे ठे. (च के०) वली (एव के०) निश्चें, अथवा चेवय ए शब्द पादपूरणार्थ ठे. त्यां प्रथम दांत, नख, चर्म, शिंगडादिकना व्यापार एटले हाथीदांत, चमरीगायना वालनां चमर, मत्स्यादिकना नख, शंख, कोमा, चीड, पोइसा, कस्तूरी, मुक्ताफल, तथा वाघ, चितरा अने मृगादिकनां चर्म, हिंग, हांसरू प्रमुख रोम, इत्यादिक त्रस जीवोना अंगोनुं वाणिज्य जेमां आवे ठे, तेने जो आगरे जइ वोहोरे, तो तेमां घणो दोष लागे, ए सर्वने (दंत के०) दंतकुवाणिज्य कहियें.

बीजुं लाख, धावडीनां फूल, कसुंबो, हरताल, मणशिल, गुली, महुडा, टंकणक्षारादिकनो व्यापार, जेथकी बाहिरना जीवोनुं मृत्यु थाय ते सर्व (लख के०) लाख कुवाणिज्य जाणवुं.

त्रीजुं विगय महाविगय एटले घृत, तेल, गोल, मध, दुध, दहीं प्रमुखनो व्यापार, ते सर्व (रस के०) रसकुवाणिज्य जाणवुं.

चोथुं द्विपद ते मोर, सूडा, तथा मनुष्य प्रमुखना व्यापार अने चतुष्पद ते गाय, नेंश, बलद, घोडा, ठाली प्रमुखनो व्यापार ते सर्व, (केस के०) केशकुवाणिज्य जाणवुं.

पांचमुं अफीण, सोमल, शिंगीउं, वत्सनाग, साबू, हरताल, नांग, पोस्त इत्यादिक तथा ठूरी, कटारी, धनुष्य, बाण, खड्ग, कूहाडादिक शस्त्र, अने सन्नाह पाखर प्रमुख जेना बलें करी संग्राममध्यें घणा जीवोनो संहार

थाय, तथा हल, कोदाल, इत्यादिक सर्व कुवस्तुनो जे व्यापार, ते (विस विसयं के०) विस केतां विष तथा शस्त्रादिकनो विसय एटले विषय छे जेने विषे ते विसविसय कहियें ए विसविसय, (वाणिज्जं के०) वाणिज्य जाणवुं. ए पांच कुवाणिज्यने श्रावकें वर्जवां ॥ २१ ॥

एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥
सर दह तलाय सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥ २२ ॥

अर्थः—हवे पांच सामान्य कर्म कहे छे. (एवं के०) एम (खु के०) निश्चें शिला, लोढी, उखल, मूशल, घंटी, चरखो रेंटीयो प्रमुख अनेक जातिनां यंत्र करीने वेचे, ते सर्व यंत्रकर्म तथा पिल्लण. ते शेलडी, तिल, सरशव, एरंडादिकने पीलवानां यंत्र, जेम के कोल्हुं, घाणी प्रमुख. ते सर्वथी लागे जे कर्म, तेने प्रथम (जंतपिल्लण के०) यंत्रपीलन कर्म कहियें,

बीजुं बालकनां कान, नाक, वींधवां, स्त्रीफूल विध्वंस करवो, नपुंसक करवो, उंटादिकने आंकवो, घोडा बलदनां नाक वींधाववां, आंक पडाववा, समराववा, कर्ण, कंबल, पूछडां छेदाववां, तेमज इजारे गाम लइने आकरा कर करवा, कोटवालपणुं करवुं, इत्यादिक जेटला निर्दयपणानां काम छे, ते सर्व, (निल्लंछणं के०) निर्लंछन कर्म जाणवुं. (च के०) वली

त्रीजुं धर्मनी बुद्धियें अथवा मोकली नूमिने विषे सुखथी संग्राम थाय अथवा स्वनावें अथवा तृणादिक वाव्या पछी नवा अंकूरा उगे, तो गायो चरे, इत्यादिक हेतुथी वन अने झांडी प्रमुखने जे (दव के०) अग्निनुं (दाण के०) दान एटले आपवुं; अर्थात् दव लगाडवो, तथा कोइनें अग्निनुं देवुं. तेने दवदानकर्म कहियें.

चोथुं सरोवर खण्या विना जे जगामां जल रहे, तेवा ठामने (सर के०) सर कहियें तथा (दह के०) द्रह अने (तलाय के०) तलाव, ए सरोवर, द्रह, तलाव, तथा कूवा, वापी, इत्यादिक पाणीनां स्थानकोने (सोसं के०) शोषण करवुं, ए जलाशयना पाणी उलछाववाथी अनेक जलचर पंचेंद्रिय जीवनी हिंसा थाय, तथा नील फूल वगेरें घणा जीवोनो विनाश थाय, तेने सरदहतलावसोसणकर्म कहियें.

पांचमुं (च के०) वली (असईपोसं के०) असतीपोषणकर्म, ते अ सती कहियें कुतरां, बिल्लाडां, मोर, कूकडां, सूवा, मेनां, सींचाणा, सू डा, सालही प्रमुख हिंसक जीवोनुं पोषण करवुं, ते असतीपोषणकर्म क हियें. अथवा असती एटले कुसती, कुशीलिणी व्यभिचारिणी स्त्रीनुं पो षण करवुं. ते पण असतीपोषणकर्म कहियें, अथवा दुष्ट पुत्रादिक, दुष्ट दास, दासीनुं भरण पोषण करवुं तथा कसाइ, माछी, वाघरी, तेलीनी साथें व्यापार करवो, इत्यादिक जे अधर्मी जीवोनुं पोषणकरवुं, ते सर्व, असतीपोषणकर्म कहियें. (कम्म के०) ए पांच सामान्य कर्म कह्यां, अहिं एवं खु शब्द ते गाथाना अंत सुधीना दरेक पदमां लेवुं. जेम के एवं एटले ए प्रकारनां खर कर्मो जे गुप्तिपालनादिक छे, तेने खु एटले निश्चयें करी श्रावकें (वज्जिज्जा के०) वर्जवां, ए पंदरे अतिचार मांहेलो जे महा रे अतिचार लाग्यो होय, ते सर्व प्रत्यें हुं निंडु बुं ॥ २३ ॥

हवे अनर्थदंमविरमणनामा त्रीजुं गुणव्रत कहे छे. जेथकी निरर्थक आत्मा दंमाय, पाप लागे, तेने अनर्थदंम कहियें. ते चार प्रकारें छे. तेमां प्रथम तो जे आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यावबुं, ते अपध्यानाचरित अन र्थदंम कहियें. एटले बेठां बेठां मनमां चिंतवना करवी, जे वैरीने बांधुं, मारी नाखुं अने राजा थाउं, तो वैरीनां गाम बाली नाखुं, विद्याधर थाउं, तो स्वेछायें ज्यां भावे त्यां जाउं, मनमानती स्त्रीनी सार्थे विलास करुं, इत्यादिक जे माठुं ध्यान करवुं, ते अपध्यानाचरित अनर्थदंम कहियें.

बीजो प्रमादाचरितअनर्थदंम. ते पाप विकथा करवी, दूध, दहीं, छा श, घृत, तेल इत्यादिक वस्तुने ढांकवानुं आलस वरवुं, ते बीजो भेद.

त्रीजो हिंसप्रदानअनर्थदंम, ते घंटी, खल, मुशल, चाकू, छुरी प्रमुख पाप अधिकरण कोइने आपवां, ते हिंसप्रदानअनर्थदंम त्रीजो भेद.

चोथो पापकर्मोपदेश अनर्थदंम, ते न्हाउ, अग्नि जलावो, वस्त्र धोवो, खेती करो, करावो, वाछडाने समरावो, अमुकने कूटो, मारो, बांधो, इत्यादिक उपदेश देवा, ते चोथो भेद. ए चार प्रकारना अनर्थदंमथकी निवर्त्तवुं, तेने अनर्थदंमविरमणनामें त्रीजुं गुण व्रत कहियें. तिहां पो ताने तथा न्याती, गोती प्रमुखने अर्थें पाप करवुं, ते व्यवहारदृष्टियें अ

थैदंम छे, माटे अहींआं तेनो त्याग नथी ॥ २३ ॥ हवे ते त्रीजा गुणव्रत आश्रयी जे अतिचार लाग्या, ते त्रण गाथायें करी पडिक्कमियें बैयें.

सत्थग्गिमुसलजंतग, तणकठ्ठे मंत मूल भेसज्जे ॥
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २४ ॥

अर्थः—(सत्थ के०) शस्त्र, (अग्गि के०) अग्नि, (मुसल के०) मुशल, (जंतग के०) यंत्र ते घंटी प्रमुख, (तण के०) सावरणी प्रमुख, (कठ्ठे के०) काष्ठ लाकडी अरहट्टनी लाती प्रमुख, (मंत के०) मंत्र ते साप खीलवा प्रमुखना जाणवा, (मूल के०) नागदमणी प्रमुख जडी बूटी, तथा गर्नेशातन पातन प्रमुख जाणवा. (भेसज्जे के०) भैषज्य ते बे आदि वस्तुना मेलापथी जे वस्तु उपजे एटले गोली, चूर्ण, तंत्रविद्या इत्यादिक उपद्रवकारी वस्तु जाणवी. इत्यादिक वस्तु दाक्षिणता टाली बीजाने (दिन्ने के०) देवा थकी, एटले आपवाथकी, (दवाविए के०) पर पासें अपाववायकी (वा के०) अथवा बीजा आपनारने अनुमोदवायकी, जे अतिचार लाग्या होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें, (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निंदुं छुं ॥ २४ ॥

न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूवरसगंधे ॥
वत्थासणआभरणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २५ ॥

अर्थः—(न्हाण के०) स्नान ते अभ्यंगन करी तेल चोपडीने नाहियें त्यां अजयणायें जीवाकुल भूमिकायें स्नान करे अथवा अणगल पाणीयें, स्नान करे, (उवट्टण के०) उवटणुं ते उद्वर्त्तन जे पीठी प्रमुखें करी शरीरनुं उवटण करे, मेल उतारे, (वन्नग के०) वर्णक वस्तु, ते अबीर, गुलाल, अलतादिक, (विलेवणे के०) केसर, चंदन, कुंकुमादिक वगेरेनुं विलेपन जाणवुं. (सद्द के०) वंश वीणादिकना शब्द कौतुकें सांभलवा तथा प्रहर रात्रि उपरांत उंचे शब्दें बोलवुं, (रूव के०) स्त्री प्रमुखना रूप जोवां, वेश्यादिकनां नाटक जोवां, (रस के०) मधुर, अम्लादिक रस, (गंधे के०) वास, एटले सुगंध, ते कर्पूर, कस्तूरी प्रमुखना जाणवा (वत्थ के०) वस्त्र, (आसण के०) बेसवानां आसन, तेने संबंधें शय्या पण जाणवी. तथा

आसन एटले कामशास्त्र, कोक, वात्स्यायनादिक शीख्या होय अनेकविध विषयभोग संबंधी चोराशी आसन जाणवां, (आभरणे के०) आभरण ते भूषण, मुकुट, कुंमल, कंकण, मुद्रिकादिक तथा द्यूतक्रीडा, मद्यपान, जल क्रीडा, हींचवुं, इत्यादिक दुष्ट वानां करवां, जोवां, एम अनेक उपभोग परि भोग वस्तुउ आश्रयी अयतनाथी अणउपयोगथी जे कोइ महारे अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्क मे के०) हुं पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं. आ ठेकाणे शब्दादिक पांच विषय ग्रहण कस्या छे माटे तज्जातीय मद्यादि पांच प्रकारना प्रमादनुं पण ग्रहण करवुं ॥ २५ ॥

हवे ए व्रतना पांच अतिचार, प्रतिक्रमणाने माटे कहे छे.

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते ॥
दंमंमि अणठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥

अर्थः—(कंदप्पे के०) कंदर्प्प, ते कामभोगनी कथानुं करवुं, तथा एवुं हास्य कारी वचन बोलवुं, जे थकी कामविकार जागे, ते प्रथम अतिचार जाणवो, तथा (कुक्कुइए के०) कौकुच्च, ते भृकुटी, नेत्र, नाक, मुख, हाथ पादादिकनी एवी चेष्टा करें, के जे थकी लोकोने अत्यंत हास्य उत्पन्न थाय, एटले भांमनी पेरें शरीरादिकनी कुचेष्टायें करीने लोकोने अत्यंत हास्य उपजावुं, कोइना चाला पाडवा, ते बीजो अतिचार, तथा (मोहरि के०) मुखरीपणुं, ते विचा ररहित वाचालपणे घणुं बडबड करवुं, मकार चकारादिक अघटित व चन बोलवां, ते त्रीजो अतिचार जाणवो, तथा (अहिगरण के०) शस्त्र, अग्नि, मुशल, भीसा, लोढुं, घंटी प्रमुख अधिकरण, सज्ज करी राखवां, कोइ मागवा आवे तेने आपवां, तेमज अग्नि प्रमुख अधिकरणनी प्रथम प्रवृत्ति चलाववी, ते चोथो अतिचार जाणवो तथा (भोगअइरित्ते के०) उपभोग परिभोगनी वस्तु, ते अतिरिक्त एटले पोताना खप करतां पण अधिक राखवी एटले भोग वस्तु जे तेल, कंकोडी, खयल, पाणी प्रमुख छे ते अधिक राखे, जे देखीने बीजाने न्हावा प्रमुखनी वांछा उपजे, तेथी भोगादिक वस्तुनो दोष लागे अने उपभोग वस्तु, ते जो एक घरनो खप होय तो पण बे चार घर प्रमुख खप विना सामटां करावे, तेथी उपभोग वस्तुनो अधिक दोष लागे. ते पांचमो अतिचार. (दंमंमिअणठाए के०) ए अनर्थदंम विरमण नामें (तइयं

मिगुणव्वए के०) त्रीजा गुण व्रतने विषे पूर्वोक्त जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडुं बुं ॥ २६ ॥ इति गुणव्रतप्रतिक्रमणं ॥

हवे चार शिक्षाव्रत कहे ठे. त्यां प्रथम सामायिक नामक शिक्षाव्रत कहे ठे.

तिविहे डुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥
सामाइअ वितह कए, पढमे सिरकावए निंदे ॥ २७ ॥

अर्थः–(तिविहे के०) त्रिविधे एटले त्रण प्रकारें (डुप्पणिहाणे के०) डुःप्रणिधान ते डुष्टव्यापार एटले सावद्य व्यापार ठे, तेना त्रण अतिचार जाणवा. तेमध्यें प्रथम घर, हाट प्रमुख संबंधि जे सावद्य व्यापारनुं मनमां चिंतवन करवुं, ते प्रथम मनोडुःप्रणिधान अतिचार जाणवो. तथा कर्कश एटले कठोर, सावद्यजाषायें करी बोलवुं, ते बीजो वचनडुःप्रणिधान नामें अतिचार जाणवो. तथा अण उपयोगथी पापव्यापारमां कायाने प्रवर्त्तावर्वी, देखवा, पूंजवा विना बेसवुं, सूवुं, जींतनुं उंगिन करवुं, इत्यांदिक विपरीतपणे जे कायाने प्रवर्त्तावर्वी, ते कायडुःप्रणिधाननामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा (अणवठाणे के०) अनवस्थान, ते सामायिकनुं जघन्य बे घडी कालमान ठे तेटलो काल पूर्ण कस्या विना सामायिक पारवो, तथा आदररहितपणे सामायिक पारवो, तथा आदररहितपणे सामायिक करवो, ते चोथो अनवस्थानअतिचार जाणवो. (तहा के०) तथा (सइविहूणे के०) स्मृतिविहीन एटले निडादि प्रमादथकी सामायिक में कीधो के नथी कीधो ? एवुं उपयोगनुं शून्यपणुं ते पांचमो अतिचार. ए रीतें (सामाइअ के०) सामायिक प्रत्यें (वितहकए के०) वितथ एटले जूठो, कृते नाम कीधे थके (पढमेसिरकावए के०) प्रथम सामायिकनामें शिक्षाव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडुं बुं ॥ २७ ॥

आशंका–सामायिक लेइने पठी सर्वथा मननो संवर तो करी शकीयें नहीं, अने मनना कुव्यापारें एक तो कुव्यापारनुं पाप लागे, अने बीजुं सामायिकनो जंग थाय ठे, तेथी तेनुं फरी प्रायश्चित्त करवुं जोइयें माटे अविधिदोषने लीधे सामायिक करवाने बदले नहींज करवो तेज जलुं ठे ?

समाधानः–सामायिक तो अवश्य करवो, केम के सामायिक जे लेवाय

बे, ते डुविहं तिविहेणं ए जांगे लेवाय बे, ए जांगामां मन, वचन अने काया ए त्रणें करी सावद्य व्यापार करुं नही, तथा करावुं नही, ए ब नियम आवे बे, तो ते ब मध्यें कोइवारें कदापि एक नियम जंग थाय तो पण पांचतो अखंमित रहे बे. अने मनना कुव्यापारनुं पाप अल्प होय बे, ते पापथी तो 'मिछामि डुक्कडं' देवाथी बूटीयें बैयें. माटे एवां अल्प कारणथी जो सामायिक करवानो चालज बंध करीयें, तो आ कालमां चारित्रीउ कोइ पण नथी. एवुंज थइ जाय, तेमाटे सामायिक अवश्य लेवो अने ते सामायिक लेइने पढी जेम बने तेम शुद्ध पालवानो खप करवो, कारण के हमणांना कालनी दीक्षा अने सामायिक प्रमुख जे बे, ते सर्व अन्यास मात्रें बे माटे अन्यास करतां थकां कोइ वखतें शुद्ध चारित्रनो लाज पण थशे.

तेथी सामायिकनो अत्यंताजाव एटले निर्मूल पणुं करवुं योग्य नथी, केमके सर्व विरति सामायिकने विषे पण तेमज थाय बे, तेमां पण गुप्त्यादि जंगमां मिथ्या डुष्कृत प्रायश्चित्त कहेलुं बे तेथी सामायिक न करवो ते योग्य नथी. वली पण सातिचार जे अनुष्ठान बे, ते पण अन्यास करतां कालें करीने निरतिचार अनुष्ठान थाय बे, एम पूर्वाचार्यो कहे बे. वली कहेलुं बे के, अन्यास जे बे, ते मनुष्यादिकना महोटा जन्ममां पबवाडे चालनारो थाय बे माटे शुद्ध बे. तथा बाह्य लोको पण कहे बे के, अन्यास जे बे ते कर्मना कुशलपणाने करे बे माटे निरंतर सामायिक करवो तेज योग्य बे. जेम ग्रहण करवाना पात्रमां एक वखत पडेलो उदकबिंडु महत्ताने पामतो नथी, तेम मनना सदोषपणायें करी सामायिक करवो ए पण अत्यंत दोषनी महत्ताने पामतो नथी कारण के तेनी मिछामि डुक्कडथी शुद्धि बे माटे अविधि करवानें बदले सामायिक नज करवो एवुं बोलवुं ते असूयावचनज बे. कहेलुं बे के, "अविहिकया वरमकयं, उस्सूअवयणं जणंति समणुन्नं ॥ पायछित्तं जम्हा, अकए लहुअं कए गुरुअं ॥१॥" माटे धर्मानुष्ठान निरंतर करवुं अने करनारें सर्व शक्तियें करी विधिमां यत्न राखवो. एज श्रद्धालुनुं लक्षण बे, वली कृषी, वाणिज्य, सेवादिक, जोजन, शयन, आसन, गमन, तथा वचनादिक ते सर्व पण ड्रव्य, क्षेत्र, कालादिक विधियें करीने पूर्ण फलवालां थाय बे. अन्यथा थतां नथी, माटे समस्त पुण्यक्रियाना प्रांतमां अविधि आशातना निमित्त मिथ्याडुष्कृत देवुं किंबहुना.

हवे बीजा देशावकाशिक शिक्षाव्रतना अतिचार कहे छे.

आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥

अर्थः—प्रथम जे भूमिनां परिमाण कीधां छे, ते भूमिनी उपरांत बाहिरनी भूमिथी कोइ जनार माणसनी हस्तक वस्तु पदार्थने (आणवणे के०) आनयन, एटले अणाववुं, मगाववुं ते, आनयननामा प्रथम अतिचार जाणवो, तथा परिमाण उपरांतनी भूमिने विषे दास प्रमुखने मोकलवो, क्रयविक्रयनो आदेश देवो, ते बीजो (पेसवणे के०) प्रेषवणनामा अतिचार जाणवो, तथा कोइ कार्य उपने थके नीमेली भूमिकाथी बाहेर रह्यो जे मनुष्य, तेने खुंखारादिक शब्दें करी पोतापणुं जणाववुं, ते त्रीजो (सद्दे के०) शब्दानुपाति नामा अतिचार जाणावो. तथा उंचो थइ पोतानुं रूप देखाडीने बोल्या विना पण जेने बोलाववुं होय तेनी दृष्टियें पडे. तेना दर्शनथकी तेना समीपमां जाय, ते चोथो (रूवेअ के०) रूपानुपाति नामा अतिचार जाणवो. तथा नीमेली भूमिकाथी बाहिर रहेला पुरुषने कांकरादिक नाखी पोतापणुं जणाववुं, ते पांचमो (पुग्गलक्खेवे के०) पुद्गलोत्क्षेप नामा अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचारमांहेथी (देसावगासिअंमि के०) देशावकाशिकनामें (बीएसिक्खावए के०) बीजा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं. अहींआं ए व्रतने विषे देशथकी अवकाश छे, एटले जे व्रतने विषे उपभोग परिभोग वस्तुनी छूट छे, तेने देशावकाशिक कहियें, तथा घणाथी थोडुं करवुं तेने पण देशावकाशिक कहीयें ॥ २८ ॥

हवे त्रीजा पौषधोपवास शिक्षाव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए ॥
पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥

अर्थः—(संथार के०) शय्या संथार, (उच्चार के०) वडीनीति अने लघुनीतिना थंडिल, एनो (विही के०) विधि जे प्रकार, तेने विषे (पमाय के०) जे प्रमाद करवो, ते अतिचारचउक्क जाणवो, ते अतिचारचउक्क

ने विवरीने कहे छे. त्यां शय्या संथाराने न पडिलेहे अथवा प्रतिलेखन करे, तो कांइक करे, कांइक न करे, ते प्रथम अप्पडिलेहिअ दुप्पडिलेहिअ सद्यासंथारे नामा अतिचार जाणवो, तथा शय्या संथाराने न प्रमार्जवुं अने प्रमार्जवुं तो कांइक प्रमार्जवुं, कांइक न प्रमार्जवुं ते बीजो अप्पमज्जिअदुप्पमज्जिअसद्यासंथारे नामा अतिचार जाणवो, तथा वडीनीति अने लघुनीति, परठववानी जे भूमि, ते भूमिने न पडिलेहवी अथवा पडिलेहवी, तो कांइक पडिलेहवी अने कांइक न पडिलेहवी, ते त्रीजो अप्पडिलेहिअ दुप्पडिलेहिअ उच्चारपासवणभूमि नामा अतिचार जाणवो. तेमज ते भूमिने न प्रमार्जवी, अथवा प्रमार्जवी तो कांइक प्रमार्जवी कांइक न प्रमार्जवी, ते चोथो अप्पमज्जिअ दुप्पमज्जिअ उच्चारपासवणभूमिनामा अतिचार जाणवो. ए चारे अतिचार ते शय्या संथारो तथा लघुनीति, वडी नीतिनां ठंमिलने दृष्टियें करी जूए नहीं, तेमज चरवला तथा दंमासणादिकें करी पूंजे, प्रमार्जे नहीं अथवा शून्यचित्तें जूए, अने पूंजे ते संबंधी ए अतिचारचतुष्क कह्युं. (तहचेव के०) तथैव एटले तेमज वली निश्चें (भोअणाभोए के०) भोजननो आभोग एटले आभोग करवो चिंतवन करवुं, अर्थात् पोसह लीधा पछी भोजनादिकनी चिंता करे, एटले क्यारें पोसह पूर्ण थशे अने क्यारें पारणुं करशुं? अथवा पारणे अमुक भोजन करशुं? एवी चिंतवणा करवी, ते पांचमो भोअणाभोए नामा अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचारोयें करीने (पोसहविहिविवरीए के०) पोसह व्रतनो विधि जे प्रकार ते विपरीत करे थके, (तइएसिरकावए के०) पौषधोपवास नामा त्रीजा शिक्षाव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय, तेने (निंदे के०) हुं निंदु छुं ॥ २ए ॥

हवे चोथा अतिथिसंविभाग शिक्षाव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

सच्चित्ते निरिकवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥
कालाइक्कम दाणे, चउछे सिरकावए निंदे ॥ ३० ॥

अर्थः-(सच्चित्ते के०) साधुने देवा योग्य जे भक्तादिक तेने पृथिव्यादि जे सचित्त, ते सचित्तनी उपर पूर्वोक्त प्राशुक निर्दोष वस्तुनुं (निरिकवणे के०) निक्षेपवुं मूकवुं ते सचित्तनिक्षेपण नामा प्रथम अतिचार जाणवो. तथा

प्राशुक निर्दोष देवा योग्य वस्तुने सचित्त ते कंद, पत्र, पुष्पादि पदार्थें करी (पिहिणे के०) ढांकवी ते सचित्तपिहिण नामा बीजो अतिचार जाणवों, तथा (ववएस के०) व्यपदेश करवो एटले पोतानी वस्तुने अण देवानी बुद्धियें पारकी करीने कहेवी, तथा देवानी बुद्धियें पारकी वस्तुने पोतानी करीने कहेवी, एवी रीतें व्यपदेश करवो ते व्यपदेशनामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा (मच्छरे के०) मत्सर एटले कोप लावें दान आपवुं तथा पारकुं सारुं दान न जोइ शकवुं परनी ईर्ष्या करतां मान धरतां मुनिने दान आपवुं, ते मत्सरनामा चोथो अतिचार जाणवो तथा (चेव के०) निश्चें (कालाइक्कमदाणे के०) मुनिराजनी गोचरीनो काल अतिक्रमी उल्लंघीने मुनिराजने तेडे अने मनमां जाणे जे साधु हमणां वोहोरशे पण नहीं अने महारो नियम लंग पण थाशे नहीं? ते पांचमो कालातिक्रमदान नामें अतिचार जाणवो. ए अतिथिसंविलागनामें (चउत्थेसिरकावए के०) चोथा शिक्षाव्रतने विषे अल्प देवानी बुद्धियें तथा अणदेवानी बुद्धियें करीने ए मांहेला जे अतिचार लाग्या होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडुं बुं ॥ ३० ॥

हवे रागादिकें करी दान दीधुं तेना प्रतिक्रमणने माटे कहे बे.

सुहिएसु अ डुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ॥
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥

अर्थः-(सुहिएसु (के०) सुष्ठु नाम रूडी रीतें हित बे ज्ञानादित्रय एटले सम्यक् ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनुं जेमने ते सुहित कहियें ते सुहित एवा, (अ के०) वली (डुहिएसु के०) डुःखित ते रोगें करीने पीडित तपें करीने डुर्बल, तुब. जीर्ण, उपधियें करीने डुःखिया एवा, (अस्संजएसु के०) अहीं (अ के०) नथी (स्वं के०) पोताने बंदें (यत के०) यत्न एटले उद्यम करवो विचरवुं जेने एटले पोतानी स्वेच्छायें विचरनारा नहीं, परंतु गुरुनी आज्ञाने विषे विचरनारा एवा सुसाधु, ते उपर (रागेण के०) पुत्रादिकने रागें करी एटले आ महारो पुत्र तथा लाइ प्रमुख बे, एवा रागें करी दान दीधुं, पण गुणवंतनी बुद्धियें दान न दीधुं. (व के०) अथवा (दोसेण के०) द्वेष ते आ ठेकाणें साधुनिंदारूप जाणवो. ते जेम के, आ साधुने ज्ञातिना लोकोयें काढेलो बे, नूख्यो बे, ए बापडाने आपणे आहार पाणी

न आपीयें, तो बीजो कोण आपे ? नहीं आपीशुं तो जूखें मरशे ? एवी निंदा रूप जे द्वेष, तेवा द्वेषें करी एटले डुगंछा जावनी बुद्धियें करी (मे के०) महा रे जीवें (जा के०) जे (अणुकंपा के०) अशनादिक प्रमुख दानें करी दया जक्ति कीधी होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) आत्मसाखें हुं निंडु बुं, (च के०) वली ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुसाखें हुं गर्हु बुं. विशेषें निंडु बुं.

अथवा बीजो अर्थ आवी रीतें बेः–(सुहिएसु के०) वस्त्र पात्रादिकें करी सुखीआ अने (डुहिएसु के०) रोग प्रमुखें करी डुःखिआ एवा (अ संजएसु के०) असंयत एटले (अ के०) नथी जेने (सं के०) सम्यक् एटले रूडो एवो, (यत के०) यत्न जे उद्यम करवो एटले जे रूडो उ द्यम नथी करता, परंतु जीवहिंसादिक कर्मपाशमां पडवा संबंधि उद्यमना करवावाला, जैनाजास, वेशविडंबक एवा असंयती,पासत्ना,उसन्नादिक तेने. तथा त्रीजो अर्थ, ते असंयत षड्विधजीव वधकोने अथवा अन्यदर्शनी कुलिं गी तेने रागें करीने, जेम के, एक गामना वासी बे अथवा महारा जाइ प्रमुख बे, आपणी उलखाणना बे, इत्यादिक जे रागजावें करी दान दीधुं तथा जिनशासनना प्रत्यनीक बे, द्वेषी बे, निर्लज्ज जंम्हक बे, इत्यादिक द्वेष उपन्यो तो पण घरे आव्या, माटे दान आप्युं, इत्यादिक जावें जे म हारे जीवें. अनुकंपा, दया कीधी होय, तेने निंडु बुं ॥ ३१ ॥

अहीं गुणवंत साधुने दान दीधुं ते निंदवुं नहीं, परंतु पूर्वोक्त राग द्वे षनी निंदा करवी तथा पासत्नादिक अने कुलिंगी प्रमुखने गुणवंतनी बुद्धियें दान दीधुं होय, ते निंदवुं, पण जे सहेज अनुकंपायें दान दीधुं होय, ते तो अनुकंपाज कहेवाय, ते दाननें जगवंतें निषेध्युं नथी, अहीं रागद्वेषनी निंदा जाणवी, पण दान दीधुं, तेनी निंदा जाणवी नहीं ॥

हवे सुसाधुने दान न दीधुं, ते आलोवे बे.

साहूसु संविजागो, न कउ तव चरणकरणजुत्तेसु ॥
संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥

अर्थः–(तव के०) तपें करीने, (चरण के०) चरण सित्तरीयें करीने, (करण के०) करण सित्तरियें करीने, (जुत्तेसु के०) सहित एवो, (साहूसु के०) सुसाधु तेने विषे (फासुअदाणे के०) देवा योग्य प्राशुक

निर्दोष एवुं अशनादिक दान, (संते के०) छते महारे जीवें जो (संवि जागो के०) संविजाग, (नकर्ज के०) न कीधो होय, तेथी जे अति चार हुउ होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं आत्मसाखें निंदु छुं, (च के०) वली (तं के०) ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुनी साखें गर्हुं छुं. आ ठेकाणें तप पदनुं जूदुं उपादान कर्युं छे,तेणें करीने जे तप छे, ते निकाचित कर्मोने पण क्षय करनारुं छे, एवुं प्राधान्य सूचन कर्युं छे, ए त्रण गाथायें करी चोथुं शिक्षाव्रत थयुं ॥ इति चतुःशिक्षाव्रतप्रतिक्रमणं ॥ ३२ ॥

हवे संलेषणाना पांच अतिचार परिहार करता छता कहे छे.

इह लोए परलोए, जीविअमरणे अ आसंसपउगे ॥
पंचविहो अइआरो, मा मज्क हुज्क मरणंते ॥ ३३ ॥

अर्थः-(इहलोए के०) इह लोकने विषे एटले आ धर्मना प्रजावें शेठ, गाथापति, सेनापति, राजा, मंत्रि प्रमुख रुद्धिमंत मनुष्य थवानो (आसंसपउगे के०) आशंसा जे अजिलाप तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार, ते इहलोकाशंसप्रयोग नामा प्रथम अतिचार जाणवो. अहीं आशंसाप्रयोग ए पद,दरेक पदना प्रारंजमां प्रयोजवुं. (परलोए के०) आ धर्मना प्रजावें पर लोकनी आशंसा जे देव, देवेंद्र थवानो अजिलाष, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार करवो, ते परलोकाशंसप्रयोगनामा बीजो अतिचार, (जीविअ के०) अनशनने लीधे सन्मान सत्कार देखी घणा काल पर्यंत जीववानी आशंसा जे वांछा, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते त्रीजो जीविआशंसप्रयोग अति चार जाणवो (मरणे के०) कर्कश क्षेत्रने विषे अनशन लइने कोइ पूजा, अर्चा न करता होय तेणें करी अथवा क्षुधादिकें करी पीड्यां थकां शीघ्र म रणनी आशंसा जे वांछा, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार, ते मरणाशंसप्रयोग नामा चोथो अतिचार जाणवो. (अ के०) च शब्द थकी आ धर्मने प्रजा वें आवते नवें रूडा शब्द, रूप, रसादिक जे कामजोग छे, तेनी आशंसा जे वांछा तेनो प्रयोग, जे मननो व्यापार, ते पांचमो कामजोगाशंसप्रयोग नामा अतिचार जाणवो. ए पांच वांछानुं जे करवुं, ते संलेषणा संबंधि ए (पंचविहो के०) पंचविध, (अइयारो के०) अतिचार, (मरणंते के०) मरणने अंतें एटले ज्यां सुधी चरम श्वास होय, त्यां पर्यंत (मझं के०)

माहारे (मा के०) न (हुज्ज के०) थाउ, एटले ए पंचविध अतिचार, ते मरणने अंतें मुजने म होजो ॥ ३३ ॥

हवे प्रायें सर्व अतिचार, मन, वचन अने कायाना कुव्यापारें होय छे, तेनुं प्रतिक्रमण कहे छे.

काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स॥३४॥

अर्थः—(काइअस्स के०) कायिकस्य एटले वधादिकारी एवा शरीरें करी करेला जे अतिचार, ते अतिचारने (काएण के०) कायोत्सर्गादिक तप अनुष्ठानादिक जे कायाना शुभ व्यापार, तेणें करी युक्त एवा शरीरें करीने, तथा (वाइअस्स के०) वाचिकस्य एटले सहसान्याख्यानदानादि रूप वाणीयें करीने कस्यो एवो जे वचन संबंधि अतिचार तेने, (वायाए के०) वचनें करीने मिथ्याडुक्कड देवुं, जिनस्तवन करवुं, इत्यादिक जे शुभ वचनना व्यापार, तेणें करीने, तथा (माणसिअस्स के०) मानसिकस्य एटले देवतत्त्वादिकने विषे मनें करी शंकादिकने करवे करी कस्या एवा जे अतिचार तेने, (मणसा के०) मनें करीने एटले अनित्य भावनादिक जे मनना शुभव्यापार तेणें करीने तथा "हा! में डुष्ट काम कस्युं" इत्यादिक आत्मनिंदायें करीने एम (सव्वस्सवयाइआरस्स के०) सर्व व्रतना अतिचार प्रत्यें त्रिकरण शुद्धें करीने (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निवर्त्तुं छुं. अहीं 'सव्वस्सवयाइआरस्स' ए पदें करीने सामान्ये करी त्रण योगनुं प्रतिक्रमण कह्युं ॥ ३४ ॥

हवे एनेंज विशेषेंकरी कहे छे.

वंदण वय सिरका गा, रवेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥
गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे॥३५॥

अर्थः—एक (वंदण के०) वंदन ते बे प्रकारें छे. तेमां एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन छे. बीजुं (वय के०) श्रावकनां स्थूलप्राणातिपात विरमणादिक व्रत बार प्रकारें छे, त्रीजी (सिरका के०) शिक्षा बे भेदें छे. त्यां श्रावकने सामायिक सूत्रार्थनुं ग्रहण, तेनें ग्रहणशिक्षा कहियें. ते जघन्यें नवकारथी मांमीने अष्ट प्रवचन, गुरु पासेंथी भणें अने उत्कृष्टो दशवैकालिक सूत्रना पांचमा

छज्जीवणिया अध्ययन पर्यंत सूत्र अने अर्थ बेहु जणे, ग्रहे, धारे, शीखें, त्यां लगें प्रथम ग्रहणशिक्षा जाणवी. अने जे अर्थ सहित नमुक्कार सहिय प्रमुख दिनकृत्य एवी श्रावक संबंधि क्रियाअनुष्ठाननी जे समाचारी छे,एटले प हेलो नवकार कहेतो थकोज उठे, पछी पोतानुं स्वरूप विचारे जे हुं श्रावक छुं, केटलां व्रत मुक्ने छे? इत्यादिक श्राद्धदिनकृत्य प्रकरण तथा श्राद्ध विधिमांहे जे समाचारी कही छे, ते सर्व जाणे, आचरे, आसेवे, ते बीजी आसेवनाशिक्षा कहियें. चोथो (गारवेसु के०) ऋद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव, ए त्रण प्रकारनां गारव छे. तेमां जे पोतानी पासें धन, तथा कुटुंब परिवार घणो देखीने मनने विषे अहंकार आणे, तेने ऋद्धिगारव कहियें. अने जे सरस अन्न पाणी प्रमुखने विषे लोलुपी थाय, ते रसगारव कहियें. तथा जे सुकुमाल वस्त्र, शय्या, घर प्रमुखने मोहें बांध्यो थको तेने मूकी शके नहीं, तेने शातागारव कहियें. ए त्रण प्रकारनां गारव कह्यां, तेनुं सेवन करवाथी, तथा पांचमो (सन्ना के०) आहार, नय, मैथुन अने परिग्रह, ए चार संज्ञाउ. बीजी क्रोध, मान, माया,लोन,लोक,उघ, ए छ संज्ञाउ. ते एकेंद्रियादिक सर्व जीवोने होय छे,तथा छठो (कसाय के०) क्रोधादिक चार कषाय, तथा सातमो (दंमेसु के०) धर्मधनथी जेणें करी आत्मा दंमाय, ते दंम, अशुन मनादिक त्रण नेदें छे. आठमो (गुत्तीसुअ के०) मनादिक त्रण गुप्ति, नवमो (समिईसु के०) ईर्यादिक पांच समिति (अ के०) चशब्दथकी दर्शन पडिमा प्रमुख श्रावकनी अगीआर पडिमा. ए पूर्वोक्त नव बोल मध्यें जे बोल निषेध करवा योग्य छे, तेना करवा थकी अने जे बोल करवा योग्य छे तेना न करवा थकी (जो के०) जे (अइयारो के०) अतिचार, (अ के०) अथवा दोषसमुच्चय जे मने लाग्यो होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडुं छुं ॥ ३५ ॥

हवे सम्यक्दर्शनने माटे कहे छे.

सम्मद्दिठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि॥
अप्पो सि होइ बंधो,जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥

अर्थः—(जइवि के०) जो पण (सम्मद्दिठीजीवो के०) सम्यक्दृष्टि एटले यथावस्थित स्वरूपनो जाण एवो जीव. ते (किंचि के०) किंचित् थोडुं

(पावं के०) कृषी प्रमुख आरंजरूप पाप, ते प्रत्यें निर्वाह चलाववाने अर्थें (समायरइ के०) समाचरे ले, एटले करे ले, (हु के०) तो पण (सि के०) ते श्रावक सम्यक्दृष्टि जीवने (अप्पो के०) अल्प ते पूर्व गुणस्थाननी अपेक्षायें करी थोडो (बंधो के०) कर्मनो बंध, (होइ के०) होय, (जेण के०) जे कारण माटे जाणीयें ठैयें के, सम्यक्दृष्टि जे श्रावक ले ते, (निद्धंधसं के०) निर्दयपणे हिंसादिक व्यापार, (नकुणइ के०) न करे, अने करे, तो पण शंका राखीने करे, वली मनमां विचारे के धिक्कार पडो आ गृहस्थाश्रमने के जेने विषे केटलां पाप करवां पडे ले? एवी बीक राखीनें करे पण निर्दय परिणाम राखीने न करे, तेथी तेने पाप थोडुं लागे ले ॥ ३६ ॥

अहीं कोइ आशंका करे के, जेम थोडुं पण विष, खाधुं थकुं प्राणहरण करे ले, तेम थोडुं पण पाप करवा थकी डुर्गतिनी प्राप्ति न थाय शुं? आ आशंकानुं उत्तर आगली गाथायें आपे ले.

तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥
खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥

अर्थः—(सपडिक्कमणं के०) प्रतिक्रमण जे षडावश्यक तेणें करी सहित थको एटले प्रतिक्रमणने करवे करी, (च के०) वली (सप्परिआवं के०) परिताप सहित थको एटले पश्चात्तापकरवे करी, वली (सउत्तरगुणं के०) उत्तर गुणें सहित थको एटले गुरुयें दीधुं जे प्रायश्चित्त तप, ते तप करवे करी युक्त एवो श्रावक, (हु के०) निश्चें (तंपि के०) ते अल्पकर्मना बंध प्रत्यें पण (खिप्पं के०) क्षिप्र एटले शीघ्र उतावलो (उवसामेइ के०) उपशमावे ले, टाले ले. कोनी पेरें? तोके (व्व के०) जेम (सुसिक्खिउ के०) जलो शीखेलो एवो (विज्जो के०) वैद्य, ते (वाहि के०) व्याधि प्रत्यें साध्यरोग प्रत्यें तुरत उपशमावे ले, तेम ए पण जाणवुं ॥ ३७ ॥

हवे वली बीजो दृष्टांत कहे ले.

जहा विसं कुठगयं, मंत मूल विसारया ॥
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥

अर्थः—(जहा के०) यथा जेम, (मंतमूलविसारया के०) मंत्र मूलना

विशारद, एटले जाण, माह्या एवा जे (विज्ञा के०) वैद्य, ते (कुठगयं के०) कोष्ठगत एटले शरीरमां व्यापेलुं एवुं जे (विसं के०) सर्पादिकनुं विष, ते प्रत्यें (मंतेहिं के०) मंत्रोयें करीने (हणंति के०) हणे ठे, एटले दूर करे ठे, (तो के०) ते वारें (तं के०) ते शरीर, (निव्विसं के०) निर्विष एटले विषरहित, (हवइ के०) होय ठे जो पण विषार्त्त पुरुष, अहिमणि मंत्राक्षर औषधि नो प्रजाव जाणतो नथी तो पण अहिमणि मंत्राक्षर औषधिनो प्रजाव अचिंत्य ठे, तेथी तेनुं विषार्त्तत्व निवृत्त थाय ठे तेम अहिं पण श्रावक ने गुरुवाक्यानुसारें तदक्षरश्रवणथी लाज थाय ठे ॥ ३८॥

एवं अठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं ॥ आलो
अंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥

अर्थः–(एवं के०) ए पूर्वोक्त दृष्टांतें (आलोअंतो के०) गुरु समीपें आलोवतो एटले पोतानां पाप प्रकाश करतो ठतो, (अ के०) वली (निंदंतो के०) निंदतो थको एटले साचा मनथी 'मिठामिडुक्कडं' देतो थको (सुसावओ के०) जलो श्रावक जे ठे ते (रागदोस के०) राग, द्वेषें करीने (समज्जिअं के०) समार्जित करेलुं एटले उपार्जेलुं बांधेलुं एवुं जे (अठविहंकम्मं के०) अष्टविध कर्म, ते प्रत्यें (खिप्पं के०) क्षिप्र एटले शीघ्र, (हणइ के०) हणे ठे, फेडे ठे ॥ ३९ ॥

वली एहीज वातने सविशेष कहे ठे.

कयपावोवि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे ॥
होइ अइरेग लहुओ, उहरिअ जरु व जारवहो ॥ ४० ॥

अर्थः–(कयपावोवि के०) पापनो करनार एवो पण (मणुस्सो के०) मनुष्य, अहीं मनुष्य शब्दना ग्रहणें करीने प्रतिक्रमण जे ठे, ते कृतपाप म नुष्यनेज करवुं योग्य ठे. ते (गुरुसगासे के०) गुरुने समीपें अहिं गुरुसगासे ए पदें करीने पूर्वोक्त आलोयणा, गुरु गीतार्थादिकनी समीपमांज करवी, एवी सूचना करी अने जो कदाचित् स्वतःज अलोयणा करी होय तो शु द्धिनो अजाव थाय ठे. एम पण सूचन कर्युं ठे माटे गुरु समीपने विषे (आलोइय के०) आलोवतो थको एटले करेला पाप प्रत्यें प्रकाश करतो

थको (निंदिअ के०) पापनी निंदा करतो थको एटले मिछाडुक्कड देतो थको (अइरेग के०) अतिरेक एटले अत्यंत पाप थकी (लहुउ के०) लहु एटले हलवो (होइ के०) थाय, (व के०) जेम (नारवहो के०) नारनो वहेनार, वहीतरुं करनार पुरुष, (नरु के०) नार प्रत्यें (उहरिअ के०) उता रीने हलवो थाय छे,तेम ए पण कर्मरूप नारें करीने हलवो थाय छे ॥४०॥

हवे बहु आरंजरक्त एवा श्रावकने पण आवश्यकें करी ते पापरूप डुःखनो अंत थाय छे, ते देखाडे छे.

आवस्सएण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥
डुरकाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥

अर्थः–(जइवि के०) जोपण, (बहुरउ के०) बहु एटले घणो नवो कर्मबंधरूप रजवालो एटले आरंन परिग्रहें करी घणा पापें सहित एवो (सावउ के०) श्रावक (होइ के०) होय, तो पण, (एएण के०) एतेन एटले ए पडिक्कमणादिक (आवस्सएण के०) आवश्यकेन एटले आव श्यकें करीने. अहीं कोइ शंका करशे जे आवश्यक शब्दें करी दंतधावना दिक पण आवश्यक छे, ते लेशुं ? तो त्यां कहे छे के, आ गाथामां एतेन ए शब्दनुं जे ग्रहण कर्युं छे, ते ड्व्यावश्यक निषेधार्थ छे तथा नावाव श्यक प्रतिपादनार्थ छे माटे तेवा नावावश्यकें करी (डुरकाणं के०) शा रीरिक, मानसिक डुःखोनी (अंतकिरिअं के०) अंतक्रिया एटले विनाश क्रियाने (काही के०) करशे. (अचिरेणकालेण के०) थोडा कालमांहें ते पापोनो विनाश करशे ॥ ४१ ॥

हवे पडिक्कमणुं करतां जे अतिचार आलोववाने विसर्जन थयाहोय एटले जे अतिचारो, विस्मृत थया होय, ते आलोवे छे.

आलोअणा बहुविहा, नय संनरिआ पडिक्कमणकाले ॥
मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥

अर्थः–(आलोअणा के०) आलोचना एटले गुरु आगल पाप प्रमाद, आलोववानी प्रकाश करवानी रीति ते, (बहुविहा के०) घणा प्रकारनी छे. ते (पडिक्कमणकाले के०) तेना प्रतिक्रमण कालने विषे एटले पडिक्क

मणा करवाना अवसरें (नयसंजरिआ के०) न सांजरी होय, ते न सांजरवाथकी (मूलगुण के०) सम्यक्त्व पूर्वक पांच अणुव्रत, तेने विषे तथा (उत्तरगुणे के०) त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत, तेने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं आत्मसाखें निंडुं बुं (च के०) वली (तं के०) ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुसाखें हुं गर्हुं बुं, निंडुं बुं. ॥ ४२ ॥ ए बेंतालीश गाथाउ बेठां थकांज कहेवी.

पढी उनो थतो 'तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स' एम कहेतो उनो थइ बे हाथ जोडीने आगली मंगलगर्भित आठ गाथा कहे, ते कहे ले·

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स ॥ अप्नुठिउमि
आरा, हणाए विरउमि विराहणाए॥ तिविहेण
पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥

अर्थः–(तस्स के०) ते गुरुपार्श्वने विषे प्रतिपन्न एवो अने (केवलिपन्नत्तस्स के०) केवलिनाषित एवो (धम्मस्स के०) श्रावक धर्मनी (आराहणाए के०) आराधनानें माटे (अप्नुठिउमि के०) हुं सारी रीतें पालन करवाने उठ्यो बुं, (विराहणाए के०) ते धर्मनी विराधना थकी (विरउम्मि के०) हुं विरत्यो बुं, एटले निवर्त्यो बुं, (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (पडिक्कंतो के०) प्रतिक्रांत थको एटले अतिचार पापथकी निवर्त्यो थको (चउवीसंजिणे के०) चोवीश जिनप्रत्यें (वंदामि के०)·हुं वांडुं बुं ॥ ४३ ॥

एवी रीतें नावजिनने नमस्कार करीने हवे सम्यक्त्वनी शुद्धिने अर्थें त्रिलोकगत स्थापना अरिहंत वांदवाने गाथा कहे ले.

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ॥
सवाइं ताइं वंदे, इह संतो तब संताइं ॥ ४४ ॥

अर्थः–(उड्ढे के०) ऊर्ध्वलोकने विषे (अ के०) वली (अहे के०) अधोलोकने विषे (अ के०) वली (तिरिअलोए के०) तिर्छालोकने विषे (जावंति के०) जेटलां (चेइआइं के०) चैत्य एटले जिनबिंब ले. (ताइं सवाइं के०) ते सर्व प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडुं बुं. शुं करतो थको वांडुं

छुं ? तो के हुं (इह के०) अहींआं (संतो के०) रह्यो थको अने (तत्र के०) त्यां ते त्रण लोकने विषे (संताइं के०) रह्यां छे जे जिनबिंब,ते सर्व प्रत्यें हुं वांदुं छुं ॥ ४४ ॥

हवे सर्व साधुने वंदन करवाने अर्थें कहे छे.

जावंत केवि साहू, नरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सव्वे
सिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंमविरयाणं ॥ ४५ ॥

अर्थः—(नरह के०) पांच नरतक्षेत्रने विषे, (एरवय के०) पांच ऐरवत क्षेत्रने विषे, (महाविदेहे के०) पांच महाविदेहक्षेत्रने विषे, (अ के०) चशब्दथकी अकर्मनूमिक्षेत्रादिकने विषे, (जावंत के०) जेटला (केवि के०) कोइ पण जिनकल्पिक स्थविरकल्पिक प्रमुख जघन्य बे हजार कोडी अने उत्कृष्टा नव हजार कोडी (साहू के०) साधुओ छे, (तेसिं सव्वेसिं के०) ते सर्व साधु प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करीने (पणओ के०) हुं प्रणमुं छुं, ते सर्व साधु केहेवा छे? तो के, (तिदंम के०) त्रण दंमथकी एटले अशुन मन, वचन अने कायाना व्यापारथकी (विरयाणं के०) विराम पामेला छे ॥ ४५ ॥

हवे एवी रीतें चैत्यने तथा यतिने वंदन कर्यां छे जेणें एवो छतो नविष्यकालने विषे पण शुननावनी प्रार्थना करतो छतो कहे, ते लखे छे.

चिरसंचियपावपणासणीइ, नवसयसहस्समहणीए ॥
चउवीस जिणविणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥

अर्थः—(चिरसंचियपाव के०) चिरसंचित पाप प्रत्यें एटले घणा कालना संचायेलां एवां जे पापो, ते प्रत्ये (पणासणीइ के०) प्रनाशनी करनारी एटले विनाशनी करनारी एवी, (नवसयसहस्स के०) शतसहस्रनव प्रत्यें एटले संसारना लक्ष नव जे करवां, ते प्रत्यें, (महणीए के०) मथन करनारी एटले हणनारी एवी, (चउवीसजिण के०) चोवीशजिनोथकी एटले चोवीश तीर्थंकरोथकी (विणिग्गय के०) विनिर्गत एटले नीकली जे (कहाइं के०) जिनगुणोत्कीर्त्तनरूप कथा ते, कथा करवे करीने

(मे के०) म्हारा (दिअहा के०) दिवसो, (वोलंतु के०) व्रजंत एटले वोलो, जाउ, ए प्रार्थना करी छे ॥ ४६ ॥

हवे मंगलपूर्वक जन्मांतरने विषे पण सम्यक्‌दृष्टि देवो पासेथी बोधबीज पामवानी प्रार्थना करे छे.

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ॥
सम्मद्दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥

अर्थः-(अरिहंता के०) एक श्रीअरिहंत देव, (सिद्धा के०) बीजा सिद्ध भगवान्, (च के०) वली (साहू के०) त्रीजा साधु मुनिराज, (सुअं के०) चोथो श्रुतधर्म, ते अंगोपांगादिक आगम, (अ के०) वली (धम्मो के०) चारित्रात्मक धर्म पण लेवो. ए श्रुतधर्म अने चारित्रधर्म, एम बे प्रकारें केवलीयें प्ररूप्यो जे धर्म ते. ए चार वानां (मम के०) म्हारे (मंगलं के०) मांगलिक छे, अ शब्दथकी ए चारे वानां लोकने विषे उत्तम छे, शरणभूत छे, वली पण एम प्रार्थना करीयें छैयें जे, (सम्मद्दिठीदेवा के०)सम्यक्‌दृष्टि जिनभक्त देवताउ जे छे, ते मुजने (समाहिं के०) समाधि प्रत्यें एटले शुभकार्यने विषे जे चित्तनी स्थिरता, ते प्रत्यें (च के०) वली (बोहिं के०) बोधि प्रत्यें एटले परभवें श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति ते प्रत्यें (दिंतु के०) द्यो आपो. (च के०) बीजो च छे, ते पादपूरणार्थ छे ॥

अहीं आशंका करे छे के; आ गाथामां धर्मशब्दना ग्रहण करवा थकी श्रुतशब्दनुं ग्रहण थयुंज, कारण के श्रुतनुं धर्मांतर्गतत्व छे? त्यां कहे छे. श्रुतशब्दनुं जे पृथक् ग्रहण कर्युं छे तेनुं कारण ए छे जे, समुदित एवां ज्ञानक्रियायें करीनेज मोक्ष थाय छे, तेनुं सूचन करवाने अर्थें जूदुं ग्रहण कर्युं छे.

अहीं वली बीजी पण आशंका करे छे के, ते देवो समाधिदानने विषे समर्थ छे किंवा नथी? जो कहेशो के समर्थ नथी, तो प्रार्थना करवी व्यर्थ छे, अने जो कहेशो के समर्थ छे, तो दूरभव्य तथा अभव्यने केम नथी आपता ? अने कदापि एम मानशो के योग्यनेज आपे छे, पण अयोग्यने आपवा असमर्थ छे. त्यारें तो योग्यताज प्रमाण छे, माटे अजागलस्तनसदृश एवा देवोनी प्रार्थनायें करीने शुं ?

समाधानः-अमारे सर्वत्र योग्यताज प्रमाण छे; परंतु अमे नियतवा

द्दीउनी पेठें एकांतवादी नथी कारण के अमे जिनमतानुयायी ढैयें माटे सर्वनयसमूहात्मक स्याद्वादमुद्रा, ते अनजिनेदि सामग्रीने विशेषें उत्पन्न करनारी ढे एवुं वचन ढे ए हेतु माटे जेम घटसिद्धिने विषे मृत्तिकानी योग्यता ढे खरी तो पण कुंजार, चक्र, चीवर, दंमादिक ए सर्व तेनां सह कारी कारण ढे, एम अहीं पण जीवनी योग्यता तो ढे, तथापि पूर्वोक्त दृष्टां तनी पेठें विघ्नोनुं निराकरण करीने ते देवो पण समाधि बोधिदानने विषे समर्थ होय ढे माटे ते देवोनी बोधिदानने विषे प्रार्थना करवी निरर्थक नथी॥ ४७॥

हवे कोइ आशंका करे के जेणें व्रत स्वीकार्यां ढे तेने प्रतिक्रमण करवुं योग्य ढे, परंतु अव्रतीने तो व्रतना अजावें करीनें तेना अतिचारनो पण अजाव ढे, माटे प्रतिक्रमण करवुं योग्य नथी ते वातनो निषेध करवाने कहे ढें के, आ प्रतिक्रमण जे ढे, ते केवल अतिचारोने विषेज नथी परंतु चार स्थानकने विषे पण ढे, माटें ते चारे स्थानकने विषे प्रतिक्रमण थाय ढे, तेना उपदर्शनने माटे गाथा कहे ढे.

पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ॥
असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥

अर्थः—एक (पडिसिद्धाणं के०) जे प्रतिषेधवा योग्य निषेधवा योग्य ते सम्यक्त्व अणुव्रतादिनां मालिन्यहेतु एवां संकावधादि तथा अढार पाप स्थानकादिक जे अतिचारसेवनादिक रूप अशुजकारी ढे, ते अशुज कार्यने (करणे के०) करवे करी, तथा बीजो (किच्चाणं के०) करवा योग्य एवां जे देवपूजादि षट्कर्म तथा सामायिकादिक षडावश्यक विनयदानादिक अरिहंतनां जक्तिप्रमुख जे शुजकार्य ढे, ते शुजकार्यने (अकरणे के०) अणकरवाथकी (अ के०) वली त्रीजो (असद्दहणे के०) अश्रद्दधा नने विषे एटले निगोदादिक सूक्ष्मविचारने अणसर्द्दहवे करीने (अ के०) वली (तहा के०) तथा चोथो (विवरीयपरूवणाए के०) जिनागम थकी विपरीत एटले उलटी प्ररूपणा करवे करीने एटले उत्सूत्र प्ररूपणा करवे करीने, आ जे विपरीत प्ररूपणा ढे, ते चतुरंत एवुं अत्यंत जवच्रमण, तेनी कारणजूत ढे. ते विपरीतप्ररूपणा तो अनाजोगादिकें करे ढते पण प्रतिक्रमण कराय ढे. त्यां शंका करे ढे के, विपरीत प्ररू

पणा जे छे, ते तो सूत्र कथन करतो होय, तेने थवानो संजव छे, परंतु अन्यने तो नथी, माटे शुं धर्मकथननो अधिकार श्रावकने छे? तो त्यां कहे छे के, श्रावकने धर्मकथननो अधिकार छे, कारण के गीतार्थथकी अधिगत छे सूत्र जेने तेवा तथा गुरुने आधीन छे वचन जेने, तेवा श्रावकने शा माटे सूत्रकथननो अधिकार न होय? त्यारें वादी कहे छे के, ए जे अधिकार छे, तेमां प्रमाण शुं? तो त्यां प्रमाण कहे छे के,–पढइ सुणेइ गुणेइ जिणस्स धम्मं परिकहेइ" इत्यादि वचन छे, तथा चूर्णीमां पण लख्युं छे जे "सो जिणदास सावउमि चउदसीसु उववासं करेइ पुछयं च वाएइ" इत्यादि माटे श्रावकने अधिकार छेज, तेथी ए चार प्रकारें करीने जे पाप लाग्युं होय, अतिचार हुउ होय, ते पापने दूर करवाने अर्थें (पडिक्कमणं के०) प्रतिक्रमण छे, मिछामि डुक्कड छे ॥ ४८ ॥

हवे अनादि संसारसागरावर्त्तांतर्गत जे सत्त्वो छे, तेमने अन्योऽन्य वैरनो संजव छे, माटे तेने खमाववाने कहे छे.

खामेमि सवजीवे, सवे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सवन्रूएसु, वेरं मद्यं न केणइ ॥ ४ए ॥

अर्थः–(सवजीवे के०) सर्व जीवो प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खमावुं छुं एटले अनंतजवोने विषे पण अज्ञानमोहावृतत्वें करीने जीवोनें जे पीडा कीधी होय, ते खमाववुं छुं अने (सवेजीवा के०) ते सर्व जीवो पण (मे के०) महारा अपराध प्रत्यें, (खमंतु के०) खमो, माफ करो, ए क्षमनक्षमापनमां कारण कहे छे के, (सवन्रूएसु के०) सर्व जूतोने विषे (मे के०) महारे (मित्ती के०) मैत्रीजाव छे, (केणइ के०) कोइ जीवनी साथें (मद्यं के०) महारे (वेरं के०) वैरजाव (न के०) नथी ॥ ४ए ॥

हवे प्रतिक्रमण अध्ययनने उपसंहार करतो बतो छेल्ली मंगलप्रदर्शनार्थे गाथा कहे छे.

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं सम्मं ॥
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥ इति ॥३१॥

अर्थः–(एवं के०) एम (आलोइअ के०) पाप आलोच्युं प्रकाश कीधुं

(निंदिअ के०) आत्मसाखें निंदुं, (गरहिय के०) गर्हुं (डुगंछिअं के०) डुगंछ्युं, अत्यंत खोटुं जाण्युं, ते माटे (सम्मं के०) सम्यक् प्रकारें ए स म्यक् पद सर्वपदोनी साथें पूर्वमां योजवुं, (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करीने (पडिक्कंतो के०) अतिचारादिक पापथकी प्रतिक्रांत थको पाछो फरतो थको एटले पापने पडिक्कमतो थको एवो जे (अहं के०) हुं, ते (चउवीसंजिणे के०) चोवीश जिन प्रत्यें (वं दामि के०) वांडुं बुं. आ प्रकारें अल्परुचि जीवोना बोधने माटें आ वंदिता सूत्रनो अर्थ, संक्षेपे करी कह्यो छे. विस्तारार्थ तो वृहद्वृत्तियकी तथा चूर्णीयकी जाणवो ॥ ५० ॥ इति ॥ ३२ ॥

हवे वली तेमज बे वांदणां देइने गुरुने अपराध खमाववाने आवी रीतें कहे, ते कहें छे.–

॥ अथ अप्नुठ्ठिउं हं गुरुखामणां ॥

॥ इछाकारेण संदिसह नगवन् अप्नुठ्ठिउमि अप्निंतर देवसिअं खामेउं० ॥ इछं० ॥ खामेमि देवसिअं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं नत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतर नासाए उवरिनासाए जं किंचि मझ विणयपरिही णं सुहुमं वा बायरं वा तुप्ने जाणह अहं न याणा मि तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३३ ॥

अर्थः–(नगवन् के०) हे नगवन्! (इछाकारेण के०) तमारी पोता नी इछायें करी, (संदिसह के०) मुजने आदेश आपो, अप्निंतरदेवसिअं के०) दिवसमांहे कीधा होय जे अपराध, ते प्रत्यें (खामेउं के०) खमा ववाने (अप्नुठ्ठिउमि के०) हुं अन्युहित एटले कठयो बुं, अर्थात् आपना सन्मुख हुं उनो थयो बुं. तेवारें गुरु कहे, खामेह एटले खमावो. एवुं सद्गुरु नुं वचन तेने बहु मानतो छतो शिष्य उनो रह्यो थकोज इछं एवो पाठ कहे एटले (इछं के०) एहीज हुं इछुं बुं, वांछुं बुं (खामेमि के०) हुं खामुं बुं शा

प्रत्यें खामुं बुं? तो के (देवसिअं के) दिवससंबंधि अपराध प्र
बुं. पढी विधिवत् धरणीतलस्पृष्ट एवा पचांगें प्रणाम करी मुखें
देइ आवी रीतें जणे, ते कहे बे.

(जंकिचि के०) जे कांइ सामान्यथी (अपत्तिअं के०) अप्रीतिकं एटले अप्रीतिजाव उपजाव्यो होय, परपत्तिअं के०) पराप्रीतिकं पर प्रकृष्ट एटले विशेषथी अप्रीतिजाव, अध्याहारथी आपने विषे उपजाव्यो होय, शान विषे उपजाव्यो होय ? ते कहे बे. (जत्ते के०) अशन, खादिम, स्वादिमने विषे, (पाणे के०) पाणीने विषे, (विणए के०) गुरु आव्या देखीने साहामा उठवा वांदवादिक आसन प्रमुख आपवुं, इत्यादिक विनय करवो, तेने विषे (वेआवच्चे के०) गुरुनी पादसेवा, औषधपथ्यादिक आणी आपवां इत्यादिक वैयावृत्यने विषे, (आलावे के०) एक वार बोलाववाने विषे, (संलावे के०) वारंवार बोलाववाने विषे, (उच्चासणे के०) गुरुथी उंचा आसने बेसवाने विषे, (समासणे के०) गुरुनी पासें सरखुं आसन करी तेनी उपर बेसवा नेविषे, (अंतरजासाए के०) अंतरजाषाने विषे एटले गुरु वात करता होय, तेनी वच्चें वात करवी, तेने अंतरजाषा कहियें तेने विषे, (उवरिजासाए के०) उपरिजाषाने विषे एटले गुरु वात करी रह्या पढी तेहीज वात पोतानी स्फुरती देखाडवाने अर्थें विशेषपणे करवी, तेने उपरिजाषा कहियें. तेने विषे, (जंकिंचि के०) जे कांइ (मज्ज के०) म्हारे (विणयपरहीणं के०) विनय जक्ति परिहीणपणुं एटले रहितपणुं थयुं होय, ते विनयजक्तिरहितपणुं केवुं थयुं होय? तो के (सुहुमं के०) सूक्ष्म एटले न्हानुं जे थोडे प्रायश्चित्तें शुद्ध थाय ते, (वा के०) अथवा (बायरं के०) बादर ते जे घणा प्रायश्चित्तें करी शुद्ध थाय, एवुं विनयहीन पणुं ते सर्वे, हे नाथ ! (तुप्नेजाणह के०) सकल जगतना जाव जाणवा थकी तुमें जाणो बो, अने (अहंनयाणामि के०) हुं मूढपणा माटे जाणतो नथी (तस्स के०) ते अप्रीतिप्रमुख अतिचारनुं लाग्युं जे (डुक्कडं के०) डुःकृत एटले पाप, ते (मि के०) म्हारुं (मिच्छा के०) मिथ्या थाउ; एटले फोक थाउ. अहीं बीजो वा बे ते पादपूरणार्थ बे ॥१॥ इति गुरु खामणासूत्रार्थः ॥ ३३ ॥ ए खामणांना सूत्रने विषे धुरथकी गुरु पंदर अने लघु एकशो अगीआर, मली एकशो ने बवीश अक्षरो बे. ए विधिपूर्वक अप

राध खमावतां चंद्ररौद्राचार्यादिक अनेक जीवोने केवलज्ञान उपन्युं छे.

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥

अर्थः—पंचाचारसंपन्न अथवा छत्रीश गुणें विराजमान, अर्थदानना दातार, तेने (आयरिय के०) आचार्य कहीयें. तथा समीप रह्या अने आव्या जे शिष्यादिक तेने सूत्रना जणावनार अथवा पच्चीश गुणें विराजमान, तेने (उवज्झाए के०) उपाध्याय कहीयें, तथा ग्रहणशिक्षा अने आसेवनाशिक्षाने योग्य होय तेने (सीसे के०) शिष्य कहीयें, तथा श्रद्धा अने प्ररूपणादिक गुणें करीने जे आपणा सरिखा होय, एवा सरखा धर्मना पालनार, तेने (साहम्मिए के०) साधर्मिक कहीयें, तथा जे एक आचार्यनो शिष्य संतान परिवार, तेने (कुल के०) कुल कहीयें, तथा घणा आचार्यना शिष्यसंतान परिवार, तेने (गणे के०) गण एटले समुदाय कहीयें. (अ के०) ए अ ते वली वली कहेवाने अर्थें छे. ए सर्वनी उपर (मे के०) महारे जीवें (जे के०) जे (केइ के०) कोइ पण (कसाया के०) क्रोधादिक कषाय कीधा होय, ए कारणें (सव्वे के०) सर्व ते आचार्यादिक प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (खामेमि के०) हुं खामुं छुं ॥ १ ॥ आ गाथामां लघु बत्रीश, गुरु त्रण, सर्व अक्षर पांत्रीश छे.

सव्वस्ससमणसंघस्स, जगवंत अंजलिं करिय सीसे ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥

अर्थः—(सीसे के०) मस्तकनी उपर (अंजलिं के०) बे हाथ प्रत्यें (करिय के०) करीने एटले स्थापीने नम्रीभूत थइने (सव्वस्ससमणसंघस्सजगवंत के०) सर्व श्रमण संघ रूप जगवंतना कीधा जे अपराध, (सव्वं के०) ते सर्व अपराध प्रत्यें (खमावइत्ता के०) खमावीने, वली एम कहे, के (सव्वस्स के०) ते सर्वना करेला अपराध प्रत्यें (अहयंपि के०) हुं पण (खमामि के०) खमुं छुं, एटले सम्यक् प्रकारें सहन करुं छुं ॥ २ ॥ आ गाथामां लघु एकत्रीश अने गुरु सात, मली सर्वाक्षर आडत्रीश छे ॥

सव्वस्स जीवरासिस्स, नावउ धम्म निहिय नियचित्तो ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥ ३४ ॥

अर्थः-(नावउ के०) नावथी (सव्वस्सजीवरासिस्स के०) एकेंद्रिया दिकसर्वे जीवनो राशि एटले समूह तेनो कीधो जे में अपराध, ते (सव्वं के०) सर्वे अपराध प्रत्यें (खमावइत्ता के०) खमावीने, वली एम कहे के ते सर्वे जीवोनी उपर समनाव ते रूप (धम्म के०) धर्म, तेने विषे (निहिय के०) निधित कर्युं ले एटले स्थाप्युं ले नावथकी आरोपण कर्युं ले, (नियचित्तो के०) निजचित्त एटले पोतानुं मन जेणें एहवो (अहयंपि के०) हुं पण (सव्वस्स के०) सर्वे जीव राशिना कीधा जे अप राध ते अपराध प्रत्यें (खमामि के०) खमुं छुं ॥ ३ ॥ आ गाथामां लघु अठावीश अने गुरु नव, सर्वाक्षर साडत्रीश ले ॥ इति खामणां ॥ ३४ ॥

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

इलामो अणुसहिं ॥ नमो खमासमणाणं ॥ नमो ऽर्हत्‌॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥

अर्थः-(वर्द्धमानाय के०) श्रीवर्द्धमान स्वामी नणी, (नमोस्तु के०) नमस्कार थाउ, ते श्रीवर्द्धमान स्वामी केहेवा ले ? तोके (कर्मणा के०) कर्मोनी साथें (स्पर्द्धमानाय के०) स्पर्द्धाना करनार ले, एटले ईर्ष्याना करनार ले, केमके ? कर्मोना वैरी ले, माटे तेनी साथें ईर्ष्याना करनार ले. वली केहेवा ले ? तो के (तज्जया के०) ते कर्मनो जय करीने (अवाप्त के०) पाम्या ले (मोक्षाय के०) मोक्ष प्रत्यें एवा ले, वली केहेवा ले ? तो के (कुतीर्थिनां के०) कुतीर्थीयो जे मिथ्यादृष्टि जीवो, तेउने (परो क्षाय के०) परोक्ष ले, एटले दृष्टिथी दूर ले. अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीव होय, ते प्रजुनुं स्वरूप जाणी न शके ॥ इति नावः ॥ १ ॥

येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥२॥

अर्थः—(ते के०) ते (जिनेंद्राः के०) जिनेंद्र तीर्थंकर, (शिवाय के०) शिव एटले परम कल्याण तेने अर्थें (संतु के०) थाउ. ते जिनेंद्र केहेवा छे? तो के (येषां के०) जे जिनेंद्रोनी (ज्यायः के०) प्रधान प्रशंसनीय एवी (क्रमकमलावलिं के०) चरणकमलनी आवलि एटले श्रेणी प्रत्यें (दधत्या के०) धरती हुइ एटले पोतानी उपर स्थापित हुइ, अर्थात् विहार समयें प्रजुना चरण कमल नीचें सुवर्णमय नव कमल जे देवता रचे छे, ते रूप (विकच के०) विकस्वर प्रफुल्लित (अरविंद के०) अरविंद नामें कमल तेनी (राज्या के०) राजी एटले श्रेणीयें करीने, (सदृशैः के०) सरखानी साथें (संगतं के०) मलवुं, ते (प्रशस्यं के०) अति रूडुं प्रशंसा करवा योग्य छे. (इति के०) ए प्रकारें (कथितं के०) कह्युं छे. जेम के सरखे सरखां मले ते शोभे, माटे ते सुवर्णमय नवकमल अने प्रजुनां चरण, ए बेहु कमल मलेथी अत्यंत शोजा थई ॥ २ ॥

कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टिसंनिभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ इति ॥ ३५ ॥

अर्थः—(स के०) ते (गिरां के०) सिद्धांतरूपवाणीनो (विस्तर के०) विस्तार ते, (मयि के०) महारे विषे (तुष्टिं के०) तुष्टि प्रत्यें संतोष प्रत्यें (दधातु के०) करो, ते वाणीनो विस्तार केहेवो छे? तो के (यो के०) जे वाणीनो विस्तार, (कषाय के०) कषायरूप (ताप के०) तापें करीने (अर्दित के०) पीडित एवा (जंतु के०) प्राणीयो तेने (निर्वृत्तिं के०) शांति समाधि प्रत्यें (करोति के०) करे छे. वली (यो के०) जे (जैनमुख के०) जिनराजना मुखरूप (अंबुद के०) मेघ ते थकी (उद्गतः के०) उपज्यो छे. वली (यो के०) जे (शुक्रमास के०) ज्येष्ठमास थकी (उद्भव के०) उपन्यो एवो जे (वृष्टि के०) वर्षात तेनी (संनिभो के०) सरखो छे ॥ ३ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेसरं ॥
प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥

अर्थः—(व: के०) तुमने (प्रातः के०) प्रजात समयें (वीरजिनेंड्रस्य के०) श्रीवीरजिनेंड्र संबंधी (मुखपद्मं के०) मुखकमल छे, ते (पुनातु के०) पवित्र करो, ते मुख कमल केहेवुं छे? तो के (विशाल के०) विस्तीर्ण (लोचन के०) नेत्ररूप (दलं के०) पत्र छे जेने विषे, वली केहेवुं छे? तो के (प्रोद्यत् के०) अत्यंत जलहलता एवा (दंतांशु के०) दांतना किरणरूप (केसरं के०) केसर सुगंधना कणीया छे जेने विषे ॥ १ ॥

येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥२॥

अर्थः—(ते के०) ते (जिनेंद्राः के०) श्रीजिनेंद्रो जे तीर्थंकरो, ते (प्रातः के०) प्रजात समयें (शिवाय के०) शिवने एटले निरुपद्रवने अर्थें (संतु के०) थाउ. ते जिनेंद्रो केहेवा छे? तो के (येषां के०) जे जिनेंद्रोना (अभिषेककर्म के०) स्नानकर्म कार्य प्रत्यें (कृत्वा के०) करीने (हर्षभरात् के०) हर्षना भर एटले समूहथकी (मत्ता के०) माता थका मग्न थका (सुरेंद्राः के०) देवेंद्रो जे छे, ते (नाकं के०) देवलोक संबंधी जे (सुखं के०) सुख तेने (तृणमपि के०) तृणतुल्य पण (नैव के०) नहींज (गणयंति के०) गणे छे, अर्थात् जिनेंद्रना अभिषेक सुखने पामीने देवताउ स्वर्गसुखने तृणसमान पण नथी मानता ॥ २ ॥

कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं ॥ अपूर्वचंद्रंजिनचंद्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३६ ॥

अर्थः—(जिनचंद्रभाषितं के०) जिनचंद्र संबंधि भाषित जे आगम ते प्रत्यें (दिनागमे के०) प्रजात समयें (नौमि के०) हुं स्तवुं छुं. ते जिनचंद्रभाषित केहेवुं छे? तो के (कलंकनिर्मुक्तं के०) कलंकरहित एवुं अने (अमुक्तपूर्णतं के०) नथी मूकाणी पूर्णता जेनी अने वली (कुतर्कराहुग्रसनं के०) कुतर्क करनारा एवा जे परदर्शनी रूप राहु तेने ग्रसनहार एटले भक्षण करनार एवुं छे, तथा (सदोदयं के०) सदा निरंतर उदय

एटले जगेलो एवो एक (अपूर्वचंद्रं के०) अपूर्व चंद्रसदृश छे, एटले जिनागमरूपचंद्रमानी तुल्य बीजो कोइ चंद्रमा नथी, वली ते जिनचंद्रभाषित केहेवुं छे? तो के (बुधैर्नमस्कृतं के०) बुधोयें एटले पंमितोयें कर्यो छे नमस्कार जेने, एवुं छे ॥ ३ ॥ इति स्तुतिसूत्रार्थः ॥ ३६ ॥

॥ अथ सव्वस्सवि देवसिअ लिख्यते ॥

सव्वस्सवि देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ,
दुच्चिठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ३७ ॥

अर्थः—(सव्वस्सविदेवसिअ के०) सर्वे पण दिवस संबंधि अतिचार ते (दुच्चिंतिअ के०) दुश्चिंतित जे परछेपादिक दुष्ट कार्य तेने चिंतववा थकी थयो, वली केहेवो ते दिवस संबंधि अतिचार? तो के (दुब्भासिअ के०) दुर्भाषित जे उपयोग रहित अनिष्ट दुष्टादिक भाषा तेवी भाषा बोलवा थकी थयो, वली केहेवो ते दिवस संबंधि अतिचार? तो के (दुच्चिठिअ के०) दुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा चालवा थकी तथा कामासनादिक एवी कायनी दुष्ट चेष्टारूप प्रवृत्ति ते प्रवृत्ति करवा थकी थयो, तेनुं मिथ्यादुःकृत देवाने (भगवन् के०) हे भगवन्! (इच्छाकारेण के०) पोतानी इच्छायें करी (संदिसह के०) मुजने आज्ञा करो. अहींआं गुरु आज्ञा आपे पछी शिष्य कहे. (इच्छं के०) हुं एहीज इच्छुं, छुं. (तस्स मिच्छामि दुक्कडं) ए पदोनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥ १ ॥इति ॥ ३७ ॥

॥ अथ श्रुतदेवतास्तुतिः ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअदेव
या भगवई, नाणावरणीय कम्म संघायं ॥ तेसिं
खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥ १ ॥

अर्थः—(सययं के०) सततं एटले सदा निरंतर, (जेसिं के०) जे भव्य पुरुषोनी (सुयसायरे के०) श्रुतिसागरने विषे (भत्ति के०) भक्ति छे, एटले अंतर प्रीति छे (तेसिं के०) ते पुरुषो संबंधि (नाणावरणीय

कम्म के०) ज्ञानावरणीयकर्मना (संघायं के०) संघात एटले समूह ते प्रत्यें (सुअदेवया के०) श्रुतदेवता, वली (जगवई के०) जगवती जे सरस्वती ढे, ते (खवेउ के०) खपावो एटले क्षय करो ॥ १ ॥ ए श्रुतदेवता श्रुतसिद्धांतनी अधिष्ठायिका जे सरस्वती, तेने आराधवा निमित्त काउस्सग्ग करवो, एमां वंदणवत्तीआए ए पाठ न कहीयें, अन्नथ्थ ऊससिएणं ए पाठज कहीयें. ए गाथा श्रीपाक्षिक सूत्र सिद्धांतने ढेहडे ढे, ते जणी काउस्सग्ग करतां मिथ्यात्वनी शंका न करवी ॥ १ ॥ आ गाथामां लघु ढत्रीश अने गुरु बे, मली सर्वाक्षर आडत्रीश ढे ॥

॥ अथ क्षेत्रदेवतानी स्तुति ॥

जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥
साहंति मुरकमग्गं, सा देवी हरउ डुरियाइं ॥१॥ इति ॥३८॥

अर्थः—(चरणसहिएहिं के०) चारित्र सहित एवो (दंसणनाणेहिं के०) दर्शन अने ज्ञान तेणें करीने (जीसे के०) जे देवीना (खित्ते के०) क्षेत्रने विषे (साहू के०) साधु मुनिराज, (मुरकमग्गं के०) मोक्षना मार्ग प्रत्यें (साहंति के०) साधे ढे, (सा के०) ते, (देवी के०)देवी, (डुरियाइं के०)'डुरित प्रत्यें एटले पाप प्रत्यें (हरउ के०) हरो, दूर करो ॥ २ ॥ ए क्षेत्र देवतानो काउस्सग्ग श्रीवयरस्वामीयें कीधो सांजलीयें ढैयें, अने श्रीजद्रबाहु स्वामीयें पण करवो कह्यो ढे, ते जणी एमां मिथ्यात्व नहीं एम समजवुं. आ गाथामां लघु तेत्रीश, गुरु त्रण, सर्वाक्षर ढत्रीश ढे. बेहु गाथाना लघु उंगणोतेर, अने गुरु पांच, मली सर्वाक्षर चम्मोतेर ढे ॥ इति॥३८॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलग
र्जसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगवती, द
दातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ १ ॥ इति ॥ ३९ ॥

अर्थः—(जगवती के०) ठकुराइ प्रमुख गुणनी धरनारी एवी जे (श्रुतदेवता के०) सिद्धांतनी अधिष्ठायिका श्रुतदेवी ढे, ते अमने (सिद्धिं

के०) धर्मनी सिद्धि प्रत्यें (ददातु के०) दीयो, आपो, ते श्रुतदेवी केहेवी ले? तो के (कमलदल के०) कमलनी पांखडी समान (विपुल के०) विशाल ले (नयना के०) नेत्र जेहनां एवी ले. वली केहेवी ले? तो के (कमलमुखी के०) कमलमुखी ले, अर्थात् कमल सरखुं सुगंधीयुक्त वाटलुं एवुं सुशोभित मुख ले जेहनुं, वली केहेवी ले? तो के (कमलगर्भसमगौरी के०) कमलना गर्भनी पेरें गौर वर्ण ले, एटले कमलना मध्यभागमां जे गर्भ ले, तेना सरखो गौरवर्ण ले जेनो एवी ले, वली केहेवी ले? तो के (कमले के०) कमलने विषे (स्थिता के०) रही ले ॥ १ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥ अथ भुवनदेवतादिस्तुतिः ॥

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

अर्थः–(नः के०) अमने (सा के०) ते (क्षेत्रदेवता के०) क्षेत्रदेवी, (नित्यं के०) निरंतर, (सुखदायिनी के०) सुखनी देवावाली (भूयात् के०) होय, ते क्षेत्रदेवी केहेवी ले? तो के (यस्याः के०) जेना (क्षेत्रं के०) क्षेत्र प्रत्यें (समाश्रित्य के०) समाश्रयीने एटले अंगीकार करीने (साधुभिः के०) साधुउयें (क्रिया के०) तपसंयमरूप धर्मक्रिया (साध्यते के०) सधाय ले, कराय ले ॥ १ ॥

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनां ॥ २ ॥ इति ॥ ४० ॥

अर्थः–(भुवनदेवी के०) भुवननिवासिनी देवी ले, ते (सर्वसाधूनां के०) सर्व साधुउने (शिवं के०) शिव एटले परम कल्याण, ते प्रत्यें (सदा के०) निरंतर, (विदधातु के०) करो, ते सर्व साधु केहेवा ले? तो के (ज्ञानादिगुण के०) ज्ञानादिक गुणें करीने (युतानां के०) युक्त ले सहित ले. वली ते सर्वसाधु केहेवा ले? तो के (नित्यं के०) निरंतर जे (स्वाध्यायसंयमरतानां के०) वांचनादिक पांच प्रकारनो स्वाध्याय अने आश्रवनिरोध रूप सत्तर प्रकारनो संयम, तेने विषे रत ले, एटले आसक्त ले, मग्न

छे. ए नुवनदेवतानो काउस्सग्ग श्री नद्रबाहुस्वामीयें आवश्यकमां करवो कह्यो छे, ते माटे एमां मिथ्यात्व समजवुं नहीं ॥ १ ॥ इति ॥ ४० ॥

॥ अथ अट्ठाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

अट्ठाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मनूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण गुछ पडिग्गहधारा ॥ १ ॥ पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलंग धारा ॥ अरकयायारचरित्ता, ते सवे सिरसा मण सा मछएण वंदामि ॥ २ ॥ इति ॥ ४१ ॥

अर्थः-(अट्ठाइज्जेसुदीवसमुद्देसु के०) अढी द्वीप बे समुद्र संबंधि जे (पनरससुकम्मनूमीसु के०) पंदर कर्मनूमी क्षेत्रने विषे, (जावंत के०) जेटला (केवि के०) कोइ पण (साहू के०) साधु, (रयहरणगुछपडिग्ग हधारा के०) रजोहरण ते उंघो अने गुछो ते पात्रानी जोलीनी उपरनुं उ पकरण अने पतद्ग्रह ते पात्रुं इत्यादिक धर्मोपकरणना (धारा के०) धारण करनारा छे ॥ १ ॥ एटले सुधी साधुनो वेषमात्र जणाव्यो परंतु ते वेषतो गु ण विना अप्रमाण कह्यो छे माटे हवे गुण कही देखाडे छे. वली ते साधु केहेवा छे? तो के (पंचमहव्वयधारा के०) पांच महाव्रतना धरणहार छे, वली केहेवा छे? तो के (अठारससहस्ससीलंगधारा के०) अष्टादश सहस्र शील नां चारित्रनां अंग जे अंश छे तेना धरनार, वली केहेवा छे? तो के (अरक यायारचरित्ता के०) अक्षत संपूर्ण आचार रूप चारित्र तेना धरणहार छे, (ते सवे के०) ते सर्वे प्रत्यें (सिरसा के०) ललाटें करीने (मणसा के०) मनें क रीने (मछएण के०) मस्तकें करीने (वंदामि के०) हुं वांडुं बुं. अथवा मछए ण वंदामि ए वचनें पंचांग प्रणामें करी वांडुं बुं ॥ २॥ इति सर्वसाधु नमस्कार सूत्रार्थः ॥ आ बेहु गाथामां लघु बहोंतेर, गुरु तेर, सर्वाक्षर पच्चाशी छे ॥४१॥

॥ अथ वरकनक ॥ अथवा सप्ततिशतजिनस्तुतिः ॥

वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निनं विगतमोहं ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वंदे ॥ १ ॥ ४२ ॥

अर्थः—(जिनानां के०) जिनेंद्रो संबंधि (सप्ततिशतं के०) शप्ततिशत प्रत्यें एटले एकशो सीत्तेर जिनेंद्रो प्रत्यें (वंदें के०) हुं वांडुं बुं. ते जिन सप्ततिशत केहेवुं बे ? तो के (वर के०) प्रधान एवुं (कनक के०) सुवर्ण, (शंख के०) शंख, (विद्रुम के०) प्रवालां, (मरकत के०) नीलमणि, (घन के०) सजल मेघ, तेना (सन्निभं के०) सरखुं बे, एटले पांच वर्णो बे जेना एवुं बे. वली ते सप्ततिशत कहेवुं बे? तो के (विगतमोहं के०) मोहादिक रहित बे, वली केहेवुं बे? तो के (सर्वामरपूजितं के०) सर्व अमर एटले देवता पूजे बे जेने एवुं बे ॥ १ ॥ इति ॥ ४२ ॥

॥ अथ तीर्थ वंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंदूं कर जोड्य,जिनवरनामें मंगल कोड्य ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर चइत्य नमुं निशदीस ॥ १ ॥ बीजे लाख अघा वीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अड लाख धार, पांचमें वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ बठे स्वर्गे सहस पच्चास,सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे ब हजार, नव दशमे वंदूं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे त्रणशें सार, नवग्रैवेयकें त्रणशें अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशीअधिकां वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेविश सार, जिनवर जुवन तणो अधिकार ॥ लांबा शो योजन विस्तार, पंचाश उंचां बहोंतेर धार ॥ ५ ॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, सन्ना सहित एक चैत्यें जाण ॥ शो कोड बावन कोड संजाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सातशें उपर शाठ विशाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रण काल ॥ सात कोडने बहोंतेर लाख, जुवनपतिमां देवल नांख ॥ ७ ॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चइत्यें संख्या जाण ॥ तेरशें कोड नेव्याशी कोड, शाठ लाख वंदूं कर जोड ॥ ८ ॥ बत्रीशें ने उगणशाठ, तीर्छा लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशें वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर ज्योतिषिमां वलि जेह, शाश्वता जिन वंदूं तेह ॥ रुषन चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामें गुणसेण ॥ १० ॥ समेत शिखर वंदूं जिंन वीश, अष्टापद वंदूं चोवीश ॥ विमलाचल ने गढ गिरनार,आबु उपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥

अंतरिक वरकाणो पास, जीरावलोने थंजण पास ॥ १२ ॥ गाम नगरपुर पाटण जेह, जिनवरचैत्यं नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदूं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश दीस ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस सिलांगना धार ॥ पंच महाव्रत समितिसार, पाले पलावे पंचाचार ॥१४॥ बाह्य अभ्यिंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदूं गुण मणिमाल ॥ नित नित ऊठी कीर्ती करुं, जीव कहे नवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ लघुशांतिस्तवप्रारंभः ॥

बृहद्गछीय प्रसिद्धप्रभावी श्रीमानदेव सूरि, ते नाडूल नगरमां चोमासुं रह्या हता ते समये, शाकंभरी नगरमां श्रीसंघ, शाकिनीजनित मरकीना उपद्रवें पीडित थयो, तेवारें त्यांना संघें मलीने विनंतिपत्र लखी तेमां रोग स्वरूप निवेदन करी श्रीमानदेव सूरि पासें मनुष्य मोकल्यां, पछी पद्मा, जया, विजया अने अपराजिता, ए चार देवीउनुं छे सान्निध्य जेमने एवा तथा निरतिशय करुणायें करीने जेमनुं अंतःकरण कोमल छे, एवा श्रीमानदेवसूरि, तेउयें सर्वत्र सकल श्रीसंघने सर्वोपद्रव शांतिने अर्थें आ स्तोत्रनी रचना करीने संघने आप्युं. पछी ते शाकंभरीनगरस्थ संघना केटला एक जणोएं तो प्रतिदिवस ए स्तोत्रनुं पोतें अध्ययन कर्युं तथा केटला एकोयें तो अन्यपासें अध्ययन करावीने सांभलवा मांड्युं, तथा ए स्तोत्रें अभिमंत्रित जलने छंटाव्युं, तेणें करी श्रीसंघनो शाकिनीजनित मरकीनो उपद्रव शांतिने पाम्यो, त्यांथी ए स्तोत्र सर्वस्थलें शांतिकारक थयुं, ते पछी प्रायः प्रतिदिवस ए लघुशांतिस्तोत्र प्रतिक्रमणानंतर भणाय छे, एवो संप्रदाय छे. आ स्तोत्र कये ठेकाणें शा वास्ते निर्मित कर्युं ? ते विषे एज गछना गुरुयें एक श्लोक रचेलो छे, ते लखीयें छैयें ॥ नाडूलनामनगरस्थितमेघकालैः, शाकंभरीपुरसमागतसंघवाचा ॥ शांतिस्तवः प्रबलमारिभयापहारी, यैर्निर्ममे सुविहितक्रममार्गदीपैः ॥ १ ॥

हवे ए स्तोत्रनो अर्थसहित प्रारंभ करियें छैयें.

शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥
स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥

अर्थः—हुं (शांतिं के०) श्रीशांतिजिन प्रत्यें (नमस्कृत्य के०) नमस्कार करीनें, तेज श्रीशांतिजिनना (मंत्रपदैः के०) मंत्रोनां पदोयें करीने अर्थात् अक्षरगर्भित जे मंत्रनां पद, तेणें करीने (स्तौमि के०) स्तुति करुं बुं, ते शा माटे स्तुति करुं बुं? तो के (शांतये के०) दुःख, दुरित, उपसर्ग, तेनी निवृत्तिने माटे स्तुति करुं बुं, हवे ते श्रीशांतिजिन केहेवा बे? तो के (शांति के०) दुःखउपसर्गनिवृत्तिरूप, अथवा कषायोदयापगम लक्षण, तेना (निशांतं के०) घर बे, वा स्थानकरूप बे, वली (शांतं के०) उपशमोपेत बे, एटले रागद्वेषरहित बे. वली (शांताऽशिवं के०) शांत एटले उपशमने पाम्या बे अशिव एटले अकल्याणकारक अरिष्ट उपद्रवो जेथकी एवा श्रीशांतिजिन बे. वली केहेवा बे? तो के (स्तोतुः के०) स्तुति करनारना (शांतिनिमित्तं के०) अरिष्टोपद्रवनिवारण रूप जे शांति, तेना निमित्तं एटले उत्पादनहेतु बे ॥ १ ॥

उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥
शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥

अर्थः—(शांतिजिनाय के०) श्रीशांतिजिन, तेमने (नमोनमः के०) नमस्कार थाउ; आंहीं नमोनमः ए द्विरुक्ति जे बे, ते अत्यादर जणाववाने अर्थें अथवा ससंभ्रम ख्यापनने अर्थें बे. हवे ते श्रीशांतिजिन केहेवा बे? तो के (उमितिनिश्चितवचसे के०) अवति एटले रक्षण करे बे, तेने ॐ कहीयें, अने ॐ एटले परंज्योति, इति केतां ए प्रकारें निश्चित एटले निर्धार कर्युं बे वचः एटले वाचक पद जेमनुं एवा बे, अथवा ॐ एवा वचनें करीने आख्येय एटले केहेवा योग्य बे वाच्यवाचकजाव जेमनो एवा बे. वली केहेवा बे? तो के (जगवते के०) समग्र ऐश्वर्य बे जेमने तेमने जगवान् कहियें, वली जे (पूजां के०) पूजाने (अर्हते के०) योग्य बे अर्थात् सुराऽसुरनरेंद्रादिकें करेली पूजाने योग्य एवा बे. वली (जयवते के०) जेमने रागादिक पराजव करी शकता नथी माटे जयवान् जययुक्त बे. वली (यशस्विने के०) प्रसिद्ध प्रशस्त यश बे जेमनुं, एवा बे. वली (दमिनां के०) इंद्रियोने दमन कर्यां बे, वश कर्यां बे जेणें एवा जे मुनि महाराज, तेमना (स्वामिने के०) स्वामी एटले नाथ एवा बे ॥ २ ॥

सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥

अर्थः—(शांतिदेवाय के०) शोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथजी तेमने (नमोनमः के०) नमस्कार थाउ. ते केहेवा छे? तो के (सकल के०) समस्त (अतिशेषक के०) चोत्रीश अतिशय, ते रूप (महासंपत्ति के०) मोहोटी संपदा तेणें करीने (समन्विताय के०) सहित, तथा (शस्याय के०) प्रशंसवा योग्य एवा (च के०) वली (त्रैलोक्य के०) स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल रूप त्रण लोक, तेणें (पूजिताय के०) पूजित एवा छे ॥ ३ ॥

सर्वामरससमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥
भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥

अर्थः—(तस्मै के०) ते श्रीशांतिजिन महाराज तेमने (सततं के०) निरंतर, (नमः के०) नमस्कार थाउ. ते केहेवा छे? तो के (सर्वामरसमूह के०) समस्त चार निकायना देवताना समूह सहित, जे तेहना (स्वामिक के०) स्वामी जे चोशठ इंद्रो छे, तेमणें (संपूजिताय के०) सम्यक् प्रकारें पूजित एवा छे. वली (निजिताय के०) नथी जींत्या देवादिकोयें अर्थात् कोइयें पोताने वश करेला नथी एवा तथा (भुवन के०) त्रण भुवनना (जन के०) लोको तेमनुं (पालन के०) पालन करवुं, तेहने विषे (उद्यततमाय के०) अत्यंत सावधान एवा छे ॥ ४ ॥

सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय ॥
दुष्टग्रहभूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥

अर्थः—वली केहेवा छे? तो के (सर्व के०) समस्त जे (दुरित के०) पाप तेहनो (उंघ के०) समूह, तेहना (नाशनकराय के०) नाशकरनार छे. वली ते केहेवा छे? तो के (सर्वाशिव के०) सर्व जे अशिव एटले उपद्रव तेहना (प्रशमनाय के०) प्रकर्षें करी एटले अतिशय पणे समावणहार छे, वली केहेवा छे? तो के (दुष्टग्रह के०) कुड आकरा एवा जे मंगल, शनिश्चर, राहु, केतु, इत्यादिक असुखनां करनार ग्रह तथा (भूत के०)

वृक्षादिकने विषे वसनार, (पिशाच के०) राक्षसादिक, तथा (शाकिनी नां के०) शाकिनी ते मंत्राधिष्ठित स्त्री, ए सर्वना उपद्रवो तेमने (प्रमथ नाय के०) प्रकर्षें करी मथन एटले नाशना करनार ले, मटाडनार ले अ र्थात् श्रीशांतिजिनेश्वरना स्मरण करनारना पूर्वोक्त सर्व उपद्रवो, नाशने पामे ले माटे तेने नमस्कार थाय ले ॥ ५ ॥

यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥
विजया कुरुते जनहित,मिति च नुता नमत तं शांतिं॥६॥

अर्थः– हे नव्य जनो! तमें (तं के०) ते (शांतिं के०) श्रीशांतिजिन प्रत्यें (नमत के०) प्रणाम करो, ते कया शांतिजिन? तो के (यस्य के०) जे शां तिजिननो (इति के०) ए पूर्वोक्त प्रकारें करीने (नाममंत्र के०) नामरूप जे महामंत्र तेणें करीने (प्रधानवाक्य के०) प्रकृष्ट सर्वोत्तम पवित्र ए वुं जे वचन तेनो (उपयोग के०) उपयोग एटले नामोच्चारणमात्र स्मर ण तेणें करीने (कृत के०) कस्यो ले चित्तने विषे (तोषा के०) संतोष जेणें एवी (विजया के०) विजयानामें जे देवी ले, ते श्री शांतिजिनना ना मस्मरण करनारा एवा जे (जन के०) जन एटले मनुष्य, तेनुं (हितं के०) हित जे तेने (कुरुते के०) करे ले. (च के०) वली ते विजया देवी केहेवी ले? तो के (इति के०) ए पूर्वें कह्यो एवो जे प्रकार ते प्रकारें करी ने (नुता के०) नमेली ले, स्तुति करेली ले, श्रीशांतिनाथने एवी ले ॥ ६ ॥

नवतु नमस्ते नगवति,विजये सुजये परापरैरजिते॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे नवति ॥७॥

अर्थः–(नगवति के०) अहीं नग शब्द जे ले, ते ज्ञान, माहात्म्य, यशो रूप जे वीर्य, तेनो प्रयत्नेछालक्षण ग्रहण करवो, ते जेने विद्यमान होय, तेने नगवती कहीयें. तेना आमंत्रणें हे नगवति ! एवी (विजये के०) सहन न करी शके एवा ईर्ष्यावाला पुरुषोनुं परानव करवापणुं ले जेने विषे तेना संबोधने हे विजया देवि ! तथा (सुजये के०) जेना प्रतापनी वृद्धिने शत्रुउयें परानव कस्यो नथी, तेना संबोधने हे सुजयादेवि! अथवा सुजय एटले शोनन ले जयपणुं जेने अथवा सु एटले अतिशयें करीने

छे जय जेनो एवी तेना संबोधने हे सुजयानामा देवि! तथा (परापरैर जिते के०) पर एटले उत्कृष्ट एवा अपर एटले अन्य देवो तेमणें नजिता एटले नथी पराजव कस्यो जेनो तेना संबोधने हे परापरैरजिते देवि! अर्थात् हे अजिता देवि! तथा (अपराजिते के०) कोइ स्थानकें पराजवनें न पामेली एवा आमंत्रणे हे अपराजिता देवि! तुं (जगत्यां के०) पृथिवीने विषे (जयति के०) जयवंती वर्त्तो, (इति के०) एम स्तुति करे छते (जयावहे के०) स्तुति करनार जक्तजनने जयनी आवहन करनारी थाय छे तेनें संबोधने हे जयावहा देवि! तथा (जवति के०) स्त्रीलिंगें जवत् शब्दना संबोधने हे जवति! ए प्रकारनी पूर्वोक्त एक विजया, बीजी जया, त्रीजी अजिता, चोथी अपराजिता, एवी चार देविउ, (ते के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार (जवतु के०) थाउ ॥ ७ ॥

सर्वस्यापि च संघस्य, जद्रकल्याणमंगलप्रददे ॥
साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥

अर्थः—(सर्वस्यापिच के०)चतुर्विध एवा सर्व पण,च पादपूरणार्थ छे. (संघस्य के०) संघने (जद्र के०) सौख्य, (कल्याण के०) निरुपद्रवपणुं, (मंगल के०) दुरितोपशांति, इत्यादिकने (प्रददे के०) प्रकर्षेंकरी आपनार एवी, अर्थात् एतादृशगुणयुक्त एवी हे देवि! (च के०) वली (साधूनां के०) मोक्षने जे साधे ते साधु कहियें एटले मुनियो तेमने (सदा के०) सर्वदा (शिव के०) निरुपद्रवत्व, (सुतुष्टि. के०) शोजन चित्तनी शांति, (पुष्टि के०) धर्मनी वृद्धि, तेने (प्रदे के०.) देनारी एवी हे देवि! तुं (जीयाः के०) जयवंती हो, अर्थात् सर्वोत्कर्षपणे जगत्मां वर्त्तो ॥ ८ ॥

जव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृतिनिर्वाणजननि सत्त्वानां ॥
अजयप्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥ ९ ॥

अर्थः—(जव्यानां के०) जव्य जीवोने (कृतसिद्धे के०) करी छे सिद्धि जेणें एटले सर्वकार्योनी निर्विघ्नपणे समाप्ति करी छे जेणें एवी, वली (सत्त्वानां के०) जव्य जीवोने (निर्वृति के०) चित्तसमाधि तथा (निर्वाण के०) मोक्ष एटले परमानंद एम निर्वृति, निर्वाणने (जननि के०) उत्पन्न क

रनारी माटे निर्वृतिनिर्वाणजननि एवा संबोधनवाली, उक्तं च "सम्म द्दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च" तथा (अजय के०) निर्जयपणुं तेने (प्रदान के०) प्रकर्षे करीने देवाने (निरते के०) तत्पर छे. तथा (स्वस्तिप्रदे के०) कल्याणने प्रकर्षे करी देवावाली एवी अर्थात् ए पूर्वोक्त सर्वगुणयुक्त एवा संबोधनवाली हे देवि ! (तुभ्यं के०) तुजने (नमोऽस्तु के०) नमस्कार हो ॥ ९ ॥

भक्तानां जंतूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥
सम्यग्दृष्टीनां धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥

अर्थः–(भक्तानां के०) पोतानी सेवाना करनार भक्तिमंत एवां (जंतूनां के०) जे जीव छे, तेमनें (शुभावहे के०) शुभ एटले श्रेयपणानें आ एटले सर्व प्रकारें वहा एटले वहन करनारी पमाडनारी छे माटे शुभकारिका कहियें, तथा वली (सम्यग्दृष्टीनां के०) सम्यग्दृष्टि जीवोने (धृति के०) संतोष, (रति के०) प्रीति, (मति के०) अप्राप्तविषयनी बुद्धि, एटले भविष्यकालने जाणनारी बुद्धि, (बुद्धि के०) सांप्रतदर्शिनी एटले वर्त्तमानकालना विषयनी जाणनारी एवी बुद्धि, ते प्रत्यें (प्रदानाय के०) अतिशयपणे देवाने (नित्यं के०) सदैव निरंतर, (उद्यते के०) सावधान उद्यमवंत, एवां सर्व संबोधनयुक्त (देवि के०) हे देवि ! तमें छो ॥ १० ॥

जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥
श्रीसंपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि जयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥

अर्थः–(जिनशासन के०) श्रीवीतरागना शासननें विषे (निरतानां के०) रक्त ते रागवंत तत्पर एवा अने (च के०) वली केहेवा ? तो के (शांतिनतानां के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें नमस्कार करनारा, प्रणाम करनारा एवा (जगति के०) जगतने विषे (जनतानां के०) जन समुदायो जे छे, तेमने (श्री के०) लक्ष्मी, ते सुवर्णादि तथा (संपत् के०) ऋद्धिविस्तार, (कीर्त्ति के०) ख्याति, ते एक दिग्व्यापि, (यशः के०) यश ते सर्वदिग्व्यापी एटले सर्वत्र प्रसिद्धि तेनी (वर्द्धनि के०) वधारनार एवी (जयदेवि के०) हे जया नामा देवि ! तमे (विजयस्व के०) सर्वोत्कर्षे करी वर्त्तो ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर, दुष्टग्रहराजरोगरण
नयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादि
भ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु
शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं.
कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥

अर्थः—(सलिल के०) जल ते समुद्रादिकनां, (अनल के०) अग्नि ते उत्पातरूप, (विष के०) विष ते अफीणादिक, (विषधर के०) सर्प, (दुष्टग्रह के०) दुष्ट ग्रह एटले चालवामां अशुभ एवा शनिश्चर, राहु, केतु आदिक दुष्टस्वभाववाला ग्रह. (राज के०) दुष्टस्वभाव वाला दंमादिक करनारा अर्थग्रहण करनारा एवा राजा, (रोग के०) दुष्टज्वर, भगंदर, महोदरादिक रोग अने (रण के०) संग्राम, ए सर्वना (भयतः के०) भय थकी (रक्ष रक्ष के०) रक्षण कर, रक्षण कर. वली (राक्षसके०) राक्षस ते व्यंतर विशेष, (रिपुगण के०) शत्रुना समूह, (मारी के०) मरकीनो उपद्रव, (चोर के०) चोर ते तस्कर, (ईति के०) सात ईतिना भय, (श्वापद के०) मदोन्मत्त हस्ती, सिंहादि प्रमुख दुष्ट जीवो, (आदिभ्यः के०) आदिशब्दथकी शाकिनी, माकिनी, भूत, वेतालादिक पण ग्रहण करवां ते सर्वना भयथकी रक्षण कर, रक्षण कर. आंहीं रक्ष रक्ष ए क्रियापद छे ते आवता श्लोकमांथी ग्रहण करेलुं छे, कारण के बेहु श्लोकनो संबंध एकत्र छे ॥ १२ ॥ (अथ के०) एटला थकी अनंतर हे विजयामाता ! (त्वं के०) तुं (सु के०) अतिशयें करीने अथवा सुष्ठु एवुं (शिवं के०) निरुपद्रवपणुं तेने (कुरुकुरु के०) कर कर, (च के०) वली (शांतिं के०) शांति ते पूर्वे उत्पन्न रोगनी निवृत्तिरूप तेने (सदा के०) निरंतर (कुरु कुरु के०) कर कर, (इति के०) ए प्रकारें वली (तुष्टिंकुरुकुरु के०) संतोषपणाने कर कर, तथा (पुष्टिं कुरु कुरु के०) पुष्टि जे वृद्धि अथवा शरीरनुं नीरोगत्वपणुं ते प्रत्यें कर कर, तथा (स्वस्तिं कुरु कुरु के०) कल्याणपणा प्रत्यें कर कर, आमां कुरुकुरु शब्द जे छे, ते अत्यादर ख्यापनने अर्थे छे,तथा मंत्रपदमां द्विरुच्चार सर्वत्र देखाय छे, एवो संप्रदाय पण छे ॥ १३ ॥

भगवति गुणवति शिव शां, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानां ॥ उंमिति नमोनमो ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥

अर्थः–(भगवति के०) हे भगवति! एटले समग्र ऐश्वर्यादि गुणयुक्त, तथा (गुणवति के०) हे गुणवति! गुण एटले औदार्य, धैर्य, गांभीर्य, शौर्यादिक सकल गुणोयें करी शोभायमान एवी हे देवि! तुं (इह के०) आ पृथ्वीने विषे (जनानां के०) समस्त लोकोने (शिव के०) निरुपद्रव कल्याण, (शांति के०) मरक्यादि रोगनी उपशांति, (तुष्टि के०) मनःसंतोष, (पुष्टि के०) शरीरादिकनी वृद्धि, दृढपणुं, (स्वस्ति के०) क्षेम ते कल्याण. तेने (इह के०) आ जगतने विषे (कुरुकुरु के०) कर, कर, हवे मंत्राक्षरें करीने विजया देवीने स्तवे छे. (उंमिति के०) ज्योतिःस्वरूपिणि एवी हे देवि ! तुने (नमोनमः के०) नमस्कार थाउ, तथा (ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा के०) ए प्रकारना मंत्रस्वरूपिणि एवी हे देवि! तने नमस्कार थाउ. आंहीं फुट्फुट् ए जे शब्द लख्या छे, ते विघ्न त्रासार्थ मंत्राक्षर प्रयोग छे. अने आ ह्रां ह्रीं इत्यादि अक्षरो जे लख्या छे, ते शांतिनो मूलमंत्र जाणवो ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां (पाठांतरे कुरुते शांतिनिमित्तं) नमोनमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥

अर्थः–(तस्मै के०) ते शांतिनाथने (नमोनमः के०) पुनः पुनः नमस्कार थाउ. ते कया शांतिनाथने नमस्कार थाउ? तो के (एवं के०) ए पूर्वोक्त प्रकारें (यन्नामाक्षरपुरस्सरं के०) जेना नामाक्षरमंत्रपूर्वक (संस्तुता के०) स्तुति करेली एवी (जया के०) जयानामा (देवी के०) देवी ते (शांतिं के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें (नमतां के०) नमस्कार करनारा एवा भव्यजीवोने (शांतिं के०) सर्वारिष्टप्रशमन, तेने (कुरुते के०) करे छे, पाठांतरे (कुरुतेशांतिनिमित्तं के०) शांति जे सर्वोपद्रवनिवृत्तिरूप, तेनुं निमित्त एटले हेतु, तेने कुरुते एटले उत्पन्न करे छे ॥ १५ ॥

इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ स
लिलादिजयविनाशी, शांत्यादिकरश्च जक्तिमताम् ॥ १६ ॥

अर्थः–(शांतेः के०) ए श्रीशांतिनाथजीनो (स्तवः के०) स्तव. (ते ज क्तिमतां के०) जक्तिमान् प्राणीउ जे वे, तेमने (सलिलादिजय के०) समुड्रोप इवादिजय, आदिं आदिशब्दथकी अग्नि, विष, सर्प, डुष्टगज, सिंह, संग्राम, शत्रु, चोर, शाकिनी, जूत, प्रेत, पिशाच, रोग, शोकादिक एवा जयनो (वि नाशी के०) विनाश करनारो, (च के०) वली (शांत्यादिकरः के०) शां त्यादि ते शांति, सुख, सौजाग्य, ऋद्धि, वृद्धि, कल्याण अने जय ए सर्वने करनारो (जवतु के०) थाउ. वली ते स्तव केहेवो वे ? तो के (इति के०) आ प्रकारें (पूर्वसूरिदर्शित के०) पूर्वाचार्यें दर्शित नाम उपदिष्ट करेला एवां (मंत्र पद के०) मंत्रनां पद एटले मंत्राक्षर बीज, तेणें (विदर्भितः के०) विरचित एवो वे. आ श्लोकनो तथा आवता बीजा श्लोकनो संबंध साथें वे ॥ १६ ॥

यश्चैनं पठति सदा,शृणोति जावयति वा यथा
योगं ॥ स हि शांतिपदं यायात् (पाठांतरे
शिवशांतिपदं यायात्) सूरिश्रीमानदेवश्च ॥१७॥

अर्थः–(च के०) वली) यः के०) जे पुरुष, (यथायोगं के०) योग ने न उल्लंघन करीने एटले योग प्रत्यें यथा कार्यनो उद्देश करीने (सदा के०) सर्वदा (पठति के०) पोतें पाठ करे वे, (एनं के०) ए स्तोत्रने (शृणो ति के०) अन्यपासेंथी श्रवण करे वे, (वा के०) अथवा (जावयति के०) मनमध्यें जावना करे वे, एटले मनमां स्मरण करे वे, तो (हि के०) निश्चें (सः के०) ते पुरुष, (शांतिपदं के०) शांतिनुं स्थानक एटले रोग, उपसर्ग, व्याधि, डुःख, दौर्मनपणुं तेथकी रहितत्व, तेने (या यात् के०) पामे (च के०) वली (सूरिश्रीमानदेवः के०) “ श्रीमा नदेवसूरि ” पण शांतिपदने पामे. आ पदेंकरीनें स्तोत्रकर्त्तायें पोता ना नामनीपण सूचना करी वे. पाठांतरे (शिवशांतिपदंयायात् के०) शिव जे कल्याण, शांति जे सर्वोपद्रवादिनिवृत्ति, तेनुं पद जे स्थानक तेने यायात् एटले पामें ॥ १७ ॥

उपसर्ग्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥

अर्थः–(जिनेश्वरे के०) जिनेश्वर एवा भगवान् ते (पूज्यमाने के०) पूजे छते, (उपसर्ग्गाः के०) देवादिकृत उपसर्गो जे छे ते, (क्षयं के०) क्षय प्रत्यें (यांति के०) पामे छे,अने (विघ्नवल्लयः के०) विघ्ननी वल्लीउ जे छे ते, (छिद्यंते के०) छेदाय छे, (मनः के०) मन जे छे ते, (प्रसन्नतां के०) प्रसन्नताने (एति के०) पामे छे ॥ १८ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥१९॥

अर्थः–(जैनंशासनं के०) जिनतीर्थंकरसंबंधि जे शासन एटले आदेश ते, (जयति के०) जयवंतुं वर्त्ते छे, ते शासन केहेवुं छे ? तो के (सर्वमंगलमांगल्यं के०)सर्वमंगलमांहे मांगलिक छे, वली केहेवुं छे? तो के (सर्वकल्याणकारणं के०) सर्व कल्याण एटले सुखवृद्धि, तेनुं कारण छे, वली (सर्वधर्म्माणां के०) सर्वधर्मोना मध्यमां (प्रधानं के०) प्रधान छे, एटले मुख्य छे ॥ १९ ॥ इति लघुशांतिस्तवः सपूर्णः ॥ ४४ ॥

॥ अथ चउक्कसाय ॥

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणू ॥
सरसपिअंगु वन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥१॥

अर्थः–(भुवणत्तयसामिउ के०) त्रण भुवनना स्वामी, (पासु के०) श्रीपार्श्वनाथ छे, ते (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो, ते श्रीपार्श्वनाथ केहेवा छे? तो के, (चउक्कसाय के०) क्रोधादिक चार कषायरूप जे (पडिमल्ल के०) प्रतिमल्ल एटले वैरी, तेना (उल्लूरणु के०) उच्छेदनार छे, एटले टालनार छे, वली केहेवा छे ? तो के (दुज्जय के०) दुर्जय एटले दुःखें जींत्यो जाय, एवो (मयण के०) मदन एटले कंदर्प ते संबंधि जे (बाण के०) बाण, एटले तीक्ष्ण बाण, तेना (मुसुमूरणू के०) भाजनार छे, एटले उन्मूलन करनार छे. वली केहेवा छे ? तो के (सरस के०) रसें करीने सहित एटले

स्निग्ध, नीलो एवो (पिअंगु के०) प्रियंगु ते रायणनो वृक्ष, ते समान (वन्नु के०) शरीरनो वर्ण छे जेनो, वली केहेवा छे? तो के (गयगामि उ के०) गजनी पेरें गमनना करनार छे, अर्थात् हस्तीनी जेवी गति छे॥१॥

जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणम
णि किरणा लिद्धउ ॥ नं नव जलहर तडिल्लय
लंछिउ,सो जिणु पासु पयछउ वंछिउ ॥२॥ इति ॥ ४५ ॥

अर्थः—(सो के०) ते (जिणुपासु के०) श्रीपार्श्वजिन ते, (वंछिउ के०) महारा वंछित प्रत्यें (पयछउ के०) आपो, हवे ते श्रीपार्श्वजिन केहेवा छे? तो के (जसु के०) जेना (तणु के०) शरीरनी (कंति के०) कांति एटले द्युति तेनो (कडप्प के०) कलाप एटले समूह ते (सोहइ के०) शोभे छे. ते कांतिसमूह केहेवो छे? तो के (सिणिद्धउ के०) स्निग्ध छे, एटले चीकाशसहित छे, वली ते कांतिसमूह केहेवो छे? तो के (फणि के०) नागेंद्रनी फण ते संबंधि जे (मणि के०) मणिर त्न तेना (किरण के०) कीरणोयें करी (आलिद्धउ के०) व्याप्त छे, एटले. सहित छे, वली ते कांतिसमूह केवी रीतें अने केवो शोभे छे? तो के (तडि त् के०) विजली, तेनी (लय के०) लतायें करी (लंछिउ के०) लांछि त एटले सहित एवो जे (नवजलहर के०) नवो मेघ ते (नं के०) जेम शो भे छे, तेम ते कांतिसमूह शोभे छे ॥ २ ॥ इति चउक्कसाय ॥ ४५ ॥

॥ अथ पोसहनुं पच्चरकाण ॥

करेमि भंते पोसहं, आहारपोसहं देसउ सव्वउ॥ सरीर
सक्कारपोसहं सव्वउ ॥ बंभचेरपोसहं सव्वउ॥ अव्वावार
पोसहं सव्वउ॥ चउव्विहे पोसहं ठामि॥ जाव दिवसं अहो
रत्तं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का
एणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदा
मि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

अर्थः–(नंते के०) हे नगवन् हे कल्याणकारक ! अगीआरमा पौषधव्र तने अथवा जे धर्मनी पोष नाम पुष्टि प्रत्यें धरे, तेने पोषध कहियें, ते (पोसहं के०) पोषध प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं बुं. एटले अष्टमी, चतुर्दशी प्रमुख दिवसोने विषे जे पोषधनो नियम करवो, ते चार प्रकारें ठे, तेहीज वली विशेषपणे कहियें बैयें. प्रथम (आहारपोसहं के०) अशनादिक आहारनिषेध पोषध पहेलो नेद, ते वली बे प्रकारें ठे. एक तो (देसर्ज के०) देशथकी निषेध, ते त्रिविध आहारत्यागरूप तिविहार तथा विगय त्याग, आयंबिल, एकासण पच्चरकाणथी करवो ते देशथकी आहारत्याग पोसह कहियें अने बीजुं (सव्वर्ज के०) सर्वथकी चारे आहारनो त्याग करवो, ते सर्वथकी आहारत्याग पोसह कहियें. ए प्रथम आहारत्याग पोसहना बे नेद कह्या. हवे बीजुं (सरीरसक्कारपोसहं के०) शरीर संबंधि स्नान, उवटण, विलेपणादिक तथा वस्त्राजरणादिकें शोनानो नि यम तथा नख, केश, रोमनुं समारवुं, तेल चोपडवुं, पीठीनुं करवुं इत्यादि शरीरसत्कारनिषेध नामें ए बीजुं पोसह ठे, ते (सव्वर्ज के०) सर्वथकी जाणवुं. त्रीजो (बंजचेरपोसहं के०) ब्रह्मचर्यपोषध ते (सव्वर्ज के०) सर्व थकी जाणवुं एटले सर्वथकी ब्रह्मचर्यनी पुष्टि करे, सर्व प्रकारें स्त्रीसेवन न करे. चोथुं (अवावारपोसहं के०) अव्यापारनी पुष्टिरूप ते (सव्वर्ज के०) सर्वथी जाणवुं. एटले कृषी, सेवा, वाणिज्य, पशुपालन, गृहकर्म प्रमुखना जे व्यापार, तेनो सर्वथा निषेध करे, (चउव्विहेपोसहं के०) ए चार प्रकारना पोषधने विषे (ठामि के०) हुं तिष्ठुं, रहुं, अंगीकार करुं बुं, (जाव के०) ज्यांसुधी (अहोरत्तं के०) दिवस अने रात्रि मली आठ पहोर पोषध प्रत्यें अथवा (जावदिवसं के०) ज्यांसुधि दिवस प्रत्यें क्रमण ठे त्यांसुधि चार पहोर पोषधव्रत प्रत्यें, अथवा (जावरत्तं के०) ज्यांसुधि रात्रिप्रत्यें क्रमण ठे त्यां सुधी चार पहोर पोषधव्रत प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं, सेवुं, त्यांसुधि. अने थोडोक दिवस होय, तेवारें रात्रिपोसह जो लीए तो "जावदिवसं रत्तं पज्जुवासामि" एवो पाठ कहे, ज्यांसुधि थोडो दिवस होय, त्यांथी लेइने आखी रात्रिसुधि पोसह निरतिचार पालुं, (डुविहंतिवि हेणं के०) डुविध, त्रिविधें करी इत्यादिनो अर्थ सुगम ठे ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

सागरचंदो कामो, चंदवर्डिसो सुदंसणो धन्नो ॥
जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीवियंतेवि ॥ १ ॥

अर्थः—(जीवियंतेवि के०) जीवितनो अंत थाते,आयुनो विनाश थाते अर्थात् मरणांत उपसर्ग थाते थके पण, (जेसिं के०) जेहनी (पोसहपडिमा के०)पोषधप्रतिमा, (अखंडिआ के०) अखंडित रही, संपूर्ण रही, ते श्रावक (धन्नो के०) धन्य छे, ते श्रावकोनां नाम कहे छे. (सागरचंदो के०) एक सागरचंद कुमार, बीजो (कामो के०) कामजी, त्रीजो (चंदवर्डिसो के०) चंद्रावतंस राजा. चोथो (सुदंसणो के०) सुदर्शन शेठ ॥ १ ॥

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय ॥
जेसिं पसंसइ नयवं, दढव्वयं तं महावीरो ॥ २ ॥
पोसह विधिं लीधउं, विधिं पारिउं, विधि करतां जे
कांइ अविधि हुउ हुइ, ते सवि हुं मन, वचन,
कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ४७ ॥

अर्थः—एक (सुलसा के०) सुलसा श्राविका, बीजा (आणंद के०) आनंद श्रावक (य के०) वली त्रीजा (कामदेवा के०) कामदेव श्रावक, ए त्रणे (धन्ना के०) धन्य छे, (सलाहणिज्जा के०) श्लाघनीय छे, एटले श्लाघा करवा योग्य छे. (तं के०).ते प्रत्यक्ष पणे (जेसिं के०) जेहना (दढव्वयं के०) दृढव्रत प्रत्यें (नयवं के०) नगवान् (महावीरो के०) श्रीमहावीर स्वामी, पोतें श्रीमुखें (पसंसइ के०) प्रशंसे छे, वखाण करे छे, माटें ते धन्य कृतपुण्य जाणवा ॥ २ ॥ पोषध व्रत विधियें लीधुं होय, विधियें पाखुं होय, विधि करतां जे कांइ अविधि हुउ होय, ते सवे मन, वचन अने कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ४७ ॥

॥ अथ नरदेसरनी सज्झाय प्रारंनः ॥

नरहेसर बाहुबली, अनय कुमारो अ ढंढणकुमारो ॥
सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥

अर्थः—एक (जरहेसर के०) श्रीजरतेश्वर, प्रथम चक्रवर्ती श्रीरुषजदेवना पुत्र, बीजा (बाहुबली के०) बाहुबली ते पण श्रीरुषजदेवना पुत्र, जरतेश्वर करतां पण अधिक बलवंत जाणवा, त्रीजा (अजयकुमारो के०) अजयकुमार,श्रेणिकराजाना पुत्र, (च के०) वली चोथा (ढंढणकुमारो के०) ढंढणकुमार, ते श्रीकृष्णजीना पुत्र. पांचमा (सिरिउ के०) श्रीक, ते श्रीथूलिजद्रजीना न्हाना जाई, बठा (अणियोउत्तो के०) अनिकापुत्र आचार्य, जे गंगा नदी उतरतां केवलज्ञान पाम्या, सातमा (अइमुत्तो के०) अतिमुक्त कुमार, जेणें ठ वर्षनी अवस्थामां श्रीवीरपासेंथी दीक्षा लीधी, (च के०) वली आठमा (नागदत्तो के०) नागदत्त, श्रेष्ठी पुत्र, अदत्तादानना त्यागी जाणवा ॥ १ ॥

मेअज्ज थूलिजद्दो, वयररिसी नंदिसेण सीहगिरी ॥
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिउ केसि करकंमु ॥ २ ॥

अर्थः—नवमा (मेअज्ज के०) मेतार्यमुनि, जेने माथे सुवर्णकारें आलां चांबडां वींट्यां, दशमा (थूलिजद्दो के०) श्रीथूलिजद्रमुनि, जेणें कोश्या वेश्याने घरे चोमासुं कीधुं, अने अखंम शील राख्युं, तथा वेश्याने श्राविका कीधी, अगीआरमा (वयररिसी के०) वज्रऋषि एटलें वज्रस्वामी, बारमा (नंदिसेण के०) नंदिषेणजी, जेणें वेश्याने घरे रहीने बार वर्ष पर्यंत प्रतिदिवस दश दश जण प्रति बोध्या, तेरमा (सीहगिरी के०) श्रीसिंहगिरिजी महाराज, ते श्रीवज्रस्वामीना गुरु, चउदमा (कयवन्नो के०) कृतवर्णकुमार, श्रेष्ठिपुत्र, (च के०) वली पंदरमा (सुकोसल के०) सुकोशलमुनि, जेमनुं शरीर,वाघणीयें जक्षण कीधुं,शोलमा (पुंमरिउ के०) श्रीपुंमरीकजी, श्रीप्रथम तीर्थंकरना प्रथम गणधर, वली जे चैत्री पूनमना दिवसें पांच कोडी मुनि संघातें सिद्धगिरिनी उपर सिद्धनगरीमां पहोता, सत्तरमा (केसि के०) केशीकुमार, ते परदेशी राजाना गुरु, अढारमा (करकंमु के०) करकंमु, प्रत्येकबुद्ध मुनि, जे जर्जरीजूत वृषन प्रत्यें जोइने साधु थया ॥ २ ॥

हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिजद्दो अ ॥
जद्दो दसन्नजद्दो, पसन्नचंदो अ जसजद्दो ॥ ३ ॥

अर्थः— उंगणीशमा (हल्ल के०) हल्यकुमार, वीशमा (विहल्ल के०). विहल्यकुमार, ए बेहु पण श्रेणिकराजाना पुत्र जाणवा. एकंवीशमा (सुदंसण के०) सुदर्शन शेठ, जेना शीलने प्रजावें शूलिमांथी सिंहासन थयुं, बावीशमा (साल के०) साल मुनि, त्रेवीशमा (महासाल के०) महासाल मुनि ए बे श्रीगौतमस्वामीजीयें प्रतिबोध्या, चोवीशमा (सालिजद्दो अ के०) शालिजइ प्रसिद्धजोगी, श्रेष्ठिपुत्र, पच्चीशमा (जद्दो के०) जडबाहु स्वामी, चतुर्दश पूर्वना जाण, छवीशमा (दसन्नजद्दो के०) दशार्णजड, ते रिद्धिगारवें, जे श्रीवीरने वांदवा आव्या, त्यां संयम लीधो, सत्तावीशमा (पसन्नचंदो अ के०) प्रसन्नचंड राजर्षि, जेणें रौडध्यानथी सातमी नरकनां दलीयां मेलव्यां, तेने शुक्लध्यानथी विखेरीने केवलज्ञान प्रगट कीधुं, अठावीशमा (जसजद्दो के०) श्रीयशोजडसूरि, ते श्रीजडबाहुस्वामीना गुरु जाणवा ॥ ३ ॥

जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥
धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥

अर्थः— उंगणत्रीशमा (जंबुपहु के०) जंबुप्रजुस्वामी, जे अष्टवधू अने नवाणुं क्रोड ड्व्य, त्यागीने चरम केवली थया, त्रीशमा (वंकचूलो के०) वंकचूलराजकुमार, जे कर्मना वशथकी चोरना स्वामी थया, पछी साधुयें दीधेलां व्रत पालीने देवलोकें गया, एकत्रीशमा (गयसुकुमालो के०) गजसुकुमार, श्रीकृष्णजीना न्हाना जाई, सोमलनो करेलो अग्निनो उपसर्ग सहन करीने जे दीक्षाने दिवसेंज मोक्षें गया, बत्रीशमा (अवंतिसुकुमालो के०) अवंतिसुकुमार, जेनुं शीयालिणीयें शरीर जक्षण कीधुं, तोपण चारित्र धर्मथी न चव्या, जे नलिणी गुल्मविमानें पोहोता, तेत्रीशमा (धन्नो के०) धन्नो, ते शालिजडनो बनेवी, चोत्रीशमा (इलाइपुत्तो के०) एलाचीपुत्र, जे नाटक करतां थकां केवलज्ञान पाम्या, पांत्रीशमा (चिलाइपुत्तो के०) चिलातिपुत्र, जेनुं शरीर, कीडीयोएं चालणीप्राय कीधुं, तोपण उपशम, विवेक अने संवरना अर्थविचारथकी न चूक्या, जे अतिशय ज्ञान पामी स्वर्गगामी थया, (च के०) वली छत्रीशमा (बाहुमुणी के०) युगबाहु मुनी ॥४॥

अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥

अर्थः—साडत्रीशमा (अज्जगिरि के०) आर्यमहागिरिजी, श्रीथूलिभद्र स्वामिना शिष्य, आडत्रीशमा (अज्जरक्खिअ के०) आर्यरक्षित महाराजा, उंगणचालीशमा (अज्जसुहत्थी के०) आर्यसुहस्ती सूरि, थूलिभद्रजी जेना गुरु हता, चालीशमा (उदायगो के०) उदायिराजा, ते श्रीभगवतीसूत्रें प्रसिद्ध छे. एकतालीशमा (मणगो के०) मनकपुत्र, जेने अर्थें श्रीदशवैकालिक सूत्र नीपन्युं, बेंतालीशमा (कालयसूरि के०) श्रीकालिकाचार्य श्रीपन्नवणासूत्रना कर्त्ता, निगोदस्वरूपना वक्ता. त्रेंतालीशमा (संबो के०) सांब कुमार, अंबवतीना पुत्र, चुम्मालीशमा (पज्जुन्नो के०) प्रद्युम्न कुमार, रुक्मिणीना पुत्र, पीस्तालीशमा (मूलदेवोअ के०) मूलदेवराजा, जेणें तपस्वी साधुने निर्दोष अडद दीधा ॥ ५ ॥

पभवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ॥
सिज्जंस कूरगडूअ, सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥

अर्थः—छेंतालीशमा (पभवो के०) प्रभवस्वामीजी, जेने श्रीजंबुस्वामीयें प्रतिबोध्या, सुडतालीशमा (विन्हुकुमारो के०) विष्णुकुमार, जेणें श्रीसंघने कारणें लाख योजननुं रूप विकूर्व्युं, अडतालीशमा (अद्दकुमारो के०) आर्द्रकुमार, जे पूर्वभवें संयम विराधवाथकी अनार्यदेशमां उपन्या, अने अभयकुमारें मोकलेली जिनप्रतिमा देखीने जेने पूर्वभव सांभर्यो, साधु थया, उंगणपचाशमा (दढप्पहारी के०) दृढप्रहारी चोर, च्यार हत्याना करनार, मुनि थइने मोक्षें गया, (च के०) वली पचाशमा (सज्जंस के०) श्रेयांसकुमार, जेणें श्रीऋषभदेवप्रत्यें इक्षुरसनुं दान दीधुं, एकावनमा (कूरगडूअ के०) कूरगडू साधु, जेणें गुरुनुं क्षुत जे थूंक तेसहित खीचिडी खातां केवलज्ञान उपार्ज्युं, बावनमा (सिज्जंभव के०) सिज्जंभव आचार्य, जेणें पूर्वथकी श्रीदशवैकालिक सूत्र उद्धर्युं, त्रेपनमा (मेहकुमारो अ के०) मेघकुमार श्रेणिकराजाना पुत्र, जेनें श्रीवीरप्रभुजीयें हाथीनो पूर्वलो भव संभलावीने संयममां स्थिर कीधो ॥ ६ ॥

एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥
जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥

अर्थः–(एमाइ के०) इत्यादिक बीजा पण खंधकुमार, खंदकमुनि, कपिलमुनि, हरिकेशी मुनि, संयतमुनि, दमदंतमुनीश्वर, दमसारमुनीश्वर प्रमुख (महासत्ता के०) माहासत्त्वना धरनारा एटले महोटा पराक्रमी केटलाएक ते नवेंज मोक्षें गया, केटलाएक आगल मोक्षें जाशे, ते सर्वे मुफ नणी (सुहं के०) शिवसुखप्रत्यें (दिंतु के०) द्यो, आपो, ते महासत्त्वा केहेवा छे? तो के (गुणगणेहिं के०) ज्ञानादिक गुणोना गणें करी एटले समूहें करीने (संजुत्ता के०) संयुक्त छे, वली केहेवा छे? तो के (जेसिं के०) जेना (नामग्गहणे के०) नामग्रहण करवाथकी (पावपबंधा के०) पापना प्रबंध एटले समूह जे छे, ते (विलय के०) विनाश प्रत्यें (जंति के०) पामे छे एवा छे ॥ ७ ॥

सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती॥
नमयासुंदरी सीया, नंदा नद्दा सुनद्दा य ॥ ८ ॥

अर्थः–एक (सुलसा के०) सुलसा श्री वीरस्वामीनी मुख्य श्राविका, बीजी (चंदनबाला के०) चंदनबालिका श्रीवीरस्वामीनी प्रथम साधवी, त्रीजी (मणोरमा के०) मनोरमा सुदर्शनशेठनी नार्या, चोथी (मयणरेहा के०.) मदनरेखा, नमिराजर्षिनी माता, पांचमी (दमयंती के०) दमयंती नलराजानी राणी, जेनुं मस्तक दीवानी पेरें प्रकाशकारी थातुं हतुं, छठी (नमयासुंदरी के०) नर्मदासुंदरी, सातमी (सीया के०) सीता सती, आठमी (नंदा के०) नंदा ते अनयकुमारनी माता, तथा नवमी वज्रस्वामीनी माता पण नंदा जाणवी, दशमी (नद्दा के०) नड़ा शेठाणी, शालिनड़नी माता, (च के०) वली अगीआरमी एवंतिसकुमारनी माता पण नड़ा जाणवी, बारमी (सुनद्दा के०) सुनड़ा जेणें काचे तांतणे चारणी बांधी, कूवामांथी जल काढी चंपानगरीनी पोल उघाडी, तथा तेरमी श्रीकृष्णजीनी उरमान नगिनी, तेनुं नाम पण सुनड़ाज जाणवुं ॥ ८ ॥

रायमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरी देवी ॥
जिठ सुजिठ मिगावई, पनावई चिल्लणा देवी॥ ए॥

अर्थः–चौदमी (रायमई के०) राजिमती जेणें गिरिगुफामांहे संयम

थकी पडता एवा रथनेमि प्रत्यें सुजाषित वचनें स्थिर कीधो, पंदरमी (रिसिदत्ता के०) रुषिदत्ता सती, शोलमी (पउमावइ के०) पद्मावती करकंडुजीनी माता,सत्तरमी (अंजणा के०) अंजना सुंदरी,हनुमंत वीरनी माता, अढारमी (सिरीदेवी के०) श्रीदेवी, अतिमुक्तकुमारनी माता, ओगणीशमी (जिठ के०) ज्येष्ठा, वीशमी (सुजिठ के०) सुज्येष्ठा, एकवीशमी (मिगावई के०) मृगावती, बावीशमी (पजावइ के०) प्रजावती, त्रेवीशमी (चिल्लणादेवी के०) चेलणा राणी, ए पांचे चेला राजानी पुत्रीयो जाणवी ॥९॥

बंनी सुंदरी रुप्पिणि, रेवइ कुंती सिवा जयंती य ॥
देवइ दोवइ धारणी, कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥

अर्थः–चौवीशमी (बंजी के०) ब्राह्मी, जरतनी जगिनी, पच्चीशमी (सुंदरी के०) सुंदरी, ते बाहुबलनी जगिनी, छवीशमी (रुप्पिणि के०) रुक्मिणी, जेणें वज्रस्वामीनी पासें कुमारिका पणे दीक्षा लीधी, सत्तावीशमी (रेवइ के०) रेवती श्राविका, जेणें जगवानने कोलापाक वोहोराव्यो, अठावीशमी (कुंती के०) कुंती, पांमवोनी माता, उगणत्रीशमी (सिवा के०) शिवा, ते चेडा राजानी पुत्री, त्रीशमी (जयंती य के०) जयंती, श्रीवीरस्वामीनी श्राविका, "जंते किं सवे जवा सिज्झंति ?" इत्यादिक प्रश्ननी करवावाली, एकत्रीशमी (देवइ के०) देवकी, श्रीकृष्णजीनी माता, बत्रीशमी (दोवइ के०) डौपदी, पांमवजार्या, तेत्रीशमी (धारणी के०) धारणी,ते चंदनबालानी माता,चोत्रीशमी मेघकुमारनी माता पण धारणी नामें जाणवी. पांत्रीशमी जंबुकुमारनी माता पण धारणी जाणवी. छत्रीशमी (कलावई के०) कलावती, शीलने प्रजावें जेना कापेला हाथ वली नवपल्लव थया, (च के०) वली साडत्रीशमी (पुप्फचूला के०) पुष्पचूलानामा साधवी, अनिकापुत्र आचार्यनी जक्तिना उल्लासथी जेणें केवल ज्ञान पाम्युं, जे वर्षाद वरसते आहार लावी ॥ १० ॥

पउमावई य गोरी, गंधारी लक्कमणा सुसीमा य ॥
जंबुवइ सच्चजामा, रुप्पिणि कन्हठमहिसीउ ॥ ११ ॥

अर्थः–आडत्रीशमी (पउमावइ के०) पद्मावती,उगणचालीशमी (गोरी

के०) गौरी, चालीशमी (गंधारी के०) गांधारी, एकतालीशमी (लक्खमणा के०) लक्ष्मणा, बेतालीशमी (सुसीमा के०) सुसीमा, (च के०) वली त्रेंतालीशमी (जंबुवइ के०) जांबुवती, चुमालीशमी (सच्चनामा के०) सत्यनामा, पीस्तालीशमी (रुप्पिणि के०) रुक्मिणी, ए (कन्हह के०) श्रीकृष्णनी आठ, (महिसीउ के०) अग्रमहिषीउ छे, एटले पटराणीउ छे. अहिं चकार पादपूरणार्थ छे॥ ११॥

जक्का य जक्कदिन्ना, जूआ तह चेव जूअदिन्ना य॥
सेणा वेणा रेणा, जयणीउ थूलिजद्दस्स ॥ १२॥

अर्थः—छेंतालीशमी (जक्का के०) यक्षा, (च के०) वली सुडतालीशमी (जक्कदिन्ना के०) यक्षदिन्ना, अडतालीशमी (जूआ के०) जूता, (तह के०) तथा (चेव के०) वली निश्चें, उंगणपच्चाशमी (जूअदिन्ना के०) जूतदिन्ना, (च के०) वली पच्चाशमी (सेणा के०) सेना, एकावन्नमी (वेणा के०) वेणा, बावन्नमी (रेणा के०) रेणा, ए सात (जयणीउ के०) जगिनीउ, (थूलीजद्दस्स के०) श्रीस्थूलिजद्रजीनी जाणवी ॥ १२ ॥

इच्चाइ महासइउ, जयंति अकलंकसीलकलिआउ ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले॥ १३ ॥ ४८ ॥

अर्थः—(इच्चाइ के०) इत्यादिक बीजी पण कमलावती, लीलावती, मानवती, मृगांकलेखा, चंइलेखा, मयणासुंदरी, कौशल्या प्रमुख (महासइउ के०) जे महोटी सतीयो ते सर्वे, (जयंति के०) जयवंती छे, एटले सर्व स्त्रीउमां प्रधान थाती हवी. केहवी थाती हवी? तो के (अकलंकसीलकलिआउ के०) निर्मल शील गुणें करीने सहित होती हवी, वली (जासिं के०) जेनो (जसपडहो के०) जशनो ढोल, (तिहुअणेसयले के०) सकल त्रिज्ञुवननेविषे (अज्जवि के०) आज पण (वज्जइ के०) वाजे छे ॥ १३ ॥ इति सत्ता सतीउनी सद्याय सूत्रार्थः ॥ ४८ ॥

॥ अथ मन्हजिणाणं सद्याय ॥

मन्ह जिणाणं आणं, मिछं परिहरह धर सम्मत्तं॥
छव्विह आवसयंमी, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १॥

अर्थः–(जिणाणं के०) श्रीजिनेश्वरनी (आणं के०) आज्ञा तेने (मन्ह के०) मानवी, तथा (मिछं के०) मिथ्यात्वनो (परिहर के०) परिहार करवो एटले त्याग करवो, अने (सम्मत्तं के०) समकत्वने (धर के०) धरवो एटले धारण करवो (छव्विह के०) षड्विध एटले सामायिकादिक छ प्रकारना (आवसयंमि के०) आवश्यकने विषे (पइदिवसं के०) प्रतिदिवस (उज्जुत्तो के०) उद्युक्तो एटले उद्यमवंत (होइ के०) होय एटले होवो. ॥ १ ॥

पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ जावो अ ॥
सझायनमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥

अर्थः–चतुर्दशि आदिक (पव्वेसु के०) पर्वोना दिवसोने विषे (पोसहवयं के०) पौषधव्रत करवुं, अने (दाणं के०) सुपात्रने दान देवुं, (सीलं के०) शील पालवुं, (तवो के०) तप करवुं, (अ के०) वली (जावो के०) अनित्यादि जावनाउ जाववी (अ के०) वली (सझाय के०) वाचना पृछनादि पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवो, (नमुक्कारो के०) नमस्कारनो पाठ करवो. (परोवयारो के०) परोपकार करवो, (अ के०) वली (जयणाअ के०) जयणा राखवी एटले यत्नायें प्रवर्त्तवुं ॥ २ ॥

जिणपूआ जिणथुणिणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वछल्लं॥
ववहारस्स य सुद्धि, रहजुत्ता तिछजुत्ता य ॥ ३ ॥

अर्थः–(जिणपूआ के०) श्रीजिनेश्वर जगवाननी पूजा जक्ति करवी (जिणथुणिणं के०) श्रीजिनेश्वरनी स्तुति करवी, (गुरुथुअ के०) गुरुनी स्तुति करवी अने (साहम्मिआण वछल्लं के०) साधर्मिउनी वात्सलता करवी,ए (ववहारस्सय सुद्धि के०) व्यवहारनी शुद्धि ते (रहजुत्ता के०) रथयात्रा अने (तिछजुत्ता य के०) तीर्थयात्रा सहित करवी ॥ ३ ॥

उवसम विवेकसंवर, जासा समिई छजीवकरुणा य ॥
धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥

अर्थः–(उवसम के०) उपशम एटले क्षमा धारण करवी,तथा (विवेक के०) विवेक अने (संवर के०) संवर जाव राखवो (जासा समिइ के०)

जाषा समिति अने (ठजीव करुणाय के०) पृथिव्यादिक ठ प्रकारनो जीव निकाय तेमना उपर करुणा, एटले दया राखवी, रक्षा करवी तथा (धम्मिअ जण संसग्गो के०) धार्मिक जनोनी साथे संसर्ग करवो, तथा (करण के०) रसनादिक पांच इंड्रियो तेने (दमो के०) दमवुं दमन करवुं, अने (चरिण परिणामो के०) चारित्रना परिणाम राखवा ॥ ४ ॥

संघोवरि बहुमाणो, पुछय लिहणं पजावणा तिछे ॥
सट्ठाण किच्च मेअं, निच्चं सुगुरु वएसेणं ॥ ५ ॥
इति श्रावकदिनकृत्य सद्याय ॥ ४९ ॥

अर्थः—(संघोवरि के०) चतुर्विध श्रीसंघनी उपर (बहुमाणो के०) बहुमान राखवो, एटले श्रीसंघनो बहुमान करवो, तथा (पुछयलिहणं के०) पुस्तक लखाववुं अने (पजावणातिछे के०) तीर्थमां प्रजावना करवी, (सट्ठाण के०) श्रावक जनोना (निच्चं के०) नित्य करवा योग्य (किच्च के०) कृत्य ते (मेयं के०) एयं एटले ए ठे ते (सुगुरुवए सेणं के०) सुगुरुना उपदेशे करी जाणी लेवा ॥ ५ ॥इति ॥ ४९ ॥

॥ अथ संथारापोरिसि लिख्यते ॥

निसिही, निसिही, निसिही, नमो खमासमणाणं गोयमाइणं महामुणीणं ॥ आटलो पाठ तथा नवकार तथा करेमिजंते सामाइयं ए सर्व पाठ त्रणवार कहीने पठी ॥ अणुजाणह जिछिज्जा, छिज्जा ॥ अणुजाणह परम गुरु ॥ गुरु गुण रयणेहिं मंभिअ सरीरा ॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइअ संथारए ठामि ॥ १ ॥

अर्थः—हवे अर्थ विजाषायें करी संथारानो विधि लखीयें ठैयें. अहींआं साधु तथा श्रावक, पडिक्कमणां करीने पठी स्वाध्याय करे, एटले जणवुं, गणवुं करे, पठी पोरिसि थये ठते आचार्य समीपें आवे, तिहां खमासमण दइने कहे. इछाकारेण संदिसह जगवन् “ बहु पडिपुन्ना पोरिसि, राइय संथारए ठामि ” एनो अर्थ लखियें ठैयें. (जगवन् के०) हे जगवन्! संपू

र्णी ऐश्वर्यादिक गुणें युक्त! तमे (इच्छाकारेण के०) पोतानी इच्छायें करी, मुझ ने (संदिसह के०) आदेश आपो. (बहुपडिपुन्नापोरिसि के०) घणी प्र तिपूर्ण एवी पोरिसि थइ माटे (राइअ के०) रात्रि संबंधि (संथारए के०)सं थारा प्रत्यें (ठामि के०) हुं करुं? गुरु आदेश आपे, पछी इरियावहियं पू र्वक चैत्यवंदन करे, पछी शरीरचिंता लघुशंकादिक कार्य सर्व करे, पछी यत्ना यें करी संथारो करे. पछी माबो पग, संथारानी साथें राखीने मुखवस्त्रिका नुं प्रतिलेखन करे एटले मुहपत्ती पडिलेहे, पछी त्रण वार निसिही जणे, (निसिही के०) पाप व्यापारनो निषेध करीने, (महामुणीणं के०) महोटा मुनीश्वर एवा (गोयमाईणं के०) श्रीगौतमादिक, (खमासमणाणं के०) क्षमाश्रमण जे छे, ते प्रत्यें (णमो के०) नमस्कार करें, पछी (जिछिज्जा के०) हे ज्येष्ठार्याः! एटले हे वृद्धसाधुउ? तमें मुझने (अणुजाणह के०) आज्ञा आपो, ए प्रकारें कहेतो थको संथारानी उपर रह्यो थको, नम स्कारपूर्वक सामायिक पाठ त्रण वार जणे, पछी आवी रीतें कहे, ते कहे छे. (गुरुगुणरयणेहिं के०) प्रतिरूपादिक आचार्यना गुरुगुण एटले महोटा जे गुण, ते रूप रत्नोयें करी (मंमिअसरीरा के०) मंमित छे, शोजित छे शरीर जेनां एवा (परमगुरु के०) उत्कृष्ट गुरुउ तेने संबोधन देइ, बोला वीयें, के हे परमगुरु! तमे मुझने (अणुजाणह के०) आदेश आपो. प्रति पूर्ण एटले घणी एवी पोरिसि थइ, माटे रात्रिसंथारकनी उपर हुं तिष्ठुं? एटले विश्राम करुं? निद्रा मुकाउं? अहींआं सुधि गद्यपाठ तथा एक गाथा मां संथारानी आज्ञानुं स्वरूप कह्युं. ॥ १ ॥

हवे वली आगल बे गाथायें करी संथारानी आज्ञा प्रमुखनुं स्वरूप कहियें छैयें.

अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥
कुकुडिपाय पसारण, अंतरंत पमज्जए जूमिं ॥ २ ॥
संकोइअ संमासा, उवट्टंते य कायपडिलेहा ॥
दव्वाई उवउगं, ऊसास निरुंजणा लोए ॥ ३ ॥

अर्थः—(संथारं के०) संथारानी, हे जगवन्! तमें मुझने(अणुजाणह के०)

आज्ञा आपो, पछी गुरु आज्ञा आपे, तेवारें (बाहुवहाणेण के०) बाहु अने हाथने उपधानें करी एटले उशीके करी (वामपासेण के०) माबे पासे सूवे, ते पण शी रीतें सूवे? तो के (कुकुडि के०) कुकडीनी पेरें आकाशने विषे (पायपसारण के०) पग पसारीने सूवे, जो ए रीतें (अंतरंत के०) असमर्थ थकां नहीं रहि शकाय, तो शुं करे? ते कहियें बेयें. (भूमिं के०) भूमि प्रत्यें (पमऊए के०) प्रमार्जी,पूंजीने तिहां पग स्थापे॥२॥

ज्यारें पग संकोचवो होय, त्यारें (संमासा के) साथल संधी प्रत्यें पूंजीने (संकोइअ के०) संकोचे, अने ज्यारें पासुं फेरववुं होय, त्यारें (काय के०) शरीर प्रत्यें (पडिलेहा के०) प्रतिलेखीनें एटले शरीरने प्रमार्जी पूंजीने, (उवट्टंते के०) उद्वर्त्ते, एटले पासुं फेरवे ए सूवानो प्रकार कह्यो. हवे (च के०) वली जागवानो प्रकार कहियें बेयें, ज्यारें लघुशंकादिकने अर्थें उठे, तेवारें (दवाईउवउंग के) द्रव्यादिकना उपयोग करे एटले ते विचार करे, जे द्रव्यथकी हुं कोण बुं? साधु बुं के गृहस्थ बुं ? अनें खेत्र थकी एम विचारे के हुं उपर बुं, के नीचें बुं ? के कोइ अन्यत्र स्थानकें बुं ? कालथकी शुं विचारे ? तो के हमणां रात्रि बे, के दिवस बे ? जो रात्रि बे, तो केटली रात्रि बाकी हशे ? इत्यादि कालथी विचार करे, उपयोग आपे अने नावथी तो आम विचारे के महारे लघुशंकादिकनी बाधा बे, किंवा नथी ? एवा चार प्रकारें उपयोग देतां, विचार करतां जो निद्रा न जाय, तो (ऊसासनिरुंजण के०) उश्वास, निश्वास प्रत्यें रुंधीने एटले नासिका दबावीनें निद्रा दूर करे ते. निद्रा दूर थाय पछी (आलोए के०) आलोक प्रत्यें जूए एटले बाहेर निकलवानां द्वार प्रत्यें देखे, त्यां जइ लघुशंकादिक करीनें पछी धर्मध्यानमां प्रवर्त्ते ॥ ३ ॥

जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थः—हवे सुइ रहेवाथी प्रथम शुं करवुं ? ते कहियें बेयें. (इमाइरयणीए के०) एह रात्रिने विषे (जइ के०) जो (मे के०) महारे (इमस्स देहस्स के०) आ देहसंबंधि (पमाउ के०) प्रमाद एटले मरवुं, (हुज्ज के०) थाय तो (आहारं के०) अशनादिक चार प्रकारना आहार प्रत्यें

(उवहि के०) उपधि जे वस्त्र, पात्रादिक ते प्रत्यें,तथा (देहं के०) शरीर प्रत्यें अथवा (उवहिदेहं के०) शरीर संबंधि उपधि प्रत्यें, (सव्वं के०) बीजा पण सर्व प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (वोसिरिअं के०) हुं वोसिरावुं बुं, त्यागुं बुं ॥ ४ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि,अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

अर्थः—(चत्तारि के०) चार (मंगलं के०) मांगलिक बे. तेमां एक तो (अरिहंता के०) जेणें रागादिक अंतरंग वैरीने हण्या ते श्रीअरिहंत (मंगलं के०) मांगलिक बे, बीजा (सिद्धा के०) अष्ट कर्मोनो क्षय करीने जे सिद्धि पदने पाम्या बे, ते सिद्ध, (मंगलं के०) मांगलिक बे, त्रीजा (साहु के०) सम्यक्ज्ञान क्रियायें करी शिवसुखना साधक जे साधु, ते (मंगलं के०) मांगलिक बे, चोथो (केवलि के०) श्रीकेवलीभगवंतें (पन्नत्तो के०) प्ररूप्यो एवो जे श्रुतचारित्ररूप (धम्मो के०) धर्म, ते (मंगलं के०) मांगलिक बे ॥ ५ ॥ (चत्तारि के०) चार (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम बे, एक (अरिहंता के०) श्री अरिहंत बे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम बे, बीजा (सिद्धा के०) सिद्ध बे ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम बे, त्रीजा (साहु के०) साधु बे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम बे, चोथो (केवली के०) श्रीकेवलियें (पन्नत्तो के०) प्ररूप्यो जे (धम्मो के०) धर्म, ते (लोगुत्तमो के०) लोकमां उत्तम बे ॥ ६ ॥ (चत्तारि के०) चार (सरणं के०) शरण प्रत्यें (पवज्जामि के०) हुं पडिवज्जुं बुं. अंगीकार करुं बुं. एक तो (अरिहंते सरणं के०) श्रीअरिहंत शरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं. बीजुं (सिद्धेसरणं के०) श्री

सिद्धशरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं, त्रीजुं (साहु सरणं के०) साधुशरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं. चोथुं (केवलि के०) श्रीकेवलियें (पन्नत्तं के०) प्ररूप्यो नांख्यो एवो जे (धम्मं के०) धर्म तेना (सरणं के०) शरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलियं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुब्बं ॥
कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥ ८ ॥
कलहं अप्नक्खाणं, पेसुन्नं रइ अरइ समाउत्तं ॥
परपरिवायं माया, मोसं मिब्बत्तसल्लं च ॥ ए ॥

अर्थः—प्रथम (पाणाइवाय के०) प्राणातिपात ते जीवहिंसा, बीजुं (अलियं के०) अलिक वचन एटले मृषावाद, त्रीजुं (चोरिक्कं के०) चोरि, एटले अदत्तादान, चोथुं (मेहुणं के०) मैथुन एटले स्त्री प्रमुखनो नोग, पांचमुं (दविणमुब्बं के०) पुजलइव्यने विषे मूर्बा, एटले परिग्रह, बठो (कोहं के०) क्रोध, सातमो (माणं के०) मान एटले अहंकार, आठमो (मायं के०) माया ते कपट, नवमो (लोहं के०) लोज, दशमो (पिज्जं के०) प्रेम ते राग, (तहा के०) तथा अगीआरमो (दोसं के०) दोष ते द्वेष ॥ ८ ॥ बारमो (कलहं के०) क्लेश, तेरमो (अप्नक्खाणं के०) अन्याख्यान, एटले परने आल देवुं, चौदमुं (पेसुन्नं के०) पैशुन्य एटले चुगलि चाडी करवी, पंदरमुं (रइअरइ के०) पुजल पदार्थोने विषे रति तथा खुशी पण एमां ग्रहण करवी अने अरति ते शुनकार्यने विषे दिलगीरी, तेणें करीने (समाउत्तं के०) सहित, शोलमो (परपरिवायं के०) परनो परिवाद एटले निंदा, सत्तरमो (मायामोसं के०) मायामृषा एटले कपट सहित जूठ बोलवुं, अढारमुं (मिब्बत्तसल्लं के०) मिथ्यात्वनुं शल्य, एटले श्रीजिनमतथी विपरीतमतनी श्रद्धा, तेने मिथ्यात्वशल्य कहियें. अहीं चकार जे बे, ते समुच्चयार्थवाची बे. ए अढार पाप स्थानकनां नाम कह्यां ॥ ए ॥

हवे आगलनी गाथामां एनो त्याग कहियें बैयें.

वोसिरिसु इमाइं मु, क्क मग्ग संसग्ग विग्घ नूआइं ॥
डुग्गइ निबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं ॥ १० ॥

अर्थः—(इमाइं के०) ए प्रत्यक्ष, (अढारसपावगणाइं के०) अढार पापस्थानक जे छे, ते प्रत्यें रे जीव ! तुं (वोसिरिसु के०) वोसिराव एट ले त्याग कर. ते अढार पापस्थानक केहेवां छे ? तो के (मुरकमग्ग के०) मोक्षमार्गने विषे (संसग्ग के०) संसर्ग करतां एटले गमन करता एवा जीवोने (विग्घभूआइं के०) विघ्नभूत छे,एटले अंतरायनां करनार छे. वली ते पापस्थानक केहेवां छे ? तो के (ङुग्गइ के०) ङुर्गति जे नरकनिगोदा दिकनी गति तेना (निबंधणाइं के०) कारण छे ॥ १० ॥

एगो हं नत्थि मे कोई, नाह मन्नस्स कस्स ई ॥
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासई ॥ ११ ॥

अर्थः—(अहं के०) हुं (एगो के०) एक छुं, (मे के०) मह्यरो (कोई के०) कोइ (नत्थि के०) नथी, अने (अन्नस्सकस्सई के०) अन्य कोइनो (अहं के०) हुं (न के०) नथी, (एवं के०) एम, (अदीणम णसो के०) अदीनमनथको एटले सावधान चित्त थयो थको (अप्पाणं के०) आत्मा प्रत्यें (अणुसासई के०) शीखामण आपे ॥ ११ ॥

एगो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥
सेसा मे बाहिरा नावा सव्वे संजोगलरकणा ॥ १२ ॥

अर्थः—(नाणदंसण के०) ज्ञान दर्शनें करी (संजुउ के०)संयुत ए टले सहित एवो (सासउ के०)शाश्वतो सदा, नित्य एवो (एगो के०) रागादिक परनावथी रहित एकज, (मे के०) मह्यरो (अप्पा के०) आ त्मा छे, (सेसा के०) शेष थाकता रह्या जे (संजोगलरकणा के०) ड व्यथकी तन, धन, कुटुंबादि संयोग मिलाप रूप अने नावथकी विषय कषा यादिरूप संयोग मिलाप, एवा (नावा के०) नाव जे छे ते (सव्वे के०) सर्वे (मे के०) मह्यरा स्वरूपथकी (बाहिरा के०) बाह्य छे, एटले न्यारा छे ॥ १२ ॥

संजोगमूला जीवेण, पत्ता ङुरकपरंपरा ॥ तम्हा
संजोगसंबंधं सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ १३ ॥

अर्थः—तन,धन, कुटुंब ममत्वादि रूपनो (संजोग के०) संयोग एटले मि लाप, तेहीज (मूला के०) मूलकारण छे जेनुं एवी (ङुरकपरंपरा के०) ङुःख नी श्रेणी ते (जीवेण के०) जीवें (पत्ता के०) पामी (तम्हा के०) ते कार

ए माटे (संजोगसंबंधं के०) पूर्वोक्त जे संयोग संबंध छे, ते (सव्वं के०) सर्व प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी (वोसिरियं के०) हुं वोसिरावुं बुं, अथवा त्यागुं बुं, एम केहेवुं ॥ १३ ॥

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपन्नत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १४ ॥

अर्थः-(अरिहंतो के०) श्रीअरिहंत अने सिद्ध जगवंत, ते (मह के०) महारा (देवो के०) देव छे. (जावज्जीवं के०) ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी (सुसाहुणो के०) सुसाधु, जे जिनमतने विषे सावधान सम्यक् ज्ञानक्रियावान् एवा आचार्य, उपाध्याय अने मुनि, ते महारा (गुरुणो के०) गुरु छे, ज्यां सुधी जीवुं, त्यां सुधी (जिण के०) जिनेश्वर देवोयें (पन्नत्तं के०) प्ररूप्युं जांख्युं एवुं जे दयामूल तथा विनयमूल तत्त्व, अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपोरूप (तत्तं के०) तत्त्व, ते महारो धर्म छे. जावजीव सुधी (इय के०) ए प्रकारें (सम्मत्तं के०) सम्यक्त्व. (मए के०) महारे जीवें (गहियं के०) ग्रह्युं अंगीकार कीधुं ॥ १४ ॥ इति रात्रिसंस्तारकविधिसूत्रार्थः ॥

खमिअ खमाविअ मइ खमिय, सव्वह जीवनिका
य ॥ सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भा
व ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमंत ॥
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥ १६ ॥
जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण जासिअं पावं ॥ जं जं
काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमीस्तुति प्रारंभः ॥

॥ श्रीनेमिः पंचरूपत्रिदशपतिकृतप्राज्यजन्माभिषे
क, श्चंचत्पंचाक्षमत्तद्विरदमदभिदा पंचवक्रोपमानः ॥
निर्मुक्तः पंचदेह्याः परमसुखमयप्रास्तकर्मप्रपंचः,
कल्याणं पंचमीसत्तपसि वितनुतां पंचमज्ञानवान् वः ॥ १ ॥

अर्थः—(श्रीनेमिः के०) श्रीनेमिनाथ जगवान्, ते (वः के०) तमारा (पंचमीसत्तपसि के०) पंचमीना सारा तपने विषे (कल्याणं के०) निर्विघ्नप्रत्यें (बितनुतां के०) विस्तारो. हवे ते नेमिनाथ जगवान् केहेवा बे? तो के (पंचरूप के०) पांच रूपें करीने (त्रिदशपति के०) देवतानो पति एवो जे इंड, तेणें (कृत के०) कस्यो बे, (प्राज्यजन्माजिषेकः के०) महोटो अने उत्तम जन्माजिषेक जेमनो एवा, वली ते केहेवा बे? तो के (चंचत् के०) दीपता एवां (पंचाक्ष के०) पांच इंडियो तेरूप (मत्त के०) मदोन्मत्त एवो (द्विरद के०) हस्ती, तेना (मदजिदा के०) मद जेदवे करीने (पंचवक्रोपमानः के०) पंचवक्र जे सिंह तेनुं बे उपमान जेमने एवा, वली ते केहेवा बे? तो के (पंचदेहाः के०) औदारिकादिक पांच शरीर ते थकी (निर्मुक्तः के०) मुक्त थया एवा, वली ते केहेवा बे? तो के (परम के०) उत्कृष्ट एटले अतींडिय एवा (सुखमय के०) सुखें करी सहित,वली ते केहेवा बे? तो के (प्रास्त के०) प्रकर्षेकरी टाल्या बे, (कर्मप्रपंचः के०) कर्मना प्रपंच एटले विस्तार जेमणें एवा, वली ते केहेवा बे? तो के (पंचमज्ञानवान् के०) पांचमुं ज्ञान जे केवल ज्ञान तेणें करी युक्त बे ॥ १ ॥

संप्रीणन् सच्चकोरान् शिवतिलकसमः कौशिकानंदमूर्तिः,
पुण्याब्धिप्रीतिदायी सितरुचिरिव यः स्वीयगोजिस्तमांसि ॥
सांडाणि ध्वंसमानः सकलकुवलयोल्लासमुच्चैश्चकार, ज्ञानं
पुष्याज्जिनौघः स तपसि जविनां पंचमीवासरस्य ॥ २ ॥

अर्थः— हवे जिनसमुदायने चंडनी समानता रूपें स्तवे बे. (सितरुचिरिव के०) चंडमा सदृश एवो तथा (शिवतिलकसमः के०) शिव जे मोक्ष तेने विषे तिलकसमान एवो (यः के०) जे (जिनौघः के०) जिनसमुदाय बे, ते (जविनां के०) जव्यजनोना (पंचमीवासरस्य के०) पंचमीना दिवसना (सतपसि के०) रूडा तपने विषे (ज्ञानं के०) ज्ञान जे तेने (पुष्यात् के०) पुष्टिने करो. हवे ते जिनसमुदायने चंडतुल्यता केहेवी रीतें बे? ते सर्व, विशेषणोयें करीने कहे बे. जेम चंड (सच्चकोरान् के०) उत्तमचकोर तेमने (संप्रीणन् के०) रूडे प्रकारें आनंद करे बे, तेम ए श्रीजिनसमुदाय पण (सच्चकोरान् के०) सत्पुरुषरूप चकोर

तेमने (संप्रीणन् के०) सम्यक् प्रकारें हर्ष करे डे. वली जेम चंड (कौशिक के०) घूड, तेने (आनंदमूर्तिः के०) आनंददायक डे मूर्ति जेनी एवो डे, तेम ए जिनसमुदाय पण (कौशिक के०) इंड तेने (आनंदमूर्त्तिः के०) आनंदरूप डे मूर्त्ति जेनी एवो डे. तथा जेम चंड, (पुण्याब्धि के०) पुण्यकारक समुड तेने (प्रीतिदायि के०) प्रीतिदायक डे, तेम जिनौघ पण (पुण्याब्धि के०) पुण्य रूप जे समुड, तेने (प्रीतिदायी के०) प्रीतिनो देनारो डे. तथा जेम चंड (स्वीय के०) पोतानां (गोनिः के०) किरणोयें करी (सांडाणि के०) गाढ एवां (तमांसि के०) अंधकारोने (ध्वंसमानः के०) ध्वंस एटले नाश करनारो डे, तेम जिनौघ पण (सांडाणि के०) गाढ एवां (तमांसि के०) जीवोनां अज्ञान, तेमने (ध्वंसमानः के०) ध्वंस एटले नाशनो करनारो डे. तथा जेम चंड, (सकलकुवलय के०) समग्र कुवलय जे चंडविकासी एवां कमलो, तेने (उल्लासं के०) विकसित पणाने (उच्चैः के०) अत्यंत (चकार के०) करतो हवो, तेम ए जिनौघ पण (कुवलय के०) पृथ्वीवलय तेने (उल्लासं के०) हर्षने (चकार के०) करतो हवो एवो डे, माटे तेने चंडमानी उपमा योग्य डे॥ २॥

पीत्वा नानाभिधार्थामृतरसमसमं यांति यांस्यंति जग्मु,
र्जीवा यस्मादनेके विधिवदमरतां प्राज्यनिर्वाणपुर्याम्॥
यात्वा देवाधिदेवागमदशमसुधाकुंभमानंदहेतु, स्तत्पं
चम्यास्तपस्युद्यतविशदधियां भाविनामस्तु नित्यं॥ ३॥

अर्थः-(देवाधिदेव के०) श्री वीतराग देव तेनो (आगम के०) सिद्धांत ते रूप (दशम के०) दशमो एवो (सुधाकुंभं के०) अमृतकुंभ जे डे (तत् के०) ते (पंचम्याः के०) ज्ञानपंचमीना (तपसि के०) तपने विषे (उद्यत के०) उजमाल तथा (विशदधियां के०) निर्मल डे बुद्धि जेमनी एवा (भाविनां के०) भाविक भव्य जीवोने (आनंदहेतुः के०) आनंदनो कारणभूत (नित्यं के०) निरंतर (अस्तु के०) थाउ. हवे ते जिनागमरूप दशम सुधाकुंभ केहेवो डे? तो के (नानाभिधार्था

मृतरसं के०) नाना प्रकारनां ठे नाम जेमनां एवा जे अर्थों, ते रूप अ मृतरस ठे जेमां एवो ठे तेने (विधिवत् के०) विधिप्रमाणे (पीत्वा के०) पान करीने (असमं के०) निरुपम एवा सुखने (यास्यंति के०) पामशे, (यांति के०) पामे ठे, अने (जग्मुः के०) पामता हवा (यस्मात् के०) जेनुं पान करवा थकी (अनेके के०) अनेक एवा (जीवा के०) जीवो जे ठे ते (प्राज्यं के०) मोहोटी एवी (निर्वाणपुर्य्यां के०) मोक्षनगरीने विषे (अमरतां के०) अजरामर पणाने (यात्वा के०) पामीने स्वस्थ थाय ठे ॥३॥

स्वर्णालंकारवल्गन्मणिकिरणगणध्वस्तनित्यांधकारा, हुंकारारावदूरीकृतसुकृतजनव्रातविघ्नप्रचारा ॥ देवी श्रीअंबिकाख्या जिनवरचरणांभोजभृंगीसमाना, पंचम्यह्नस्तपोर्थं वितरतु कुशलं धीमतां सावधाना ॥ ४ ॥ ५१ ॥

अर्थः—(श्रीअंबिकाख्या के०) श्रीअंबिका ठे नाम जेनुं एवी (देवी के०) देवी, ते (सावधाना के०) सावधान एवी ठती (धीमतां के०) बुद्धिमान एवा भविक जीवना (पंचम्यह्नः के०) पंचमीना दिवसना (तपोर्थं के०) तपने माटे (कुशलं के०) कुशल जे ठे तेने (वितरतु के०) विस्तारो. ते देवी केहेवी ठे ? तो के (स्वर्णालंकार के०) सुवर्णना जे अलंकार तेने विषे (वल्गन्मणिकिरणगण के०) वलगा एवा जे मणि तेनां किरण तेना जे गण, तेणें करी (ध्वस्तनित्यांधकारा के०) टाल्यो ठे निरंतर अंधकार जेणें, वली ते देवी केहेवी ठे ? तो के (हुंकार के०) हुंकारनो (आराव के०) शब्द तेणें करी (दूरीकृत के०) दूर कर्या ठे (सुकृतजनव्रात के०) सुकृतनो करनारो एवो जे जनसमूह तेना (विघ्नप्रचारा के०) विघ्नना प्रचार जेणें, वली ते देवी केहेवी ठे ? तो के (जिनवरचरणांभोज के०) वीतरागनां चरणरूप कमल, तेने विषे (भृंगीसमाना के०) भ्रमरीसमान ठे ॥ ४॥५१ ॥

हवे पाक्षिकादि प्रतिक्रमण योग्य सूत्रां लखियें ठैयें.

॥ अथ सकलाऽर्हत्प्रारंभः ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः ॥
भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान, मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे॥१॥

अर्थः–(आर्हत्यं के०) अरिहंतनो जे समूह, तेने अमो (प्रणिदध्महे के०) चित्तमांहे ध्यान करीयें छैयें. हवे ते आर्हत्य केहेवुं छे? तो के (सकल के०) समग्रने (अर्हत् के०) पूजवानुं (प्रतिष्ठानं के०) स्थानक छे, वली ते केहेवुं छे? तो के (शिवश्रियः के०) मोक्षरूप लक्ष्मीनुं (अधिष्ठानं के०) स्थानक छे, वली ते केहेवुं छे? तो के (नूः के०) मनुष्यलोक, (नुवः के०) पाताललोक, (स्वः के०) देवलोक, ए (त्रयी के०) त्रण लोक तेनुं (ईशानं के) स्वामी छे ॥ १ ॥

नामाकृतिद्रव्यनावैः, पुनतस्त्रिजगज्जनं ॥
क्षेत्रे काले च सर्वस्मि,न्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥

अर्थः–(सर्वस्मिन् के०) सर्व एवां (क्षेत्रे के०) क्षेत्र तेने विषे, (च के०) वली (काले के०) समस्तकालनेविषे एटले अतीत, अनागत अने वर्त्तमान कालने विषे, (नाम के०) नामनिक्षेप, ते तीर्थंकरनाम कर्मोदय जाणवो तथा (आकृति के०) थापनानिक्षेप, ते जिनप्रतिमा जाणवी. (द्रव्य के०) द्रव्यनिक्षेप, ते जिनना जीव जे आगल थाशे, ते जाणवा, (नावैः के०) नावनिक्षेप, ते समवसरणनेविषे बिराजमान श्रीसीमंधर स्वामी प्रमुख जाणवा. ए चार निक्षेपायें करी (त्रिजगज्जनं के०) त्रण जगतना जे जनो ते प्रत्यें (पुनतः के०) पवित्र करनार एवा (अर्हतः के०) श्रीअरिहंत प्रनुने (समुपास्महे के०) वंदन, सत्कार, सन्मानादिकें करी अमें सेवीयें छैयें ॥ २ ॥

हवे वर्त्तमान चोवीश जिनने प्रणाम करवा इछतो छतो
प्रथम श्री रुषनदेवजीने स्तवे छे.

आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं निःपरिग्रहं ॥
आदिमं तीर्थनाथं च, रुषनस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥

अर्थः–प्रथम (रुषन के०) जेमनी मातायें स्वप्नमां वृषन दीठो, माटे रुषन कहियें, अथवा जेमनी दक्षिण जंघाने विषे वृषननुं चिन्ह छे माटे रुषन कहियें एवा (स्वामिनं के०) श्री रुषन स्वामी तेने (स्तुमः के०) स्तवियें छैयें. ते केहेवा छे? तो के (आदिमंपृथिवीनाथं के०) प्रथम

पृथिवीना नाथ,अर्थात् सर्वेनी आदिमा राजा एवा,तथा वली ते केहेवा छे? तो के (आदिमं के०) सर्वथी प्रथम एवा (निःपरिग्रहं के०) निःशेष पणाएं करीनें त्याग कस्यो छे परिग्रह जेणें एवा अर्थात् अग्रिम साधु छे. वली ते केहेवा छे? तो के (आदिमं के०) प्रथम एवा (तीर्थनाथं के०) तीर्थना नाथ अर्थात् आदिम तीर्थंकर एवा छे ॥ ३ ॥

हवें बीजा श्रीअजितनाथने स्तवे छे.

अर्हंतमजितं विश्व, कमलाकरभास्करं ॥ अ
म्लानकेवलादर्श, संक्रातजगतं स्तुवे ॥ ४ ॥

अर्थः–(अजितं के०) कर्मोयें जींती न शकाय माटे अजित अथवा माताना गर्भमां रहे छते अन्य राजायें एमनां माता पिता जींती न शकायां, ते माटे अजित कहियें. ते बीजा अजितनाथने (स्तुवे के०) हुं स्तवुं छुं. ते अजितनाथ केहेवा छे? तो के (अर्हंतं के०) त्रण लोकने पूजवा योग्य एवा तथा वली ते केहेवा छे? तो के (विश्वकमलाकर के०) विश्वरूप जे कमलाकर सरोवर अर्थात् कमलना आकर एटले समूह छे जेमां एवुं सरोवर तेहने प्रकाश करवामां (भास्करं के०) सूर्यतुल्य एवा, वली ते केहेवा छे ? तो के (अम्लान के०) निर्मल एवुं (केवल के०) केवल ज्ञानरूप, (आदर्श के०) आरीसो तेने विषे (संक्रांत के०) संक्रमाव्युं छे, एटले प्रतिबिंबित कर्युं छे (जगतं के०) जगत् जेणें एवा छे ॥ ४ ॥

हवें त्रीजा श्रीसंभवनाथने स्तवे छे.

विश्वभव्यजनाराम, कुल्यातुल्या जयंतु ताः ॥
देशनासमये वाचः, श्रीसंभवजगत्पतेः ॥ ५ ॥

अर्थः–(ताः के०) ते उत्कृष्ट एवी (देशनासमये के०) देशना एटले धर्मोपदेशना समयने विषे (श्रीसंभवजगत्पतेः के०) जेथी शं केतां सुख उत्पन्न थाय तेने शंभव कहियें. अथवा जेमनाज न्मना समयने विषे धान्यना समुदाय विशेषें निपन्या ते माटे संभव कहिये. तेमनी (वाचः के०) वाणीयो ते (जयंतु के०) जयवंती वर्तो, अर्थात् उत्कृष्टी वर्तो. ते वाणीयो केहेवी छे? तो के (विश्व के०) जगत्ने विषे अथवा (विश्व के०)

समस्त (भव्यजन के०) भव्यजनरूप (आराम के०) उद्यान तेने शिंचवाने (कुल्या के०) पाणीनी नीक तेने (तुल्या के०) तुल्य एवी छे. ॥ ५ ॥

हवे चतुर्थ श्रीअभिनंदन जिनने स्तवे छे.

अनेकांतमतांभोधि, समुल्लासनचंद्रमाः ॥
दद्यादमंदमानंदं, भगवानभिनंदनः ॥ ६ ॥

अर्थः—(भगवान् के०) षडैश्वर्यगुणयुक्त एवा (अभिनंदनः के०) श्रीअभिनंदन नामा जिन जे छे, ते (अमंदं के०) घणो एवो जे (आनंदं के०) हर्ष तेने (दद्यात् के०) आपो, ते अभिनंदन भगवान् केहेवा छे? तो के (अनेकांतमत के०) स्याद्वादमतरूप जे (अंभोधि के०) अपरंपार अगाधजलवालो एवो समुद्र, तेना (समुल्लासन के०) रूडो उल्लास करवाने (चंद्रमाः के०) चंद्रमा जेवा छे, अर्थात् जेम चंद्रमा देखी समुद्र वृद्धिने पामे छे, तेम स्याद्वादरूप समुद्र जे छे, ते भगवंतरूप चंद्रमाने जोइ समुल्लास पामे छे ॥ ६ ॥

हवे पांचमा श्रीसुमतिनाथने स्तवे छे.

द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिनखावलिः ॥ भग
वांन् सुमतिस्वामी तनोत्वभिमतानि वः ॥ ७ ॥

अर्थः—(सुमतिस्वामी के०) श्रीसुमतिस्वामीनामा (भगवान् के०) भगवान् ते, (वः के०) तमारां (अभिमतानि के०) वांछितोने (तनोतु के०) विस्तारो. ते सुमतिनाथ केहेवा छे? तो के (द्युसत् के०) देवताउ, तेना (किरीट के०) मुकुट, तद्रूप जे (शाणाग्र के०) शृंगना खूणा एटले देवताना मुकुटना अग्रभागना खूणा तेणें (उत्तेजित के०) अतिशय तेजवंत कीधी छे (अंघ्रि के०) चरण तेना (नख के०) नख तेनी (आवलिः के०) पंक्ति जेमनी एवा छे ॥ ७ ॥

हवे छठा श्रीपद्मप्रभ स्वामीने वंदन करे छे.

पद्मप्रभप्रभोर्देह, भासः पुष्णंतु वः श्रियं ॥
अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥

अर्थः–(पद्मप्रभप्रभोः के०) स्वामी गर्भगत थवाथी जेमनी मातानें रक्तपद्मनी शय्यामां सूवानो दोहोलो उत्पन्न थयो तेमाटे पद्मप्रभ कहियें ते प्रभुनी (देहभासः के०) शरीरसंबंधी जे कांति छे, ते (वः के०) तमारी (श्रियं के०) कल्याणरूप लक्ष्मी जे छे ते प्रत्यें (पुष्णंतु के०) पोषण करो. हवे ते श्रीपद्मप्रभुनी शरीरकांति रक्तवर्णी छे, ते उपर कवि उत्प्रेक्षा करे छे, के (अंतरंगारि के०) अंतरंग शत्रु जे मोहादिक तेमनें (मथनें के०) मथन करवाने विषे अर्थात् दूर करवाने विषे (कोपाटोप के०) कोप जे क्रोध तेनो आटोप जे प्रबलपणुं तेणें करी नेज (इव के०) जाणे (अरुणा के०) राती थइ होय नहिं ? ॥ ८ ॥

हवे सातमा श्रीसुपार्श्वजिनने नमन करे छे.

श्री सुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांघ्रये ॥
नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगनाभोगभास्वते ॥९॥

अर्थः–(श्रीसुपार्श्व के०) सुपार्श्वनामा (जिनेंद्राय के०) जिनेंद्र तेने (नमः के०) नमस्कार हो, ते सुपार्श्वजिन केहेवा छे ? तो के (महेंद्र के०) मोहाटा जे चोशठ इंद्रो, तेमणें (महित के०) पूजित छे, (अंघ्रये के०) चरण जेमनां एवा तथा केहेवा छे ? तो के (चतुर्वर्णसंघ के०) चतुर्वर्ण जे श्रीसंघ एटले साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका, ते रूप जे (गगन के०) आकाश तेनो (आभोग के०) प्रकाश तेनो विस्तार करवानें (भास्वते के०) सूर्यसमान छे ॥ ९ ॥

हवे आठमा श्रीचंद्रप्रभ स्वामीने स्तवे छे.

चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्ति
मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥

अर्थः–(चंद्रप्रभप्रभोः के०) चंद्रप्रभनामाप्रभुनी (मूर्त्तिः के०) मूर्त्ति एटले शरीर, ते (वः के०) तमोने (श्रिये के०) ज्ञानादि लक्ष्मीने अर्थें (अस्तु के०) थाओ. ते प्रभुनी मूर्त्ति केहेवी छे ? तो के (चंद्र के०) चंद्रमानां (मरीचि के०) किरणो, तेमना (निचय के०) समूह तेथकी पण अधिक (उज्ज्वला के०) उज्ज्वल एटले निर्मल एवी छे, तथा वली केहेवी छे ?

तो के (मूर्त्त के०) मूर्त्तिमंत एवुं जे (सितध्यान के०) शुक्कध्यान, तेणें करीनेज (इव के०) जाणे (निर्मिता के०) निर्माण करी होय नहिं ? एवी छे ॥ १० ॥

हवे नवमा श्रीसुविधिजिनने स्तवे छे.

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया ॥ अचिं
त्यमाहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥

अर्थः—(सुविधिः के०) श्रीसुविधिनाथ, ते (वः के०) तमोने (बोधये के०) बोधि जे सम्यक्त्व, तेने अर्थें (अस्तु के०) थाउ. ते श्रीसुविधिनाथ केहेवा छे ? तो के (कर के०) हाथ, तेहने विषें रहेलुं एवुं (अमल के०) निर्मल (क के०) पाणी तेहनी (वत् के०) पेठें (विश्वं के०) सर्व प्राणी प्रत्यें (केवलश्रिया के०) केवल ज्ञानरूप लक्ष्मीयें करी, (कलयन् के०) जाणता एवा तथा (अचिंत्य के०) न चिंतवी शकवा योग्य एहेवुं जे (माहात्म्य के०) मोहोटापणुं तेहना (निधि: के०) निधान छे ॥ ११ ॥

हवे दशमा श्रीशीतल जिननी स्तुति करे छे.

सत्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वा
दामृतनिस्यंदी, शीतलः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥

अर्थः—(शीतलः के०) श्रीशीतलनाथनामा (जिनः के०) जिन छे, ते (वः के०) तमोने (पातु के०) रक्षण करो, अर्थात् संसारथी रक्षण करो. ते श्रीशीतलजिन केहेवा छे ? तो के (सत्त्वानां के०) प्राणीयोने (परम के०) उत्कृष्ट एवो जे (आनंद के०) चित्तप्रसन्नता लक्षण आनंद, तेहनो (कंद के०) अंकूर तेनो (उद्भेद के०) प्रगट थवुं, तेने विषे (नवांबुदः के०) नवीन मेघसदृश छे तथा (स्याद्वादामृत के०) अनेकांत शासन ते रूप जे अमृत रस, तेहना (निस्यंदी के०) झरनारा एवा छे ॥ १२ ॥

हवे अग्यारमा श्रीश्रेयांस जिनने स्तवे छे.

भवरोगाऽर्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निःश्रेय
सश्रीरमणः श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥

अर्थः–(श्रेयांसः के०) श्रेयांसनामा जिन ते, (वः के०) तमारा (श्रेयसे के०) कल्याणने अर्थे (अस्तु के०) थाउ. हवे ते श्रेयांस प्रभु केहेवा छे? तो के (भवरोग के०) संसाररूप रोग तेणें करी (आर्त्तजंतूनां के०) आर्त्त एटले पीडायेला अर्थात् जन्म, जरा अने मरण रूप रोगें करी पीडायेला एवा जंतुउने (अगदंकार के०) वैद्यसमान छे (दर्शनः के०) सम्यक्त्व दर्शन जेमनुं, अथवा दर्शन एटले देखवुं जेमनुं एवा, वली ते केहेवा छे? तो के (निःश्रेयस के०) मोक्ष ते रूप (श्री के०) लक्ष्मी तेंना (रमणः के०) भरतार एटले स्वामी छे ॥ १३ ॥

हवे बारमा श्री वासुपूज्यजिननी स्तुति करे छे.

विश्वोपकारकीभूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥
सुराऽसुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः॥१४॥

अर्थः–(वासुपूज्यः के०) श्रीवासुपूज्यनामा जिन, ते (वः के०) तमोने (पुनातु के०) पवित्र करो, एटले तमारां पाप टालो. ते वासुपूज्य केहेवा छे? तो के (विश्वोपकारकीभूत के०) विश्वना उपकारभूत एवुं. जे (तीर्थकृत्कर्म के०) तीर्थंकरनामकर्म, तेमनी (निर्मितिः के०) निष्पत्ति करी छे जेणें, अर्थात् पंचकल्याणकनें विषे सुखना हेतु छे, वली (सुर के०) वैमानिक देवता, (असुर के०) भवनपत्यादि देवता, तथा (नरैः के०) मनुष्य, तेमणें (पूज्य के०) पूजवा योग्य छे ॥ १४ ॥

हवे तेरमा श्रीविमलजिनने स्तवे छे.

विमलस्वामिनो वाचः,. कतकक्षोदसोदराः ॥
जयंति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥

अर्थः–(श्रीविमलस्वामिनः के०) श्रीविमलस्वामीनी (वाचः के०) वाणीयो छे ते, (जयंति के०) जयवंती वर्त्ते छे. ते वाणीयो केहेवी छे? तो के (कतकक्षोद के०) कतक फलनुं क्षोद जे चूर्ण, तेनी (सोदराः के०) सरखी छे. अर्थात् जेम कतक फलना चूर्णना योगें पाणी निर्मल थाय छे, तेम (त्रिजगच्चेतोजलनैर्मल्यहेतवः के०) त्रण जगतनां जे चित्त, ते रूप जे जल तेनुं जे निर्मल पणुं करवुं तेनी हेतु छे. एटले जेम कत

कफलचूर्णे करी मेलसहित पाणी निर्मल थाय छे, तेम जगवंतनी वाणी यें करी मेलां थयां एवां जे त्रण जगतनां चित्त, ते निर्मल थाय छे ॥ १५॥

हवे चउदमा श्रीअनंतजिनने स्तवे छे.

स्वयंजूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥
अनंतजिदनंतां वः, प्रयछतु सुखश्रियं ॥१६॥

अर्थः–(स्वयंजूरमण के०) अंतिम समुद्र तेनी (स्पर्द्धि के०) स्पर्द्धा करे अर्थात् ते अंतिम समुद्रथकी पण अधिक एवुं (करुणारसवारिणा के०) करुणारसरूप वारि जे जल, तेणें करी युक्त एवा (अनंतजित् के०) अनंत नाथ परमेश्वर छें, ते (वः के०) तमोने (अनंतां के०) नथी अंत जेनो एवी (सुखश्रियं के०) मोक्षसुखरूप लक्ष्मी तेने (प्रयछतु के०) आपो ॥ १६ ॥

हवे पन्नरमा श्रीधर्मनाथजिनने स्तवे छे.

कल्पडुमसधर्माण, मिष्टप्राप्तौ शरीरिणां ॥
चतुर्धा धर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥१७॥

अर्थः–(धर्मनाथं के०) धर्मनाथजिन प्रत्यें (उपास्महे के०) उपासना करीयें छैयें. एटले सेवीयें छैयें ते धर्मनाथ जिन केहेवा छे? तो के (शरीरिणां के०) शरीरधारी प्राणीउनें, (इष्टप्राप्तौ के०) वांछितफलनी प्राप्तिने विषे (कल्पडुमसधर्माणं के०) कल्पडुम समान छे धर्म जेमनो एवा छे, वली केहेवा छे ? तो के (चतुर्धाधर्म के०) दान, शील, तप, तथा जाव, रूप चार प्रकारनो जे धर्म, तेने (देष्टारं के०) देखाडनार एवा छे ॥ १७ ॥

हवे शोलमा श्रीशांतिनाथजिनने स्तवे छे.

सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ॥
मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै, शांतिनाथजिनोऽस्तु वः ॥१८॥

अर्थः–(शांतिनाथजिनः के०) शांतिनाथनामा जिन ते, (वः के०) तमारी एटले जव्यजीवोनी (तमः के०) अज्ञाननी (शांत्यै के०) शांतिने अर्थे (अस्तु के०) थाउ. हवे ते शांतिनाथ केहेवा छे ? तो के (सुधा के०) अमृत तेनी (सोदर के०) सरखी एवी (वाक् के०) वा

णी ते रूप जे (ज्योत्स्ना के०) चंद्रिका तेणें करी (निर्मलीकृत के०) निर्मल कर्यां छे (दिङ्मुखः के०) दिग्वासी जनोनां मुख जेमणें एवा छे, वली (मृगलक्ष्मा के०) मृगनुं छे लक्ष्म एटले चिन्ह जेमनें एवा छे ॥ १७ ॥

हवे सत्तरमा श्रीकुंथुनाथजिनने स्तवे छे.

श्रीकुंथुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ॥
सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥

अर्थः—(श्रीकुंथुनाथोभगवान् के०) षडैश्वर्यगुणयुक्त एवा श्रीकुंथुनाथ भगवान् ते (वः के०) तमोने (श्रिये के०) कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे (अस्तु के०) थाउ. ते कुंथुनाथ भगवान् केहेवा छे? तो के (अतिशयर्द्धिभिः के०) चोत्रीश अतिशयरूप जे रुद्धि तेणें करी (सनाथः के०) सहित छे. वली ते केहेवा छे? तो के (सुर के०) वैमानिक देवता, (असुर के०) भवनपत्यादिक देवता, (नृ के०) मनुष्य तेमना (नाथानां के०) स्वामी जे इंद्र अने उपेंद्र जे चक्रवर्त्यादिक तेमना (एकनाथः के०) एकनाथ एवा, अर्थात् अद्वितीय पणे नाथ छे ॥ १९ ॥

हवे अढारमा श्री अरनाथजिनने स्तवे छे.

अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः ॥
चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ॥२०॥

अर्थः—(भगवान् के०) ज्ञानादि बार अर्थयुक्त, अर्थात् भगशब्दना चउद अर्थ थाय छे. तेमांथी बार अर्थ परमेश्वरने घटे छे माटे अहिं बार अर्थ लेवा. एवा (अरनाथस्तु के०) अरनाथनामा जिन, ते (वः के०) तमोने (चतुर्थपुरुषार्थ के०) चोथो पुरुषार्थ जे मोक्ष, तेहनी (श्री के०) लक्ष्मी तेनो (विलासं के०) भोगविलासने (वितनोतु के०) विस्तारो. ते अरनाथ भगवान् केहेवा छे? तो के (चतुर्थार के०) चोथो आरो ते रूप (नभः के०) आकाश तेने विषे (रविः के०) सूर्यसमान छे ॥ २० ॥

हवे उगणीशमा श्रीमल्लिनाथजिनने स्तवे छे.

सुराऽसुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्मद्रू
न्मूलने हस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ॥ २१ ॥

अर्थः–(मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथ प्रत्यें (अभिष्टुमः के०) स्तवना करियें बैयें. ते मल्लिजिन केहेवा बे? तो के (सुर के०) वैमानिक देवता, (असुर के०) भवनपत्यादि तथा (नर के०) मनुष्य, तेहना (अधीश के०) इंद्र, उपेंद्र, चक्रवर्त्यादिक, तेरूप जे (मयूर के०) मोर तेहने उल्लास करवाने (नववारिदं के०) नवीन अषाढना मेघसमान बे. वली ते केहेवा बे? तो के (कर्म के०) ज्ञानावरणादिक कर्म तेरूप जे (द्रु के०) वृक्ष तेहना (उन्मूलने के०) उखेडी नाखवाने विषे एटले दूर करवाने विषे (हस्तिमल्लं के०) ऐरावत हस्ती जेवा बे ॥ २१ ॥

हवे वीशमा श्रीमुनिसुव्रतजिनने स्तवे बे.

जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमं ॥
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥

अर्थः–(मुनिसुव्रतनाथस्य के०) मुनिसुव्रतनाथसंबंधि (देशनावचनं के०) धर्मोपदेशनुं वचन, तेने (स्तुमः के०) स्तवीयें बैयें. ते देशनावचन केहेवुं बे? तो के (जगन्महामोह के०) जगत्‌ने विषे रहेला एवा जे प्राणीउ तेनो जे महामोह ते रूप जे (निद्रा के०) निद्रा, तेने दूर करवाने (प्रत्यूषसमयोपमं के०) प्रभातकालनी उपमा बे जेहने एवुं बे, अर्थात् जेम प्रभातमां उंघथकी जागीयें बैयें तेम प्रभुना उपदेशरूप प्रभातथकी अज्ञानरूप निद्रानो त्याग करी जागीयें बैयें ॥ २२ ॥

हवे एकवीशमा श्रीनमिनाथजिनने स्तवे बे.

लुठंतो नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणं ॥
वारिप्लवा इव नमेः, पांतु पादनखांशवः ॥ २३ ॥

अर्थः–(नमेः के०) श्रीनमिनाथ जे बे तेमना (पादनखांशवः के०) पाद जे पग तेना जे नख तेना अंशु जे किरणो ते, तमारुं (पांतु के०) रक्षण करो, अर्थात् नमिनाथना चरणना नखना जे किरणो बे, ते रक्षण करो. ते चरणनखांशु केहेवा बे? तो के (नमतां के०) नमस्कार करता एवा जे प्राणीउ तेमना (मूर्ध्नि के०) मस्तकने विषे (लुठंतो के०) लुंठयमान, तथा वली केहेवा बे? तो के (निर्मलीकारकारणं के०) निर्मल एटले पा

परहितपणाना कारण एटले हेतुनूत छे. आंहिं वंदन करनार प्राणीना मस्त क उपर जगवंतना पादनखनी कांति पडे छे तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे छे के (वारिप्लवाइव के०) वारि जे जल तेना प्रवाहज जाणीयें होय नहिं? ॥२३॥

हवे बावीशमा श्रीअरिष्टनेमि जिनने वंदन करुं छुं.

यडुवंशसमुडेंडुः, कर्मकक्षहुताशनः ॥ अरि
ष्टनेमिर्जगवान्, नूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥

अर्थः—(अरिष्टनेमिः के०) अरिष्टनेमिनामा (जगवान् के०) जग वान्, ते (वः के०) तमारा (अरिष्टनाशनः के०) अरिष्ट जे उपद्रव, तेने नाश करनार एवा (नूयात् के०) थाउ. ते अरिष्टनेमि केहेवा छे? तो के (यडुवंश के०) यादववंश तद्रूप जे (समुद्र के०) समुद्र, तेने उल्लास पमाडवाने (इंडु के०) चंद्रमासदृश छे. वली ते केहेवा छे? तो के (कर्म के०) कर्म जे ज्ञानावरणादि अष्टविध कर्म, तद्रूप (कक्ष के०) कक्ष जे वनखंम तेने विषे (हुताशनः के०) अग्निसमान छे. अर्थात् शु क्लध्यानानलें करी सर्व कर्म नस्म कर्यां छे जेणे एवा छे ॥ २४ ॥

हवे त्रेवीशमा श्रीपार्श्वनाथ जिनने स्तवे छे.

कमठे धरणींडे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रनुस्तु
ल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

अर्थः—(पार्श्वनाथः के०) श्रीपार्श्वनाथ, ते (वः के०) तमारी (श्रिये के०) ज्ञानादि लक्ष्मी तेने अर्थे (अस्तु के०) थाउ. हवे ते श्रीपा र्श्वनाथ केहेवा छे? तो के (कमठे के०) कमठनामें पूर्वनवनो वैरी एवो जे मेघमाली देवता तेने विषे, (च के०) वली (धरणींडे के०) पार्श्वना थ प्रनुयें बलतो उगार्यो एवो जे सर्प, ते मरीने धरणींद्र थयो ते धरणीं द्रने विषे, (तुल्यमनोवृत्तिः के०) तुल्य छे मननी वृत्ति जेमनी एवा छे. वली ते कमठ तथा धरणींद्र केहेवा छे? तो के (स्वोचितं के०) पोताने योग्य एवुं (कर्म के०) कर्म तेनें (कुर्वति के०) करे छे. अर्थात् पोत पोतानुं उचित कर्म करे छे. जेम के कमठ छे,ते उपसर्ग करे छे, अने धर णींद्र छे,ते उपसर्ग निवारे छे,पण श्रीपार्श्वनाथ छे ते समदृष्टीवाला छे पर नावमां वर्त्तता नथी. वली केहेवा छे? तो के (प्रनुः के०) समर्थ छे॥२५॥

हवे चोवीशमा श्रीवर्द्धमान स्वामीने स्तवे छे.

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥
महानंदसरोराज, मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥

अर्थः-(अर्हते के०) अरिहंत एवा (वीरनाथाय के०) श्रीमहावीर स्वामी तेमने (नमः के०) नमस्कार थाउ. ते अरिहंत केहेवा छे? तो के (श्रीमते के०) केवल ज्ञानरूप छे धन जेने तथा वली केहेवा छे? तो के (अद्भुतश्रिया के०) आठ महाप्रातिहार्य तथा चोत्रीश अतिशयादिक जे अद्भुत लक्ष्मी तेणे करीने (सनाथाय के०) सहित छे. वली केहेवा छे? तो के (महानंद के०) महानंदरूप (सरः के०) सरोवर तेने विषे क्रीडा करवाने (राजमरालाय के०) राजहंस नामा पक्षीनी तुल्य छे ॥ २६ ॥

जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीश सेवितः श्रीमान् ॥
विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २७ ॥

अर्थः-(विजितान्यतेजाः के०) विशेषें करी जींत्युं छे अन्यनुं तेज जेणें अने (सुराऽसुराधीश के०) सुर अने असुर, तेना जे इंद्रो तेमणें (सेवितः के०) सेवेला छे जेमने, तथा वली केहेवा छे? तो के (श्रीमान् के०) केवल ज्ञानरूपलक्ष्मीवंत छे. वली केहेवा छे? तो के (विमलः के०) निर्मल छे, तथा (त्रासविरहितः के०) सप्तभयरूप त्रास ते थकी विशेषें करी रहित छे, तथा वली केहेवा छे? तो के (त्रिभुवन के०) त्रण भुवनने विषे (चूडामणिः के०) मुकुटसमान छे. एवा (भगवान् के०) षडैश्वर्यगुणयुक्त प्रभु ते, (जयति के०) जयवंता वर्त्ते छे ॥ २७ ॥

वीरः सर्वसुराऽसुरेंद्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो, वीरे
श्रीधृतिकीर्त्तिकांतिनिचयः, श्रीवीर भद्रं दिश॥२८॥

अर्थः-(सर्व के०) समग्र (सुर के०) वैमानिक देवता अने (असुर

के०) नवनपत्यादिक देवता, तेमना जे (इंड् के०) इंड्रो ने, तेमणें (महितः के०) पूजित एवा ने, वली वीरनगवान् केहेवा ने ? तो के (वीरः के०) वीरस्वामी ने, अर्थात् वीर जेमनुं नाम ने अने ए पूर्वोक्त विशेषणें युक्त जे (वीरं के०) वीरस्वामी ते प्रत्यें (बुधाः के०) पंमितो, (संश्रिताः के०) आश्रय करी रहेला ने. तथा (वीरेण के०) वीरस्वामीयें (स्वकर्मनिचयः के०) पोताना कर्मनो निचय जे समुदाय, ते (अनिहतः के०) समस्त प्रकारें हण्यो ने. एवा (वीराय के०) वीरस्वामीने (नित्यं के०) निरंतर (नमः के०) नमस्कार थाउ. तथा (वीरात् के०) वीरथकी (इदं के०) आ (तीर्थं के०) प्रत्यक्ष चतुर्विधसंघरूप तीर्थ अथवा द्वादशांगीश्रुतरूप तीर्थ, (प्रवृत्तं के०) प्रवर्त्युं ने, ते तीर्थ केहेवुं ने ? तो के (अतुलं के०) नथी उपमा जेने एवुं ने, तथा (वीरस्य के०) वीर नगवाननुं (तपः के०) तप, ते (घोरं के०) कायर प्राणीयें आचरवुं घणुं कठिन ने, तथा (वीरे के०) श्रीवीरस्वामीने विषे(श्री के०) केवलज्ञानरूप लक्ष्मी, तथा (धृति के०) धैर्य, (कीर्त्ति के०) कीर्त्ति तथा (कांति के०) अद्भुतरूप, तेनो (निचयः के०) समूह ते वर्त्ते ने, एवा (श्रीवीर के०) हे श्री वीर स्वामिन् ! तमो (नई के०) कल्याण प्रत्यें (दिश के०) आपो ॥ २८ ॥

हवे सर्व जिन चैत्यने नमन करवाने कहे ने.

अवनितलगतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमानां,वरनुवनगतानां दिव्यवैमानिकानां॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरनुवनानां नावतोऽहं नमामि॥२९॥

अर्थः-(अवनितलगतानां के०) पृथ्वीना तलने विषे रहेलां एवां (कृत्रिमाऽकृत्रिमानां के०) कृत्रिम एटले करेलां अने अकृत्रिम एटले नहिं करेलां एटले अशाश्वतां अने शाश्वतां एवां जे चैत्य, तथा (दिव्यवैमानिकानां के०) वैमानिक देवो अने नवनपति व्यंतरादिक देवो, तेनां (नुवन के०) घर तेने विषे (गतानां के०) रह्यां एवां, तथा (इह के०) आ मनुष्यलोकने विषे (मनुजकृतानां के०) मनुष्य जे नरतादिक राजा प्रमुख तेमणें करावेलां एवां अने जेमने (देवराजार्चितानां के०) देवतानां राजा जे

इंद्र तेणें अर्चित एटले पूजित कर्यां एवां (जिनवर के०) सामान्य केवली, तेनें विषे प्रधान एवा जे तीर्थंकर, तेमनां (भुवनानां के०) भुवन जे चैत्य एटले जिनप्रतिमाउ छे, तेमने (भावतः के०) भावथकी (अहं के०) हुं (नमामि के०) नमस्कार करुं छुं ॥ २ए ॥

सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं परमेष्ठिनं ॥ देवा
धिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३० ॥

अर्थः–(सर्वेषां के०) सर्व एवा (वेधसां के०) ज्ञाता पुरुषो ते मध्यें (आद्यं के०) प्रथम मुख्य एवा तथा (आदिमं के०) आदिम (परमेष्ठिनं के०) परमेष्ठिरूप एवा तथा (देवाधिदेवं के०) देवताउना देव जे इंद्र तेना पण देव एवा तथा (सर्वज्ञं के०) सर्व पदार्थने जाणनारा एवा, (श्रीवीरं के०) श्रीवीरभगवान् तेमनुं (प्रणिदध्महे के०) प्रकर्षे करी ध्यान करीयें छेयें ॥ ३० ॥

देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानलो ॥ देवः
सिद्धिवधूविशालहृदयाऽलंकारहारोपमः ॥ देवो
ऽष्टादशदोषसिंधुरघटानिर्भेदपंचाननो ॥ भव्यानां
विदधातु वांछितफलं श्रीवीतरागोजिनः ॥ ३१ ॥

अर्थः–(श्री वीतरागः के०) श्रीवीतराग एवा (जिनः) जिन ते, (भव्यानां के०) भव्यजीवोने (वांछितफलं के०) वांछित एवा फलने (विदधातु के०) आपो. ते (देवः के०) वीतराग देव केहेवा छे ? तो के (अनेक के०) अनेक एवा (भव के०) भवकोडाकोडीने विषे (अर्जित के०) संचेलां अने (ऊर्जित के०) घणां एवां जे (महापाप के०) मोहोटां पाप, तेनें (प्रदीप के०) प्रकर्षे करी बालवाने अर्थे (अनलः के०) अग्निसमान छे, वली ते केहेवा छे ? तो के (देवः के०) देव छे, एटले प्रकाशयुक्त छे, तथा वली केहेवा छे ? तो के (सिद्धिवधू के०) मोक्षरूप जे स्त्री, ते संबंधी (विशालहृदय के०) विशाल हृदय तेने विषे (अलंकारहारोपमः के०) अलंकारहारनी उपमा छे जेमने एवा छे, वली (देवः के०) देव केहेवा छे ? तो के (अष्टा

दशदोष के०) अढार दोष तद्रूप जे (सिंधुरघटा के०) गजघटा तेहने (निर्भेद के०) भेदवानें (पंचाननः के०) केसरी सिंह समान छे ॥ ३१ ॥

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः, श्रीमा
न् रैवतकःप्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंमपः ॥ वैभारः कन
काचलोऽर्बुदगिरिःश्रीचित्रकूटादय, स्तत्र श्रीऋषभाद
यो जिनवराः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ३२ ॥ इति ॥ ५२ ॥

अर्थः–(ख्यातः के०) प्रख्यातवंत एवो, (अष्टापदपर्वतः के०) अष्टापद पर्वत, तथा (गजपदः के०) गजपद पर्वत, वली (सम्मेतशैलाभिधः के०) सम्मेतशिखरनामा पर्वत, तथा (श्रीमान् के०) लक्ष्मीवंत एवो (रैवतकः के०) रेवताचल ते गिरनार पर्वत, तथा (प्रसिद्धमहिमा के०) प्रसिद्ध छे महिमा जेनो एवो (शत्रुंजयो मंमपः के०) श्रीसिद्धगिरिमंमप पर्वत, वली (वैभारः के०) वैभार पर्वत, तथा कनकाचलः के०) मेरुपर्वत तथा (अर्बुदगिरिः के०) आबू पर्वत, तथा (श्रीचित्रकूटादयः के०) श्रीचित्रकूटादिक पर्वतो जे छे (तत्र के०) तेने विषे (श्रीऋषभादयः के०) श्रीऋषभादिक (जिनवराः के०) जिनवरो छे, एटले सामान्य केवलीने विषे प्रधान एवा तीर्थंकरो छे ते, (वः के०) तमारुं (मंगलं के०) कल्याण तेने (कुर्वंतु के०) करो ॥ ३२ ॥ इति सकलार्हत्संपूर्णम् ॥५२॥

॥ अथ श्रीश्रावकपाक्षिकादिसंक्षेपातिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे को अतिचार, पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुउ हुइ, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अब तडुभए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काले वेलायें भण्यो, गण्यो विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेरा कन्हें भणी, अनेरो गुरु कह्यो. देववंदनवांदणे, पडिक्कमणे, सज्झाय कर

तां, जणतां, गुणतां, कूडुं अक्षर, कान्हा मात्रें, आगलो उंबो न . सूत्र अर्थ बिहूं कूडां कह्यां. साधु तणे धर्मे काजो मांमो, अणपडिलेहः काजो अण उद्धरिउं. असज्झाइ अणोजामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धा न जण्यो. गुण्यो. श्रावकतणे धर्मे थविरावलि, पडिक्कमणासूत्र, उपदेशमाल प्रमुख कालवेला काजो अणउद्धरियें पढियो. ज्ञानद्रव्य नक्षित, उपेक्षित प्रज्ञा पराध विणासियो, विणसतां उवेखियो, सार संनाल न कीधी तथा ज्ञानो पगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी, वही, उलिया प्रत्यें पग लागो, थूंक लागो, थूंकें करी अक्षर मांज्युं, कन्हें बते आहार निहार कीधो. ज्ञानवंत प्रत्यें द्वेष, मत्सर, अंतराय, अवज्ञा कीधी. आपणा जाणवा तणो गर्व चिंतव्यो ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १ ॥

दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढ दिछी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छलप्पनावणे अछ ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म तणे विपे निःशंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्मसंबंधिया फलतणे विपे निस्संदेह बुद्धि धरी नहीं. तपोधन, तपोधनी प्रत्यें मलमलिन गात्र देखी डुगंछा कीधी. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रनावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहि गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अनक्ति कीधी. तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारणद्रव्य, नक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराध विणास्यो. विणसतो उवेख्यो. छती शक्तिएं सार, संनाल न कीधी. तथा साधर्मिकशुं कलहकर्मबंध कीधो. अधोती अष्टपट मुखकोश पाखें देवपूजा कीधी. वासकूंपी, धूपधाणुं, कलश तणो ठबको लागो. देहरा पोसालमांहि मलश्लेष्म मूक्यां. हास्य, केलि, कुतूहल कीधां. जिनजुवनें चोराशी आशातना, गुरुप्रत्यें तेत्रीश आशातना, ठवणहारी हाथथकुं पड्युं, पडिलेहवुं विसार्युं. गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं ॥ दंसणाचार व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ २ ॥

चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अछविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ ईर्यासमिति, नाषासमिति, एषणासमिति, आदाननांमनिखेवणासमिति, पारिठा

वणियासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए अष्ट प्रवचन माता तणे धर्मै, सदैव साधु श्रावक तणे धर्मै, सामायिक पोसह लीधे, रूडी परें चिंतव्युं नहीं. खंमण, विराधना कीधी ॥ चारित्राचार व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अति चार पक्ष० ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मै सम्यक्त्व मूल बारव्रत सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगिछा० ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणां बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, जिनवचनतणो संदेह कीधो ॥ १ ॥ आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल पादरदेवता, गोत्रदेवता, देवदेहरानो प्रजाव देखी रोग आवे, इह लोक परलोकार्थें पूज्या, मान्या. बौद्ध, सांख्य, संन्यासी, जरडा, जगत, लिंगीया, योगी, दरवेश, अनेराइ दर्शनीयानुं कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण जूलाव्या. मोह्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांजाल्यां. श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माही पूनम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरी त्रीज, विणायग चोथ, नागपंचमी, जीलणा छठी, शीयल सप्तमी, ध्रुवअष्टमी, नोली नवमी, अहवदशमी, व्रत इग्यारसी, वत्सबारसी, धनतेरसी, अनंत चौदसी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायन, नैवेद्य, याग, जोग, मान्या. पींपले पाणी रेड्यां, रेडाव्यां. घर बाहिर, कूइ, तलाव, नदी, इह, कुंम, वाव्य, समुद्रे, पुण्यहेतु स्नान कीधां ॥ २ ॥ वितिगिछाः—धर्मसंबंधीयां फलतणो संदेह कीधो. जिनअरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण जणी पूज्या नहिं. इहलोक परलोक संबंधीया जोगवंछित पूजा कीधी. रोग, आतंक कष्ट आवे खीण वचन याग मान्या. महात्माना जात, पाणी, मल शोजा तणी निंदा कीधी ॥३॥ प्रीति मांमी ॥४॥ तेहनी दाक्षिण लगें, तेहनो धर्म मान्यो ॥ ५ ॥ श्रीसम्यक्त्व व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अ० प० ॥४॥

पहेले स्थूल प्राणातिपातविरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ वह बंध छविछेए० ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्यें रीशवशें गाढो घाय घाल्यो. गाढ बंधण बांध्युं, घणे जारें पीड्यो. निलंछण कर्म कीधुं. चारा पाणी तणी वेलायें सार संजाल न कीधी. लेणे, देणे कुणहने उढ्युं, लंघाव्युं, तेणें जूखें आपण जम्या, शव्यां धान्य रूडी परें जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोल्युं, जीवाणी

शूकव्युं. गलतां फालक नाखी, गलणुं रूडुं न कीधुं. इंधण, छाणां, अणशोध्यां बाल्यां. तेमांही साप, खजूरा, विंछी, सरोला, मांकड, जूवा, गींगोडा, साहतां मूआ, दूहव्या, रूडे स्थानकें न मूक्या. कीडी, मंकोडी, उदेही, घी मेल, कातरा, चूडेल, पतंगीया, देडकां, अलसीयां, इयल प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, विणसतां उवेख्या, चांप्या, दूहव्या, हलावतां, चलावतां, पाणी छांटतां, अनेराइ काम काज करतां, निध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी ॥ पहेले स्थूल प्राणातिपातव्रतविषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥५॥

बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ सहस्सा रहस्स दारे० ॥ सहसात्कारें कुणहप्रत्यें अयुक्त आल दीधुं. स्वदारामंत्रभेद कीधो. अनेराइ कुणहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो. कुणहने अपाय पाडवा कूडी बुद्धि धरी. कूडो लेख लख्यो, जूठी साख भरी, थापणमोसो कीधो. कन्या, ढोर, भूमि संबंधिया लेहणे, देहणे, वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या ॥ बीजे स्थूलमृषावादव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ० ॥ पक्षदि०॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पउगे० ॥ घर बाहिर, खेत्र, खले, परायुं अण मोकल्युं लीधुं, वावर्युं. चोराइ वस्तु लीधी, चोर प्रत्यें संबल दीधुं, विरुद्ध राज्यादि कर्म कीधुं. कूडा मान, मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची कुणहने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. नवा जूना सरस, नीरस वस्तु तणा भेल संभेल कीधा ॥ त्रीजे अदत्तादान व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्री विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर० ॥ अपरिगृहीतागमन कीधुं, अनंगक्रीडा कीधी, विवाह कारण कीधुं, कामभोगतणे विषे अति अभिलाष कीधो, दृष्टिविपर्यास कीधो, आठम, चउदशी तणा नियम लेइ भांग्या. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वपनांतरें हूआ ॥ चोथे मैथुनविरमणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥८॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू० ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरुं राख्युं. सोनुं, रूपुं, नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं. पढवुं विसार्युं ॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ९ ॥

छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे० ॥ ऊर्द्ध्वदिशें, अधोदिशें, तिर्यग्दिशें, जावा आववा तणा नियम लेइ भांग्या. एक दिशि संक्षेपी, बीजी दिशि वधारी. विस्मृत लगें अधिक भूमि गया. पाठव णी आघी मोकली. वाहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकालें गामतरुं कीधुं ॥ छठे दिग्विरमण व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १० ॥

सातमे भोगोपभोगव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते पडिबद्धे० ॥ सचित्त आहारे, सचित्त प्रतिबद्ध आहारे, अप्पोलसहिभरकणया, डुप्पोलसहिभ रकणया, तुच्छोसहिभरकणया, सचित्तभरकणया, अपक्काहारे, दुःपक्काहारे तुच्छऔषधि कुली आंबली, ऊला, ऊंबी, पहूंक, पापडी तणां भक्षण कीधां. अनंतकाय, अथाणां तणां भक्षण कीधां. तथा रिंगण, विंगण, पीलू, पीचू, पंपोटा, महुडां, वडबोर प्रमुख बहु बीज तणां भक्षण कीधां ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसी नाण भत्तेसु ॥ १ ॥

ए चउद नियम दिनप्रत्यें लीधा नहीं. लेइ संक्षेप्या नहीं. सचित्तद्रव्य, विगय, खासडां, वाहन, तंबोल, फोफल, बेसण, शयन, पाणी, अंघोलणे, फल, फूल, भोजन, आछादनें, जे कोइ नियम लेइ भांग्या.. बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आदूं, मूला, गाजर, पिंम, पिंमालु, कचूरो, सूरण, खिलोडां, मोरडा, सेलरां, कुली आंबली, वाधरडां, गिरमर, नीली गलो, वाल्होल खाधी. वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवस ना ऊदन, मधु, महुडां, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टींबरुं, गुंदां, बोर, अथाणुं, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां. लगबग वेलायें वालू कीधां. दिन उग्याविण शीराव्या. जे कोइ अनेरो अतिचार हुउ होय ॥ तथा कर्मतः इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लखवाणिज्य, रसवाणिज्य, विषवाणिज्य, केशवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरद्दहतलायसोसणया, असईपोसणया ॥ ए पांच सामान्य, ए पन्नर कर्मादानमांहि कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, अनेरां कांइ सावद्य कर्म समाचर्यां होय ॥ सातमे भोगोपभोग व्रतविषइयो अनेरो० ॥ प०॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंडव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइ ए० ॥ अनर्थ दंम

जे कहियें, काम काज पाखें मुधा पाप लाग्यां. मुखहास्य, खेल, कुतूहल, अंगकुचेष्टा कीधी. निरर्थक लोकने कर्षण, गामां वाही, ग्रामांतरें कमावानी बुद्धि दीधी. कण, वस्तु, ढोर लेवराव्यां. अनेराइ पापोपदेश दीधा. कोश, कूहाडा, रथ, उखल, मूशल, घर, घंटी प्रमुख सज्ज करी मेल्यां. माग्यां आप्यां. अंघोल नाहणें, पग धोयणें, खालें पाणी ढोल्यां. अथवा झीलणां झील्यां. जूवटुं रम्या. नाटक पेखणां जोयां. पुरुष स्त्रीना रूप, शृंगार वखाण्या. राजकथा, देशकथा, भक्तकथा, स्त्रीकथा, पराइ तांत कीधी. कर्कश वचन बोल्या, संभेडा लगाड्या. शस्त्र, कूकडा प्रमुख झूझता जोया. कलह करता जोया, लोक तणी उपार्जना कीधी, सुखकीर्त्ति देश लइ चिंतवी. लूण, पाणी, माटी, कण, कपाशिया, काजविण चांप्या. ते उपरें बेठ, आली वनस्पति चूंटी, अंगीठ काष्ठ वणिज कीधां. छाश, पाणी, घी, तेल, गोल, आम्लवेतस, बेरंजातणां भाजन उघाडां मेहेल्यां. तेमांहे कीडी, मंकोडी, कुंथुआ, उदेही, घीमेल, घिरोली प्रमुख जे कोइ जीव विणठा. शूडा, सालही, क्रीडाहेतु पांजरें घाल्या ॥ अनेराइ जीवने राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी. एकने मृत्युहाणी वांछी ॥ आठमे अनर्थदंडव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥१२॥

नवमे सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे० ॥ सामायिकमांहि मन आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं. वचन सावद्य बोल्युं. शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. छती शक्तिएं सामायिक लीधो नहीं, उघाडे मुखें बोल्या, सामायिकमांहि उंघ आवी, वीज दीवा तणी उजेही लागी, विकथा कीधी. कण, कपाशिया, माटी, पाणी तणा संघट्ट हुआ. मुहपत्ती संघट्टी, सामायिक अण पूगे पार्यो, पारवो विसार्यो ॥ नवमे सामायिकव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलक्खेवे ॥ नीमीभूमिकामांहिथी बाहिर अणाव्युं. आपण कन्हेथी बाहीर मोकल्युं. शब्द संभलावी, रूप देखाडी, कांकरो नाख्यो. आपणपणुं छतुं जणाव्युं. पुद्गल तणो प्रक्षेप कीधो ॥ दशमे देशावगाशिकव्रत विषइयो अनेरो० प० ॥ १४ ॥

अग्यारमे पौषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ पो

सह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरलां थंमिलां संदीसे रूडां शोध्यां नहीं. पडिलेह्यां नहीं. थंमिल वावरतां, मात्रुं परठवतां, चिंतवणी न कीधो. 'अणुजाणह जस्सगो' न कह्यो. परठव्यां पूठें वार त्रण वोसिरे, वोसिरे न कह्यो. देहरा पोसालमांहे पेसतां, निसरतां, निसहि आवस्सहि कहेवी विसारी. पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकायतणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव कीधा. संथारा पोरिसी तणो विधि भणवो विसार्यो. अविधियें संथार्या. पारणादिक तणी चिंता निपजावी. कालवेलायें देव न वांद्या. पोसह असूरो लीधो. सवारो पार्यो. पर्वतिथें पोसह लीधो नहीं ॥ अग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठां उपर छतां असूजतुं दान दीधुं. वहोरवा वेला टली रह्यां. मत्सरभगें दान दीधुं. देवातणी बुद्धें पराइ वस्तु धणीने अण कहे दीधी, अथवा आपणी करी दीधी. अणदेवा तणी बुद्धें सूजतुं फेडी, असूजतुं कीधुं. गुणवंत आवे भक्ति न साचवी. अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्तें उद्धर्यां नहीं. दीन, खीन प्रत्यें अनुकंपा दान दीधुं नहीं. देतां वार्युं ॥ बारमें अतिथिसंविभागव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १६ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामभोगासंसप्पउगे. इहलोकें धर्मतणा प्रभाव लगें राजऋद्धि भोग वांछ्या. परलोकें देव, देवेंद्र चक्रवर्त्तीतणी पदवी वांछी. सुख आवे जीववातणी वांछा कीधी. दुःख आवे मरवा तणी वांछा कीधी. काम भोगतणी वांछा कीधी ॥ संलेषणाव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १७ ॥

तपाचार बार भेद ॥ छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसणमूणोअरिया० ॥ अणसण भणी उपवासादिक पर्वतिथि तप न कीधुं. ऊणोदरी बे चार कवल ऊणा न उठ्या. द्रव्य भणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप न कीधो. रसत्याग न कीधो. कायक्लेश लोचादि कष्ट कर्यां नहीं. संलीणतां अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं. पच्चरकाण भांग्यां, पाटलो मगतो फेडयो नहीं, गंठसही पच्चरकाण भांग्युं. उपवास, आंबील, नीवि कीधे मुखें सचित्त पाणी घाल्युं. विमन हुउ ॥ बाह्यतपव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १८ ॥

अभ्यंतर तप ॥ पायछित्तं विणर्ड० ॥ सूधुं प्रायछित्त पडिवज्युं नहीं, आ लोयण तणी सूधि टीप कीधी नहीं, सूधो तप पहोंचाड्यो नहीं, साते भेदें विनय न कीधो, दश भेदें वैयावच्च न कीधो, पंचविध सज्झाय न कीधो, कषाय वोसराव्यो नहीं, दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग न कीधो, शुक्लध्यान, धर्मध्यान, ध्यायां नहीं. आर्त्त, रौद्र, ध्यान ध्यायां ॥ अभ्यंतर तप व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो० ॥ १९ ॥

वीर्याचार त्रण अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरियो० ॥ मनोवीर्य, धर्म ध्यान तणे विषे उद्यम न कीधो. पडिक्कमणें देवपूजा, धर्मानुष्ठान, दान, शील तप, भावना, छती शक्तियें गोपवी, आलसें उद्यम न कीधो. बेठां पडिक्कमणुं कीधुं. रूडां खमासमण न दीधां ॥ वीर्याचार विषइउ अनेरो० ॥ २० ॥

पडिसिद्धाणं करणे० ॥ प्रतिषेध, अभक्ष्य, अनंतकाय, महापरिग्रह, जे कोइ प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानकमांहे कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां हुए, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ २१ ॥

एवंकारें साधु श्रावकतणे धर्में सम्यक्त्वमूल बार व्रत, एकशो चोवीशं अतिचार, पक्षदिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुवो हुइ, ते सवि हुं मन, वचन, कायायेंकरी मिछामि दुक्कडं ॥ २२ ॥ इति ॥ ५३ ॥

॥ अथ श्रावकपाक्षिकादिविस्तारातिचार प्रारंभः ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्रा चार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहे अनेरो जे कोइ अति चार, पक्षदिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे त हय निन्हवणे ॥ वंजण अब तदुभए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञा न कालवेलामांहे भणिउ गुणीउ नहीं. अकालें भण्यो. विनयहीन, बहुमा नहीन, योगउपधानहीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो. देव गुरु वांदणे, पडिक्कमणें सज्झाय करतां, भणतां, गुणतां, कूडुं अक्षर, कान्हे,

मात्रें अधिक ऊंगो जएयुं. सूत्र कूडुं कह्युं. अर्थ कूडो कह्यो. तदुभय कूडां कह्यां. भणीनें विसार्यां. साधु तणे धर्मकाजें काजो अणउद्धर्ये, मांमो अणपडिलेहे, वस्ती अणशोधे, अणपवेसे, असज्झाय, अणोझायमांहे श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो, गुण्यो. श्रावकतणे धर्मे थविरावलि, पडिक्कमणा, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत भण्यो, गुण्यो. कालवेला काजो अणउद्धर्ये पढियो. ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी, वही, उलिया प्रमुख प्रत्यें पग लाग्यो. थूंक लाग्यो. थूंकें करी अक्षर मांज्यो. उशीशें धर्यो. कन्हें छतां आहार निहार कीधो. ज्ञानद्रव्य भक्षतां, उपेक्षा कीधी. प्रज्ञापराधें विणसतो विणाश्यो. विणसतो उवेख्यो. छती शक्तियें सार संभाल न कीधी. ज्ञानवंत प्रत्यें द्वेष मत्सर चिंतव्यो. अवज्ञा, आशातना कीधी. कोई प्रत्यें भणतां, गणतां, अंतराय कीधो. आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो. मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी. कोइ तोतडो, बोबडो हस्यो, वितर्क्यो; अन्यथा प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइउ अनेरो जे० ॥ पक्ष० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निवितिगिछा अमूढदिठी अ ॥ उववूहथिरीकरणे, वछलप्पभावणे अठ ॥ २ ॥ देव, गुरु, धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधिया फलतणेविषे निःसंदेहबुद्धि धरी नहिं. साधु, साधवीनां मल मलिन गात्र देखी दुगंछा निपजावी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर अभाव हुउ. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति निपजावी. अबहुमान कीधो. तथा देवद्रव्य, गुरु द्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य, भक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराधें विणाश्युं. विणसता उवेख्युं. छती शक्तियें सार, संभाल न कीधी; तथा साधर्मिकसाथें कलह कर्मबंध कीधो. अधोती, अष्टपडमुखकोश पाखें देवपूजा कीधी. बिंब प्रत्यें वासकूंपी, धूपधाणुं, कलशतणो ठबको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाडयुं. उछ्वास, निःश्वास लाग्यो. देहरे, उपासरे, मलश्लेष्मादिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार, निहार कीधा. पान सोपारी निवेदिआं

खाधां. ठवणहारि हाथथकी पाडी. पडिलेहवुं विसार्युं. जिनजुवनें चोराशी आशातना गुरु, गुरुणी प्रत्यें तेत्रीश आशातना कीधी होय. गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहिं ॥ दर्शनाचार व्रतविषइउं अनेरो जे कोइ अति० ॥ २ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥ ईर्यासमिति, ते अणजोए हिंमया. जाषासमिति, ते सावद्यवचन बोल्या. एसणा समिति, ते तृण मगल अन्न, पाणी असूझतुं लीधुं. आदानजंमत्तनिरकेव णासमिति, ते अशन, शयन, उपगरण, मातरुं प्रमुख अणपूंजी जीवाकुल जूमिकायें मूक्युं, लीधुं. पारिष्ठापनिकासमिति, ते मल, मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजी जीवाकुलजूमिकायें परठव्युं. मनोगुप्ति, मनमां आर्त्त, रौद्र, ध्यान ध्यायां. वचनगुप्ति, सावद्यवचन बोल्यो. कायगुप्ति, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. अणपूंजे बेठा. ए अष्ट प्रवचन माता, ते सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे रूडी पेरें पाल्यां नहीं. खंम णा विराधना हुइ॥ चारित्राचारव्रतविषइउं अनेरो जे कोइ० ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बार व्रत सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार ॥ संकाकंखविगिछा० ॥ संकाः—श्रीअरिहंततणां बल, अतिशय ज्ञानलक्ष्मी, गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, श्री जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जूजूवा देव देहेरांना प्रजाव देखी, रोग आतंक कष्ट आवे, इह लोक परलोकार्थे पूज्या; मान्या. सिद्ध, विनायक, जीराउलाने मान्युं; इछ्युं. बौद्धसांख्यादिक, संन्यासी, जरडा, जगत, लिंगीया, जोगिया, जोगि, दरवेश, अनेरा दर्शनिया तणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विना जूलाव्या; मोह्या. कुशास्त्र शिख्यां; सांजल्यां. श्राद्ध, संवछरी, होली, बलेव, माहिपूनेम, अजा पडवो, प्रेत बीज, गौरी त्रीज, विनायक चोथ, नाग पांचमी, फिलणा छठी, शील सातमी, ध्रुव आठमी, नोली नोमी, अहवा दशमी, व्रत इग्यारसी, वत्स बारसी, धन तेरसी, अनंत चउदसी अने अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां, नवोदक याग, जोग, उतारणां कीधां, कराव्यां. अनुमोद्यां. पिंपले

पाणी घाल्यां, घलाव्यां. घर बाहिर क्षेत्रे, खले, कूवें, तलावें, नदीयें, द्रहे, वावीये, समुद्रे, कुंडे, पुण्यहेतु स्नान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, दान दीधां ॥ ग्रहण, शनिश्चर, माहामासें, नवरात्री नाहाया. अजाणनां थाप्यां ॥ अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां,कराव्यां ॥ वितिगिछाः—धर्मसंबंधीआ फलतणे विषे संदेह कीधो. जिनअरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपगारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण जणी न मान्या, न पूज्या. महासती माहात्मानी इह लोक, परलोकसंबंधिया जोगवांछित पूजा कीधी. रोग, आतंक, कष्ट आवे, खिन्न वचन जोग मान्या. महात्माना जात, पाणी, मलशोजा तणी निंदा कीधी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुजाव हुउं. मिथ्यात्वी तणी पूजा, प्रजावना देखी प्रशंसा कीधी.प्रीति मांडी.दाक्षिण लगें तेहनो धर्ममान्यो; कीधो॥ श्रीसम्यक्त्वविषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो हुइ०॥४॥

पेहेले स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ वह बंध छविछेए० ॥ द्विपद, चतुष्पद प्रत्यें रीशवशें, गाढो घाव घाल्यो. गाढे बंधने बांध्यां. अधिक जारें घाल्यो. निर्लांछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेलायें सार, संजाल न कीधी. लेहणे, देहणे, किणही प्रत्यें लंघाव्यो. तेणें जूखें आपण जम्या. कन्हें रही मराव्यो. बंधीखाने घलाव्यो. शल्यां धान्य तावडे नाख्यां. दलाव्यां, जरडाव्यां, शोधी न वावर्यां, इंधण, छाणां, अणशोध्यां, बाल्यां. तेमांहे साप, विंछी, खजूरा, सरवलां, मांकड, जूआ, गिंगोडा, साहतां मुआ. उहव्या. रूडे स्थानकें न मूक्या. कीडी, मंकोडीनां इंडां विछोह्यां. लीख, फोडी. उदेही, कीडी, मंकोडी, धीमेल, कातरां, चूडेल, पतंगिया, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंता, डांस, मसा, बगतरा, मांखी, तीड प्रमुख जीव विणठ्या. माला हलावतां, चलावतां, पंखी, चडकलां तथा काग तणां इंडा फोड्यां. अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणाश्या, चांप्या, उहव्या. कांइ हलावतां, चलावतां, पाणी छाटतां, अनेरा कांइ काम काज करतां निध्धंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी. संखारो शूकव्यो. रूडुं गलणुं न कीधुं. अणगल पाणी वावर्युं. रूडी जयणा न कीधी. अणगल पाणीयें झील्या. लूगडां धोयां. खाटला तावडे नाख्या. झाटक्या. जीवाकूलभूमि लींपी. वाशी गार राखी. दलणे, खांडणे, लींपणे, रूडी जयणा न कीधी. आठम

चउदशना नियम जांग्या. धूणी करावी ॥ पेहेले स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रतविषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्कदिवसमांहे हुवो हुइ० ॥ ५ ॥

बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ सहस्सारहस्सदारे० ॥ सहसात्कारें कुणही प्रत्यें अजुगतुं आल, अन्याख्यान दीधुं. स्वदारामंत्रजेद कीधो. अनेरा कुणहीनो मंत्र आलोच, मर्म प्रकाश्यो. कुणहीने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो. कूडी साख जरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, गौ, जूमि संबंधी लेहेणें, देहेणें, व्यवसाय वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. हाथ, पग तणी गाल दीधी. कडकडा मोड्या. मर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइउ अने० ॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पउगे० ॥ घर, बाहिर, खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी. चोराइ वस्तु वोहोरी. चोरधाड प्रत्यें संकेत कीधो. तेने संबल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो. नवा, पूराणा सरस, विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना जेल संजेल कीधा. कूडे काटले, तोलें, मानें, मापें, वोहोर्यां. दाणचोरी कीधी. कुणहीने लेखे वरांस्यो, साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो. परवंचना कीधी. पासंग कूडा कीधा. डांमी चढावी. लहके, त्रहके कूडां,काटलां, मानमापा कीधा. माता, पिता, पुत्र, कलत्र वंची कोइने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. थापण उलवी. कुणहीने लेखे पलेखे जोलव्युं. पडी वस्तु उलवी लीधी॥त्रीजे स्थूलअदत्तादानवि०॥७॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमनविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर० ॥ अपरिगृहीतागमन ॥ इत्वर परिगृहीतागमन कीधुं. विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना, स्वदाराशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो. सराग वचन बोल्यां. आठम, चउदश, अनेरायें पर्वतिथें नियम जांग्या. घरघरेणां कीधां. कराव्यां. वर वहू वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. अनंग क्रीडा कीधी. स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जोड्या. ढिंगला, ढिंगली परणाव्यां. कामजोगतणे विषे तीव्र अजिलाष कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार. सुहणे स्वप्नांतरे हुवा. कुस्वप्न लाधां. नट, विट, स्त्रीसुं हांसुं कीधुं ॥ चोथा स्वदारासंतोषव्रतविषइउ अनेरो जे कोई अतिचारपक्क० ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धणधन्नखित्तवत्थू०॥ धन, धान्य, खेत्र, वास्तु, रुप्प, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुःपद, नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी, मूर्च्छा लगें संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं नहीं. ले इने पढिउं नहिं. पढवुं विसार्युं. अलीधुं मेल्युं. नियम विसार्या ॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ए ॥

छठे दिक्परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्स य परिमाणे० ॥ ऊर्ध्व दिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा, आववा तणा नियम लइ भांग्या. अ नाभोगे विस्मृत लगें अधिक भूमि गया. पाठवणी आघी, पाछी मोकली. वा हाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकालें गामतरुं कीधुं. भूमिका एक गमां संक्षेपी. बीजी गमां वधारी॥ छठे दिग्परिमाणव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अति०॥१०॥

सातमे भोगोपभोगविरमणव्रतें भोजन आश्री पांच अतिचार अने कर्म हुंती पंदर, एवं वीश अतिचार ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे० ॥ सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं. अपक्काहार, दुःपक्काहार, तुच्छोषधि तणुं भक्ष ण कीधुं. उला, उंबी, पोंक, पापडी, कीधां ॥ सच्चित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वच्छ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसी न्हाण भत्तेसु ॥ ए चौद नियम दिनगत रात्रिगत लीधा नहीं. लेइने भांग्या. बावीश अभक्ष्य,बत्रीश अनंत कायमांहि आदुं, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालु, कचूरो, सूरण,कुली आंबली, गलो तथा वाघरडां, खाधां. वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसनुं उदन लीधुं. मधु, महुडां, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टिंबरु, गुंदां, महोर; अथाणुं, आमण बोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस तथा कोठिंबडां खाधां. रा त्रिभोजन कीधां. लगबग वेलायें वालुं कीधुं. दिवस विण उगे शीराव्या, तथा कर्मतः पन्नर कर्म्मादान॥इंगालकम्मे,वणकम्मे, साडीकम्मे,भाडीकम्मे, फोडी कम्मे,ए पांच कर्म॥दंतवाणिज्जे,लरकवाणिज्जे,रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, विस वाणिज्जे ए पांच वाणिज्ज ॥ जंतपिल्लणकम्मे,निल्लंछणकम्मे,दवग्गिदावणया, सरदहतलाय सोसणया, असईपोसणया, ए पांच सामान्य ॥ ए पांच कर्म्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान, बहु सावद्य महारंभ, रांग णी, लीहाला कराव्या. इंट, निंभाडा पचाव्या.धाणी, चणा,पक्वान करी वेच्यां.

वाशी मारवण तपाव्यां. तिल वोह्रोस्था. फागुण मास उपरांत राख्या. दलीदो कीधो. अंगीठा कराव्या. श्वान, बीलाडां, शूडा, सालहि, पोश्या. अनेरा जे कांइ बहुसावद्य खर कर्मादिक समाचर्यां. वाशी गार राखी. लींपणे, घूपणें, महारंन कीधो. अणशोध्या चूला संधूक्या. घी, तेल, गोल तथा छाश तणां नाजन उघाडां मूक्यां. तेमांहि माखी, कुंती, उंदर, के गिरोली पडी. कीडी चडी. तेनी जयणा न कीधी ॥ सातमे नोगोपनोगविरमणव्रत विषइउ०॥ ११

आठमे अनर्थदंमविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कंदर्प्पलगें विटचेष्टा. हास्य, खेल, कुतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव, नाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राजकथा, नक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी. पराइ तांत कीधी. तथा पैशुन्य पणुं कीधुं. आर्त्त, रौद्र ध्यान ध्यायां. खांमां, कटार, कोश, कूहाडा, रथ, उखल, मुशल, अग्नि, घंटी, निसाह, दातरडां प्रमुख अधिकरण मेली, दाक्षिण लगें माग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो. अष्टमी, चतुर्दशीएं खांमवा, दलवा तणा नियम नांग्या. मूरख पणालगें असंबंध वाक्य बोल्या. प्रमादाचरण सेव्यां. अंघोले, नाहाणे, दातणे, पगधोअणे, खेलपाणी तेल छांटयां. ऊीलणे ऊील्या. जूवटें रम्या. हिंचोले हिंच्या. नाटक प्रेक्षणक जोयां. कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. कर्कश वचन बोल्या. आक्रोश कीधा. अबोला लीधा. करकडा मोड्या. मत्सर धर्यो. संनेडा लगाड्या. शराप दीधा. नेंसा, सांढ, हुडु, कूकडा, श्वानादिक फूऊार्यां; फूंऊतां जोया. खादि लगें अदेखाइ चिंतवी. माटी, मीठुं, कण, कपाशीया काज विण चांप्या. ते उपर बेठा. आली वनस्पति खूंदी. सूइ शस्त्रादिक निपजाव्यां. घणी निद्रा कीधी. राग, द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी. एकने मृत्यु हानि वांछी॥ए आठमे अनर्थदंमविरमणव्रत विषइउ अने० ॥ १२ ॥

नवमे सामायिक व्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्यां. शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. छती वेलायें सामायिक न लीधो. सामायिक लेइ उघाडे मुखें बोल्या. उंघ आवी. वात. विकथा, घर तणी चिंता कीधी. वीज दीवा तणी उक्षेहि हुइ. कण, कपाशिया, माटी, मीठुं, खडी, धावडी, अरणेटो पाषाण प्रमुख चांप्या. पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरिकाय, बीयकाय, इत्यादिक आनड्यां. स्त्री, तिर्यंच तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ. मु

हपत्तीयो संघट्टी. सामायिक अणपूग्युं पार्युं, पारवुं विसार्युं ॥ नवमे सा मायिकव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलपक्केवे॥ नियमित नूमिकामांहि बाहेरथी कांइ अणाव्युं,आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोकल्युं, अथवा रूप देखाडी, कांकरो नाखी, साद करी, आपण पणुं छतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावगाशिक व्रतविषइउ अनेरो जे कोइ अति० ॥१४॥

अग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार॥ संथारुच्चारुविहि० ॥अप्पडिलेहिय, डुप्पडिलेहिय, सज्जासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय, डुप्पडिलेहिय, उच्चार पासवणनूमि ॥ पोसह लिधे संथारातणी नूमि न पूंजी. बाहिरलां लहुडां, वडां स्थंमिल, दिवसें शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं. मातरुं अणपूंज्युं हलाव्युं. अणपूंजी नूमिकायें परठव्युं. परठवतां ' अणुजाणह जस्सग्गो, न कह्यो. परठव्या पूठें वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्यो. पोसहसालामांहि पेसतां निसहि, निसरतां आवसहि, वार त्रण नणी नहीं. पुढवी, अप्प, तेउ, वाऊ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप उपद्रव हुआ. संथारा पोरिसीतणो विधि नणवो विसार्यो. पोरिसिमांहे उंघ्या. अविधें संथारो पाथर्युं. पारणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलायें देव न वांद्या. पडिक्कमणुं न कीधुं. पोसह असूरो लीधो. सवेरो पाल्यो. पर्वतिथें पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमें पोषधोवासव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविन्नागव्रतें पांच अति चार ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपर छतां महात्मा. महासतीप्रत्यें असूझतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं. देवानी बुद्धें परायुं फेडी आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धें आपणुं फेडी परायुं कीधुं. वोहोरवा वेला टली रह्यां. असूरें करी माहात्मा तेड्या. मत्सर धरी दान दीधुं. गुणवंत आवे नक्ति न साचवी. छती शक्तें स्वामिवात्सल्य न कीधुं. अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्तियें उद्धर्या नहिं. दीन, क्षीण प्रत्यें अनुकंपादान न दीधुं ॥ बारमे अतिथिसंविन्नाग व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो हुइ० ॥ १६ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंस

प्पउंगे, परलोगासंसप्पउंगे, जीवियासंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे, काम भोगासंसप्पउंगे ॥ इहलोकें धर्मना प्रभाव लगें राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार, वांछ्यो. परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्त्तीतणी पदवी वांछी. सुख आवे जीवितव्य वांछ्युं. दुःख आवें मरण वांछ्युं. काम भोगतणी वांछा किधी ॥ संलेषणाव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि हुवो हुइ० ॥ १७ ॥

तपाचारना बार भेद; छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसणमूणोयरिआ० ॥ अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथें छती शक्तें कीधो नहीं. ऊणोदरी व्रत कोलिया पांच, सात, ऊणा रह्या नहिं. वृत्तिसंक्षेप, ते द्रव्यभणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहिं. रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो. कायक्लेश, लोचादिक कष्ट कर्यां नहीं. संलीनताते अंगोपांग,संकोचि राख्यां नहिं, पच्चरकाण भांग्यां. पाटलो डगतो फेडयो नहिं. गंठसी पोरिसी,साढपोरिसी, पुरिमड्ढ, एकासणुं, बेआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवुं विसार्युं. वेसतां नोकार न भण्यो, उठतां पच्चरकाण करवुं विसार्युं, गंठसीउं भांग्युं. नीवि, आंबिल, उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं. वमन हुउं॥ बाह्यतप विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे० ॥ १८ ॥

आभ्यंतरतप ॥ पायच्छित्तं विणउ०॥ मनशुद्धें गुरुकन्हें आलोयणा लीधी नहिं. गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप, लेखाशुद्धें पहुंचाडयुं नहिं. देव, गुरु, संघ, साहमीप्रत्यें विनय साचव्यो नहिं. बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं. वांचना, पृछना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो. धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां. आर्त्तध्यान तथा रौद्रध्यान ध्यायां. कर्मक्षय निमित्तं लोगस्स दश वीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमां० ॥ १९ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणिगूहिअ बलविरिउ० ॥ पढवे, गुणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, कायातणुं छतुं बल, वीर्य, गोपव्युं. रूडां पंचांग खमासमण न दीधां. वांदणातणा आवर्त्तविधि साचव्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणे बेठा. उतावळुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे हुवो होय ते स० ॥ २० ॥

नाणाइ अठ पइवय, समसंलेहण पन्नर कम्मेसु ॥ बारस तव विरिअ तिगं, चउव्वीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणंकरणेः—प्रतिषेध, अनक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीजनक्षण, महारंनपरिग्रहादिक कीधां. जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दह्या नहिं.आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी. तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोन, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानक कीधां,कराव्यां, अनुमोद्यां होय. दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न कीधां. अनेरुं जे कांइ वीतरागनी आज्ञाविरुद्ध कीधुं, कराव्युं,अनुमोद्युं होय. ए चिहुं प्रकार मांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

एवंकारें श्रावक तणे धर्मै श्रीसमकितमूल बार व्रत, एक शो चोवीश अतिचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुउ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ इति श्री श्रावक पक्की चउमासी संवत्सरि अतिचाराः॥५४॥

॥ अथ ॥

॥ नव स्मरणानि सार्थानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम सर्व स्मरणमांहे प्रधान, सर्वमंगलमां नावमंगलमय एवा पंच परमेष्ठिनुं नमस्काररूप प्रथम स्मरण लखीयें छैयें.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो॥ मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति प्रथमं स्मरणम् ॥१॥

अर्थः—(अरिहंताणं के०) विहरमान श्रीअरिहंतने महारो (नमो के०) नमस्कार हो. (सिद्धाणं के०) सर्वसिद्धने महारो (नमो के०) नमस्कार हो. (आयरिआणं के०) पंचविध आचारने पाले, एवा श्री आचार्य प्रत्यें महारो (नमो के०) नमस्कार हो. (उवज्झायाणं के०)

पच्चीश गुणधारक एवा श्री उपाध्याय प्रत्यें म्हारो (नमो के०) नमस्कार हो. (लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे (सव्वसाहूणं के०) स्थविरकल्पादिक नेदोवाला सर्व साधु प्रत्यें म्हारो (नमो के०) नमस्कार हो, (एसो के०) ए जें अरिहंतादिक संबंधी (पंचनमुक्कारो के०) पांच नमस्कार छे, एटले ए नमस्कारपंचक जे छे, ते केहेवुं छे ? तो के (सव्वपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप प्रत्यें (प्पणासणो के०) प्रकर्षें करी नाशनो करनार छे, वली ए नमस्कारपंचक केहेवुं छे ? तो के (मंगलाणंचसव्वेसिं के०) सर्वमंगलमांहे (पढमं के०) प्रथम एटले मुख्य (मंगलं के०) मंगल (हवइ के०) छे. एटले ए नावमंगल छे, ते मोक्षसुखनुं आपनार छे. आनो विस्तारार्थ आज ग्रंथना प्रारंनमां लख्यो छे ॥ १ ॥

॥ अथ उवसग्गहरनामकद्वितीयस्मरणप्रारंनः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥
तस्स गहरोगमारी, डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिठउ दूरे मंतो, तुप्न पणामोवि बहुफलो होई ॥ नर
तिरिएसुवि जीवा, पावंति न डुक्ख दोगच्चं ॥ दोहग्गं ॥
॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवप्नहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुउ महायस, नत्तिप्नर निप्नरेण हिअएण ॥
ता देव दिज्ज बोहिं, नवे नवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

ए उवसग्गहर स्तोत्रनो सविस्तर अर्थ, आज ग्रंथना चम्मोतेरमां पानामां आगल लखाई गयो छे, तेथी आंहीं लख्यो नथी.

॥ अथ संतिकरस्तोत्र नामकं तृतीयं स्मरणं प्रारन्यते ॥

॥ प्रथम आ स्तोत्र उत्पन्न थवानुं किंचित् कारण लखीयें छैयें. तपोगच्छनायक श्रीसोमसुंदरसूरिना पट्टप्रनावक श्रीमुनिसुंदर सूरि मेदपाट

देश संबंधी देवकुलपाट गामने विषे चोमासुं रह्या हता. ते समयमां श्री संघने विषे अकस्मात् मरकीनो महोटो उपद्रव उत्पन्न थयो. ते उपद्रवें पीडित एवा संघनां लोकोने जोइ जेमने स्वगुरु सान्निध्यथी सद्विद्या प्राप्त थयेली हती एवा अने करुणासहितहृदयवाला श्रीमुनिसुंदरसूरि, ते मणें श्रीसूरिमंत्रना आम्नायगर्भित एवुं आ संतिकरनामा स्तोत्र रच्युं, एना पठनपाठनथी तथा ए स्तोत्रमंत्रित जल छांटवाथी श्रीसंघने समस्त मरकीनो उपद्रव शांत थयो, त्यारथी आ स्तोत्रने पठनपाठनादिकनो संप्रदाय चाल्यो छे, ते स्तोत्र, अर्थसहित लखीयें छैयें ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरिइ दायारं ॥
समरामि भत्त पालग, निव्वाणी गरुडकयसेवं ॥ १ ॥

अर्थः–आ ठेकाणें अहं ए कर्तृपद अध्याहारथी लेवुं. एटले (अहं के०) हुं (संतिजिणं के०) वर्त्तमान चोवीशीना शोलमां तीर्थंकर श्रीशांतिजिन, ते प्रत्यें (समरामि के०) मनमां चिंतवन करुं छुं, एटले ध्यान करुं छुं. ते श्रीशांतिनाथ केहेवा छे? तो के (संतिकरं के०) सर्व उपद्रवना निवारण करनारा छे, केम के? प्रभु गर्भगत थया, तेवारें एमनी माताना पग धोयेला जलना छांटवाथकी लोकोने मरकीनो उपद्रव शांत थयो, तेथी माता, पितायें शांतिनाथ एवुं नाम पाड्युं, वली श्रीशांतिजिन केहेवा छे? तो के (जगसरणं के०) जगन्निवासी लोक तेना शरण एटले भयनिवारण करनार छे, वली (जयसिरिइ के०) जय ते प्रधान एवी श्री जे लक्ष्मी, अथवा जय ते जय अने लक्ष्मी जे शोभा तेने जयश्री कहियें, ए बेहु वानांना (दायारं के०) दातार छे. वली केहेवा छे? तो के (भत्त के०) पोताने भजनारा एवा जे भक्त लोक तेमने (पालग के०) पालन करनारा छे,एटले तुष्टि, पुष्टिना देनारा छे, अर्थात् भक्तने विघ्नविनाशक पणायें करी हितकारक छे, वली (निव्वाणी के०) निर्वाणी नामक देवी तथा (गरुड के०) गरुड नामक यक्ष, ए बेहुयें (कयसेवं के०) करेली छे सेवा जेमनी एवा छे ॥१॥

ॐ सनमो विप्पोसहि, पत्ताणं संतिसामिपायाणं ॥
क्षौँ स्वाहामंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥

अर्थः—(संतिसामिपायाणं के०) श्रीशांतिस्वामीपादने (ॐ सनमो के०) ॐ कारें सहित नमस्कार थाउ. ते श्री शांतिस्वामीपाद केहेवा छे? तो के (विप्पोसहिपत्ताणं के०) विप्रौषधी लब्धिने प्राप्त थया एवा छे, तेमां वि जे विष्टा, अने प्र जे लघुनीति ते औषधिरूपें छे जेमनां एवा छे, वली केहेवा छे? तो के (क्रौं स्वाहामंतेणं के०) क्रौं स्वाहा ए प्रकारनुं सूरियें कहेलुं जे मंत्रबीज, तेणें करी युक्त छे. वली केहेवा छे? तो के "ॐस नमोविप्पोसहिपत्ताणं क्रौं स्वाहा" एवा मंत्रना पदें करीने सकल जगतनां (सव्वासिव के०) सर्व अशिव एटले मरकी अपस्मारादिक सर्व उपद्रवो, तेने तथा (दुरिय के०) दुरित जे पाप तेने (हरणाणं के०) हरण करनार छे ॥ २ ॥

ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहिमाइ लद्धिपत्ताणं ॥
सौँ ह्रीं नमो सव्वोसहि, पत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥

अर्थः—(ॐ के०) अहीं ॐ जे छे, ते अभ्युपगम अर्थमां जाणवो. अर्थात् ॐ एटले शोभायमान एवा (संति के०) शांतिस्वामीपादने (नमुक्कारो के०) नमस्कार थाउ. ते शांतिस्वामीपाद केहेवा छे? तो के (खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं के०) खेल जे श्लेष्मा कफ, ते आदि सिंघाणादिक, तेहीज परम औषधि पणायें करीने प्राप्त थयां छे जेमने. अहीं माइ त्यां मकार जे छे, ते लाक्षणिक छे. (च के०) वली तेने (सौँ ह्रीं नमो के०) सौँ ह्रीं सहित नमस्कार हो. वली ते केहेवा छे? तो के (सव्वोसहिपत्ताणं के०) सर्व जे दंत, केश, नख, रोमादिक अंगरूप जे अवयवो, ते सर्वौषधि पणाने पाम्या छे जेमने एवा छे. अने तेउने करेलो जे नमस्कार छे ते, भव्याने (देइसिरिं के०) लक्ष्मीने आपो. आहिं "ॐ ह्रीं नमोखेलोसहि लद्धिपत्ताणं, तथा ॐ ह्रीं नमो सव्वोसहिपत्ताणं" ए बे सूरिमंत्रपदो जे छे, ते सर्वोपद्रवनाशकारक छे. वली ॐकारसहित शांतिजिननो नमस्कार जे छे, ते श्लेष्मौषध्यादि लब्धिप्राप्त एवा साध्वादिकने द्रव्यथी तथा भावथकी पण एवी बे प्रकारनी श्री जे लक्ष्मी तेने आपे छे ॥ ३ ॥

वाणी तिहुअणसामिणि, सिरि देवी जक्खराय गणिपिडगा ॥
गहदिसिपालसुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥

अर्थः–(वाणी के०) वाग्देवता, जे श्रुताधिष्ठायिनी, (तिहुअणसामिणि के०) त्रिजुवनस्वामिनी एटले सूरिमंत्रपीठपंचकाधिष्ठायिनी एटले एनुं ध्यान करनार जे जक्त जन, तेने प्रातिहार्य करनारी एवी, अने पद्मद्रह निवासिनी व्यंतरजाति वाली (सिरिदेवी के०) लक्ष्मीनामा देवी तथा (जस्करायगणिपिडगा के०) यक्षोनी मध्यें द्युतियें करीने जे राज एटले अधिक शोजे तेने यक्षराज कहियें, अने गणिपीटक जे द्वादशांग तेनो अधिष्ठायिक ले ए हेतुमाटे ते गणिपीटक नामा यक्षराज जाणवो, तथा (गह के०) सूर्यादि नवग्रह तथा (दिसिपाल के०) दश दिक्पाल तथा (सुरिंदा के०) सुरना इंद्र ते चोशठ इंद्र, ए सर्व सम्यग्दृष्टि देवो ले. ते (सयावि के०) सदा निरंतर पण (जिणजत्ते के०) श्रीतीर्थंकरना जक्तिकारक जनोने (रस्कंतु के०) रक्षाने करो ॥ ४ ॥

रस्कंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ॥
वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥

अर्थः–(मम के०) मने अने उपलक्षणथकी अन्य जीवोने पण सर्वोपद्रवो थकी (सया के०) निरंतर (रस्कंतु के०) रक्षण करो अहीं सर्वोपद्रवोथकी ए पद अध्याहारथी लेवुं. हवे ते कोण रक्षण करो? तो के शोल देवीउ रक्षण करो. तेनां नाम कहे ले. एक (रोहिणी के०) पुण्यरूप बीजने उत्पन्न करे ले माटे रोहिणी कहियें, ते रोहिणीनामा देवी रक्षण करो. बीजी (य के०) वली (प्रन्नत्ती के०) प्रकृष्ट ले ज्ञप्ति एटले ज्ञान जेने विषे माटे प्रज्ञप्तिदेवी एवुं नाम कहीयें, तथा त्रीजी (वज्जसिंखला के०) वज्रनी पेठें डुर्नेद्य ले, डुष्ट दमनार्थं एवी शृंखला ते ले जेना हाथने विषे तेमाटे तेने वज्रशृंखला देवी कहियें. ए त्रणे देविउ महारुं रक्षण करो. चोथी (वज्जंकुसि के०) वज्र अने अंकुश, ए बे अस्त्र ले जेना हस्तने विषे माटे तेने वज्रांकुशी कहियें. तथा पांचमी (चक्केसरि के०) निरंतर चक्रनुं धारण करवापणुं ले जेना हाथने विषे माटे तेने चक्रेश्वरी कहियें, तथा लही (नरदत्ता के०) नर जे मनुष्य तेने वरादिकनी देवावाली ले. माटे तेने नरदत्ता देवी कहीयें. तथा सातमी (कालि के०) जेना शरीरने विषे श्यामवर्णत्व ले माटे काली देवी कहीयें. अथवा शत्रु

उने विषे काळनी उपमा छे माटे काळी देवी कहियें. तथा आठमी (म हाकाली के०) महाकाळी देवी, आहिं महाशब्दें करीने विशेष जाणवुं ॥ ५ ॥

गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ॥
अछुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥

अर्थः—नवमी (गोरी के०) गौरवर्णपणुं छे माटे गौरी देवी कहियें. (तह के०) तथा वळी दशमी (गंधारी के०) गा एटले सुरनि तेना वाहनने धारण करे छे माटे गांधारी कहियें. तथा अगीआरमी (महजाला के०) सर्व अस्त्रोनी मोहोटी छे ज्वाळा जेने तेने महाज्वाळा कहियें. तथा बारमी (माणवी के०) मनुष्यनी जननी तुल्य, तेने मानवी कहियें. (अ के०) वळी तेरमी (वइरुट्टा के०) अन्योऽन्य वैरोपशांत्यर्थ अव्य. एटले आववुं छे जेनुं ते वैरुव्या कहियें. तथा चौदमी (अछुत्ता के०) पापने विषे जेने स्पर्श नथी तेने अछुत्ता कहियें. तथा पंदरमी (माणसिआ के०) ध्यान करनारना मनने सान्निध्य जेनाथकी थाय छे ते माटे मानसिका कहियें. तथा शोळमी (महामाणसिआउ के०) ते पण पूर्वोक्त मानसिकानी जेम जाणवुं. एक महा पद छे, ते महत्तावाचक छे, ए शोळ (देवीउ के०) देविउ जे छे, ते रक्षण करो. ए शोळें देवीउनुं विद्याप्रधानत्व छे ते माटे ए विद्यादेवीउ कहेवाय छे. ए शोळ देवीउयें करी मंत्रावर्णावलि ससाधन थाय छे. ए देवीउनुं श्रीमंत्रपट्टमां पोतपोताना स्थानकोने विषे स्थापन थाय छे, अने तेनुं ध्यान करनारने ए ध्यान, सुखावह होय छे ॥६॥

हवे चोवीश तीर्थंकरोना चोवीश यक्षोनां नाम अनुक्रमें कहे छे.

जक्खा गोमुह महज, क्ख तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमो ॥
मायंगो विजयाजिय, बंभो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥

अर्थः—प्रथम (गोमुह के०) गोमुखनामा (जक्खा के०) यक्ष, बीजो (महजक्ख के०) महायक्ष, त्रीजो (तिमुह के०) त्रिमुख यक्ष, चोथो (जक्खेस के०) ईश्वरनामा यक्ष, पांचमो (तुंबरू के०) तुंबरूनामा यक्ष, छठो (कुसुमो के०) कुसुमनामा यक्ष, सातमो (मायंगो के०) मातंगनामा यक्ष, आठमो (विजय के०) विजयनामा यक्ष, नवमो (अजिय के०) अजितनामा यक्ष, दशमो (बंभो के०) ब्रह्मनामा

यक्ष, अगीआरमो (मणुअ के०) मनुजनामा यक्ष, बारमो (सुरकुमारो के०) सुरकुमारनामा यक्ष छे ॥ ७ ॥

छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तहय जक्खिंदो ॥
कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥

अर्थः—तेरमो (छम्मुह के०) षण्मुखनामा यक्ष, चौदमो (पयाल के०) पातालनामा यक्ष, पन्नरमो (किन्नर के०) किन्नरनामा यक्ष, शोलमो (गरुडो के०) गरुडनामा यक्ष, सत्तरमो (गंधव्व के०) गंधर्वनामा यक्ष, (तहय के०) तथा वली अढारमो (जक्खिंदो के०) यक्षेंद्रनामा यक्ष छे, उगणीशमो (कूबर के०) कूबरनामा यक्ष, वीशमो (वरुणो के०) वरुणनामा यक्ष, एकवीशमो (भिउडी के०) भृकुटीनामा यक्ष, बावीशमो (गोमेहो के०) गोमेधनामा यक्ष, त्रेवीशमो (पास के०) पार्श्वनामा यक्ष, चोवीशमो (मायंगो के०) मातंगनामा यक्ष छे ॥ ए प्रमाणें प्रत्येक तीर्थंकरनो प्रत्येक यक्ष अनुक्रमें जाणवो. ए चोवीश तीर्थंकरोना चोवीश यक्षोनां वर्ण, वाहन, हस्त, आयुधो, तेमनुं सविस्तर वर्णन, श्रीप्रवचनसारोद्धारनामा ग्रंथना छवीशमा द्वारमां छपाइ गयाथी अहींआं लख्यां नथी ॥ ८ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरोनी चोवीश देवीउनां नाम अनुक्रमें कहे छे.

देवीउ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महाकाली ॥
अच्चुअ संता जाला, सुतारयासोय सिरिवच्छा ॥ ९ ॥

अर्थः—प्रथम (चक्केसरि के०) चक्रेश्वरी नामा देवी, बीजी (अजिआ के०) अजितानामा देवी, त्रीजी (दुरिआरि के०) दुरितारिनामा देवी, चोथी (कालि के०) कालीनामा देवी, पांचमी (महाकाली के०) महाकालीनामा देवी, छठी (अच्चुअ के०) अच्युतनामा देवी, सातमी (संता के०) शांतानामा देवी, आठमी (जाला के०) ज्वालानामा देवी, नवमी (सुतारया के०) सुतारानामा देवी, दशमी (असोय के०) अशोकानामा देवी, अगीयारमी (सिरिवच्छा के०) श्रीवत्सानामा देवी, ए श्री तीर्थंकरनी (देवीउ के०) देवीउ छे ॥ ९ ॥

चंमा विजयंकुसि प, न्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी ॥
वइरुट्ट बुत्त गंधा, रि अंब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥

अर्थः–बारमी (चंमा के०) चंमानामा देवी, तेरमी (विजय के०) विजयानामा देवी, चौदमी (अंकुसि के०) अंकुशानामा देवी, पन्नरमी (पन्नइत्ति के०) पन्नगानामा देवी, शोलमी (निव्वाणि के०) निर्वाणी नामा देवी, सत्तरमी (अच्चुआ के०) अच्युतानामा देवी, अढारमी (धरणी के०) धारिणीनामा देवी, उंगणीशमी (वइरुट्ट के०) वैरोटयानामा देवी, वीशमी (बुत्त के०) अबुप्तानामा देवी, एकवीशमी (गंधारि के०) गांधारिनामा देवी, बावीशमी (अंब के०) अंबानामा देवी, त्रेवीशमी (पउमावई के०) पद्मावतीनामा देवी, चोवीशमी (सिद्धा के०) सिद्धानामा देवी, ए प्रकारें चोवीश देवीउ अनुक्रमें चोवीश तीर्थंकरोनी जाणवी. ए चोवीश देवीउनां वर्ण, वाहन, हस्त, आयुधादिक सर्व प्रवचनसारोद्धारनामा ग्रंथना सत्तावीशमा द्वारमां बपाइ गयाथी आहिं लख्यां नथी ॥ १० ॥

इअ तित्थ रक्कण रया, अन्नेवि सुरा सुरि चउहावि ॥
वंतर जोइणि पमुहा, कुणंतु रक्कं सया अम्हं ॥ ११ ॥

अर्थः–(इअ के०) ए प्रकारें पूर्वोक्त यक्त, यक्षिणी, तुमे (तित्थ के०) चतुर्विध संघरूप जे तीर्थ, तेनुं सर्वोपद्रवथकी जे (रक्कण के०) पालन करवुं, तेने विषे (रया के०) तत्पर थाउ. तथा (अन्नेवि के०) अन्य पण (चउहावि के०) चार प्रकारना एवा पण (सुरा के०) देवता, (सुरि के०) देवीउ जे नवनपत्यादिक चार निकायनां बे, ते (वंतर के०) घंटाकर्णादिक बावन वीरविशेष, अथवा माणिनद्रादि क्षेत्रपालविशेष जाणवा. तथा (जोइणिपमुहा के०) नद्रकाली प्रमुख चोशठ योगिनी व्यंतरीविशेष, ते (रक्कं के०) रक्षा प्रत्यें (सया के०) निरंतर आ स्तोत्रनुं स्मरण करनारा एवा (अम्हं के०) अमोने (कुणंतु के०) करो ॥ ११ ॥

एवं सुदिट्ठि सुरगण, सहिउ संघस्स संति जिणचंदो ॥
मज्झवि करेउ रक्कं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥

अर्थः—(एवं के०) एम (सुदिठ्ठिसुरगण के०) पूर्वोक्त सम्यक्दृष्टि देवतानो समूह, तेणें (सहिउ के०) सहित एवा (संघस्स के०) श्रीसंघ जे तेने (संतिजिणचंदो के०) सामान्य केवलीने विषे आल्हादकारी माटे जिनचंद्र कहियें; ते श्रीशांतिजिनचंद्र, तमें (मज्झवि के०) मने पण सर्वोपद्रव निवारणरूप (रक्कं के०) रक्षा ते प्रत्यें (करेउ के०) करो. ए श्रीशांति जिनचंद्र केहेवा छे? तो के (मुणि के०) मुनिने विषे (सुंदर कें०) प्रधान एवा जे श्रुतकेवली, मनःपर्यवज्ञानीउ तेणें तथा (सूरि के०) पंमितो तेमणें (थुअ के०) स्तुति कस्यो छे (महिमा के०) माहात्म्य जेमनुं एवा छे. अथवा पक्षांतरे आ स्तोत्रकर्त्तानुं नाम पण श्रीमुनिसुंदर सूरि छे, एम जणाववाने आ छेल्लुं पद लख्युं छे ॥ १२ ॥

इअ संति नाह सम्म, द्दिठ्ठि रक्कं सरइ तिकालं जो ॥
सव्वोवद्दवरहिउ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥

अर्थः—(इअ के०) ए प्रकारें (सम्मद्दिठ्ठि कें०) रूडी छे दृष्टि जेनी एवो तत्त्वश्रद्धानवालो (जो के०) जे कोइ मनुष्य, (संतिनाह के०) श्रीशांतिनाथ तेना (रक्कं के०) रक्षा जे छे तेने (तिकालं के०) त्रणे कालें त्रिसंध्यायें (सरइ के०) स्मरण करे छे, मनें करी चिंतवन करे छे, ते मनुष्य, (सव्वोवद्दवरहिउ के०) सर्वोपद्रवें करी रहित थाय छे, अने (स के०) ते मनुष्य, (परमं के०) सर्वोत्कृष्ट एवा (सुहसंपयं के०) सुखसंपत् अथवा सुखदायक संपदा तेने (लहइ के०) पामे छे ॥ १३ ॥

तवगछगयणदिणयर,जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरूणं॥
सुपसायलद्धगणहर,विद्यासिद्धिं नणइ सीसो ॥१४॥
इति श्रीसंतिकरं नाम तृतीयं स्मरणम् ॥ ३ ॥

अर्थः—(तवगछ के०) श्री तपोगछ रूप (गयण के०) गगन तेने विषे (दिणयर के०) दिनकर जे सूर्य ते समान (जुगवर के०) युगप्रधान पदवीना नोगवनार एवा (सिरिसोमसुंदरगुरूणं के०) श्रीसोमसुंदरसूरि नामा गुरु धर्माचार्य तेमना (सुपसाय के०) सुप्रसादें करीने (लद्ध के०) प्राप्त थइ एवी (गणहरविद्यासिद्धिं के०) गणधर विद्यासिद्धिने (सीसो

के०) शिष्य जे श्रीमुनिसुंदरसूरि, ते (नणइ के०) नणे छे ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ तिजयपहुत्तनामकचतुर्थस्मरणस्य प्रारंभोऽयं ॥

तिजय पहुत्त पयासय, अठ महापाडिहेरजुत्ताणं ॥
समयखित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥

अर्थः—हुं (जिणंदाणं के०) सामान्य केवलीने विषे इंड तुल्य माटे जिनेंड कहियें ते जिनेंडोनुं (चक्कं के०) चक्र एटले वृंद अथवा चक्र एटले यंत्र तेने (सरेमि के०) स्मरामि एटले ध्यान करुं छुं. ते जिनेंडो केहेवा छे? तो के (तिजय के०) त्रण जगत् तेनुं (पहुत्त के०) प्रभुत्व जे ऐश्वर्य तेने (पयासय के०) प्रकाशना करनारा छे, वली (अठमहापाडिहेर के०) आठ जे महाप्रातिहार्य तेणें करी (जुत्ताणं के०) युक्त छे. वली केहेवा छे? तो के (समय के०) कालविशेष उपलक्षणथी अहोरात्र छे प्रधान जेने विषे एवुं जे (खित्त के०) क्षेत्र एटले पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढी द्वीप लक्षण जे समयक्षेत्र छे तेने विषे (ठिआणं के०) स्थित एटले वर्त्तता एवा उत्कष्ट कालने विषे जेवारें कोइ पण क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनो विरह होतो नथी तेवारें पंदर कर्मभूमि क्षेत्रने विषे उत्कृष्टथी एकशोने सीत्तेर तीर्थंकरो समकालें होय छे, तेनुं हुं स्मरण करुं छुं ॥ १ ॥

हवे ए एकशो ने सीत्तेर समय क्षेत्र स्थित जिनवृंदने एकशो सीत्तेर संख्याना अंकना प्रमाणवालो अने महोटुं छे माहात्म्य जेनुं एवो महा यंत्र छे, ते यंत्रनो उद्धारविधि सात गाथायें करी देखाडे छे.

ए यंत्रमां पांच कोष्टको ऊर्ध्व लखवां, अने पांच कोष्टको आडां लखवां, तेवारें पांच पच्चां पच्चीश कोष्टको थाय. तिहां मध्यने विषे पांच आडां कोष्टको जे छे, तेमां " क्षिपॐस्वाहा " ए पंचाक्षरी पंचमहाभूतात्मिका महाविद्या लखवी. तेमज वली उभां मध्यनां जे पांच कोष्टको छे तेमां पण " क्षिपॐस्वाहा " ए पंचाक्षरी महाविद्याज लखवी. तेमां (क्षि) ए पृथ्वी बीज छे, (प) ए अपबीज छे, (ॐ) ए तेजोबीज छे, (स्वा) ए पवनबीज छे, अने (हा) ए आकाशबीज छे. एम ए पांच बीजो मध्यनी आडी लीटीना तथा मध्यनी उभी लीटीना दरेक कोष्टकमां लखवां, अने बीजां कोष्टको जे छे,

तेमां अंको लखवा. तिहां यंत्रना आरंजनी आडी पंक्तिनां जे पांच कोष्टको बे, तेमध्यें लखवा योग्य अंकोने गाथायें करी देखाडे बे.

पणवीसा य असीआ, पन्नरस पन्नास जिणवर समूहो ॥
नासेउ सयल डुरिअं, नविआणं नत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥

अर्थः—तिहां यंत्रनी आडी पंक्तिना पांच कोष्टको जे बे, तेना प्रथम कोष्टकमां (पणवीसा के०) पच्चीशनो अंक लखवो. (य के०) तथा बीजा कोष्टकमां (असीआ के०) एंशीनो अंक लखवो, तथा त्रीजुं कोष्टक तो मध्यमां बे, तेथी तेमां तो पूर्वें कह्या प्रमाणे (ह्रि) अक्षर लखेलुंज बे, तथा चोथा कोष्टकमां (पन्नरस के०) पंदरनो अंक लखवो, तथा पांचमा कोष्टकमां (पन्नास के०) पच्चाशनो अंक लखवो. ए प्रमाणें लखेलो (जिणवर के०) सामान्यकेवलीमां श्रेष्ठ एवा तीर्थंकरोनो (समूहो के०) समुदाय तेनो यंत्र, ते (नत्तिजुत्ताणं के०) नक्तियें करी युक्त एवा (नविआणं के०) नव्य जीवो जे बे, तेनां (सयल के०) समग्र एवां (डुरिअं के०) डुरित जे पापकर्म तेने (नासेउ के०) नाश करो ॥ २ ॥

हवे ए यंत्रनी बीजी आडी पंक्तिनां कोष्टकोने विषे जे अंक लखवा योग्य बे, ते अंको कहे बे.

वीसा पणयालाविय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥
गह नूअ रक्क साइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥

अर्थः—प्रथम कोष्टकने विषे (वीसा के०) वीशनो अंक लखवो, तथा बीजा कोष्टकने विषे (पणयालाविय के०) पीस्तालीशनो अंक लखवो, तथा त्रीजा मध्य कोष्टकमां तो आगल कहेली रीति प्रमाणें (प) अक्षर लखायेलुंज बे, तथा चोथा कोष्टकमां (तीसा के०) त्रीशनो अंक लखवो, तथा पांचमा कोष्टकने विषे (पन्नत्तरी के०) पंचोतेरनो अंक लखवो. ए प्रमाणें सर्व मली एकशो सीत्तेर (जिणवरिंदा के०) जिनवरो जे तीर्थंकरो थया ते, (गह के०) मंगलादिक ग्रहो, (नूअ के०) व्यंतरविशेष, (रक्क के०) राक्षसविशेष, (साइणि के०) शाकिनी ते यातुधानीविशेष,

ए सर्वथकी उत्पन्न थया एवा जे (घोरुवसग्गं के०) घोर उपसर्गो तेमने (पणासंतु के०) प्रकर्षे करीने नाशने पमाडो ॥ ३ ॥

हवे ते यंत्रना मध्यमां रहेली आडी पंक्तीनां पांच कोष्टकोमां नो पूर्वोक्त रीति प्रमाणें " ह्रिप ॐ स्वाहा " ए पांच अक्षर लखेलाज छे, माटे ते पछीनी चोथी आडी पंक्तिमां जे लखवा योग्य अंको छे, ते कहे छे.

सित्तिरि पणतीसाविय, सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥
वाहि जलजलण हरि, करि चोरारिमहाजयं हरउ ॥४॥

अर्थः–प्रथम कोष्टकने विषे (सित्तिरि के०) सित्तेरनो अंक, बीजा कोष्टकने विषे (पणतीसाविय के०) पांत्रिशनो अंक, त्रीजा कोष्टकने विषे पूर्वोक्त रीति प्रमाणें (स्वा) अक्षर लखेलुंज छे, तेपछी चोथा कोष्टकने विषे (सठी के०) शाठनो अंक, तथा पांचमा कोष्टकने विषे (पंचेव के०) पांचनो अंक लखवो. ए प्रमाणे (एसो के०) ए मनमां प्रत्यक्ष एवो (जिणगणो के०) तीर्थंकरसमूह, ते (वाहि के०) व्याधि, (जल के०) नदी समुद्रादि, अथवा पाठांतरे (जर के०) ज्वर ते सन्निपातादिक, (जलण के०) अग्न्यादि, (हरि के०) व्याघ्र, (करि के०) दुष्टहस्ती, (चोर के०) तस्कर, (अरि के०) शत्रु तेमनुं (महाजयं के०) मोहोटुं जे जय, तेने (हरउ के०) हरण करो ॥ ४ ॥

हवे आ यंत्रनी आडी पांचमी पंक्तीना कोष्टकोमां लखवा योग्य जे अंको छे, ते कहे छे.

पणपन्ना य दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥

अर्थः–प्रथम कोष्टकने विषे (पणपन्ना के०) पञ्चावन्ननो अंक, (य के०) वली बीजा कोष्टकने विषे (दसेव के०) दशनो अंक, (य के०) वली त्रीजा कोष्टकने विषे पूर्वोक्तरीतिप्रमाणें (हा) अक्षर लखेलुंज छे, तथा चोथा कोष्टकने विषे (पन्नठी के०) पांशठनो अंक, (तहयचेव के०) तेमज निश्चें पांचमा कोष्टकने विषे (चालीसा के०) चालीशनो अंक, एम सर्व अंकोना मली शरवाले एकशो सीत्तेर जिनो ते (मे के०) माहारुं (सरीरं के०) शरीर जे इंद्रियायतन, तेने (रक्खंतु के०)

रक्षा करो. ते जिनो केहेवा छे ? तो के (देवासुर के०) देव जे देवता अने असुर जे दानव तेणें (पणमिआ के०) प्रणाम कस्यो छे जेने एवा छे, तथा (सिद्धा के०) सिद्ध एटले नस्म करी नाख्यां छे ज्ञानावरणादि आठ कर्मो जेणें ते सिद्ध कहियें अर्थात् सिद्ध थया छे एवा छे ॥ ५ ॥

हवे पूर्वोक्त गाथाउमां कह्या प्रमाणे लख्या छे अंको जेमां एवा यंत्रने विषे बीजां पण बीजो लखवा योग्य छे, ते कयां बीजो ? तथा ते बीजो कया कोष्टकमां केवी रीतें लखवां? तथा ते बीजोनो महिमा प्रमुख शुं छे ? ते कहे छे.

ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तहचेव सरसुंसः ॥
आलिहिय नाम गप्नं, चक्कं किर सवउन्नदं ॥ ६ ॥

अर्थः–आ गाथामां "हरहुंहः" ए चार बीजाक्षरो जे छे, तेणें करी पद्मा, जया, विजया अने अपराजिता, ए चार देविउनां नाम अनुक्रमें प्रत्येक बीजें जाणवां. तथा वली आ गाथामां "सरसुंसः" ए चार बीजाक्षरो जे छे, ते महोटा प्रनाववाला तथा व्यंतरादिक डुष्ट देवोयें करेला उपसर्गोना निवारण करवाने अर्थें छे, तथा वली प्रथममां रह्या एवा "हरहुंहः" ए चार बीजाक्षरोने विषे (हा) अक्षर जे छे, ते सूर्यबीज छे ते डुरितनाशकारक छे, तथा (र) अक्षर जे छे, ते अग्निबीज छे, ते कल्मष एटले पापने दहनकारक छे, तथा (हुं) अक्षर जे छे, ते क्रोधबीज छे, तथा कवच पण छे, ते नूतादित्रासक छे, अने कवचत्वें करी आत्मरक्षक पण छे, तथा (ह) अक्षर जे छे, ते संपुटित छे, ते पछी आ गाथामां बीजा "सरसुंसः" ए चार बीजाक्षरो जे छे, तेमां (स) अक्षर जे छे, ते चंडबीज छे ते सौम्यताकारक तथा सर्वदा शिवकारक जाणवुं, तथा (र) अक्षर जे छे, ते अग्निबीज छे ते तेजोद्दीपन जाणवुं. तथा (सुं) अक्षर जे छे, ते शामक बीज छे, ते सर्वडुरितोपशामक छे, वली (सः) अक्षर जे छे, ते संपुटित बीज छे, एम जाणवुं. हवे ए आठे बीजो जे छे, ते कया कोष्टकमां कया अंकनी नीचें लखवां ? ते कहे छे.

तिहां गाथाना आरंनमां ॐ बीज जे छे, ते परमात्मवाचक तथा पंचपरमेष्ठिवाचक छें माटे ते पदनो उच्चार करीने ते यंत्रनी प्रथम पंक्तिमां लखेला जे पांच कोष्टको छे, तेना मध्य कोष्टकमां तो (ह्रि) अक्षर पूर्वें लखेलुंज छे, ते

विना बाकीनां चार कोष्टकोमां जिहां (२५)(८०) (१५) (५०) एवा अंको नरेला छे, ते चारे अंकोनी नीचें अनुक्रमें (हरहुंहः के०) ह, र हुं, हः, ए चार बीजो लखवां. तथा बीजी पंक्तिना मध्यना कोष्टकमां तो पूर्वे (प) अक्षर लखेलुंज छे, पछी बाकीनां चार कोष्टकोमां जेमां (२०) (४५) (३०) (७५) एवा चार अंको लखेला छे ते अंकोनी नीचें अनुक्रमें (सरसुंसः के०) स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां. तथा त्रीजी पंक्तिना कोष्टकोमां तो पूर्वें " क्षिप ॐ स्वाहा " ए पांच बीजमंत्राक्षरो लखेलांज छे, तथा वली चोथी पंक्तिना कोष्टकोमांहेला मध्यकोष्टकमां तो पूर्वें (स्वा) अक्षर लखे लुंज छे, ते विनानां बीजां चार कोष्टको जेमां (७०) (३५) (६०) (५) एवा अंको लखेला छे, ते अंकोनी नीचें वली बीजी वारनां पण (हरहुंहः के०) ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो अनुक्रमें लखवां. तथा पांचमी पंक्तिना कोष्टक मांहेला मध्यकोष्टकमां तो (हा) अक्षर पूर्वें लखेलुंज छे ते विनानां बीजां चार कोष्टकोमध्यें (५५) (१०) (६५) (४०) एवा चार अंको पूर्वें लखेलाज छे ते अंकनी नीचें अनुक्रमें (सरसुंसः के०) स, र, सुं, सः, ए चार बीज लखवां, अने वली (आलिहिय के०) आलिखित एटले (आ के०) समस्त प्रकारें करीनें (लिखित के०) लख्युं छे (नाम के०) साधन करनार पुरुषनुं नाम ॐकारसहित, जे यंत्रना (गप्नं के०) गर्न एटले मध्यनागना मध्य कोष्टकने विषे, एवो (किर के०) किल एटले निश्चें (सवउनद्दं के०) सर्वतो नद्र एटले ऊर्ध्व पंक्तिनी गणनायें तथा आडी पंक्तिनी गणनायें तथा नीछी पंक्तिनी गणनायें तथा कोणगत पंक्तिनी गणनायें सर्वतो एटले ए पंक्तिना सर्व प्रकारें अंको गणतां शरवाले (१७०) थाय छे, तेमाटे सर्वतोनद्र एवुं (नाम के०) नाम छे जेनुं, एवुं (चक्कं के०) चक्र ते यंत्र जाणवो, तथा वली (सर्वतः के०) सर्व प्रकारें जे थकी (नद्र के०) कल्याण थाय छे, तेमाटे सर्वतोनद्र नाम जाणवुं ॥६॥

हवे पछी ते यंत्रना चारें तरफना पार्श्व प्रदेशोने विषे रह्यां एवां जे शोल कोष्टको, तेने विषे शोल विद्या देवीउनां नाम लखवां, ते कहे छे.

ॐ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ॥
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरि ॥ ७ ॥

गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥
माणसि महमाणसिआ, विद्यादेवीउ रक्खंतु ॥ ८ ॥

अर्थः—अहीं शोल देवीउनां नामो जे लखवां, ते ॐ एटले प्रणवबीज, अने बीजुं ह्रीँ एटले मायाबीज, त्रीजुं श्रीँ एटले लक्ष्मीबीज, एवां ए त्रण बीज पूर्वक लखवां. तथा तेना अंतमां नमः पद पण लखवुं, जेम के प्रथम ॐ ह्रीँ श्रीँ रोहिण्यै नमः। एवी रीते त्रण बीज आगल मूकीने सर्व शोल देवीउनां नाम केहेवां. बीजी प्रज्ञप्त्यै नमः। एमज त्रीजी वज्रशृंखलायै नमः (तहय के०) तथा वली चोथी वज्रांकुश्यै नमः। पांचमी चक्रेश्वर्यै नमः। छठी नरदत्तायै नमः। सातमी काल्यै नमः। आठमी महाकाल्यै नमः। (तह के०) तथा नवमी गौर्यै नमः ॥७॥ दशमी गांधार्यै नमः। अगीआरमी महाज्वाल्यै नमः। बारमी मानव्यै नमः। तेरमी वैरुट्यायै नमः। चौदमी अछुप्तायै नमः। पंदरमी मानस्यै नमः। शोलमी महामानस्यै नमः। एशोल नाम, (ॐ कार) ते प्रणवबीज तथा (ह्रीँ) ते मायाबीज तथा (श्रीँ) ते लक्ष्मीबीज ए त्रण बीज पूर्वक अने अंतमां नमः पद सहित लखवां. एवो आम्नाय छे, तेवी (विद्यादेवीउ के०)! हे विद्यादेवीउ! तमें (रक्खंतु के०)रक्षण करो॥८॥

हवे एकशो सीत्तेर जिनवरोनुं उत्पत्तिस्थानक कहे छे.

पंचदस कम्म भूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥
विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ डुरिआइं ॥ ९ ॥

अर्थः—जंबू द्वीप, धातकीखंम, पुष्करार्द्ध लक्षण एवा सार्द्ध द्वय द्वीपोने विषे पांच भरत क्षेत्रो, पांच ऐरवत क्षेत्रो अने पांच विदेह क्षेत्रो, ए (पंचदस के०) पन्नर, (कम्मभूमिसु के०) कृषिवाणिज्यादि कर्म ते छे प्रधान जेमां एवी जे भूमि तेने कर्मभूमि कहियें, ते कर्मभूमिउने विषे (उप्पन्नं के०) उत्पन्न थयुं, जे कारण माटे उत्कृष्ट कालने विषे पांच भरतने विषे पांच तीर्थंकर, पांच ऐरवतने विषे पांच तीर्थंकर, तथा एक महाविदेहने विषे बत्रीश विजयो, तेवा पांच महाविदेहोना एकशोने शाठ विजयो छे, तेमां प्रतिविजयें एकेक तीर्थंकर थाय छे, एम जेवारें कोइ पण क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनो विरह न थाय? तेवारें उत्कृष्टा एकशो सीत्तेर तीर्थंकर थाय छे माटे कर्मभूमिउने विषे उत्पन्न थयुं एवुं (सत्तरिंजिणाणसयं के०) एक

शो सित्तेर जिनोनो समूह, ते श्रीअजितनाथ तीर्थंकरना समयने विषे होतो हवो. तेउनां नाम, तेउना अंगवर्ण, ते मथुरास्थ स्तूपथकी उद्धार करेला पट्टिकायंत्रे करी जाणवां. ते जिनसप्तत्यधिकशत केहेवुं ठे? तो के (विविह के०) विविध प्रकारना (रयणाइ के०) रत्नादिना (वन्न के०) वर्ण एटले श्वेत, पीत, रक्त, हरित, श्याम एवा वर्णोयें करीने (उवसोहिअं के०) उपशोभित एटले अतिसुशोभित एवुं ठे. ते अमारां (डुरिआइं के०) डुरितो जे ठे, तेने (हरउ के०) हरण करो ॥ ए ॥

हवे ते केहेवा जिनोनुं ध्यान करवुं? ते कहे ठे.

चउतीसअइसयजुआ, अठमहापाडिहेरकयसोहा ॥ तिढयरा गयमोहा, झाएअवा पयत्तेणं ॥१०॥

अर्थः—(चउतीस अइसय जुआ के०) चोत्रीश अतिशयोयें करीने युक्त, तथा वली केहेवा ठे? तो के (अठमहापाडिहेर के०) आठ महाप्रातिहार्य तेणें (कयसोहा के०) करी ठे शोभा जेमनी एवा, वली केहेवा ठे? तो के (गयमोहा के०) गयो ठे मोह जेमनो एवा (तिढयरा के०) तीर्थंकरो, (पयत्तेणं के०) प्रयत्नें करीने (झाएअवा के०) ध्यातव्य ठे, अर्थात् हृदयनेविषे चिंतनीय ठे, एटले तीर्थंकरोनां एवा रूपनुं ध्यान करवुं ॥ १० ॥

हवे ए एकशो सीत्तेर तीर्थंकरोनो केहेवो वर्ण ठे? ते कहे ठे.

ॐ वरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं, सवामरपूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥

अर्थः—केटला एक तीर्थंकरोनो (वरकणय के०) श्रेष्ठकनक सरखो पीत वर्ण ठे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (संख के०) शंखना सरखो वर्ण ठे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (विद्दुम के०) प्रवालां सरखो वर्ण ठे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (मरगय के०) मरकतमणिना सरखो वर्ण ठे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (घण के०) मेघ तेना (सन्निहं के०) सरखो वर्ण ठे, तथा (विगयमोहं के०) गयो ठे मोह जेथकी तेने विगत मोह कहियें. एवुं, अर्थात् आ गाथामां कहेला विविध वर्णवालुं एवुं (सत्तरिसयंजिणाणं के०) जिनोनुं सप्तत्यधिकशत. ते केहेवुं ठे? तो के (सवा

मरपूइअं के०) सर्वामरपूजित छे, तेने हुं पण (वंदे के०) वंदन करुं छुं. अने (स्वाहा के०) सुष्ठु, एटले रूडुं आह्व नाम केहे छे तेने स्वाहा कहियें. अर्थात् ए जिनेश्वरोने नमस्कार करवाथी शोजन सुखादिक थाय छे. अथवा बीजो अर्थ एमकेः—" स्वाहा देवहविर्दाने " एम कहेलुं छे, तेथी देवताने हविनुं प्रदान छे. आ प्रदानें करीनें देवो परितुष्ट थाय छे ॥ ११ ॥

हवे आ यंत्रना प्रजावेंकरी सर्व देवो पण उपद्रव करता नथी; ते कहे छे.

ॐ जवणवइ वाण वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥
जे केवि डुठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥

अर्थः—अहिं (ॐ के०) ॐ ते पंचपरमेष्ठिवाचक पद जाणवुं, ते महामंगलरूप छे, तेने आदिने विषे प्रयोजवुं. (जेकेवि के०) जे कोइ पण (डुठदेवा के०) डुष्ट देवो ते मिथ्यादृष्टि जैनशासनना द्वेषकारक अने जनोना अहितकारक देवो छे (तेसव्वे के०).ते सर्व पण आ स्तवनना प्रजाव थकी (मम के०) मने (उवसमंतु के०) उपशांत हो, अर्थात् विघ्नोने म करो. ते कया डुष्ट देवो? तो के (जवणवइ के०) जवनपति, (वाणवंतर के०) वाणव्यंतर, (जोइसवासी के०) ज्योतिष्कवासी देवो, (च के०) तथा (विमाणवासी के०) विमानवासी देवो छे. अने स्वाहापद जे छे, तेनो अर्थ पूर्वनी पेठें जाणवो ॥ १२ ॥

हवे ए यंत्रने फलकादिक जे काष्ठपटादिक तेने विषे लखीने
पीवानो पण प्रजाव छे, ते कहे छे.

चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ॥
एगंतराइ गहनूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥

अर्थः—(चंदण के०) चंदन, अगरु, कुंकुम, तथा (कप्पूरेणं के०) कर्पूरादिक तेणें करी (फलए के०) फलक ते काष्ठपट्टादिक तेने विषे (लिहिऊण के०) लखीने, तथा वली कोइक पुरुषो कहे छे जे, पवित्र एवा कांस्यस्थालादिकने विषे कर्पूर, गोरोचन, कुंकुम, चंदन, अगरु, कस्तूरी प्रजृतिनो कर्दम करीने ते कर्दमें करी सात वखत प्रलेपन करीने छायायें करी शूकवीने तेनी उपर पूर्वोक्त यंत्रने लखी, पुष्पधूपादिकें पूजन करीने प्रातः

कालने विषे (खालिअं के०) क्षालन कर्यो एवो ते यंत्र, तेने जेणें (पीयं के०) पीधो होय, तेमना (एगंतर के०) एकांतरिक ज्वर आदि शब्दथी द्व्यांतरिक, त्र्यांतरिक ज्वर पण ग्रहण करवा. ते सर्व जातिना ज्वर तथा (गह के०) ग्रह गोचर ते अशुभ भाववाला जे ग्रह, अथवा ग्रहण करें ते मने ग्रह कहियें, एवा (भूअ के०) भूत ते व्यंतरविशेष अने (साइणि के०) शाकिनीविशेष (मुग्गं के०) मोगक, उपलक्षणथी अन्य पण दुष्टरोग, भूत प्रेतादि आवेशने तथा कृतकर्मणादि जे छे, तेमने (पणासेइ के०) प्रनाशन करे छे ॥ १३ ॥

वली बीजो पण प्रकार कहे छे.

इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं ॥
दुरिआरि विजयवंतं, निप्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

अर्थः—(इअ के०) आ (सत्तरिसयं के०) सप्तत्यधिकशतनामक एवो (जंतं के०) यंत्र जे छे तेने (सम्मं के०) रूडे प्रकारें (निप्भंतं के०) निःसंदेहें करीने हे भव्य जीवो! (निच्चं के०) निरंतर, (अच्चेह के०) अर्चन करो. हवे ते यंत्र केहेवो छे? तो के (मंतं के०) सर्वमंत्रमां गुह्य एटले रहस्य छे, वली केहेवो छे? तो के (दुवारि के०) गृह द्वारने विषे वा शुद्धि स्थानकने विषे पूर्वोक्त रीतें (पडिलिहियं के०) प्रतिलेखन करेलो छे. वली ते यंत्र केहेवो छे? तो के (दुरिअ के०) कष्टो अने (अरि के०) शत्रुउ, तेने (विजयवंतं के०) विजय एटले निराकरण करतो एवो छे. आहिं वली केटला एक तो एम केहे छे, जे रूपाना पत्रामां अथवा ताम्रपत्रमां लखीने गृहमध्यने विषे पूजन करवुं, अने ज्यारें कार्य पडे, ते वखतें ते यंत्रनुं शुद्ध जलें प्रक्षालन करीने ते प्रक्षालित जलनुं पान करवुं ॥ १४ ॥ इति तिजयपहुत्तनामकं चतुर्थं स्मरणं समाप्तं ॥ ४ ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं पंचमं स्मरणं लिख्यते ॥

तेमां प्रथम मंगलाभिधानपुरस्सर मंगलगाथा कहे छे.

नमिऊण पणयसुरगण, चूडामणि किरणरंजिअं मुणिणो ॥
चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥

अर्थः–(मुणिणो के०) मुनि जे पार्श्वनाथ तेमनुं (चलणजुअलं के०) चरणयुगल एटले जे चरणारविंदनुं युगल तेने, (नमिऊण के०) नमस्कार करीने. हवे ते चरणयुगल केहेवुं ले? तो के (पणय के०) प्रणत एटले नमस्कार करनारा एवा जे (सुरगण के०) देवताउना समूह तेना मस्तकने विषे रहेला एवा जे (चूडा के०) मुकुट, ते मुकुटनेविषे रहेला जे (मणि के०) मणिउ, तेना (किरण के०) किरणो, तेणें करीने (रंजिअं के०) रंजित एवुं ले. वली केहेवुं ले ? तो के (महाजय के०) रोग, जल, ज्वलनादि एवा शोल पदार्थथकी उत्पन्न थयुं एवुं जे महोटुं जय, तेने (पणासणं के०) प्रकर्षें करीने नाश करनारुं एवुं ते चरणयुगल ले, तेने नमस्कार करीने हुं आ प्रकारना (संथवं के०) संस्तव जे तेने (वुछं के०) कहीश ॥ १ ॥

हवे "रोग जल जलण" ए पूर्वोक्त शोल जय ते मध्यें आठ महा जय ले, तन्निवारणलक्षण प्रजुनुं अतिशय वर्णन, ते प्रत्येक जयआश्रयी बे बे गाथायें करी कहेतो लतो प्रथम रोगजयनिवारणलक्षण प्रजुनो अतिशय, गाथायुग्में करी कहे ले.

सडियकरचरणनहमुह, निबुड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥
कुछमहारोगानल, फुलिंगनिदट्ठ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह
चलणाराहण, सलिलंजलि सेय वुड्ढिय छाया ॥ (उछाहा)
वण दवदड्ढा गिरिपा, यव व्व पत्ता पुणोलछिं ॥ ३ ॥

अर्थः–(सडिय के०) विशीर्ण ले एटलें सडी गयेलां ले (करचरणनहमुह के०) हाथ, पग, नख अने मुख जेमनां एवा, तथा (निबुड्ड के०) निमग्न ले, एटले बेशी गयेली ले (नासा के०) नासिका जेनी एवा, तथा (विवन्नके०) विनष्ट थयुं ले (लायन्ना के०) लावण्य जेमनुं एवा, (कुछ के०) कुष्ठ प्रसिद्ध एवो कोढरूप (महारोग के०) महान् रोग तेनुं संतापजनकपणुं ले जेने ए हेतु माटे (अनल के०) अग्निसमान तेनां (फुलिंग के०) स्फुलिंगना सरखा एटले अंगारना तणखा ते समान पीडाप्राकार तेणें करी (निदट्ठ के०) बाल्यां ले (सव्वंगा के०) सर्व अंग जेमनां एवा ॥२॥ (ते

के०) ते प्राणीयो पण हे पार्श्वनाथ ! (तुह के०) तव एटले तमारां (चलणाराहण के०) चरणोनुं आराधन जे सेवन तेज (सलिलंजलि के०) सलिलांजलि जे पाणी पीवानी अंजलि तेनुं (सेअ के०) सेक जे सेचन तेणेंकरी (वुड्ढिअछाया के०) वृद्धिंगत थइ ले गया शोभा जेम नी एवा छता (पुणो के०) फरीने (लच्छि के०) लक्ष्मी जे आरोग्यरूप संपदा तेने (पत्ता के०) प्राप्त थाय छे. तेने विषे उपमा कहे छे के, जेम (वणदव के०) वननो अग्नि तेणें करी (दड्ढा के०) दग्ध थयेला (गिरि पायव के०) गिरिपादप एटले पर्वतनां वृक्षो छे तेज (व्व के०) जेम (वुड्ढिअछाया के०) वृद्धि पामी छे शोभा जेमनी, एवा थाय छे वली वुड्ढिउछाहा एवो पण पाठ छे तो तेनो अर्थ एम जाणवो जे वृद्धिंगत थयो छे उत्साह जेमनें एवा अर्थात् दवदग्ध वृक्षो छे. ते वृष्टिना जलें करी सिंचेला छता फरीने नवकोमलादि संपत्तिनो प्रादुर्भाव करे छे. तेम कुष्ठादि महारोगोयें करीने विवर्णभावने पामेला एवा जनो, ते तमारा चरणारा धनामृतें सिंचायेला छता फरी पाछा मकरध्वजतुल्य रूपने पामे छे ॥ ३ ॥

हवे गाथाद्वयें करीने प्रभुनुं बीजुं जलभयापहरण लक्षण माहात्म्यने देखाडतो छतो कहे छे.

दुव्वायखुभियजलनिहि, उब्भडकल्लोलभीसणारावे ॥
संभंतभयविसंठुल, निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अ
विदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पा
सजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥

अर्थः–(दुव्वाय के०) दुष्टवात एटले प्रतिकूल पवन, तेणे (खुभिअ के०) क्षोभित कर्यो एवो (जलनिहि के०) जलनिधि जे समुद्र, तेना (उब्भड के०) उद्भट एटले उदार एवा (कल्लोल के०) कल्लोल जे लहेरीउ तेमना (भीसण के०) भयंकर छे (आरावे के०) शब्दो जेने विषे एवो तथा (संभंत के०) हवे शुं करवुं जोइयें ? एवो विचार करवाने विषे मूढ थयेला तथा (भय के०) भय जे बीक तेणें करीने (विसंठुल के०) विव्हल थया एवा (निज्जामय के०) निर्यामक एटले खलासीउ तेणें (मुक्कवावारे के०) मूक्यो छे व्यापार जेने विषे ॥ ४ ॥ एवा पण समु

इने विषे (अविदलिय के०) नथी नांग्युं (जाणवत्ता के०) यानपात्र ते वाहाण जेमनुं एवा बता (खणेण के०) क्षणें करीने एटले घडीना बठा नागें करी (इछिअं के०) इछित एवुं (कूलं के०) समुइतट एटले कांठो तेने (पावंति के०) प्राप्नुवंति एटले पामे बे. ते कया नर जाणवा? अर्थात् सर्वजन नहिं, परंतु (जे के०) जे (नरा के०) मनुष्यो (पासजिण के०) श्रीपार्श्वजिन तेनुं (चलणजुअलं के०) चरणकमलनुं जुगल तेने (चिअ के०) चिअ शब्द अवधारणार्थ बे (निच्चं के०) निरंतर (नमंति के०) नमन करे बे, अथवा (निच्चंचिअ के०) नित्यगंधादिकें करी अर्चन करीने जे (नमंति के०) नमस्कार करे बे, ते नरो समुइना पारने पामे बे ॥ ५॥

हवे गाथायुगलें करीने प्रजुनो त्रीजो दवानलजया पहारातिशय कहे बे.

खरपवणुद्धुअवणदव, जालावलिमिलियसयलडुमगहणे ॥ डज्झंतमुद्धमयवहु, जीसणरवजीसणंमि वणे ॥६॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाजोअं ॥ जे संजरंति मणुआ, न कुणइ जलणो जयं तेसिं॥ ७ ॥

अर्थः—आगल कहेशे ए प्रकारना (वणे के०) वनने विषे (जलणो के०) ज्वलन जे अग्नि ते जय करतो नथी. हवे ते वन केहेवुं बे? तो के (खर के०) प्रचंड एवो जे (पवण के०) वायु; तेणें करी (उद्धुय के०) उद्धत सर्व दिशिउने विषे आणी तरफ पहेली तरफ प्रसारने पमाडेलो एवो (वणदव के०) वननो अग्नि, तेनी (जाला के०) ज्वाला तेनी (आवलि के०) श्रेणि तेणेंकरीने (मिलिय के०) परस्पर एकीजूत थया बे, (सयल के०) समग्र (डुम के०) डुम एटले वृक्षो तेना (गहणे के०)गहन जेने विषे, एटले आ आंबानुं वन, आ चंपकवन, इत्यादिक बे जे वनने विषे तथा वली ते वन केहेवुं बे? तो के (डज्झंत के०) दाजती एवी (मुद्ध के०)मुग्ध एटले सरल एवी जे (मयवहु के०) मृगवधू एटले हरणीउ तेमनो (जीसण के०) जयंकर (रव के०) आक्रंद शब्द तेणे करीने (जीसणंमि के०) जयप्रद थयेलुं अर्थात् जयंकर थयेलुं. अहीं जी एटले जय तेने सन केतां आपे, तेने जीषण कहियें एवा

(वणे के०) वनने विषे वळी अहीं केटलाएक तो एवो अर्थ करे छे के, (दृझंत के०) दह्यांत एटले दहन थवा योग्य एवुं जे वन तेनो अंत एटले अवसान छे जेमां, तेने दह्यांत कहियें ते दह्यांत जे दवाग्नि तेनी (मुद्ध के०) सरल एवी जे ज्वाला तेना आकुलितपणायें करीनें मूढ एवा जे (मय के०) अरण्यवासी पशुउ तेनो (बहु के०) घणो अत्यंत (जीसण के०) जयंकर एवो (आराव के०) आक्रंद तेणेंकरीने (जीसणंमि के०) जयजीत थयेलुं एवुं (वणे के०) वनने विषे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो के०) स्वसामर्थ्यथकी थयेला एवा जगतना गुरु जे श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेमनुं (कमजुअलं के०) चरणयुगल, ते चरणयुगल केहेवुं छे? तो के (निव्वाविअ के०) निर्वापित एटले आपत्तिना तापने प्रशमनें करी सुखीउं कर्यो छे (तिहुअणाजोअं के०) त्रिजुवनाजोग एटले परिपूर्ण त्रण जुवन जेणें एवुं चरणयुगल छे. अहीं आजोग शब्द जे छे, ते अनिर्वापणनिषेधार्थ छे, एवा प्रजुना चरणकमलने (जे के०) जे (मणुआ के०) मनुष्यो (संजरंति के०) स्मरण करे छे, (तेसिं के०) ते स्मरण करनार जनोने पूर्वोक्त जे (जलणो के०) दावाग्नि ते, (जयं के०) जय प्रत्यें (नकुणइ के० नथी करतो ॥ ७ ॥

हवे गाथायुग्में करीने जगवंतनो चोथो विषधरजयनिवारकत्व महिमाने देखाडतो छतो कहे छे.

विलसंत जोग जीसण, फुरिअारुण नयण तरल जीहालं ॥
उग्गजुअंगं नवजल, य सछहं जीसणायारं ॥ ८ ॥
मन्नंति कीड सरिसं, दूर परिछूढ विसम विसवेगा ॥
तुह नामरकर फुडसि, ध्दमत्तं गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥

अर्थः—(विलसंत के०) सुशोजित एवा (जोग के०) फणा छे जेना अथवा (विलसंत के०) सुशोजित छे (जोग के०) देह जेनो एवो तथा (जीसण के०) जयंकर अने (फुरिअ के०) स्फुरित एटले चपल अने (अरुण के०) आरक्त छे (नयन के०) चक्षु जेनां एवो तथा (तरल के०) चंचल छे (जीहालं के०) जिव्हा जेनी एवो (उग्गजुअंगं के०)

उग्र भुजंगम एटले जयंकर सर्प, वली ते सर्प कहेवो छे? तो के (नवजलय के०) नवीन जलद एटले आषाढ महिनानो वर्षाद, तेना (सच्छहं के०) सदृश छे एटले मेघनी पेरे श्यामवर्ण छे. वली केहेवो छे? तो के (जीसणा यारं के०) जीषणाकार एटले जयंकर छे आकार जेनो, अथवा जयंकर छे आचार केतां वेष्टन एटले आंहिं त्यांहिं चमण जेनुं एवो सर्प ॥ ८ ॥ तेने (कीडसरिसं के०) कीटसदृश (मन्नंति के०) माने छे. तेने कीटसदृश कोण माने छे? तो के (दूर के०) अत्यंत दूर कर्यो छे (परिछूढ के०) चारे तरफ टाल्यो छे (विसम के०) आकरो एवो (विसवेगा के०) विषनो वेग जेउंए, ते कोणें टाल्यो छे? तो के हे श्रीपार्श्वनाथ! (तुह के०) तमारुं (नामक्खर के०) नामाक्षर तेज (फुड के०) स्फुट छे प्रजाव जेनो तेणें करीने (सिद्ध के०) सिद्ध थयेलो एवो (मंत के०) गारुडादिकनो मंत्र एटले तमारा नामना जे (पार्श्व) ए बे प्रजाविक अक्षरो छे ते अक्षरें करीने सिद्ध थयेलो एवो जे गारुडादिक मंत्र, तेणें करीने (गुरुआ के०) गरिष्ठ एटले महोटा एवा (नरा के०) मनुष्यो जे (लोए के०) लोकने विषे छे, तेणे टाल्यो छे, तेज पूर्वोक्त सर्पने कीटसदृश माने छे ॥ ए ॥

हवे गाथायुगलें करीने प्रजुनुं पांचमुं तस्करजयनिवारकत्व कहे छे.

अडवीसु जिल्लतक्कर, पुलिंदसद्दूलसद्दजीमासु ॥
जयविहुरवुन्नकायर, उल्लूरिअपहिअसछासु ॥१०॥
अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाममत्तवावारा ॥
ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥११॥

अर्थः–(अडवीसु के०) सर्व अटवीउने विषे, ते अटवीउ केहेवी छे? तो के (जिल्ल के०) जिल्ल जे पल्लीवासी लोक, तथा (तक्कर के०) तस्कर एटले चोर, (पुलिंद के०) वनचर जीवो, (सद्दूल के०) शार्दूल सिंह, तेना मारो, हणो, इत्यादिक जे (सद्द के०) शब्द तेणें करीने (जीमासु के०) जयंकर बीहामणी एवी, तथा (जय के०) जय तेणें करीने (विहुल के०) विव्हल तथा (वुन्न के०) विषम्म एटले दुःखित एवा पुरुषोने (अकायर के०) अकातर एवा जिल्ल लोकोयें (उल्लूरिअ के०) लूंट्या

छे, (पहिअसछासु के०) पंथीउना साथो जेने विषे एवी अटवीउ छे ॥ १० ॥ एवी अटवीउमां पण हे श्रीपार्श्वनाथ! (अविलुत्त के०) नथी चोख्युं एवुं (विहवसारा के०) उत्कृष्टधन जेनुं, ते कोण पुरुषनुं उत्कृष्ट धन नथी चोख्युं? तो के (नाह के०) हे नाथ ! (तुह के०) तमोने (पणाममत्त के०) प्रणाममात्र करवो, ते छे (वावारा के०) व्यापार जेमने, एटले ते अवसरनेविषे तमोने प्रणाम करवानुं छे कृत्य जेमनुं एवा पथिको जे छे, तेना (सिग्घं के०) शीघ्र एटले उतावला (विग्घा के०) विघ्नसमूह, (वव गय के०) विशेषें करी गया छे जेथकी एवा पुरुष, (हिअइच्छिअं के०) पोताना हृदयनें विषे इच्छित एवा (ठाणं के०) स्वनगरग्रामादिक मनोवांछित स्थानक, ते प्रत्यें (पत्ता के०) प्राप्त थाय छे ॥ ११ ॥

हवे गाथाद्वयेंकरीने छहुं सिंहनयनिरासकारक प्रजुनुं माहात्म्य कहे छे.

पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह
कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंनबलानोअं ॥ १२ ॥
पणयससंनमपब्थिव, नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ॥
तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥

अर्थः—(पज्जलिअ के०) प्रज्वलित एवो जे (अनल के०) अग्नि, तेना सरखां छे (नयणं के०) नेत्र जेनां एवो, तथा (दूरवियारियमुहं के०) दूरथकी फाड्युं छे नक्षण करवाने अर्थें मुख जेणें एवो, तथा (महा के०) मोहोटो छे (कायं के०) देह जेनो एवो, तथा (नहकुलिस के०) नखरूप कुलिश जे वज्र, तेना (घाय के०) घात, एटले जे प्रहार, तेणें करी (विअलिय के०) विदलित एटले विशेषें निन्न कर्यां छे (गइंद के०) गजेंइ जे हस्ती तेमनां जे (कुंनबल के०) कुंनस्थल तेना (आनोअं के०) आनोग एटले विस्तार जेणें एवो ॥ १२ ॥ अने (कुद्धंपि के०) क्रोधायमान थयो एवो पण (सीहं के०) सिंह जे छे, तेने (नगणंति के०) नथी गणता, अर्थात् तेवा सिंहनेविषे पण नयहेतुतायें करी संनावना करता नथी, ते कोण संनावना करता नथी? तो के (पणय के०) नम

ता एवा (ससंजम के०) ससंभ्रम एटले आदरसहित जे (पछिव के०) पार्थिव जे राजाउ, ते संबंधिनुं अथवा पृथिवीने विषे विख्यात जे इंद्रो ते संबंधिनुं (नहमणिमाणिक्क के०) प्रभुना नखो तेहीज श्रेष्ठ मणिमाणिक्य तेने विषे (पडिय के०) पडयुं छे (पडिमस्स के०) प्रतिबिंब जेमने एवा तमें छो, ते (तुह के०) तमारा (वयणपहरण के०) वचनें करी जे नामग्रहण करवुं, ते रूप प्रहरण एटले शस्त्र. ते शस्त्रोने (धरा के०) धारण कर्यां छे जेमणें एवा जनो सिंहने गणता नथी ॥१३॥

हवे गाथायुग्मेंकरीने सातमो गजजयनिरासकारक प्रभुनो अतिशय देखाडतो छतो कहे छे.

ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवट्ठिउच्छाहं ॥ महु
पिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥ १४ ॥
भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते न विगणंति ॥ जे तुम्ह
चलणजुअलं, मुणिवइतुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥

अर्थः—(मुणिवइ के०) हे मुनिपते ! (ते के०) ते नरो, (अच्चासन्नंपि के०) अत्यासन्न एटले अतिशयेंकरीने निकटवर्त्ति एटले ढूकडो रहेलो एवो पण (महागइंदं के०) महोटो एवो गजेंद्र तेने (नविगणंति के०) नथी गणता. अर्थात् ते नरो गजभय हेतुनी संभावना करता नथी, हवे ते गजेंद्र केहेवो छे? तो के (भीमं के०) बिहामणो अतिभयंकर एवो, वली केहेवो छे? तो के (ससि के०).चंद्रमा तेना सरखा (धवल के०) धोला छे (दंतमुसलं के०) बे दांत रूप मुशल जेनें एवो अने (दीह के०) दीर्घ एटले लांबो एवो (कर के०) शुंढादंम तेनुं (उल्लाल के०) उंचुं उमाडवुं, तेणें करीने (वट्ठि के०) वृद्धिंगत थयो छे (उच्छाहं के०) उत्साह जेने एवो, तथा (महु के०) मधु एटले मध तेना सरखुं (पिंग के०) पीतरक्त छे (नयण के०) नेत्रनुं युगल जेनुं एवो, तथा वली केहेवो छे ? तो के (ससलिल के०) जलें करी पूर्ण एवो जे (नवजलहरारावं के०) नवीन मेघ, तेना सरखो छे आराव एटले गर्जनारूप शब्द जेनो एवो, अहिं जलधर शब्द जे छे, ते मेघवाची जाणवो, कदापि

तेम न कहीयें, तो प्रथम सलिल शब्द ग्रहण करेलो छे, तेथी पुनरुक्ति दोषनी आपत्ति थाय छे माटे. वली ते नरो केहेवा छे ? तों के (जे के०) जे नरो, (तुम्हचलणजुअलं के०) तमारा चरणयुगल ते प्रत्यें (समल्लीणा के०) सम्यक्रीतें आश्रयें करीने रह्या एवा छे. ते तमारुं चरण युगल केहेवुं छे ? तो के (तुंगं के०) सर्वथकी गुणोयें करीने उन्नत एवुं छे. हवे ए सर्वनो नावार्थ एज छे जे, तमारा चरणाश्रित नरोने एतादृश गजनय होतुं नथी ॥ १५ ॥

हवे गाथायुग्मे करीने आठमो प्रनुनो संग्रामनयहरातिशयने कहेतो छतो कहे छे.

समरम्मि तिरकखग्गा, निग्घायपविद्धउद्धुयकबंधे ॥
कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कार पउरंमि ॥ १६॥
निज्जियदप्पुद्धररिउ, नरिंदनिवहा नडा जसं धवलं ॥
पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पनावेण ॥ १७ ॥

अर्थः–(पासजिण के०) हे पार्श्वजिन ! तथा (पावपसमिण के०) हे पापना प्रकर्षकरी शमावनहार ! (नडा के०) नट जे सुनटो ते, (समरम्मि के०) संग्रामने विषे (तुहप्पनावेण के०) तमारा प्रनावं करीने (धवलं के०) उज्ज्वल एवुं (जसं के०) यश जे छे तेने (पावंति के०) पामे छे, ते नटोयें तमारा प्रनावें करीने (निज्जिय के०) निर्जित एटले जींत्या छे (दप्पुद्धर के०) दर्प जे अहंकार तेणें करी मदोन्मत्त थयेला अर्थात् “अमें योद्धा छैयें.” तेवा अनिमान धरनारा एवा (रिउनरिंद के०) शत्रु एवा जे राजाउ तेमना (निवहा के०) समूह जेमणें एवा थाय छे ॥ १७ ॥ हवे पूर्वोक्त संग्राम केहेवो छे ? तो के (तिरकखग्गा के०) तीक्ष्ण एवा जे खड्ग तेना (अनिग्घाय के०) प्रहार तेणें करीने (पविद्ध के०) उखूंखल जेम तेमज (उद्धुय के०) आम तेम नाचवा लाग्यां छे (कबंधे के०) मस्तक रहित धड जेने विषे एवो, तथा वली केहेवो ते संग्राम छे ? तो के (कुंत विणिनिन्न के०) कुंत जे नालां, तेमणें विशेषें करी नेदेलां छे अंग जेनां एवा जे (करिकलह के०) हस्तीना त्रीश वर्षना बालको, तेमणें (मु

क्सिक्कार के०) मूकेला एवा जे सीत्कारो ते सीत्कारातिशयेंकरीने (पउरम्मि के०) प्रचुर एवो संग्राम छे. एवा दारुण संग्रामने विषे तमारा प्रनावें करी ते सुनटो जयने पामे छे. ॥ १६ ॥

हवे एटला स्तोत्रें करीने कवियें प्रजुनुं आठ जयनिवारणातिशय पणुं पृथक् पृथक् गाथायुग्मेंकरीने कह्युं, सांप्रत एक गाथायें करीनेज पूर्वें कह्यां एवां जे नयो, तेने निरास करतो छतो कहे छे.

रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण नयाइं ॥
पासजिण नाम संकि, त्तणेण पसमंति सवाइं ॥ १७ ॥

अर्थः-(रोग के०) रोग जे कुष्ठादि, (जल के०) पाणी, (जलण के०) अग्नि, (विसहर के०) सर्प, (चोर के०) तस्कर, (अरि के०) शत्रु, (मइंद के०) सिंह, (गय के०) हस्ती, (रण के०) संग्राम, तेनां (सवाइं के०) सर्व (नयाइं के०) नय ते, (पासजिणनामसंकित्तणेण के०) पार्श्वजिननां श्रद्धा पूर्वक जे नाम, तेनुं जे कीर्त्तन, तेने करवे करीने (पसमंति के०) प्रकर्ष करी शांति पामे छे. अर्थात् प्रशब्देंकरीने फरी ते नय उत्पन्न पण थाय नहिं. आ ठेकाणे मंत्र कहे छे, ते जेम केः-"ॐ नमिऊण पास विस विसहर वसह जिण फुलिंग ह्रींरोग जल जलण विसहर चोरारि मइंद गय रण नयाइं पास जिण नाम संकित्तणेण पसमंति मम स्वाहा ॥ " आ महामंत्र छे, ते आ स्तोत्रना वेराएला अक्षरोयें करी उत्पन्न करेलो छे ॥ १७ ॥

हवे आ गाथामां आ स्तौत्रनुं माहात्म्य कहे छे.

एवं महानयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥
नविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥ १८ ॥

अर्थः-(एवं के०) ए पूर्वोक्त रीतें कह्युं एवुं, (पासजिणिंदस्स के०) श्री पार्श्वजिनेंद्रनुं (संथवं के०) स्तवन छे, ते केहेवुं छे ? तो के (महानयहरं के०) मोहोटुं एवुं जे नय तेने हरनारुं छे, अर्थात् अनर्थप्रतिघातक छे. आ पदें करीने आ स्तोत्रनुं नाम पण नयहर जाणवुं. वली ते केहेवुं छे ? तो के (उआरं के०) अर्थथकी अने शब्दथकी उदार छे. वली केहेवुं छे ? तोके (नवियजणाणंदयरं के०) नव्य जे मुक्तिगमन योग्य जीव, तेने आनंद

करनारुं छे, अहिं कोइ शंका करे के, नवियानंदयरं एम न कह्युं अने नवियजणाणंदयरं एम कहेवानुं शुं कारण? अने कदाचित् पूर्वोक्त पाठ कह्यो हत, तो पण अर्थमां एमज आवत, ते जेम केः—नविकोने आनंद देंनारुं छे. त्यां समाधान करे छे के, जो जन शब्दनुं ग्रहण न करियें, तो अव्यवहारिक निगोदमां पण नविक जीव छे, तो तेनें आनंद थवानो संनव छे नहीं, कारण के ते एकेंड्रिय छे माटे मध्यें जन शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे. अहीं व्यवहारराशिमां जे उत्पन्न थाय, तेने जन कहियें माटे नविक एवा जनने आनंदकारक आ स्तवन छे, एम जाणवुं. वली आ स्तवन केहेवुं छे? तो के (कल्लाणपरंपरनिहाणं के०) कल्याण जे श्रेय तेनी परंपरा जे संतति तेनुं निदानरूप एवुं छे. अहिं केटलाएक तो पदविनंजन करीने आम अर्थ करे छे, ते जेम केः—(नवियजणाणं के०) नविक जनोने (कल्लाणपरं के०) कल्याणैकस्थान एवुं छे. वली केहेवुं छे? तो के (परनिहाणं के०) परनिजानां एटले पर जे शत्रुउ तेनां निन जे कपट, ते उच्चाटनादि तेने (अंदयरं के०) बांधनारुं छे, अर्थात् प्रकारांतरें करी एम जाणवुं जे क्षुद्र कर्मोने स्तंनन करनारुं छे ॥ १ए ॥

हवे आ गाथायेंकरीने जे कोइ नयस्थानको होय, ते ठेकाणें आ स्तवन नणवुं, एवां नयस्थानकोने प्रगट करतो उतो कहे छे.

राय नय जरक रस्कस, कुसुमिण डुस्सउण रिस्क पीडासु ॥
संजासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥

अर्थः—(रायनय के०) राजनय, (जस्क के०) यक्षनय, (रस्कस के०) राक्षसनय, (कुसुमिण के०) कुस्वप्ननय, तथा (डुस्सउण के०) दुःशकुन, एटले दुष्ट शकुननय तथा (रिस्क के०) अशुन ग्रह, ते सर्वेनी (पीडासु के०) पीडाउने विषे, तथा (दोसुसंजासु के०) बे संध्या ते एक प्रातःकाल अने बीजी सायंकाल तेनेविषे, तथा (पंथे के०) पंथ जे अरण्यादि मार्ग तेनेविषे, तथा (उवसग्गे के०) देव अने मनुष्यकृतोपसर्गोने विषे (तह के०) तथा (य के०) च ते समुच्चयार्थवाचक छे. (रयणीसु के०) रात्रिउने विषे ॥ २० ॥

जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥
पासो पावं पसमेउ, सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥

अर्थः–(जो के०) जे कोइ जन, ए उक्त प्रकारें करीनें श्रीपार्श्वजिन नुं आ स्तव जे छे तेने (पढइ के०) भणे छे, तथा (जोअनिसुणइ के०) जे उपयोग पूर्वक सांभले छे, (ताणं के०) ते बेहुजननुं (य के०) वली (कइणो के०) आ प्रस्तुत स्तोत्रना कर्त्ता एवा (माणतुंगस्स के०) मानतुंग सूरि तेमनुं निजप्रभु एवा जे (पासो के०) पार्श्वनामा जिन, अहिं पार्श्व पदें करीने पार्श्वयक्ष ग्रहण करवो नहिं, कारण के ते यक्षने हवे केहेशुं एवां विशेषणोनी अनुपपत्ति छे माटे ते पार्श्वजिन, (पावं के०) पाप ते अशुभ कर्म जे राजभयादिकनुं कारण, तेने (पसमेउ के०) विनाश करो, ते पार्श्वजिन केहेवा छे? तो के (सयलभुवणच्चियचलणो के०) सकल एवुं भुवन जे जगत् तेणें, अहिं भुवन शब्दें करीने त्रिभुवनमां रहेनारा जनो ग्रहण करवा, तेणें अर्चित एटले पूजित छे चरण जेनां एवा छे ॥ २१ ॥

हवे ते पार्श्वजिन केहेवा छे? तेनो अतिशय आ गाथायें करी कहे छे.

उवसग्गंते कमठा, सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिउ ॥
सुर नर किन्नर जुवइहिं, संथुउ जयउ पासजिणो ॥ २२ ॥

अर्थः–(उवसग्गंते के०) उपसर्गकारक एवो (कमठासुरम्मि के०) कमठासुर छते पण (जो के०) जे भगवान् (झाणाउ के०) षट्जीव निकाय हितचिंतन रूप एवा ध्यानथकी (नसंचलिउ के०) चलायमान थया नहीं. अर्थात् क्षोभ पाम्या नहीं. वली ते केहेवा छे? तो के (सुर के०) देवो, (नर के०) मनुष्य, (किन्नर के०) किन्नर, (जुवइहिं के०) युवती एटले ते सर्वेनी स्त्रीयो तेणें (संथुउ के०) रूडे प्रकारें एटले त्रिधा शुद्धियें करीने स्तुति करेला एवा (पासजिणो के०) श्रीपार्श्वजिन ते (जयउ के०) जयतु एटले उत्कर्षें जयवृद्धिने पामो ॥ २२ ॥

एअस्स मझयारे, अठारस अक्करेहिं जो मंतो ॥
जो जाणइ सो झायइ, परम पयत्थं फुडं पासं ॥ २३ ॥

अर्थः–(एअस्स के०) आ स्तोत्रना (मझयारे के०) मध्यनें विषे

वेरेला अक्षरोयें करी "नमिऊणपासविसहरवसहजिणफुलिंगं" ए (अढा. रसअरकरेहिं के०) अढार अक्षरोयें करीने (जो के०) जे चिंतामणिनामा गुप्त (मंतो के०) मंत्र छे, तेने (जो के०) जे (जाणइ के०) गुरु उपदेशथकी जाणे छे (सो के०) ते, तेवा मंत्रें करीने (पासं के०) पार्श्वनाथनें (झायइ के०) श्रीमंत्रमय पार्श्वप्रभुनुं ध्यान करे छे, ते केहेवा श्री पार्श्वनाथ छे ? तो के (फुडं के०) प्रगटध्यान स्वरूपें करीने (परम के०) उत्कृष्ट एवुं (पयडं के०) पद जे स्थानक तेने विषे रहेनारा छे ॥ २३ ॥

पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हियथेण ॥ अठुत्त
र सय वाहि भय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥
इति श्रीमहाभयहरनामकं पंचमस्मरणं संपूर्णम्॥५॥

अर्थः—(जो के०) जे जीवो, (संतुठेहियथेण के०) संतुष्ट हृदयें करीने (पासह के०) श्रीपार्श्वनाथनुं (समरण के०) स्मरण जे छे, तेने (कुणइ के०) करे छे, (तस्स के०) ते जीवोना (अठुत्तरसय के०) एकशोने आठ एवा (वाहि के०) व्याधि संबंधि जे (भय के०) भय, ते (दूरेण के०) दूर प्रत्यें (नासइ के०) नासे छे ॥ २४ ॥ इति नमि० ॥ ५ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री अजितशांतिस्तवननाम्नः षष्ठस्मरणस्य प्रारंभः ॥

अजिअं जिअ सव्व भयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं ॥ जय
गुरु संति गुण करे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

अर्थः—भगवान् गर्भस्थ छते तेमनी विजया देवी माताने पोताना स्वामी जितशत्रु राजायें द्यूतक्रीडाने विषे न जींति, माटे (अजियं के०) अजितनाथ नामा बीजा तीर्थंकर, (च के०) वली (जिअसव्वभयं के०) जीत्युं छे, इह लोकादिक सप्तविध सर्व भय जेणें एवा, (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ भगवान् ते, जे वखत गर्भमां हता, ते समय पण जगतना अशिवोनी उपशांतिने करता हवा, अने हमणां पण एना स्मरणथकी जीवने शांतिने करे छे, ते माटे ते शांतिनामक शोलमा तीर्थंकर केहेवा छे ? तो के (पसंत के०) अपुनर्भावें करी निवृत्त थया छे (सव्व के०)

सर्वे एवा (गय के०) रोग अने (पावं के०) पाप एटले अशुन्न कर्म जे मनां एवा ठे, ते (दोवि के०) बेहु पण (जिणवरे के०) जिनवर तेने (पणिवयामि के०) प्रणिपतामि एटले नमस्कार करुं बुं. ते बेहु जिनवर केहेवा ठे ? तो के (जय के०) जगत् जे देशनार्ह प्राणिवर्ग तेना (गुरुके०) तत्त्वोपदेष्टा एवा ठे, अथवा जगतना (गुरु के०) महोटा एवा तथा (संति के०) कषायनो अन्नाव, तथा (गुण के०) ज्ञानादिक गुण तेने (करे के०) करे ठे, अथवा शांतिरूप गुणना करनार ठे ॥ १ ॥ आ,गाथानामक ठंद जाणवो. आ सर्वे स्तोत्रना ठंदनुं लक्षण ठंदोरत्नाकरनामक ग्रंथथी जाणवुं ॥

ववगय मंगुल न्नावे, तेहं विउल तव निम्मल सहावे ॥
निरुवम महप्पन्नावे, थोसामि सुदिठ सप्नावे ॥ २ ॥ गाहा॥

अर्थः—(ववगय के०) व्यपगत एटले गयो ठे (मंगुलन्नावे के०) अशोन्नन न्नाव जेमनो एवा, आ कह्युं एवुं ववगयमंगुलन्नावत्व, तेनेविषे विशेषणद्वारायें करीने हेतु कहे ठे, ते जेम केः— (विउल के०) विस्तीर्ण ते बाह्याभ्यंतर द्वादशविध एवुं (तव के०) तप तेणेंकरीने (निम्मलस हावे के०) निःकर्मा ठे स्वसत्तायें करी स्वन्नाव जेमनो एवा, ते पूर्वेनी गाथा मां कह्या जे श्री अजितनाथ तथा शांतिनाथ, ते बेहुनी हुं नंदिषेणनामा सूरि, (थोसामि के०) स्तुति करुं बुं. हवे ते बेहु जिन केहेवा ठे ? तो के (निरुवम के०) निरुपम, उपमातीत ठे (महप्पन्नावे के०) महान् एटले महोटो ठे प्रन्नाव एटले शक्ति जेनी एवा ठे, अथवा निरुपम एटले महोटो एवो ठे प्रन्नाव ते माहात्म्य जेनुं एवा ठे. वली केहेवा ठे? तो के (सुदिठ के०) रूडे प्रकारेंकरी, अर्थात् केवलज्ञान अने केवल दर्शनेंकरी दीठा ठे (सप्नावे के०) विद्यमान जीवाजीवादिक न्नावो जेणें एवा ठे. आहिं ' तेहं ' ए जे पाठ ठे, ते अप्रामाणिक ठे; कारण के तेनुं प्रावाहिकत्वेंकरीने आगमन ठे, तथापि ते पाठ सर्वजनो न्नणे ठे, तेथी अहिं लख्यो ठे ॥ २ ॥ आ पण, गाथानामा ठंद जाणवो.

सब्ब डुक्ख प्पसंतीणं, सब्ब पाव प्पसंतिणं ॥ सया अ
जिय संतीणं,नमो अजिय संतिणं ॥३॥ सिलोगो ॥

अर्थः-(सव्व के०) सर्व एवा जे जन्मजरादि विद्यमान कर्म, ते थकी उपनां जे (दुक्ख के०) दुःख तेनी (प्पसंतीणं के०) प्रशांति थइ छे जेउने एवा छे, अथवा सर्व योग्य जंतुउना दुःखनी प्रशांति करी छे जेमणें एवा छे, तथा (सव्व के०) सर्व एवां जे प्राणातिपातादिक (पाव के०) पापकर्मो छे, तेनी (प्पसंतिणं के०) प्रशांति थइ छे जेमने एवा छे, तथा वली (अजिअ के०) रागादिकें करी नथी पराजव पामेलो एवो (संतीणं के०) शांति एटले उपशम छे जेमनो एवा, (अजिअसंतिणं के०) श्रीअजितनाथजी तथा शांतिनाथजी तेमने (सया के०) सदा निरंतर (नमो के०) नमस्कार थाउ ॥ ३ ॥ आ गाथानो श्लोकनामा छंद जाणवो ॥

अजिअ जिण सुह प्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम
नाम कित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं,तव
य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिया ॥

अर्थः-(अजिअजिण के०) हे अजितजिन! तथा (पुरिसुत्तम के०) पुरुष जे मर्त्यलोक तेने विषे उत्तम एटले श्रेष्ठ तेना संबोधननेविषे हे पुरुषोत्तम ! (तव के०) तमारुं (नामकित्तणं के०) नामनुं जे कीर्त्तन ते (सुहप्पवत्तणं के०) स्वर्गापवर्ग लक्षण जे सुख, तेनुं प्रवर्त्तन करनारुं एवुं वर्त्ते छे. (तहय के०) तथा वली (धिइ के०) धृति ते चित्तनी स्वस्थतारूप समाधि तथा (मइ के०) मति जे बुद्धि, तेनुं (प्पवत्तणं के०) प्रवर्त्तन एटले प्रकर्षेकरीने वर्त्तन करनारुं छे, तथा (जिणुत्तम के०) जिन जे सामान्य केवली, तेने विषे श्रेष्ठ एवा हे (संति के०) श्री शांतिनाथ! (तवय के०) वली तमारा नामनुं जे (कित्तणं के०) कीर्त्तन छे, ते पण पूर्वोक्तगुणयुक्त छे. कोइ ठेकाणें 'पवत्तण' एवो पाठ छे, तेनो अर्थ पण तेमज जाणवो ॥ ४ ॥ आ गाथानो, मागधिका नामा छंद जाणवो.

किरिआ विहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्ख यरं,
अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धि गयं॥ अजि
अस्स य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं म
म निव्वुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥

अर्थः—(किरिआविहि के०) कायिक अधिकरणीयादिक पच्चीश क्रिया, तेना विधि एटले नेद, तेणेंकरी (संचिअ के०) संचित करेलां एटले एकठां करेलां एवां जे (कम्म के०) ज्ञानावरणादिक आठ कर्म, तथा (किलेस के०) कषाय ते थकी (विमुरकयरं के०) मूकावनारा छे, एटले तेथकी अत्यंत अजावना करावनारा छे. अहीं किलेस ते कषाय तेनुं पण कर्मने विषे अंतर्गतपणुं छे, तथापि संसारना कारणनेविषे कषायनुं मुख्यत्वप णुं छे एवुं सूचन करवाने कषायनुं जूडुं ग्रहण कर्युं छे, तथा (अजिअं के०) तीर्थांतरीय एवा अन्यदर्शनीउ जे ईश्वरादिक देवो छे, तेने वांदवांनुं जे पुण्य, तेणें नथी जीत्या जेणें एवा छे, (च के०) वली केहेवा छे? तो के (गुणेहिं के०) सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिक गुणेंकरीने (निचियं के०) निचित एटले व्याप्त एवा छे. उपलक्षणथी ए गुणोनी प्राप्ति पण न गवानने नमस्कार करवा थकी होय छे. वली केहेवा छे? तो के (महामु णि के०) महोटा मुनियो जे रूषिउ तेमनी (सिद्धि के०) अणिमादिक आठ सिद्धिउ जे छे, तेने (गयं के०) गत एटले प्राप्त थया एवा छे, उपलक्षण थकी ते अणिमादिक आठ सिद्धिउनी प्राप्ति पण नगवंतने नमस्कार करवा थकी थाय छे, एवा (अजिअस्स के०) अजित नामें बीजा तीर्थंकर तेमने अने (य के०) वली जे विघ्नोपशांतिने करे छे, एवा (संति के०) श्री.शांतिनाथ नामा शोलमा तीर्थंकर, (महामुणिणोविअ के०) जे महामुनि छे तेमने अ थवा महामुनिउने शांतिना करनार श्रीशांतिनाथ तेमने जे (नमंसणयं के०) विशिष्ट प्रणमन करवुं, ते (मम के०) मुजने (सययं के०) निरंतर, (संति करं के०) विघ्नोपशांति करवानुं अने (च के०) वली (निव्वुइ के०) निवृत्ति जे मोक्षसुख तेनुं प्रशस्त, (कारणयंच के०) कारण, (नवतु के०) हो. अहीं नवतु ए पद अध्याहारथी लेवुं. कारण के ए पदमां जे छेल्लुं कारणकं, त्यां क जे छे, ते नमनप्रशंसाने विषे छे ॥ ५ ॥ आ, आलिंगनकनामा छंद छे ॥

पुरिसा जइ डुरकवारणं, जइ अ विमग्गह सुरक
कारणं ॥ अजिअं संतिं च नावउ, अनयक
रे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥

अर्थः—(पुरिसा के०) हे मनुष्यो ! (जइ के०) यदि एटले जो तमें (डुक्खवारणं के०) डुःखनुं प्रतिषेधन करवुं, तेने (विमग्गह के०) विमार्गयथ एटले खोलो गो,अर्थात् शोध वांगो गो,अने (अ के०) वली (जइ के०) यदि एटले जो (सुरककारणं के०) सुखनुं कारण एटले हेतु तेनेपण विमग्गह एटले खोलो गो, शोधो गो, तो (अजिअं के०) श्रीअजितनाथनुं (च के०) तथा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ तेमनुं (सरणं के०) शरण जे त्राण तेने (नावर्ज के०) नाव नक्तियें करीने, परंतु इव्येंकरीने नही, एवुं सूचन करवाने अर्थें नावर्ज ए शब्द ग्रहण कर्यो गे. (पवज्जहा के०) प्राप्त थार्ज. ए बेहु तीर्थंकर केहेवा गे ? तो के (अनय के०) निर्नय तेने (करे के०) करे एवा गे ॥ ६ ॥ आ, मागधिका नामा गंद जाणवो ॥

एम बेहु तीर्थंकरनी स्तवना करीने, हवे अनुक्रमें एकेक तीर्थंकरनी स्तुति करे गे. तेमां पण प्रथम श्रीअजितनाथने स्तवे गे.

अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जर मरणं, सुर
असुर गरुल नुयग वइ पयय पणिवइअं ॥ अजिअ मह
मविअ सुनय नय निउण मनयकरं, सरण मुवसरिअ
नुवि दिविज महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥

अर्थः—(अरइ के०) संयमने विषे अरति अने (रइ के०) असंयमने विषे रति एटले समाधि तथा (तिमिर के०) अज्ञान, तेणेंकरी (विर हिअ के०) विरहित एवा, अथवा अरति ते मोहनीयउदय थकी उपन्यो जे चित्तोद्वेग अने रति ते मोहनीयोदय थकी उपनी जे चित्तानिरति, ते बेहु सम्यक् ज्ञानने आछादन करनारी गे, ते रूप तिमिर जे अंधकार, तेणें करी विरहित गे, अने वली (उवरयजरमरणं के०) उपरत एटले निवृत्ति पाम्यां गे जरा अने मरण जेनां अथवा (उवरयजरं के०) उपरत गे जरा जेने तथा वली (अरणं के०) नथी रण ते युद्धादिक क्लेष जेने एवा, वली (सुर के०) वैमानिक देवो, (असुर के०) नवनपति, (गरुल के०) सुवर्णकुमार, (नुयग के०) नागकुमार, तेना (वइ के०) पति जे इंडो. उपलक्षणथकी अन्य देवोना पण इंडो लेवा. तेमणें (पय

य के०) रूडे प्रकारें जेम थाय तेम (पणिवइयं के०) प्रणिपत्यं एटले नमस्कार कर्यो ले जेने एवा, अथवा (सुर के०) वैमानिक, (असुर के०) जवनपति, (गरुल के०) ज्योतिषि, (जुयगा के०) जुज जे वृक्ष तेने विषे, गा नाम चाले एवा जे व्यंतर, ते वनचर संज्ञायेंकरीने तेनु रूढपणुं ले, ए हेतु माटे तेमना (वइ के०) पति तेमणें (पययं के०) शुद्धतायें करीने (पणिव इयं के०) प्रणिपत्य कर्युं ले जेमने एवा ले, वली केहेवा ले ? तो के (अविअ के०) अपिच एटले सर्व समीचीन एवां अन्य विशेषणोयें युक्त एवा तथा (सुनय के०) शोजन एवा जे अनेकांतरूप नैगमादिक नय, तेमनुं (नय के०) प्रतीतिनुं पामवुं, तेने विषे (निउण के०) निपुण म्हाह्या ले, तथा (अजयकरं के०) निर्जय पणाना करनार अथवा जय रहितसुखना आपनारा, एवा जिनने (सरण के०) शरणने (उवस रिअ के०) उपसृत्य एटले शरणतायें करी प्रतिपादन करीने (जुवि के०) जुविज ते मनुष्यो, (दिविज के०) देवो तेमणें (महिअं के०) पूजित ले एवा, (अजिअं के०) श्रीअजितनाथने (सययं के०) सततं एटले निरंतर (अहं के०) हुं स्तवन करनारो (उवणमे के०) उपनमे एटले सामीप्यें करीने नमस्कार करुं लुं ॥ ७ ॥ आ, संगतकनामा छंद जाणवो.

हवे शांतिजिनने स्तवे ले.

तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं,
अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहि
निहिं ॥ संतिकरं पणमामि दमुत्तम
तित्थयरं, संतिमुणी मम संति समा
हिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥

अर्थः—हुं (तं के०) ते जगत्प्रसिद्ध एवा (संतिमुणी के०) शांतिनामें जे मुनि, तेने (पणमामि के०) श्रद्धापूर्वक प्रणाम करुं लुं. (च के०) च ले ते पादपूरणार्थ ले, ते शांतिमुनि केहेवा ले ? तो के (जिण के०) सामान्य केवली तेने विषे (उत्तम के०) तीर्थंकरपणायें करीने श्रेष्ठ ले, अने (उत्तम के०) प्रधान (नित्तम के०) निस्तम एटले अज्ञानरहित ले,

अथवा निस्तम एटले कांक्षारहित छे, तथा (सत्तधरं के०) सत्र एटले नावयज्ञ तेने धारण करनारा छे, वली (अज्जव के०) आर्जव, ते निर्मायिकपणुं (मद्दव के०) मार्दव, ते निरहंकारता, (खंति के०) क्षमा, (विमुत्ति के०) निर्लोनता तथा (समाहि के०) समाधि तेमना (निहिं के०) निधि एवा छे, तथा (संतिकरं के०) शांतिक जे विपत्तिनो उपशम, तेने रं एटले आपे छे एवा, वली केहेवा छे ? तो के (दमुत्तम के०) दम जे इंडिय दमन एटले इंडियनो जय, तेणेंकरीने उत्तम एटले प्रधान छे, वली (तिछयरं के०) तीर्थ करवानुं छे शील जेनुं तेने तीर्थंकर कहियें. एवा ते (मम के०) मुजने (संति के०) शांति अने (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि जे चित्तनी स्वस्थता, तेहीज वर एटले वांछितपणुं तेने (दिसउ के०) द्यो, आपो ॥ ८ ॥ आ, सोपानकनामा छंद जाणवो.

हवे श्री अजितनाथनें गाथायुग्में करीने स्तवे छे.

सावछि पुव पछिवं च वर हछि मछय पसछ विछिन्न संथियं, थिर सरिछ वछं मयगल लीलायमाण वर गंधहछि पछाण पछियं संथवारिहं ॥ हछि हछ बाहुं धंत कणग रुअग निरुवहय पिंजरं, पवर लस्कणो वचिय सोम चारु रूवं, सुइ सुह मणाभिराम परम रमणिज्ञ वर देव छुंछुहि निनाय महुर यर सुहगिरं ॥ ए ॥ वेढ्ढो ॥

अर्थः–(सावछि के०) श्रावस्ति शब्देंकरीने अहीं अयोध्या ग्रहण करवी, तेविषे आगमनुं प्रमाण छे, जेम के–" इस्काग नूमिउछा. सावछे विणियं कोसलपुरं च " माटे ते आयोध्यानेविषे (पुवपछिवं के०) पूर्वे एटले दीक्षा ग्रहणथी पहेलां पार्थिव एटले राजा हता, अथवा पूर्वे कहेली एवी अयोध्या तेना पार्थिव एटले राजा, (च के०) चकार पादपूरणार्थ छे. वली (वर के०) श्रेष्ठ एवो जे (हछिमछय के०) वनहस्ती तेनुं मस्तक तेना सरखुं (पसछ के०) प्रशस्त एटले प्रशंसा करवा योग्य अने (विछिन्न के०) विस्तीर्ण एवुं छे शरीरनुं (संथियं के०) शुन संस्थान जेमनुं

एवा छे तथा (थिर के०) स्थिर कठिन (सरिछ के०) सरखुं अविषम एवुं (वछं के०) वक्ष एटले हृदय छे जेमनुं, अथवा (थिर के०) निश्चल एवुं (सरिछ के०) श्रीवत्सनामा लक्षणविशेष ते (वछं के०) वक्षस्थलने विषे छे जेने एवा, तथा (मयगल के०) मदोन्मत्त अने (लीलायमाण के०) लीला करतो एवो (वर के०) प्रधान (गंधहत्थि के०) गंधहस्ती तेनुं जे (पछाण के०) प्रस्थान एटले गमन तेनी पेरें (पछिअं के०) पदसंक्रमण एटले गति छे जेमनी एवा, तथा (संथवारिहं के०) संस्तव जे स्तुति ते वर्णन करवुं, तेने अर्ह एटले योग्य तथा (हत्थिहछ के०) हस्तीनो हस्त जे शुंमादंम तेना सरखा सरल तथा लांबा छे (बाहुं के०) बाहु जेना एवा, तथा (धंत के०) धमेलुं एवुं जे (कणग के०) कनक एटले सुवर्ण तेनुं (रुअग के०) रुचक एटले नाजन अथवा आनरणविशेष तेना सरखुं (निरुवहय के०) निरुपहत एटले निष्कलंक एवो (पिंजर के०) पीतवर्ण छे जेनो एवा, तथा (पवर के०) प्रवर एटले श्रेष्ठ एवा शंख, चक्र, अंकुशादिक (लरकण के०) लक्षणो तेणेंकरीने (उवचिय के०) सहित छे व्याप्त छे, तथा (सोम के०) सौम्याकार एवुं देखनाराने (चारु के०) मनोहर सुखदायक छे (रूवं के०) रूप जेमनुं एवा, तथा (सुइ के०) श्रुति जे कान, तेने (सुह के०) सुखनी दायक तथा (मण के०) मनने (अनिराम के०) मनोहर आल्हादकारी (परम के०) अत्यंत (रमणिज्ज के०) रमणिक, अथवा (पर के०) उत्कृष्ट छे (मा के०) लक्ष्मी जेने एवा श्रीमंत जनो तेने, अथवा (पर के०) दूर छे (मा के०) लक्ष्मी जेने एवा दरिद्री जनो, ते बेहुने (रमणिज्ज के०) रमाडनार एटले संतोष पमाडनार एवी, तथा (वर के०) श्रेष्ट एवी (देवडुंडुहि के०) देवडुंडुनि तेनो (निनाय के०) शब्द तेना सरखी (महुरयरसुह के०) मधुर तर शुन्न कल्याणकारिणी एवी छे (गिरं के०) वाणी जेमनी एवा छे ॥ ए ॥ आ, वेष्टकनामा छंद जाणवो,

अजिअं जिआरिगणं, जिअसवन्नयं नवो
हरिउं ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पस मेउ
मे नयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ युग्मं ॥

अर्थः-(जिआरिगणं के०) जीत्या छे, अष्टकर्मरूप शत्रुना समूह जेणें, तथा (जिअसव्वजयं के०) जीत्या छे सर्व जय जेणें, एम ए पदनो अर्थ, पूर्वें गयेला पदनी पेरें करवो. तथा तेना पुनरुक्तिदोष परिहारने अर्थें आम पण अर्थ करवो, ते जेम केः-(जिय के०) जीव ते अहीं पंचेंडिय जीव लेवा तेने (सव्व के०) श्रव्य एटले सांजलवा योग्य छे (जयं के०) जग एटले जाग्य जेमनुं एवा, तथा (जवो हरिउं के०) जव एटले संसार तेनो उघ जे प्रवाह तेना रिपु एटले शत्रु छे, अर्थात् संसारनुं उच्छेदकपणुं छे जेमने एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ, ते प्रत्यें (पयउ के०) प्रयतः एटले मन, वचन अने कायायेंकरी उपयुक्त एवो उतो (अहं के०) हुं (पणमामि के०) प्रणाम करुं छुं. अने (जयवं के०) ते जगवान् (मे के०) महारुं (पावं के०) पाप जे छे, तेने (पसमेउ के०) प्रशमतु एटले प्रकर्षेंकरी शमावो, कारण के पापक्षय छते ज मोक्ष छे, ते विना नथी ॥ १० ॥ आ, रासालुब्धकनामा छंद जाणवो.

हवे बे गाथायें करी श्रीशांतिजिनने स्तवे छे.

कुरु जणवय हत्थिणाउर, नरीसरो पढमं तउ महा च
क्कवट्टि जोए महप्पजावो, जो बावत्तरि पुर वर सह
स्स वर नगर निगम जणवय वई, बत्तीसा राय वर
सहसाणुयाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण नव महानि
हि चउसहि सहस्स पवर जुवईण सुंदरवइ, चुलसी
हय गय रह सय सहस्स सामी, छन्नवइ गाम कोडि
सामी आसिजो जारहम्मि जयवं ॥ ११ ॥ वेढ्ढउ ॥

अर्थः-(कुरु के०) कुरुनामें (जणवय के०) जनपद एटले देश, तेने विषे (हत्थिणाउर के०) हस्तिनापुर नगर, तेना (नरीसरो के०) राजा ते (पढमं के०) प्रथम थया (तउ के०) तेवार पछी (महा के०) महोटा (चक्कवट्टि के०) चक्रवर्त्ती तेनो (जोए के०) जोग जे राज्य, तेने विषे वर्त्तता हवा, एटले छ खंमना राज्यना जोग जोगव्या (महप्पजावो

के०) महोटो जेनो प्रजाव एटले महिमा ठे, उत्सवोयें करी आत्माने प्रीति करनारी ठे, वली केहेवा ठे? तो के (जो बावत्तरिपुरवरसहस्स के०) जे बहोंत्तेर हजार एवा पुरवर ते जे घरोयेंकरीने श्रेष्ठ तेने पुरवर कहियें तथा (वरनगर के०) श्रेष्ठ नगर जे गजपुरादि, जेमां कर नहीं ते नगर कहियें अने (निगम के०) ज्यां महोटा रुद्धिवंत वणिक् व्यससाय कर नारानी डुकानो होय, ते तथा (जणवय के०) जनपद ते देशविशेष जाणवा तेना (वई के०) अधिपति स्वामी, अथवा प्रकारांतरें बत्रीश स हस्त्र पुरवर, नगर, निगम, जनपद, तेना स्वामी एवा, अने (बत्तीसारायव रसहसा के०) बत्रीश हजार एवा जे रायवर एटले मुकुटबद्ध राजा ते बत्रीश हजार देशना नायकें (अणुयायमग्गो के०) अनुयात मार्ग ठे जे मनो एटले ते बत्रीश हजार देशना मुकुटबद्ध बत्रीश हजार राजा ते सर्व श्रीशांतिनाथनामा चक्रवर्त्तिनी पठवाडे चालनारा ठे जेने एवा, वली केहे वा ठे? तो के (चउदस के०) चउद ठे (वर के०) श्रेष्ठ एवा (रयण के०) रत्न जेने एवा, तथा (नवमहानिहि के०) नव महोटा निधि एटले नि धान जंमार अखूट ठे जेने, वली (चउसठ्ठिसहस्स के०) चोशठ हजार (पवर के०) प्रवर एटले श्रेष्ठ एवी (जुवईण के०) युवती जे स्त्री तेना (सुंदरवइ के०) सुंदर पति एटले जर्त्तार ठे, वली (चुलसी के०) चोरा शी (सयसहस्स के०) शत सहस्त्र एटले चोराशी शो हजार अर्थात् चोराशी लाख (हय के०) घोडा तथा चोराशी लाख (गय के०) गज ते हस्ती तथा चोराशी लाख (रह के०) रथ, तेना (सामी के०) स्वामी अधिपति जाणवा. वली कोइ ठेकाणें अढार क्रोड घोडा पण कह्या ठे तथा व ली (ठस्रवइगामकोडि के०) ठन्नुं क्रोड गाम तेना (सामी के०) स्वामी एवा (जयवं के०) जगवान (जारहम्मि के०) जरतक्षेत्रने विषे (आसि ज्ञो के०) होता हवा ॥ ११ ॥ आ वेष्टकनामा ठंद जाणवो.

तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सवजया ॥ संतिं थुणामि
जिणं, संतिं वेहेउ मे ॥१२॥ रासानंदियं ॥ युग्मम्॥

अर्थः—(तं के०) ते पूर्वोक्त (संतिं के०) मूर्त्तिमान् उपशम रूप एवा तथा (संतिकरं के०) स्व एटले पोताना अंतिक जे समीप ते मोक्ष

लक्षण, तेने (र के०) आपनार एवा, अने (संतिसुं के०) रूडे प्रकारें तणुं ले (सव्व के०) सर्वोएं (जय के०) मृत्यु जेथकी, अर्थात् जे थकी सर्व मृत्युजय तरे ले एवा, (संति के०) श्रीशांतिनाथ (जिण के०) तीर्थंकर तेने (थुणामि के०) स्तुति करुं बुं. श्या माटे स्तुति करुं बुं? तो के (मे के०) म्हारा उपसर्गनी (संति के०) शांति तेने (वेहेउ के०) विधातुं एटले करवाने अर्थे स्तुति करुं बुं ॥ १२ ॥ आ, रासानंदित छंद ले.

वली अजितनाथने स्तवे ले.

इक्काग विदेह नरीसर, नर वसहा मुणि वसहा ॥
नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअ
रया ॥ अजि उत्तम तेअ गुणेहिं, महा मुणि अ
मिअ बलाविउल कुला ॥ पणमामि ते जव जय
मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥

अर्थः—(इक्काग के०) इक्ष्वाकुकुलवंशमां उत्पन्न थया माटे हे इक्काग कुलवंश्य ! तथा (विदेह के०) विदेहनामा देश तेना (नरीसर के०) नरेश्वर एटले राजा माटे हे विदेहनरेश्वर ! तथा (नर के०) मनुष्य तेमां (वसहा के०) वृषज एटले श्रेष्ठ माटे हे नरवृषज ! तथा (मुणिवसहा के०) मुनिमांहे एक अद्वितीय एटले मुनिधर्ममां धोरी, अथवा मुनींडोनी सजा तेने विषे ले नवो स्तव जेमनो एवा, तेना संबोधनें हे मुनिवृषज ! तथा (नव के०) नवो उग्यो एवो जे (सारय के०) शारद एटले शरद् रुतु संबंधि (ससि के०) चंडमा तेनी पेरें (सकल के०) शोजावंत ले (आणण के०) आनन एटले मुख जेमनुं माटे हे नवशारदशशिसकलानन ! वली (विगयतमा के०) गयुं ले तम ते अज्ञानरूप अंधकार जेना थकी माटे हे विगततम ! तथा (विहुयरया के०) विधुत एटले गयुं ले फेडयुं ले निकाचित कर्मरूप रज जेणें माटे हे विधुतरज ! तथा (अजि के०) रागादिकें न जीताय माटे हे अजित ! तथा (गुणेहिं के०) बाह्य अन्यंतर एवा गुणोयें करी (उत्तम के०) श्रेष्ठ ले, (तेअ के०) तेज जेमनुं एवा माटे हे उत्तमतेज ! तथा (महामुणि के०) महातपस्वीउ जे महोटा

मुनिउं छे, तेउंथी पण (अमिअ के०) प्रमाण थइ न शके एवुं छे (बला के०) सामर्थ्य जेमनुं एटले अपरिमितबल छे जेमनुं एवा माटे हे महा मुन्यमितबल ! तथा ('विउलकुला के०) विपुल एटले विस्तीर्ण छे कुल एटले वंश जेमनो माटे हे विपुलकुल ! तथा (नवनय के०) संसारनुं नय, तेने (मूरण के०) नांजनार माटे हे नवनयमूरण ! तथा (जग सरणा के०) जगत्ना शरण एटले रक्षण करनार माटे हे जगच्छरण ! तमे (मम के०) मह्हारा पण (सरणं के०) रक्षण करनार छो, अथवा (अमम के०) ममत्वरहित छो माटे हे अमम ॥ १३ ॥ चित्रलेखा छंद.

हवे शांतिजिनने स्तवे छे.

देव दाणविंद चंद सूर वंद हठ तुठ जिठ परम ॥
लठ रूव धंत रूप्प पट्ट सेय सुद्ध निद्ध धवल ॥
दंत पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर ॥
दित्त तेअ वंद धेअ सव्व लोअ नाविअ प्पनाव
णेअ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥

अर्थः–(देव के०) सुर, (दाणव के०) असुर, तेना (इंद के०) इंड्र, तथा (चंद के०) चंड्रमा अने (सूर के०) सूर्य, तेमने (वंद के०) वंद्य मान छे पग जेना, तथा (हठ के०) आरोग्यवंत (तुठ के०) प्रमोदवंत (जिठ के०) प्रशंसा करवा योग्य (परमलठ के०) अत्यंत कांतियुक्त छे (रूव के०) रूप जेमनुं, तथा (धंत के०) धमेलुं एवुं (रूप्प के०) रूपुं, तेनो (पट्ट के०) पाटो, तेनी पेरें (सेय के०) घन (सुद्ध के०) निर्मल (निद्ध के०) स्निग्ध अरूक्ष एवी (धवल के०) उज्ज्वल छे (दंतपंति के०) दांतनी पंक्ति जेमनी, तथा (सत्ति के०) शक्ति ते पराक्रम जो सर्व देवता एकठा मले, तो पण परमेश्वरनी पगनी टचली आंगुली चलावी न शके, अथवा मेरु पर्वतने टचली आंगुलीयें करी उपाडे, एटली शक्ति छे, (कित्ति के०) कीर्त्ति छे समुद्रांत जेहनी (मुत्ति के०) मुक्ति ते निर्लोभता (जुत्ति के०) युक्ति ते न्यायोपेत वचन, (गुत्ति के०) गुप्ति ते त्रण प्रसिद्ध छे, तेणें करीने (पवर के०) श्रेष्ठ छे तथा (दित्ततेअ के०) दीप्त छे तेजनुं (वंद के०)

वृंद जेमनुं अथवा (वंदधेय के०) सुरेंद्रादिकें वांदवा योग्य डे गणधरादि कने ध्यान करवा योग्य डे, अथवा वांदवा योग्य जे महामुनिउ तेम ने ध्यान करवा योग्य स्मरण करवा योग्य एवा डे, तथा (सव के०) सर्व एवा जे (लोअ के०) लोक तेणें (नाविअ के०) नावित डे, अवबु ध्द डे, जाणेलो डे (प्पनाव के०) प्रनाव जेमनो तेणें करी (णेअ के०) ज्ञेय एटले जाणवा योग्य एवा (संति के०) हे श्रीशांतिनाथ! तमे (मे के०) मुजने (समाहिं के०) समाधिनें (पइस के०) प्रदिश एटले आपो ॥ १४ ॥ आ, नाराचक नामा छंद जाणवो ॥

हवे गाथायुग्में करीने अजितनाथने स्तवे डे.

विमल ससि कलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर
कराइरेअ तेअं ॥ तिअस वइ गणाइरेअ रूवं,
धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥

अर्थः-(विमल के०) निर्मल एवी (ससिकला के०) चंद्रमानी कला तेथकी (अइरेअ के०) अतिरेक ते अधिक डे (सोमं के०) सौम्यता जेनी तथा (वितिमिर के०) गयो डे मेघनो अंधकार जे थकी एवा (सूरकर के०) सूर्यनां किरणो ते थकी पण (अइरेअ के०) अधिक डे (तेअं के०) तेज जेनुं एवा डे तथा (तिअसवइ के०) त्रिदश जे देवता तेमना पति जे इंद्र तेमना (गण के०) समूह, तेथकी पण (अइरेअ के०) अधि क डे (रूवं के०) रूप जेनुं, जेमाटे सर्व देवता मली पोतानुं रूप एकत्र करी परमेश्वरनी टचली अंगुली पासें मूके, तोपण सुवर्ण अने त्रांबाना रूपमां जेटलो तफावत होय, तेटलो तफावत त्यां देखाय, एवुं तीर्थंक रनुं रूप वखाणयुं डे, तथा (धरणिधर के०) पर्वतो तेमांहे (प्पवर के०) प्रधान श्रेष्ठ एवो जे मेरु पर्वत, तेथकी पण (अइरेअ के०) अधिक डे (सारं के०) स्थैर्य एटले धैर्य जेमनुं एवा डे ॥ १५ ॥ आ, कुसुमलता नामा छंद जाणवो ॥ आ श्लोक तथा आवता श्लोकनो संबंध एकत्र डे ॥

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजि
अं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि

जिणंअजिअं ॥ १६ ॥भुअगपरिरंगिअं ॥

अर्थः—तथा (सत्ते के०) सत्वने विषे (सया के०) निरंतर (अजिअं के०)अजित छे एटले नहीं पराभवने पामेला एवा छे. चकार पादपूरणार्थे छे, तथा (अ के०) वली (सारीरे के०) देहसबंधि जे (बले के०) बल जे सामर्थ्य तेने विषे पण (अजिअं के०) बीजा पुरुषोथी न जीती शकाय एवा छे तथा (तव के०) बार प्रकारनुं तप (अ के०) वली (संजमे के०) सत्तर प्रकारनो संयम तेनो समूह तेणें करी पण (अजिअं के०) बीजा पुरुषोथी न जीताय एवा, (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ नामें (जिणं के०) जिनवर तेमनी (एस के०) आ (थुणामि के०) स्तुति करुं छुं ॥ १६ ॥ आ भुजगपरिरंगित नामा छंद जाणवो ॥

हवे विमलससी इत्यादिक कहेला अर्थने भंग्यंतरें करीने कहे छे.

सोम गुणेहिं पावइ न तं, नव सरय ससी ॥ तेअ गु
णेहिं पावइ न तं, नव सरय रवी ॥ रूव गुणेहिं पा
वइ न तं, तिअस गण वई ॥ सार गुणेहिं पावइ न
तं, धरणि धर वई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥

अर्थः—(सोमगुणेहिं के०) सौम्य जे शांतिगुण तेणें करीने (नव के०) नवो उदयमान थयेलो (सरय के०) शरद काल संबंधि जे (ससी के०) चंद्रमा ते पण (तं के०) ते श्रीअजितनाथना सौम्यता गुणने एटले सरखी सौम्यता प्रत्यें (नपावइ के०) पामी न शके, तथा (तेअगुणेहिं के०) तेज एटले शरीरनी कांतिना गुणेंकरीने (नवसरयरवी के०) नवो उगेलो एवो जे शरद् कालनो सूर्य, एटले शरद् ऋतुमां आकाश निर्मल होवाथी सूर्यनुं तेज श्रेष्ठ होय छे, तेपण (तं के०) ते श्रीअजितनाथना कांतिगुण प्रत्यें तुलनाने (नपावइ के०) पामी न शके. तथा (रूव गुणेहिं के०) रूपगुणेंकरीने (तिअसगणवई के०) त्रिदश जे देवता तेना गण जे समूह, तेना पति जे इंद्र, ते पण (तं के०) ते श्रीअजितनाथनुं अनुपमानरूपत्व छे माटे रूपगुणनी तुलना प्रत्यें (नपावइ के०) पामी न शके, तथा (सारगुणेहिं के०) स्थिरताना गुणोयें करीने (धरणिधर के०)

पर्वतो तेनो (वई के०) पति एवो जे कनकाचल एटले मेरुपर्वत, ते पण (तं के०) ते नगवंतना स्थिरता गुणें करीने तुलना प्रत्यें (नपावइ के०) पामी शके नहीं, अर्थात् ए पूर्वोक्त सर्व पदार्थो नगवंतना गुणनी बराबरी करी शकता नथी ॥ १७ ॥ आ, खिज्जितक नामा ढंद जाणवो.

हवे श्री शांतिनाथजीने स्तवे ढे.

तिब्ववर पवत्तयं तम रय रहियं, धीर जण थुअ च्चिअं
चुअ कलि कलुसं॥संति सुह प्पवत्तयं तिगरण पयउ,
संति महं महामुणिं सरण मुवणमे ॥१८॥ ललिअयं ॥

अर्थः–(तिब्ववर के०) श्रेष्ठ तीर्थ जे चतुर्विध संघ, अथवा प्रथम गणधर तेना (पवत्तयं के०) प्रवर्त्तक अथवा तीर्थमां वर एटले श्रेष्ठ एवो जे धर्म तेने तीर्थवर कहियें ते धर्मरूप तीर्थना प्रवर्त्तक एवा तथा (तम के०) अज्ञान (रय के०) रज ते बध्यमानकर्म, उपलक्षणथी बंधातुं एवुं जे कर्म, तेणें करी (रहियं के०) रहित एवा तथा (धीर के०) बुद्धियें करी शोने, तेने धीर कहियें, एवा (जण के०) जन जे ढे, तेमणें (थुअ के०) वाणीयें करी स्तुति कस्या अने (अच्चिअं के०) फूलें करी अर्चन कस्या एवा तथा (चुअ के०) गांम्युं ढे (कलि के०) वैर अथवा कलह तेनुं (कलुसं के०) कालुष्य एटले पाप जेणें एवा तथा (संति के०) मोक्ष, तेनुं जे (सुह के०) सुख तेने अर्थें (पवत्तयं के०) प्रवर्त्तता एवा जे साधुउ तेने दं एटले पालन करनार अथवा मोक्षसुखना प्रवर्त्तक एटले करनार एवा (महामुणिं के०) महोटा मुनि जे श्रीशांतिनाथजी ते प्रत्यें (तिगरण के०) मन, वचन अने काया तेणें करी (पयउ के०) पवित्र ढतो एवो (अहं के०) हुं (सरणं के०) शरण प्रत्यें (उवणमे के०) उपनमे एटले जाउं ढुं ॥ १८ ॥ आ ललितक नामा ढंद जाणवो ॥

हवे त्रण श्लोकें करी श्री अजितनाथजीने स्तवे ढे.

विणउणय सिरि रइ अंजलि रिसिगण संथुअं थि
मिअं ॥विबुहाहिव धण वइ नर वइ थुय महि अच्चि
अं बहुसो॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर समहि अ

सप्पभं तवसा॥ गयणंगण वियरण समुइअ चार
ण वंदिअं सिरसा ॥ १९॥ किसलयमाला ॥

अर्थः–(विणउणय के०) विनयें करी नत एटले नम्या एवा (सिरि के०) मस्तक तेने विषे (रइ के०) रची बे जोडी बे (अंजलि के०) करसंपुट जेणें एवा (रिसिगण के०) ऋषिउना समूह तेमणें (संथुअं के०) रूडे प्रकारें स्तुति करी बे जेमनी एवा तथा (थिमिअं के०) स्तिमित एटले तरंग रहित एवो जे समुड तेनी पेरें निश्चलबे, कारण के कर्मकृत उंच नीच पणानो अजाव बे. तथा (विबुहाहिव के०) विबुधाधिप एटले विबुध जे देवता तेमना अधिप जे इंडो तथा (धणवइ के०) धनपति जे धनद कुबेर लोकपाल,उपलक्षणथी बीजा पण सर्व लोकपाल जे बे, तेमणें तथा (नरवइ के०) नरपति जे राजाउ चक्रवर्त्ती तेमणें (बहुसो के०) घणी वार (थुय के०) वाणीयें करी स्तव्या, (महिअ के०) प्रणामादिकें करी पूजन कस्या एवा तथा (अच्चिअं के०) पुष्पादिकें करी अर्चित कस्या एटले पूज्या एवा तथा (तवसा के०) तपें करीने (अइरुग्गय के०) अचिरोजत एटले तत्कालनो उदय थयेलो एवो (सरय के०) शरद् रुतुनो (दिवायर के०) दिवाकर एटले सूर्य, ते थकी पण (समहिअ के०) समधिक एटले अत्यंत अधिक बे (सप्पभं के०) पोतानी प्रजा एटले कांति जेमनी एवा तथा (गयणंगण के०) गगनांगण जे आकाश तेने विषे (वियरण के०) विचरण एटले विचरवुं, चालवुं, तेणें करीने (समुइअ के०) समुदित एटले एकठा थयेला एवा (चारण के०) जंघाचारणादिक मुनिउ तेमणें (सिरसा के०) मस्तकें करीने (वंदिअं के०) वंदन कर्युं बे जेमने एवा बे ॥ १९ ॥ आ, किसलयमाला नामा बंद जाणवो ॥

असुर गरुल परिवंदिअं, किंनरोरग णमंसिअं ॥ देवको
डिसय संथुअं, समण संघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥

अर्थः–वली केहेवा बे ? तो के (असुर के०) असुर कुमार, (गरुल के०) सुवर्णकुमार, उपलक्षणथी बीजा पण सर्व निकायना जवनपति देवो जे बे, ते पण लेवा. तेमणें (परिवंदिअं के०) समस्त प्रकारें वंदन कस्या एवा

तथा (किन्नरोरग के०) किन्नर अने उरग जे व्यंतरविशेष, तेमणें (णमं सिअं के०) नमस्कार कर्यो छे जेमने एवा तथा (देव के०) वैमानिक देवो तेमना (कोडिसय के०) कोटिशत एटले शेंकडा गमे कोटिउ तेमणें (संथुअं के०) स्तुति करी छे जेमनी एवा, तथा (समणसंघ के०) यतिना संघ अथवा श्रमण एटले चतुर्विध संघ, तेणें (परिवंदिअं के०) परिसमंतात् एटले चोतरफ जावें करीने वंदन कर्युं छे जेमने एवा छे ॥ २० ॥ आ, सुमुखनामा छंद जाणवो ॥

अजयं अणहं, अरयं अरुयं ॥ अजियं अ
जिअं,पयउ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥

अर्थः—वली केहेवा छे ? तो के (अजयं के०) सात प्रकारना जयें करी रहित एवा, तथा (अणहं के०) अनघं एटले जेने अघ जे पाप, ते अ एटले नथी तेने अनघ कहियें एवा, तथा (अरयं के०) अरत एटले वैरागपणायें करीने विषयासक्त पणुं नथी अथवा अरत एटले मैथुन रहित छे एवा, तथा (अरुयं के०) अरुज एटले रोगरहित छे, तथा (अ जियं के०) बाह्य अने अभ्यंतर वैरीउयें जेने पराजव पमाड्या नथी एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ तेने (पयउ के०) सादर पणे (पणमे के०) प्रणाम करुं छुं ॥ २१ ॥ आ, विद्युद्विलसित् नामा छंद जाणवो ॥

हवे चार श्लोकें करीने. शांतिनाथजीने स्तवे छे.

आगया वर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं
हुलिअं ॥ ससंजमो अरण, खुजिअ लुलिअ चल कुंमलं
गय तिरीड सोहंत मउलि माला ॥ २२ ॥ वेहुउ ॥

अर्थः—(आगया के०) आगता एटले आव्या छे जे सुरसमुदाय श्री शांतिनाथने समीपें ते केवी रीतें आव्या छे ? तो के (वरविमाण के०) श्रेष्ठ विमान तथा (दिव्व के०) मनोहर एवा (कणगरह के०) कनकमय रथ, (तुरय के०) तुरंग तेना (पहकर के०) समूह तेना (सएहिं के०) शेंकडायें करीने (हुलिअं के०) शीघ्र उतावला वेगें तथा (ससंजम के०)

ससंभ्रम एटले सत्वर (उप्परण के०) आकाशथकी उतरवुं तेणें करीने (स्कुनिअ के०) कुंचित एटले संचलित बते (लुलिअ के०) लोलायमान अरहां परहां हालतां (चल के०) चंचल एवा (कुंमल के०) कानना आन्नरण तथा (अंगय के०) अंगद जे बाजुबंध (तिरीड के०) किरीट जे मुकुट तेणें करी (सोहंत के०) शोन्नायमान थइ एवी बे (मउलिमाला के०) मस्तकनी माला जेमनी एवा देवो बे ॥ २२ ॥ आ, वेष्टक नामा बंद जाणवो.

जं सुरसंघा सासुरसंघा, वेर विउत्ता नत्ति सुजुत्ता ॥
आयर नूसिअ संनम पिंमिअ, सुठु सुविम्हिअ
सव्व बलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण रूपविअ, नासुर
नूसण नासुरिअंगा ॥ गाय समोणय नत्ति वसागय,
पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥

अर्थः—(जं के०) जे नगवंतने समीपें (सुरसंघा के०) वैमानिक देवसमूह आव्या बे. ते केहेवा बे तो के (सासुरसंघा के०) असुर जे नवनपत्यादिक देव तेना संघ जे समूह तेणें करी सहित एवा बे, तथा (वेर विउत्ता के०) वैरविमुक्ता वैररहित बे तथा (नत्तिसुजुत्ता के०) सद्भक्तियें करी बहुमानें करीने सहित एवा तथा (आयर के०) बाह्योपचार रूप आदर तेणें करी (नूसिय के०) नूषित एटले शोन्नित तथा (संनम के०) उतावलें करी (पिंमिअ के०) एकठा मव्या एवा (सुठु के०) सुष्ठु एटले अतिशयें करी (सुविम्हिअ के०) सुविस्मित जेम होय, तेनी पेरें (सव्व के०) सर्व जे (बल के०) गजतुरंगमादिक कटक, तेनो (उघा के०) समूह तथा (उत्तम के०) श्रेष्ठ एवुं जे (कंचण के०) सुवर्ण अने (रयण के०) रत्न तेणें करीने (परूविअ के०) प्रकृष्टरूपयुक्त कर्यां एवा (नासुर के०) दीप्तिमंत जलहलता जे (नूसण के०) नुजबंध कटकादि आन्नरण तेणेंकरी (नासुरिय के०) देदीप्यमान बे (अंगा के०) अंगो जेमनां एवा, तथा (गाय के०) गात्र ते शरीर, तेणें करीने (समोणय के०) समोन्नत एटले समवनत ते सम्यक् प्रकारें न

भीजूत थया थका तथा (जत्तिवसागय के०) जक्तिने वशें आवेला एटले जक्तिनी आधीनताने प्राप्त थया थका (पंजलि के०) बे हाथ ललाटें लगाडीने (पेसिय के०) प्रेषित एटले कर्यो छे (सीसपणामा के०) मस्तकें करीने प्रणाम जेणें एवा छे ॥ २३॥ आ रत्नमाला नामा छंद जाणवो.

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पया
हिणं ॥ पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सन्न
वणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥

अर्थः-एवी रीतें (वंदिऊण के०) वंदन करीने (तो के०) तेवार पछी (य के०) वली (तिगुणमेव के०) त्रण वारज करी छे (पयाहिणं के०)प्रदक्षिणा जेने अर्थात् त्रण प्रदक्षिणायें करीने उपासित एवा देवो ते, (जिणं के०) श्रीशांतिजिन, ते प्रत्यें (य के०) वली (थोऊण के०) वाणीयें करी स्तुति करीने (पुणो के०) फरीने पोताना स्थानक प्रत्यें जवाना अवसरें (जिणं के०) श्रीशांतिजिन प्रत्यें (पणमिऊण के०) प्रणाम करीने एटले नमस्कार करीने (सुरासुरा के०) सुर अने असुर जे देवो छे, ते (पमुइआ के०) प्रमुदिता एटले हर्षित थया थका (सन्नवणाइं के०) पोताना जवन जे सौधर्मादिक ते प्रत्यें (तो के०) ते स्थानकथकी (गया के०) गता एटले जाता हवा ॥ २४ ॥ आ क्षिप्तकनामा छंद जाणवो.

तं महामुणि महंपि पंजली, राग दोस जय
मोह वज्जिअं ॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं, संति
मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥

अर्थः-(तं के०) ते (संतिं के०) श्रीशांतिजिन तेने (अहंपि के०) हुं पण (पंजली के०) प्रांजली एटले जोड्या छे हाथ जेणें एवो छतो (नमे के०) नमस्कार करुं छुं, ते शांतिजिन केहेवा छे? तो के (महामुणिं के०) महोटा मुनिउ छे शिष्य जेमना एवा छे तथा (राग के०) माया लोज रूप राग, अने (दोस के०) क्रोध, मान रूप द्वेष, (जय के०) जीति ते उद्वेग, (मोह के०) अज्ञान, तेणें करी (वज्जियं के०) वर्जित छे.

तथा (देवदाणवनरिंद के०) देव, दानव अने नरेंड्र, तेमणें (वंदिअं के०) वंदित छे एटले वांद्या एवा छे, अथवा देव, दानव अने नरेंड्र तथा तदाश्रित लोकोने (वंदि के०) बंदीखानारूप जे संसार, तेने (अं के०) दं एटले खंमन करे एवा छे तथा (उत्तम के०) प्रधान एवुं (महातवं के०) महोटुं छे तप जेमनुं एवा छे ॥ २५ ॥ आ, क्षिसक नामा छंद छे.

हवे अजितनाथने चार श्लोकें करीने स्तवे छे.

अंबरंतर विआरणिआहिं, ललिअ हंस वहु गामि णिआहिं ॥ पीणसोणिथणसालिणि आहिं, सकल कमल दल लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥

अर्थः—आ आगलना छंदोमां कहेशे एवा प्रकारनी देवांगनाउयें जेमनां चरणारविंदने वंदन कस्युं छे तेम छतां पण जेमनुं मन किंचित् पण विकारने पाम्युं नहीं, एवा जे श्रीअजितनाथ जगवान, तेमने हुं नमस्कार करुं छुं. हवे ते देवांगनाउ केहेवीउ छे? तो के (अंबरंतर के०) आकाशमार्गना अंतरालने विषे (विआरणिआहिं के०) विचरवानुं छे शील जेमनुं तथा (ललिअ के०) रमणीय एवी जे (हंसवहु के०) हंसवधू जे हंसी तेनी पेरें (गामिणिआहिं के०) गमन करवानुं छे शील जेमनुं, तथा (पीण के०) पुष्ट एवो जे (सोणि के०) कटिप्रदेश तथा (थण के०) स्तन ते उरोज तेणें करीने (सालिणिआहिं के०) शोजती एवी तथा (सकल के०) संपूर्ण (कमल के०) पद्म तेनां (दल के०) पत्रो, ते समान छे (लोअणिआहिं के०) लोचन जेमनां एवीउ छे॥ २६ ॥ आ दीपकछंद छे.

पीण निरंतर थणजर विणमिअ गायलआहिं ॥ मणि कंचण पसिढिल मेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वर खिंखिणि नेउर सतिलय वलय विनूसणिआहिं ॥ रइ कर चउर मणोहर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥

अर्थः—वली ते देवसुंदरीउ केहेवीउ छे? तो के (पीण के०) महो

टा अने कामुक पुरुषना हृदयने आल्हाद कारक एवा अने (निरंतर के०) निर्व्यवधान पणुं बे ए हेतु माटे निबिड गाढ एवा (थण के०) स्तन जे पयोधर तेनो (जर के०) जार तेणें करीने (विणमिश्र के०) विशेषेंकरीने नमेला बे (गायलआहिं के०) गात्रो जेमनां अर्थात् सुकुमारपणुं तथा तनुपणुं बे माटे लतावल्लीनी पेरें अत्यंत नमेलां बे शरीर जेमनां एवीउ, तथा (मणि के०) मणिउ माणको अने (कंचण के०) सुवर्ण, तेनी करेली एवी अने (पसिढिल के०) प्रकर्षे करी शिथिल एवी जे (मेहल के०) मेखला, तेणें करीने (सोहिअ के०) शोजित बे (सोणितडाहिं के०) कटिनो प्रदेश जेमनो एवीउ तथा (वर के०) श्रेष्ठ एवी (खिंखिणि के०) किंकिणी अने (नेउर के०) नेपुर वली (सतिलय के०) मनोहर तिलक तथा (वलय के०) कंकण, एवां जे आजूषण तेणें करीने (विजूसणिआहिं के०) विशेषें करीने सुशोजित एवीउ तथा (रइकर के०) रतिकर एटले प्रीति करनार एवुं तथा (चउरमणोहर के०) चतुर पुरुषना मनने हरण करनारुं एवुं (सुंदरदंसणिआहिं के०) सुंदर बे दर्शन जेमनुं एवी देवीउ बे ॥ २७ ॥ आ, चित्राक्षरानामा बंद जाणवो.

देव सुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिया य जस्स ते
सुविक्कमा कमा अप्पणो निडालएहिं मंमणोमण
पगारएहिं केहिं केहिंवि अवंग तिलय पत्तलेह ना
मएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं जत्ति संनिविठ वंद
णागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२॥नारायउ॥

अर्थः—(पायवंदिआहिंके०) पोताना शरीरने विषें पहेरेलां जूषणोनां अथवा शरीरनां पाद जे किरणो तेना वृंद ते समूह बे जेमने एवीउ देवांगनाउ बे तेमणें (वंदिया के०) वंदन कस्यां (च के०) पादपूरणार्थी बे. ते शुं वंदन कस्यां बे? तो के (जस्स के०) जे जगवंतना (ते के०) तौ एटले ते प्रसिद्ध एवां अने (सुविक्कमा के०) रूडुं बे पराक्रम जेनुं अथवा गति जेमनी एवां (कमा के०) चरणारविंद, तेने वंदन कस्यां. ते चरणारविंद शेणें करी वंदन कस्यां? तो के (अप्पणोनिडालएहिं के०) पोतानां लला

टोयें करीने. ते देवीउ केहेवीउ छे? तो के जेमना शरीरने विषे (मंडण के०) आभूषण तेनी (उडूण के०) रचना तेना (पगारएहिं के०) प्रकारो, ते (केहिंकेहिंवी के०) केहेवा केहेवा अपूर्व प्रकारो? ते कहे छे. (अवंग के०) अपांग जे नेत्र तेना प्रांतमां जे अंजननी रचना तथा (तिलय के०) तिलक एटले टीलां, (पत्तलेह के०) पत्रलेख ते कस्तूरिकादिकना शरीरने विषे करेलां जे टबकां इत्यादिक (नामएहिं के०) नाम छे जेनां एवा (चिल्लएहिं के०) देदीप्यमान मंडननी रचनायें करी (संगय के०) सहित छे (अंगआहिं के०) शरीरना अवयव जेमनां एवी देवांगनाउ ते (नत्तिसन्निविठ के०) नक्तियें करीने व्याप्त थकी (वंदणा के०) वंदन ने माटे (आगयाहिं के०) आवेलीउ एवीउ छे. ते देवीउयें (ते के०) ते पूर्वोक्त तमारां चरणारविंदने श्रद्धातिशयें करीने (पुणोपुणो के०) वारंवार (वंदिआ के०) वंदन करेलां एवां तमारा चरणारविंद (हुंति के०) छे. अर्थात् तमारा चरणारविंदने श्रद्धातिशयथकी (देवसुंदरीहिं के०) दवांगनाउ वारंवार वंदन करे छे ॥ २७ ॥ आ, नाराचक नामा छंद जाणवो.

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ मोहं ॥ धुय सव्व
किलेसं, पइउ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

अर्थः-(तं के०) ते पूर्वोक्त (जिणचंदं के०) जिनोमध्यें चंद्रमा समान एवा तथा (जिअमोहं के०) जीत्यो छे मोह एटले अज्ञान जेमणें एवा तथा (धुअ के०) टाल्या छे (सव्व के०) समग्र एवां जे कर्मजनित शारीरिक अने मानसिक (किलेसं के०) क्लेश जेमणें एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथनामा बीजा तीर्थंकर तेने (पयउ के०) प्रयत्न ते मन, वचन अने कायाना उद्यमें करी युक्त थको एवो (अहं के०) हुं पण (पणमामि के०) प्रणमन करुं छुं, एटले नमस्कार करुं छुं ॥ २९ ॥ आ, नंदितक नामा छंद जाणवो ॥

हवे गाथा युग्में करीने शांतिनाथने स्तवे छे.

थुअ वंदिअस्सा रिसी गण देव गणेहिं, तो देव व
हूहिं पयउ पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासण

यस्सा, जत्ति वसागय पिंमिअयाहिं देव वर छरसा
बहुयाहिं सुर वर रइ गुण पंमियआहिं ॥३०॥ जासुरयं ॥

अर्थः—श्रीशांतिनाथ जे तेनां चरणारविंदने देवनर्त्तकिउ जे ठे तेणें नृत्य करी वंदन कस्यां, तेने हुं पण नमस्कार करुं बुं. ते शांतिनाथ केहेवा ठे? तो के (रिसीगण के०) रुषिउना समूह तथा (देवगणेहिं के०) देवताउना समूह, तेणें (थुअवंदिअस्सा के०) स्तुति करेला अने वंदन करेला एवा अने (तो के०) तदनंतर (देववहूहिं के०) देववधू जे ठे तेमणें (पणमिअस्सा के०) प्रणाम करेला एवा (जस्सजगुत्तमसासणयस्सा के०) जेथकी जगत् मुक्ति पामवाने शक्तिमान् थाय ठे माटे उत्तम ठे शासन जेमनुं एवा ठे. हवे ते देवनर्त्तकीउ केहेवी ठे? तो के (जत्तिवसागय के०) जक्तिवशें करीने देवलोकथकी जे आववुं तेणें करीने (पिंमिअयाहिं के०) एकठी मलेली एवीयो अने (देववर के०) नर्त्तक वादक देवो अने नृत्यकुशल एवी (छरसा के०) अप्सराउ तेमना (बहुयाहिं के०) घणाउयें मलेली एवीउ अने (सुरवररइ के०) देवताउने जे थकी प्रीति थाय एवा (गुण के०) गुणोने विषे (पंमियआहिं के०) पंमित एटले माही एवीउ ठे ॥ ३० ॥ आ, जासुरकनामा ठंद जाणवो.

वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउरकरा जिराम सद्द
मीसए कए अ सुइ समाणणे अ सुद्द सज्ज गीअ
पाय जाल घंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलाव ने
उराजिराम सद्द मीसए कए अ देव नट्टिआहिं हा
व जाव विप्नम प्पगारएहिं ॥ नच्चिऊण अंग हार
एहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलो
य सव्व सत्त संति कारयं ॥ पसंत सव्व पाव दोसमे
स हं नमामि संति मुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥

अर्थः—हवे ते देवनर्त्तकीउयें केवा प्रकारनां गीत, नृत्य करते ठते प्रजुना चरणनुं वंदन कस्युं? ते कहे ठे. (वंससद्द के०) वांसनो शब्द एटले

वेणुध्वनि, (तंति के०) वीणा, (ताल के०) चपटी, पटहादिक तेणें (मेलि ए के०) मले, एटले एकीकृत थये बते (च के०) वली (तिउक्खर के०) त्रिपुष्करनामा वाजित्रविशेष तेना (अभिराम के०) मनोहर एवा (सद्द के०) शब्दो तेणें करीने (मिसए के०) मिश्रित (कए के०) करे बते, तथा वली (सुइ के०) श्रुति जे कान तेनुं (समाणणे के०) समानन एटले ते सर्व शब्द सांभलवाने विषे काननुं समान करवुं, ते करे थके (सुद्ध के०) अनुनासिकादि दोष रहित एवो (सज्ज के०) षड्ज ते मयूर, केका, शंखादि ध्वनिविशेषें करीने अथवा सज्ज एटले अधिक गुण युक्त एवुं जे (गीय के०) गीत तेणें करीने सहित एवी जे (पायजाल के०) पगने विषे जालना आकार वाली एवी (घंटिआहिं के०) घंटिका एटले घूघरीउ तेणें करीने उपलक्षित बते तथा (वलय के०) सोनानां वलियां, कंकण, (मेहला के०) मेखला ते केडनुं आभरण, (कलाव के०) अलंकार विशेष, (नेउर के०) नेफुर तेमनो (अभिराम के०) मनोहर एवो जे (सद्द के०) शब्द तेणें करी (मिसएकए के०) मिश्रित करे बते, (अ के०) वली (हाव के०) बहु कामविकार, (भाव के०) अल्पविकार अभिप्राय, (विब्भम के०) विभ्रम एटले विलास तेमना (पगारएहिं के०) प्रकारो बे जेमने विषे एवा (अंगहारएहिं के०) भला अंगना विक्षेपें करीने (देवनट्टिआहिं के०) देवनर्त्तकी जे देवांगनाउ तेमणें पूर्वोक्त प्रकारें (नच्चिकण के०) नृत्यें करीने, (सुविक्कमा के०) सुविक्रमा एटले उत्तम जेमनुं पराक्रम बे एवा (जस्स के०) जे श्रीशांतिनाथजीना (ते के०) ते जगद्विदित पराक्रमें करी सहित एवा (कमा के०) चरणो तेने (वंदिआय के०) वंदन कस्यां बे. एमां चकार पादपूरणार्थ बे. एवा (तयं के०) ते (तिलोय के०) त्रिभुवनना (सवसत्त के०) सर्व सत्त्व एटले प्राणीउ तेमने (संतिकारयं के०) शांतिना करनार एवा अने (पसंत के०) प्रशांत थया बे (सवपावदोस के०) सर्व पाप तथा रागादिक दोष जे थकी एवा (उत्तमं के०) उत्तम जे (संति के०) श्रीशांति नामा (जिणं के०) जिन ते प्रत्यें (एस के०) आ प्रत्यक्ष, (हं के०) हुं (नमामि के०) नमस्कार करुं बुं ॥ ३१ ॥ आ, नाराचक नामा बंद जाणवो.

हवे त्रण श्लोकेंकरी अजितनाथ अने शांतिनाथने . स्तवे छे.

छत्त चामर पडाग जूव जव मंमिआ,ऊय वर मगर
तुरय सिरिवछ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसा
गय सोहिआ,सछिअ वसह सीह रहचक्कवरंकिया ॥
पाठांतर ॥ सिरिवछ सुलंछणा ॥ ३१ ॥ ललिययं ॥

अर्थः–(छत्त के०) छत्र, (चामर के०) चामर, (पडाग के०) पताका, (जूव के०) यूप, (जव के०) यव, एवां लक्षणोयें करीने (मंमिआ के०) मंमित सुशोभित एवा तथा (ऊयवर के०) सिंहादि रूपोपलक्षित ध्वजवर, (मगर के०) मगरमछ, जलजंतु, (तुरय के०) अश्व, (सिरिवछ के०) श्रीवत्स, ते उत्तम पुरुषोना वक्षस्थलनां होय छे, अने पगमां पण थवानो संभव छे (सुलंछणा के०) ते सर्व शोभायमान छे लांछन जेमने एवा तथा (दीव के०) द्वीप ते जंबूद्वीपादिक, (समुद्द के०) समुद्र, ते लवणोदधि प्रमुख, (मंदर के०) मेरु पर्वत अथवा प्रासाद पण जाणवो. (दिसागय के०) दिग्गज, जे प्रधान हस्ती, एवा लक्षणें करी एटले आकारें करीने (सोहिआ के०) शोभित एवा छे तथा (सछिअ के०) स्वस्तिक, (वसह के०) वृषभ, (सीह के०) सिंह, (रह के०) रथ (चक्क के०) चक्र (वर के०) श्रेष्ठ तेणेंकरी (अंकिया के०) अंकित एटले चिह्नित एवा. पाठांतरें (सिरि के०) लक्ष्मी, (वछ के०) वृक्ष, ते कल्पवृक्षादिक तेना (सुलंछणा के०) भलां शोभन लांछनो छे एटले लक्षणो छे, श्रीशांतिनाथना हाथ पगादिक अंगोने विषे एवा छे ॥ ३१ ॥ आ, ललितकनामा छंद जाणवो.

सहाव लठा सम प्पइठा, अदोस डुठा गुणेहिं जिठा ॥
पसाय सिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा
॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥

अर्थः–वली केहेवा छे ? तो के (सहाव के०) स्वभावें करीने (लठा के०) ललित एटले शोभायमान छे, तथा (समप्पइठा के०) समा ते अस्थपुट एटले विषमोन्नत रहित एवी भूमिकाने विषे प्रतिष्ठित एटले रह्या छे अथवा असम एटले निरुपम छे प्रतिष्ठा जेमनी एवा छे तथा (अदोसडुठा

के०) रागादिक दोषें करी अडुष्ट ठे एटले रागादिक विकारें करी रहित ठे तथा (गुणेहिं के०) कूर्मोन्नतत्व रक्तादिक जे गुण, तेणें करीने (जिहा के०) ज्येष्ठ एटले महोटा ठे अथवा गुण जे सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षण तेणें करीने ज्येष्ठ एटले वृद्ध ठे तथा (पसाय के०) प्रसाद जे अनुग्रह अथवा रागादिकनो क्षय तेथी जे निर्मल पणुं तेणें करी (सिहा के०) श्रेष्ठ ठे तथा (तवेणपुहा के०) बार प्रकारना तपें करीने पुष्ट ठे तथा (सिरीहिं के०) श्री जे लक्ष्मी तेणें करीने (इहा के०) इष्ट ठे अथवा लक्ष्मी नामक देवीयें जेने पूज्या ठे एवा ठे तथा (रिसीहिं के०) ऋषि जे मुनियो, तेमणें (जुहा के०) जुष्टा एटले निरंतर सेव्या ठे, जेमने एवा ठे ॥ ३३ ॥ आ वनवासिका नामा ठंद जाणवो.

ते तवेण धुय सव्व पावया, सव्व लोअ हिअ मूल पावया ॥ संथुया अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥

अर्थः—(ते के०) ते पूर्वें वर्णन कस्या एवा तथा (तवेण के०) तपें करीने (धुय के०) टाल्युं ठे अथवा जस्मीजूत कर्युं ठे (सव्व के०) सर्व एवुं जे शुजाशुज कर्म रूप (पावया के०) पाप जेमणें एवा, वली केहेवा ठे ? तो के (सव्वलोअ के०) सर्व लोक तेने (हिअ के०) हित कारक एवो जे मोक्ष, तेनुं (मूल के०) मूल कारण जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेने (पावया के०) प्रापका एटले पमाडनारा ठे, तथा जेनें (संथुया के०) पूर्वोक्त प्रकारें शं, एटले सुख तेने अर्थें स्तवन कर्युं ठे जेमनुं एवा जे (अजिअसंतिपायया के०) श्री अजितशांतिपाद अहीं पाद शब्द पूज्यवाचक ठे ते पूज्य, (मे के०) मने (सिवसुहाणदायया के०) शिव सुखना देनारा एवा (हुंतु के०) थाउ ॥ ३४ ॥ आ, अपरांतिका नामा ठंद जाणवो ॥

एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति जिण जुअलं ॥ ववगय कम्म रय मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥

अर्थः-(एवं के०) ए प्रकारें (तवबलविउलं के०) तपोबलें करीने विपुल विस्तीर्ण विशाल एवुं अने (ववगय के०) गयुं छे (कम्मरयमलं के०) कर्मरूप रज अने मल जेमनें एवुं तथा (सासयं के०) शाश्वती एवी तथा (विउलं के०) विपुल विस्तीर्ण छे सुख जेनें विषे एवी (गइं के०) गति जे तेने (गयं के०) गत एटले प्राप्त थयुं, एवुं (अजिअ संति जिणजुअलं के०) अजितशांतिजिनयुगल एटले बीजा अने सोलमा तीर्थंकरनुं युगल तेने (मए के०) में, (थुअं के०) स्तुति कर्युं छे ॥ ॥ ३५ ॥ आ, गाथा नामक छंद जाणवो.

तं बहु गुणप्पसायं, मुरक सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ
मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

अर्थः-वली (तं के०) ते पूर्वोक्त जिनयुगल केहेवुं छे ? तो के (बहु गुणप्पसायं के०) ज्ञानादिक अनेक गुणोनो छे प्रसाद जेमने एवुं तथा (परमेण के०) परम उत्कृष्ट एवा (मुरकसुहेण के०) मोक्षसुख जे तेणें करी (अविसायं के०) नथी विषाद जेमने एवुं जिनयुगल, ते (मे के०) मा ह्मारा (विसायं के०) विषाद जे छे तेने (नासेउ के०) नाशने (कुणउ के०) करों, (अ के०) वली (परिसावि के०) आ प्रस्तुत स्तव सांजलनारी जे विद्वानोनी सजा ते पण मह्मारी उपर गुणनुं ग्रहण अने दोषनो त्याग ते रूप, (पसायं के०) प्रसादने करो ॥ ३६ ॥ आ पण गाथा छंद जाणवो.

हवे स्तवनना अंतमां मंगल शब्दोयें करीने प्रणिधान कहे छे.

तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेण मजिनंदिं ॥ परिसावि
य सुह नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥

अर्थः-(तं के०) ते अजितशांतियुगल ते, मने (मोएउ के०) मोद एटले हर्ष तेने द्यो, आपो अने सर्व लोकोने (नंदिं के०) समाधिने (पावेउ के०) प्राप्त करो. (य के०) वली आ स्तवन करनार जे (नंदिसेण के०) नंदिषेण कवि, तेने (अजिनंदिं के०) सर्व प्रकारें समृद्धि सानंदने पमाडो, तथा (परिसावि के०) आ स्तवन सांजलनार जे श्रोता जनोनी पर्षदा,

तेने पण (सुहनंदिं के०) सुख वृद्धिने (दिसउ के०) आपो. (य के०) वली (मम के०) मुजने (संजमे के०) सत्तर प्रकारनो जे संयम तेने विषे (नंदिं के०) आनंदने (दिसउ के०) आपो ॥ ३७ ॥ आ गाथा छंद छे.

अहींआं केटला एक वृद्ध पुरुष एम कहे छे के श्रीशत्रुंजयनी गुफायें श्री अजित, शांति चोमासुं रह्या हता, पछी ते बन्ने तीर्थकरना पूर्वाभिमुख देरां थयां, तिहां एकदा श्रीनेमिनाथना गणधर, श्रीनंदिषेण सूरि तीर्थयात्रायें आव्या थका श्रीअजित शांतिस्तवननी रचना कीधी, ते अहीं सुधी जाणवी.

हवे एना माहात्म्यनी आगली गाथाउ अनेरा बहुश्रुतें
कीधी छे, ते वखाणीयें छैयें.

पक्खिअ चाउम्मासे, संवछरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सो
अव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥

अर्थः—(पक्खिअ के०) पाखीना पडिक्कमणाने विषे तथा (चाउम्मासे के०) चोमासाना पडिक्कमणाने विषे तथा (संवछरिए के०) सांवत्सरीना पडिक्कमणानी रात्रिनें विषे (अवस्स के०) निश्चें (भणिअव्वो के०) भणवो, ते एक जणें भणेलो एवो जे आ स्तव, तेने (सव्वेहिं के०) सर्व संघें (सोअव्वो के०) सांभलवो कारण के सर्व जनो जो एकज अवसरें एकठा पाठ भणे तो तेमां कोलाहल थवानो संभव छे माटे एकज जणें भणवो अने बीजा सर्व संघजनोएं सांभलवो. (एसो के०) ए स्तव जे छे ते, (उवसग्गनिवारणो के०) उपसर्ग जे विघ्न, तेनो निवारण करनार छे ॥ ३८ ॥ गाथा छंद.

जो पढइ जो अ निसुणइ, उभउ कालंपि अजिअ
संति थयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विना
संति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥

अर्थः—(जो के०) जे कोइ पुरुष, (अजिअसंतिथअं के०) श्रीअजितनाथ अने श्रीशांतिनाथ तेना स्तवनने (उभउकालंपि के०) प्रातःकाल तथा सायंकाल अने अपि शब्द थकी त्रणे काल लेवा तेने विषे (पढइ के०) भणे छे, तथा (जोअ के०) जे वली (निसुणइ के०) निरंतर श्रवण करे छे, तो (तस्स के०) ते पठन करनार अने सांभलनार पुरुषने

(रोगाः के०) रोग जे छे ते, (नहुंहुंति के०) निश्चें होता नथी अने(पु वुप्पन्ना के०) पूर्वोत्पन्न थयेला एवा जे रोगो ते पण (विनासंति के०) विशेषें करीने नाश पामे छे ॥ ३९ ॥ आ पण गाथा छंद जाणवो.

जइ इच्छह परम पयं, अहवा कित्तिं सुविछडं नुवणे ॥
ता तेलुक्कुद्धरणे, जिण वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥

अर्थः-(जइ के०) यदि एटले जो (परमपयं के०) परमपद जे मोक्ष, तेनी (इच्छह के०) इच्छा करो छो, (अहवा के०) अथवा (नुवणे के०) त्रण नुवनने विषे (सुविछडं के०) सुविस्तृत एटले विस्तार पामेली एवी (कित्तिं के०) कीर्त्ति, तेनी इच्छा करो छो, (ता के०) तो (तेलुक्कुद्धरणे के०) त्रण लोकना उद्धार करनारां एवां (जिणवयणे के०) जिनवचनो जे छे, तेने विषे (आयरं के०) आदरसत्कार तेने (कुणह के०) करो ॥ ४० ॥ आ, गाथा छंद छे ॥ इति अजितशांतिस्तवसमाप्तः ॥

॥ अथ ॥

॥ नक्तामरनामक सप्तम स्मरण प्रारंनः ॥

तेमां प्रथम बे काव्यें करीनें देवतानुं नमस्कारात्मक मंगल करे छे.

नक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रनाणा, मुद्योतकं द
लितपापतमोवितानं ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन
पादयुगं युगादा, वालंबनं नवजले पततां जना
नाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबो
धा, द्रुनूतबुद्धिपटुनिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रै
र्जगत्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि
तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥ २ ॥

अर्थः-(नक्तामर के०) नक्तिमंत एवा अमर जे देवताउ तेना (प्रणत के०) नमेला एवा जे (मौलि के०) मुकुट, तेने विषे रहेला जे (मणि के०) मणिउ, तेनी (प्रनाणां के०) कांतिउने (उद्योतकं के०) प्रका

श करनारुं एवुं, तथा (दलित के०) दलन करी नाख्यो छे (पाप के०) पापरूप जे (तमो के०) अंधकार तेनो (वितानं के०) समूह जेणें एवुं तथा (नवजले के०) संसारसमुड्ने विषे (पततां के०) पडेला एवा (जनानां के०) नव्य जनोने (युगादौ के०) युगने आदें एटले त्रीजा आरा ना अंतमां (आलंबनं के०) आलंबन ते आधारनूत आश्रयरूप एवुं, (जिनपादयुगं के०) श्री तीर्थंकरनुं पादयुग. तेने मन, वचन तथा काया यें करी (सम्यक् के०) रूडे प्रकारें (प्रणम्य के०) नमस्कार करीने ॥ १ ॥ (यः के०) जे नगवान् ते, (सकल के०) समस्त एवुं (वाङ्मय के०) शास्त्र तेनुं (तत्त्व के०) रहस्य तेना (बोधात् के०) जाणवाथकी (उ नूत के०) उत्पन्न थइ एवी जे निपुण (बुद्धि के०) बुद्धि तेणें करी (पटुनिः के०) कुशल एवा (सुरलोकनाथैः के०) देवलोकना नाथ जे इंड्रो, तेणें (जगत्त्रितय के०) त्रण जगतना जे प्राणी तेनां (चित्तहरैः के०) चित्त ने हरण करनारां एवां तथा (उदारैः के०) अर्थथकी अने शब्द थकी उ दार एवां निर्दोष (स्तोत्रैः के०) स्तोत्रोयें करीने (संस्तुतः के०) स्तुति करेला छे. (तं के०) ते चोवीश जिननी अपेक्षायें सर्व जिनोमां (प्रथमं के०) आद्य एवा (जिनेंड्रं के०) सामान्य केवलीमां इंड्र सरिखा श्री रुषन स्वामी तेने (अहमपि के०) हुं पण (किल के०) निश्चें करी (स्तोष्ये के०) स्तुति करीश ॥ २ ॥ आ, सर्व स्तोत्रना वसंततिलका छंद छे.

हवे स्तोत्रकर्त्ता श्री मानतुंगाचार्य, पोताना उद्धतपणानो त्याग करे छे.

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्य
तमतिर्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय जलसंस्थि
तमिंडुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥ ३ ॥

अर्थः—(विबुध के०) देवताउ अथवा पंमितो तेणें (अर्चित के०) अ र्चन एटले पूजन करेलुं एवुं छे (पादपीठ के०) पदासन एटले पग राख वानुं आसन जेनुं, तेना संबोधनने विषे हे विबुधार्चितपादपीठ ! (बुद्ध्या विनापि के०) बुद्धिविना पण एटले पांमित्य विना पण (विगतत्रपः के०) विशेषें करीने गइ छे त्रपा एटले लज्जा जेनी अर्थात् अशक्य वस्तुने विषे

प्रवर्त्तनथकी गतलज्ज छतो (स्तोतुं के०) स्तुति करवानी (समुद्यतमतिः के०) रूडे प्रकारें प्रयत्नवती करेली छे बुद्धि जेनी अर्थात् उद्यमवती थइ छे बुद्धि जेनी एवो (अहं के०) हुं छुं. अहीं दृष्टांत कहे छे. जेम के (जलसंस्थितं के०) जलने विषे रूडे प्रकारें रह्युं एटले प्रतिबिंब थयेलुं एवुं जे (इंदुबिंबं के०) चंद्रमानुं प्रतिबिंब तेने (सहसा के०) तत्काल (ग्रहीतुं के०) ग्रहण करवानें (बालंविहाय के०) बालक विना एटले बालक मूकीने (अन्यः के०) बीजो (कः के०) कयो (जनः के०) मनुष्य, (इच्छति के०) इच्छा करे छे ? अर्थात् बालक विना बीजो कोइ पण बुद्धिमान् जन, जल प्रतिबिंबित चंद्रने ग्रहण करवाने इच्छतो नथी, तेम हुं पण तमारुं स्तोत्र करवाने बालकनीपेरें अशक्य छतो पण स्तुति करवाने अभिलाष करुं छुं. माटे मने गतलज्ज बालकज जाणवो ॥ ३॥

हवे जगवाननी स्तुति करवामां बीजाउनी दुष्करता देखाडे छे.

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः
सुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धत
नक्रचक्रं, कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं जुजाभ्यां ॥४॥

अर्थः—(गुणसमुद्र के०) गुणसमुद्र एटले हे गुणरत्नाकर ! (ते के०) तमारा (शशांककांतान् के०) शशांक जे चंद्रमा, तेना सरखा मनोहर उज्ज्वल एवा (गुणान् के०) गुणो जे छे तेने (वक्तुं के०) कहेवाने वर्णन करवाने (बुद्ध्या के०) बुद्धियें करीने (सुरगुरुप्रतिमोपि के०) बृहस्पति समान एवो पण (कः के०) कयो पुरुष, (क्षमः के०) समर्थ थाय छे? अर्थात् कोई पण समर्थ थतो नथी. अहीं दृष्टांत कहे छे के जेम (कल्पांतकाल के०) प्रलयकाल ते संहारकाल, तेनो (पवन के०) वायु, तेणें करी (उद्धत के०) उडया एटले उछली रहेला एवा छे (नक्रचक्रं के०) नक्र चक्र एटले मगरमच्छना समूह जेने विषे एवो जे (अंबुनिधिं के०) समुद्र तेने (भुजाभ्यां के०) बे हाथें करीने (अलं के०) परिपूर्ण (तरीतुं के०) तरवाने (कः के०) कोण (वा के०) वा ते दृष्टांतना अर्थ मां छे (क्षमः के०) समर्थ थाय? अर्थात् एतादृश समुद्रने बे हाथें करी तरवाने कोइ पण समर्थ थ

तो नथी. तेम तमारी स्तुति करवाने बुद्धियें करी बृहस्पति समान पुरुष पण समर्थ थतो नथी ॥ ४ ॥

हवे स्तवन रचनाने विषे प्रयत्न करवानुं कारण कहे छे.

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं वि
गतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो
मृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थं ॥५॥

अर्थः–(मुनि के०) मुनि जे मुमुक्षु तेमना (ईश के०) स्वामी, तेनें मुनीश कहियें तेना संबोधनने विषे हे मुनीश ! हुं तमारुं स्तोत्र करवाने असमर्थ छुं. (तथापि के०) तो पण (तव के०) तमारा (भक्तिवशात् के०) भक्तिना वश थकी एटलें भक्तिवशपणायें करी अस्वतंत्र छतो (विगतशक्तिरपि के०) गइ छे शक्ति जेनी अर्थात् स्तोत्र करवामां क्षीण छे शक्ति जेनी एवो छतो पण (सः के०) ते पूर्वोक्त बुद्धिवृद्धिवर्जित एवो (अहं के०) हुं मानतुंगनामा आचार्य, ते (स्तवं के०) तमारी स्तुति तेने (कर्तुं के०) करवाने (प्रवृत्तः के०) प्रवृत्त थयो छुं. त्यां उपमान केहे छे. जेम (मृगः के०) हरिण ते, (प्रीत्या के०) स्नेहें करीनें (आत्मवीर्यं के०) पोतानुं बल तेने (अविचार्य के०) अणविचारीने (निजशिशोः के०) पोताना बालकना (परिपालनार्थं के०) रक्षण करवाने अर्थें (मृगेंद्रं के०) सिंहप्रत्यें (किं के०) शुं (नाभ्येति के०) सन्मुख युद्ध माटे न जाय ? अर्थात् जायज छे. तेम कवि कहे छे के हुं पण तमारी भक्तिवशें करीने स्तुति करवाना सामर्थ्यनें न विचारतो थको पण तमारी स्तुति करवाने प्रवर्त्तेलो छुं ॥ ५ ॥

हवे कवि स्तोत्र करवाने असमर्थ छतो पण स्तोत्र करवाने
वाचालपणानुं कारण कहे छे.

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव
मुखरीकुरुते बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किल मधौ
मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥६॥

अर्थः–(अल्पश्रुतं के०) अल्प छे श्रुत एटले शास्त्रज्ञान, अवधारण जेनुं ए कारण माटे (श्रुतवतां के०) श्रुतज्ञानवंत एवा पुरुषो एटले बहुश्रुत जनो तेमनें (परिहासधाम के०) हास्य करवानुं स्थानक रूप एवो (मा के०) मने (त्वद्भक्तिरेव के०) तमारी नक्तिज (बलात् के०) बलात्कार थकी स्तोत्र करवाने (मुखरीकुरुते के०) वाचाल करे छे. त्यां दृष्टांत कहे छे. (यत् के०) जे कारण माटे (मधौ के०) चैत्र मासने विषे (कोकिलः के०) कोकिल जे छे. ते (किल के०) सत्य (मधुरं के०) मनोज्ञमधुर स्वरने (विरौति के०) जल्पे छे, बोले छे (तत् के०) ते बोलवाने (चारुचूतकलिका के०) मनोहर एवी आम्रकलिका तेनो (निकर के०) समूह, तेज (एक हेतुः के०) एक कारण छे, तेम; मने तमारी नक्तिज एक कारण. छे ॥ ६ ॥

हवे स्तवन रचनामां जे गुण छे, ते कहे छे.

त्वत्संस्तवेन नवसंततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षय
मुपैति शरीरनाजां ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशे
षमाशु, सूर्यांशुनिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥

अर्थः–हे जिन! (शरीरनाजां के०) देहने नजनारा एटले देहधारी जे जीवो छे, तेनुं (नवसंततिसन्निबद्धं के०) नव जे जन्म, जरा अने मरण रूप संसार तेनी परंपरायें करी बंधायेलुं एवुं जे (पापं के०) पाप ते, (त्वत्संस्तवेन के०) तमारा रूडा संस्तवनें करीने (क्षणात् के०) घडीना छठा नागें करीने (क्षयं के०) क्षयने (उपैति के०) पामे छे. कोनी पेरें पामे छे? तो के (आक्रांतलोकं के०) लोकमां व्यापि रहेलो एवो अने (अलि के०) नमराना सरखो (नीलं के०) श्याम कालो अने (शार्वरं के०) अंधारी रात्रि थकी उत्पन्न थयो एवो जे (अशेषं के०) समस्त (अंधकारं के०) अंधकार जे छे ते, (आशु के०) शीघ्र (इव के०) जेम (सूर्यांशु के०) सूर्यना अंशु जे किरणो तेनो जे प्रकाश तेणें करीने (निन्नं के०) नाश पामेलो होय छे, तेनी पेरें जाणी लेवुं. एटले तिमिर नाशमां जेम सूर्यप्रकाश छे, तेम पापक्षयमां तमारो स्तव छे ॥ ७ ॥

हवे स्तवनारंन सामर्थ्यने दृढ करतो उतो कहे डे.

मत्वेत्तिं नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते त
नुधियापि तव प्रन्नावात् ॥ चेतोहरिष्यति सतां
नलिनीदलेषु,मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंङः॥८॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ ! (इति के०) ए पूर्वोक्त प्रकारें पापनुं हरण करनारा एवा आ स्तोत्रने (मत्वा के०) मानीने (तनुधियापि के०) मंदबुद्धिवालो एवो पण (मया के०) हुं जे बुं, तेणें (तवके०)तमारुं (इदं के०) आ (संस्तवनं के०) स्तवन जे डे, ते करवाने (आरन्य ते के०) आरंन कराय डे. ते (तव के०) तमारा (प्रन्नावात् के०) प्रन्नावथकी (सतां के०) संत पुरुषो एटले सज्जन पुरुषोनां (चेतः के०) चित्तने (हरिष्यति के०) हरण करशे, परंतु खल पुरुषोनां चित्तने हरण नहीं करे, एवी सूचना करवाने अर्थे (सतां) ए पदग्रहण कर्युं डे. तिहां उपमान कहे डे, ते जेम केः–(नलिनीदलेषु के०) कमल पत्रने विषे पडेलो एवो जे (उदबिंङः के०) उदकनो बिंङ, ते कमलना प्रन्नावें करीने (मुक्ताफलद्युति के०) मुक्ताफलनी द्युति एटले कांति तेना जेवी शोन्नाने (ननु के०) निश्चें (उपैति के०) पामे डे, तेम तमारा प्रन्नावथी आ महारुं करेलुं जे स्तवन, ते सत्कविविरंचित काव्यनी डायाने पामशे ॥ ८ ॥

हवे सर्वज्ञ एवा नगवाननुं स्तवन, ते तो सकलदोष हरणकारक हो, परंतु ते श्रीसर्वज्ञसंबंधिनी कथा पण सकलङरित हरे डे, ते कहे डे.

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां ङरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते
प्रन्नैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशन्नांजि ॥ ए ॥

अर्थः– हे देव ! (अस्त के०) नाश पाम्या डे (समस्तदोषं के०) समग्र दोष जे थकी एवुं (तव के०) तमारुं (स्तवनं के०) स्तवन जे डे ते, (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (त्वत्संकथापि के०) तमारी मात्र आ नव तथा परनवना चरित्रनी कथा जे करवी, ते पण (जगतां के०) जग

त्वासी लोकोनां (डुरितानि के०) पाप जे बे, तेमने (हंति के०) हणे बे, तिहां उपमा कहे बे, (सहस्त्रकिरणः के०) सूर्य जें बे, ते तो (दूरे के०) दूर रहो, परंतु तेनी (प्रनैव के०) प्रना जे बे, तेज (पद्माकरेषु के०) पद्मना आकर एटले समूह बे जेमां एवां सरोवरादिक तेने विषे रहे लां एवां जे (जलजानि के०) कमलो तेने (विकाशनांजि के०) विकस्वर एटले प्रकाशने नजनारां (कुरुते के०) करे बे, अर्थात् सूर्योदय थयाथी पूर्वें प्रवर्त्तनारी एवी सूर्यनी प्रनाज जेवारें कमलने विकस्वर करनारी थाय बे, तेवारें सूर्य पोतें तेनो विकाश करे, तेमां तो शुंज केहेवुं? तेम अहींआं पण नगवंतनी कथाज जेवारें डुरितनाशिनी बे, तो नगवंतनुं स्तोत्र डुरित निवारण करे, तेमां शुंज केहेवुं? ॥ ए ॥

हवे नगवंतना गुणनी स्तुतिनुं फल कहे बे.

नात्यद्भुतं नुवननूषणनूत नाथ, नूतैर्गुणैर्नुवि
नवंतमनिष्टुवंतः ॥ तुल्यानवंति नवतोननु ते न
किंवा, नूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

अर्थः-(नुवननूषणनूत के०) हे जगतने विषे नूषणरूप! अर्थात् हे जगदानरणसमान! (नूतैः के०) सत्य एटले असत्य नहीं एवा तमारा (गुणैः के०) गुणोयें करीने (नुवि के०) जगतने विषे (नवंतं के०) तमोने (अनिष्टुवंतः के०) स्तुति करनारा एवा जे जनो बे ते जनो, रूपें तथा गुणें करीने (नवतः के०) तमारी (तुल्याः के०) तुल्य एटले समान (नवंति के०) थाय बे. तेमां (नअत्यद्भुतं के०) अति आश्चर्य नथी. (ननु के०) प्रश्नमां, (नाथ के०) हे नाथ! (यः के०) जे कोइ धनवान् स्वामी, (इह के०) आ लोकने विषे पोताने (आश्रितं के०) आश्रय करीने रह्यो एवो जे सेवक, तेने (नूत्या के०) संपत्तियें करीने, (लक्ष्मीयें करीने) महत्त्वें करीने, (आत्मसमं के०) पोतानी तुल्य (नकरोति के०) नहिं करे, तो (वा के०) अथवा (तेन के०) ते स्वामीयें करीने (किं के०) शुं? अर्थात् कांहींज नहीं. तेम स्तवनकर्त्ता कहे बे, के हुं पण तमारी स्तुति करतो बतो तमारी पेठें तीर्थंकर नामकर्मने संपादन करनारो थाइश ॥ १ ॥

हवे नगवदर्शननुं फल कहे ले.

दृष्ट्वा नवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुप
याति जनस्य चक्षुः॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्ध
सिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं कइत्रेत्॥ ११ ॥

अर्थः–हे नाथ! (अनिमेषविलोकनीयं के०) मिषोन्मिषरहितपणे क रीने जोवा योग्य, एटले दर्शन करवा योग्य एवा (नवंतं के०) तमोनें (दृष्ट्वा के०) जोइने (जनस्य के०) ते जोनारा लोकोनां (चक्षुः के०) चक्षु जे ले, ते (अन्यत्र के०) तमाराथी व्यतिरिक्त जे अन्य देवो ले, तेने विषे (तोषं के०) संतोषने (नउपयाति के०) न पामे, अर्थात् अनिमेषदृष्टियें करीने तमारा दर्शन करनारा एवा जे नव्य जनो, ते तमारे विषेज प्रीतिने पामे ले परंतु अन्य हरिहरादिक देवोने विषे प्रीति पामता नथी. त्यां दृष्टांत कहे ले. के (शशि के०) चंड्मा तेनां (कर के०) किरणो तेनी (द्युति के०) कांति तेना सरखी उज्ज्वल ले कांति जेनी एवो जे (दुग्धसिंधोः के०) क्षीरसमुड़ तेनुं (पयः के०) पाणी, तेने (पीत्वा के०) पान करीने (कः के०) कयो पुरुष, (जलनिधेः के०) लवणसमुड़ जे ले, तेनुं (क्षारंजलं के०) न पीवा योग्य एवुं अस्वादिम खारुं पाणी तेनें (अशितुं के०) पान करवाने (इत्रेत् के) इबा करे? अर्थात् क्षीरसमुड़ना पाणीसदृश एवुं जे तमारुं दर्शन तेने त्याग करीने लवणसमुड़ना पाणी तुल्य एवुं जे अन्य देवोनुं दर्शन, तेनें कोण करे? अर्थात् कोइज न करे॥ ११ ॥

हवे नगवानना रूपनुं वर्णन कहे ले.

यैः शांतरागरुचिन्निः परमाणुन्निस्त्वं, निर्मापितस्त्रि
नुवनैकललामन्नूत॥ तावंतएव खलु तेप्यणवः पृ
थिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

अर्थः–(त्रिनुवन के०) त्रण नुवनने विषे (एक के०) अद्वितीय एटले एकज (ललामनूत के०) सुंदर नूत तेना संबोधनने विषे हे त्रिनुवनैकललामनूत! (यैः के०) जे (शांत के०) शांत नामा जे नवमो रस, तेनो (राग के०) नाव तेनी (रुचिन्निः के०) लाया ले जेमने विषे एवा (परमाणुन्निः के०)

परमाणुउयें करीने (निर्मापितः के०) निर्माण करेला एवा शरीरवाला (त्वं के०) तमें छो अने (तेपि के०) ते पण (अणवः के०) परमाणुउ (पृथिव्यां के०) जगतने विषे (तावंतएव के०) जगवन्निर्मितमात्रज छे, एटले ते रागद्वेषनी शांतता रूप परमाणुउ पण जगतमां तेटलाज छे, तेने विषे हेतु कहे छे. (यत् के०) जे कारण माटे (पृथिव्यां के०) पृथिवीने विषे (ते के०) तमारा (समानं के०) सरखुं (अपरं के०) बीजुं कोइ (रूपं के०) रूप (नहि के०) नहिं (अस्ति के०) छे ॥ १२ ॥

हवे प्रजुना मुखनुं वर्णन करे छे.

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजग
त्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकर
स्य, यद्वासरे जवति पांमुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

अर्थः—हे नाथ! (सुर के०) देवताउ, (नर के०) मनुष्यो, (उरग के०) जुवनपति अथवा नागकुमार प्रमुख जे देवो तेना (नेत्र के०) चक्षु तेने (हारि के०) हरण करवानुं छे शील जेनुं एवुं छे. वली केहेवुं छे ? तो के (निःशेष के०) समस्त एवां जे (जगत्त्रितयोपमानं के०) त्रण जुवनने विषे जेनी उपमा देवाय एवा कमल, चंड, दर्प्पणादि पदार्थो ते सर्वना सौंदर्य ने (निर्जित के०) निःशेषपणायें करीने जीत्युं छे जेणें एवुं (ते के०) तमारुं (वक्त्रं के०) मुख, ते (क्व के०) क्यां ? अने (कलंकमलिनं के०) लांछनें करी मलिन तथा (यत् के०) जे (वासरे के०) दिवसने विषे (पांमुपलाशकल्पं के०) खाखराना जाडनुं पांदडुं जेवुं पीलुं पडी जाय, तेना सरखुं (जवति के०) थाय छे एवुं (निशाकरस्य के०) चंड्रमा तेनुं (बिंबं के०) बिंब ते (क्व के०) क्यां ? अर्थात् तमारा मुखनुं अने चंड्रबिंबनुं उपमेयत्व घटतुं नथी ॥ १३ ॥

हवे जगवद्गुणोनी व्याप्ति कहे छे.

संपूर्णमंमलशशांककलाकलाप, शुभ्रागुणास्त्रि
जुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ना
थमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टम् ॥ १४ ॥

अर्थः—(त्रिजगदीश्वर के०) त्रण जगतना ईश्वर एटले हे त्रिजगन्नाथ! (संपूर्णमंमल के०) संपूर्ण ले मंमल जेनुं एवो जे पूर्णिमानो (शशांक के०) चंड्मा तेनी (कला के०) कला तेनो (कलाप के०) समूह तेना सरखा (शुन्राः के०) शुन्र एटले उज्ज्वल एवा (तव के०) तमारा (गुणाः के०) गुणो ते (त्रिन्नुवनं के०) त्रण नुवनने (लंघयंति के०) उल्लंघन करे ले, एटले तमारा जे ज्ञान, दर्शनादिक गुणो ले, ते त्रण नुवनथी उपरांत ले, वली (ये के०) जे गुणो (एकं के०) अद्वितीय अने (नाथं के०) त्रण नुवनना स्वामी एवा नगवंतने (संश्रिताः के०) आश्रय करी रहेला ले ते गुणो, (यथेष्टं के०) स्वेलायें यथान्निप्रायें (संचरतः के०) सर्वत्र प्रकारें अस्खलन पणे संचरता एटले विचरता एवा ले. (तान् के०) ते गुणोनें (कः के०) कयो पुरुष, (निवारयति के०) निवारण करी शके? अर्थात् कोइ पण निवारण करी शके नहिं ॥ १४ ॥

हवे नगवाननुं यथार्थ नामपणुं कहे ले.

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनान्नि, र्नीतं मनागपि
मनोन विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिता
चलेन, किंमंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

अर्थः—हे प्रन्नो! लद्मस्थ अवस्थायें विचरता एवा तमोने (यदि के०) जो (त्रिदश के०) देवताउ तेनी (अंगनान्निः के०) स्त्रीउ जे तेणें (ते के०) तमारुं (मनः के०) मन जे ले ते (मनागपि के०) किंचित् मात्र पण (विकारमार्गं के०) विकारना स्थानक प्रत्यें (न नीतं के०) न पमाड्युं एटले तमारुं मन, क्षोन्नने न पमाड्युं तो (अत्र के०) ए ठेकाणें (चित्रं के०) आश्चर्य (किं के०) शुं? अर्थात् एमा कांइ पण आश्चर्य नथी. त्यां दृष्टांत कहे ले. के (चलिताचलेन के०) चलायमान कर्या ले अचल एटले महोटा महोटा पर्वतो जेणें एवो जे (कल्पांतकालमरुता के०) कल्पांत कालनो वायु एटले प्रलय कालनो वायरो ते वायुयें करीने (कदाचित् के०) क्यारें पण (मंदराद्रिशिखरं के०) मंदराचल एटलें मेरुपर्वत तेनुं जे शिखर, ते (किं के०) शुं (चलितं के०) चलायमान थाय? अर्थात् प्रलय कालना पवनें सर्व पर्वतोने तो चलाय मान कर्या, परंतु मेरु

पर्वतने चलायमान न कर्यो. तेम देवतानी स्त्रीउयें पण बीजा हरिहरादिक देवोने तो चलायमान कर्या; परंतु तमोने क्षोन पमाडी शकीउ नह ॥१५॥

हवे नगवानने दीपनी उपमानी व्यर्थता कहे छे.

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुता चलताचला नां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः॥ १६ ॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ ! (त्वं के०) तमें (अपरः के०) विलक्षण एवो बीजोज (जगत्प्रकाश के०) जगत्प्रकाशक रूप (दीपः के०) दीपक (असि के०) बो. ते केवी रीतें बो ? त्यां कहे छे. (निर्धूमवर्त्तिः के०) निर्गत एटले गयो छे द्वेषरूप धूम्र अने वर्त्ति एटले कामवशतारूप वाट्य जे थकी एवा अपूर्वदीपक तमें बो. अने बीजा लौकिक दीपक जे छे, ते तो धूम्र अने बत्ती तेणें करी सहित होय छे, वली तमें केहेवा दीपक बो ? तो के (अपवर्जिततैलपूरः के०) वर्जित थयो छे स्नेह प्रकाशरूप तैलनो पूर जेथकी एवा दीपक बो अने बीजा लौकिक दीपक तो तैलपूरें करी सहित होय छे. वली तमें केहेवा दीपक बो ? तो के (इदं के०) आ (कृत्स्नं के०) समग्र (जगत्त्रयं के०) त्रण जगतने (प्रकटीकरोषि के०) प्रगट करो बो, एटले केवलज्ञानरूप उद्योतें करी प्रकाश करो बो अने लौकिक दीपक तो केवल गृहमात्रनेज प्रकाश कारक छे, वली तमें दीपक जे बो, ते केहेवा बो ? तो के (अचलानां के०) पर्वतोने (चलता के०) चलायमान करतो एवो (मरुता के०) वायरो जे छे, तेणें करीने (जातु के०) क्यारें पण (गम्यः के०) जावा योग्य (न के०) नही बो. अने लौकिक दीपक जे छे, ते तो पवनथकी जावा योग्य छे ॥ १६ ॥

हवे प्रन्नुने सूर्यसाथें उपमानी व्यर्थता कहे छे.

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांनोधरोदरनिरुद्धमहाप्रनाव:, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥

अर्थः–(मुनींद्र के०) हे मुनींद्र ! तमो (लोके के०) जगतने विषे (सूर्यातिशायिमहिमा के०) सूर्यथकी अधिक महिमावाला एवा (असि के०) छो. ते केवी रीतें सूर्यातिशायि छो ? तो के (कदाचित् के०) क्यारें पण (अस्तं के०) अस्तपणाने (नउपयासि के०) नथी पामता, एवा छो अने सूर्य तो अस्त पामे छे. तथा वली तमें (नराहुगम्यः के०) राहुयें ग्रसित होता नथी अने सूर्य तो राहुग्रस्त थाय छे. वली तमें तो (युगपत् के०) समकालें (जगंति के०) त्रण जगतने (सहसा के०) साथेंज (स्पष्टीकरोषि के०) प्रकाश करो छो, अने सूर्य तो एक जंबूद्वीपनेज प्रकाश करे छे तथा तमो तो (अंभोधर के०) ज्ञानावरणादिक पांच आवरण रूप मेघ तेनो (उदर के०) मध्यभाग तेथकी (निरुद्ध के०) रोकायो छे (महाप्रभावः के०) महोटो महिमा जेनो एवा (न के०) नथी अने सूर्य तो मेघना वादलांनो मध्यभाग जे मेघ घटा तेणें रोकाय एवो छे ॥ १७॥

हवे विशेषें करी चंद्रोपमान व्यर्थ करतो छतो कहे छे.

नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदन
स्य न वारिदानां ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प
कांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥

अर्थः–हे नाथ ! (तव के०) तमारुं (मुखाब्जं के०) मुखरूप कमल जे छे ते, (अपूर्व के०) विलक्षण एवुं (शशांक के०) चंद्रमा तेना (बिंबं के०) बिंबरूप (विभ्राजते के०) शोभे छे. ते केवी रीतें ? तो के तमारुं मुखरूप कमल तो (नित्योदयं के०) निरंतर उदय पामेलुं छे अनें चंद्रबिंब जे छे ते तो निरंतर उदय थवा वालुं थतुं नथी तथा वली तमारुं मुखाब्ज केहेवुं छे ? तो के (दलितमोहमहांधकारं के०) मोह एटले अज्ञानरूप महोटा अंधकारनें दली नाख्यो छे जेणें एवुं छे अने चंद्रबिंब तेवा गुणवालुं नथी ते तो मात्र अंधकारनोज नाश करे छे. तथा वली तमारुं मुखकमल तो, दुर्वादि जे कुतर्क करनारा वादिउ तद्रूप (राहुवदनस्य के०) राहुनुं जे मुख तेनें (नगम्यं के०) ग्रसवा योग्य नथी अने चंद्रने तो राहुनुं मुख ग्रसे छे. तथा वली तमारुं मुखकमल तो (अनल्पकांति के०) अल्पकांति वालुं नथी थतुं अने चंद्रबिंब तो अल्पकांतिवालुं पण क्यारेंक थाय छे तथा

वली तमारा मुखाब्जने तो (नवारिदानां के०) मेघ आछादन करवाने अशक्य छे अने चंद्रबिंबने तो मेघ आछादन करवाने शक्तिमंत छे माटे तमारुं मुखकमल तो (जगत् के०) त्रण जगतने (विद्योतयत् के०) प्रकाश करे छे अने चंद्रबिंब तो एक जंबुद्वीपनेज मात्र प्रकाश करे छे. माटे हे प्रनो! अपूर्व शशांकबिंबपणुं ते तमारा मुखकमलने योग्यज छे ॥ १८ ॥

हवे प्रजुना मुखेंदुपासें सूर्य, चंद्रमा पण निःप्रयोजन वाला छे, एवुं देखाडे छे.

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदु दलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलन्नारनम्रैः ॥ १९ ॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ! (युष्मन्मुखेंदु के०) तमारा मुख रूप इंदु जे चंद्रमा तेणें (तमस्सु के०) अज्ञान रूप अंधकारोने (दलितेषु के०) दलनकरे छते पछी (शर्वरीषु के०) रात्रियोने विषे उदय थनारा एवा (शशिना के०) चंद्रमा तेणें करीने (किं के०) शुं कार्य थवानुं छे? (वा के०) अथवा (अह्नि के०) दिवसने विषे उदय थनारा एवा (विवस्वता के०) सूर्यें करीने (किं के०) शुं कार्य थवानुं छे? त्यां दृष्टांत कहे छे. के जेम (निष्पन्न के०) पाकेलां एवां जे (शालिवन के०) शालिना वन तेणें करी (शालिनि के०) शोनायमान थयेला एवा (जीवलोके के०) मृत्यु लोक तेने विषे (जलन्नारनम्रैः के०) जलनो जे नार तेणें करी नम्र थयेला एवा (जलधरैः के०) मेघो तेणें करी (कियत्कार्यं के०) शुं प्रयोजन? अर्थात् कांइ पण कार्य सिद्धि नहीं ॥ १९ ॥

हवे ज्ञान द्वारायें करी अन्य देवोने तिरस्कार करतो छतो कहे छे.

ज्ञानं यथा त्वयि विन्नाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥

अर्थः–हे नाथ! (कृतावकाशं के०) अनंत पर्यात्मक जे पदार्थो तेने विषे कर्यो छे अवकाश एटले प्रकाश जेणें एवुं (ज्ञानं के०) केवल

ज्ञान ते (यथा के०) जेवी रीतें (त्वयि के०) तमारे विषे (विभाति के०) शोभे बे, (तथा के०) तेवी रीतें (नायकेषु के०) पोतपोताना शासन ना स्वामी एवा (हरिहरादिषु के०) हरि हरादिक जे देवो बे, तेने विषे (एवं के०) ए प्रकारनुं (न के०) नथी शोभतुं. त्यां दृष्टांत कहे बे. के (यथा के०) जेवी रीतें (तेजः के०) प्रकाश जे बे, ते (स्फुरन्मणिषु के०) देदीप्यमान जातिवंत मणिउने विषे (महत्त्वं के०) गौरवताने (याति के०) पामे बे (तु के०) वली (एवं के०) ए प्रकारें (किरणाकुले पि के०) कांतियें करीने व्याप्त एटले चलकता एवा पण (काचशकले के०) काचना जे कटका तेने विषे गौरवताने (नैवं के०) प्राप्त नथीज थतुं. अर्थात् जेवुं तमारे विषे ज्ञान बे. तेवुं अन्य देवोमां नथी ॥ २० ॥

हवे भगवाननी निंदास्तुति कहे बे.

मन्ये वरं हरिहरादयएव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं
त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन
नान्यः, कश्चिन्मनोहरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥

अर्थः–(मन्ये के०) हुं विचार करुं बुं के, (हरिहरादयः के०) हरिह रादिक देवो ते (दृष्टाः के०) दीठा ते (वरंएव के०) सारुंज थयुं.केम के? (येषु के०) जे देवो (दृष्टेषु के०) दीठे बते मारुं (हृदयं के०) हृदय जे चित्त, ते (त्वयि के०) तमारे विषे (तोषं के०) संतोषने (एति के०) पामे बे. अने प्रथम (वीक्षितेन के०) देखेला एवा (भवता के०) तमोयें करीने (किं के०) शुं थयुं? तो के (येन के०) जे तमारा दर्शनें करीने (भुवि के०) पृथ्वीने विषे (कश्चित् के०) कोइ (अन्यः के०) अन्यदेव, (नाथ के०) हे नाथ ! (भवांतरेपि के०) अन्यभवने विषे पण (मनः के०) मारुं मन, (न हरति के०) हरण करतो नथी ॥२१॥

हवे मातानी प्रशंसा द्वारायें करीने भगवद्वर्णन करे बे.

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं
त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वादिशो दधति भानि
सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥

अर्थः—हे नाथ! लोकने विषे (स्त्रीणांशतानि के०) स्त्रीउनाशइकडा एटले घणी स्त्रीउ बे ते स्त्रीयो, (शतशः के०) शइकडो गमे नाना प्रकारना स्वरूप वाला एवा (पुत्रान् के०) पुत्रोने (जनयंति के०) जन्म आपे बे खरी, परंतु ते (अन्या के०) बीजी (जननी के०) माता जे बे, ते (त्वडुप मं के०) तमारी उपमा देवाय एवा (सुतं के०) पुत्रने (नप्रसूता के०) उत्पन्न करी शकती नथी. त्यां दृष्टांत कहे बे, के (सर्वादिशः के०) सर्वे मली आठ दिशाउ जे बे, ते (जानि के०) अश्विन्यादि नक्षत्रोने (दधति के०) धारण करे बे, परंतु (प्राच्येवदिक् के०) एक मात्र पूर्वदिशाज (स्फुरदंशुजालं के०) देदीप्यमान बे किरणजाल जेनां एवो अने (सह स्र के०) हजार बे (रश्मिं के०) किरणो जेमनां एवा सूर्यने (जनयति के०) उत्पन्न करे बे. अर्थात् जेम एक पूर्वदिशि सूर्यनी जननी बे, तेम एक तमारी माताज तमारा सरखा सुपुत्रनी जननी बे ॥ २२ ॥

हवे प्रभुनी परमपुरुषत्वें करीने स्तुति करे बे.

त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्यवर्णमम
लं तमसः परस्तात्॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयं
ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः॥२३॥

अर्थः—(मुनींद्र के०) हे मुनींद्र! जे (मुनयः के०) महर्षि एवा सा धु जनो बे, ते (त्वां के०) तमोने (तमसः के०) अंधकार रूप डुरित, ते नी (परस्तात् के०) आगल (आदित्य के०) सूर्यना सरखा (वर्ण के०) कांति वाला एवा अने रागद्वेष रहितपणें करीने (अमलं के०) निर्मल (परमंपुमांसं के०) परम पुमान् एटले निःकर्म सिद्ध एवा (आमनंति के०) कहे बे. तथा (त्वामेव के०) तमोने (सम्यक् के०) रूडे प्रकारें (उ पलभ्य के०) निश्चयत्वें करी जाणीने, ते महर्षियो (मृत्युं के०) मृत्युने (ज यंति के०) जींते बे. माटे (अन्यः के०) बीजो कोइ (शिवः के०) निरुप द्रव एवो (शिवस्यके०) मोक्षनो (पंथाः के०) मार्ग. (न के०) नथी ॥२३॥

हवे सर्व देवना नामें करीने जिनने स्तवे बे.

त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमी

श्वरमनंतमनंगकेतुम्॥ योगीश्वरं विदितयोगमने
कमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥२४॥

अर्थः—हे प्रभु ! (त्वां के०) तमोने (संतः के०) संत पुरुषो जे छे, ते (प्रवदंति के०) कहे छे. जे तमें (१) (अव्ययं के०) क्षय रहित छो एटले सदास्थिरैकस्वभावी छो. वली (२) विभुं के०) परम ऐश्वर्यें करीनें विशेषें शोभो छो, अथवा कर्मोन्मूलन समर्थ छो. (३) (अचिंत्यं के०) चिंतवन थइ शके नहीं एवा महिमावंत छो अथवा तमारुं स्वरूप कोइथी कलाय नहीं एवा छो. (४) (असंख्यं के०) गुणोनी संख्या रहित छो, एटले तमारा गुणोनी संख्या थइ शके नहीं एवा छो. अथवा संख्य एटले युद्ध ते जेने (अ के०) नथी एवा छो. (५) (आद्यं के०) लोकसृष्टि हेतु पणायें करी आद्यमां छो, अथवा आद्य तीर्थंकर छो. अथवा पंच परमेष्टि मध्ये आद्य छो. (६) (ब्रह्माणं के०) अनंत आनंदे करी सर्व थकी अधिक वृद्धिवाला छो माटे ब्रह्म छो,निवृत्तिरूप छो. (७) (ईश्वरं के०) ईश्वर शील छो, सर्व देवना ईश्वर छो. (८) (अनंतं के०) ज्ञानदर्शनना योगथी अनंत छो अथवा अंत रहित छो. (९) (अनंगकेतुं के०) कामदेवने छेदवा पणायें करीने केतु छो. एटले जेम जगत्नो नाश करवाने केतु जे पूंछडीयो तारो ते कारणभूत छे, तेम तमें पण कंदर्पनो नाश करवाने कारणभूत छो. (१०) (योगीश्वरं के०) योगी एटले मन, वचन अने कायारूप व्यापारने जीतनारा एवा जे सामान्य केवली तेना ईश्वर छो. (११) (विदितयोगं के०) विदित एटले ज्ञात छे, अवगत छे ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप योग हस्तामलकवत् जेने अथवा ज्ञानी पुरुषोयें तमारा थकी अष्टविध योग जाण्यो छे एवा छो, तथा (१२) (अनेकं के०) ज्ञानेकरी सर्वगत होवाथी सर्वव्यापक छो माटे पर्यायथी अनेक छो, (१३) (एकं के०) अद्वितीय उत्तमोत्तम छो अथवा जीव द्रव्यापेक्षायें द्रव्यथकी एक छो अने अनन्य स्वरूपपणुं छे. (१४) (ज्ञानस्वरूपं के०) क्षायिक केवलज्ञान रूपत्व छो, माटें क्षायिक स्वरूपी छो. (१५) (अमलं के०) अष्टादश दोषरूप पापमल रहित छो ॥ २४ ॥

हवे बीजो अर्थ करी बीजा देवना नामें जिननी स्तुति करे छे.

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि

भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधे
विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

अर्थः—हे नाथ! (विबुधार्चितबुद्धिबोधात् के०) देवताउएं अर्चित एटले पूजित कर्यो छे केवलज्ञाननो बोध जेमनो माटे (त्वमेव के०) तमेंज (बुद्धः के०) बुद्ध देवता छो, एटले ज्ञानतत्वी छो तथा (भुवनत्रयशंकरत्वात् के०) त्रण भुवनने सुखना करनार होवाथी (त्वं के०) तमें (शंकरोसि के०) शंकर देवता छो. अन्यपक्षमां जे शंकर देवता छे ते तो नग्न, कपाली, भैरव, संहारक, तेणें करीने ते यथार्थनामा शंकर नथी. तथा (धीर के०) हे धीर! तमेंज (शिवमार्ग के०) मोक्षमार्ग तेनो (विधेः के०) रत्नत्रययोगरूप क्रिया तेना (विधानात् के०) निःपादन करवा थकी (धाता के०) विधाता एटले संपन्न (असि के०) छो. अर्थात् तमेंज ब्रह्मदेव छो, अन्य पक्षमां जे ब्रह्मा छे ते तो जड छे, अने तेणें तो वेदोपदेशथकी नरकपथ उघाड्यो छे माटे यथार्थ ते ब्रह्मा नथी. वली (भगवन् के०) हे भगवन्! (त्वमेव के०) तमेंज (व्यक्तं के०) प्रगटपणे (पुरुषोत्तम के०) पुरुषोत्तम ते नारायण देव, (असि के०) छो. अन्य पक्षमां जे पुरुषोत्तम कृष्ण छे, ते तो सर्वत्र कपटवशथकी यथार्थ पुरुषोत्तम नथी ॥ २५ ॥

हवे वली फरीने जिनने नमस्कार करतो छतो कहे छे.

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षि
तितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परेश्वरा
य, तुभ्यं नमोजिन भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

अर्थः—(नाथ के०) हे नाथ! (त्रिभुवनार्तिहराय के०) त्रण भुवननी आर्त्ति जे पीडा तेने हरण करनारा एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमःके०) नमस्कार हो तथा (क्षितितल के०) पृथिवीतल तेने विषे (अमल के०) निर्मल (भूषणाय के०) अलंकाररूप छो अथवा पृथिवीतल जे पाताल अने अमल जे स्वर्ग तेना भूषणरूप एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो. तथा (त्रिजगतः के०) त्रण जगतना (परमेश्वराय के०) प्रकृष्ट प्रभु एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो

तथा (जिन के०) हे श्रीवीतराग! (नवोदधि के०) संसाररूप समुद्र, तेने (शोषणाय के०) शोषण करनारा एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो. अहींआं तुभ्यं ए एक वचन ग्रहण कर्युं बे, ते सर्व अन्य देवोना निषेध सूचनार्थ कर्युं बे ॥ २६ ॥

हवे निंदास्तुति कहे बे.

कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो
निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रयजा
तगर्वैः, स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥

अर्थः—(मुनीश के०) हे मुनिजनना ईश्वर ! (नाम के०) नाम ए पद जे बे, ते कोमलामंत्रणमां बे. (यदि के०) यदि शब्द अंगीकारार्थमां बे. (त्वं के०) तमें (अशेषैः के०) समग्र एवा (गुणैः के०) गुणोयें (निरवकाशतया के०) निरंतरपणे (संश्रितः के०) रूडा प्रकारें आश्रय करायेला बो (अत्र के०) एने विषे (कोविस्मयः के०) शुं आश्चर्य ? अर्थात् कांहिं नहीं अने (उपात्त के०) ग्रहण करेला एवा जे (विविधाश्रय के०) विविध आश्रयो, तेणें करीने (जात के०) उत्पन्न थया एवा (गर्वैः के०) गर्वरूप जे अवगुण तेना (दोषैः के०) दोषें करीने सहित एवा जनोयें तमो (स्वप्नांतरेपि के०) स्वप्नांतरने विषे पण (कदाचिदपि के०) क्यारें पण (नईक्षितोसि के०) जोयेला नथी ॥ २७ ॥

हवे केटलाएक प्रातिहार्यनें प्रकट करतो जिननी स्तुति करे बे.

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपमम
लं भवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमो
वितानं, बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥

अर्थः—हे जिन! आठ प्रातिहार्य मांहेलो प्रथम प्रातिहार्य, (उच्चैरशोकतरु के०) प्रभुना अंगथकी बार गुणो उंचो एवो जे अशोकवृक्ष तेने विषे (संश्रितं के०) आश्रय करीने रहेलुं अर्थात् अशोकने नीचें बेठेला बो ते समयें (उन्मयूखं के०) उंचा बे अधिक बे मयूख एटले किरणो जेनां एवुं (भवतः के०) तमारुं (रूपं के०) शरीर ते (नितांतं

के०) अत्यंत (अमलं के०) निर्मल (आजाति के०) शोने बे. त्यां दृष्टांत कहे बे, के (स्पष्टोल्लसत्किरणं के०) प्रगट उंचां गयेलां बे किरणो जेनां एवुं (रवेः के०) सूर्य जे तेनुं (बिंबं के०) बिंब जे बे, ते (पयोधर के०) मेघ, तेना (पार्श्ववर्त्ति के०) पार्श्वमां वर्त्ततुं एटले पासें रह्युं थकुं (इव के०) जेम होय नहिं ? एटले सूर्य पोतानां प्रकाशित किरणो वडे करीने (अस्ततमोवितानं के०) अंधकारना समूहने अस्त करी नाखीने एटले नाश करीने शोजाने पामे बे. तेम तमें अशोकवृक्षने नीचें बेगा थका शोजाने पामो बो ॥ २७ ॥

हवे वली पण जगवंतना शरीरनुं वर्णन करे बे.

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव
वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलता
वितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्त्ररश्मेः ॥ २९ ॥

अर्थः—हे देव ! (मणि के०) मणियो तेनां (मयूख के०) किरणो. तेनी (शिखा के०) पंक्तिउ, तेणें करीने (विचित्रे के०) चित्र विचित्र एवुं (सिंहासने के०) सिंहोपलक्षित आसन, तेने विषे (कनक के०) सुवर्ण तेना सरखुं (अवदातं के०) मनोज्ञ एवुं (तव के०) तमारुं (वपुः के०) शरीर, ते (विभ्राजते के०) विशेषें करी शोजे बे. त्यां दृष्टांत कहे बेः—(तुंग के०) उंचो एवो जे (उदयाद्रि के०) उदयाचल पर्वत तेना (शिरसि के०) शिर उपर जे (वियत् के०) आकाश तेने विषे जेनां (विलसत् के०) उद्योतमान (अंशु के०) किरणो तेनी (लता के०) शाखाउ तेनो (वितानं के०) समूह बे जेने एवो (सहस्त्ररश्मेः के०) सूर्य जे तेनुं (बिंबं के०) बिंब ते (इव के०) जेम शोजाने पामे बे, तेम प्रजुनुं शरीर सिंहासन उपर शोजाने पामे बे ॥ २९ ॥

हवे फरी पण प्रकारांतरें जगवानना शरीरनुं वर्णन करे बे.

कुंदावदातचलचामरचारुशोजं, विभ्राजते तव वपुः
कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंजम् ॥ ३० ॥

अर्थः—हे नाथ! (कुंद के०) मोघरानां पुष्प, तेना सरखां (अवदात के०) उज्ज्वल अने (चल के०) चंचल एटले इंद्रादिकें वींजेलां एवां जे (चामर के०) बे चामरो तेणें करीने (चारुशोन्नं के०) मनोहर छे शोन्ना जेनी एवुं, अने (कलधौतकांतं के०) सुवर्णना सरखुं मनोहर एवुं (तव के०) तमारुं (वपुः के०) शरीर, ते (विभ्राजते के०) विशेषें करी शोन्ने छे, त्यां दृष्टांत कहे छे. (उद्यत् के०) उदय पामेलो एवो (शशांक के०) चंद्रमा तेना सरखुं (शुचि के०) निर्मल अने (निर्झर के०) निर्झरणानी (वारिधारं के०) जलधारा जेने विषे वही रह छे एवुं (शातकौंन्नं के०) सुवर्णमय जे (सुरगिरेः के०) मेरुपर्वत तेनुं (उच्चैः के०) उंचुं एवुं (तट के०) तट एटले शिखर ते जेम शोन्ने छे (इव के०) तेनी पेरें तमारुं शरीर पण शोन्ने छे ॥३०॥

हवे छत्रत्रय नामा प्रातिहार्यने वर्णन करतो छतो कहे छे.

छत्रत्रयं तव विन्नाति शशांककांत, मुच्चैःस्थितं स्थ
गितन्नानुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृ
द्धशोन्नं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

अर्थः— हे प्रन्नो ! (शशांककांतं के०) चंद्रमाना सरखुं मनोहर एवुं (उच्चैःस्थितं के०) तमारा उपर रह्युं अने (स्थगितन्नानुकरप्रतापं के०) ढांकी दीधो छे सूर्यना किरणोनो प्रताप जेणें एवुं तथा (मुक्ताफल के०) मोती तेना (प्रकर के०) समूह तेंनी (जाल के०) रचना, तेणें करीने (विवृद्धशोन्नं के०) विशेषें करी वृद्धि पामी छे शोन्ना जेनी एवुं, (त्रिजगतः के०) त्रण जगत् जे छे तेनुं (परमेश्वरत्वं के०) परमेश्वरपणुं तेने (प्रख्यापयत् के०) प्रकर्षें करीने जणावनारुं एवुं (तव के०) तमारुं (छत्रत्रयं के०) छत्रत्रय जे छे, ते (विन्नाति के०) शोन्ने छे एटले तमोने छत्रातिछत्र एवां त्रण छत्र जे धराय छे, ते त्रण जगतनुं प्रन्नुत्व प्रख्यापन करे छे. तिहां एक छत्रें करी पाताल लोकनुं प्रन्नुत्व सूचन कराय छे, बीजा छत्रें करी मृत्युलोकनुं प्रन्नुत्व सूचन कराय छे, अने त्रीजा छत्रें करी देवलोकनुं स्वामित्व सूचन कराय छे ॥ ३१ ॥

हवे अतिशय द्वारायें जिनने स्तुति करतो बतो कहे बे.

उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति, पर्युल्लसन्नखमयूख शिखानिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र ! (उन्निद्र के०) विकसित (हेम के०) सुवर्णनां (नव के०) नवसंख्या बे जेनी अथवा नवीन एवां (पंकज के०) कमल, तेना (पुंज के०) समूह तेनी (कांति के०) द्युति तेणें करीने (पर्युल्लसत् के०) चारे तरफ उबलतां एवां, (नखमयूख के०) परमेश्वरना पगना नख तेनां जे किरणो तेनी (शिखा के०) प्रकाशपंक्ति जेने आसमंतात् नागमां फेली रही बे. तेणें करीने (अनिरामौ के०) मनोहर एवां (तव के०) तमारां (पादौ के०) चरणो ते, (यत्र के०) जे नूमिने विषे (पदानि के०) गमननां स्थानक प्रत्यें (धत्तः के०) धारण करे बे, (तत्र के०) ते स्थलने विषे (विबुधाः के०) देवताउ (पद्मानि के०) कमलोने (परिकल्पयंति के०) रचना करे बे. एटले बे कमल चरण नीचें अने सात कमल मार्गमां रचे बे. अहीं नख कमलनी कांति दर्पण सदृश बे, अने देवताउयें रचेलां एवां सुवर्ण कमलनी कांति पीत बे, ते बेहुना मलवाथी चरणोनो विचित्र वर्ण थयो ॥ ३२ ॥

हवे एक अतिशयें करीने बीजाउने उत्क्षेप करता उपसंहार करे बे.

इबं यथा तव विनूतिरनूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रना दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे सामान्य केवलीने विषे इंद्र तुल्य ! दुर्गतियें पडता प्राणीनें धरी राखे एवो जे श्रुत चारित्र लक्षण (धर्म के०) धर्म, ते धर्मना (उपदेशनविधौ के०) उपदेश विधिने विषे एटले उपदेश करवाना समयने विषे, (इबं के०) ए पूर्वें कही एवी (तव के०) तमारी (विनूतिः के०) अतिशयनी संपदा ते, (यथा के०) जे प्रकारें (अनूत् के०)

थइ (तथा के०) तेवी (परस्य के०) बीजा जे हरिहरादिक देवो ठे, तेनी (न के०) नथी थती. त्यां दृष्टांत कहे ठे. के जेम (प्रहत के०) प्रकर्षे करी हण्यो ठे (अंधकारा के०) अंधकार जेणें एवी (दिनकृतः के०) सूर्य जे तेनी (यादृक्प्रजा के०) जेवी कांति ठे, (तादृक् के०) तेवी कांति, (विकाशिनोपि के०) प्रकाशित थयेला एवा (ग्रहगणस्य के०) नौमादिक ग्रहना समूह तेनी प्रजा (कुतः के०) क्यांहांथी होय? एटले सर्वथा नज होय. अर्थात् देशना समयें जे अशोक वृक्षादिक आठ महा प्रातिहार्य तथा चोत्रिश अतिशय वाली एवी तमारी जे समृद्धि ठे, तेवी हरिहर ब्रह्मादिकनी क्यांथी होय? कारण के एमने सरागपणाने लीधे कर्मक्षयपणुं नथी ते कर्मक्षय विना उत्तमोत्तमताने पमाय नहीं अने उत्तमोत्तमता विना प्रातिहार्यादिक समृद्धिनो अनाव होय ठे ॥ ३३ ॥

हवे जिनने गजनयहर दर्शावतो ठतो कहे ठे.

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरवतानमिनमुद्धतमापतंतं,
दृष्ट्वा नयं नवति नो नवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥

अर्थः—हे नाथ! (श्च्योतत् के०) ऊरतो एवो (मद के०) मद तेणें करीने (आविल के०) कलुष थयेला एवा अने (विलोल के०) चंचल एवा जे (कपोलमूल के०) गंमस्थल ते गंमप्रदेश तेणें करीने (मत्त के०) मदोन्मत्त थयेलो एवो अने (च्रमत् के०) अहिं तहिं च्रमण करनारा एवा जे (च्रमर के०) नमराउ तेना (नाद के०) ऊंकारशब्द तेणें करीने (विवृद्धकोपं के०) वृद्धि पाम्यो ठे क्रोध जेने एवो अने (ऐरावतानं के०) ऐरावण हाथीना सरखी ठे आना एटले कांति जेनी एवो अने (उद्धतं के०) अविनीत एटले अंकुशादिक शस्त्रने अवगणना करतो एवो जे (इनं के०) हस्ती, तेने (आपतंतं के०) सन्मुख आवता एवाने (दृष्ट्वा के०) जोइने (नवत् के०) तमारा (आश्रितानां के०) आश्रय करीने रहेला एवा जनोने अर्थात् तमारा नक्त जनो जे ठे तेने (नयं के०) नय जे ठे ते (नोनवति के०) नथी थतुं ॥ ३४ ॥

हवे सिंहनयापहारि नगवानने दर्शावतो बतो कहे बे.

निन्नेनकुंनगलडुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रक
रनूषितनूमिनागः॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधि
पोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३५॥

अर्थः—(निन्न के०) नेदन करेला एवा जे (इनकुंन के०) हस्तिना कुंनस्थल, तेथकी (गलत् के०) नीचें खख्या, पड्या एवा (उज्ज्वल के०) उज्ज्वल ते रक्त श्वेत वर्ण युक्त एवा (शोणिताक्त के०) रुधिर व्याप्त एट ले लोहीथी खरडायेला एवा (मुक्ताफलप्रकर के०) मुक्ताफलना समूह तेणें करीने (नूषित के०) शोनाव्यो बे (नूमिनागः के०) पृथिवीनो नाग जेणें तथा (बद्धक्रमः के०) कीलित बे क्रम एटले पाद जेना एवो (हरिणाधिपोऽपि के०) अरण्य पशुउनो अधिप जे सिंह ते पण (ते के०) त मारा (क्रमयुगाचल के०) चरणयुगरूप पर्वत तेने (संश्रितं के०) आश्रय करीने रह्यो एवो पुरुष, जो ते सिंहनी (क्रम के०) फाल तेने विषे (गतं के०) प्राप्त थयो होय तो पण तेने ते सिंह (नाक्रामति के०) प्रहार क रवाने दोडतो नथी, एटले हे प्रनो! तमारा आश्रित जनोने पूर्वोक्त विशे षणवालो सिंह पण परानव करतो नथी ॥ ३५ ॥

हवे दावानल नयने दलन करतो बतो स्तवे बे.

कल्पांतकाल पवनोद्धतवन्हिकल्पं, दावानलं ज्व
लितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम्॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
खमापततं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्॥३६॥

अर्थः—हे कर्मकाननाग्ने! (कल्पांतकाल के०) प्रलय कालनो जे (पवन के०) वायरो तेनी सहायतायें करीने (उद्धत के०) जोरमां आवी गये लो एवो जे (वन्हि के०) अग्नि तेना (कल्पं के०) सदृश एवो अने (ज्व लितं के०) जाज्वल्यमान थयेलो अने (उज्ज्वलं के०) उज्ज्वल अने (उ त्फुलिंगं के०) उंचा गया बे तणखा जेना एवो तथा (अशेषं के०) स मस्त (विश्वं के०) जगत् तेने (जिघत्सुमिव के०) जाणे गली जवाने इज्ञा करतो होय नहीं? एवो जे (दावानलं के०) वनमां लागेलो अग्नि ते

अचानक (संमुखं के०) सन्मुख (आपतंतं के०) आवी प्राप्त थयो तेने (त्वन्नामकीर्त्तनजलं के०)तमारा नामनुं जे कीर्त्तन करवुं, ते रूप जल ते(अ शेषं के०) निरवशेष एवा अग्निने (शमयति के०) शांत करी मूके ठे. एटले विश्वने बाली नाखवानी इच्छा करनारो एवो जे दावाग्नि, ते पण तमारा नाम स्मरण रूप जलें करीने शांतताने पामे ठे. एवो तमारा कीर्त्तननो प्रनाव ठे, ते वारें तमारी आज्ञादिक पालवाथी शुं सर्वोत्कृष्टता प्राप्त न थाय ?॥ ३६ ॥

हवे उरगनय निवारण करतो ठतो कहे ठे.

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिन
मुत्फणमापतंतं ॥ आक्रामति क्रमयुगेननिरस्तशंक,
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥

अर्थः–(रक्तेक्षणं के०) रातां ठे नेत्र जेनां एवो अने (समद के०) मदोन्मत्त एवो तथा (कोकिल के०) कोकिल तेनो (कंठ के०) कंठ तेना सरखो (नीलं के०) श्यामवर्णवालो एवो अने (क्रोधोद्धतं के०) क्रोधें करीने नद्धत थयेलो तथा (उत्फणं के०) उंची करेली ठे फणा जेणें एवो जे (फणिनं के०) सर्प ते (आपतंतं के०) उतावलो सन्मुख आवतो होय तेने पण (निरस्तशंकः के०) शंका रहित थयो थको पोताना (क्रमयुगेन के०) चरण युगलें करीनें (आक्रामति के०) उल्लंघन करे ठे. ते कयो पुरुष उल्लंघन करे ठे ? तो के (यस्य के०) जे (पुंसः के०) पुरुषना (हृदि के०) हृदयने.विषे (त्वन्नाम के०) तमारा नाम रूप जे (नागदमनी के०) नागदमनीनामें औषधि नरेली ठे, ते तमारा नामरूप नागदमनी औषधियें करीने उग्र सर्पना नयथकी पण निःशंकित थाय ठे ॥ ३७ ॥

हवे रणनयापहरण करतो ठतो कहे ठे.

वल्गत्तुरंगगजगर्जितन्नीमनाद, माजौ बलं बल
वतामपि नूपतीनां ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखाप
विद्धं, त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशु निदामुपैति ॥ ३८ ॥

अर्थः–(जे आजौ के०) संग्रामने विषे (वल्गत् के०) युद्ध करता

एवा (तुरंग के०) घोडा ते जेने विषे दोडी रह्या छे अने (गज के०) हस्ती तेनी (गर्जित के०) गर्जना तेणें करी (भीम के०) भयंकर छे (नाद के०) शब्दो जेने विषे एवुं (बलवतामपिभूपतीनां के०) अतिशय बलवान् राजाउ तेनुं पण (बलं के०) सैन्य ते (त्वत्कीर्त्तनात् के०) तमारा नामना कीर्तनथकी (आशु के०) शीघ्र (भिदां के०) भेदनने (उपैति के०) पामे छे एटले तरत नाशी जाय छे, ते कोनी पेठें ? तो के (उद्यद्दिवाकर के०) उदय थयेलो एवो जे सूर्य, तेनां (मयूख के०) किरणो तेनी (शिखा के०) शिखाउ तेणें करीने (अपविद्ध के०) उत्क्षिप्त एटले भेदन थयेलुं एवुं (तमः के०) अंधकार तेज (इव के०) जेम होय नही ? अर्थात् सूर्यकिरणोयें करीने जेम अंधकार नाश पामे छे,तेम तमारा नाम ग्रहणप्रभावथकी शत्रुनुं सैन्य संग्रामने विषे पलायन थाय छे ॥ ३८ ॥

हवे वली पण प्रकारांतरें करीने संग्रामभयने निरास करतो छतो कहे छे.

कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणा
तुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितडुर्जयजेयपक्षा,
स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥

अर्थः-(कुंत के०) बरछी, तेमना (अग्र के०) अग्रभाग जे अणी तेणें करी (भिन्न के०) भेदेला एवा (गज के०) हस्ती तेना (शोणित के०) रुधिररूप (वारिवाह के०) जलना प्रवाह तेने विषे जे (वेगावतार के०) उतावलुं प्रवेश थवुं एटले रुधिररूप पाणीमां तणाइ जवाने तैयार थयेला तेमांथी (तरणातुर के०) फरी पाछा तरी नीकलवाने आतुर थयेला एवा जे (योध के०) सुभटो तेणें करीने (भीमे के०) भयंकर देखातुं एवुं (युद्धे के०) युद्ध तेनें विषे पण (त्वत्पाद के०) तमारा चरणारविंद ते रूप जे (पंकजवन के०) कमलवन तेने (आश्रयिणः के०) आश्रय करीने रह्या एवा जे पुरुष, ते (डुर्जय के०) नही जीताय एवा जे (जेयपक्षाः के०) शत्रुना वर्गो ते जेमणें (विजित के०) जीत्या छे एवा छता (जयं के०) जयने (लभंते के०) पामे छे ॥ ३९ ॥

हवे समुद्रभय निरास करतो छतो कहे छे.

अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभय

दोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयान
पात्रा, स्त्रासं विहाय नवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥४०॥

अर्थः–(कुनित के०) द्दोन पमाड्या ठे (नीषण के०) महानयंकर एवा (नक्रचक्रपाठीनपीठ के०) नक्र चक्र अने पाठीनपीठ एटले मत्स्य विशेष जीव जेने विषे एवा तथा (नयद के०) नय उत्पन्न करनारो एवो (उल्बण के०) नयंकर ठे (वाडवाग्नौ के०) वाडवाग्नि जेने विषे एवा (अंनोनिधौ के०) समुइने विषे (रंगत् के०) उबलता एवा (तरंग के०) तरंगो तेनां (शिखर के०) शृंगो तेनी उपर (स्थित के०) रह्युं ठे (यानपात्रा के०) वहाण जेमनुं एवा पुरुषो जे ठे, ते (नवतः के०) तमारा (स्मरणात् के०) स्मरणथकी (त्रासं के०) त्रासने (विहाय के०) त्याग करीने समुइ पा रनें (व्रजंति के०) पामे ठे. एटले इच्छित द्दीपांतरने विषे पहोंचे ठे ॥ ४० ॥

हवे रोगनयने निवारण करतो बतो स्तवे ठे.

उद्भूतनीषणजलोदरनारनुग्नाः, शोच्यां दशामु
पगताश्च्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदि
ग्धदेहा, मर्त्या नवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४१॥

अर्थः–हे जगन्नाथ ! (उद्भूत के०) उत्पन्न थयो एवो (नीषण के०) नयंकर (जलोदर के०) जलयुक्त होय ठे उदर जेणें करीने तेने जलोदर रोग कहियें अने ते जलोदर रोगना (नार के०) नारें करीने (नुग्नाः के०) वक्र थया एवा अने (च्युतजीविताशाः के०) त्याग करी ठे जीवितनी आशा जेमणें एवा अने (शोच्यां दशामुपगताः के०) शोक करवा योग्य एवी दशाने प्राप्त थया एवा अने (त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहाः के०) तमारां चरणकमलनुं जे रज ते रूप जे अमृत तेणें करी लिप्त ठे अंग जेमनां एवा (मर्त्याः के०) जीवो जे ठे ते, (मकरध्वजतुल्यरूपाः के०) काम देव समान ठे रूप जेनुं एवा (नवंति के०) होय ठे अर्थात् जेम अमृत लिप्तदेही पुरुष सकल शारीरिक रोगनाशें करीने कामदेव समान थाय ठे. तेम तमारां चरणारविंदरजें करी लिप्त अंग ठे जेनां एवा जीव पण सकल रोगक्षयें करीने कामदेव तुल्य रूप वाला थाय ठे ॥ ४१ ॥

हवे निगडादि बंधननुं जय टाळतो बतो कहे बे.

आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगड कोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाःस्म रंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधजया जवंति ॥ ४२ ॥

अर्थः—हे कर्मबंधनरहित ! (आपादकंठं के०) जेना पगथी मांमीने गला पर्यंत (उरुशृंखल के०) मोहोटी शृंखलाउ तेणें करी (वेष्टितांगा के०) वेष्टित बे एटले निबद्ध बे सर्व अंगो जेमनां एवा अने (गाढं के०) अत्यंत (बृहन्निगडकोटि के०) मोहोटी बेडीउ तेनी कोटियो जे जीणी अणी तेणें करीने (निघृष्टजंघाः के०) निःशेष पणायें करी घसाती बे जंघाउ जेमनी एवा डुःखित थयेला पुरुषो बतां (त्वन्नाम के०) तमारुं जे नाम ते रू प (मंत्र के०) मंत्र जे बे, तेने (अनिशं के०) रात्रि दिवस अर्थात् निरंत र (स्मरंतः के०) स्मरण करता एवा (मनुजाः के०) मनुष्यो, ते (सद्यः के०) तत्काल (स्वयं के०) पोतानी मेलें (विगतबंधजयाः के०) विशेषें करी गयुं बे बंधनजय जेमनुं एवा (जवंति के०) थाय बे ॥ ४२ ॥

हवे पूर्वोक्त सर्व जयने त्याग करतो बतो संक्षेपथी कहे बे.

मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिम होदरबंधनोबं ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं जिये व, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥

अर्थः—हे प्रजो! (यः के०) जे (मतिमान् के०) बुद्धिमान् पुरुष, (तावकं के०) तमारुं (इमं के०) आ (स्तवं के०) स्तवन जे बे तेने (अधीते के०) जणे बे, (तस्य के०) ते पुरुषने (मत्त के०) मदोन्मत्त एवो (द्विपेंद्र के०) महान् हस्ती अने (मृगराज के०) सिंह, तथा (द वानल के०) वनाग्नि तथा (अहि के०) सर्प अने (संग्राम के०) सं ग्राम, अने (वारिधि के०) समुद्र, तथा (महोदर के०) जलोदरादि रो ग, अने (बंधन के०) बंधीखानुं ए आठ वानां ते थकी (उबं के०) उ त्पन्न थयुं एवुं जे (जयं के०) जय ते (जियेव के०) बीकें करीनेज जे म होय नहिं? तेम (आशु के०) शीघ्र उतावलुं (नाशं के०) नाशने

(उपयाति के०) पामे ठे. अर्थात् आ तमारा स्तोत्रना पाठ करनारने पूर्वोक्त आठ प्रकारना नयनो नाश थाय ठे ॥ ४३ ॥

हवे स्तवनप्रनाव सर्वस्वने कहे ठे.

स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, नक्त्यामयारुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्त्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति नक्तामर नामकस्तोत्रं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र ! (तव के०) तमारी (इह के०) आ लोकने विषे (यः के०) जे (जनः के०) पुरुष, (स्तोत्रस्त्रजं के०) स्तोत्र तेज पद संदर्जित पणें करीनें जाणे मालाज होय नहिं? ते स्तोत्ररूप पुष्पमालाने (कंठगतां के०) पोताना कंठने विषे (अजस्त्रं के०) निरंतर (धत्ते के०) धारण करें ठे, (तं के०) ते (मान के०) चित्तनी उन्नति तेणें करीने (तुंगं के०) अत्यंत उन्नत थयेलो एवो पुरुष अथवा स्तोत्रना कर्त्ता श्री मानतुंगाचार्य ठे तेने (अवशा के०) अस्वतंत्र एवी जे (लक्ष्मीः के०) स्वर्गापवर्ग अने सत्काव्यरूप लक्ष्मी तेने, (समुपैति के०) पामे ठे. हवे ते स्तोत्र रूपस्त्रज केंहेवी ठे ? तो के मानतुंगाचार्यनामक एवो (मया के०) हुं जे तेणें (नक्त्या के०) नक्ति जे श्रद्धा, अथवा पुष्पमालापक्षें नक्ति जे विचित्र रचना तेणें करीने अने (गुणैः के०) प्रनुना गुणें करीने अथवा पुष्पमालापक्षें गुण जे सूत्र तेणें करीने (निबद्धां के०) बांधेली ठे, गुंथेली ठे. वली केहेवी ठे ? तो के (रुचिर के०) मनोहर एवा (वर्ण के०) बावन अक्षर तेज ठे (विचित्रपुष्पां के०) चित्र विचित्र पुष्पो जेनें विषे अने पुष्पमाला पक्षमां मनोहर ठे वर्ण जेनां एवा विचित्रपुष्पो ठे जेमां एवी ठे. आ स्तोत्रना अंतमां पुष्पस्त्रज शब्द जे ठे ते अनीष्ट शकुनपणायें करी महोत्सवना आनंदनो कारणनूत ठे अने लक्ष्मी शब्द जे ठे, ते मांगल्यवाची ठे, तेणें करी आ स्तोत्रना पाठ करनार तथा श्रवण करनार पुरुषने आ स्तोत्रनी समाप्ति पर्यंत कल्याण परंपरा थाशे. एवो नाव ठे ॥४४॥ इति नक्तामर स्तोत्रं सप्तमं स्मरणस्य बालावबोधम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री कल्याणमंदिरस्तोत्रनामकं अष्टम स्मरणं लिख्यते ॥

॥ वसंत तिलकावृत्तम् ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम
निंदितमंघ्रिपद्मं ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु,
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्यस्व
यं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न
विभुर्विधातुं ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्त
स्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥

अर्थः-(एषः के०) आ प्रत्यक्ष मूर्ख एवो (अहं के०) हुं सिद्धसेन दिवाकर नामा आचार्य ते (तस्य के०) ते श्रीपार्श्वनाथ (तीर्थेश्वरस्य के०) तीर्थ जे चतुर्विध संघ तेना ईश्वर तेनुं (किल के०) निश्चे (संस्तवनं के०) स्तवन तेने (करिष्ये के०) करीश, हवे ते श्रीपार्श्वनाथ तीर्थेश्वर कहेवा छे ? तो के (कमठ के०) दश जन्मनो छे वैरभाव जेने एवो जे कमठनामा दैत्य तेनो (स्मय के०) अहंकार तेने विषे (धूमकेतोः के०) पूछडीआ तारा सरखा छे एटले कमठ दैत्यनो गर्व नाश करवाने धूमकेतु सदृश छे, वली कहेवा छे ? तो के (सुविस्तृतमतिः के०) विस्तार पामी छे बुद्धि जेनी एवो (स्वयं के०) पोतें (सुरगुरुः के०) बृहस्पति जे छे ते पण (यस्य के०) जे श्रीपार्श्वनाथना (गरिमा के०) महिमा जे तेनो (अंबुराशेः के०) समुद्र तेनुं जे (स्तोत्रं के०) स्तवन तेने (विधातुं के०) करवाने (नविभुः के०) समर्थ थतो नथी, एवा श्रीपार्श्वनाथनी हुं स्तवना करवाने क्यांथी समर्थ थाउं ? तथापि स्तवना करुं छुं, ते शुं करीने स्तवना करुं छुं ? तो के (जिनेश्वरस्य के०) ते श्रीजिनेश्वर तेना (अंघ्रिपद्मं के०) चरणकमल तेने (अभिनम्य के०) नमस्कार करीने स्तवना करुं छुं. हवे ते चरणकमल कहेवुं छे ? तो के (कल्याणमंदिरं के०) कल्याण एटले मांगलिक तेनुं मंदिर एटले घर छे, वली कहेवुं छे ? तो के (उदारं के०)

महोटुं छे अथवा जव्य जीवोना मनोवांछित अर्थ देवाने उदार छे तथा वळी कहेवुं छे? तों के (अवद्य के०) असत्य जे पाप तेने (जेदि के०) जेदनारुं छे, ते माटे अवद्यजेदि छे, वळी कहेवुं छे? तो के (जीत के०) संसारजयें त्रास पामता जे जीवो तेने (अजय के०) मोक्ष तेने (प्रदं के०) प्रकर्षें करीने देनारुं एवुं छे, वळी कहेवुं छे? तो के (अनिंदितं के०) निंदा रहित छे अर्थात् जेने विषे अणु मात्र पण दोषनो संजव नथी, वळी कहेवुं छे? तो के (संसारसागर के०) संसाररूप जे समुद्र तेने विषे (निमज्जत् के०) बूडता एवा जे (अशेषजंतु के०) समग्र प्राणीउ तेने (पोतायमानं के०) वाहाण सरखुं एवुं जिनेश्वरनुं चरणकमळ छे. आ स्तोत्रना श्लोक सर्वे वसंततिलकावृत्तें जाणवा. आ बे श्लोकनो एकठो अर्थ वखाण्यो ॥ २ ॥

हवे जगवाननी सर्व प्रकारें विशेषें करीने स्तुति करवाने तो हुं समर्थ नथी परंतु सामान्यें करीने पण प्रजुनी स्तुति करवाने हुं असमर्थ छुं, एम देखाडेछे.

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप,मस्मादृशाः क
थमधीश जवंत्यधीशाः॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि
वादिवांधो,रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

अर्थः-(अधीश के०) हे स्वामिन्! (अस्मादृशाः के०) माह्हारा सरखा मंदमति पुरुषो जे छे, ते (सामान्यतोपि के०) सामान्य पणे एटले विशेषविरहित्वें करीने पण (तव के०) तमारुं (स्वरूपं के०) स्वरूप जे छे तेने (वर्णयितुं के०) वर्णन करवाने (कथं के०) केम (अधीशाः के०) समर्थ (जवंति के०) थाय? अर्थात् थाता नथी. त्यां दृष्टांत कहे छे, जेम केः-(यदिवा के०) जो पण (कौशिकशिशुः के०) घूडनो बालक, ते (घर्मरश्मेः के०) सूर्यबिंबना (रूपं के०) स्वरूपने (किं के०) शुं (प्ररूपयति के०) कहि शके? (किल के०) निश्चें अर्थात् नथी कही शकतो. हवे ते कौशिकशिशु केहेवो छे? तो के (धृष्टोपि के०) दृढ हृदय पणायें करीने प्रगल्ज छे तो पण (दिवांधः के०) दिवसने विषे अंध छे ॥३॥

हवे हुं तो मंदमति छुं, तेथी महारामां स्तुति करवानुं सामर्थ्य न होय ते योग्यज छे परंतु केवल ज्ञानी पुरुषो, केवलज्ञानें करीने सर्व जाणता छता पण जिनगुणोने कहेवाने समर्थ थाता नथी, ते कहे छे.

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गण
यितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि
यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे नाथ ! (मोहक्षयात् के०) मोहनीयादिक कर्मना क्षयथकी अथवा अज्ञानक्षयथकी (अनुभवन्नपि के०) गुणोने अनुभव करतो एटले तमारा गुणोने जाणतो छतो पण (मर्त्यः के०) मनुष्य जे छे ते, (नूनं के०) निश्चें (तव के०) तमारा (गुणान् के०) गुणो जे छे तेने (गणयितुं के०) गणवाने एटले संख्या करवाने (न क्षमेत के०) न समर्थ थाय. त्यां दृष्टांत केहे छे, जेम केः-(ननु के०) आशंकाने विषे (यस्मात् के०) जे कारण माटे (कल्पांत के०) प्रलयकालने विषे (वांत के०) विक्षिप्त थयुं छे (पयसः के०) जल जेने विषे एवो (जलधेः के०) समुद्र जे छे तेनो (प्रकटोऽपि के०) प्रत्यक्ष एवो पण (रत्नराशिः के०) रत्ननो समूह ते (केन के०) कोण पुरुषें (मीयेत के०) मापी शकाय ? अर्थात् कोईथी पण प्रमाण करी शकाय नहीं ॥ ४ ॥

हवे जो पण भगवानना गुणो तो असंख्य छे ते कहेवाने अशक्य छुं, तो पण भक्तिवशथकी स्वशक्त्यानुसारें हुं स्तुति करुं छुं.

अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि,कर्त्तुं स्तवं लसद
संख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं
वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे नाथ ! हुं (जडाशयोऽपि के०) जडअंतःकरणवालो वा जडना सरखाभिप्राय वालो छुं तो पण (तव के०) तमारुं (स्तवं के०) स्तवन जे छे तेने (कर्त्तुं के०) करवाने (अभ्युद्यतोस्मि के०) उद्यम युक्त थयो छुं, एटले सावधान थयो छुं. ते तमे केहेवा छो ? तो के (लसत् के०) देदीप्यमान एवा जे (असंख्यगुण के०) अनंत गुणो तेना (आकरस्य के०) निधानरूप छो. तेज अर्थने दृष्टांतें करीने दृढ करे छे. (बालोपि के०) बालक पण (निजबाहुयुगं के०) पोताना बे हाथने (वितत्य के०) विस्तारीने (स्वधिया के०) पोतानी बुद्धियें करीने (अंबुराशेः के०) समुद्र जे छे

तेनी (विस्तीर्णतां के०) विस्तारता जे छे तेने (किं के०) शुं (न कथयति के०) नही कहे छे, अर्थात् कहेछेज, एटले जेम बालक पोताना बे हाथ पसारीने समुद्रनो विस्तार कहे छे, जे समुद्र आटलो महोटो छे, तेम बालकनी पेरें हुं पण तमारुं स्तवन करवाने कर्यो छे उद्यम जेणें एवो छुं ॥ ५ ॥

फरी पूर्वें कहेला बे श्लोकोनाज अर्थने दृढ करतो छतो कहे छे.

ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

अर्थः—(ईश के०) हे स्वामिन् ! (ये के०) जे (तव के०) तमारा (गुणाः के०) गुणो जे छे ते (योगिनामपि के०) रत्नत्रय रूप योगाराधने करीने समुत्पन्न छे ज्ञान जेमने एवा योगींद्र पुरुषोनें पण (वक्तुं के०) कहेवामां (नयांति के०) आवी शकता नथी तो (तेषु के०) ते गुणोने विषे (मम के०) म्हारी (अवकाशः के०) बोलवानी शक्ति ते (कथं के०) केम (भवति के०) होय ? (तत् के०) ते कारण माटे (एवं के०) ए प्रकारें (इयं के०) आप्रस्तुतस्तुतिविषय ते (असमीक्षितकारिता के०) अविचार्यकारिता (जाता के०) थइ, केम के ? अनवकाशने विषे जे स्तुति करवी ते अविचार्यकारीज कहेवाय छे. अहिं दृष्टांत कहे छे. (वा के०) अथवा (ननु के०) निश्चें (पक्षिणोपि के०) पक्षियो पण यद्यपि मनुष्य वाणीयें करी बोलवाने असमर्थ छे तो पण (निजगिरा के०) पोतानी वाणीयें करीने (न जल्पंति के०) नथी बोलता शुं ? अर्थात् बोलेज छे, तेम हुं पण स्तुति करवाने प्रवर्त्त्यो छुं ॥६॥

हवे भगवत्स्तोत्रनुं तथा भगवन्नामग्रहणनुं माहात्म्य कहे छे.

आस्तामचिंत्यमहिमा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतोजगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोनिलोऽपि ॥ ७ ॥

अर्थः—(जिन के०(हे जिनेश्वर ! (अचिंत्यमहिमा के०) नथी चिंतन करवा योग्य महिमा जेनो एवो (ते के०) तमारो (संस्तवः के०) स्तव

जे ठे ते तो (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (जवतः के०) तमारुं (नामा पि के०) श्रीपार्श्वनाथ एवुं नाम जे ठे ते पण (जवतः के०) संसारथकी (जगंति के०) त्रण जगत्‌ने (पाति के०) रक्षण करे ठे. त्यां दृष्टांत कहे ठे. (पद्मसरसः के०) कमलोपलक्षित एवा तलावनुं जे पाणी ते तो (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु ते पद्मसरोवरनो (सरसः के०) सुंदर ठंमो जलशीकर युक्त एवो (अनिलोऽपि के०) वायरो पण (निदाघे के०) ग्रीष्मकालने विषे (तीव्र के०) आकरो एवो (आतप के०) तडको तेणें करीने (उपहत के०) हणाणा एवा (पांथजनान् के०) पंथी जनोने (प्रीणाति के०) संतोष करे ठे. अर्थात् पद्मसरोवरनो वायरो पण पथिकोने प्रसन्न करे ठे, तेवारें जलनुं तो शुंज कहेवुं? तेम हे प्रजो! तमारुं नाम पण त्रण जगत्‌ने पवित्र करे ठे, तेवारें तमारा स्तोत्रनी तो शी वार्त्ता कहेवी? ॥ ७ ॥

हवे स्वामीना ध्याननुं माहात्म्य कहे ठे.

हृद्वर्त्तिनि त्वयि विजो शिथिलीजवंति, जंतोः क्षणेन
निविडाअपि कर्मबंधाः ॥ सद्योजुजंगममयाइव म
ध्यजाग, मभ्यागते वनशिखंमिनि चंदनस्य ॥८॥

अर्थः—(विजो कें०) हे स्वामिन्! (त्वयि के०) तमो (हृद्वर्त्तिनि के०) हृदयने विषे वर्त्तते ठते (जंतोः के०) प्राणीना (निविडाअपि के०) दृढ एवा पण (कर्मबंधाः के०) कर्मना जे बंध ते पण (क्षणेन के०) क्षणमात्रें करीने (शिथिलीजवंति के०) शिथिल थइ जाय ठे, एटले निविडताने ठोडीने शिथिलताने जजे ठे, अहीं दृष्टांत कहे ठे. जेम केः—(वनशिखंमिनि के०) वननो मयूर ते (मध्यजागं के०) वनना मध्यजाग प्रत्यें (अभ्यागते के०) आवे ठते (चंदनस्य के०) चंदनना वृक्षना जे (जुजंगममयाइव के०) सर्पमयबंधन जे ठे तेज जेम (सद्यः के०) तत्काल शिथिल थइ जाय ठे, तेनी पेरें जाणी लेवुं. एटले जेम वनमयूर वनना मध्यजागें आवे ठते चंदनवृक्षनां सर्पवेष्टन शिथिल थइ जाय ठे, तेम तमें पण प्राणीना हृदय मध्ये आवे ठते ते प्राणीना दृढ कर्मबंध पण शिथिल थइ जाय ठे ॥ ८ ॥

हवे स्वामीना दर्शननुं माहात्म्यं कहे छे.

मुच्यंतएव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवश
तैस्त्वयि वीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि
दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ए ॥

अर्थः—(जिनेंद्र के०) हे सामान्य केवलीना इंद्र ! (त्वयि के०) तमो (वीक्षितेपि के०) जोये छते पण (मनुजाः के०) मनुष्यो (सहसा के०) शीघ्रपणे करीने (रौद्रैः के०) नयानक बीहामणा एवा (उपद्रवशतैः के०) उपद्रवोना जे शेंकडा ते थकी (मुच्यंतएव के०) मुकाइ जाय छेज. अहीं दृष्टांत कहे छे. जेम केः—(स्फुरिततेजसि के०) देदीप्यमान छे तेज जेनुं एटले जगत्मां प्रकाश करवे करीने विस्तृत छे तेज जेनुं एवो (गोस्वामिनि के०) गो जे किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गो जे पृथिवी तेनो स्वामी जे राजा ते पण स्फुरित छे प्रताप जेमनो एवो छे अथवा गो एटले पशुउ तेनो स्वामी जे गोवालीउ ते पण बलरूप स्फुरित छे तेज जेनुं एवो छे. एवा ए त्रणें जे छे ते, (दृष्टमात्रे के०) दृष्टमात्रें एटले जोवाये थके (प्रपलायमानैः के०) पलायन करता नासता एवा (चौरैः के०) चोरो थकी (इव के०) जेम (आशु के०) शीघ्र उतावला (पशवइव के०.) पशुउ जे गो महिष्यादि चोपगां जनावरो जेम मूकाय छे. तेम जीवो पण तमो जोवाये थके शेंकडा उपद्रवोथकी मूकाय छे, ए तात्पर्य छे ॥ ए ॥

हवे स्वामीना ध्याननुं माहात्म्य कहे छे.

त्वं तारकोजिन कथं नविनां तएव, त्वामुद्वहंति ह
दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनू
न, मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुनावः ॥ १० ॥

अर्थः—(जिन के०) हे जिनेश्वर ! (त्वं के०) तमें (नविनां के०) संसारी जीवोना (कथं के०) केम (तारकः के०) तारक छो ? (यत् के०) जे कारण माटे उलटा (तएव के०) ते संसारी जीवोज (उत्तरंतः के०) संसार समुद्रने उतरता छता (हृदयेन के०) हृदयें करीने (त्वां के०) तमोने (उ

द्वहंति के०) वहन करे ले, माटे तमें केवी रीतें संसारी जीवोना तारक लो ? कारण के वाह्य वाहकमां वाह्यने तारक पणानो असंनव ले, जेम नाव ले ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषोनें तारे ले परंतु नावमां रहेला पुरुषो कांइ नावने तारता नथी, तेम नव्य जीवो पण तमोने पोताना हृदयमां राखीने तारे ले परंतु तमें ते नव्य जीवोने तारो, ते तो मोहोटुं आश्चर्य ले. हवे एवा तर्कनुं समाधान करे ले के, हे प्रनो ! तमेंज नव्योने तारो लो ते (यद्वा के०) युक्त ले. अहीं दृष्टांत कहे ले (यत् के०) जे कारणमाटे जेम (दृतिः के०) चर्ममयपात्र एटले चामडानी मसक जे ले ते (नूनं के०) निश्चें (जलं के०) नद्यादिकना पाणी प्रत्यें (तरतिके०) तरे ले (सएष के०) ते आ प्रत्यक्ष (अंतर्गतस्य के०) ते मसकनी मध्यवर्त्तियें आव्यो एवो जे (मरुतः के०) पवन तेनोज (किल के०) निश्चें (अनुनावः के०) प्रनाव ले,एटले चर्मनी मसकना मध्यगत जे वायु ले ते जेम मसकनो तारक ले, तेम नव्य जीवोना हृदयस्थ तमें लो, माटें तमें पण नव्योना तारक लो, एमां शुं अयुक्त ले ? ॥ १० ॥

हवे त्रण श्लोकें करीने जगवंतनुं राग द्वेष विरहितपणुं देखाडे ले.

यस्मिन् हरप्रनृतयोऽपि हतप्रनावाः, सोऽपि त्वया
रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतनुजः पय
साथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥

अर्थः–(यस्मिन् के०) जे कामदेवने विषे (हरप्रनृतयोऽपि के०) हर हरि विरंचि प्रमुख पण (हतप्रनावाः के०) हणाणो ले प्रनाव जेमनो एवा थाय ले, अर्थात् जे कामदेवें हरहर्यादिक देवोने जीत्या ले. (सोपि रतिपतिः के०) ते कामदेव पण (त्वया के०) तमोयें (क्षणेन के०) क्षणमात्रें करीने (क्षपितः के०) क्षय पमाड्यो. ए अर्थ कह्यो, परंतु दृष्टांत विना प्रतीत थाय नहीं, माटे अहीं दृष्टांत कहे ले. (अथ के०) अथ पद दृष्टांत उपन्यासार्थ ले. (येन के०) जे (पयसा के०) जलें (हुतनुजः के०) अग्निउ (विध्यापिताः के०) बूजावी दीधा (तदपि के०) तो पण ते पाणी जे ले ते (दुर्द्धरवाडवेन के०) दुस्सहवडवानलें (किं न पीतं के०) शुं न पीधुं ? अर्थात् पीधुंज एटले जे जले अन्य अग्निउ बूजा

व्या एवुं पण समुद्गत जे जल, ते वडवानलें शोषण कर्युं, तेमज जे का मदेवें हरहर्यादिक जीत्या, तेज काम तमोयें जीत्यो छे. आ श्लोक करे थके श्रीपार्श्वनाथनी मूर्त्ति प्रगट थइ ते, सर्वत्र प्रसिद्ध छे ॥ ११ ॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथ
मद्दो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघ
वेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रजावः ॥ १२ ॥

अर्थः–(स्वामिन् के०) हे स्वामिन्! तमोने (प्रपन्नाः के०) स्वामी पणायें करी पाम्या एवा (जंतवः के०) प्राणीउं (अनल्पगरिमाणमपि के०) घणुं महोटापणुं छे जेमनुं एवा पण (त्वां के०) तमोने (हृद ये के०) हृदयने विषे (दधानाः के०) धारण करता थका (अहो के०) आश्चर्ये (अतिलाघवेन के०) थोडा पण जारना अजावें करीने (जन्मो दधिं के०) जवसमुद्रने (लघु के०) शीघ्रपणे जेम होय तेम (कथं के०) केम (तरंति के०) तरे छे? अर्थात् अत्यंत जारें करीने युक्त एवा तमें छो तेने हृदयने विषे धारण करता छता जाणे थोडा पण जारें करीने रहितज होय नहिं? एवा थका संसार समुद्रथकी जव्यजीवो केम तरे छे? केम के जे अतिजार युक्त होय, ते तो तरवाने असमर्थ होय छे. अहीं (य दिवा के०) समाधान अर्थमां छे माटे समाधान कहे छे. (हंत के०) निश्चें (महतां के०) त्रण जगत्मां उत्तम एवा मोहोटा पुरुषोनो ए (प्रजावः के०) महिमाज छे. माटे एमां (न चिंत्यः के०) चिंतवन करवा योग्य कांइ पण नथी, कारण के अत्यंत जार युक्त एवा जीवने पण पोताना प्रजावथी जा णे सर्वथा जार रहितज होय नहिं? तेवी रीतें महोटा पुरुषो करे छे माटें तमो जव्य जीवोने तारो छो, तेमां आश्चर्य नहिं ? ॥ १२ ॥

क्रोधस्त्वया यदि विजो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदाव
त कथं किल कर्मचोराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरा
पि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥

अर्थः–(विजो के०) हें स्वामिन्! (त्वया के०) तमोयें (यदि के०) ज्यारें (क्रोधः के०) क्रोध जे छे, ते (प्रथमं के०) प्रथमज (निरस्तः के०) परास्त कर्यो एटले दूर कीधो (तदा के०) त्यारें पछी क्रोध विना

(बत के०) आश्चर्य बे के (कर्मचौराः के०) कर्मरूप चोरो जे बे ते (कथ ध्वस्ताः के०) केवी रीतें हण्या ? (किल के०) निश्चे. अर्थात् तमें क्रोध विनाज कर्मचोरोने हण्या, ए मोहोटुं आश्चर्य ? (यदिवा के०) समाधान अर्थमां जेम केः—(अमुत्र के०) आ (लोके के०) लोकने विषे (शिशिरापि के०) शीतल एवी पण (हिमानी के०) हिमसंहति जे बरफ तें (नीलद्रुमाणि के०) नीलां बे वृक्षो जेने विषे एवां (विपिनानि के०) वन जे तेने (किं के०) शुं (न प्लोषति के०) न बाले बे? अर्थात् बाले बेज. एटले जे शीतल एवी हिमसंहति बे ते नीलां वृक्षनां वनोने दहन करे बे, तेम क्रोध रहित एवा तमो पण कर्मचोरोने हणो बो, ते युक्तज बे ॥ १३ ॥

हवे योगियोयें ध्यान करवा योग्य जिनस्वरूपने कहे बे.

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृद
यांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किम
न्य, दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥

अर्थः—(जिन के०) हे जिन ! (योगिनः के०) महर्षियो जे बे ते (हृदयांबुजकोशदेशे के०) हृदयरूप जे कमल तेना कोश एटले कली तेना मध्यप्रदेशनें विषे (परमात्मरूपं के०) सिद्धस्वरूप एवा (त्वां के०) तमोने (सदा के०) निरंतर (अन्वेषयंति के०) ज्ञानचक्षुयें करीने जोवे बे, ए अर्थ युक्त बे. (यदिवा के०) अथवा जेमः—(ननु के०) निश्चें (निर्मलरुचेः के०) निर्मल बे रुचि एटले कांति जेमनी एवुं अने (पूतस्य के०) पवित्र एवुं (अक्षस्य के० कमलनुं बीज जे बे तेनुं (कर्णिकायाः के०) कर्णिकाथकी (अन्यत् के०) बीजुं एटले कमलमध्यप्रदेश टालीने बीजुं (पदं के०) स्थानक (किं संभवि के०) शुं संभवे बे ? ना संभवतुं नथी. त्यारे शुं संभवे बे ? तो के कमलनी कर्णिकाज संभवे बे. तेम तमें पण निर्मलरुचि युक्त तथा सकल कर्ममलना अपगमथकी पवित्र थयेला एवा बो ए माटें तमारुं पण योगींद्रोना हृदयकमल कर्णिकारूपस्थानकनें विषे रहेवुं थाय बे, ते योग्यज बे ॥ १४ ॥

हवे तमारा ध्यान करनारा पण तमारी जेवाज थाय, ते कहे बे.

ध्यानाज्जिनेश भवतोभविनः क्षणेन, देहं विहाय

परमात्मदशां व्रजंति ॥तीव्रानलाडुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥

अर्थः—(जिनेश के०) हे जिनेश ! (भविनः के०) भव्य प्राणीयो जे छे ते (भवतः के०) तमारा (ध्यानात् के०) ध्यानथकी अथवा स्मरणथकी (क्षणेन के०) एक क्षणमात्रें करीने (देहं के०) शरीरने (विहाय के०) त्याग करीने (परमात्मदशां के०) सिद्धावस्थाने (व्रजंति के०) पामे छे. केहेलुं छे के, " वीतरागं यतोध्यायन्, वीतरागोभवेद्भवी ॥ ईलिका भ्रमरीभीता, ध्यायंती भ्रमरी यथा ॥ १ ॥ " एनो अर्थ एम छे जे, वीतरागनुं ध्यान करतो छतो जीव, वीतरागरूप थाय छे, केनी पेठें ? तो के भ्रमरीथकी बीक पामती एवी जे ईल, ते भ्रमरीनुं ध्यान करती छतीज भ्रमरीरूप थाय छे. अहिं दृष्टांत कहे छे. ते जेम केः—(लोके के०) लोकने विषे (धातुभेदाः के०) मृत्तिका पाषाण विशेषो जे छे ते (तीव्रानलात् के०) प्रबल अग्निथकी (उपलभावं के०) पाषाण भाव जे छे तेने (अपास्य के०) टालीने (अचिरात् के०) थोडा समयमां (चामीकरत्वमिव के०) सुवर्णपणानेज जेम (व्रजंति के०) पामे छे, तेम प्राणीयो जे छे, ते तमारा ध्यानथकी देहने त्याग करीने सिद्धावस्थाने पामे छे ॥ १५ ॥.

अंतःसदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुभावाः ॥१६॥

अर्थः—(जिन के०) हे जिन ! (भव्यैः के०) भव्य प्राणीउ जे छे ते मणें (यस्य के०) जे देह तेना (अंतः के०) मध्यभाग एटले जे हृदय तेने विषे (सदैव के०) निरंतर (त्वं के०) तमो (विभाव्यसे के०) विशेषें करी विचाराउ छो, चिंतवन थाउ छो, (तदपि के०) तो पण तमें ते भव्यना (शरीरं के०) शरीर जे तेने (कथं के०) केम (नाशयसे के०) दूर करो छो ? अर्थात् ते भव्य जीवोने मुक्ति पमाडीने शरीर रहित करो छो, माटे जे स्थानमां भव्य जीव तमोने चिंतवन करे छे ते स्थान तमारे नाश करवुं योग्य नही. अहीं दृष्टांत कहे छे, जेम केः—(अथ के०) अथ शब्द अर्थ उ

पन्यासने माटे ले. (महानुनावाः के०) महोटो ले प्रनाव जेमनो एवा (म ध्यविवर्त्तिनः के०) मध्यस्थ अपक्षपाति पुरुष जे ले तेनुं (एतत्स्वरूपं के०) एवुंज स्वरूप ले एटले स्वनाव ले के (यत् के०) जे कारण माटे (विग्र ह के०) वढवाड जे मांहो मांहे थता क्लेश, तेनो परस्पर विवाद तेने (प्रश मयंति के०) उपशमावे ले. तेम तमें पण शरीर अने जीवनो परस्पर विग्र ह टालवाने शरीरनो नाश करो लो, ते (हि के०) निश्चें युक्तज ले. ॥ १६॥

आत्मा मनीषिनिरयं त्वदनेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्र
नवतीह नवत्प्रनावः॥पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्य
मानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र! (मनीषिनिः के०) पंमितो जे ले ते मणें (अयं के०) आ (आत्मा के०) जीव ते, (त्वदनेदबुद्ध्या के०) तमारी साथें अनेद बुद्धियें करीने (ध्यातः के०) ध्यान कस्यो लतो (नव त्प्रनावः के०) तमारा सरखो ले महिमा जेनो एवो (इह के०) आ सं सारने विषे (नवति के०) थाय ले. त्यां दृष्टांत कहे ले. जेम केः–(नाम के०) नामशब्द कोमलामंत्रणमां ले अथवा प्रसिद्ध अर्थमां ले. (पानी यमपि के०) जल जे ले ते पण (अमृतं के०) अमृत ले (इति के०) ए प्रकारें (अनुचिंत्यमानं के०) चिंतन कसुं लतुं अथवा मणिमंत्रादिकें करी संस्कारित कसुं लतुं (विषविकारं के०) विषना विकारने (किं के०) शुं (नो अपाकरोति के०) नथी दूर करतुं ? अर्थात् अमृत बुद्धियें चिंतन कसुं अथवा मंत्रित कसुं एवुं जल पण अमृत तुल्य थइने विषविकारने टालेज ले ॥ १७ ॥

हवे अन्यदर्शनीयोयें पण नामांतर कल्पनायें करी श्री वीत रागदेवज ध्यान करेला ले, ते कहे ले.

त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विनो हरिह
रादिधिया प्रपन्नाः॥ किं काचकामलिनिरीश सितो
पिशंखो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥

अर्थः–(विनो के०) हे स्वामिन् !(नूनं के०) निश्चें (परवादिनोपि

के०) परतीर्थिक पण (हरिहरादिधिया के०) विष्णु, महेश्वर अने ब्रह्मादिकनी बुद्धियें करीने (त्वामेव के०) तमोनेज (प्रपन्नाः के०) आश्रय करीने रहेला छे, अर्थात् अन्यदर्शनी जे शैव, सांख्य, नैयायिकादिको जे छे ते पण नामांतर परावर्त्त करीनें तमारुं आराधन करे छे. ते तमें कहेवा छो ? तो के (वीततमसं के०) अज्ञान रहित छो अहीं दृष्टांत कहे छे के हे ईश ! (काचकामलिभिः के०) काचकामलिनामें रोग छे जेनी आंखमां एवा पुरुषो जे छे, तेणें (सितोपि के०) श्वेत एवो पण (शंखः के०) शंख जे छे ते (विविधवर्णविपर्ययेण के०) नील, पीतादिक विविध प्रकारना वर्ण परावर्त्त करीने (किं न गृह्यते के०) शुं नथी ग्रहण करातो ? एटले ग्रहण करायज छे. अर्थात् जेम कमलाना रोगवालो पुरुष उज्ज्वल शंखनें पण जूदा जूदा वर्णे करी जूवे छे, तेम अन्य तीर्थि पुरुषोयें पण वीतराग एवा जे तमें तेने आ हरि, आ हर. आ ब्रह्मा, एवी बुद्धियें करीने आराधन कराय छे ॥ १७ ॥

हवे आठ काव्योयें करी आठ महाप्रातिहार्य सूचनद्वारा भगवाननें स्तुति करे छे तेमां प्रथम अशोकवृक्षातिशयनें कहे छे.

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा, दास्तां जनो भव
ति ते तरुरप्यशोकः ॥ अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरु
होपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥

अर्थः—हे स्वामिन् ! (धर्मोपदेशसमये के०) धर्मदेशनाना अवसरने विषे (ते के०) तमारा (सविधानुभावात् के०) समीपना प्रभावथकी (जनः के०) लोक जे छे तेतो (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (तरुरपि के०) वृक्ष जे छे ते पण (अशोकः के०) शोक रहित (भवति के०) थाय छे. हवे एज वातने दृष्टांतें करीने समर्थन करे छे. (वा के०) अथवा (दिनपतौ के०) सूर्य जे छे ते (अभ्युद्गते के०) उदय पामे थके (समहीरुहोपि के०) वृक्षादिकें सहित एवो पण (जीवलोकः के०) जीवलोक जे समस्त जगत् ते (विबोधं के०) विकाशत्वने (किं के०) शुं (न उपयाति के०) न पामे ? अर्थात् पामेज छे, एटले जेम सूर्योदय थयाथी केवल लोकज निद्रानो त्याग करीने विबोधने पामे छे एटलुंज नहीं परंतु वनस्पति जे छे ते पण पत्रसंकोचादि लक्षण निद्रानो त्याग करीने विकाश

पणाने पामे छे, तेम तमारा समीपथकी केवल नविकलोकज अशोक थाय छे एटलुंज नही परंतु वृक्ष पण अशोक थाय छे ॥ १९ ॥

हवे सुरकृत पुष्पवृष्टिलक्षण द्वितीय प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

चित्रं विजो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्य
विरला सुरपुष्पवृष्टिः ॥ त्वगोचरे सुमनसां यदिवा
मुनीश, गछंति नूनमधएव हि बंधनानि ॥ २० ॥

अर्थः-(विजो के०) हे स्वामिन् ! (अविरला के०) निरंतर (सुरपुष्प वृष्टिः के०) देवताउएं करेली जे पुष्पनी वृष्टि ते (विष्वक् के०) चारे तरफ (अवाङ् के०) नीचुं छे (मुख के०) मुख जेनुं एवुं जे (वृंतं के०) बीट ते (एव के०) जेम होय तेमज (कथं के०) केम (पतति के०) आकाशथकी नूमिने विषे पडे छे. ए (चित्रं के०) आश्चर्य छे. हवे (यदिवा के०) एनुं दृष्टांतें करी समाधान करे छे अथवा (मुनीश के०) हे मुनीश ! (त्वगोचरे के०) तमो प्रत्यक्ष छते तमारा समीपने विषे (सुमनसां के०) शोजायमान छे मन जेमनां एवा नव्यजनो तथा देवताउ तेउंना (बंधनानि के०) निगडादिक बाह्य बंधन अने स्नेहादिक अभ्यंतर बंधन ते (नूनं के०) निश्चें (हि के०) यस्मात् जे कारण माटे (अधएव के०) नीचेंज (गछंति के०) जाय छे अर्थात् तमारा समीपें सुमनस जे फूल तेना बीट जे बंधन ते अधोमुख थाय छे,अने सुमनस जे नव्यजीव, तेना बाह्याभ्यंतर बंधन पण नीचां थाय छे ॥२०॥

हवे दिव्यध्वनिलक्षण तृतीय प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

स्थाने गनीरहृदयोदधिसंनवायाः, पीयूषतां तव
गिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगना
जो, नव्या व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥

अर्थः-हे स्वामिन् ! (गनीर के०) गंनीर एवो जे (हृदयोदधि के०) हृदय रूपसमुद्र तेथकी (संनवायाः के०) उपनी एवी जे (तव के०) तमारी (गिरः के०) वाणी तेना (पीयूषतां के०) अमृतत्वने श्रोताउ (समुदीर

यंति के०) कहे छे, ते (स्थाने के०) युक्तज छे. कारण के अमृतनी उत्पत्ति तो समुद्र थकीज छे अने आ वाणीरूप अमृतनी उत्पत्ति तो हे प्रभो! तमारा हृदयरूप समुद्रथकी थाय छे. हवे ए वाणीने अमृतपणुं केम घटे? त्यां कहे छे. (यतः के०) जे कारण माटे (परम के०) उत्कृष्ट (संमद के०) हर्ष तेनो (संग के०) संयोग तेना (भाजः के०) भज नार एवा (भव्याः के०) भव्य प्राणीउं जे छे ते तमारी वाणीने (पीत्वा के०) पान करीने एटले कर्णेंद्रियें करी आदर सहित सांभळीने (तरसापि के०) शीघ्रपणे एटले वेगें करीने पण (अजरामरत्वं के०) अजरामरपणाने (व्रजंति के०) पामे छे अर्थात् जेम अमृतपान जे करे छे, ते अजरामर थाय छे, तेम तमारी वाणीना श्रवणथकी पण अजरामरपणुं प्राप्त थाय छे, माटे तमारी वाणीने अमृतपणुं कह्युं ते योग्यज छे ॥ २१ ॥

हवे चामरलक्षण चोथो प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो, मन्ये वदंति शु
चयः सुरचामरौघाः॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंग
वाय, ते नूनमूर्द्ध्वगतय. खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

अर्थः—वळी स्तुति करतो छतो कहे छे के (स्वामिन् के०) हे स्वामिन्! हुं (मन्ये के०) एम मानुं छुं जे (शुचयः के०) पवित्र एवा (सुरचामरौ घाः के०) देवताउयें वींजेला एवा जे चामरोना समूह, ते (सुदूरं के०) अत्यंत पणे (अवनम्य के०) नीचा नमीने फरी (समुत्पतंतः के०) उंचा उछळता छता आ प्रकारें (वदंति के०) कहे छे. के (ये के०) जे मनुष्यो (अस्मै के०) आ प्रत्यक्ष एवा (मुनिपुंगवाय के०) मुनिउने विषे प्रधान जे श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेने (नतिं के०) नमस्कार तेने (विदधते के०) करे छे, (ते के०) ते मनुष्यो (खलु के०) वाक्यालंकारमां छे (नूनं के०) निश्चे थकी (उर्द्धगतयः के०) उंची छे गति जेनी एवा थाय छे तथा (शुद्धभावाः के०) शुद्ध छे भाव जेमनो एवा थाय छे. अर्थात् चामरो कहे छे के अमो पण प्रभु आगळ नीचां नमीने पछी उंचा चडीयें छैयें, तेम बीजा पण जे प्रभुने नमस्कार करनारा भव्य जीवो छे, ते ऊर्ध्वगतिने पामशे ॥ २२ ॥

हवे पांचमो सिंहासननामें प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासमस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वां ॥ आलोकयंति रभसेन नदंत मुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! आ संसारक्षेत्रने विषे (भव्यशिखंडिनः के०) भव्यरूप शिखंडी जे मोर छे ते (इह के०) आ समवसरणनेविषे (त्वां के०) तमोने (उज्ज्वल के०) निर्मल देदीप्यमान (हेमरत्न के०) सुवर्ण तथा रत्न तेणें मिश्रित एवा (सिंहासनस्थं के०) सिंहासनने विषे बेठा थका अने (श्यामं के०) श्यामवर्ण युक्त तथा (गभीर गिरं के०) गंभीर छे वाणी जेमनी एवा तमोने (रभसेन के०) उत्सुक पणायें करीने (आलोकयंति के०) जोवे छे, ते केवी रीतें जोवे छे? तो के (चामीकराद्रि के०) मेरुपर्वत तेना (शिरसि के०) शिखर तेने विषे (उच्चैः के०) उंचे स्वरें करी (नदंतं के०) शब्द करतो एटले गर्जना करतो एवो (नवांबुवाहं के०) नवीन मेघनेज (इव के०) जेम. अर्थात् अहिं मेरुपर्वतने स्थानकें सिंहासन जाणवुं, अने मेघने स्थानकें प्रभुनुं श्याम शरीर जाणवुं, तथा गर्जनाने स्थानकें प्रभुनी वाणी समजवी ॥ २३ ॥

हवे भामंमलाख्य छठो प्रतिहार्यातिशय कहे छे.

उद्गछता तव शितिद्युतिमंमलेन, लुप्तछदछविरशोकतरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! (तव के०) तमारुं (उद्गछता के०) उंचुं जातुं एवुं अथवा प्रसरतुं एवुं (शितिद्युतिमंमलेन के०) श्याम जे प्रभा तेनुं जे मंमल अर्थात् भामंमल तेणें करीने (लुप्त के०) लोपाणी छे एटले आछादित थइ छे (छद के०) पानडानी (छविः के०) छबी एटले कांति अर्थात् रक्तता जेनी एवो (अशोकतरुः के०) अशोकवृक्ष ते (बभूव के०) होतो हवो. ए अर्थ युक्तज छे, केम के (यदिवा के०) अथवा (वीतराग के०) गयो छे राग अने द्वेष जे थकी एवा हे वीतराग!

(तव के०) तमारा (सान्निध्यतोऽपि के०) सान्निध्यथकी पण एटले तमारुं वचनश्रवण तथा तमारुं रूपदर्शन तो दूर रहो, परंतु तमारा सान्निध्यथकी पण (सचेतनोपि के०) चेतनायें करी सहित एवो पण एटले अचेतन अशोक तो दूर रहो पण चेतना सहित जे होय ते पण (कः के०) कोण (नीरागतां के०) नीरागताने एटले निर्ममत्वने वैराग्यने (न के०) नहीं (व्रजंति के०) पामे? अर्थात् तमारा सानिध्यथी जीव अवश्य नीरागी थायज ॥ २४ ॥

हवे देवडुंडुनिलक्षण सातमा प्रातिहार्यातिशयने कहे छे.

भोभोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृति
पुरिं प्रति सार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देवजग
त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरडुंडुभिस्ते ॥ २५ ॥

अर्थः—(मन्ये के०) हुं एम मानुं छुं के, (देव के०) हे देव! (ते के०) तमारो (सुरडुंडुभि के०) देवडुंडुभि जे छे ते (अभिनभः के०) आकाशने अभिव्यापीने (नदन् के०) शब्दायमान थयो छतो (जगत्रयाय के०) त्रण जगत्ने (एतत् के०) आ प्रकारें (निवेदयति के०) निवेदन करे छे जेम केः—(भोभोः के०) हे जगत्रयजनो! तमें (प्रमादं के०) आलस तेने (अवधूय के०) त्याग करीने (आगत्य के०) आवीने (एनं के०) ए जे श्रीपार्श्वप्रभु तेने (भजध्वं के०) भजो. ते केवा पार्श्वप्रभु छे? तो के (निर्वृतिपुरिंप्रति के०) निवृत्तिपुरि जे मोक्षपुरि ते प्रत्यें (सार्थवाहं के०) मार्गवाहक एवा छे. अर्थात् ते सुरडुंडुभि कहे छे के हे लोको! तमे प्रमाद दूर करीने मोक्षदायक एवा पार्श्वप्रभुने भजो ॥ २५ ॥

हवे छत्रत्रयनामक आठमा प्रातिहार्यातिशयने कहे छे.

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुर
यंविहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितात
पत्र, व्याजात्रिधा धृततनु र्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

अर्थः—(नाथ के०) हे स्वामिन्! (अयं के०) आ तमारा उपर जे त्रण छत्र छे, ते त्रण छत्र नथी, परंतु शुं छे? तो के (मुक्ता के०) मोती

तेना (कलाप के०) समूह, तेणें करी (कलित के०) सहित अने (उ ल्लसित के०) उल्लसित एवा जे (आतपत्र के०) त्रण छत्र तेना (व्या जात् के०) मीषें करीने (तारान्वितः के०) तारामंडल सहित छतो (ध्रु वं के०) निश्चयथकी (त्रिधा के०) त्रण प्रकारनुं (धृततनुः के०) धारण कर्युं छे शरीर जेणें एवो (विधुः के०) चंद्रमा जे छे ते तमारी सेवा कर वाने अर्थे जाणियें (अभ्युपेतः के०) तमारी पासें आव्यो होय नहीं? ते चंद्रमा केहवो थको आव्यो छे तो के (विहताधिकारः के०) विशेषें करी ने हणाणो छे जगत्ने विषे उद्योत करवा रूप अधिकार एटले व्यापार जे नो एवो छे. ते व्यापार शा वास्ते हणाणो? तो के (भवता के०) त मोयें (भुवनेषु के०) त्रण भुवन जे छे ते (उद्योतितेषु के०) प्रकाशित करे छते एटले तमें जगत्नो प्रकाश कर्यो तेवारें चंद्रमाने प्रकाश करवानो अ धिकार विफलीभूत थयो ॥ २६ ॥

हवे रत्नादिनिर्मित वप्रत्रयने विषे मध्यस्थायिपणुं तथा देवेंद्रवंद्य त्व एवां लोकोत्तर अतिशय द्वयनें काव्य द्वयें करीने कहे छे.

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रताप
यशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रवि
निर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥२७॥

अर्थः–(भगवन् के०) हे भगवन्! तमें (अभितः के०) चारे पासें (माणिक्य के०) नील रत्न अने (हेम के०) सुवर्ण तथा (रजत के०) रूपुं, तेणें करीने (प्रविनिर्मितेन के०) प्रकर्षे करीने निर्मित करेलो एवो जे (सालत्रयेण के०) त्रण गढ,त्रिगडो गढ तेणें करीने (विभासि के०) शो भो छो,बिराजो छो, एटले एक गढ रत्नमय, बीजो सुवर्णमय, अने त्रीजो रौ प्यमय, एवा त्रण गढे करीने तमें शोभो छो, ते केनी पेठें शोभो छो तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे छे, ते जेम केः–(स्वेन के०) पोतानां एटले प्रभु नां (प्रपूरित के०) प्रकर्षे करीने पूर्युं छे (जगत्त्रय के०) त्रण जगत् जेणें तेणें करी (पिंडितेन के०) पिंडीभूत थइने रह्यां एवां (कांति के०) शरीरनो वर्ण अने (प्रताप के०) प्रताप तथा (यशसां के०) यश तेमना (संचयेन के०) संचयें करीनेज एटले समूहें करीनेज (इव के०) जा

णीयें होय नहीं ? अर्थात् कांति, प्रताप, अने यश तेना समूहेंज जाणे शोजे बे केम के नीलरत्नना गढने प्रजुना श्यामवर्णनी सदृशता बे. तथा सुवर्णना गढने जगवानना प्रतापनी सदृशता बे, तथा रूपाना गढने जगवानना यशनी सदृशता बे माटे ए उत्प्रेक्षा करी, ते योग्यज बे ॥ २७ ॥

दिव्यसृजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्न
रचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति जवतो यदि
वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥

अर्थः-(जिन के०) हे जिन ! (दिव्यसृजः के०) मनोहर जे पुष्पनी मालाउ बे ते (नमत्त्रिदशाधिपानां के०) तमारा चरणने नमेला एवा जे देवेंद्रो तेमना (रत्नरचितानपि के०) वैडूर्य मणिरत्नोयें रचित एवा पण (मौलिबंधान् के०) मुकुटो जे बे तेने (उत्सृज्य के०) त्याग करीने (जवतो के०) तमारा (पादौ के०) चरणारविंदने (श्रयंति के०) आश्रय करे बे, एटले इंद्रोना मुकुटमां रहेलीउ जे पुष्पमालाउ बे ते मुकुटनो त्याग करीने जगवानना चरणारविंदमां पडे बे. अहीं दृष्टांत कहे बे.-(यदिवा के०) अथवा (सुमनसः के०) पंमित अथवा देवताउ जे बे ते (त्वत्संगमे के०) तमारा संगम बते (परत्र के०) अन्य स्थानकें (न रमंतएव के०) नथीज रमता. कारण के तेउ तमारा संग बतेज आनंद पामे बे, तेम पुष्पनुं नाम पण सुमनस बे माटे पुष्पमालायें जे तमारा चरणारविंदनो आश्रय कर्यो, ते युक्तज बे ॥ २८ ॥.

हवे जिनोक्तमार्गने जे आश्रय करीनें रह्या बे, तेने जिन तारे बे ते कहे बे.

त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसु
मतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सत
स्तवैव, चित्रं विजो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२ए॥

अर्थ,-(त्वं के०) तमें (नाथ के०) हे स्वामिन् ! (जन्मजलधेः के०) जवसमुद्रथकी (विपराङ्मुखोपि के०) विशेषें करी पराङ्मुख थयेला बता पण (निजपृष्ठलग्नान् के०) तमारी पोतानी वांसे वलगेला एवा (असुमतः के०) प्राणीउंजे बे तेने (यत् के०) जे कारण माटे

(तारयसि के०) तारो, छो, ते (पार्थिवनिपस्य के०) विश्वना स्वामी अने (सतः के०) सुज्ञ एवा (तवैव के०) तमोनेज (हि के०) निश्चें (युक्तं के०) युक्त छे. त्यां दृष्टांत कहे छे. जेम पार्थिव जे पृथिविनी मृत्तिका तेथकी उत्पन्न थयेलो एवो (निप के०) घट छे ते पण पाणी उपर रह्यो छतो तेना पृष्ठदेशमां लागेला जनोने तारे छे, तेम तमें पण पार्थिव निप छो माटे तमारी पूंठें वलगेला जनोने संसारसमुद्रथकी तारो छो, ते युक्तज छे परंतु अहींआं (चित्रं के०) एक आश्चर्य छे, ते शुं आश्चर्य छे ? तोके (यत् के०) जे कारण माटे (विनो के०) हे स्वामिन् ! तमो (कर्मविपाकशून्यः के०) ज्ञानावरणादिक आठ कर्मना विपाक जे फल तेथी शून्यः एटले रहित (असि के०) छो अने पार्थिवनिप जे माटीमय घट छे तेतो कुंनकारादिकृत पचनादिक क्रियायें करी युक्त छे, तेथी ते कर्मविपाकशून्य नथी, माटे एटलुंज तमारामां आश्चर्य छे ॥ २ए ॥

हवे विरोधालंकारगर्जित एवा जिनना अचिंत्य स्वरूपने कहे छे.

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृ
तिरप्यलिपिस्त्वमीश॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचि
देव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

अर्थः—(जनपालक के०) जन जे लोक तेनुं पालन करे, तेने जनपालक कहियें. तेना संबोधनमां हे जनपालक ! (त्वं के०) तमें (विश्वेश्वरोपि के०) विश्व जे त्रण जगत् तेना ईश्वर छो तो पण (दुर्गतः के०) दरिद्री छो. अहीं जे विश्वनो ईश्वर होय ते दरिद्री केम होय ? ए विरोधालंकार छे, ते विरोधनो परिहार करे छे, के तमें विश्वेश्वर छो तो पण (दुर्गतः के०) दुःखें करीने ज्ञात छो जाणवा योग्य छो. अथवा " जनपालकदुर्गतः " ए शब्दनां आवी रीतें पद काहाडीने अर्थ करवो, जेम केः—(जनप के०) हे जनप ! तमें (अलक के०) केश तेणें करी (दुर्गतः के०) दरिद्री छो, एटले तमारे दीक्षाग्रहणानंतर केशवृद्धिनो अनाव छे (वा के०) अथवा पक्षांतरे (त्वं के०) तमें (ईश के०) हे स्वामिन् ! (किं के०) शुं (अक्षरप्रकृतिरपि के०) अक्षर एटले मोक्षस्वनावी छो, तो पण (अलिपिः के०) ब्राह्मी आदिक लिपियें करी रहित वर्त्तो छो एटले जे अक्षर स्वनावी

होय, तेतो लिपिरूप होय, ए पण विरोध छे ते विरोधनो परिहार करे छे. (अक्षर के०) स्थिर छे निश्चल छे (प्रकृतिः के०) स्वनाव जेनो ते अक्षरप्रकृति कहियें, अर्थात् शाश्वत रूप छो, अथवा अक्षर जे मोक्ष तेज छे प्रकृति एटले स्वनाव जेनो एवा तथा (अलिपिः के०) नथी कर्मरूप लेप जेने एवा तमें छो तथा (अज्ञानवत्यपि के०) अज्ञानवाला एवा पण (त्वयि के०) तमारे विषे निश्चेंथकी (विश्वविकाशहेतुः के०) त्रण जगत्ने प्रकाश करवानुं हेतुनूत एवुं जे (ज्ञानं के०) ज्ञान ते (सदैव के०) निरंतर (कथंचित् के०) केमज (एव के०) निश्चें (स्फुरति के०) स्फुरे छे? एटले जे अज्ञानवान् होय,तेनें ज्ञान स्फुरे नही, ए विरोध छे,ते विरोधना परिहारने माटे कहे छे. अज्ञान् अने अवति ए बे पद जूदां करीने अर्थ करवो, त्यारे (अज्ञान् के०) ज्ञान रहित एवा जे मूर्खजन तेने (अवति के०) सम्यक् बोध करे छते (त्वयि के०) तमारे विषे ज्ञान स्फुरे छे ॥ ३० ॥

हवे जे जिननी अवज्ञा करे छे, तेने ते अवज्ञा अनर्थनें माटे थाय छे, ते त्रण काव्यें करी कहे छे.

प्राग्नारसंनृतननांसि रजांसि रोषा, डुबापितानि
कमठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ हता
हताशो, ग्रस्तस्त्वमीनिरयमेव परं डुरात्मा ॥ ३१ ॥

अर्थः—(नाथ के०) हे नाथ! (कमठेन के०) कमठासुर जे तेणें (रोषात् के०) कोपथकी एटले कषायना उदयथकी (यानि के०) जे (रजांसि के०) रजो, तमारा उद्देशें करीने (उन्नापितानि के०) उफाडीयो (तैः के०) ते रजोयें करीने (तव के०) तमारी (छायापि के०) शरीरनी छाया एटले कांति ते पण (न हता के०) न हणाणी, ते रज केवीयो छे? तो के (प्राग्नार के०) अधिक पणायें करीने (संनृत के०) नर्यां छे व्याप्यां छे (ननांसि के०) आकाशो जेणें एवी छे. हवे ते कमठासुर केहेवो छे? तो के (शठेन के०) मूर्ख एवो छे. (परं के०) परंतु (हताशः के०) हणाणी छे आशा जेनी एवो (डुरात्मा के०) डुष्ट छे आत्मा जेनो एवो (अयमेव के०) एज कमठासुर ते पोतेंज (अमीनिः के०) एज रजोयें करीने (ग्रस्तः के०) व्याप्त थयो. अर्थात् रज जे पापरूप कर्म तेणें करीने पोतेंज व्याप्त थयो ॥ ३१ ॥

यज्गर्जदुर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसल
मांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि
दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३१॥

अर्थः-(जिन के०) हे जिन ! (दैत्येन के०) कमठासुर जे छे तेणें (दुस्तर के०) दुःखें तरवा योग्य एटले असह्य एवुं (वारि के०) पाणी ते (यत् के०) जे कारणें उपसर्ग करवाने माटे तमारा उपर (मुक्तं के०) मूक्युं वर्षाव्युं, (अथ के०) एटला थकी अनंतर हवे (तेनैव के०) तेज पाणीयें (तस्य के०) ते कमठासुरने (दुस्तरवारिकृत्यं के०) भूंमी तरवारनुं कार्य (दध्रे के०) कीधुं एटले माठी तरवारें करी जेम छेदन भेदन थाय तेम संसारने विषे छेदन भेदनादिक लक्षण जे कार्य ते कर्युं, अर्थात् भगवाननी उपर जलप्रक्षेप जे कर्यो, ते सांसारिक दुःखहेतु छे माटे दुस्तर तरवारनी पेरें कमठासुरने पोतानेज छेदन भेदन वधादिकनो हेतु थयो, हवे ते दुस्तर पाणी वर्षाव्युं ते केहेवुं छे ? तो के (गर्जत् के०) गर्जना करतो अने (उर्जित के०) प्रबल बलवंत एवो छे (घनौघं के०) मेघनो समूह जेने विषे एवुं छे, तथा वली केहेवुं छे ? तो के (अदभ्रभीमं के०) घणुं भयंकर एवुं छे, वली केहेवुं छे ? तो के (भ्रश्यत के०) आकाशथकी पडती एवी (तडित् के०) वीजली छे जेने विषे एवुं छे, वली केहेवुं छे ? तो के (मुसल के०) मुशलना सरखी (मांसल के०) पुष्ट छे अने (घोर के०) बीहामणी भयंकर एवी छे (धारं के०) धारा जेने विषे एवुं छे ॥ ३२ ॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड, प्रालंबभृद्भय
दवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितो
यः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥

अर्थः-हे स्वामिन् ! कमठ नामा दैत्य जे छे, तेणें (यः के०) जे (प्रेतव्रजः के०) दैत्यनो समूह (भवंतं के०) तमारी (प्रति के०) प्रत्यें (ईरितः के०) प्रेर्यो (सः के०) ते दैत्यसमूह (अपि के०) पण (अस्य के०) ए कमठासुरनेज (प्रतिभवं के०) भवभवने विषे (भवदुःखहेतुः के०) संसारनां जे दुःख तेनो कारण (अभवत् के०) होतो हवो.

हवे ते दैत्यसमूह केहेवो ले ? तो के (ध्वस्त कें०) नीचें पड्या एवा जे (ऊर्ध्वकेश के०) उपरना केश तेणें करीने (विकृताकृति के०) विरूप थइ ले आकृतिउ जेनी एवां जे (मर्त्यमुंम के०) मनुष्यनां माथां तेनुं (प्रालंब के०) फूलतुं एटले हृदय पर्यंत अवलंबित एवुं जे कुमएुं तेनें (नृत् के०) धारण करे ले एवो प्रेतव्रज ले, वली केहेवो ले ? तो के (नय द के०) नयने देनारां एवां जे (वक्र के०) मुख तेथकी (विनिर्यद ग्निः के०) निकलेल ले अग्नि जेने एवो प्रेतव्रज ले ॥ ३३ ॥

हवे जे प्राणी जिननुं आराधन करे ले, तेनी प्रशंसा करे ले.

धन्यास्तएव नुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति वि
धिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ नक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदे
हदेशाः, पादद्वयं तव विनो नुवि जन्मनाजः ॥३४॥

अर्थः–(नुवनाधिप के०) हे त्रण जगत्ना अधिपति ! तथा विनो के०) हे स्वामिन् ! (तएव के०) तेज जनो (धन्याः के०) धन्य ले एट ले प्रशंसनीय ले, ते कया जनो धन्य ले ? तो के (ये के०) जे (जन्मना जः के०) नव्य जनो (नुवि के०) पृथिवीने विषे (विधिवत् के०) विधिपूर्वक एटले नलें प्रकारें करी (त्रिसंध्यं के०) त्रणे कालें (तव के०) तमारुं (पादद्वयं के०) चरणयुगल जे ले, तेने (आराधयंति के०) आराधन करे ले एटले सेवे ले ते जन धन्य जाणवा. ते केवा जनो ले ? तो के (विधुतान्यकृत्याः के०) विशेषें करी टाल्या ले अन्यकृत्यो एटले बीजां कार्यो जेमणें एवा ले, वली केहेवा ले ? तो के (नक्त्योल्लसत् के०) नक्तियें करी उल्लास पामतो एवो जे (पुलक के०) रोमांच तेणें करी (पक्ष्मल के०) व्याप्त ले (देहदेशाः के०) शरीरना नाग जेमना एवा ले ॥ ३४ ॥

हवे आठ काव्यें करीने ग्रंथकर्त्ता पोतानी विज्ञप्तिने कहे ले.

अस्मिन्नपारनववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्र
वणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवि
त्रमंत्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

अर्थः–(मुनीश के०) हे मुनीश ! (मन्ये के०) हुं एम मानुं लुं के

(अस्मिन् के०) आ (अपारजववारिनिधौ के०) नथी पार जेनो एवो जे संसाररूप पाणीनो समुद्र, तेने विषे तमें (मे के०) महारा श्रवण गोचरतां के०) कानना विषय ते प्रत्यें (न गतः के०) न प्राप्त थयेला एवा (असि के०) छो, एटले में आ संसार समुद्रने विषें तमोने कोइवारें पण सांजव्या नथी. एज वातने समर्थन करे छे, ते जेम केः—(वा के०) अथवा जो (तव के०) तमारा (गोत्रपवित्रमंत्रे के०) नामरूप जे पवित्रमंत्र ते (आकर्णिते तु के०) श्रवण करे छते पण (विपद्विषधरी के०) आपदा रूप जे सर्पिणी छे ते (किं के०) शुं (सविधं के०) समीप (समेति के०) आवे ? अर्थात् तमारुं नाम सांजव्या पछी तो आपदा आवे नही. अने मने तो आ संसाररूप आपत्तिउ आवेली छे तेथी एम मानुं छुं, के में पूर्वजवोने विषे क्यारें पण तमारुं नाम सांजस्युं नथी ॥३५॥

जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महि
तमीहितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराज
वानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥

अर्थः—(देव के०) हे देव ! (मन्ये के०) हुं मानुं छुं संजावना करुं छुं के (मया के०) में (जन्मांतरेपि के०) जमांतरने विषे पण (तव के०) तमारुं (पादयुगं के०) चरणयुगल जे छे तेने (न महितं के०) नथी पूज्युं, चरणयुगल केहेवुं छे ? तो के (ईहित के०) वांछित तेनुं जे (दान के०) देवुं तेने विषे (दक्षं के०) चतुर एवुं छे, हवे तेज कहे छे. जे (मुनीश के०) हे मुनीश ! (तेन के०) ते कारण माटे (अहं के०) हुं (इह के०) आ (जन्मनि के०) जन्मने विषे (मथिताशयानां के०) मथन कर्यो छे चित्तनो आशय जेमणें एवा (पराजवानां के०) पराजवो जे तेमनुं (निकेतनं के०) स्थानक (जातः के०) थयो, अर्थात् तमारां चरणारविंदनो पूजक, पराजवनुं स्थानक होतो नथी, परंतु में पूर्व जवोने विषे तमारां चरणारविंद क्यारें पण पूज्यां नथी, एम जासे छे ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृ
दपि प्रविलोऽकितोसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मा
मनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥

अर्थः–(विभो के०) हे स्वामिन्! (नूनं के०) निश्चें में (पूर्वं के०) प्रथम (सकृदपि के०) एकवार पण तमो (न के०) नहिं (प्रविलोकितोसि के०) जोयेला छो, ते हुं केहेवो ? तो के (मोहतिमिरावृतलोचनेन के०) मोहरूप तिमिर जे अंधकार तेणें आवृत थयां छे नेत्र जेनां एवो छुं. शा माटे नथी जोया ? तो के (हि के०) जे कारण माटे (अन्यथा के०) जो तमारुं दर्शन कर्युं हत तो (एते के०) आ, (अनर्थाः के०) अनर्थरूप कष्टो (मां के०) मुजने (कथं के०) केम ? (विधुरयंति के०) पीडे छे. अर्थात् पूर्वें जो तमारुं दर्शन थयुं हत तो आ अनर्थो मुने पीडत नही. हवे ते अनर्थो केहेवा छे ? तो के (मर्माविधः के०) मर्म स्थानने भेदनारा छे तथा वली केहेवा छे ? तो के (प्रोद्यत्प्रबंधगतयः के०) प्रकर्षें करी प्राप्त थइ छे सविस्तर कर्म प्रबंध तेनी प्रवृत्ति जेने एवा छे ॥३७॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःख पात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः ३८॥

अर्थः–(जनबांधव के०) जन जे लोक तेना बांधव एटले हितकर्त्ता अर्थात् हे जनहितकारिन्! (मया के०) हुं जे तेणें कोइ भवने विषे तमो (आकर्णितोऽपि के०) सांभल्या पण तथा (महितोऽपि के०) पूज्या पण तथा (निरीक्षितोऽपि के०) दीठा पण परंतु (नूनं के०) निश्चें (भक्त्या के०) भक्तियें करीने (चेतसि के०) चित्तने विषे (नविधृतोसि के०) धारण करेला नथी. (तेन के०) ते कारण माटे (दुःखपात्रं के०) दुःखनुं पात्र, हुं (जातोऽस्मि के०) उत्पन्न थयेलो छुं. (यस्मात् के०) जे कारण माटे (क्रियाः के०) आकर्णितादिक क्रियाउ जे छे, ते (भावशून्याः के०) भावें करी रहित एवी छती (न के०) नहिं (प्रतिफलंति के०) विशिष्ट फल देवावाली थाय छे ॥ ३८ ॥

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९॥

अर्थः—(नाथ के०) हे स्वामिन्! (दुःखिजनवत्सल के०) दुःख छे जेने ते दुःखी कहियें, अने दुःखी एवा जे जनो तेने विषे वत्सल एटले कृपापर तेना संबोधनमां हे दुःखिजनवत्सल! (हेशरण्य के०) शरणे आवेला प्राणीने हितकारक तेना संबोधनमां हे शरण्य! तथा (कारुण्यपुण्यवसते के०) कारुण्य जे दयापणुं तेनी पुण्य एटले पवित्र वसति एटले स्थानक तेना संबोधनने विषे हे कारुण्यपुण्यवसते! अथवा कारुण्य जे दया अने पुण्य जे धर्म अर्थात् दया धर्मनी वसति एटले घर एवा तथा (वशिनांवरेण्य के०) वश छे इंद्रियो जेमने एवा जितेंद्रिय पुरुषोमां वरेण्य एटले श्रेष्ठ तेना संबोधनने विषे हे वशिनांवरेण्य! तथा (महेश के०) महोटा एवा ईश जे स्वामी तेनें महेश कहियें तेना संबोधननें विषे हे महेश! (नक्त्या के०) नक्तियें करीने (नते के०) नमस्कार कस्यो छे जेणें एवा (मयि के०) मारे विषे (दयां के०) कृपा जे तेनें (विधाय के०) करीने (दुःखांकुर के०) दुःखनो अंकुर जे उत्पत्तिस्थानक तेनुं (उद्दलन के०) खंमन तेने विषे (तत्परतां के०) तत्परपणुं तेने (विधेहि के०) करो ॥ ३ए ॥

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो,वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥४०॥

अर्थः—हे स्वामिन्! तथा (नुवनपावन के०) हे त्रण जगतने पवित्र करनार! (त्वत्पादपंकज के०) तमारा चरणारविंदना (शरणं के०) शरण तेने (आसाद्य के०) पामीने (अपि के०) पण (प्रणिधानवंध्यः के०) प्रणिधान जे तमारुं ध्यान करवुं तेणें करीने वांजित थयो एटले शून्य थयो एवो (अस्मि चेत् के०) जो हुं छुं तो (वध्यः के०) रागादिक शत्रुयें करी हणवा योग्य छुं, ए कारण माटे (हा के०) हा इति खेदे (हतोस्मि के०) दुर्दैवें मारेलो छउं. हवे तमारुं पादपंकज केहेवुंछे? तो के (निःसंख्य के०) असंख्य एटले अनंत एवुं जे (सार के०) बल तेनुं (शरणं के०) घर एवुं छे तथा (शरण्यं के०) शरण करवा योग्य छे, वली केहेवुं छे ? तो के (सादित के०) क्षय पमाड्या छे (रिपु के०)

रागादिक वैरी जेणें, तेणें करीनें (प्रथित के०) प्रसिद्ध छे (अवदात के०) प्रजाव जेनो एवुं छे॥ ४० ॥

देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक
विन्नो नुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाहृद
मां पुनी हि, सीदंतमद्य नयदव्यसनांबुराशेः ॥४१॥

अर्थः-(देवेंद्र के०) देवतानो जे इंद्र तेणें (वंद्य के०) वंदन करवा योग्य तत्संबोधने हे देवेंद्रवंद्य ! वली (विदित के०) जाण्यो छे (अखिल के०) समग्र (वस्तु के०) वस्तुनुं (सार के०) रहस्य जेणें, तेना संबोधनमां हे विदिताखिलवस्तुसार ! तथा (संसारतारक के०) हे संसारसमुद्रथकी तारनार ! (विन्नो के०) हे समर्थ ! तथा (नुवनाधिनाथ के०) हे त्रिनुवनना नाथ ! तथा (देव के०) हे देव ! तथा (करुणाहृद के०) करुणाना द्रह, उपलक्षणथी हे करुणाना समुद्र ! (अद्य के०) हमणां (सीदंतं के०) सीदातो विषादने प्राप्त थयो एवो (मां के०) मुजने (नयद के०) नयनो देनारो एवो (व्यसनांबुराशेः के०) व्यसननो जे समुद्र तेथकी (त्रायस्व के०) रक्षण करो अने (पुनीहि के०) पापनो नाश करी पवित्र करो ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ नवदंघ्रिसरोरुहाणां, नक्तेः फलं कि
मपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शर
ण्य नूयाः, स्वामी त्वमेव नुवनेऽत्र नवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे नाथ ! (यदि के०) जो (नवदंघ्रिसरोरुहाणां के०) तमारां चरणारविंदसंबंधी (नक्तेः के०) नक्तिनुं (किमपि के०) कांइ पण (फलं के०) फल (अस्ति के०) छे (तत् के०) तो (शरण्य के०) हे शरणागतवत्सल ! (त्वदेकशरणस्य के०) जेने तमारुंज एक शरण छे एवा (मे के०) मने (अत्र के०) आ (नुवने के०) लोकने विषे तथा (नवांतरेपि के०) नवांतरने विषे (त्वमेव के०) तमेज (स्वामी के०) स्वामी (नूयाः के०) थाउ. हवे पूर्वोक्त नक्ति केहेवी छे ? तो के (संततिसंचितायाः के०) निरंतर संताननी परंपरायें संचेली

एटले वृद्धिंगत थइ एवी छे. तथा अहिं चरणनुं तो युगल छे तथापि "अंघ्रिसरोरुहाणां" ए बहु वचन लख्युं छे ते पुण्यत्वज्ञापनने माटे छे ॥४१॥

हवे कवि स्तवननो उपसंहार करतो छतो तथा पोताना नाम ने प्रकाश करतो छतो कहे छे.

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्याः ॥४३॥ जननयनकुमुदचंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥.४४ ॥ युग्मम् ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरनामकं अष्टमस्मरणं समाप्तम् ॥ ८ ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र ! तथा (विभो के०) हे स्वामिन् ! तथा (जननयनकुमुदचंद्र के०) जन जे मनुष्य तेना नेत्ररूप जे चंद्रविकासि कमल, तेने विषे चंद्रमा समान तेना संबोधनने विषे हे जननयनकुमुदचंद्र ! अहिं अभ्यंतरमां कवियें श्रीसिद्धसेन दिवाकराचार्यें दीक्षा समयमां गुरुयें दीधेला कुमुदचंद्र एवा पोताना नामनुं पण सूचन कर्युं छे. (ये के०) जे (भव्याः के०) भव्यप्राणीउ (इत्थं के०) एम पूर्वोक्त प्रकारें (विधिवत् के०) विधिपूर्वक, (तव के०) तमारा (संस्तवं के०) स्तोत्रने (रचयंति के०) रचे छे (ते के०) ते भव्यप्राणीउ, (अचिरात् के०) थोडाएक कालमां (मोक्षं के०) अनंतज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, स्वरूप निःश्रेयसने (प्रपद्यंते के०) पामे छे. शुं करीने पामे छे ? तो के (स्वर्गसंपदः के०) देवलोकनी संपदाना सुखने (भुक्त्वा के०) भोगवीने, ते केवी स्वर्ग संपदा ? तो के (प्रभास्वराः के०) प्रकर्ष एटले अत्यंत भास्वर नाम देदीप्यमान एवीउ, तथा ते भव्यो केहेवा छे ? तो के (समाहितधियः के०) समाधिवाली ध्यानयुक्त निश्चल छे बुद्धि जेनी एवा छे, वली केहेवा छे ? तो के (सांद्रोल्लसत् के०) आकरो, उल्लास पामतो एवो (पुलक के०) रोमांच तेणें (कंचुकित के०) कंचुकें करी सहित छे (अंगभागाः के०) शरीरनो देश

जेनो एवा, वळी केहेवा छे? तो के (त्वद्बिंब के०) तमारुं जे प्रतिबिंब तेनुं (निर्मल के०) मलरहित एवुं जे (मुखांबुज के०) मुखकमल तेने विषे (बद्धलक्षाः के०) बांध्युं छे लक्ष एटले ध्यान जेमणें एवा, तथा वळी केहेवा छे? तो के (विगलित के०) विशेषें करीने गळी गयो छे (मलनिचयाः के०) कर्मरजोलक्षण मलसमूह जेमनो एवा छे. अर्थात् आ प्रकारना कहेला एवा, जे भव्यप्राणीउ तमारुं संस्तवन करे छे. ते स्वर्गलोकमां देवताउ थइने त्यां स्वर्ग सुखोने भोगवी फरी मनुष्य भव पामीने थोडाक काळमां शिवसुखने पामे छे ॥ आ स्तोत्रमां प्रायः दरेक श्लोकमां मंत्रो छे परंतु रूडी रीतें अहीं कहेला नथी, माटे ते गुरुना आम्नायथी जाणवा ॥४४॥ इति श्री कल्याणमंदिरनामकं अष्टमं स्मरणं संपूर्णम् ॥ ८ ॥

॥ अथ ॥

॥ बृहच्छांतिस्तवनामकं नवमं स्मरणं प्रारभ्यते ॥

भो भो भव्याः शृणुत वचनं, प्रस्तुतं सर्वमे
तत्; येयात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभा
जांः ॥तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा;
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥

अर्थः–(भोभोभव्याः के०) भोभो ए संबोधने करी हे भव्याः एटले हे मुक्तियोग्य प्राणीउ! तमो (प्रस्तुतं के०) प्रस्ताव एटले अवसरने योग्य एवुं अने (सर्व के०) साद्यंत एवुं तथा (एतत् के०) आ समीपतरवर्त्ति एवुं (वचनं के०) वचन जे तेने (शृणुत के०) सांभळो. ते समीपतरवर्त्ति एवुं कयुं वाक्य? तो के (आर्हतां के०) अर्हत जे वीतराग ते छे देव जेने एवा (तेषां के०) प्रसिद्ध (भवतां के०) तमें ते तमारी (शांतिः के०) शांति, (भवतु के०) हो. ते शांतिशेणें करीनें थाय? तो के (अर्हदादिप्रभावात् के०) अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, तेमना माहात्म्य थकी, वळी ते केहेवा तमो भव्य प्राणिउ के जेने शांति थाय? तो के (ये के०) जे भव्यप्राणीउ (त्रिभुवनगुरोः के०) त्रिभुवनना गुरु जे भगवान् ते

मनी (यात्रायां के०) यात्राने विषे (नक्तिनाजः के०) नक्तिना नजनारा बे. ते नव्य प्राणीउने शांति थाय. हवे ते शांति केहेवी बे ? तो के (आरोग्यश्रीधृतिमतिकरी के०) आरोग्य, श्री, धृति अने मति, ए चार वानांने करनारी एवी बे, तथा वली (क्लेशविध्वंसहेतुः के०) क्लेशना विध्वंसनी कारणनूत बे ॥ १ ॥

वली पण कहे बे.

॥ गद्यं ॥ नो नो नव्यलोका इह हि नरतैरावतविदेह संनवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पंथाः इति नव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां नगवंतोर्हंतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ॥

अर्थः—(नोनोनव्यलोकाः के०) हे नव्यलोको ! (हि के०) जेकारण माटे (इह के०) आ (नरतैरावतविदेहे के०) नरत, ऐरावत अने महाविदेह तेने विषे (संनवानां के०) उत्पन्न थया एवा (समस्ततीर्थकृतां के०) समग्र तीर्थकरो जे बे तेमना (जन्मनि के०) जन्म समयने विषे (आसन के०) सौधर्माधिपतिनां आसन, (प्रकंप के०) प्रकंपित थयां तेनी (अनंतरं के०) पबी (अवधिना के०) अवधिज्ञानें करीने

(विज्ञाय के०) जिनजन्मने जाणीनें (सुघोषाघंटा के०) सुघोषानामा घंटा ना (चालनानंतरं के०) चलन एटले वगाड्या पछी (सौधर्माधिपतिः के०) सौधर्मेंद्र जे छे तें, (सकल के०) समग्र (सुर के०) देवता, (असुर के०) पातालवासी देवो तेना (इंद्रैःसह के०) इंद्रोनी साथें एटले असुर सुरेंद्रोयें युक्त छतो (समागत्य के०) त्यां आवीने (सविनयं के०) विनय जे स्तुति तेणें करीने (अर्हद्भट्टारकं के०) अर्हत्रूप भट्टारक तेने (गृहीत्वा के०) करसंपुटमां ग्रहण करीने (कनकाद्रिशृंगे के०) मेरुपर्वतना शिख र उपर (गत्वा के०) जइने (विहित के०) निर्माण कस्यो छे (जन्मा भिषेकः के०) स्नात्र महोत्सव जेणें एवो छतो ते स्नात्रनी समाप्ति थये छते (शांतिमुद्घोषयति के०) महोटा एवा शब्दें करीने शांतिने पठन करे छे. (ततः के०) ते कारण माटे (अहं के०) हुं पण (कृतानुकारं के०) ते मज अनुकृति (यथा के०) जेम थाय, (इति के०) ए प्रकारें (कृत्वा के०) करीने तथा विचारीने. शुं विचारीने ? तो के (महाजनः के०) इंद्रादिक देव समूह (येन के०) जे मार्गें (गतः के०) प्रवर्त्त्यो (सः के०) तेज (पंथाः के०) मार्ग तेने आपणें पण अनुसरवुं. अर्थात् आपणें पण देवसमूहें कस्युं तेम करवुं. (इति के०) ए कारण माटें (भव्यजनैः के०) भव्य प्राणीउ जिनालयनें विषे (सह समेत्य के०) रूडी रीतें एकठा मली साथें आवीनें (स्नात्रपीठे के०) स्नात्र पीठने विषे (स्नात्रं विधाय के०) श्रीजिनने स्नात्र करावीने (शांतिं के०) शांतिना पाठने हुं जे(उद्घोषयामि के०) उद्घोषणा करुं छुं ते (तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरं के०) तेनी पूजा, यात्रा, स्नात्रादि, महोत्सवानंतर (इतिकृत्वा के०) ए प्रकारें करीने शांतिना म होत्सवनी उद्घोषणाने हे भव्यजनो ! तमो (कर्णं दत्वा के०) सांभलवा माटे कानने सावधान करीने (निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा के०) सांभलो सांभलो. स्वाहा ए मंत्राक्षर पूर्वक अहिं द्विरुक्ति छे, ते अत्यादर ख्यापनने माटे छे. (ॐ के०) ॐकार जे छे ते पंच परमेष्ठिवाचक मंगलने माटे उच्चार ण करीने कहे छे, के हे भव्य प्राणीयो ! (पुण्याहं पुण्याहं के०) आज पुण्य नो दिवस छें, पुण्यनो दिवस छे, तथा (भगवंतः के०) समग्र ऐश्वर्ययुक्त एवा (अर्हंतः के०) तीर्थंकरो ते (प्रीयंतां प्रीयंतां के०) अतिसंतुष्ट थाउ, अतिसंतुष्ट थाउ. ते अर्हंत भगवान् केहेवा छे? तो के (सर्वज्ञाः के०) सचराचर

जगत् जे तेने केवलज्ञानें करीने जाणे एवा छे. वली केहेवा छे? तो के (सर्वदर्शिनः के०) केवल दर्शनें करीने सर्वने जोवे छे, तथा (त्रिलोक नाथाः के०) लोकत्रय जे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल, तेना नाथ एवा, तथा (त्रिलोकमहिताः के०) पूर्वोक्त त्रण लोके पुष्पादिकें करी अर्चित एवा, अने वली (त्रिलोकपूज्याः के०) त्रण लोकने पूजन करवा योग्य एवा, तथा (त्रिलोकेश्वराः के०) त्रण लोकना ईश्वर एवा, तथा (त्रिलोकोद्योतकराः के०) अज्ञानतिमिरनाशकत्वें करी त्रण लोकना प्रकाशकारक छे.

ॐ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ
सुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य
विमल अनंत धर्म शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत
नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानांता जिनाः शांताः शांतिकरा
भवंतु स्वाहा ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदु
र्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥

अर्थः—वली ते केहेवा छे? तो के (शांताः के०) क्रोधादिकना अभा वथकी उपशांत थयेला एवा तथा (जिनाः के०) रागादिकना जय कर नारा एवा श्री ऋषभदेवजी जेमां आदि छे तथा (वर्द्धमानांताः के०) श्रीवीरस्वामी छे अंतमां जेने एवा चोवीश (जिनाः के०) तीर्थंकरो ते (शांतिकराः के०) शांतिना करनारा एवा (भवंतु के०) हो. (ॐ के०) ॐकार मंगलार्थवाचक जाणवो, तथा (मुनिप्रवराः के०) मुनिउने विषे श्रेष्ठ एवा (मुनयः के०) साधुउ जे छे तेने (रिपुविजय के०) शत्रुकृत परा भव, तथा (दुर्भिक्ष के०) दुष्काल तथा (कांतारेषु के०) चोर कंटका दिकें दूषितमार्गने विषे तथा (दुर्गमार्गेषु के०) अरण्यमार्गने विषे (वः के०) तमोने (नित्यं के०) निरंतर (रक्षंतु के०) रक्षण करो ॥

ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी
मेधा विद्यासाधनप्रवेशननिवेशनेषु सुगृहीत
नामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥

अर्थः—(ॐ के०) ॐकार परमात्मावाचक प्रणव बीज छे, (ह्रीं के०) ह्रींकार मायाबीज ते वश करनार छे, (श्रीं के०) श्रींकार लक्ष्मीबीज ते द्रव्यागमन कारण छे, तथा (धृति के०) धैर्य, (मति के०) बुद्धि, (कीर्त्ति के०) यश, (कांति के०) शोभा, (बुद्धि के०) वर्तमानें उपजती सांप्रतदर्शिनी बुद्धि, (लक्ष्मी के०) धनादि संपत्ति, (मेधा के०) धारण करवानी बुद्धि, (विद्यासाधन के०) चौद विद्यानुं साधन, तथा (प्रवेशन के०) गृहप्रवेश तथा (निवेशनेषु के०) निवेशन जे मुकाम तेने विषे (सुगृहीतनामानः के०) शोभन ग्रहवा योग्य नाम छे जेमनुं एवा (ते के०) ते पूर्वोक्त (जिनेंद्राः के०) तीर्थंकरो ते सदैव (जयंतु के०) जयवंता वर्तो ॥

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृंखला वज्रांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली माहाकाली गौरी गांधारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरुट्या अछुप्ता मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चातुर्वर्ण्यस्य श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥

अर्थः—वली रोहिणीथी आरंभीने मूलमां लखेली एवी महामानसी देवी पर्यंत (षोडश के०) शोल एवी (विद्यादेव्यः के०) विद्याधिष्ठात्री देवीयो (वः के०) तमोने (नित्यं के०) निरंतर (रक्षंतु स्वाहा के०) रक्षण करो. ए ठेकाणें (स्वाहा के०)'स्वाहा भणवुं. कारण के ते वृद्धनो आम्नाय छे. कोइ ठेकाणे ॐस्वाहा एवो पण पाठ छे. वली आहिं (ॐ के०) ॐकार ते मंगलार्थ बोलवो. पछी (आचार्योपाध्यायप्रभृति के०) आचार्य अने उपाध्याय प्रमुख (चातुर्वर्ण्यस्य के०) आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, ए चार प्रकारवाला एवा (श्रीश्रमणसंघस्य के०) सुशोभित एवा श्रमण जे श्रीवीर भगवान् तेना संघने (शांतिर्भवतु के०) शांति हो, (तुष्टिर्भवतु के०) तुष्टि थाउ (पुष्टिर्भवतु के०) धर्मनी पुष्टि थाउ ॥

ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कु

बेर वासवादित्यं स्कंद विनायकोपेताः ये चान्येऽपि
ग्रामनगर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां
अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॥

अर्थः—हवे वळी पण पूर्वोक्त श्रीसंघने (ॐ ग्रहाः के०) नव ग्रहो जे छे तेनां नाम कहे छे. चंद्र, सूर्य, अंगारक, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु अने केतु (सहिताः के०) परस्पर मळ्या ते सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए (सलोकपालाः के०) चार लोकपालें सहित तथा वासव ते इंद्र, आ दित्य ते बार प्रकारना सूर्य, स्कंद अने विनायक जे गणेश, तेणें करी (उ पेताः के०) मळ्या एवा सर्व देवताउ (ये च अन्येपि के०) वळी अनेरा पण जे ग्राम, नगर, क्षेत्रना (देवतादयस्ते सर्वे के०) देवतादिक छे ते सर्वे (प्रीयंतां प्रीयंतां के०) प्रसन्न थाउ, प्रसन्न थाउ, तथा (अक्षीण के०) नथी क्षय पाम्या एवा (कोश के०) भंमार जेना तथा (कोष्ठागाराः के०) धान्यनां गृह जेमनां एवा (नरपतयः के०) राजाउ जे छे ते प्रसन्नने (भवंतु के०) थाउ, (स्वाहा के०) स्वाहानो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥

ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद् स्वजन सं
बंधि बंधु वर्गसहिता नित्यं चामोद प्रमोद
कारिणः अस्मिँश्च भूमंमलायतननिवासिसाधु
साध्वी श्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधि
दुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥

अर्थः—पुत्र एटले सुत, मित्र एटले हितकारक, भ्रातृ एटले सहोदर, कलत्र एटले स्त्री, सुहृद् एटले समान वयवाळा, स्वजन एटले ज्ञाति, संबंधि एट ले श्वशुरपक्षवाळा, बंधुवर्ग एटले सगोत्रीय ते (सहिताः के०) परस्पर मळ्या, एवा ते सर्व (नित्यं के०) निरंतर (च के०) वळी आमोद ए टले हर्ष अने प्रमोद एटले चित्तप्रसन्नता तेने कारिणः एटले करनारा हो, तथा (अस्मिन् के०) आ मृत्युलोकने विषे (भूमंमलायतन के०) पृथि वीमां पोताना स्थानकोने विषे (निवासि के०) निवास करनारा एवा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका तेमना रोग, उपसर्ग, व्याधि, दुःख, दुर्भि

व अने दुर्मनपणुं तेमना (उपशमनाय के०) उपशमने अर्थें शांति जे छे ते (नवतु के०) हो.

ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यंतु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा नवंतु स्वाहा ॥

अर्थः–(ॐ के०) ॐकार जे छे ते मंगलार्थज छे (तुष्टि के०) संतोष, (पुष्टि के०) शरीरादितोष, अथवा पुरुषार्थसाधन सामर्थ्य, (ऋद्धि के०) संपत्ति, एटले धनधान्यादिबाहुल्य, (वृद्धि के०) पुत्रपौत्रादिक परिवारनो विस्तार, (मांगल्य के०) कल्याण अने (उत्सवाः के०) पुत्रजन्म विवाहादि महोत्सव ते सर्व थाउ, तथा (सदा के०) निरंतर (प्रादुर्भूतानि के०) उत्पन्न थयां एवां जे (पापानि के०) पापो, ते (शाम्यंतु के०) शांतिने पामो. (दुरितानि के०) अशुनफलागमरूप ते पण शांतिने पामो, अने तमारा (शत्रवः के०) वैरीउ जे छे ते सर्व (पराङ्मुखाः के०) अवलुं छे मुख जेमनुं एवा (नवंतु के०) थाउ, (स्वाहा के०) सुष्टु एटले रूडुं आह एटले कहे छे ॥

हवे शांतिने माटे श्री शांतिनाथने नमस्कार करतो छतो कहे छे.

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥
त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥

अर्थः–(शांतिनाथाय के०) श्रीशांतिनाथने (नमः के०) नमस्कार थाउ, ते श्रीशांतिनाथ केहेवा छे ? तो के (श्रीमते के०) समवसरणादि ऋद्धि ते छे जेने एवा अने वली केहेवा छे ? तो के (शांतिविधायिने के०) शांति जे दुःख दुरितोपसर्गनिवृत्तिरूप, तेने करनारा एवा, ते कोने करनारा ? तो के (त्रैलोक्यस्य के०) त्रणे लोकने, तथा वली ते केहेवा छे ? तो के (अमराधीश के०) चोशठ इंद्रो तेमना (मुकुट के०) मुकुट तेमणें (अभ्यर्चित के०) पूजित छे (अंघ्रये के०) चरण जेमनुं एवा छे ॥ १ ॥

शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥
शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥

अर्थः–(शांतिकरः के०) शांतिने करनार एवा (शांतिः के०) श्रीशांति

नाथ, (मे के०) मने (शांतिं के०) डुःखडुरितोपशांतिने (दिशतु के०) आपो. कारण के (येषां के०) जेमना (गृहे के०) घरने विषे (गुरुः के०) यथार्थोपदेशना करनार एवा (श्रीमान् के०) सुशोभित एवा (शांतिः के०) श्रीशांतिनाथनामा जिन जे ळे, तेनो पूजन थाय ळे, (तेषां के०) तेमना (गृहे के०) घरने विषे (सदा के०) निरंतर (शांतिरेव के०) शांतिज थाय ळे ॥ २ ॥

हवे श्री शांतिनाथना केवल नामग्रहण मात्रनुं माहात्म्य कहे ळे.

उन्मृष्टरिष्टडुष्ट, ग्रहगतिडुःस्वप्नडुर्निमित्तादि ॥
संपादितहितसंप, न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥

अर्थः-(शांतेः के०) श्रीशांतिनाथनुं (नामग्रहणं के०) नामग्रहण पण (जयति के०) उत्कृष्ट वर्त्ते ळे. सेवातत्पर सेवकोने सुखश्रेयकारक एवुं वर्त्ते ळे, हवे ते नामग्रहण केहेवुं ळे? तो के (उन्मृष्ट के०) दूर कर्यां ळे (रिष्टडुष्टग्रहगति के०) उपद्रव तथा डुष्ट एवी अंगारकादि ग्रहनी गति, तथा (डुःस्वप्नडुर्निमित्तादि के०) खर, उंट, महिषादिनुं देखवुं तथा गेह, नदी, समुद्रादिमां पडवुं तथा स्वशिरनुं पडवुं, इत्यादिक डुःस्वप्न जे डुःखोनां कारण ळे तेने, अने वली केहेवुं ळे? तो के (संपादित के०) संपादन करी ळे (हितसंपत् के०) हितनी संपत्ति जेणें एवुं ळे ॥ ३ ॥

हवे शांतिना उद्घोषविशेष कहे ळे.

श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराज्यसन्निवेशानाम् ॥
गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥

अर्थः-(श्रीसंघजगज्जनपदराजाधिपराज्यसन्निवेशानां के०) ए सर्वना (व्याहरणैः के०) नामग्रहणें करीने तथा (गोष्ठिकपुरमुख्यानां के०) गोष्ठिकपुरप्रमुख जे नगरना मुख्य पुरुष तेना पण (व्याहरणैः के०) उपकरण नामसंग्रह जे तेणें करीने एटले ए सहुना नाम लइ लइने (शांतिं के०) शांति जे तेने (व्याहरेत् के०) उंचे स्वरें करीने उद्घोषण करे ॥ ४ ॥

हवे पूर्वे कहेला श्लोकमां नामग्रहण करीने उद्घोष करवो एम
. जे कह्युं, तेहीज नामो कहे छे.

श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शांति र्भवतु, श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु, श्री गोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्रीपुरमुख्याणां शांतिर्भव तु, श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥

अर्थः—सुशोभित एवा श्रमणसंघनी विघ्ननिवृत्तिरूप शांति थाउ, तथा पुरने विषे वसनारां लोकोनी विघ्नोपशमरूप शांति थाउ, तथा ज नपद जे देश तेनी विघ्नोपशमरूप शांति थाउ, तथा राजा अने अधिपति तेनी शांति थाउ, तथा राजाना उपदेशनस्थानक जे सन्निवेश, तेनी विघ्नो पशमरूप शांति थाउ, तथा गोष्ठिकानां एटले धर्मसनास्यजनो तेमनी कषा योदयोपशमरूप शांति थाउ, तथा पुरना मुख्य पुरुषो तेमनी विघ्नोपशमरूप शांति थाउ. ब्रह्मलोक जे छे तेनी विघ्नोपशमरूप शांति थाउ. पेहेली वार नुं ॐ स्वाहा ए पद जे छे, ते मंगलार्थे छे, तथा बीजी वारनुं ॐ स्वाहा जे पद छे ते रूडे प्रकारें देवोने कहे छे, तथा (ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा के०) कुं कुम, चंदन, विलेपन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपादिक, पूजानां उपकर ण श्रीपार्श्वनाथने संतोषने माटे थाउं॥

हवे ते शांतिपाठ कइ वखते नणवो? ते कहे छे.

एषा शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांज लिसमे तः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांति मुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

अर्थः—(एषा के०) आ (शांतिः के०) शांतिपाठ, ते (प्रतिष्ठा के०)

प्रतिष्ठाना तथा (यात्रा के०) यात्राना तथा (स्नात्र के०) स्नात्रना (अव सानेषु के०) अवसान जे अंत तेने विषे जाणवो. तथा (आदि के०) आदि शब्दें करी पाक्षिक, सांवत्सरिक प्रतिक्रमणना अंतमां अवश्य पाठ करवो, तथा बीजा पण धर्मकार्योनी समाप्तिमां मंगलार्थ ते शांतिपाठ अवश्य उद् घोषण करवा योग्य ले. हवे ते केहेवी रीतें उद्घोषण करवुं? ते कहे ले. कोइ पण विशिष्टगुणवान् श्रावक, उन्नो थइने (शांतिकलशं के०) शांतिने माटे शुद्धजलें जरेला शांतिकलशने माबा हाथने विषे (गृहीत्वा के०) ग्रहण करीने तेनी उपर दक्षिण कर स्थापन करीने (कुंकुमचंदनकर्पूरागरु धूपवासकुसुमांजलिसमेतः के०) कुंकुम, चंदन, कर्पूर, अगरु, धूप, वास, कुसुमांजलि, तेणें समेत एटले युक्त बतो (स्नात्रचतुष्किकायां के०) स्नात्र मंमपमां (श्रीसंघसमेतः के०) चतुर्विध संघयुक्त बतो (शुचिशुचिवपुः के०) बाह्याभ्यंतर मलिनतारहित ले वपु एटले शरीर जेनुं एवो (पुष्प के०) पुष्प, (वस्त्र के०) पवित्र देवपूजायोग्य जे वस्त्र, तथा (चंदन के०) चंदन, (आजरण के०) वलयमुद्रिकादिक, तेमणें (अलंकृतः के०) सुशो जित बतो (पुष्पमालां के०) पुष्पनी जे माला तेने (कंठे के०) पोताना कंठने विषे (कृत्वा के०) करीने एटले धारण करीने (शांतिमुद्घोषयित्वा के०) मोहोटा शब्दें शांतिनो उद्घोष करीने पबी ते महान् पुरुषें तथा बीजाउयें (शांतिपानीयं के०) शांतिकलशनुं जे जल तेने (मस्तके के०) मस्तक ने विषे (दातव्यं के०) क्षेपण करवुं. (इति के०) इति ए समाप्तिना अर्थमां ले ॥

हवे फरीने पण जव्यजनो स्नात्रप्रांतमां शुं करे ले? ते कहे ले.

नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति
च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति
मंत्रान्, कल्याणजाजो हि जिनाजिषेके॥१॥

अर्थः-(जिनाजिषेके के०) जिनना अजिषेकने विषे एटले स्नात्रमहो त्सवने विषे जे जव्यजनो (नित्यं के०) निरंतर (नृत्यंति के०) नृत्य करे ले, (मणि के०) रत्न, उपलक्षणथी मोतीउ अने (पुष्पवर्षं के०) पंच वर्णयुक्त फूलो तेमनी वृष्टिने (सृजंति के०) करे ले. (च के०) वली (मंगलानि के०) मंगल एवां गीत अने धवल तेने (गायंति के०)

गान करे छे, तथा (स्तोत्राणिगोत्राणि के०) स्तोत्र जे तेमने तथा गोत्र जे तीर्थंकरना वंश तेमने (पठंति के०) पठन करे छे, वली (मंत्रान् के०) मंत्र गर्भित एवा पाठोने पठन करे छे, अने वली बीजा जनोयें पठन करेला एवा मंत्रोने सांभले छें, ते भव्य जीवो, (कल्याणभाजः के०) कल्याणने भजनारा एवा थाय छे. (हि के०) निश्चें ॥ १ ॥

हवे आ ठेकाणें आशीर्वाद कहे छे.

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥
दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभवंतु लोकाः ॥ २ ॥

अर्थः–(सर्वजगतः के०) समग्र जगत् जे तेनुं (शिवमस्तु के०) कल्याण थाउ, तथा (भूतगणाः के०) प्राणिसमूह जे छे ते (परहितनिरताः के०) परहित करवामां प्रीतियुक्त (भवंतु के०) सावधान थाउ, तथा (दोषाः के०) दोष जे आधि, व्याधि, दुःख, दुर्मनपणुं ते (नाशं के०) विशेषें करीने नाशने (प्रयांतु के०) पामो, तथा (सर्वत्र के०) सर्वस्थानकने विषे (लोकाः के०) समग्रलोक, (सुखीभवंतु के०) सुखी थाउ ॥ २ ॥

अहं तिछयरमाया, सिवा देवी तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु ॥ स्वाहा ॥३॥

अर्थः–(अहं के०) हुं, (तिछयरमाया के०) तीर्थंकर जे श्री नेमिनाथ तेमनी माता, जे शिवा देवी छुं, ते केवी छुं ? तो के (तुम्ह के०) तमारा (नयर के०) नगरने विषे (निवासिनी के०) निवास करनारी छुं, एटले सान्निध्यकारी छुं. ए कारण माटे (अम्ह के०) अमारुं (सिवं के०) कल्याण हो, अने (तुम्ह के०) नामोच्चारमात्रें करी तमारुं (सिवं के०) कल्याण हो. (असिवोवसमं के०) अशिवनो छे उपशम जेमां एवुं (सिवं के०) कल्याण (भवतु के०) हो. स्वाहा ए पदनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥३॥

उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥

अर्थः–(जिनेश्वरे के०) जिनेश्वर तें (पूज्यमाने के०) पूज्य छते (विघ्नवल्लयः के०) विघ्ननी वल्लियो जे छे, ते (छिद्यंते के०) छेदाय छे, अने (मनः

के०) मन जे छे ते, (प्रसन्नतां के०) प्रसन्नताने (एति के०) पामे छे, अने (उपसर्गाः के०) उपसर्गो (क्षयं यांति के०) क्षयने पामे छे ॥ ४ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥ इति ॥९॥

अर्थः–(सर्वमंगल के०) सर्व लौकिक मंगलपदार्थ तेने विषे (मांगल्यं के०) मंगल करनारुं तथा (सर्वकल्याणकारणं के०) संपूर्ण आरोग्यतानुं कारण, (सर्वधर्माणां के०) सर्वधर्मोने विषे (प्रधानं के०) श्रेष्ठ एवुं (जैनं के०) जिनसंबंधि (शासनं के०) शासन ते (जयति के०) सर्वोत्कृष्ट वर्त्ते छे ॥५॥ इति बृहच्छांतिनामकं नवमं स्मरणं समाप्तम् ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रत्याख्यानाधिकारप्रारंभः ॥

हवे गुरुवंदनाना अधिकार मध्यें पच्चरकाण घणा विस्तार भणी कह्यां नहीं, ते भणी हमणां वखाणीयें छैयें. ते पच्चरकाण बे भेदें छे, एक मूलगुण पच्चरकाण, बीजुं उत्तरगुण पच्चरकाण, तिहां मूलगुण पच्चरकाण वली बे भेदें छे, एक देशथी, बीजुं सर्वथी, तेमां सर्वथी मूलगुण पच्चरकाण जे पंच महाव्रतरूप, ते तो साधुने होय, अने देशथी मूलगुण पच्चरकाण पंच अणुव्रतरूप श्रावकने होय, तेमज उत्तरगुण पच्चरकाण पण देशथी अने सर्वथी एवा बे भेदें छे, तिहां साधुने सर्वथी उत्तरगुण पच्चरकाण जे छे, ते पिंमविशुद्धि, पांच समिति, बार भावना, बार प्रकारनुं तप, बार प्रतिमा, अभिग्रह, ए आदें देइने अनेक प्रकारें छे, तथा श्रावकने देशथी उत्तरगुण पच्चरकाण जे छे ते सात शिक्षाव्रत प्रमुखरूप छे.

हवे पहेलुं पडिक्कमणुं करतां छ मासी तपना काउस्सगमांहे जे आज अमुक पच्चरकाण करशुं, पछी चौद नियम यथाशक्तियें लेइ गुरुमुखें पच्चरकाण उच्चरे, अने जो गुरु प्रत्यक्ष न होय तो स्थापनाचार्य समक्ष, अथवा देवपूजा करे तेवारें देवनी समक्ष पच्चरकाण उच्चरे, अने जो प्रभातनुं पडिक्कमणुं गुरु मांमले, पोशालें न कीधुं होय, तो उपाशरे जइ गुरुने पगे बे वांदणां दइ गुरुमुखें अथवा गुरुने आदेशें कोइ साधुने मुखें पच्चरकाण करे.

अहींआं गुरु अने पच्चरकाणना लेनार श्रावकआश्री चार भांगा उपजे, ते कहे छे. एक तो गुरु पण पच्चरकाणनो जाण, अने श्रावक पण

पच्चरकाणनो जाण, ए प्रथम भांगो शुद्ध जाणवो. बीजो गुरु जाण अने श्रावक अजाण होय, तेवारे गुरु तेने पच्चरकाणनुं स्वरूप संक्षेपें समजावी ने करावे, तेथी ए भांगो पण शुद्ध जाणवो, त्रीजो गुरु अजाण छे, पण पच्चरकाणनो करनार श्रावक जाण छे, माटे ए भांगो पण भलो जाणवो, चोथो गुरु अजाण अने श्रावकपण अजाण ए भांगो अशुद्ध जाणवो.

हवे ते पच्चरकाण संक्षेपी जोइयें तो त्रण भेदें छे, एक अद्धापच्चरकाण, बीजुं सांकेतिक पच्चरकाण अने त्रीजुं अभिग्रह पच्चरकाण. हवे तिहां अद्धा एटले काल तेनुं पच्चरकाण. ते पोरिसी, साढपोरिसी, पुरिमड्ड अवड्ड, पक्खखमण, मासखमणादिक, ए सर्व अद्धापच्चरकाणमां कहेवाय. तथा बीजुं सांकेतिक पच्चरकाण, ते जिहां संकेत कीधो होय, जेम गंठसहिअं, मुठिसहिअं, वींटीसहिअं प्रमुख एटले ए पच्चरकाण बीजा पच्चरकाणनी वच्चें थाय छे. जेम के कोइ एक श्रावकें पोरिसी प्रमुख पच्चरकाण कीधुं होय, पछी क्षेत्रादिकें गयो, अथवा घेर बेठांज पोरिसी पूर्ण थइ, परंतु हजी भोजननी सामग्री तयार थइ नथी, तेवारें विचारे जे एटलो काल वचमां अपच्चरकाणी पणे श्रावकने रहेवुं नहीं ? माटे अंगुठसहिअं पच्चरकामि एटले ज्यां सुधी मुठिमां अंगुठो राखुं छुं, तिहां सुधी महारे वली पण पच्चरकाणनी सीमा छे, एमज बीजी मूठि बांधी राखे, तेने मुठिसहिअं पच्चरकामि कहियें. त्रीजुं गांठ बांधवी ते गंठसहिअं कहियें, चोथुं घरसहिअं, पांचमुं अंगना परसेवानो बिंदु निकले त्यां सुधी, सेउसहियं कहियें. छठुं उस्सास सहित, सातमुं पाणीना बिंदुआ भाजनादिकें सूके त्यां सुधी थिबुकसहिअं कहियें, तथा आठमुं दीवाप्रमुखनी ज्योतिसहित ते, जोइसहिअं कहियें. ए पच्चरकाण जेम बीजा पच्चरकाणनी वच्चें थाय छे, तेम जो बीजा पोरिसीयादिक पच्चरकाण न करे, अने केवल एवो अभिग्रहज करे, के गांठ प्रमुख न छोडुं, तिहां सुधी महारे अमुक पच्चरकाण छे, एम अभिग्रहने विषे पण ए पच्चरकाण थाय छे, तथा साधुने पण कोइक स्थानकें मांडल्यादिकें गुरुआदिक आव्या नथी, अथवा सागारिकादिकनुं कांइ कारण होय, तो पण अभिग्रहें सांकेतिक पच्चरकाण थाय छे. एने सांकेतिक पच्चरकाण कहियें. अने त्रीजुं अभिग्रह प्रत्यारव्यान ते विगय, नीवी, आयंबिल, प्रमुख करवां, ए सर्व अभिग्रह प्रत्यारव्यान जाणवां.

हवे विस्तारें जोइयें, तो साधुने अनें श्रावकने उत्तरगुणपच्चरकाण दश नेदें डे, एक नवकारसहिअ. बीजुं पोरिसी, त्रीजुं पुरिमड्ढ, चोथुं एकासण, पांचमुं एकलगाणुं, बठुं विगइ, सातमुं आयंबिल, आठमुं उपवास, नवमुं दिवसचरिम, दशमुं अनिग्रह, ए दश पच्चरकाण तथा तेने लगता बीजा पण पच्चरकाणना विचार अने आगारनी युक्ति कहीयें बैयें. बीजी पच्चरकाण संबंधि सविस्तर वातो प्रवचनसारोद्धार तथा बीजा ग्रंथांतरथी जाणवी.

॥ प्रथम नमुक्कारसहिअनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चरकाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नडणा नोगेणं सहसागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १ ॥

अर्थः—(उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी मांमीने बे घडी प्रमाण एटले रात्रिनोजननो दोष निवारवाने अर्थें, बे घडी पडी (नमुक्कारसहिअं के०) नवकार कहीने पारुं तिहां सुधी (पच्चरकामि के०) पच्चरकाण करुं डुं, एटले नियम लउं डुं. अहींआं नवकार कहीने पच्चरकाण पारवुं डे, माटे ए पच्चरकाणनुं नाम नवकारसी कहेवाय डे, तथा गुरु पच्चरकाइ कहे, अने शिष्य पच्चरकामि कहे, एम सर्व पच्चरकाणोने विषे जाणी लेवुं. ए नवकारसीनुं पच्चरकाण बे घडी प्रमाण काल पर्यंत चउविहारज होय, एवो आम्नाय डे, एटले रात्रिना चार पहोर जे रात्रिनोजननो नियम कर्यो हतो. तेना तीरण रूप एटले. शिक्षारूप ए पच्चरकाण डे, अहीं कोइ पूछे जे नवकारसीनुं मान तो एक मुहूर्त्तज लीधुं डे, तेने बदले जो मुहूर्त्तद्वयादिक लीधां होय, तो शी हरकत डे? कारण के ते काल पण पोरिसीना कालथी अल्प डे. हवे तेने एम कहेवुं जे सर्वथी स्तोक काल अद्धा पच्चरकाणनो एक मुहूर्त्तज डे, माटे एक मुहूर्त्तज लेवो, ए नवकारसी पच्चरकाण सूर्योदय पहेलां करवुं अने पंचपरमेष्ठि नमस्कारें करी पारवुं, अन्यथा नंगदोष लागे. ए नवकारसी कर्या पडी आगले पोरसियादिक थाय, परंतु नवकारसी विना पोरसीयादिक न थाय. तथा कोइ कहेशे के सायंकाल पर्यंतमां गमे ते वखत नवकार कहीने पारीयें, अथवा एक घडी पडी नवकार कहिने, पारीयें, तो पच्चरकाण पहोचे किंवा न पहोचे? तेने कहियें के नव

कारसी ए शब्दनो अर्थज आवो छे के बे घडी वीत्यां नवकार गणीयें त्यारेंज पहोचे, परंतु बीजे वखतें न पहोचे, ए पच्चरकाणमां बे घडी सुधी चउविहार होय, माटे बे घडी वीत्या पछी नवकार गणे, तो पहोचे पण बे घडी वीत्यानी अगाउ नवकार गणे, तो न पहोचे. तथा जो दिवस उग्याथी पहेली बे घडी नी अंदर अने पाछली बे घडीनी पछी जमे, तो तेने रात्रिभोजननो दोष लागे.

हवे शानुं पच्चरकाण करे? ते कहे छे. (चउविहंपिआहारं के०) चार प्रकारनो आहार न करवो, तेनुं पच्चरकाण करे, ते आहारनां नाम कहे छे.

एक (असणं के०) अशन एटले शालि, ज्वार, गोधूम, बंटी प्रमुख तथा सर्व जातिना उदन एटले भात तथा मग, मठ अने तूवर प्रमुख सर्व कठोल तथा साथुआदिक सर्व जातना लोट, तथा मोदकादिक सर्व जातनां पक्वान्न, तथा सूरणादिक सर्व जातनां कंद, तथा मांमा प्रमुख सर्व जातनी केलवेली वस्तु, ए सर्वने अशन कहियें. तेमज वेशण, वरियाली, धाणा, सूआ आदिक एने पण अशनज कहियें.

बीजुं (पाणं के०) पाणी ते कांजी, यव, चोखा अने काकडी प्रमु खनां धोयण तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कही यें. तथा शाकरवाणी, द्राक्षवाणी, आंबिलवाणी अने शेलडीरस प्रमुख ए सर्व,यद्यपि पाणीमांहे आवे छे,तथापि एने व्यवहारथी अशनज कहियें.

त्रीजुं (खाइमं के०) खादिम ते खारेक, बदाम, शिंगोडां, खजूर, को परां, द्राक्ष, तथा अखोडादिक सर्व जातनो मेवो, तथा काकडी, आंबां, फणस अने नालियर प्रमुख सर्व जातनां फल, तथा शेकेलां धान्य, जेवां, के धाणी, पहुआ प्रमुख तथा पापड प्रमुख सर्व खादिम कहियें.

चोथुं (साइमं के०) स्वादिम ते दंतकाष्ठ, सुंठ, हरडे, पींपरी, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, काथो, खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लविंग, जावंत्री, सोपारी, पान, बीडलवण, आजो, अजमोद, क लिंजण, पिंपलीमूल, चिणिकबाब, कचूरो, मोथ, कांटासेलीउं, कपूर, सं चल, बेहेडां, आमलां, हिंगलाष्टक, हिंग, त्रिविसो, पुष्करमूल, जवासामूल, बाबची, बाउलछाल, धवछाल, खेरछाल, खिजडाछाल, पान, पंचकूल, तुल सी, जीरुं, ए जीराने पच्चरकाणभाष्य तथा प्रवचनसारोद्धारमां स्वादिम कह्युं छे, अने श्रीकल्पवृत्तिमांहे खादिम कह्युं छे, तथा अजमाने पण केटला एक

खादिम कहे छे. तथा कोठपत्र, कोठवडी, आमलगंठी, लिंबुइपत्र, आंबा गोटली प्रमुखने स्वादिम कहियें. ए चार प्रकारना आहार कह्या.

हवे अनाहार वस्तु कहियें छैयें. तेमां लिंबडानां पांच अंग, ते मूल, छाल, पत्र, फूल, फल, तथा गोमूत्र, गलो, कडू, करियातुं, अतिविष, सुखड, राख, हलदर, रोहिणी, उपलेट, वज, त्रिफला, धमासो, नाही, आसंधि, रिंगणी, एलीउं, गुगल, वोणि, बदरी, कंथेरमूल, करीरमूल, पुआड, आछी, मजीठ, बोलबीउं, कुंआरी, चित्रो, कुंदरू, तमाकु, बाउलछाली प्रमुख अनिष्ट स्वाद वाली वस्तु तथा स्वाद विना रोगादिक कारणें चतुर्विध आहारादिक कल्पे, अफिण प्रमुख पण एमज जाणवां. एटले जे वस्तु खातां थकां जीवने अरुचि उपजे, अलखामणा लागे, ते सर्व अनाहार वस्तु जाणवी. ए वस्तु अहींआं प्रसंगें लखी. एम ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहारनो हुं नियम लउं छुं. हवे ए नियमभंग थवाना भयने लीधे अहींआं नोकारसीना पच्चखाणने विषे बे आगार मोकलां मूके छे, ते कहे छे.

१ (अन्नछणाभोगेणं के०) अन्यत्रानाभोगात् एटले विसरवा थकी ते अहींआं पच्चरकाणनो उपयोग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगें कोइ वस्तु मुखमां प्रक्षेप कस्याथी पच्चरकाण भंग न थाय, परंतु वचमां पच्चरकाण सांभरे, तेवारें तरत मुखथी त्याग करे, थूंकी नाखे तो पच्चरकाण न भांगे, अथवा अजाणपणे मुखथकी हेतुं उतस्युं पछी कालांतरें सांभस्युं,अथवा तुरत सांभस्युं, तो पण पच्चरकाण न भांगे, पण शुद्ध व्यवहार माटे फरी निःशंक न थाय तेमाटे यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं;ए रीतें सर्व आगारोने विषे जाणी लेवुं.

२ (सहसागारेणं के०) जे पच्चरकाण कस्युं छे तेनो उपयोग तो विसस्यो नथी, पण कार्य करवामां प्रवर्त्ततां योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्वभावेंज मुखमध्यें प्रवेश थाय, जेम दधि मथतां छांटो उडी मुखमां पडे, अथवा गाय, भेंश प्रमुख दोहोतां थकां तथा घृतादिक मथतां तथा घृतादिकनो तोल करतां अचानक छांटो मुखमां पडे, अथवा चउविहार उपवासें वर्षाकालें मेघना छांटा मुखमां पडे, तेथी पच्चरकाण भंग न थाय, ए रीतें उक्त बे प्रकारना आगारें करी (वोसिरामि के०) बे घडी सुधी चारे आहारने वोसिरावुं छुं, एटले अपच्चरकाणी आत्माने छंडुं छुं. अहींआ वोसिरे ए गुरुनुं वचन छे, अने वोसिरामि ए शिष्यनुं वचन छे ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं मुठ्ठिसहिअंनुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुठिसहिअं पच्चरकाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नबणा नोगेणं सहसागरेणं महत्तरागारेणं सवस माहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

अर्थः—एना अर्थमां (मुठ्ठिसहिअं के०) मूठि सहित, एटले ज्यां सुधी मूठि होय, त्यां लगें पच्चरकाण अने नोकार गणी मूठि मोकली मूकुं, तेवारें पच्चरकाण मोकलुं थाय. एना आगारोनो अर्थ बीजा पच्चरकाणोथी जाणवो॥ २॥

॥ अथ पोरिसि साड्ढपोरिसिनुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुठिसहिअं पच्चरकाइ॥ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नबणानोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥३॥

अर्थः—(पोरिसिं के०) प्रहर दिवस सुधी अने (साढपोरिसिं के०) सार्द्ध पोरिसि एटले अर्द्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी (पच्चरकाइ के०) नियम लउं बुं. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी गया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेने पोरिसि कहिएं, अथवा पुरुष जमणे काने सूर्यनुं बिंब राखीने, दक्षिणायनना प्रथम दिवसें ढीचणनी गया जे वखतें बे पगलां होय, ते वखतें पोरिसि थाय. जे माटे श्री उत्तराध्ययनमां कह्युं बे के ॥ आसाढि पुन्निमाए, डुपया पोसे चउप्पया चित्ता॥ आसुए एसु मासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥१॥ हवे हानि वृद्धि ते आ प्रमाणें जाणवी, ते जेम केः—अंगुलं सत्त रत्तेणं, परकेणं तु डु अंगुलं॥ वड्ढए हाय एवा वि, मासेण चउरंगुलं ॥२॥ अर्थः—बार अंगुलनुं एक पगलुं कहियें. हवे पुरुषें उनो रही जमणे काने सूर्यमंमलनुं बिंब राखीने ढीचणनी गया जोवी. तिहां आषाढी पूर्णिमायें कर्कसंक्रांतिना प्रथम दिवसें जे वखत ते गया

बे पग प्रमाण होय ते वखत पोरिसि कहियें. तेवार पछी छ महीना पर्यंत मास मासनी संक्रांतियें चार चार आंगुल वधारता जइयें, तेवारे पोष मासनी मकर संक्रांतियें चार पगनी छायायें पोरिसि थाय. तेवार पछी वली मास मासनी संक्रांतियें चार चार अंगुलनी हानि करियें, तो फरी आषाढ महीने बे पगनी छाया थाय, तेमज आश्विन अने चैत्रमासें त्रण त्रण पगनी छाया जाणवी, तथा तेवीज रीतें आषाढनी संक्रांति थकी सात दिवसें एक अंगुल अने पखवाडे बे अंगुल छायानी वृद्धि करवी, अने पोषमासनी संक्रांतिथकी सात दिवसें एक अंगुल अने पखवाडीये बे अंगुल छायानी हानि करवी, तेमज महिने चार अंगुलनी हानि वृद्धि करवी, एटले पोरिसि एक प्रहरनी थइ. अने मुठिसहिअंनो अर्थ तो पूर्वें लख्यो छे.

(असणंपाणंखाइमंसाइमं के०) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम, ए चार प्रकारना आहारनो नियम करुं छुं. हवे आगार कहे छे, एक (अन्नछणाजोगेणं के०) अनाजोगें ते अजाणते विसारवा थकी, बीजो (सहसागारेणं के०) सहसात्कारें, त्रीजो (पछन्नकालेणं के०) कालनी प्रछन्नता ते मेघादि, ग्रहादि, दिग्दाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने वादल प्रमुखें करी सूर्य ढंकाइ जाय, तेणें करी वखतनी बराबर खबर न पडे. एवां अजाण पणाएं करी अधूरी पोरिसियें पण पोरिसि पूर्ण थइ, एवुं समजीने पच्चरकाण पालवामां आवे. तो तेथी जंग नहीं, अने कदापि ए रीतें अधूरी पोरिसिएं जमवा बेठा एटलामां तावडो जोयो, अने जाएयुं जे हजी सवार छे, पोरिसिनो वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारें जे मुखमां कोलीउं होय, ते राखमां परठवीने बेसी रहे, अने यावत् पोरिसि पूर्ण थया पछी जमवा बेसे, तो पच्चरकाण जांगे नहीं.

चोथो (दिसामोहेणं के०) दिशिने मूढपणे एटले दिशिविपर्यास थया थी अजाणते पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे. एम अजाणतां वेहेलुं पलाय तो पच्चरकाण जंग नहीं, अने थोडुं जम्या पछी कोइना कह्याथी जाणवामां आवे तो मुखमांनो कोलीउं थूंकी नाखे. ए रीतें दिङ्मोह टल्या पछी, अर्द्ध जम्यो बेसी रहे तो जंग नहीं.

पांचमो (साहुवयणेणं के०) उग्घाड पोरिसि एवा साधुना वचनें करी पोरिसि जणी, सांजलीने पाले, तो पच्चरकाण जंग नहीं, पछी ज्यारें जाणवामां

आवे के साधु तो छ घडीनी पोरिसि जणे छे, तेवारें पूर्वली रीतें तेमज बेसी रहे, तो पचरकाण नांगे नहीं. ए पाछला बे आगार च्रमताना छे.

छहुं (सवसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीरमां असमाधि रहे, एटले पच्चरकाण कस्था पछी तीव्र शूलादिक रोग उपने थके अथवा सर्प्पादिकें मश्यो होय, ते वेदनाथी जीव आर्त्तिमां पडे,अथवा जेवारें अकस्मात् कष्ट थाय, तेवारें सर्व इंद्रियनी समाधिने अर्थें अपूर्ण पच्चरकाणे पण पथ्य औषधादिक लेवां पडे तो तेथी पच्चरकाण नंग न थाय, अने समाधि थया पछी तेमज पाछलो विधि करे. इहां पण गुरु वोसिरे, कहे अने शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार ते वोसिरामि कहे.

ए पच्चरकाणमां मुठिसहिअं साथें लीधुं छे,तेथी महत्तरागारेणं ए आगार वध्यो छे, तेनो अर्थ आम छे, के (महत्तर के०) महोटे कार्यें एटले जेटलो पच्चरकाणमां निर्ज्जरानो लान थाय छे, ते करतां पण अत्यंत महोटो निर्ज्जरानो लान जे कार्यमां थतो होय, अर्थात् कोइ ग्लान, प्रासाद, संघ अथवा देवना वैयावच्चने अर्थें कोइ बीजा पुरुषथी ते कार्य न थइ शकतुं होय, त्यारें गुरु तथा संघना आदेशथी मुठिसहिअंनो वखत पूर्ण थया विना पण जो पालवामां आवे, तो पच्चरकाणनंग न थाय. अने ते कार्य पूर्ण थया पछी पाछलोज विधि समजवो ॥ ३ ॥

॥ अथ पुरिमड्ड अवड्ढनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरे उग्गए नमुक्कारसहिअं पुरिमड्ढं अवड्ढं मुठिसहिअं पच्चरकाइ. सूरे उग्गए चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥४॥

अर्थः—(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी मांमीने (पुरिमड्ढं के०) पहेला बे प्रहर सुधी पुरिमार्द्ध कहियें,अने जो अवड्ढनुं पच्चरकाण लेवुं होय,तो उपर सूत्रमां अवड्ढनुं नाम कहियें. अवड्ढ एटले त्रीजा प्रहर सुधी अशनादिक चार आहार पचरकुं छुं,एना आगारोना अर्थ प्रथम लखाइ गया छे. ॥४॥

॥ अथ विगइ निविगइनुं पच्चरकाण ॥

॥ विगइउ निविगइअ पच्चरकाइ अन्नबणाजोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहबसंसठेणं उरिक त्तविवेगेणं पडुच्च मरिकएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥५॥

अर्थः—जोजन करतां जे थकी कामादिक उन्मादरूप विकार थाय,तेने विगइ कहीएं,ते विगइ सर्वे मली दश बे. तेमां मांस,मदिरा,माखण अने मध, ए चार तो अजक्ष्यज बे. बाकी जक्ष्य विगय ब प्रकारनां बे. एक दूध,बीजुं दहीं, त्रीजुं घृत, चोथुं तेल, पांचमुं गोल अने बहुं पक्वान्न, ए ब प्रकारनी विगइमांथी एक पण विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं, तेने विगइउ पच्चरकाण कहियें,अने समस्त विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं तेने (निविगइअ पच्चरकामि के०) निवि पच्चरकुं बुं, एटले निविनुं पच्चरकाण कहीयें.

त्यां श्रावकने निविमांहे निविआता लीधा कल्पे नहीं, जो लागट तप मांम्युं होय, तो तेमांहे त्रण दिवस पडी निवियाता लीधा कल्पे.

तथा साधुने तो एक निविमांहे निवियाता लीधा कल्पे बे, अने विगइआता तथा निवियातानो नियम लीए तो, तेवारें आयंबिल पच्चरके, तेथी आयंबिलमांहे जे कल्पे, ते वस्तु टालीने बीजी सर्वे वस्तुनो नियम लीए. हवे पच्चरकाण जंगना जयथी जे आगार मोकलां मूके बे, ते कहे बे.

एक अन्नबणाजोगेणं, बीजो सहसागारेणं. ए बेना अर्थ लखाइ गया बे.

त्रीजुं (लेवालेवेणं के०) लेपालेप ते आवी रीतें के घृत प्रमुख जे विगयनो नियम साधुने होय तेवी घृतादिक विगइथी गृहस्थनो हाथ खरडायेलो होय, पडी तेने लूंबी नारूयो होय,तेवा हाथथी अथवा खरडायेला चाटुवाने लुंबीने ते चाटुवाथी वहोरावे अथवा पीरसे, तो पच्चरकाण जंग न थाय.

चोथुं (गिहबसंसठेणं के०) गृहस्थनुं जे वाटकी प्रमुख जाजन ते विगइ प्रमुखें खरडयुं होय, तेवा जाजनथी जे गृहस्थ अन्न आपे, ते अन्न विगय प्रमुखें मिष्ट होय, अने तें अन्न जमे, तो पच्चरकाण जांगे नही.

पांचमुं (उरिकत्तविवेगेणं के०) गाढी विगइ जे गोल पक्वान्नादिक बे तेना

कटका रोटली उपर नाखी करी पछी उपाडी परहां कस्या होय, तेवी रोटली प्रमुख लेतां पण पच्चरकाण भंग न थाय.

छहुं (पडुच्चमक्खिएणं के०) रोटला प्रमुखने लगारेक सुंहाला राखवाने अर्थें मोण दीधुं होय, अथवा लगारेक हाथ चोपडी कीधी होय, ते रेंचवाली रोटली प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पच्चरकाण भंग न थाय.

सातमुं पारिठावणियागारेणं, आठमुं महत्तरागारेणं, नवमुं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, ए त्रण आगारनो अर्थ, बीजा पच्चरकाणोथी जाणवो ॥५॥

॥ अथ बेआसणां तथा एकासणांनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमढं मुठिसहिअं पच्चरकाइ॥ उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं बेआसणं पच्चरकाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउटणपसारेणं गुरुअप्रुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ एकासणांनुं पच्चरकाण करवुं होय तो बेआसणांने ठामें एकासणं पच्चरकाइ एवो पाठ कहेवो ॥ इति ॥ ६ ॥ ७ ॥

अर्थः—उग्गए सूरे इत्यादिकनो अर्थ प्रथमना पच्चरकाणोमां लखाइ गयो छे, अने ज्यां एकवार (असण के०) भोजन करवुं तेने एकासणुं कहिएं; अथवा ज्यां एकज आसन छे ते एकासणुं केहेवाय छे, अने बे वार अशन एटले भोजन करीयें, तेने बेआसणुं कहियें, ते (पच्चरकामि के०)

पच्चक्कुं छुं, एटले नियम लेउं छुं. इहां जो दुविहंपि आहारं करे तो बे आ हार ते एक अशन अने बीजुं खादिम जांणे, एटले जम्या पछी एक पाणी अने बीजुं सोपारी प्रमुख स्वादिम वस्तु लीए, तेवारें असणं खाइमंनो पाठ कहियें, अने जो तिविहंपि आहारं करे, तो त्रण आहार ते अशन, खादिम अने स्वादिम. ए त्रण आहारनुं पच्चरकाण करे, अने जम्या पछी एक पाणी मोकलुं राखे, तेवारें असणं खाइमं साइमंनो पाठ कहियें. तथा चउविहंपि आहारं करे तो जम्या पछी चारे प्रकारना आहारनो त्याग करे. हवे एनां आगार कहे छे. त्यां एक अन्नछणाजोगेणं अने बीजो सहसागा रेणं, ए बे आगारना अर्थ तो प्रथम लखाइ गया छे.

त्रीजुं (सागारिआगारेणं के०) साधु जमवा बेठा पछी त्यां कोइ सागा रिक जे गृहस्थ ते आव्यो, पछी ते चाल्यो जतो होय तो क्षण एक सबूर करे, बेशी रहे, अने जो तेने त्यां स्थिर रहेतो जाणे, अने गृहस्थनी नजर पडे तो साधु त्यांथी उठीने बीजे स्थानकें जइ आहार लीये. केम के गृहस्थ नी देखतां जमे तो प्रवचनोपघातादिक महादोष सिद्धांतमां कह्या छे, ते लागे. ए साधु आश्री कह्युं, अनें गृहस्थ आश्री तो गृहस्थ एकासणुं करवा बेठा पछी जेनी दृष्टि पडतां अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि पडे, अ थवा सर्प आवे, चोर आवे, बंदीवान आवी उनो रहे, अकस्मात् अग्नि लागे घर पडवा मांडे तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक कारणें ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानकें जइ एकासणुं करतां पच्चरकाण नांगे नहीं.

चोथुं (आउटणपसारेणं के०). जमवा बेठा पछी हाथ पग जंघादिक अंगोपांग पसारतां तथा संकोचतां कांइ आसन चलायमान थाय तो पच्च रकाण नंग न थाय. पांचमुं (गुरुअप्नुठाणेणं के०) पच्चरकाणें जमवा बेठां छतां गुरु जे आचार्य, उपाध्याय तथा साधु ते आवे थके तेमनो विनय साचवाने अर्थे बे पगने ठामें राखी उठवुं पडे, तो पच्चरकाण नंग न थाय.

छठुं (पारिठावणियागारेणं के०) विधियें निर्दोषपणे ग्रहण करेलुं अने विधियें वेहेंची आप्युं जे अन्न तेने साधुयें विधियें नुक्त कर्यां थकां कांहिं उगर्युं एवुं पारिष्ठापन योग्य जे अधिक अन्न ते स्निग्ध अन्नने परठवतां जीव विराधनादि घणा दोष उपजे छे, एवुं जाणीने तेवुं अन्न तथा विग यादिकने गुरुनी आज्ञायें एकासणादिकथी मांमीने उपवास पर्यंत पच्च

क्खाण वालाने ते वधेला आहारने जमतां पच्चक्खाणं भंग न थाय, पण तिहां एटलुं विशेष जे चउविहार उपवासमांहे पाणीनुं पारिठावणियागारेणं थाय, अने तिविहार उपवासना पच्चक्खाणें अन्नादिकनुं पारिठावणियागारेणं थाय. ए आगार यतिने होय पण श्रावकने न होय, तथापि आलावो त्रूटे माटे गृहस्थने एकज पाठ संलग्न कहेतां दोष नथी. सातमुं महत्तरागारेणं, अने आठमुं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं एना अर्थ लखाइ गया छे.

हवे पाणस्सना आगार कहीयें छैयें. जो तिविहारें तथा चउविहारें करी एकासणुं प्रमुख पच्चक्खाण कर्युं होय, तो अवश्य पाणस्सना आगार कहीयें, तथा जो डुविहारें करी एकासणुं प्रमुख पच्चक्खाण कर्युं होय, अने तेमां अचित्त भोजी अचित्तपाणी पीवामां लीए तो पण पाणस्सना आगार कहीएं. अने डुविहार पच्चक्खाणमांहे सचित्त आहार लीए, तथा सचित्त पाणी पीए, तेवारें पाणस्सना आगार न कहिएं. (पाणस्स के०) पाणी, ते पाणी केंहेवुं ? तो के (लेवेणवा के०) जे अन्नादिकें करी भाजनादिक खरडाय, ते लेपकृतआचाम्ल, तथा उसामण गलीने पीये. आदिशब्द थकी डाक्षादिक आम्लकादिक पानकादिक जाणवां. ते पीवाथकी पच्चक्खाण भंग न थाय.

बीजुं (अलेवेणवा के०) अलेपकृत पाणी ते सौवीर, कांजी, धोयण, आदिशब्दथकी गफूलजरवाणी प्रमुखने पीये तो पच्चक्खाण न भांगे.

त्रीजुं (अच्छेणवा के०) अच्छ ते उष्णजल तथा बीजां पण निर्मल उकाल्यां पाणी, नीतर्युं फलादिकनुं धोयण प्रमुख तेने पीए तो पच्चक्खाण भंग न थाय,

चोथुं (बहुलेवेणवा के०) बहुलेप एटले भोहोलुं चोखा प्रमुखनुं धोवण तेने गलीने पीए तो पच्चक्खाण न भांगे.

पांचमुं (ससिच्छेणवा के०) सिच्छसहित अन्नादिक दाणाना स्वाद विना धोवण तथा दाथरादिकनुं धोवण तेने गलीने पीए, तो पच्चक्खाण न भांगे.

छठुं (असिच्छेणवा के०) सिच्छरहित कणक प्रमुखें हाथ खरड्यो होय, तेनुं धोवण गली पीए, तो पच्चक्खाण भांगे नहीं, ए छ आगार पाणीना कह्या, ते टाली बीजा पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं ॥ ६ ॥ ७ ॥

हवे एकलठाणानुं पच्चक्खाण पण एकासणा प्रमाणें छे, परंतु तेमां सात आगार छे, माटे एक आउटणपसारेणं ए आगार न केहेवो ॥ ८ ॥

॥ अथ आयंबिलनुं पच्चख्काण लिख्यते ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुठिसहिअं पच्चख्काइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नवणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चख्काइ. अन्नवणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहबसंसठेणं उख्कित्तविवेगेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चख्काइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नवणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउटणपसारेणं गुरुअप्नुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ इति आयंबिल पच्चख्काण समाप्त ॥ ए ॥

अर्थः—(आयंबिलंपच्चख्काइ के०) आंबिल पच्चख्कुं छुं. एक अन्नबणाभोगेणं बीजुं सहस्सागारेणं ए बे आगारना अर्थ आगल लखाइ गया छे.

त्रीजुं (लेवालेवेणं के०) तेमां जे विगय तथा शाकादिकने सस्नेहले आंगुली तथा भाजनादिक खरड्युं होय, तेने लेप कहियें, पछी तेनेज घणी सारी रीतें लुंछी नाखीने जेमां विगयादिकना अवयव कांइ पण देखाय नहीं एवुं कर्युं होय तेने अलेप कहियें. एवां लेप अलेपवालां भाजन होय, अथवा हाथ लेपालेप वाला होय, एवा कांइ लेप अलेपवाला भाजनें तथा हाथे पीरसवाथकी पच्चख्काण भंग न थाय. एनें लेपालेप आगार कहियें.

चोथुं (गिहबसंसठेणं के०) गृहस्थें पोताने अर्थें हाथ तथा चाटुआदिकने विगयें करी खरड्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुवादिकें अन्न आपे, ते अन्न जमतां थकां आंबिल भंग न थाय. पांचमुं (उख्कित्तविवेगेणं

के०) गाढी विगय जे गोल पक्वान्नादिक ठे तेनें रोटली उपर मूकीनें फरी परहिं करी होय, तेवी रोटली निवि आंबिलमां लेतां पच्चरकाण भंग न थाय.

ठ्ठुं (पारिठावणिआगारेणं के०) परठवतो आहार लेतां एटले कोइ साधुयें अधिक वोहोर्युं होय पढी ते तेने परठववानुं होय, ते परठवतां तेने घणीज अजयणा लागे, अने तेज विगय प्रमुखनुं पोताने पच्चरकाण पण होय, अथवा पोतें उपवासादिक तप कर्युं होय, तेम ठतां पण, गुरुनी आज्ञायें तेवा अहारने लेवा थकी पण पच्चरकाण भंग न थाय.

सातमुं (महत्तरागारेणं के०) मोहोटी निर्ज्जराने लाभे पच्चरकाण भांगे नहीं. आठमुं (सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधिएं पच्चरकाण भांगे नहीं, वोसरामि एनो अर्थ सुलभ ठे ॥ ए ॥

॥ अथ चउविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरे उग्गए अभत्तठं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नथणाभोगेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १० ॥

अर्थः—सूर्यना उदयथी मांमीने (अभत्तठंपच्चरकामि के०) अभक्तार्थ एटले भात पाणीनो नियम लउं ढुं, (चउविहंपिआहारं के०) चारे आहारनो नियम लउं ढुं, ते चार आहारनां नाम कहे ठे. एक अशन, बीजो पान, त्रीजो खादिम, अने चोथो स्वादिम, हवे एनत्र आगार कहे ठे. एक अन्नथणाभोगेणं, बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पारिठावणिआगारेणं, चोथो महत्तरागारेणं, अने पांचमो सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं एना अर्थ लखाइ गया ठे.

तथापि पारिठावणिआगारेणंनुं विशेष एटलुं ठे के, पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो गुरुनी आज्ञायें आहार कीधो कल्पे, पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केम के? चउविहारमां पाणीनो नियम ठे, अने पाणी विना मुख शुद्ध न थाय माटे पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो चउविहार उपवासमां लीधा कल्पे,अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलुं ठे, माटे एकलो आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी आज्ञायें लीधो कल्पे॥१०॥

॥ अथ तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरे उग्गए अनत्तठं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं अ सणं खाइमं साइमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं पा रिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागा रेणं पाणहार पोरिसिं साढपोरिसिं मुठिसहिअं घरस हिअं पच्चरकाइ. उग्गए सूरे पुरिमढं अवढं पच्चरकाइ अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहे णं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ इति ॥ ११ ॥

अर्थः—(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी आरंजीने (अनत्तठं के०) अनक्तार्थ एटले उपवास प्रत्यें (पच्चरकामि के०) पच्चरकुं बुं, ए त्रिविहा रमां एक पाणीनो आहार मोकलो, बाकीना (असणं के०) अशन अने (खाइमं के०) खादिम, तथा (साइमं के०) स्वादिम ए (तिविहंपिआहारं के०) त्रण आहार न करवा, तेनो नियम लउं बुं. हवे एना आगार कहे छे.

एक अन्नछणाजोगेणं, बीजो सहसागरेणं, त्रीजो पारिठावणिआगारेणं, चोथो महत्तरागारेणं,पांचमो सवसमाहिवत्तिआगारेणं.एना अर्थलखाणा छे.

ए पच्चरकाणमां (पाणहार के०) पाणीनो आहार मोकलो छे तेनो अवधि तथा आगार कहे छे. (उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी प्रारंजी ने (पोरिसिं के०) प्रहर लगें (साढपोरिसिं के०) मोढ प्रहर लगें (मुठि सहिअं के०) नोकार गणी मुठि मोकली मूके तेवारें पच्चरकाण मोकलुं थाय. (घरसहिअं के०) पोताने घेर जई नवकार गणि पच्चरकाण पारुं. (उग्गएसूरे के०) सूर्योदयथी प्रारंजीने (पुरिमढ के०) बे प्रहर लगें (अवढ के०) अवढ लगें (पच्चरकामि के०) पच्चरकुं बुं. हवे पाणी न पीवाना वखत सुधीना आगार कहे छे. एक अन्नछणाजागेणं, बीजो सह सागारेणं, त्रीजो पछन्नकालेणं, चोथो दिसामोहेणं, पांचमो साहुवयणेणं, छठो महत्तरागारेणं,सातमो सवसमाहिवत्तिआगारेणं. एना अर्थ लखाणा छे.

हवे (पाणस्स के०) पाणी पीवाना छ आगार छे, तें कहे छे, (लेवेण वा के०) लेपजल ते खजूरनुं तथा आछण, बीजुं (अलेवेणवा के०) अलेपजल ते धोयण प्रमुख, त्रीजुं (अछेणवा के०) निर्मल उष्ण पाणी, चोथुं (बहुलेवेणवा के०) मोहलुं तांदूलनुं धोअण प्रमुख, पांचमुं (ससित्थेणवा के०) सीथ सहित पीछनुं धोअण, छठुं (असित्थेणवा के०) सीथ रहित फासूं जल, एटलां टाली बाकीनां पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं.

॥ अथ चउछ छठ भत्तादिकनुं पच्चरकाण आवी रीतें कहेवुं ॥

सूरे उग्गए चउछभत्तं अभत्तठं पच्चक्काइ सूरे उग्गए छठभत्तं अभत्तठं पच्चक्काइ, सूरे उग्गए अठमभत्तं अभत्तठं पच्चक्काइ. इत्यादिप्रकारें आगार सहित कहेवुं. एना अर्थ सुलभ छे ॥ १७ ॥

हवे ए पच्चरकाणने प्रसंगें दश विगयमांहेला छ भक्ष विगय छे, तें प्रत्येकना पांच पांच निवियाता करतां त्रीश निवियाता थाय छे ते कहे छे.

प्रथम दूध विगयना पांच निवियाता कहे छे. त्यां एक जे दूध घणुं होय, अने चोखा थोडा होय, तेनें पेया कहे छे, बीजो खाटी छाश सहित जे दूध, अर्थात् दूधमां खटाश नाखी पचावीयें अथवा त्रण दिवसनी प्रसूत गायनुं दूध उकालीयें तेने दुध्धठी कहे छे. त्रीजुं द्राक्ष टोपरादिक नाखीने रांधेलुं जे दूध, तेने पयसाडी कहे छे. चोथुं चोखानो थोडो लोट नाखीने रांधेलुं जे दूध, तेने अवलेही कहें छे. पांचमो चोखा घणा अने दूध थोडुं, ए रीतें जे रांधेलुं होय तेने खीर कहे छे. भेदांतरें वली एना पण भेद थाय छे.

हवें दहींनां पांच निवियाता कहे छे. एक दहींने घोलीने अथवा उकालीने तेमां वडां घाले, तेने घोलवडां कहे छे. बीजुं दहीं घोलीने वस्त्रमांथी गालीए तेने मथ्युं अथवा छाएयुं दहीं कहे छे. त्रीजुं दहींने हाथथी मथन करी तेमां खांम अथवा शाकर भेलीयें तेने शिखरणी अथवा शिखंम कहे छे. चोथुं दहीं अने रांधेला चोखा एकठा करीयें तेने करबो कहे छे. पांचमुं लूण नाखीने जे दहीं मथन करेलुं होय तेने सलवण कहे छे.

हवे घृतना पांच निवियाता कहे छे. एक औषधियें करी पकावेलुं घृत तेने पक्वघृत कहे छे. बीजुं घृतनी कीटी जे मेल थाय छे ते वघारि प्रमुख. त्रीजुं

जे घृतमां कोइ औषधि पकावी होय तेना उपरनी तरीनुं घृत, खंमादिक सहित तेने पक्कौषधि घृत कहे छे. चोथुं पक्कान्न तरतां बलेलुं घृत तेने निर्भं जन कहे छे एटले त्रण घाण तल्या पछीनुं रहेलुं घृत अथवा सीरादिक उपरनुं घृत जाणवुं. पांचमुं दहींनी तरीमां गहूंनो लोट नाखीने जे तावडे पकावीयें तेने विसंदण कहे छे. एना पण भेदांतर भेद घणा थाय छे.

हवे तेलना पांच निंवियाता कहे छे. एक तिलकुटी ते घाणीमांहे तिल पीलेलानी साडी तेमांहे खंमादिक नाखे ते. बीजी तेलनी मली, त्रीजुं लाक्षादिक ड्रव्यें करी पकावेलुं तेल, चोथुं पाकेला औषधनी तरी. पांचमुं घाण पछवाडेनुं बलेलुं तेल. एना पण भेदांतरें भेद घणा थाय छे.

हवे गोल विगयना पांच निवियाता कहे छे. एक अर्द्धो काढेलो शेलडीनो रस, बीजुं गोलवाणुं, गोलनी राब, गोलना पाणीमां लोट नाखे ते, त्रीजो शाकरनी जात, चोथो खांमनी जात सर्व जाणवी, पांचमो गोलनी पाती जाणवी. एना पण भेदांतरें भेद घणा थाय छे.

हवे कडाविगयना पांच निवियाता कहे छे. जो एक खाजां वडे कडाइ भराइ गइ होय तो तेथी बीजुं खाजुं निवियातुं थाय छे, पण तेमां मात्र बीजुं घृत नाखवुं न जोइयें, तेज घृत वडे पकावीयें, तेने प्रथम निवियातो कहीयें. बीजुं एकनी उपर एक नाखीयें एम त्रण घाण उपरांत तेज घृतमां जे चोथो पकावीयें, ते बीजो निवियातो जाणवो. त्रीजो गोलधाणी, गोल पापडी प्रमुखनो निवियातो जाणवो. चोथो पाणी, गोल, घृत, एकठां उ काली पछी ते पाणीमां लोट नाखी रांधेली लापशी करीयें, ते निवियातो जाणवो. पांचमो निवियातें करी चोपडी काहाडेला तावडानी उपर पुडला प्रमुख करे, ते पांचमो निवियातो जाणवो एना पण भेदांतर घणा थाय छे.

॥ अथ छठ अठमादिक तप करे अने बीजा दिवसादिकें पाणी वावरवुं होय, त्यारें पाणहारनुं पच्चरकाण करे, ते कहे छे.

॥ पाणहार पोरिसिं मुठिसहिअं पच्चरकाइ. अन्नछणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसममाहिव त्तिआगारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे इति ॥१३॥

॥ अथ गंठसहिअं आदि अनिग्रहोनुं पच्चरकाण ॥

॥ गंठसहिअं वेढसहिअं दिवसहिअं थिबुगहिसअं मुठिसहिअं पच्चरकाइ. अन्नडणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥१४॥

॥ अथ चउदनियमधारनारने देसावगासिकनुं पच्चरकाण ॥

देसावगासिअं उवजोगं परिजोगं पच्चरकाइ अन्नडणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥इति १५

अर्थः—(देसावगासिअं के०) दिशिना अवकाशनुं व्रत अथवा बह्ा नियम आश्री तो (देस के०) थोडामां अवकाश आपे, तेने देशावकाशिक व्रत कहियें. एटले इहां जे एकली दिशिनुंज पच्चरकाण करे, तेवारें उवजोग परिजोगनो पाठ न कहियें तेने देसावगासिअं पच्चरकामिज कहियें. (उवजोग के०) एकवार जोगवीयें एवा आहार तथा विलेपनादिक तेने उपजोग कहियें. अने (परिजोग के०) वारंवार जोगवियें एवी वस्तु जे आजरण वस्त्रादिक तेनुं प्रमाण करे, एटले जे चौद नियम संजारे, तेने ए उपजोग परिजोगनो पाठ कहियें, एना आगारोनो अर्थ सुलज ढे ॥ १५ ॥

॥ अथ चउदनियमनी गाथा कहे ढे ॥

॥ सचित्तदव्व विगई, वाणह तंबोल वड कुसुमेसु ॥
वाहण सयण विलेवण, बंज दिसि न्हाण जत्तेसु॥१॥

अर्थः—पेहेलुं (सचित्त के०) पाणी, फल, बीज, दातण, कण प्रमुख सचित्त चीजनुं प्रमाण करे. बीजुं (दव्व के०) जे वस्तुनो जिन्न स्वाद ते इव्य कहीयें, तेनुं मान करे, त्रीजुं (विगइ के०) घृत प्रमुख ढ विगय मां जेटली खावाने मोकली राखवी होय, तेनुं मान करे, उपरांत निषेध करे. चोथुं (वाणह के०) उपानह ते पगरखानुं मान करे. पांचमुं (तंबोल के०) पान सोपारी प्रमुख सर्वने तंबोल कहीयें, तेनुं मान करे. ढठुं (वड के०) वस्त्र जे पोताना शरीरें वापरवानां होय, तेनुं मान करे. सातमुं (कुसुमेसु के०) फूलनुं मान करे. आठमुं (वाहाण के०) वाहन ते अश्व, पालखी, मोली, गाडां प्रमुख जे वाहन, तेनुं मान करे. नवमुं (स

यण के०) शय्या तथा आसन प्रमुखनुं मान करे, दशमुं (विलेवण के०) चंदन तेल प्रमुख विलेपन करवानी वस्तुनुं मान करे. अगीआरमुं (बंभ के०) ब्रह्मचर्य पालवाने मैथुननी मर्यादा करे. बारमुं (दिसि के०) दिशिविदिशिनुं मान करे. तेरमुं (न्हाण के०) स्नान कंकोडी प्रमुखें नावुं, तथा अंगोलीनुं मान करे. चौदमुं (जत्तेसु के०) जात पाणीनुं मान करे. अहींयां बीजा पण नियम ले, ते प्रसंगें लखीयें ठैयें. पन्नरमुं पृथ्वीकाय आश्री माटी, मीठुं, खडी प्रमुख पोताने निमित्तें वावरे, तो तेनुं प्रमाण करे. शोलमुं अप्पकाय आश्री पाणी पीवामां अथवा न्हावा प्रमुखमां वापरवामां आवे, तेनुं प्रमाण करे. सत्तरमुं तेउकाय आश्री पोताना शरीरना जोगोपजोगमां चूला, चाडी, सघडी, अंगीठी प्रमुखनुं रांध्युं, नीपज्युं, तपाव्युं, शेक्युं तेनुं प्रमाण करे. अढारमुं वायुकाय आश्री पंखा, हिंचोला, पडदा तथा लुगडादिकथी पवन करवानुं प्रमाण करे. उगणीशमुं वनस्पतिकाय आश्री लीलां फल, फूल, शाक, दातण प्रमुख खावानुं तथा वावरवानुं प्रमाण करे. वीशमुं त्रसकाय जे त्रास पामे एवा जीव ते कीडी, कीडा, विंठी, गाय, मत्स्य, पक्षी, मनुष्य, देव नारकादिक मांहेला कोइ जीवने विना अपराधें संकल्प करी मारुं नहीं, तेनो नियम करे. एकवीशमुं असि ते तरवार, जाला, तीर, छुरी, कोश, कोदाल, पावडा, घंटी प्रमुख जीवघात करनार वस्तुनो नियम करे. बावीशमुं मसी ते शाइना खडीआ, कलम प्रमुख वापरवानुं प्रमाण करे. त्रेवीशमुं कृषि ते जमीन खोदवादिक घर, हाट, क्षेत्र प्रमुख तलाव कूपादिकने खोदवा, तथा तेना शस्त्रनो नियम करे, ए चौदे नियमादिक त्रेवीश बोल जे ले, ते जेवी रीतें पोताथी पले, तेवी रीतें अवश्य पाले ॥ १५ ॥

॥ अथ सांजनां पच्चरकाण ॥

॥ बेआसण, एकासण, निविगइ, आयंबिल, उपवास, उठ अठमादि तप करनार उष्णजल वावरे, ते सांजे पाणहारनुं पच्चरकाण लीए ते कहे ले.

॥ अथ पाणहार दिवसचरिमनुं पच्चरकाण ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकाइ अन्नत्थणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ रातें चउविहार करवो, तेनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नजणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

अर्थः—(दिवसचरिमं के०) दिवसना छेडाथी मांमीने नवो सूर्य उगे त्यां सुधी (पच्चरकामि के०) पच्चरकुं छुं. (चउविहंपिआहारं के०) चउविहार ते चार प्रकारना आहारने पच्चरकुं छुं. शेष अर्थ सुजन छे ॥ १७ ॥

॥ अथ रात्रें तिविहार ते एक पाणी मोकलुं राखे, तेनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नजणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ १८ ॥

॥ अथ रात्रें डुविहार ते पाणी अने स्वादिम मोकलुं राखे, तेनुं पच्चरकाण ॥

॥दिवसचरिमं पच्चरकाइ डुविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्नजणाजोगेणं सहसागरेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ अथ पच्चरकाणना आगारनी गाथा ॥

दोचेव नमुक्कारे, आगारा छचेव पोरिसिए ॥सत्तेवय पुरिमड्ढे, एकासणगंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेगठाणेसु अ, अठेव य अंबिलंमि आगारा ॥ पंचेव य जत्तठे, छप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ ३॥ पंचचउरो अभिगहे, निव्वीए अठनव आगारा ॥ अप्पाउरणे पंचचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ४ ॥

॥ हवे छ प्रकारें पच्चरकाण शुद्ध थाय छे, ते कहे छे ॥

॥ फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जंच न आराहिअं, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥

अर्थः—पच्चरकाणविधें कस्युं, उचित वेलायें जे प्राप्त थयुं, तेने फासिअं कहियें. पच्चरकाण वारं वार उपयोग देइने संजारवुं, तेने पालिअं कहियें. प्रथम गुरुने आहार पाणी देइ थाकतुं जोजन करवुं, तथा अतिचार न ल गाडवो तेने शोजित कहियें. (तीरिअं के०) पच्चरकाण पूरा पछी पण थो डो अधिक काल थये पालवुं, निर्मल करवुं. (किट्टिअं के०) जोजन वे लाएं अमुक माहारे पच्चरकाण छे, एम संजारवुं. (आराहिअं के०) पच्चरका ण जे रीतें कीधुं, ते रीतें आराधवुं. ए छ सुधी जाणवी. (जंचनाराहिअं के०) जे में पच्चरकाण न आराध्युं होय, अतिचार लगाड्या होय. (तस्समिच्छामिड क्कडं के०) ते माहारुं पाप मिथ्या थाउ. एवा पच्चरकाणोने विषेज विवेकी पुरु षें उद्यम करवो; केम के? शुद्ध धर्मनें प्रजावें जीव मोक्ष प्रमुखनां सुख पामे.

॥ अथ साधुजीने चौद प्रकारना दाननी निमंत्रणा करवी, ते कहे छे ॥

॥ पच्चरकाण कस्या पछी बे ढींचण अने मस्तक जूमिएं लगाडी, डाबे हाथें मुखें मुहपत्ती देइ जमणो हाथ गुरुने पगें लगाडी आवी रीतें कहे.

॥ इच्छाकारि जगवन् पसाय करी फासुअं एसणि
ज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वछ पडिग्गह कं
बल पायपुछणेणं पाडिहारिअ पीढ फलग सिज्जा सं
थारएणं उसह जेसज्जेणं जयवं अणुग्गहो कायव्वो॥

अर्थः—इच्छाकारि जगवन्, पसाय करी प्राशुक एटले अचित्त (एसणि ज्जेणं के०) ऐषणिक ते सुजतो एटले-जे साधुने कल्पे, एवो आधाकर्मादिक दोषें रहित अशन, पाणी, (खाइमं के०) सुखडी, (साइमं के०) सूंठ, हलदर प्रमुख (वछ के०) वस्त्र ते चोलपटादिक, (पडिग्गह के०) पढगा दिक पात्रां प्रमुख, (कंबल के०) कांबली, (पायपुछणेणं के०) बेसवानुं पोछणुं, (पाडिहारि के०) अणवोहोरी वस्तु जे गृहस्थनी थकां वाव रीने पछी गृहस्थने पाछी अपाय छे, तेवी वस्तु (पीढ के०) बाजोठ, (फलग के०) पाटीउं, (सिज्जा के०) वस्ति, एटले रहेवानो उपाश्रय, (संथारएणं के०) पाट अथवा माज प्रमुख, वली (उसह के०) औषध जे, क्काथ, चूर्ण, गोली प्रमुख एकज वस्तु होय ते (जेसज्जेणं के०) त्रिगडू,

त्रिफला प्रमुख, ए पूर्वोक्त वस्तुयें करी (नयवं के०) हे नगवन् गुरुजी ! (अणुग्गहोकायवो के०) अनुग्रह करवो, एटले जे जोइयें ते वोहोरजो.

॥ अथ पच्चक्खाण पारवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहियाए पडिक्कमीयें. यावत् जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं. पछी मन्हजिणाणंनी सज्झाय कही, मुहपत्ती पडिलेहवी. इच्छामि० इच्छाका० पच्चक्खाण पारुं, यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका० पच्चक्खाण पार्युं, तहत्ति एम कही जमणो हाथ कटासणां चवला उपर थापी,एक नवकार गणी पच्चक्खाण कर्युं होय ते कही पारवुं,ते लखीयें छैयें.

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं गंठसहिअं मुठिसहिअं पच्चक्खाण कर्युं चउविहार आंबिल, निवि, एकासणुं बेआसणुं कर्युं, तिविहार पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि डुक्कडं एम कही एक नवकार गणवो.

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि ॥

॥प्रथम उंचें आसनें पुस्तक प्रमुख मूकीनें श्रावक, श्राविका कटासणुं, मुहपत्ती चवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र जग्या पुंजी,कटासणा उपर बेसी, मुहपत्ती माबा हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी, एक नवकार गणि पंचिंदिअ कही, इच्छामि खमासमण देइ इरियावहिया, तस्स उत्तरी, अन्नच्छससिएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह नगवन्, सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? इच्छं एम कहि मुहपत्ती तथा अंगनी पडिलेहणना पचाश बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें. पछी खमासमण देइ० इच्छाकारेण संदिसह नगवन् सामायिक संदिसाहुं ? इच्छं. वली खमासमण देइ, इच्छा० सामायिक ठाउं ? इच्छं. एम कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी, इच्छाकारी नगवन्, पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी. तेवारें वडिल करेमि नंते कहे. पछी खमासमण देइ इच्छा० बेसणे संदिसाहुं ? ॥ इच्छं खमा० ॥ इच्छा० ॥ बेसणे ठाउं ? खमा० ॥ इच्छं इच्छा०॥ सझाय संदिसाहुं ॥ इच्छं खमा० ॥ इच्छा०॥ सज्झाय करुं ॥ इच्छं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा, पछी बे घडी सज्झाय धर्म ध्यान करवुं ॥ इति ॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ इरियावहि पडिक्कमवाथी जावत् लोगस्स सुधी कही खमा० ॥ इच्छा० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं कही, मुहपत्ती पडिलेहि, खमासमण देइ ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारुं. यथाशक्ति वली खमासमण देइ, इच्छा० ॥ सामायिक पार्युं; तहत्ति कही, पछी जमणो हाथ चवला उपर अथवा कटासणां ऊपर थापी, एक नवकार गणी, सामाइयवयजुत्तो कहियें. पछी जमणो हाथ थापना सन्मुख सवलो राखीने एक नवकार गणी ऊठवुं ॥इति॥

अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिय कही इरियावहि पडिक्कमी स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय नकहेवुं. पछी तस्सउत्तरीकही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही उने पगें बेसी मुहपत्ती, कटासणुं, चवलो, उत्तरासण, धोतीउं, कंदोरो, आदें पडिलेहवां, पछी काजो काहाडी, जीव कलेवर सचित्त आदे जोवुं. पछी काजो काहाडनार थापनाजी सन्मुख उनो रही इरियावहि पडिक्कमे, पछी काजो परठववा जग्या शोधी त्रण वार अणुजाणह जस्सग्गो कही, काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहि पडिक्कमवाथी मांमीने जावत् लोगस्स कही, पछी उत्तरासण नाखीने चैत्यवंदन नमुत्थुणं कही, आनवमखंमा सुधी अर्द्धो जयवीअराय कहे. वली बीजुं चैत्यवंदन करी, नमुत्थुणं कही जावत् चार थोयो कहीयें, वली नमुत्थुणं कही जावत् बीजी चार, थोयो कहियें छेयें. त्यांसुधी बधुं केहेवुं, पछी नमुत्थुणं तथा बे जावंती कही, एटले जावंति चेइआइं तथा जावंत केवि साहु ए बे कही. उवसग्गहरं अथवा स्तवन कही अर्द्धो जय वीअराय आनव मखंमासुधी कही, पछी चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं कही संपूर्ण जयवीअराय केहेवा. प्रनाते देव वांदवा तेमां मन्हजिणाणंनी सज्झाय केहेवी, अने मध्यान्हे तथा सांझे देव वांदे तेमां सज्झाय न कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधि प्रारंनः ॥

॥ प्रथम सामायिक लीजें. पछी पाणी वावर्युं होय तो मुहपत्ती पडिले

हवी, अने आहार वावर्यो होय तो वांदणां बे देवा, त्यां बीजा वांदणामां आवसीआए ए पाठ न कहेवो. यथाशक्ति पच्चखाण करवुं. खमासमण देइ इच्छाकारेण कही, वडेरा अथवा पोतें चैत्यवंदन कहीने पछी जंकिंचि नमुत्थुणं कही, उन्ना थईने अरिहंतचेइयाणं कहीने एक नवकारनो काउस्सग करी नमोऽर्हत्० कहिने प्रथम थोय कहेवी. पछी लोगस्स, सव्वलोए, अरिहंत चेइयाणं कहीने एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने बीजी थोय कहेवी. पछी पुरकरवरदी कही, सुअस्स नगवउ करेमि काउस्सग्गं वंदण० एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्च गराणं० करेमि काउस्सग्गं अन्नज्ञ० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी, नमोऽर्हत्० कही,चोथी थोय केहेवी. पछी बेसी हाथ जोडी नमुत्थुणं केहेवुं. पछी चार खमासमण देवा पूर्वक नगवान, आचार्य, उपाध्याय सर्वसाधु प्रत्यें थोन वंदन करियें. पछी इच्छाकारेण० ॥ देवसि प्रतिक्रमणे ठाउं, एम कहि, जमणो हाथ चवला कटासणा उपर थापीने इच्छं सव्वसवि देवसिअ० केहेवुं पछी उन्ना थइ करेमि नंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो में देवसिउ तस्सउत्तरी० कही, पछी आठ गाथानो काउस्सग्ग करवो. आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउस्ग्ग करवो, ते पारीने, पछी लोगस्स कहेवो. पछी बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडीलेहीने वांदणां बे देवां, पछी उन्ना थइने इच्छाका० देवसिअ आलोउं इच्छं आलोएमि जोमे देवसिउ कहीनें, पछी सात लाख कहेवा. पछी अढार पाप स्थानक आलोइने सव्वस्सवि देवसिअ. कहीने बेसवुं. बेसीने एक नवकार गणी पछी करेमि नंते इच्छामि पडिक्कमिनुं कहीने, वंदित्तु कहेवुं, पछी वांदणां बे देवां. पछी अप्नुठिउंहं अप्निंतर देवसिअ खामीने वांदणां बे देवां पछी उन्ना थइ आयरिय उवज्झाए कहीने, करेमि नंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० तस्सउत्तरी० कही,पछी बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग करी लोगस्स प्रगट कहेवो, पछी सव्वलोए, अरिहंतचेइयाणं, वंदणवत्तिआए कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने, पुरकरवरदी० सुअस्सनगवउ० करेमि० वंदण० एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्० कही,

पुरुषें सुअदेवयानी पेहेली थोय कहेवी, अने स्त्रीयें कमलदलनी पहेली थोय कहेवी. पढी खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्० कही क्षेत्र देवयानी बीजी थोय स्त्रीयें तथा पुरुषें बन्नेने कहेवी. पढी प्रगट एक नवकार गणी बेसीने, ढ्ठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहि, बे वांदणां आपीएं, पढी सामायिक चउविसबो, वंदनक, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चरकाण ए ढ आवश्यक संजारवां. पढी इच्छामि अणुसहिं कही नमो खमासमणाणं कही, नमोऽर्हत्० कहीने पुरुष, नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पढी नमुत्थुणं कही स्तवन कहेवुं. पढी वरकनक कही जगवान् आदें वांदवा. पढी जमणो हाथ उपधी उपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पढी देयसिअ पायच्छित्तनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो करवो. पढी ते काउस्सग्ग पारी, प्रगट लोग्गस्स कही, बेसीने खमासमण बे देइ सद्मायनो आदेश मागी एक नवकार गणो, सद्माय कहीएं, पढी वली एक नवकार गणीएं, पढी उकरकउ कम्मरकउनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो. एक वडेरे अथवा पोतें पारीने नमोऽर्हत् कही लघुशांति कहेवी, पढी प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी इरियावही तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो. पढी चउक्कसाय कही, नमुत्थुणं, जावंति बे कही, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही, मुहपत्ती पडिलेहवी. इच्छामि० ॥ इच्छाका० ॥ सामायक पारुं. यथाशक्ति इच्छामि० ॥ इच्छाका० ॥ सामायिक पार्युं तहत्ति कही, पढी जमणो हाथ उपधी उपर थापी एक नवकार गणीने सामाइअवयजुत्तो कहेवो. पढी थापना होय तो एक नवकार गणी उठे ॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि वडेराथी समजवो ॥ इति देवसि प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम पूर्वेंली रीतें सामायिक लीजें, पढी कुसुमिण डुसुमिणनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो करी, पारी, प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी खमासमण देइ जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं. पढी चार खमासमण पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु प्रत्यें वांदवा, खमासमण बे देइ, सद्मायनो आदेश मागी एक नवकार ग

णीने नरहेसरनी सज्ञाय कहीने फरी एक नवकार गणवो. पछी इच्छकार सुहराइनो पाठ कहेवो. पछी इच्छाका० राइ प्रतिक्रमणे ठाउं कहीने जम णो हाथ उपधी उपर स्थापीने इच्छंसवसवि राइय डुच्चिंतिय० कही ॥ नमु त्थुणं तथा करेमि भंते कही,इच्छामि ठामि काउस्सग्गं० जोमेराइयो तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही,सव्वलोए अरिहंत० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्स ग्ग पारी पुक्खरवरदी० सुअस्स० वंदण कही, अतिचारनी आठ गाथानो अ थवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी, सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने, त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही वांदणां बे देवां. त्यांथी ते अब्भुठ्ठिओ खामि वांदणां बे दीजें, त्यां सुधी देवसिनी रीतें जाणवुं. पण जे ठामें देवसिअं आवे छे ते ठामें राइअं केहेवुं. पछी आयरिअ उवज्झाए० करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सउतरी कही, तप चिंतामणि करतां न आवडे तो चार लोगस्सनो अथवा शोळ नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते पारी प्रगट लोगस्स कही, पछी छठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीने वांदणां बे देवां, ते पछी तीर्थवंदन करवुं, पछी यथाशक्तियें पच्चक्खाण करवुं. पछी इच्छाकारे ण संदिसह भगवन् सामायिक, चउविसत्थो, वंदनक, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चक्खाण ए छ आवश्यक संभारवां. पच्चक्खाण कर्युं होय तो.कर्युं छे जी. कहेवुं, अने धार्युं होय तो धार्युं छे जी? एम कहेवुं. पछी इच्छामो अणुसहिं, नमो खमासमणाणं० नमोऽर्हत्०, विशाल लोचन, नमुत्थुणं, अरिहंतचेइया णं एटला कही एक नवकारनो काउसग्ग पारीने नमोऽर्हत्० कही कल्या णकंदनी प्रथम थोय कहेवी. पछी लोगस्स, पुक्खरवरदी, सिद्धाणंबुद्धाणं, कही अनुक्रमें चार थोयो कहीयें छैएं त्यां सुधी सर्व कहेवुं. पछी नमुत्थुणं कही, भगवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा. पछी जमणो हाथ उपधी उपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पछी श्रीसीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन,स्त वन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत करवुं. पछी खमासमण पूर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय,काउस्सग्ग थोय सुधी करवुं. पछी सामायिक पारवाना विधीनी रीते सामायक पारवा सुधी कहेवुं॥इति॥

॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमणनो विधि लिख्यते ॥

॥ देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तुं कहियें छैयें त्यां सुधी सर्व कहेवुं, पण चैत्य

वंदन सकलाऽर्हतनुं केहेवुं ने थोयो स्नातस्यानी कहेवी. पछी खमासमण देइने इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, देवसिअ आलोइअं पडिक्कंता इच्छा का० पक्खि मुहपत्ती पडिलेहुं, एम कही मुहपत्ती पडिलेहियें. पछी वांदणां बे दीजें, पछी इच्छाका० संबुद्धा खामणेणं अप्नुट्ठिओहं अप्रिंतर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमि पक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचि अपत्तिअ० कही इच्छाका० कही पक्खिअं आलोएमि इच्छं आलोएमि जो मे पक्खिउ अइआरो कउ कही इच्छाका० कही पक्खि अतिचार आलोउं,एम कहीने अतिचार कहियें. पछी एवंकारें श्रावक तणें धर्मे श्रीसमकित मूल बार व्रत एकशो चोवीश अतिचार मांहे जे कोइ अतिचार पक्ष, दिवस मांहे सूक्ष्म, बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मनें. वचनें कायाए करी मिच्छामि डुक्कडं. सव्वस्सवि, पक्खिअ,डुच्चिंतिअ, डुप्नासीअ, डुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, तस्स मिच्छामि डुक्कडं इच्छाकारि जगवन् पसाउ करी पक्खि तप प्रसाद करोजी. एम उच्चार करीने आवी रीतें कहिएं. चउछेणं एक उपवास, बे आयंबिल त्रण निवि, चार एकाशणां आठ बियासणां, बे हजार सज्झाय, यथाशक्ति तपकरी प्रवेश कर्यो होय तो पइठी कहिए. अने करवो होय तो तहत्ति कहियें. तथा न करवो होय तो अण बोल्या रहियें. पछी बे वांदणां दीजे; पछी इच्छाका० पत्तेय खामणेणं अप्नुट्ठिओहं अप्रिंतर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमि पक्खिअं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० पछी वादणां बे दीजें, पछी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, पक्खिअं पडिक्कमुं सम्मं पडिक्कमामि इच्छं एम कही करेमि नंते सामाइयं कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जोमे पक्खिउ कह्या पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण कही पक्खिसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु होय तो पक्खिसूत्र कहे, अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तुं कहे,तिहां प्रथम सुअदेवयानी थोय कहेवी. पछी हेठ बेसी जमणो ढीचण उन्नो राखी. एक नवकार गणी करेमि नंतें इच्छामि पडिक्कमिउं कही, वंदित्तु, केहेवुं. पछी करेमि नंते,इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खिउ, तस्सउत्तरी,अन्नछ० कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा, अथवा अडतालीश नवकारनो काउस्सग्ग करीने पारवो. पारीने प्रगट लो

गस्स केहवो. पछी मुहपत्ती पडिलेहीने, वांदणां बे दीजें. पछी इछाका० समाप्त खामणेणं अप्सुठिउंहं अप्भिंतर पखिअं खामेउं इछं खामेमि पखिअं एक पखाणं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० कही पछी खमासमण देइने इछाका० कही, पखि खामणा खामुं. एम कहीने खामणां चार खामवां. पछी देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कह्या पछी वांदणां बे देइने त्यांथी सामायिक पारियें, त्यां सुधी देवसिनी पेठे जाणवुं; पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणें ज्ञानादिकनी थोयो कहेवी, स्तवन अजितशांतिनुं कहेवुं, सद्यायने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसार दावानी चार थोयो कहेवी. अने लघुशांतिने ठेकाणे महोटी शांति कहेवी ॥ इति॥

॥ अथ चउम्मासी प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ ए उपर लखेला पखिना विधि प्रमाणेज छे, पण एटलो विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणें वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने पखिना आगारने ठेकाणें चोमासीना कहेवा. तथा तपने ठेकाणें छठेणं, बे उपवास, चार आंबिल, छ निवी, आठ एकासणां, शोल बीआसणां, चार हजार सद्धाय, ए रीतें कहेवुं ॥ इति चउम्मासी प्रतिक्रमणविधि॥

॥ अथ सांवत्सरी प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ ए पण उपर लखेला पखिना विधि प्रमाणे छे, तथापि बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे चालीश लोगस्स अथवा एकशोने शाठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो, अने तपने ठेकाणे अठम नत्तं एटले त्रण उपवास, छ आंबिल, नव निवि, बार एकासणां, चोवीश बेआसणां, अने छ हजार सद्धाय, ए रीतें कहेवुं. तथा पखिना आगारने ठेकाणें संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति सांवत्सरी प्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ हवे छ आवश्यकनां नाम कहे छे ॥

॥ एक करेमि नंते ए सामायिकनामा पहेलुं आवश्यक, बीजुं चउविसह्वो नामा आवश्यक, त्रीजुं मुहपत्ती पडिलेहीने वांदणां बे देवां, ते वंदनावश्यक, चोथुं देवसियं आलोइ ए सूत्र कही यावत् अप्भुठिउ खामीयें, ते पडिक्कमणा आवश्यक, पांचमुं बे वांदणां देइने आयरिय उवद्यायना त्रण काउस्सग्ग कीधे काउस्सग्ग नामें आवश्यक थाय. छठुं पच्चरकाणनुं संनारवुं. ते पच्चरकाणनामा आवश्यक, ए छ आवश्यकनां नाम कह्यां. अहीं पखी,चोमा

सी अने संवत्सरी, ए पडिक्कमणानामें चोथा आवश्यकमांहे अंतर्भूत थाय छे.

॥ हवे ए छ आवश्यकना संक्षेपें अर्थ कहे छे. ॥

॥ जे अवश्य करवुं तेहने आवश्यक कहीयें, अने सर्वजीवो साथें जे समताभाव तथा सर्व सावद्य व्यापारथी विरमवुं, तेने सामायिक कहीयें, "समं आयाति सामायिकं" इति वचनात्. बीजुं चोवीश जिनना स्तवनथी दर्शन मोहनीयकर्मनो क्षयोपशम थइने समकेत शुद्ध थाय, ते चउविसत्थो. त्रीजुं गुरुवंदनथी ज्ञान, दर्शन निर्मल थाय. ते वंदनावश्यक. चोथुं पडिक्कमणाथी श्रावकने एकशोने चोवीश अतिचारनी आलोयणा थाय. पांचमुं काउस्सग्गथी सबल कषायनुं जीतवुं थाय, अने ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिकनी शुद्धि थाय. छहुं पच्चरकाण आवश्यकथी तप पच्चरकाणनुं संभारवुं, तथा पच्चरकाणनुं लेवुं थाय. ए छ आवश्यकना संक्षेपे अर्थ कह्या, विस्तारें ग्रंथांतरथी जाणवा.

हवे ए छ आवश्यके सात नय फलावीयें छेयें.

॥ त्यां प्रथम सामायिक आवश्यकें सात नय फलावे छे ॥

१ नैगमनये एक जीव अथवा घणा जीव तेने सामायिक कहीएं, अने मोक्षना कारण छे तेथी मोक्ष पण कहीयें; केम के ? कारणे कार्योपचार छे माटे.

२ संग्रहनये जीवनो गुण तेज सामायिक, तदभेद आत्मा ए आश्री जे आत्मा, तेज सामायिक. ३ व्यवहारनये समता अने यत्नायें प्रवर्त्ते, तेवारें सामायिकवंत आत्मा जाणवो. ४ रुजुसूत्रनये उपयोगरहित बाह्य यत्ना होय, ते समयनो जे सामायिकवंत आत्मा, ते स्थूल रुजुसूत्रनयनुं मत छे, अने उपयोगयुक्त बाह्य यत्नावंतने ते समय जे सामायिक कहेवुं, ते सूक्ष्म रुजुसूत्रनुं मत जाणवुं. ५ शब्दनये पांच समिति तथा त्रण गुप्ति पाले, अने सावद्यथी निवर्त्ते, क्रोधादिकनो त्याग करे, तेवारें ते आत्माने सामायिक माने छे. ६ समभिरूढ नयमतें तो जीवने अप्रमादि थका जे जे गुण उत्पन्न थाय छे ते ते गुणने वाक्यभेदें करी ए नय भिन्न सामायिक माने छे. ७ एवंभूतनयमते त्रिविध त्रिविधें मन, वचन, कायाना अशुद्ध भाव जे सावद्ययोग, तेने निषेधीने जे निश्चल शुद्धस्वभाव ते सामायिक जाणवो.

॥ हवे बीजा चउविसत्था नामा आवश्यक उपर सात नय फलावे छे.

१ नैगमनयमते अनुपयोगी सर्व द्रव्यात्मानी स्तुति कीधे मोक्ष होय ते सामान्य नैगमनुं मत छे, अने अरिहंतना चार निक्षेपाने स्तवने मोक्ष मानवो अथवा चउविसत्थो मानवो, ते विशेष नैगमनुं मत छे. २ संग्रहनयमते आत्मानुं स्तवन कीधे मोक्ष प्राप्ति छे. ३ व्यवहारनयमते भूत भावि जे चोवीश जिनमांहे व्यक्त गुण छे, माटे तेहनी स्तवनायें मोक्ष होय. ४ ऋजुसूत्रनयमते वर्त्तमानकालें चोवीश जिननां कीर्त्तन, वंदन, पूजन, जे समय करवां ते समय, मोक्षनुं कारण छे, ए स्थूल ऋजुसूत्रनुं मत, तथा चोवीश जिन जे समय मोक्षें गया ते समयनुं जे कालद्रव्य, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनुं मत छे. ५ शब्दनयमते समोसरणें विराजमान अरिहंतने अथवा सिद्ध अवस्था पाम्या तेहने पण भाविजिन कहिएं. माटे तेनी स्तवनाएं चउविसत्थो जाणवो. ६ समभिरूढ नयमते जे जीव मोक्षना पर्याय अनुभवे, तेहनी स्तवना करवे चउविसत्थो जाणवो. ७ एवंभूतनय मतें अरिहंतपणुं तीर्थंकरनी ऋद्धि भोगवी, संसारथी नीकली, आघाति चार कर्म क्षय करी सिद्धशिलाउपर रह्या, तेमनी स्तुतियें मोक्ष छे.

॥ हवे त्रीजा वंदनावश्यक उपर सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम अने संग्रह, ए बे नयने मते सर्व जीवमांहे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिकनी सत्ता छे माटे जीवने वांदवाथीज मोक्ष होय, ए विनयवादीनुं मत छे. ३ व्यवहारनयमते जेहमां साधुनी आचारणा देखीयें, तेहने वांदवा. ते वंदन छे. ४ ऋजुसूत्रनयमते तो जे कायायें करी चारित्र पाले, ते वांदवा योग्य. ए स्थूल ऋजुसूत्रनुं मत छे, अने जे समय श्रुतज्ञान सहित क्रिया पाले, ते समय वांदवाथी मोक्षप्राप्ति थाय, ए सूक्ष्म ऋजुसूत्रनुं मत छे. ५ शब्दादिक त्रण नयमते तो शुद्ध ज्ञान, दर्शनना अनुभव करनारने वांदवाथी मोक्षप्राप्ति छे.

॥ हवे चोथा प्रतिक्रमणावश्यक उपरें सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहने मते जे जीव, ते पडिक्कमणुं. ३ व्यवहारनयमते पडिक्कमणानी क्रिया करतो होय, ते जीवने पडिक्कमणुं कहीयें. ४ ऋजुसूत्रनयमते उपयोग विना जे समय द्रव्य पडिक्कमणुं करवुं, ते स्थूल ऋजुसूत्रमते पडिक्कमणुं छे, अने उपयोगसहित जे समये पडिक्कमणानी

क्रिया करवी, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनयमते पडिक्कमणुं जाणवुं. ५ शब्दादिक त्रणे नयमते जे शुद्ध ज्ञान, दर्शन, तेज पडिक्कमणुं जाणवुं.

॥ हवे पांचमा काउस्सग्गनामा आवश्यक उपर सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहनयमते जीव ते काउस्सग्ग. ३ व्यवहारनयमते शुद्ध क्रियाएं काया स्थिर मुद्रायें राखवी, तेने काउस्सग्ग कहे छे. ४ ऋजुसूत्रनयमते जे समयें उपयोग विना काउस्सग्ग करवो, ते स्थूल ऋजुसूत्रनुं मत छे, अने जे समयें उपयोगसहित काउस्सग्ग करवो. ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनुं मत छे. ५ शब्दादिक त्रण नयमते जे ज्ञान तेहीज काउस्सग्ग जाणवो.

॥ हवे छठा पच्चरकाण आवश्यक उपर सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहनयमते जे आत्मा तेज पच्चरकाण. ३ व्यवहार नयनमते अशनादिक चारनुं लोकलाजें जे पच्चरकाण करवुं, तेने पच्चरकाण कहेवुं. ४ ऋजुसूत्रनयमते जे उपयोग विना पच्चरकाण लेवुं, ते स्थूल ऋजुसूत्रना मते पच्चरकाण छे, तथा उपयोगसहित शुद्ध पच्चरकाण, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रना मते पच्चरकाण छे. ५ शब्दादिक त्रण नयमते तो ज्ञान, दर्शनरूप परिणाम, तेने पच्चरकाण कहिएं.

॥ हवे ए षडावश्यकें कालादिक पांच कारण उतारे छे ॥

१ जे कालें छ आवश्यकनी क्रिया करवाथी छ आवश्यक निपजे, ते प्रथम कालकारण. २ जीवने पडिक्कमणुं करवानो स्वभाव छे, माटेज पडिक्कमणुं करे छे. ते बीजुं स्वभावकारण. ३ जेथकी आवश्यक कार्य थाय, ते त्रीजुं निश्चयकारण, एटले ए छ आवश्यक निश्चय थवानां होय तो थाय. ४ पुण्यपापादिक ते कर्म कहेवाय छे, ते अहीं मोहादिक कर्मनो क्षयोपशम होय तो छ आवश्यकनो उदय आवे; ते चोथुं कर्मनामा कारण. ५ ते बधां कारण मले पण ए छ आवश्यक मांहे जे उद्यम फोरववो, ते उद्यमनामा पांचमुं कारण छे.

॥ हवे छ आवश्यकें उत्पाद, व्यय अने ध्रुवनुं द्वार देखाडे छे ॥

१ सामायिक करवाथी सावद्ययोगथी विरमवा पणानो गुण उपजे, चउविसत्थाथी सम्यक्त्वगुण उपजे, वंदनाथी विनयगुण उपजे, पडिक्कमणाथी पापथी उपरांठो थवा रूप गुण उपजे, काउस्सग्गथी ज्ञान दर्शन रूप शुद्धगुण उपजे, पच्चरकाणथी आश्रव निरोधगुण उपजे, ए व्यवहारनयें करी गु

णनुं उत्पादकपणुं देखाड्युं. २ ए ढएं आवश्यकथी अशुनकर्मनो नाश थाय ढे, ते माटे अहीं अशुन कर्मनो व्यय जाणवो. ३ ए ढए आवश्यकथी जीव निर्मलस्वजावमांहे ध्रुवपणे रहे ढे, ते अहीं ध्रुवपणुं जाणवुं,

॥ हवे षडावश्यकें हेय, ज्ञेय अने उपादेय देखाडे ढे ॥

१ ढ आवश्यकने विषे जे नय निक्षेपानुं ज्ञान ते ज्ञेय ढे. एटले जाणवा योग्य ढे. केम के? क्षपक श्रेणी चढवाने अनुपयोगी ढे, काम नावे माटे. २ नाम, स्थापना अने द्रव्य, ए त्रण निक्षेपा मोक्षार्थें हेय ढे, एटले ढांमवा योग्य ढे. ३ चोथो जावनिक्षेपो ते मोक्षार्थें उपादेय ढे, माटे ते आदरवा योग्य ढे.

॥ हवे ढ आवश्यकें षड्द्रव्यनो व्यवहार आत्मा साथें अशुद्धनिश्चयनयमते युक्ति देखाडे ढे.

॥ जे वेलायें जीव चाले, तेवारें धर्मास्तिकाय पोतानी साथें बांध्यो, आयत कीधो, पण बीजां द्रव्य बूटां ढे. एम अधर्मास्तिकाय, आकाश तथा काल अने पुज्जल जाणवा. पण शुद्ध निश्चयनयमते तो आत्मा बंधाय, ढोडाय नहीं, पुज्जल, बंधाय ढोडाय ढे.

हवे ए ढ आवश्यकमांहे कयुं कयुं आवश्यक, नवतत्त्वमांहेला कया कया तत्त्वमां ढे? ते देखाडवानुं द्वार कहे ढे.

॥ सामायिकमांहे जे शुनाश्रव थाय, तेहनो संवर तत्त्वमांहे अंतर्जाव थाय ढे, माटे सामायिक संवरतत्त्व ढे. चउविसत्थो ते मोक्षतत्त्वमां अंतर्नूत ढे, तथा वंदना, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चरकाण, ए चार आवश्यक यद्यपि शुनाश्रवमध्ये ढे, तथापि विशेषें आत्मानी परिणतिएं षडावश्यक साचवतां निर्जरातत्वमांहे अंतर्नूत थाय ढे.

॥ हवे ए ढ आवश्यकें सप्तनंगी कहे ढे ॥

१ सामायिक संवररूपें अस्ति ढे, चउविसत्थो किर्त्तनरूपें अस्ति ढे, वांदणां गुणवंत प्रतिपत्तिरूपें अस्ति ढे, पडिक्कमणुं आलोयणारूपें अस्ति ढे, काउस्सग्ग, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, आराधनरूपें स्यात् अस्ति ढे, अने पच्चरकाण ते व्रत धारणरूपें अस्ति ढे, ए पूर्वोक्त गुणरूप षडावश्यक स्यात् अस्तिरूपें ढे, ए प्रथम नंग जाणवो.

२ ए षडावश्यक अशुभ बंधपणे नथी, माटे एमां अशुन बंधनी नास्ति छे, तेथी स्यात् नास्तिपणुं छे, ए बीजो नंग जाणवो.

३ ए षडावश्यक स्वकीय एटले पोताने ड्व्य, क्षेत्र, कालनावें अस्तिरूपें छे, ते अस्ति नांगो छे, अने एहीज ड्व्य ते परड्व्यनां ड्व्य, क्षेत्र, काल, नावपणे नथी, ते नास्तिनामें नांगो छे, माटे जे समये अस्ति छे ते समयेंज नास्ति नंग पण छे; ए स्यात् अस्ति नास्ति नामें त्रीजो नंग जाणवो.

४ ए पूर्वोक्त त्रिनंगीएं करी छ आवश्यकनुं स्वरूप जाणीयें, पण ए समग्र समकालें कहेवाय नहीं.केम के? वचननुं तो क्रमें प्रवर्त्तन छे, तेथी एक समयमां सर्व धर्म कहेवाय नहीं, माटे ए अवक्तव्य नामा चोथो नंग जाणवो.

५ ए षडावश्यकमांहे एक समयने विषे अस्तिपणाना अनंता धर्म रह्या छे, ते जाणे खरो, पण एक समयें कहेवाय नहीं, केम के एक अक्षरनो उच्चार करतां पण असंख्याता समय लागे छे; माटे ए स्यात् अस्ति अवक्तव्य एवे नामें पांचमो नंग जाणवो.

६ ए षडावश्यकमांहे एक समयने विषे नास्तिपणाना अनंता धर्म रह्या छे, ते जाणे खरो, पण एक समयमांहे वचनें करी कह्या जाय नहीं; माटे ए स्यात् नास्ति अवक्तव्य नामा छठो नंग जाणवो.

७ ए षड्डावश्यकमां पोताना रूपें अस्तिपणे एक समयने विषे अनंता धर्म छे, अने पररूपें नास्तिपणें पण अनंताधर्म एक समयने विषे छे,पण ते एक समयें वचनें करी कह्या जाय नही; माटे ए स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति युगपत् अवक्तव्य नामा सातमो नंग जाणवो.

हवे ए प्रत्येक आवश्यकें चार नामादिक निक्षेपा तथा क्षेत्र अने काल ए छ वानां जूदां जूदां विवरीने कहे छे.

॥ त्यां प्रथम सामायिकावश्यकें छ वानां कहे छे ॥

१ सामायिक एहवुं नाम, ते नाम सामायिक. २ सामायिकनी क्रिया, रचना, विशेष, सूत्रनी स्थापना, ते स्थापना सामायिक ए बे नेदें छे. ३ सूत्रना शुद्ध अक्षरनो उच्चार, ते ड्व्य सामाहिक. ४ संकल्प विकल्प रहित शुन नावना जे आत्माना अध्यवसाय तेहने नावसामायिक कहियें. ५ जे क्षेत्रें सामायिक करियें, ते क्षेत्र सामायिक. ६ अनें एनो अंतरमुहूर्त्त प्रमाण काल, ते काल सामायिक.

॥ हवे चउविसत्थो नामा बीजा आवश्यक उपर ७ वानां ॥

१ ऋषभादिक चोवीश जिननां नाम ते नाम चउविसत्थो कहीयें. जिननी काष्ठमय चित्रित पुतली तथा पित्तलादिकनी मूर्त्ति ते स्थापना नामा चउविसत्थो; तेना बे भेद छे. एक जे स्थापनाना अंगोपांग तादृश देखाय ते सद्भाव स्थापना जाणवी, अने बीजी शंका प्रमुखें जे गुरुनी स्थापना करीयें, ते असद्भावस्थापना, ए बे भेदें स्थापना चउविसत्थो जाणवो. ३ जीवजिन ते द्रव्य चउविसत्थो कहीयें. ४ समवसरणस्थ जिन ते भाव चउविसत्थो. ५ जे क्षेत्रें ते खेत्र चउविसत्थो. ६ जे कालें ते काल चउविसत्थो.

॥ हवे वंदनावश्यक नामा त्रीजा आवश्यक उपर ७ वानां ॥

१ वांदणां एहवुं नाम, ते नाम वांदणुं. २ कोइक वांदणाने काष्ठ चित्रादिकने विषे स्थापे, जे आ में वांदणुं स्थाप्युं छे, ते स्थापना वांदणुं. ३ आवर्त्त बार तथा पच्चीश आवश्यकादिक शुद्ध उपयोग विना करवां, ते द्रव्यवंदन कहियें. ४ भावपूर्वक उपयोग सहित वांदवुं, ते भाववंदन. ५ जे क्षेत्रें वांदवुं, ते क्षेत्रवंदन. ६ जे कालें वांदवुं, ते कालवंदन.

॥ हवे पडिक्कमणां आवश्यक उपर ७ वानां ॥

१ पडिक्कमण एवुं नाम, ते नाम पडिक्कमणुं. २ जीवाजीवनी इच्छायें काष्ठादिक स्थापीयें, ते स्थापना पडिक्कमणुं. ३ जे उपयोग विना करवुं,ते द्रव्य पडिक्कमणुं. ४ भावथी उपयोग सहित करवुं, ते भाव पडिक्कमणुं. ५ जे क्षेत्रें पडिक्कमणुं करवुं. ते क्षेत्र पडिक्कमणुं. ६ जे कालें पडिक्कमणुं करवुं, ते काल पडिक्कमणुं. ए पडिक्कमणानी परें ज काउस्सग्ग तथा पच्चक्खाण ए बन्ने आवश्यकना नामादिक ७ए बोल जाणी लेवा.

अथ वडी नीति लघुनीत्यादि परठवण, योग्य जग्या प्रतिलेषण निमित्तें पोसहमां चोवीश मंमल करवां,ते कहे छे. त्यां प्रथम संथारा पासेंनी जग्याये.

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे. २ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे. ३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे. ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयना बारणांना मांहेनी तरफनो ॥

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. २ आघाडे आसन्ने पा

सवणे अहियासे. ३ आघाडे मज्के उच्चारे पासवणे अहियासे. ४ आघा डे मज्के पासवणे अहियासे. ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे. ६ आघाडे दूरे पासवणे अहियासे.

॥ हवे उपाश्रयनां बारणां बाहिर नजिक रहीने करे ॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियायासे. २ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे. ३ अणाघाडे मज्के उच्चारे पासवणे अण हियासे. ४ अणाघाडे मज्के पासवणे अणहियासे. ५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ६ अणाघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयथी शो हाथ आशरे दूरें रहे, ते करवां ॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. २ अणाघाडे आस न्ने पासवणे अहियासे. ३ अणाघाडे मध्ये उच्चारे पासवणे अहियासे. ४ अ णाघाडे मध्ये पासवणे अहियासे. ५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहिया से. ६ अणाघाडे दूरे पासवणे अहियासे ॥ इति मंमल बोल चोवीश समाप्त ॥

अथ

श्री देवेंद्रसूरिविरचितं चैत्यवंदनादिज्ञाष्यत्रयं बालावबोधसहितं प्रारन्यते ॥

तत्र प्रथमं

श्री चैत्यवंदनज्ञाष्यप्रारंज्ञोऽयं,

ग्रंथकर्त्ता मंगलाचरण माटे गाथा कहे ले.

वंदित्तु वंदणिज्जे, सव्वे चिइवंदणाइ सुवियारं ॥
बहु-वित्ति-ज्ञास-चुस्पी सुयाणुसारेण वुल्लामि ॥ १॥

बालावबोध कर्त्तानुं मंगलाचरण कहे ले.

प्रणम्य प्रणतानंद, कारकं विघ्न वारकं ॥ श्रीमद्विजयदेवार्कं,
लसल्लावण्य धारकं॥ १ ॥ मेरुधीरं स्फुरद्धीरं, गंज्ञीरं नी
रधीशवत् ॥ ज्ञाष्यत्रयार्थ बोधाय, बालबोधो वि धीयते ॥ २ ॥

अर्थः—(वंदणिज्जे के०) वंदनीयान् एटले वांदवा योग्य एवा जे (सव्वे के०) सर्वे श्रीतीर्थंकर देव अथवा श्रीअरिहंतादिक (सव्वे के०) सर्वे

पांचे परमेष्ठी तेमने (वंदित्तु के०) वंदिला एटले वांदीने (चिइवंदणाइ के०) चैत्यवंदनादिक एटले चैत्यवंदन तथा आदि शब्दथी गुरुवंदन अने पच्चरकाण पण लेवा. ते रूप (सुवियारं के०) सुविचारं एटले रूडा विचार प्रत्यें (बहु के०) घणा एवा जे (वित्ति के०) वृत्ति, (भास के०) भाष्य अने (चुस्री के०) चूर्णि तथा निर्युक्ति प्रमुख ग्रंथो तद्रूप (सुयाणुसारेण के०) श्रुतने अनुसारे करीनें (वुच्छामिके०) कहीश. परंतु महारी मतिकल्पनायें नही कहीश. एटले धर्मरुची जीवोने पंचांगी सम्मत चैत्य वंदनादिकनो विधि कहीश. कारण के समकेतनुं बीज तो शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनुं स्वरूप जाणवुं, अने सद्दहवुं छे ते माटे प्रथम अढार दोष रहित, निष्कलंक एवा जे श्रीअरिहंत देव छे ते शुद्ध देव छे तेना स्थापनादिक चारे निक्षेपा वांदवा योग्य छे, तो इहां चैत्यशब्दें श्रीअरिहंत तथा श्रीअरिहंतनी प्रतिमा तेनी जे वंदना करवी ते विधिसहित करवी ते विधि कहीश ॥ इति ॥ १ ॥

हवे ते चैत्यवंदननो विधि मूल तो चोवीश द्वारें सचवाय छे, ते चोवीशना वली उत्तर भेद २०७४ थाय छे. माटे चोवीश द्वारनां नाम, प्रत्येक द्वारना उत्तर भेदनी संख्या सहित चार गाथायें करी कहे छे.

दहतिग अहिगम-पणगं, दुदिसि तिहुग्गह तिहा उ वंदणया ॥ पणिवाय-नमुक्कारा, वस्मा सोल-सय-सीयाला ॥२॥
इगसीइ सयं तु पया, सग-नउइ संपयाउ पण दंमा ॥ बार अहिगार चउवं, दणिज्ज संरणिज्ज चउह जिणा ॥ ३ ॥
चउरो थुइ निमित्तठ, बारह हेऊअ सोल आगारा ॥गुणवीस दोसउस्स, ग्ग माण थुत्तं च सगवेला ॥ ४ ॥ दस आसायण चाउ, सवे चिइवंदणाइं ठाणाइं ॥ चउवीस दुवारे हिं, दुसहस्सा हुंति चउ सयरा ॥ ५ ॥ इतिदारगाहा ॥

अर्थः—प्रथम देव वांदतां नैषेधिक आदिक (दहतिग के०) दश त्रिक साचववा जोइयें, तेनुं द्वार कहीश, बीजुं (अहिगमपणगं के०) अभिगम पंचक एटले पांच अभिगमनुं द्वार कहीश. त्रीजुं देव वंदन करतां स्त्रीने कयी दशायें अने पुरुषने कयी दशायें उभा रहेवुं जोइयें, ते (दुदिसि के०)

द्विदिशि एटले बे दिशाउनुं द्वार कह्यीश, चोथुं जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा (तिउग्गह के०) त्रण प्रकारना अवग्रहनुं द्वार कह्यीश, पांचमुं (तिहा उवंदणया के०) त्रिधातुवंदनया एटले त्रण प्रकारे वली (चैत्यवंदना करवी. तेनुं द्वार कह्यीश, बहुं पंचांग एटले पांच अंगे (पणिवाय के०) प्रणिपात करवो तेनुं द्वार कह्यीश, सातमुं (नमुक्कारा के०) नमस्कार करवानुं द्वार कह्यीश, आठमुं देववंदनना अधिकारें जे नवकार प्रमुख नव सूत्रों आवे छे तेना (वन्ना के०) वर्ण एटले अक्षर ते (सोलसयसीयाला के०) शोलशेंने सुडतालीश थाय. तेने गणी देखाडवानुं द्वार कह्यीश ॥ २ ॥

नवमुं देववंदनना अधिकारें नवकार प्रमुख नव सूत्रानां (इगसीइसयं के०) एकशेंने एक्यासी (तु के०) वली (पया के०) पदो थाय छे, ते देखाडवानुं द्वार कह्यीश, दशमुं एज नवसूत्रानां (सगनउइ के०) सप्तनवति एटले सत्ताणुं (संपयाउ के०) संपदाउ थाय छे, ते देखाडवानुं द्वार कह्यीश, अगीआरमुं नमुत्थुणादिक (पणदंमा के०) पांच दंमकनुं द्वार कह्यीश, बारमुं चैत्यवंदनने विषे पांच दंमकमां (बारअहिगार के०) बार अधिकार आवे छे, तेनुं द्वार कह्यीश, तेरमुं (चउवंदणिज्ज के०) चार वांदवा योग्य तेनुं द्वार कह्यीश, चौदमुं उपद्रव टालवा निमित्तें एक (सरणिज्ज के०) स्मरण करवा योग्य जे सम्यक्दृष्टि देवो तेमनुं द्वार कह्यीश, पन्नरमुं नाम स्थापनादिक (चउहजिणा के०) चार प्रकारना जिननुं द्वार कह्यीश ॥ ३ ॥

शोलमुं (चउरोथुइ के०) चार स्तुति कहेवानुं द्वार कह्यीश, सत्तरमुं देववांदवामां पापक्षपणादिक (निमित्तठ के०) निमित्त आठ छे, तेनुं द्वार कह्यीश अढारमुं फल साधवा निमित्तें (.बारहेऊ के०) बार हेतुनुं द्वार कह्यीश, (अ के०) वली उगणीशमुं अपवादें काउस्सग्गना (सोलसआगारा के०) शोल आगारनुं द्वार कह्यीश, वीशमुं काउस्सग्गमां (गुणवीसदोस के०) उगणीश दोष उपजे तेनुं द्वार कह्यीश, एकवीशमुं (उस्सग्गमाण के०) काउस्सग्गना प्रमाणनुं द्वार कह्यीश, बावीशमुं श्रीवीतरागनुं (थुत्तं के०) स्तवन केवा प्रकारें करवुं? तेनुं द्वार कह्यीश, त्रेवीशमुं (अ के०) वली दिन प्रत्यें चैत्यवंदन (सगवेला के०) सात वेला करवुं तेनुं द्वार कह्यीश ॥ ४ ॥

चोवीशमुं देववंदन करतां देरासरमां तांबूल प्रमुख (दसआसायणचाउ के०) दश आशातनानो त्याग करवो तेनुं द्वार कह्यीश, एम (सव्वे के०) सर्वे

(चिइवंदणाइंगणाइं के०) चैत्यवंदननां स्थानक ते (चउवीसडुवारेहिं के०) चोवीशें द्वारें करीनें (डुसहस्सा के०) बे हजारने ऊपर (चउसयरा के०) चुम्मोतेर (हुंति के०) थाय ॥५॥ (दारगाहा के०) ए द्वारनी गाथाउ चार जाणवी ॥

चोवीश द्वारनां उत्तरभेदसहित यंत्रनी स्थापना.

अंक	मुळद्वारनां नाम.	उत्तरभेदनी संख्या.	सरवाळो.
१	नैषेधिकादिक दशत्रिकनुं द्वार.	३०	३०
२	पांच अभिगम साचववानुं द्वार.	५	३५
३	देववांदतां स्त्रीपुरुषने ऊभा रहेवानी बे दिशिउनुं द्वार.	२	३७
४	जघन्य, मध्यमादि त्रण अवग्रहनुं द्वार.	३	४०
५	त्रण प्रकारें वंदना करवी तेनुं द्वार.	३	४३
६	प्रणिपात पंचांगें करवानुं द्वार.	१	४४
७	नमस्कार करवानुं द्वार.	१	४५
८	नवकार प्रमुख नवसूत्रानां वर्णनुं द्वार.	१६४७	१६९२
९	नवकार प्रमुख नव सूत्रानां पदसंख्यानुं द्वार.	१८१	१८७३
१०	नवकार प्रमुख नवसूत्रानी संपदानुं द्वार.	९७	१९७०
११	नमोत्थुणादि पांच दंमकनुं द्वार.	५	१९७५
१२	देववांदवाना बार अधिकारनुं द्वार.	१२	१९८७
१३	चार वंदनीयनुं द्वार.	४	१९९१
१४	स्मरण करवा योग्यनुं द्वार.	१	१९९२
१५	नामादि चार प्रकारे जिननुं द्वार.	४	१९९६
१६	चार थुइ कहेवानुं द्वार.	४	२०००
१७	देव वांदवाना आठ निमित्तनुं द्वार.	८	२००८
१८	देव वांदवाना बार हेतुनुं द्वार.	१२	२०२०
१९	काउस्सग्गना शोळ आगारनुं द्वार.	१६	२०३६
२०	काउस्सग्गना उगणीश दोषनुं द्वार.	१९	२०५५
२१	काउस्सग्गना प्रमाणनुं द्वार.	१	२०५६
२२	स्तवन केम करवुं, तेनुं द्वार.	१	२०५७
२३	सात वार चैत्यवंदन करवानुं द्वार.	७	२०६४
२४	दश आशातना त्यागवानुं द्वार.	१०	२०७४

हवे ए चोवीशे द्वारना अंतर जेदनुं स्वरूप अनुक्रमे देखाडतो थको प्रथम दश त्रिकोनुं द्वार कहेतो ठतो बे गाथायें करी दश त्रिकोना नाम कहे ठे.

तिन्नि निसिही तिन्निउ, पयाहिणा तिन्नि चेव य पणामा ॥
तिविहा पूया य तहा, अवठ-तिय-जावणं चेव ॥ ६ ॥
तिदिसि-निरक्कण-विरई, पयनूमि-पमज्जणं च तिक्कुत्तो ॥
वन्नाइ-तियं मुद्दा, तियं च तिविहं च पणिहाणं ॥ ७ ॥

अर्थः—प्रथम देरासरें जातां (तिन्निनिसिही के०) त्रणवार नैषिधिकी कहेवी, बीजुं देरासरें (तिन्निउ के०) त्रण वली (पयाहिणा के०) प्रदक्षिणा देवी, त्रीजी (तिन्नि के०) त्रण वार (चेवय के०)ए निर्धार वाचक शब्द ठे (पणामा के०) प्रणाम करीयें, चोथो (तिविहा के०) त्रण प्रकारनी अंगपूजादिक (पूया के०) पूजा करवी, पांचमी (अ के०) वली (तहा के०) तथा प्रनुनी पिंमस्थावस्थादिक (अवठतियजावणं के०) अवस्थात्रयनुं जाववुं जाणवुं, (चेव के०) निश्चें ॥

ठठी चार दिशिमांथी मात्र जगवान् जे दिशियें बेठेला होय तेज एक दिशिनी सामुं जोवानुं टालीने शेष (तिदिसिनिरक्कणविरई के०) त्रण दिशिनी सन्मुख जोवानुं विरमण करवुं, सातमी (पयनूमिपमज्जणं के०) पग मूकवानी नूमिनुं प्रमार्जन ते (च के०) वली (तिक्कुत्तो के०) त्रण वार करवुं, आठमी (वन्नाइतियं के०) वर्णादिकना आलंबन त्रण कहेशे (च के०) वली नवमी (मुद्दंतियं के०) त्रण मुद्रा कहेशे, दशमी (तिविहं के०) त्रण प्रकारें (च के०) वली (पणिहाणं के०) प्रणिधान कहेशे, जे त्रण बोलनो समुदाय तेने त्रिक कहीयें, ए दश त्रिकनां नाम कह्या ॥ ७ ॥

हवे प्रथम निसिही त्रण कये कये स्थानकें करवी ? ते कहे ठे.

घर-जिणहर-जिण-पूया, वावारच्चायउ निसिहि-तिगं ॥
अग्ग-द्दारे मज्जे, तइया चिइ-वंदणा-समए ॥ Ճ ॥

अर्थः—जे सावद्य व्यापारनो मन, वचन अने कायायें करी निषेध करवो तेने निसिही कहीयें, ते एक पोताना (घर के०) घरनां बीजी (जिणह

रकें०) जिनघर ते देरासरनां, त्रीजी (जिणपूआ के०) श्रीजिनेश्वरनी पूजानां जे (वावार के०) व्यापार एटले ए त्रणना जे व्यापार तेने (चा यउ के०) त्यागवा थकी (निसिहीतिगं के०) नैषिधिकीत्रिक थाय ते मां प्रथम निसिही ते पोताना घर, हाट, परिवारादिक संबंधि जे सावद्य व्यापार ते सर्वे निवर्त्तावा माटे श्रीजिनमंदिरने (अग्गद्दारे के०) अग्र द्वारे कहे. एटले देरासरनां मूल बारणे दरवाजामां पेसतांज कहे, पण इहां श्रीजिनघरने पूंजवा समारवा संबंधि तथा पूजा संबंधि सर्वे व्यापार आदरे, तथा बीजी निसिही ते जिनघर संबंधि व्यापारथी निवर्त्तवा रूप देरासरनी (मज्झे के०) मध्य गंनारामां पेसतां कहे, तिहां देरासर पञ्चा आरवञ्यानी चिंतानो तथा देरासरमां पुंजवादिकनो त्याग करीने ड्व्यपूजादिकनो प्रारंन करे, एम सर्व प्रकारनी पूजा विधिसहित साचवी रह्या पठी (तश्या के०) त्रीजी निसिही जे जिनपूजा संबंधि व्यापारना त्याग रूप ठे ते. जिनपूजा व्यापार त्याग तो (चिइवंदणासमए के०) चैत्य वंदन करवाना अवसरे कहे, इहां ड्व्यपूजा व्यापार सर्वे निवर्त्तावीने कैवल्य नावपूजा रूप चैत्यवंदन स्तवनादिकनो एकाग्र चित्तें करी पाठ करे, ए रीतें त्रण निसिही साचवे.

अथवा मन, वचन अने कायायें करी घरसंबंधि व्यापार निषेधवा रूप त्रण निसिही देरासरना अग्रद्वारमां कहेवी, अने तेज प्रमाणें मनादिक त्रणे योगें देरासर संबंधी व्यापार त्यागवा आश्रयी त्रण निसिही गंनारामां कहेवी, तथा वली चैत्यवंदनादि कहेवानें अवसरें पण मन वचन कायायें करी जिनपूजा व्यापार त्याग रूप त्रण निसिही कहेवी, ए रीतें दरेक वखतें मन, वचन अने कायाना योगें करी त्रण त्रण निसिही कहेवी, अथवा दरेक वखतें एकज निसिही कहेवी. परंतु घर संबंधी देरा संबंधी अने जिनपूजा संबंधी व्यापार निषेध करीयें ठैयें, एम समजीनें देरासरमां पेसतांज त्रणे निसिही कही देवी नहीं. ए तात्पर्य ठे. ए प्रथम निसिही त्रिक कह्युं ॥ ८ ॥

हवे बीजुं प्रदक्षणात्रिकनुं नाम प्रथम सामान्यें ठठी गाथामां कहेलुं ठे, तेनो प्रगट अर्थ ठे, माटे जूडुं वखाण्युं नथी. तथापि चैत्यना दक्षिण नागथी त्रण प्रदक्षिणा देवी, एटले संसारना नवच्रमण टालवा रूप नाव

नायें श्रीप्रतिमाजी महाराजनी जमणी बाजुथी अनुक्रमें ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधना रूप त्रण फेरा फरवा. ए बीजुं प्रदक्षिणात्रिक कह्युं.

हवे त्रीजुं प्रणामत्रिक कहे ले.

अंजलि-बंधो अद्धो, णउ अ पंचंगउ अ तिपणामा ॥
सवत्र वा तिवारं, सिराइ-नमणे पणाम-तियं ॥ ए ॥

अर्थः—श्रीजिन प्रतिमा देखी बे हाथ जोडी निलाडे लगाडी प्रणाम करीयें ते प्रथम (अंजलिबंधो के०) अंजलिबंध प्रणाम कहीयें, तथा कटी देशथी उपरलुं अर्धुं शरीर तेने लगारेक नमाडी प्रणाम करीयें, अथवा ऊर्ध्वादि स्थानके रह्या थकां कांइक शिर नमाडीयें, तथा शिर करादिकें करी नूमिका पादादिकनुं फरसवुं ते एक अंगथी मांमीने चार अंग पर्यंत नमाडवुं ते बीजो (अद्धोणउ के०) अर्द्धावनत प्रणाम कहीयें, तथा (अ के०) वली बे जानुं, बे कर अने पांचमुं उत्तमांग ते मस्तक ए पांच अंग नमाडी खमासमण आपीयें, ते त्रीजुं (पंचंगउ के०) पंचांग प्रणाम जाणवो. ए (तिपणामा के०) त्रण प्रणाम जाणवा.

(वा के०) अथवा (सवत्र के०) सर्वत्र प्रणाम करवासमये (तिवारंके०) त्रण वार (सिराइनमणेके०) मस्तकादिक नमाडवें करी एटले शिर, कर, अंजली प्रमुखें करी जे त्रणवार नमन आवर्त्त करवुं ते (पणामतियं के०) प्रणामत्रिक जाणवुं. ए त्रीजु प्रणाम त्रिक कह्युं॥ ए ॥

हवे चोथुं पूजात्रिक कहे ले.

अंगग्गनावनेया, पुप्फाहार थुइहिं पूयतिगं ॥
पंचोवयारा अठो, वयार सवोवयारा वा ॥ १० ॥

अर्थः—(अंगग्ग के०) अंगने अग्र एटले पहेली अंगपूजा अने बीजी आगल ढोवारूप अग्रपूजा, तथा त्रीजी चैत्यवंदन रूप (नाव के०) नावपूजा ए त्रण (नेयाके०) नेद थकी अनुक्रमें (पुप्फाहारथुइहिं के०) पुष्पाहारस्तुतिनिः एटले पहेली पुष्प केसरादिके अने बीजी आहार फलादि ढोकनें तथा त्रीजी स्तुति करवे करीने (पूयतिगं के०) पूजा त्रिक थाय ले.

तेमां प्रथम अंगपूजा ते श्रीवीतरागनी पूजा अवसरे मनःशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, नीतिनुं धन, पूजाना उपकरणनी शुद्धि, नूमिशुद्धि ए सातवाना शुद्ध करी धवल निर्मल सुपोत धोतीयां पुरुष पहेरे, अने जेनो आवपडो मुखकोश थाय एहवी एक साडी उत्तरासंगनी धरे, एवी रीतें पुरुषें पूजा अवसरें बे वस्त्र राखवां अने स्त्रीनें तो विशेष वस्त्रादिकनी शोजा जोइयें तथापि हमणां संप्रदायें त्रण वस्त्र पहेरी पूजा करे, ए रीतें वस्त्र पहेरी आशातना टालतो थको प्रथम पुंजणीयें करी श्रीजिनबिंबनें पूंजे, पूंजवाथी मांफी पर्वनेविषे त्रण, पांच, सात, कुसुमांजलि प्रक्षेप करे. न्हवण, अंगलूहणां धरतो, विलेपन, नूषण, अंगीरचन, पुष्प चडावतो जिनहस्तमां नारिकेरादिक, धूपाक्षेप, सुगंधवासक्षेपणादिक करतो पूजा करे. ए सर्व अंगपूजा जाणवी.

बीजी अग्रपूजा; तेमां धूप, दीप, नैवेद्यादि शब्दें आहार ढोकन पुष्पप्रकर, गंथिम, वेढिम, पूरिम, संघातिमादि नेदें जल, लवणोत्तारण, आरती, मंगलदीप, अष्टमंगलजरण, ए सर्व बीजी अग्रपूजा जाणवी.

त्रीजी जावपूजा मध्ये स्तुति, गीत, गान, नाटक, छत्र, चामर, विंजवादि तथा देवद्रव्य वधारवा प्रमुख सर्व जावपूजा जाणवी. ए पूजात्रिक कह्युं. अथवा करवा, करावया अने अनुमोदवा रूप ए पण त्रिविध पूजा जाणवी.

अथवा एक विघ्नोपशामिनी, बीजी अन्युदयसाधनी, त्रीजी निवृत्तिदायिनी, ए पूजात्रिक जाणवुं. यडुक्तं ॥ विग्घोवसामिगेगा, अप्नुदयसाहणी नवे बीया ॥ निवुइकरणी तइया, फलयाउ जहन्न नामेहिं ॥ १ ॥ इत्यावश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥

(वा के०) अथवा (पंचोवयारा के०) पंचोपचारा पूजा ते १ गंध, २ माल्य, ३ अधिवास, ४ धूप, ५ दीप. अथवा १ कुसुम, २ अक्षत, ३ गंध, ४ धूप, ५ दीप, ए पंच प्रकारें पण प्रथम अंग पूजा जाणवी.

बीजी (अछोवयार के०) अष्ठोपचार एटले १ कुसुम २ रकह ३ गंध ४ पईव ५ धूव नैवेक्ज ७ जल ८ फलेहि पुणो ॥ अठविह कम्ममहणी, अठुवयारा हवइ पूया ॥ १ ॥ इति आवश्यकनिर्युक्तिवचनम्. ए आठ प्रकारें पूजा जाणवी.

त्रीजी (सवोवयारा के०) सर्वोपचारा ए सर्वोपचार पणे पूजा प्रते

णाम मात्रादिक सर्व लोकोपचार विनय ते सर्वपूजा जाणवी. अथवा जेटली वस्तु मले तेणेकरीने पूजा करवी ते सर्वोपचारपूजा जाणवी. तिहां १ न्हवण, २ विलेपन, ३ देवडुष्यवस्त्र, तथा चक्षुयुगल, ४ वासपूजा, ५ फूलपगर, ६ फूलमाल, ७ बूटां फूल, ८ चूर्णघनसारादि, तथा आंगी रचनादि, ९ ध्वजारोपण, १० आभरण, ११ फूलघर, १२ फूलनो मेघ, १३ अष्टमंगल रचना, १४ धूप दीप आरती मंगल दीपादिक नैवेद्य ढोकन, १५ गीतगान, १६ नाटक १७ वाजित्र. ए सत्तर प्रकारें पूजा, तथा वली २१ प्रकारें पूजा, तेनां नाम कहे छे. १ स्नात्र, २ विलेपन, ३ भूषण, ४ फल, ५ वास, ६ धूप, ७ दीप, ८ फूल, ९ तंडुल, १० पत्र, ११ पूगी, १२ नैवेद्य, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ छत्र, १६ चामर, १७ वाजित्र, १८ गीत, १९ नृत्य, २० स्तुति, २१ देवद्रव्यकोशवृद्धि, एवं एकवीश भेद, तथा एकशो आठ प्रकारादि ए सर्व बहुविध पूजा जाणवी. ए रीतें पंचोपचार, अष्टोपचार अने सर्वोपचार मली त्रण भेदें पूजा जाणवी. ए चोथुं पूजात्रिक कह्युं ॥ १० ॥

हवे पांचमुं, अवस्थात्रिक कहे छेः–

भाविज्ज अवछतियं, पिंमछ पयछ रूवरहियत्तं ॥
छउमछ केवलित्तं, सिद्धत्तं चेव तस्सछो ॥ ११ ॥

अर्थः–हे भव्यजीव तुं (भाविज्ज के०) भाव्य श्रीभगवंतनी (अवछतियं के०) त्रण अवस्था प्रत्यें एटले त्रण अवस्थानी भावना भावियें, ते कहे छे. प्रथम (पिंमछ के०) पिंमस्थावस्था भावीयें, बीजी (पयछ के०) पदस्थ अवस्था भावीयें, त्रीजी (रूवरहियत्तं के०) रूपरहितत्वं एटले रूपरहित एवी रूपातीत अवस्था भावीयें, तिहां जे पिंमस्थावस्था ते (छउमछ के०) छद्मस्थावस्थायें भावियें, तीर्थंकर पदनां पिंम जे शरीर तीर्थंकर नाम कर्म योग्य छे ते पिंमस्थावस्था छे अने पदस्थावस्था ते (केवलित्तं के०) केवलज्ञान अवस्थायें भावीयें एटले केवल ज्ञान पाम्या पछी प्रभुपदस्थ थया ते, तथा रूपातीतावस्था ते (सिद्धत्तं के०) सिद्धत्वं एटले सिद्धपणानी अवस्थायें भाववी, कारण के सिद्धपणुं जे छे, ते रूपथकी अतीत छे, माटे सिद्धरूप पणु भावतां रूपातीत भावना कही

यें. ए (चेव के०) निश्चें (तस्सडो के०) ते पिंमस्थादिक त्रण अवस्था नों अर्थ जाणवो ॥ ११ ॥

॥ हवे ए त्रणे अवस्था क्यां क्यां भाववी? तेनां ठाम कहे छे.

एहवणच्चगेहिं छउम, च्छवच्छ पडिहार गेहिं केवलियं ॥
पलियं कुस्सग्गेहिय, जिणस्स भाविज्ज सिद्धत्तं ॥ १२ ॥

अर्थः–(एहवणच्चगेहिं के०) स्नपनार्चकैः एटले न्हवण, पखाल, अर्चादि पूजाना अवसरें, पूजा करनारा पूजक पुरुषोयें (जिणस्स के०) श्रीजिनेश्वरनी (छउमछवछ के०) छद्मस्थावस्थाने भाववी, ते छद्मस्थावस्थाना त्रण भेद छे, एक जन्मावस्था, बीजी राज्यावस्था अने त्रीजी श्रमणावस्था, तेमां प्रभुने न्हवण अर्चादिक प्रक्षालन करतां जन्मावस्था भाववी, अने मेरुपर्वतनी उपर जे जन्म महोत्सव भाववो ते पण जन्मावस्थाज जाणवी.

तथा मालाधारादि, पुष्प, केशर, चंदन अने अलंकारादि चढावतां राज्यावस्था भाववी. वली भगवंतने अपगत शिरकेश, शीर्ष, श्मश्रु कूर्च रहित एवा मुख मस्तकादिक देखीने श्रमणावस्थानी भावना भाववी. ए प्रथम छद्मस्थावस्था त्रण भेदें विवरीनें कही.

तथा किंकली, कुसुमवृष्टि अने दिव्यध्वनि प्रमुख (पडिहारगेहिं के०) आठ महाप्रातिहार्यें करीने एटले प्रातिहार्य युक्त भगवानने देखीने बीजी पदस्थावस्था एटले (केवलियं के०) केवली पणानी अवस्था भावीयें.

तथा (पलियंक के०) पर्यंकासने करी सहित एटले पलोंठी वालीने बेठा एवा (उस्सग्गेहिं के०) काउस्सग्गीयाने आकारें (य के०) वली (जिणस्स के०) जिननुं बिंब देखवे करीने (सिद्धत्तं के०) सिद्धत्व एटले सिद्धपणानी अवस्था अर्थात् रूपातीत पणानी अवस्था प्रत्यें (भाविज्ज के०) भाववी. केम के केटलाएक तीर्थंकरो पर्यंकासने काउस्सग्ग मुद्रायें मुक्ति गया छे माटे ज्योतिरूप अवगाहना भाववी. आ गाथामां भाविज्ज ए क्रियापद सर्वत्र संगत करवुं. ए पांचमुं अवस्थात्रिक कह्युं ॥ १२ ॥

हवे ठहुं त्रणे दिशि जोवाथी निवर्त्तवानुं त्रिक कहे छे.

उड्ढाहो तिरिआणं,तिदिसाण निरक्कणं चइज्जहवा ॥
पच्छिम दाहिण वामण, जिण मुहन्नछ दिछि जुत्त ॥ १३ ॥

अर्थः—श्रीजिनप्रतिमा जुहारतां प्रभु उपर एकांत ध्यान राखवा निमित्तें एक (उड्ढा के०) ऊर्ध्वदिशि, बीजी (अहो के०) अधोदिशि अने त्रीजी (तिरिआणं के०) तिर्छी दिशि, ते आडुं अवलुं ए (तिदिसाण के०) त्रण दिशिनुं (निरक्कणं के०) जोवुं (चइज्ज के०) ठांमवुं एटले वर्जन करवुं. (अहवा के०) अथवा (पच्छिम के०) पाछली पूंठनी दिशियें (दाहिण के०) जमणी दिशियें तथा (वामण के०) माबी दिशियें एटले जे दिशायें श्रीभगवंतनी प्रतिमा होय, ते दिशि टालीने शेष पूंठनी बाजु तथा जमणी बाजु अने माबी बाजु, ए त्रण दिशायें जोवानुं वर्जन करवुं, मात्र (जिणमुह के०) श्री जिनेश्वरना मुखनेविषे पोतानी (दिछि के०) दृष्टिने (न्नछ के०) न्यस्त एटले स्थापी राखेली होय. तेणेकरी (जुत्त के०) युक्त एटले सहित एवो थको वंदन करे. एटले जिनप्रतिमा उपर पोतानां लोचन थापी एकाग्र मन करे, परंतु आडुं अवलुं अरहुं परहुं जूवे नहीं. ए ठहुं त्रण दिशि निरखण वर्जवानुं त्रिक कह्युं ॥ १२ ॥

हवे सातमुं पदभूमिप्रमार्जन त्रिक कहे छे. ते आवी रीतें केः—श्रीजिन वंदनायें इरियावहिपडिक्कमतां तथा चैत्यवंदन करतां जीवयत्नने अर्थे रूडे प्रकारें दृष्टिवडे जोइने पद स्थापवानी भूमि त्रण वार पूंजवी. तिहां गृहस्थ होय तो वस्त्रांचलें करी पूंजे, अने साधु होय तो रजोहरणें करी पूंजे. ए सातमुं त्रिक थयुं.

हवे आठमुं आलंबनत्रिक अने नवमुं मुद्रात्रिकनुं स्वरूप कहे छे.

वन्नतियं वन्नछा, लंबणमालंबणं तु पडिमाई ॥
जोग जिण मुत्तसुत्ती, मुद्दाभेएण मुद्दतियं ॥ १४ ॥

अर्थः—(वन्नतियं के०) वर्णत्रिकं एटले वर्णत्रिक ते, कयुं ते कहे छे. (वन्नछालंबणं के०) वर्णार्थालंबनं एटले एक वर्णालंबन बीजुं अर्थालंबन, तिहां नमोछुणादिक सूत्र भणतां तेमां आवेला जे हलवा भारे अक्षर ते

न्यूनाधिकरहित पणे यथास्थित बोलवा, तथा संपदा प्रमुखनुं बराबर चिंतन राखवुं, ते प्रथम वर्णालंबन जाणवुं, अने जे नमोत्थुणं प्रमुख सूत्रो भणतां तेना अर्थ हृदयमां भाववा, ते बीजुं अर्थालंबन जाणवुं, तथा (आलंबणं तु के०) आलंबन ते वली शुं कहीयें? तोके (पडिमाई के०) प्रतिमादि एटले जिनप्रतिमा तथा आदिशब्दथकी भाव अरिहंतादिकनुं तथा स्थापनादिकनुं पण ग्रहण करवुं, तेनुं जे स्वरूप आलंबन धारवुं, ते त्रीजुं प्रतिमालंबन जाणवुं. ए आठमुं आलंबन त्रिक कह्युं.

हवे नवमुं मुद्रात्रिक कहे छे. एक (जोग के०) योगमुद्रा, बीजी (जिण के०) जिनमुद्रा अने त्रीजी (मुत्तसुत्ती के०) मुक्ताशुक्ति मुद्रा, ए (मुद्दाभेएण के०) योग मुद्रादिकना भेदें करीने (मुद्दतियं के०) मुद्रात्रिक जाणवुं ॥ १४ ॥

हवे प्रथम योगमुद्रानुं स्वरूप कहे छेः—

अन्नुन्नंतरिअंगुलि, कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ॥
पिट्टोवरि कुप्परि सं, ठिएहिं तह जोगमुद्दत्ति ॥ १५ ॥

अर्थः— (अन्नुन्नंतरिअंगुलि के०) अन्योन्यांतरितांगुलि एटले बे हाथनी दशे अंगुलिने अन्योन्य ते मांहोमांहे अंतरित करीछे जिहां एवी अने (कोसागारेहिं के०) कमलना डोडाने आकारें जोडीनें कीधा एवा (दोहिंहत्थेहिंके०) बे हाथे करीने, ते बेंहु हाथ केहवा तो के (पिट्टोवरि के०) पेट उपरें (कुप्परि के०) कोणी ते (संठिएहिं के०) संस्थित एटले रही छे जेनी एवा प्रकारें रहेवे करी (जोगमुद्दत्ति के०) योगमुद्रा इति एटले योग मुद्रा एम होय. ए पहेली योगमुद्रानुं स्वरूप कह्युं ॥ १५ ॥

हवे बीजी जिनमुद्रानुं लक्षण कहे छे.

चत्तारि अंगुलाइं, पुरउ ऊणाइं जत्थ पच्छिमउ ॥
पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १६ ॥

अर्थः— (जत्थ के०) यत्र एटले जिहां (पायाणं के०) पगना जे (पुरउ के०) आगलना अंगुलिनी बाजु तरफना पहोंचाने मांहोमांहे (चत्तारि अंगुलाइं के०) चार अंगुलनो आंतरो राख्यो होय, अने पगना (पच्छिमउ के०)

पाछलनी पानीनी बाजुना जागमां मांहोमांहे चार आंगुलथी कांइक (ऊ णाइं के०) ऊणो आंतरो राख्यो होय. ए रीतें पग राखीने (उस्सग्गो के०) काउस्सग्ग करीयें (एसा के०) ए प्रकारें (पुण के०) वली (जिणमुद्दा के०) जिनमुद्रा (होइ के०) होय ॥ १६ ॥

हवे त्रीजी मुक्ताशुक्तिमुद्रा कहे छे.

मुत्ता सुत्ती मुद्दा, जछ समा दोवि गप्निआ हछा ॥
ते पुण निलाडदेसे, लग्गा अन्ने अलग्ग त्ति ॥ १७॥

अर्थः—(जछ के०) जिहां (दोवि के०) बेहुए पण (हछा के०) हाथ ते (समा के०) सरखा बराबर (गप्निआ के०) गर्भित पणे राखी (ते के०) ते बे हस्त (पुण के०) वली (निलाडदेसे के०) ललाटना देश एटले ललाटनां मध्य जागने विषे (लग्गा के०) लगाड्या होय, वली (अन्ने के०) अन्य एटले बीजा केटलाएक आचार्यो कहे छे के (अलग्गत्ति के०) अलगाड्या होय एटले ललाटदेशथी दूर राख्या होय. इति एटले ए प्रकारें (मुत्तासुत्तीमुद्दा के०) मुक्ताशुक्तिनामे मुद्रा कहीयें. एमां अंगु लिनां छिड़ विना जेम मोतीना छीपनो जोडो मलेलो होय, तेवा आकारें हाथ राखवा, ए मुद्रानुं ए लक्षण छे ॥ १७ ॥

हवे ए त्रण मुद्रा मांहेली कइ मुद्रायें कइ क्रिया करवी. ते कहे छे.

पंचंगो पणिवाउ, थयपाढो होइ जोगमुद्दाए ॥
वंदण जिणमुद्दाए, पणिहाणं मुत्तसुत्तीए ॥ १८॥

अर्थः—एक इछामि खमासमणनो पाठ तेने (पंचंगो पणिवाउ के०) पंचांग प्रणिपात कहीयें. बीजो (थयपाढो के०) स्तवपाठ ते श्रीजिने श्वरना गुणनी स्तुति जे स्तवनादिकनो पाठ करवो ते (जोगमुद्दाए के०) योगमुद्रायें करीने (होइ के०) होय, तथा (वंदण के०) वांद णा देवां अने काउस्सग्ग जे अरिहंतचेइयाणं इत्यादि सर्व (जिणमुद्दा ए के०) जिनमुद्रायें करीने थाय, तथा जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहु अने जयवीयराय ए त्रणे (पणिहाणं के०) प्रणिधान संज्ञामां आवे. पण इहां ते संप्रदायगत एकज जयवीयरायने कहीयें छैयें, ते (मुत्तसुत्तीए के०) मुक्ताशुक्ति मुद्रायें कहीयें ॥ १८ ॥ इहां श्रीसंघाचार

भाष्यमध्ये मुक्ताशुक्ति मुद्रायें स्त्रीने स्तनादिक अवयवो प्रगट देखाय तेम न थवुं जोइयें,. एवा हेतु माटे स्त्रीने ऊंचा ललाटदेशें हाथ लगाडवा कह्या नथी. ए नवमुं मुद्रात्रिक कह्युं ॥

हवे दशमा प्रणिधानत्रिकनुं स्वरूप कहे छे.

पणिहाणतिगं चेइय, मुणिवंदण-पत्थणा-सरूवं वा ॥
मण-वय-काएगत्तं,सेस-तियत्थो उ पयडुत्ति ॥१९॥ दारं ॥१॥

अर्थः—(पणिहाणतिगं के०) प्रणिधानत्रिक, ते कयुं? ते कहे छे. तिहां जावंति चेइआइं ए गाथा (चेइय के०) चैत्यवांदवा रूप ते प्रथम प्रणिधान जाणवुं. तथा जावंत केवि साहु ए गाथा (मुणिवंदण के०) मुनि वांदवा रूप, ते बीजुं प्रणिधान जाणवुं. तथा जयवीयराय आ भव मखंमा पर्यंत ए गाथा (पत्थणासरूवं के०) प्रार्थनास्वरूप ते त्रीजुं प्रणिधान जाणवुं. (वा के०) अथवा एक (मण के०) मननुं बीजुं (वय के०) वचननुं अने त्रीजुं (काय के०) कायानुं (एगत्तं के०) एकत्व एटले एकाग्र पणुं ते पण प्रणिधानत्रिक कहीयें. इहां शिष्य पूछे छे के चैत्यवंदनायें प्रणिधान आवे छे, अने बीजी शेष वंदना तो प्रणिधान विनाज थाय छे, तिहां ए बोल सचवाता नथी ते केम? तेने गुरु कहे छे, के तिहां मन, वचन अनें कायानी एकाग्रता छे ए मुख्य प्रणिधान छे ए दशमुं प्रणिधानत्रिक कह्युं.

हवे (सेस के०) शेष रह्या जे (तिय के०) त्रिक एटले आहीं गाथायें करी जेनुं स्वरूप नही वखाण्युं एवुं बीजुं अने सातमुं त्रिक, तेनो (अत्थो के०) अर्थ ते (तु के०) वली (पयडुत्ति के०) प्रकट छे, माटे तेनुं स्वरूप मूल गाथामां लख्युं नथी, एम जाणवुं. तथापि बालावबोधकर्त्तायें ते त्रिकोना अनुक्रमें संक्षेप अर्थ ते ते स्थानकें लख्या छे, एटले दशत्रिकनुं ए प्रथम मूल द्वार थयुं अने उत्तर बोल त्रीश थया ॥ १९ ॥

हवे बीजुं पांच प्रकारना अभिगमनुं द्वार कहे छे.

सचित्त दव्व मुज्झण, मचित्त मणुज्झणं मणेगत्तं ॥ इग
साडि उत्तरासं,ग अंजलि सिरसि जिण दिठे ॥२०॥

अर्थः—चैत्यादिकने विषे प्रवेश करवानो विधि तेने अभिगम कहीयें. ते

पांच प्रकारें छे. तिहां देहरे जातां (सचित्तदवं के०) सचित्तद्रव्य जे पोताना अंगे आश्रित कुसुमादिक, फलादिक होय, तेनुं (उज्झणं के०) छांमवुं, ते प्रथम अभिगम. तथा (अचित्तं के०) अचित्त पदार्थ जे द्रव्यनाणादिक तथा आजरणादिक वस्त्रादिक वस्तु तेनुं (अणुज्झणं के०) अणछांमवुं एटले पोतानी पासें राखवानी अनुज्ञा ते बीजो अभिगम. तथा (मणेगत्तं के०) मननुं एकाग्रपणुं करवुं, ते त्रीजो अभिगम. तथा (इगसाडि के०) एक पडुं वस्त्र बेहु छेडायें सहित होय तेनो (उत्तरासंग के०) उत्तरासंग करवो, ते चोथो अभिगम. तथा (जिणदिठे के०) श्रीजिनेश्वरने दूरथकी नजरें दीठे थके (अंजलि के०) बे हाथ जोडीनें (सिरसि के०) मस्तकने विषे लगाडवा एटले अंजलिबद्ध प्रणाम करवो ते पांचमो अभिगम जाणवो ॥२०॥

इय पंचविहाभिगमो, अहवा मुच्चंति रायचिन्हाइं ॥ खग्गं छत्तोवाणह, मउडं चमरे अ पंचमए ॥ २१ ॥ दारं ॥ २ ॥

अर्थः—(इय के०) ए पूर्वली गाथामां कह्या जे (पंचविहाभिगमो के०) पांच प्रकारें अभिगम ते देव तथा गुरु पासें आवतां साचववा (अहवा के०) अथवा वंदना करनार श्रावक जो पोतें राजादिक होय तो ते ए पांच अभिगम साचवे, अने वली बीजां (रायचिन्हाइं के०) राजानां पांच चिन्ह छे ते प्रत्यें (मुच्चंति के०) मूके एटले छांमे तेनां नाम कहे छे, एक (खग्गं के०) खड्ग, बीजुं (छत्त के०) छत्र, त्रीजुं (उवाणह के०) उपानह, एटले पगनी मोजडी, चोथो माथानुं (मउडं के०) मुकुट अने (पंचमए के०) पांचमुं (चमरेअ के०) चामर, ए पण पांच अभिगम जाणवा ॥२१॥ एटले पांच अभिगमनुं बीजुं द्वार पूर्ण थयुं ॥ उत्तर बोल पांत्रीश थया ॥

॥ हवे बे दिशिनुं त्रीजुं द्वार, तथा त्रण अवग्रहनुं चोथुं द्वार कहे छे ॥

वंदंति जिणे दाहिण, दिसिठिआ पुरिस वा
मदिसि नारी ॥दारं॥३ ॥ नवकर जहन्नु सठि,
करजिठ मझुग्गहो सेसो ॥ २२ ॥ दारं ॥ ४ ॥

अर्थः— (जिणे के०) श्रीजिनने (दाहिण दिसिठिआ के०) दक्षिणदिशिस्थिता एटले मूल नायकनी जमणी दिशायें रह्या थका (पुरिस के०) पुरुषो (वं

दंति के०) वांदे एटले चैत्यवंदना करे, अने मूल नायकने (वामदिसि के०) डाबे पासें रही थकी (नारी के०) स्त्रीजन वांदे एटले चैत्यवंदना करे. इहां चैत्यवंदना पूजाना अधिकार माटे प्रसंगथी जमणी पासें दीपक थापवो, अने डाबी पासें धूपादिक, नाणुं, फलादिक, जिन आगलें तथा हस्तें आपीयें. ए बे दिशिनुं त्रीजुं द्वार थयुं. अने उत्तर बोल साडत्रीश थया.

हवे त्रण अवग्रहनुं चोथुं द्वार कहे छे. तिहां जगवंतथकी (नवकर के०) नव हाथ वेगला रहीनें चैत्यवंदना करवी ते प्रथम (जहन्नु के०) जघन्य अवग्रह जाणवो, तथा जगवंतथकी (सछिकर के०) षष्ठिकर एटले शाठ हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदना करवी, ते बीजो (जिठ के०) ज्येष्ठ एटले उत्कृष्ट अवग्रह जाणवो, अने (सेसो के०) शेष जे नवहाथथी उपर अने शाठ हाथनी मांहेली कोरे एटली वेगलाईयें रही चैत्यवंदना करवी, ते सर्व त्रीजुं (मझुग्गहो के०) मध्यम अवग्रह जाणवो.तथा केटलाएक आचार्य बार प्रकारना अवग्रह कहे छे. के ॥ उक्कोस सठि पन्ना, चत्ता तीसा दसठ पणदसगं ॥ दस नव ति डु एगऊ, जिणुग्गहं बारसविन्नेयं ॥१॥ एटले ६०,५०,४०,३०,१७,१५,१०,ए,३,२,१,०॥ ए बार अवग्रह थया एटले अर्ध्धा हाथथी मांमीने शाठ हाथ पर्यंतश्रीजिनगृहें तथागृह चैत्यादिकें श्वासोश्वासादि आशातना वर्जवा निमित्तें ए अवग्रह जाणवां ॥ ११ ॥ ए चोथुं त्रण अवग्रहनुं द्वार कह्युं, इहां सुधी सर्व मली उत्तर बोल ४० थया ॥ ११ ॥

हवे त्रण प्रकारें चैत्यवंदना करवी, तेनुं पांचमुं द्वार कहे छे.

नमुक्कारेण जहन्ना, चिइवंदण मझ दंम थुइ जुअला ॥
पण दंम थुइ चउक्कग, थय पणिहाणेहिं उक्कोसा ॥ १३ ॥

अर्थः-(नमुक्कारेण के०) एक नमस्कार श्लोकादिक रूप तथा नमो अरिहंताणं कहीनें अथवा हाथ जोडी मस्तक नमाडवे करी अथवा नमो जिनाय कही नमवे करी अथवा एक श्लोकादि केहवे करी अथवा हमणां देहरे चैत्यवंदन कहियें छैयें, इत्यादि रूपें सर्व प्रथम (जहन्ना के०) जघन्य (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन जाणवुं. तथा (दंमथुइजुअला के०) दंमक युगल ते अरिहंत चेइयाणंनुं युगल तथा स्तुतियुगल ते चार थुइ एटले एक नमस्कार श्लोकादि रूप कही, शक्रस्तव कही, उजा थइ, अरि

हंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी, थुइ कहेवी, ते बीजी (मध के०) मध्यम चैत्यवंदना जाणवी. तथा (पणदंम के०) पांच नमोत्थुणा रूप पांच दंमकें करी अने (थुइचउक्कग के०) स्तुतिचतुष्क एटले आठ थुइयें करीने, (थय के०) स्तवने करीने तथा जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहु अने जयवीयराय ए त्रण (पणिहाणेहिं के०) प्रणिधाने करीनें त्रीजी (उक्कोसा के०) उत्कृष्टी चैत्यवंदना जाणवी ॥ २३ ॥

अन्ने बिंति गेणं, सक्कत्थएणं जहन्न वंदणया ॥ तद्दुग तिगे
ण मझा, उक्कोसा चउहिं पंचहिं वा ॥ २४ ॥ दारं ॥ ५ ॥

अर्थः–(अन्ने के०) अन्य एटले बीजा वली केटला एक आचार्य एम (बिंति के०) ब्रुवंति एटले कहे ले के (इगेणं के०) एकेन एटले एक (सक्कत्थ एणं के०) शक्रस्तवें करीनें देव वांदीयें ते (जहन्न के०) जघन्य (वंद णया के०) चैत्यवंदना जाणवी. अने (तद्दुगतिगेण के०) तद्द्विक त्रि केण एटले तेहीज बे तथा त्रण शक्रस्तवें करी (मझा के०) मध्यम चेत्य वंदना जाणवी. तथा (चउहिं के०) चार शक्रस्तवें करी (वा के०) अ थवा (पंचहिं के०) पांच शक्रस्तवें करीने प्रणिधान युक्त करीयें ते (उ क्कोसा के०) उत्कृष्ट चैत्यवंदना जाणवी, अने नाष्यादिकने विषे स्तुति युगल कह्यां ले, ते त्रण थुइ स्तुतिरूप एक गणीयें लैयें. अने चोथी थुइ शिक्षारूप समकेत दृष्टिनी सहाय रूप जूदी गणी ते माटे स्तुति युगल कहे ले, तेनो विचार आवश्यकवृत्तियकी जाणवो ॥ २४ ॥ एटले त्रण नेदें चैत्यवंदनानुं पांचमुं द्वार कह्युं. सर्व मली उत्तर बोल त्रेंतालीश थया ॥

हवे लहुं प्रणिपात द्वार तथा सातमुं नमस्कार द्वार कहे ले.

पणिवाउ पंचंगो, दो जाणू करडुगुत्तमंगं च ॥ दारं ॥ ६ ॥ सुम
हत्थ नमुक्कारा, इग डुग तिग जाव अठसयं ॥२५॥ दारं ॥७॥

अर्थः–जिहां प्रकर्षें करी नक्ति बहुमानपूर्वक नमवुं तेने (पणिवाउ के०) प्रणिपात कहियें. ते (पंचंगो के०) पांच अंग नूमियें लगाडवा रूप जाणवो, तेनां नाम कहे ले (दोजाणू के०) बे जानु, एटले बे ढींचण, अने (करडुग के०) बे हाथ , (च के०) वली पांचमुं

(उत्तमंगं के०) उत्तमांग ते मस्तक, ए पांच अंग जिहां खमासमण आ पतां भूमियें लागे, ते पंचांग प्रणिपात कहीयें. एणें करी " इछामि खमा समणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मछएण वंदामि " ए पाठ कहे. ए छठुं प्रणिपात द्वार कह्युं. उत्तर बोल चुम्मालीश थया ॥

हवे सातमुं नमस्कार द्वार कहे छे. (सु के०) भला एवा (मह्छ के०) अत्यंत महोटा गहन अर्थ छे जेहना एटले भक्ति, ज्ञान, वैराग्य दिशाना दीपक एवा (नमुक्कारा के०) नमस्कार कहेवा ते (इग के०) एक तथा (दुग के०) बे, तथा (तिग के०) त्रणथी मांमीनें (जावअ ठसयं के०) यावत् एकशो ने आठ पर्यंत कहे ॥ ए सातमुं नमस्कार द्वार कह्युं. उत्तर बोल पीस्तालीश थया ॥ २५ ॥

हवे देववंदनना अधिकारें जे नवकार प्रमुख नव सूत्रां आवे छे, तेमने एक वारनां अक्षरां हलवां तथा भारे मलीने सर्व गणीयें तेवारें १६४७ अक्षर थाय अने १८१ पद थाय तथा ९७ संपदा थाय, ए अक्षर, पद तथा संपदा मली त्रणे द्वार एकठां कहे छे. तेनी साथें संपदानां नाम तथा अर्थ पण कहेशे. यद्यपि इछामि खमासमणो तथा जे अईयासिद्धा ए गाथा तथा तस्सउत्तरी, अन्नछ, इत्यादि अपर ग्रंथांतरें तो ए सूत्रमां संकलित नथी तथापि भाष्यमांहेला देववंदनाधिकारें बोल्या छे, अन्यथा जे पूर्वें उत्तर द्वार कह्यां, ते पूर्ण न थाय तेमाटे ते सर्व द्वार एकठां कहे छे.

अडसठि अठवीसा, नवनउयसयं च दुसय सग नउया ॥ दो
गुणतीस दुसठा, दु सोल अडनउयसय दुवन्नसयं ॥ २६ ॥

अर्थः—१ प्रथम " पंच मंगल महासुयखंध " एहवुं नाम नवकारनुं छे, तेना अक्षर (अडसठि के०) अडशठ ते हवइ मंगलं एवो पाठ भणतां थाय, केम के श्रीमहानिशीथ सूत्र मध्ये प्रकटाक्षरें हवइ मगलं ए हवो पाठ छे ॥ यदुक्तं ॥ पंच पयाणं पणतिस, वस्र चूलाइं वस्र तित्तीसं ॥ एवं सम्मे समप्पइ, फुड मरकर मठसठीए ॥ इति ॥ १ ॥ तेमाटे जो नम स्कारनो एक अक्षर ओछो करे, तो चोशठ विधानें नमस्कार साधवो ते न्यून थाय, तेथी ज्ञाननी आशातनानो अतिचार लागे, एवुं श्रीभद्रबाहु स्वामीयें नमस्कार कल्पें प्रकाश्युं छे, माटे हवइ मंगलं एवो पाठ कहेवो.

२ बीजुं " प्रणिपात " एवुं नाम इच्छामिखमासमणनुं छे, ते थोजसू त्रमां गुरुवंदनाधिकारें वांदणामां आवशे, पण इहां चैत्यवंदन माटे जेवुं कह्युं छे. तेना अक्षर (अठ्ठवीसा के०) अठावीश छे.

३ त्रीजुं " पडिक्कमणा सुयखंध " एवुं नाम इरियावहियानुं छे, ते सूत्र ना इच्छामि पडिक्कमउं इहांथी मांमीने यावत् ठामि काउस्सग्गं लगें अक्षर (सयंच के०) एकशोने वली उपरें (नवनउ य के०) नवाणुं छे.

४ चोथुं " शक्रस्तव " एवुं नाम नमोत्थुणंनुं छे. तेनां अक्षर (दुसयस गनउया के०) बशें नें सत्ताणुं जाणवा.

५ पांचमुं " चैत्यस्तव " एवुं नाम अरिहंतचेइयाणंनुं छे, तेना अक्षर (दो गुणतीस के०) बशें ने उंगणत्रीश छे.

६ छठुं "नामस्तव" एवुं नाम लोगस्सनुं छे, वर्त्तमान जिन चोवीशीना नामनुं गुणोत्कीर्त्तन रूप तेना अक्षर (दुसठ्ठ के०) बशें ने शाठ छे.

७ सातमुं " श्रुतस्तव " एवुं नाम पुरकरवरदीनुं छे तेना अक्षर (दु सोल के०) बशे नें शोल छे.

८ आठमुं " सिद्धस्तव " एवुं नाम सिद्धाणं बुद्धाणंनुं छे तेना अक्षर (अडनउयसय के०) एकशो ने अठाणुं छे.

ए नवमुं " प्रणिधान त्रिक " एवुं नाम जावंति चेइया इं, जावंत के वि साहु अने सेवणा आजवखंमा पर्यंत जयवीयराय ए त्रणेनुं छे. तेनां अक्षर (दु वन्नसयं के०) एकशो ने बावन छे ॥ २६ ॥

इअ नवकार खमासण, इरिअ सक्कछआइ दंमेसु ॥ प
णिहाणेसु अ अक्खरु,त्त वन्नसोलसय सीयाला ॥ २७ ॥

अर्थः—(इअ के०) ए पूर्वें कह्या जे अक्षर ते अनुक्रमें अडशठ अक्षर (नवकार के०) नवकारने विषे जाणवा, अठावीश अक्षर (खमासण के०) खमासमणने विषें जाणवा, तथा एकशो नवाणुं अक्षर (इरिय के०) इरिया वहियाना ठामि काउस्सग्गं लगें जाणवा, (१२००) अक्षर (सक्कछ आइ दंमेसु के०) शक्रस्तवादिक पांच दंमकनें विषे अनुक्रमें जाणवा. तेमां नमुत्थुणं ना सवेतिविहेणवंदामि लगें २९७, तथा अरिहंतचेइयाणंना अप्पाणं वो सिरामि लगें २२ए, तथा लोगस्सना सवलोए लगें २६०, तथा पुरकरवर

हीना सुअस्सजगवउ लगें २१६, तथा सिद्धाणं बुद्धाणंना वेआवच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिठि समाहिगराणं लगें १०७, ए सर्व मली पांच दंमक ना १२०० अक्षर थया. तथा १५२ अक्षर जावंति चेइ आइं, जावंत केविसाहु अने जयवीयराय सेवणा आनव मखंमा लगें ए त्रण (पणिहाणेसु के०)प्रणिधानने विषे जाणवा ए रीतें ए नव सूत्रांनां अक्षरो एकठा करियें, त्यारे (अडुरुत्त के०) अद्विरुक्त एटले बीजी वार अण उच्चस्या एवा (व न्ना के०) वर्ण एटले अक्षर ते सर्व मली (सोलसयसीयाला के०) शो लशेंने सुडतालीश थाय ॥ २७ ॥

हवे पदसंख्या कहे ठे.

नव बत्तीस तित्तीसा, तिचत्त अडवीस सोल वीसपया ॥
मंगल इरिया सक्क, बयाइसु इगसीइ सयं ॥ २८ ॥

अर्थः—नवकारनां (नव के०) नव पद ठे, इरियावहिनां (बत्तीस के०) बत्रीश पद, नमोत्थुणंना (तित्तीसा के०) तेत्रीश पद, अरिहंतचे इयाणंना (तिचत्त के०) तेंतालीश पद, लोगस्सनां (अडवीस के०) अठावीश पद, पुरकरवरदीनां (सोल के०) शोल पद, सिद्धाणंबुद्धाणंनां (वीसपया के०) वीश पद, एम (मंगल के०) नवकार, (इरिया के०) इरियावहि अने (सक्कबयाइसु के०) शक्रस्तवादिक पांचे दंमक ए सात सूत्रांने विषे सर्व मलि (इगसीइसयं के०) एकशो ने एक्याशी पदनी संख्या जाणवी. अने प्रणिपातना पद तो वांदणां जेलां गुरु वंदनमां कहेशे, तथा प्रणिधान त्रिकनी पद संपदा अनुक्रमें ठे तेमाटे न कह्युं "वारिज्जइ" इ त्यादि गाथा नक्तिनी योजना ठे ते इहां गणी नही ॥ २८ ॥

हवे संपदानी संख्या कहे ठे.

अठ्ठ नवठ्ठय अठ वी,स सोलसय वीस वीसामा ॥
कमसो मंगल इरिया, सक्कथयाईसु सगनउई ॥ २९ ॥

अर्थः—प्रथम नवकारनी (अठ के०) आठ संपदा, तथा इरियावहिनी अठ के०)आठ संपदा, तथा नमोत्थुणंनी (नव के०) नव संपदा, तथा अरिहंत

चेइयाणंनी (अठ के०) आठ संपदा, (य के०) वली लोगस्सनी (अ ठवीस के०) अठावीश संपदा, तथा पुरकरवरदीनी (सोलस के०) शो ल संपदा, (य के०) वली सिद्धाणंबुद्धाणंनी (वीस के०) वीश संप दा जाणवी. ए लगारेक रहेवानुं स्थान तथा अर्थनो (वीसामा के०) वीसामो लेवानुंस्थान तेने संपदा कहीयें. ते (कमसो के०) अनुक्रमें (मंगल के०) नवकारने विषे, (इरिया के०) इरियावहिनेविषे अने (स क्कथयाईसु के०) शक्रस्तवादिक पांच दंमकनेविषे ए सर्व मली सात सूत्रांने विषे सर्व संपदा (सगनउई के०) सप्तनवती एटले सत्ताणुं थाय ॥ २ए ॥

हवे नवकारना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखाडे छे.

वणसठि नव पय, नवकारे अठ संपया तत्र॥सग संपय पय तुल्ला, सतरक्कर अठमी डु पया॥३०॥"नवक्करअठमी डुपयछठी" इत्यन्ये

अर्थः—(नवकारे के०) नवकारने विषे (वणसठि के०) अडशठ वर्ण होय, तथा नमोअरिहंताणंआदिक (पय के०) पद ते (नव के०) नव होय, अने (संपया के०) संपदा तो (अठ के०) आठ होय, (तत्र के०) तिहां ते आठ संपदामांहे प्रथमनी " सवपावप्पणा सणो " सुधीनी जे (सगसंपय के०) सात संपदा छे, ते तो (पयतु ल्ला के०) पदनें तुल्य जाणवी एटले जेटला पद तेटली संपदा पण जा णवी. तथा (अठमी के०) आठमी संपदा तो " मंगलाणंचसवेसिं, प ढमं हवइ मंगलं ए बे पदने एकठां कहीयें माटे ए (डुपया के०) बे पद नी जाणवी, तथा अन्य केटलाएक आचार्य एम कहे छे, के " पढमं ह वइ मंगलं " ए (नवक्करअठमी के०) नव अक्षरनी आठमी संपदा त था " एसोपंच नमुक्कारो, सवपावप्पणासणो " ए (डुपय के०) बे प दनी अने शोल अक्षरनी (छठी के०) छठी संपदा जाणवी ॥ ३० ॥

हवे प्रणिपात खमासमणना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखाडे छे.

पणिवाय अक्खराइं, अठावीसं तहाय इरियाए ॥ नव नउ अ मक्खर सयं, डुतीस पय संपया अठ ॥ ३१ ॥

अर्थः—(पणिवाय के०) प्रणिपात दंमकने विषे (अठावीसं के०) अठावीश

(अरकराइं के०) अक्षर छे, (तहाय के०) तथाच एटले तेमज वली (इरियाए के०) इरियावहिने विषे (नवनउअसयरकरसयं के०) नवनवति अक्षरशतं एटले नवाणुयें अधिक एकशो अक्षर जाणवा अर्थात् एकशो ने नवाणुं अक्षर जाणवा, तथा (बत्तीस के०) बत्रीश (पय के०) पद जाणवां अने (संपया के०) संपदा (अठ के०) आठ जाणवी ॥ ३१ ॥

ए आठ संपदाना पदनी संख्या तथा संपदाना आदि पद कहे छे.

दुग दुग इग चउ इग पण,इगार छग इरिय संपयाइ पया ॥
इछा इरि गम पाणा, जेमे एगिंदि अभि तस्स ॥ ३२ ॥

अर्थः—पहेली संपदा (दुग के०) बे पदनी, बीजी संपदा पण (दुग के०) बे पदनी, त्रीजी (इग के०) एकपदनी, चोथी (चउ के०) चार पदनी, पांचमी (इग के०) एकपदनी, छठी (पण के०) पांच पदनी, सातमी (इगार के०) अगीआरपदनी, आठमी (छग के०) छ पदनी जाणवी ॥

हवे ए (इरिय के०) इरियावहिनी सर्व (संपया के०) संपदाउना (आइपया के०) आदिपद एटले प्रथमना पद जे संपदाना धुरियां ते कहे छे. तिहां प्रथम (इछा के०) इछामि ए पहेली संपदानुं पहेलुं पद, (इरि के०) इरियावहियाए ए बीजी संपदानुं पहेलुं पद, (गम के०) गमणागमणे ए त्रीजी संपदानु पहेलुं पद, (पाणा के०) पाणक्कमणे ए चोथी संपदानुं पहेलुं पद, (जेमे के०) जेमेजीवाविराहिआ ए पांचमी संपदानुं पहेलुं पद, (एगिंदि के०) एगिंदिया ए छठी संपदानुं पहेलुं पद, (अभि के०) अभिहया ए सातमी संपदानुं पहेलुं पद,(तस के०) तस्सउत्तरी करणेणं ए आठमी संपदानुं पहेलुं पद जाणवुं ॥ ३२ ॥

॥ हवे ए इरियावहिनी आठ संपदानां नाम कहे छे ॥

अप्रुवगमो निमित्तं, उहे अरहेउ संगहे पंच ॥
जीवविराहण पडि,क्कमण भेयउ तिन्नि चूलाए ॥ ३३ ॥

अर्थः—अभ्युपगम एटले अंगीकार करवुं. ते आहीं पापना क्षयनुं जे आलोचना लक्षण कार्य तेनो अंगीकार करवो ते स्वरूप एटला माटे इछामि पडिक्कमिउं ए बे पदनी प्रथम (अप्रुवगमो के०) अभ्युपगम संपदा जाणवी.

२ ते अंगीकार कृत वस्तुनें उपजाववाना कारण रूप इरियावहियाए विराहणाए ए बे पदनी बीजी (निमित्तं के०) निमित संपदा जाणवी.

३ सामान्य प्रकारें प्रायश्चित्त उपजाववा रूप गमणागमणे ए एक पदनी त्रीजी (उहे के०) उंघ एटले सामान्य हेतु संपदा जाणवी. ए जीव हिंसा उपजाववानो सामान्य हेतु गमनागमन छे.

४ जीवहिंसाना विशेष हेतु रूप एटले विशेषपणे प्राण बीजादिक आक्रमण रूप ते पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरिहक्कमणे, उसा उत्तिंग पणग दगमट्टीमक्कडा संताणा संकमणे, ए चार पदनी चोथी (इअरहेउ के०) इतरंहेतु एटले विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे सामान्यथी इतर ते विशेष होय; माटे विशेष हेतु एवुं नाम जाणवुं.

५ समस्त जीवना परिताप रूप जीवविराधना संग्रह रूप ते जेमे जीवा विराहिया ए एकपदनी (पंच के०) पांचमी (संगहे के०) संग्रह संपदा.

६ एकेंड्यादिक पांच जीवने देखाडवा रूप जीवनेद ५६३ प्रमुख कथन रूप एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ए पांच पदनी बही (जीव के०) जीव संपदा जाणवी.

७ ते जीवादिक नेदने परितापना विराधना रूप ते अनिहयाथी मांमीनें तस्स मिछामि डुक्कडं लगें अगीआर पदनी सातमी (विराहण के०) विराधना संपदा जाणवी.

७ प्रायश्चित्तविशोधनकरण रूप ते तस्सउत्तरी करणेणंथी मांमीने गमि काउस्सग्गं लगें ब पदनी आवमी (पडिक्कमण के०) प्रतिक्रमण संपदा (नेयउ के०) ए नेद थकी. ए मांहे प्रथमनी पांच संपदा ते इरियावहिनी मूल संपदा जाणवी,अने पाछलनी (तिन्नि के०) त्रण संपदा ते इरियावहिनी (चूलाए के०) चूलिका रूप जाणवी ॥ ३३ ॥

हवे नमुत्थुणंनी प्रत्येक संपदाना पदनी संख्या तथा आदिपद कहे छे.

डु ति चउ पण पण पण डु, चउ तिपय सक्कथय संपयाइपया ॥
नमु आइग पुरिसो, लोग अनय धम्मऽप्प जिण सवं ॥ ३४ ॥

अर्थः—पहेली (डु के०) बे पदनी, बीजी (ति के०) त्रण पदनी, त्रीजी (चउ के०) चार पदनी, चोथी (पण के०) पांच पदनी, पांचमी (पण

के०) पांच पदनी, उठी (पण के०) पांच पदनी, सातमी (ड के०) बे पदनी, आठमी (चउ के०) चार पदनी अने नवमी (तिपय के०) त्रण पदनी ए (सक्कथय के०) नमुत्थुणंने विषे संपदाना पद कह्या ते सर्व मली तेत्रीश जाणवां

हवे नमुत्थुणंनी (संपया के०) संपदाना (आइपया के०) आदिना एटले पहेला धुरियांनां पद कहे छे. (नमु के०) नमोत्थुणं ए पहेली संपदानुं प्रथम पद जाणवुं, (आइग के०) आइगराणं ए बीजी संपदानुं प्रथम पद, (पुरिसो के०) पुरिसुत्तमाणं ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, (लोग के०) लोगुत्तमाणं ए चोथी संपदानुं प्रथम पद, (अभय के०) अभयदयाणं ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, (धम्म के०) धम्मदयाणं ए उठी संपदानुं प्रथम पद, (अप्प के०) अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद, (जिण के०) जिणाणं जावयाणं ए आठमी संपदानुं प्रथम पद, अने (सव्व के०) सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं ए नवमी संपदानुं प्रथम पद.

हवे ए शक्रस्तवनी नव संपदाउनां नाम कहे छे.

थोअव्व संपया उह, इयरहेऊ वउग तद्धेऊ ॥ सविसेसु
वउग सरूव, हेउ नियसमफलय मुक्के ॥ ३५ ॥

अर्थः—श्रीअरिहंत भगवंत ते विवेकी जनोयें स्तववा योग्य छे एटला माटे नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवताणं, ए बे पदनी पहेली (थोअव्व संपया के०) स्तोतव्य संपदा जाणवी. पछी ते स्तववा योग्यनुं सामान्य हेतु कहेवा माटे आइगराणंथी मांमीने सयंसंबुद्धाणं लगें त्रण पदनी बीजी (उह के०) उघ एटले सामान्य हेतु संपदा जाणवी, पछी ए बीजी संपदानां अर्थने विशेषें दीपावे तेमाटे सामान्य हेतुथी (इयरहेऊ के०) इतर हेतु ते विशेष हेतु रूप त्रीजी संपदा जाणवी, पछी आद्य संपदाना अर्थने विशेषे दीपावे एटले सामान्य स्तवनानो उपयोग तेनुं कहेवुं ते चोथी (उवउग के०) उपयोग संपदा जाणवी. पछी ए उपयोग संपदानाज अर्थने हेतु सद्भावें करी दीपावे ते पांचमी (तद्धेऊ के०) तत् हेतु संपदा जाणवी, अथवा उपयोग हेतु संपदा जाणवी, पछी एज उपयोग हेतु संपदाना अर्थ गुण दीपाववा निमित्तें अर्थ विशेषें जणावे एटले कारण सहित स्तववा योग्यनुं स्वरूप कहेवुं ते उठी (सविसेसुवउग के०)

सविशेष उपयोग हेतु संपदा जाणवी, पढी यथार्थ पोताना स्वरूपनुं हेतु प्रकटार्थे देखाडवा रूप सातमी (सरूवहेउ के०) स्वरूप हेतु संपदा जाणवी, तथा पोताने समान फलदायक प्रकटार्थ रूप एटले स्तवना करनारने आपतुल्य करे एवी परम फलदायिनी एटले पोतानी समान परने फलनुं करण एटला माटे आठमी (नियसमफलय के०) निज समफलद नामे संपदा जाणवी, तथा मोक्ष स्वरूप प्रकटार्थ रूप मोक्षपदनुं स्वरूप, एटला माटे नवमी (मुक्खे के०) मोक्ष संपदा जाणवी. जे माटे कह्युं छे के " सवन्नूआइं पढमो, बीउ सिवमयल माइ आलावो ॥ तइउ नमोजिणाणं, जिय नयाणं तन्निदिठ्ठो ॥ १ ॥ इत्यावश्यके ॥ ३५ ॥

हवे नमोत्थुणंना अक्षरादिकनी एकंदर सरवाले संख्या कहे छे.

दो सगनउआ वन्ना, नवसंपय पय तित्तीस सक्कथए ॥
चेइयथयठ संपय, तिचत्त पय वन्न दुसयगुणतीसा ॥३६॥

अर्थः-(सक्कथए के०) शक्रस्तव जे नमोत्थुणं तेने विषे सर्व मलीने (दोसगनउआ के०) बशेंने सत्ताणु (वन्ना के०) वर्ण जाणवा अने (नवसंपय के०) नव संपदा जाणवी,तथा (पयतितीस के०) पद तेत्रीश जाणवां.

हवे (चेइयथय के०) चैत्यस्तव एटले अरिहंत चेइयाणंने विषे सर्व मली (अठसंपय के०) आठ संपदा जाणवी अने (तिचत्तपय के०) तेंतालीश पद जाणवां, तथा (वन्न के०) वर्ण एटले अक्षर ते (दुसयगुणतीसा के०) बशेंने उंगणत्रीश जाणवा ॥ ३६ ॥

हवे चैत्यस्तवजे अरिहंत चेइयाणं तेनी प्रत्येक संपदाना पदनुं मान तथा प्रत्येक संपदाना आदिपद एटले धुरियां कहे छे.

दु छ सग नव तिय छ चउ, छप्पय चिइ संपया पया पढमा॥
अरिहं वंदण सिद्धा, अन्न सुहुम एव जा ताव ॥ ३७ ॥

अर्थः-पहेली (दु के०) बे पदनी, बीजी (छ के०) छ पदनी, त्रीजी (सग के०) सात पदनी, चोथी (नव के०) नव पदनी, पांचमी (तिय के०) त्रण पदनी, छठी (छ के०) छ पदनी, सातमी (चउ के०) चार पदनी, आठमी (छप्पय के०) छ पदनी जाणवी.

हवे ए (चिइ के०) चैत्यस्तवनी प्रत्येक (संपया के०) संपदानां (पढमा के०) प्रथमना एटले आदिना धुरीयांना (पया के०) पद कहे छे. तिहां (अरिहं के०) अरिहंत चेइयाणं ए पहेली संपदानुं प्रथम पद (वंदण के०) वंदणवत्तियाए ए बीजी संपदानुं प्रथम पद (सिद्धाए के०) सिद्धाए ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, (अन्न के०) अन्नडसिएणं ए चोथी संपदानुं प्रथम पद, (सुहुम के०) सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, (एव के०) एवमाइएहिं आगारेहिं ए छठी संपदानुं प्रथम पद, (जा के०) जाव अरिहंताणं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद, (ताव के०) तावकायं ए आठमी संपदानुं प्रथम पद ॥३७॥

हवे ए चैत्यस्तवनी संपदाउनां नाम कहे छे.

अप्नुवगमो निमित्तं, हेउ इग बहु वयंत आगारा ॥
आगंतुग आगारा, उस्सग्गावहि सरूवठ ॥ ३८ ॥

अर्थः– जे अंगीकार करवुं तेने अन्युपगम कहीयें मांटे इहां अरिहंत वांदवानी अंगीकाररूप प्रथम (अप्नुवगमो के०) अन्युपगम संपदा जाणवी, तथा काउस्सग्ग कया निमित्ते करी करीयें, ते बीजी (निमित्तं के०) निमित्त संपदा जाणवी. तथा श्रद्धादिक हेतु वधते वधते करी करीयें, केमके श्रद्धादिक कारण विना निष्फल थाय माटे त्रीजी (हेउ के०) हेतु संपदा जाणवी. तथा आगार राख्या विना निरतिचारपणे काउस्सग्ग न थाय, एटला माटे आगार राखवानी अन्नडससीएणं इत्यादि उश्वासादिकने करवे करी चोथी (इगवयंत के०) एकवचनांत आगार संपदा जाणवी. तथा " सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं " एटले सूक्ष्मनेत्रादिकफुरकवादिमात्र आदिकें करी पांचमी (बहुवयंत आगारा के०) बहुवचनांत आगार संपदा जाणवी, इहां आगारा पद बेहुने जोडवुं, तथा एक सहज बीजो अल्प बाहुल्य एटले एवमाइएहिं एणे करी अग्निस्पर्श, पंचेंड्रिय छेदन, चौरादिनय, सर्पादि कदाचित् आवी मले तो इत्यादि आगार कह्या माटे बहुहेतु आगंतुक नावरूप अथवा अग्न्यादिक उपघात रूप छठी (आगंतुग आगारा के०) आगंतुकागार संपदा जाणवी. तथा जाव अरिहंताणं इत्यादिक काउस्सग्गनो अवधि मर्यादा रूप जे संपदा ते सात

मी (उस्सग्गावहि के०) कायोत्सर्गावधि संपदा जाणवी, तथा कायो त्सर्गनुं यथावस्था रूप स्वरूप ते आठमी (सरूव के०) स्वरूप संपदा जाणवी. ए (अठ के०) आठ संपदानां नाम कह्यां ॥ ३० ॥
हवे नामस्तव एटले लोगस्सादिकने विषे पद आदिकनी संख्यादिक कहे छे.

नामथयाइसु संपय, पयसम अडवीस सोल वीस कमा ॥
अडुरुत्त वस्र दो सठ, डुसयसोलठ नउअ सयं ॥ ३ए ॥

अर्थः— (नामथयाइसु के०) नामस्तवादिकने विषे एटले नामस्तव ते लोगस्स तथा आदि शब्दथकी पुरकरवरदी ते श्रुतस्तव जाणवुं अने सिद्धस्तव ते सिद्धाणंबुद्धाणं जाणवुं ए त्रण सूत्रने विषे (पयसम के०) पद समान (संपय के०) संपदा जाणवी एटले जेटला ए सूत्रोना पद छे तेटला विसामाना स्थानक जाणवां. तिहां लोगस्सनां पद पण (अडवीस के०) अठावीश अने संपदा पण अठावीश जाणवी अने पुरकरवरदीनां पद पण (सोल के०) शोल अने संपदा पण शोल जाणवी. तथा सिद्धाणं बुद्धाणंना पद पण (वीस के०) वीश अने संपदा पण वीश जाणवी. ए (कमा के०) अनुक्रमें संपदा तथा पद कहेवा. तथा लोगस्सने विषे (अडुरुत्त के०) बीजी वार अणउच्चस्या एवा, (दोसठ के०) बशें ने शाठ (वस्र के०) वर्ण एटले अक्षर जाणवा. तथा पुरकरवरदीना सुअस्स जगवर्ज पर्यंत (डुसयसोल के०) बशें ने शोल अक्षर जाणवा, अने सिद्धाणंबुद्धाणंना करेमि काउस्सग्गं पर्यंत (अठनउअसयं के०) एकशो ने अठाणुं अक्षर जाणवा ॥ ३ए ॥

पणिहाण डुवन्नसयं, कमेण सग ति चउवीस तित्तीसा ॥ गुणतीस अठवीसा, चउतीसिगतीस बार गुरु वस्रा ॥४०॥ दारं ॥ए॥ए॥१०॥

अर्थः— हवे जावंतिचेइआइं तथा जावंत केवि साहू अने सेवणा आ जवमखंमालगें जयवीयराय, ए त्रण (पणिहाण के०) प्रणिधान सूत्र छे, तेने विषे (डुवन्नसयं के०) एकशो ने बावन अक्षर जाणवा.
हवे (कमेण के०) अनुक्रमें संयोगीआ गुरु एटले जारे अक्षर सर्व सू

ञांना कहे ठे. तिहां प्रथम नवकारने विषे ध्दा, ष्ना, व, ह्न, क्का, व, प्प ए (स ग के०) सात अक्षर गुरु एटले जारे जाणवा.

तथा खमासमणने विषे ह्वा, ज्जा, ङ्ग, ए (ति के०) त्रण अक्षर गुरु जाणवा. तथा इरियावहिने विषे ह्वा, क्क, क्क, क्क, क्क, त्तिं, ट्टि, क्क, त्ति, ट्टि, ह्न, स्स, ह्वा, क्क, स्स, त्त, ङ्गि, त्त, ह्नी, म्म, ग्घा, ठा, स्स, ग्गं, ए (चउ वीस के०) चोवीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा नमुत्थुणंने विषे त्थु, ङ्ग, ध्दा, त्त, ङ्गि, त्त, ज्जो, क्खु, ग्ग. म्म, म्म, म्म, म्म, म्म, क्क, ट्टी, प्प, ट्ट, न्ना, ध्दा, त्ता, व, न्नु, व, क्खे, वा, त्ति, ध्दि, त्ता, ध्दा, स्सं, ट्ट, वे, ए (तित्तीसा के०) तेत्रीश अक्षर गुरु जाणवा. केटला एक ङ्गउमाणं पदना ङकारने गुरु कहेता नथी अने केटलाएक ट्ट ङ्ग, म्म, ए त्रणने गुरु गणीने तेत्रीश गुरु अक्षर करे तिहां चूलिकानी गाथा गुरु नथी गणता इत्यादिक बहु मतांतर ठे, पण इहांतो संप्रदायागत एक टकार जारे गणीयें ठैयें.

तथा अरिहंत चेइयाणं रूप चैत्यस्तवने विषे स्स, ग्गं, त्ति, त्ति, क्का, त्ति, म्मा, त्ति, त्ति, ग्ग, त्ति, ध्दा, प्पे, ह्न, स्स, ग्ग, न्न, ङ्ग, ड्ड, ग्गे, त्त, ह्वा, ठि, ग्गो, ज्जि, स्स, ग्गो, क्का, प्पा, ए (गुणतीस के०) उगणत्रीश अक्षर गुरु ठे.

तथा लोगस्सरूप नामस्तवने विषे स्स, ज्जो, म्म, ङ्ग, त्त, स्सं, प्प, प्प, प्फ, ज्जं. ज्जं, म्मं, ह्निं, व, ठ, ध्द, ङ्ग, त्ति, स्स, त्त, ध्दा, ग्ग, त्त, म्म, च्चे, ध्दा, ध्दि, व, ए (अठवीसा के०) अठावीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा पुरकरवरदीरूप श्रुत स्तवने विषे स्क, ह्वे, म्मा, ध्द स्स, स्स, स्स, प्फो, स्स, स्स, ह्ना, स्क, स्स, च्चि, स्स, म्म, स्स, ष्प, ध्दे, न्न, न्न, स्स, ष्ठू, च्चि, ठ, ठि, क्क, च्चा, म्मो, ट्ट, म्मु, त्त, ट्ट, स्स, ए (चउतीस के०) चोत्रीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा सिध्दाणंबुध्दाणंरूप सिध्द स्तवने विषे ध्दा, ध्दा, ग्ग, व, ध्दा, क्को, क्का, स्स, ध्द, स्स, ज्जिं, स्का, स्स, म्म, क्क, ट्टिं, ठ,त्ता, ठ, वी,ठ, ठि, ठा, ध्दा, ध्दिं, च्च, म्म, ह्दि, ठि, स्स, ग्गं, ए (इगतीस के०) एकत्रीश अक्षर गुरु ठे

तथा प्रणिधान त्रिकनेविषे ट्टे, वा, ङ्ग, वे, वे, ग्गा, ह्न, ध्दि, ध्द, च्चा,ङ्ग, व, ए (बार गुरुवसा के०) बार गुरुवर्ण एटले जारे अक्षर जाणवा॥

एटले वर्ण संख्या, पदसंख्या अने संपदा मली त्रण द्वार कह्यां, तेनी साथें पूर्वे कहेलां सात द्वार मेलवतां मूल दश द्वार कहेवाणां, अने उत्तर नेद १९७० थया. ए सूत्रांना अर्थ सर्व श्रीआवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्तिथी जाणजो. इहां घणो ग्रंथ वधे माटे अर्थ लख्यो नथी ॥ ४० ॥

ए आठमो, नवमो अने दशमो मली त्रणे द्वारना यंत्रनी स्थापना.

सूत्र.	सूत्रांनांनाम.	पदसंख्या.	संपदा	सर्वाक्षर.	गुरुअ.	लघुअ
नवकार.	पंचमंगलसुअ०	९	८	६८	७	६१
इञ्छामिखमासम०	प्रणिपातञोन्सूत्र		०	२८	३	२५
इरियावहि.	पडिक्कमणासूत्र.	३२	८	१९९	२४	१७५
नमोत्थुणं.	शक्रस्तव.	३३	९	२९७	३३	२६४
अरिहंतचेइयाणं.	चैत्यस्तवाध्ययन.	४३	८	२२९	२९	२००
लोग्गस्स.	नामस्तव.	२८	२८	२६०	२८	२३२
पुरकरवरदीवड्ढे.	श्रुतस्तव.	१६	१६	२१६	३४	१८२
सिद्धाणंबुद्धाणं.	सिद्धस्तव.	२०	२०	१९८	३१	१६७
जावंतिचेइयाइं.	प्रणिधानत्रिक.	अनुक्रमें.	अनु			
जावंतकेविसाहु.	....		क्रमें.			
जयवीयराय.	....			१५२	१२	१४०
सर्वमली सरवाले...	...	१८१	९७	१६४७	२०१	१४४६

	इरियावहिनीसंपदा	संपदानां पद.	धुरियांनां पद.
१	अन्युपगमसंपदा.	२	इञ्छामि
२	निमित्तसंपदा.	२	इरियावहियाए.
३	उघसंपदा.	१	गमणागमणे.
४	इतरहेतुसंपदा.	४	पाणक्कमणे.
५	संग्रहसंपदा.	१	जेमेजीवाविराहिया.
६	जीवसंपदा.	५	एगिंदिया.
७	विराधनासंपदा.	११	अनिहया.
८	पडिक्कमणसंपदा.	६	तस्सउत्तरि.

	चैत्यस्तवनीसंपदा.	संपदानांपदसंख्या.	धुरियांनां पद.
१	अभ्युपगमसंपदा.	२	अरिहंतचेइयाणं.
२	निमित्तसंपदा.	६	वंदणवत्तिआए.
३	हेतुसंपदा.	७	सिद्धाए.
४	एकवचनांतसंपदा.	ए	अन्नछसमीएणं.
५	बहुवचनांतसंपदा.	३	सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं
६	आगंतुगागारसंपदा.	६	एवमाइएहिंआगारेहिं
७	कायोत्सार्गावधिसंपदा.	४	जावअरिहंताणं.
०	स्वरूपसंपदा.	६	तावकायं.

	शक्रस्तवनीसंपदा.	संपदानांपद,	धुरियांनांपद.
१	स्तोतव्य संपदा.	२	नमोत्थुणं.
२	उघसंपदा.	३	आइगराणं.
३	इतरहेतुसंपदा.	४	पुरिसुत्तमाणं.
४	उपयोगसंपदा.	५	लोगुत्तमाणं.
५	तद्धेतुसंपदा.	५	अनयदयाणं.
६	सविशेषोपयोगसंपदा.	५	धम्मदेसियाणं.
७	स्वरूपहेतुसंपदा.	२	अप्पडिहयवर०
०	निजसमफलदसंपदा.	४	सवन्नुणं०
ए	मोक्षसंपदा.	३	जिणाणंजावयाणं.

हवे अगीआरमुं पांच दंमकनुं द्वार अने बारमुं पांच दंमकने विषे देव वांदवाना बार अधिकार छे, तेनुं द्वार कहे छे.

पणदंमा सक्कछय, चेइअ नाम सुअ सिद्धछय इछ ॥दारं॥११॥
दो इग दो दो पंच य, अहिगारा बारस कमेण ॥ ४१ ॥

अर्थः-(पणदंमा के०) पांच दंमकनां नाम कहे छे. तेमां पहेलुं नमोत्थुणंने (सक्कछय के०) शक्रस्तव दंमक कहियें. बीजुं अरिहंत चेइयाणंने (चेइअ के०) चैत्यस्तव दंमक कहियें. त्रीजुं लोगस्सने (नाम के०) नामस्तव दंमक कहियें. चोथुं पुस्करवरदीने (सुअ के०) श्रुतस्तव

दंमक कहियें. पांचमुं सिद्धाणंबुद्धाणंने (सिद्धथय के०) सिद्धस्तव दंम क कहियें. ए पांच दंमकना नामनुं अगीयारमुं द्वार कह्युं, सर्व मली उत्तर बोल १०७५ थया ॥

हवे (इब के०) ए पांच दंमकने विषे देव वांदवाना बार अधिकार ठे, तेमनुं बारमुं द्वार कहे ठे.

तिहां प्रथम शक्रस्तव मध्ये (दो के०) बे अधिकार ठे, तथा बीजा अरिहंतचेइयाणंरूप चैत्यस्तव मध्ये (इग के०) एक अधिकार ठे, तथा त्रीजा नामस्तव एटले लोगस्सने विषे (दो के०) बे अधिकार ठे, तथा चोथा श्रुतस्तव मध्ये (दो के०) बे अधिकार ठे, पांचमा सिद्धस्तव मध्ये (पंचय के०) पांच अधिकार ठे. ए (कमेणं के०) अनुक्रमें कहेवा सर्व मली चैत्यवंदनने विषे (बारसअहिगारा के०) बार अधिकारो ठे ४१

हवे ए बार अधिकारनां धुरियानां पद एटले आद्यनां पद कहे ठे.

नमु जेइअ अरिहं,लोग सव्व पुस्क तम सिद्ध जोदेवा॥ उ
विं चत्ता वेआ, वच्चग अहिगार पढम पया ॥ ४२ ॥

अर्थः–(नमु के०) नमोत्थुणं ए पहेला अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (जेइअ के०) जे अइआ सिद्धा ए बीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, तथा (अरिहं के०) अरिहंत चेइयाणं ए त्रीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (लोग के०) लोगस्स उज्जोयगरे ए चोथा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (सव्व के०) सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं ए पांचमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (पुस्क के०) पुस्करवरदीवड्ढे ए ठठा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (तम के०) तमतिमिर पमल विद्धंसणस्स ए सातमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (सिद्ध के०) सिद्धाणं बुद्धाणं ए आठमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (जोदेवा के०) जो देवाणविदेवो ए नवमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (उविं के०) उविंत सेलसिहरे ए दशमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (चत्ता के०) चत्तारि अठ दस दोय ए अगीआरमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (वेआवच्चग के०) वेआवच्चगराणं ए बारमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, ए बार (अहिगार के०) अधिकाराना (पढमपया के०) पहेला पद एटले आदिना पद धुरीयां जाणवा ॥ ४२ ॥

ए बार अधिकार मांहेला कया अधिकारें कोने वांदवा ते कहे छे.

पढम अहिगारे वंदे, जावजिणे बीयएउ दवजिणे ॥
इगचेइय ठवणजिणे, तइय चउछंमि नामजिणे ॥ ४३ ॥

अर्थः—नमुत्थुणंथी मांमीने जियजयाणं पर्यंत (पढमअहिगारे के०) पहेला अधिकारने विषे जे तीर्थंकर थया, केवलज्ञान पाम्या छे एवा (जावजिणे के०) जावजिनने एटले जावतीर्थंकरने (वंदे के०) हुं वांडुं छुं, तथा जे अइआ सिद्धा ए गाथायें (बीयएउ के०) बीजो अधिकार छे तेने विषे वली जे आगले थाशे एवा (दवजिणे के०) द्रव्यजिनने हुं वांडुं छुं. ए बे अधिकार नमुत्थुणंना जाणवा तथा (तइय के०) त्रीजा अधिकारे (इगचेइय ठवणजिणे के०) एक चैत्यना स्थापना जिनने हुं वांडुं छुं एटले एक देरासर मांहेली सर्व प्रतिमाउने वंदन करवुं ए अरिहंत चेइयाणंने पाठे जाणवो ए सूत्रामां एकज अधिकार छे. तथा लोगस्स उज्जोयगरे रूप (चउछ के०) चोथा अधिकारने विषे (नामजिणे के०) श्रीरुषजादिक नाम जिनने हुं वांडुं छुं ॥ ४३ ॥

तिहुअण ठवणजिणे पुण, पंचमए विहरमाण जिण छठे ॥
सत्तमए सुयनाणं, अठमए सव सिद्ध थुई ॥ ४४ ॥

अर्थः—(पुण के०) वली सवलोए अरिहंतचेइयाणंरूप (पंचमए के०) पांचमा अधिकारने विषे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल रूप (तिहुअण के०) त्रण जुवनने विषे जे शाश्वता अनें अशाश्वता एवा (ठवणजिणे के०) स्थापना जिन छे ते प्रत्यें हुं वांडुं. तथा पुरकरवरदीवड्ढेनी पहेली गाथा रूप (छठे के०) छठा अधिकारने विषे अढीद्वीप मध्ये श्रीसीमंधर स्वाम्यादि (विहरमाणजिण के०) विचरता जाव जिन प्रत्यें वांडुं छुं. तथा तमतिमिरपमल इहांथी मांमीने सुअस्स जगवउ पर्यंत (सत्तमए के०) सातमा अधिकारने विषे (सुअनाणं के०) श्रीश्रुतज्ञान प्रत्यें हुं वांडुं. तथा सिद्धाणं बुद्धाणं ए गाथा रूप (अठमए के०) आठमा अधिकारने विषे तीर्थ अतीर्थादिक पन्नर जेद वाला एवा (सवसिद्धथुइ के०) सर्व सिद्धनी स्तुति जाणवी ॥ ४४ ॥

तिबाहिव वीरथुइ, नवमे दसमे य उद्मयंत थुई ॥ अठवा
याइ इगदिसि, सुदिठि सुर समरणा चरिमे ॥ ४५ ॥

अर्थः–तथा जो देवाणविदेवो अने इक्कोवि नमुक्कारो ए बे गाथा रूप (नवमे के०) नवमा अधिकारने विषे आ वर्त्तमान (तिबाहिव के०) तीर्थना अधिपति ठाकुर जे श्री (वीर के०) वीर नगवान तेनी (थुइ के०) स्तुति जाणवी. तथा उंर्जित सेलसिहरे ए गाथा रूप (दसमे के०) दशमा अधिकारने विषे (अ के०) वली (उज्जयंत के०) श्रीरैवतकाचल पर्वतने विषे श्रीनेमिनाथ नगवाननी (थुइ के०) स्तुति जाणवी. तथा चत्तारि अठदस दोय वंदिया ए गाथा रूप (इगदिसि के०) अगीआरमा अधिकारने विषे (अठवायाइ के०) अष्टपादादिकने विषे श्रीनरतेश्वरें करावेली चोवीश जिन प्रतिमानी स्तुति जाणवी. तथा वेयावच्चगराणं ए गाथा रूप (चरिमे के०) बेला बारमा अधिकारने विषे (सुदिठि के०) सम्यक्दृष्टी (सुर के०) देवताने (समरणा के०) स्मरवा रूप स्तुति जाणवी ॥४५॥

आ ठेकाणे अगीआरमां अधिकारने विषे चत्तारि अठदस इत्यादि गाथामां घणा प्रकारें देव वांद्या बे ते मांहेला केटला एक इहां लखीयें बैयें. संनवादिक चारजिन दक्षणदिसें, तथा सुपार्श्वादिक आठ जिन पश्चिमदिशें, तथा धर्मादि दशजिन उत्तरदिशें, तथा श्रीरुषन अने अजित ए बे जिन पूर्वदिशें एवं चोवीश जिन वांद्या बे, तथा बीजे अर्थे प्रथमना चारने आठ गुणा करीयें. तेवारें बत्रीश थाय अने वचला दशने बे गुणा करीयें, त्यारें वीश थाय, ए बे आंक मेलवीयें तेवारें बावन थाय, ते बावन चैत्य नंदीश्वर द्वीपें बे तेने वांद्या बे.

तथा त्रीजे अर्थे (चित्त के०) ठांफ्या बे (अरि के०) वैरी जेणें एवा अठदस एटले अढार अने बे पाउला मेलवीयें त्यारें वीश तीर्थंकर थाय ते श्रीसमेतशिखरे सिद्ध थया तेने वांद्या. अथवा विचरता जिन उत्कृष्टे कालें एक समयें जन्मथी वीश होय तेमने वांद्या.

तथा चोथे अर्थे आठने दश अढार थाय, तेनी साथे वीशनो चोथो नाग पांच थाय, ते मेलवीयें तेवारें त्रेवीश थया ते एक श्रीनेमीश्वर विना त्रेवीश जिन श्रीशत्रुंजयें समवसखा बे, माटे तेने वांद्या.

पांचमे अर्थें दशने आठ गुणा करीयें, तेवारें एंशी थाय तेने बमणा करतां एकशो ने साठ थाय, ते उत्कृष्टकालें पांच महाविदेहें विचरे तेने वांद्या.

छठे अर्थें आठ अने दश मली अढार थाय, तेने चार गुणा करतां ब होंतेर थाय. ए त्रैकालिक त्रण चोवीशी भरतादिक क्षेत्रनी वांदी.

सातमे अर्थें चारने आठ युक्त करीयें, तेवारें बार थाय तेने दश गुणा करीयें, तेवारें एकशोने वीश थाय, तेने बमणा करतां बशें ने चालीश था य ते भरतादिक दश क्षेत्रनी दश चोवीशी वांदी.

आठमे अर्थें मूल चार छे,तथा वली आठने आठ गुणा करतां चोशठ थाय, तथा दशने दश गुणा करतां एकशो थाय. तेनी साथें पाछला बे मेल वतां १७० जिन थाय. ते उत्कृष्ट कालें विचरता जिनने वांद्या.

नवमे अर्थें अनुत्तर, ग्रैवेयक, विमानवासी अने ज्योतिषी ए चार स्था नक ऊर्ध्वलोकें छे तिहांनां चैत्य तथा आठ व्यंतरनिकाय,दश भवनपति, ए अधोलोकनां चैत्य तथा मनुष्यलोकमां तो शाश्वती अने अशाश्वती प्र तिमा ए त्रण लोकनां चैत्य वांद्यां. एवी रीतें ए गाथा मध्ये सर्व तीर्थ वंदना लक्षण अर्थ घणा छे, ते सर्व वसुदेव हिंम प्रमुख ग्रंथोथी जोइ ले वा. अहींआं विस्तार घणो थाय माटे लख्या नथी ॥४५॥

नव अहिगारा इह ललि, अ विछरा वित्तिआइ अणुसारा ॥
तिन्नि सुयपरंपरया, बीयउ दसमो इगारसमो ॥ ४६ ॥

अर्थः—(इह के०) ए बार अधिकारमांथी पहेलो, त्रीजो, चोथो, पां चमो, छठो, सातमो, आठमो, नवमो, अने बारमो, ए (नवअहिगारा के०) नव अधिकार ते (ललिअविछरा के०) ललितविस्तरा नामे भाष्य नी (वित्तिआइ के०) वृत्ति आदिकना (अणुसारा के०) अनुसारथकी जाणवा. अने (बीयउ के०) बीजो अधिकार, जे अईआ सिद्धा तथा (दसमो के०) दशमो अधिकार उज्जिंतसेल ए गाथोक्त तथा (इगार समो के०) अगीआरमो अधिकार चत्तारि अठदस ए गाथोक्त एटले जे अ ईआ, उज्जंत अने चत्तारि, ए (तिन्नि के०) त्रण अधिकार, ते (सुयपरंप रया के०) श्रुतनी परंपराथी एटले जेम सिद्धांतनुं व्याख्यान छे, तेम तथा गीतार्थ संप्रदायथी जाणवा ॥ ४६ ॥

आवस्सय चुण्णीए, जं जणियं सेसया जहिज्ञाए ॥
तेणं ज्यंताइवि, अहिगारा सुयमया चेव ॥ ४७ ॥

अर्थः– (जं के०) जेम (अवस्सयचुम्मिए के०) आवश्यक सूत्रनी चूर्णीनेविषे तथा प्रतिक्रमण चूर्णी मध्ये (जणियं के०) कह्युं छे. जे ज्विं तादिक (सेसया के०) शेष अधिकार ते (जहिज्ञाए के०) यथेच्छायें जाणवा. (तेणं के०) ते कारण माटे ए (ज्यंताइवि के०) ज्यंतसेलसिहरे इत्यादिक गाथायें जे पण (अहिगारा के०) अधिकारो ते सर्व (सुयमया के०) श्रुतमय जाणवा. (चेव के०) चकार पादपूरणार्थ छे अने एव शब्द निश्चयवाचक छे ॥ ४७ ॥

बीउ सुयज्ञयाइ, अज्ञउ वन्निउ तहिं चेव ॥ सक्क
ज्ञयंते पढिउ, दवारिहवसरि पयडज्ञो ॥ ४८ ॥

अर्थः–अने "जे अईआसिका जे जविस्संति" इत्यादि गाथायें जे ड्व्य जिन वंदन रूप (बीउ के०) बीजो अधिकार ते पण (सुयज्ञयाइ के०) श्रुतस्तवादि एटले श्रुतस्तवनी आदिमां आवेली पुरकरवरदी नामनी गाथाने विषे छे ते (अज्ञउ के०) अर्थथकी तो (तहिं के०) ते श्रुतस्तव मांहेज (चेव के०) निश्चें श्रीआवश्यक चूर्णीने विषे (वन्निउ के०) वर्णितो एटले वर्णव्यो छे. जेम के उक्कोसेणं सत्तरिएणंजिणयर सयं जहन्न एणं वीसं तिज्ञयराए, एताय एगकालेणं जवंति अइआ अणागया अणंता ते तिज्ञयरा नमंसंति ॥ ए पाठ छे. अहीं कोइ शंका करे के त्यां जले तेम जणो परंतु आंही लखेला पाठे करीने शुं ? तो त्यां कहे छे के (सक्कज्ञयंते के०) शक्रस्तवना अंतने विषे जे (पढिउ के०) पठितः एटले कह्यो छे अर्थात् पूर्वाचार्योयें शक्रस्तवना अंतमां स्थापन करेलो छे ते (दवारिहवसरि के०) ड्व्य अरिहंत वांदवाना अवसरें एटले जाव अरिहंत वंदनानंतर ड्व्य अरिहंत वंदनानुं अनुक्रमें प्राप्तपणुं छे माटे ए आद्य अधिकार मां पण नवमी संपदाने विषे कांइक जणवा थकी तेनुं विस्तारार्थपणुं छे तेम (पयडज्ञो के०) प्रकटार्थो एटले प्रगटार्थ जाणवो माटे ए पण श्रुतमय जाणवो. आ प्रकारें निर्युक्ति अने चूर्णीनां वचन ते प्रमाणज छे जे माटे कह्युं छे ॥ ४८ ॥

असढाइन्नण वज्जं, गीअड अवारिअंति मज्जा ॥ आ
यरणा विहु आण,त्ति वयणउ सु बहु मन्नंति ॥ ४ए ॥

अर्थः—जे आचारणा (अणवज्जं के०) अनवद्य होय एटले पापर
हित होय, अने वली ते (गीअडअवारिअं के०) गीतार्थे अवारित होय
एटले बीजा कोइ गीतार्थ पुरुषे तेने वारी नही होय (इति के०) एवा
(मज्जा के०) मध्यस्त राग द्वेष रहित (असढाइन्नके०) असठ पंमि
त, गीतार्थ, पुरुषो तेणे जे आचार्यो होय तो तेवा गीतार्थेनी करेली
जे (आयरणावि के०) आचारणा ते पण (हु के०) निश्चें श्रीभगवंतनी
(आणा के०) आज्ञाज कहीयें (इति वयणउ के०) एवुं वचन छे, ते
माटे (सु के०) सुष्ठु एटले भला अथवा सुविहित अशठ गीतार्थेनी क
रेली आचरणाने पण (बहुमन्नंति के०) गीतार्थ जन घणुं माने ॥ ४ए ॥
ए बार अधिकारनुं बारमुं द्वार कह्युं, इहां सुधी उत्तर बोल १एठ७ थया ॥

हवे चार वांदवा योग्यनुं तेरमुं आदे देइने बीजां पण द्वार कहे छे.

चउ वंदणिज्ज जिण मुणि,सुय सिद्धा ॥दारं (॥१३॥)
इह सुराइ सरणिज्जा ॥ दारं ॥ १४ ॥ चउह
जिणा नाम ठवण, दव्व भाव जिण भेएणं ॥ ५० ॥

अर्थः—(चउवंदणिज्ज के०) चार वंदनीयक एटले चार वांदवा योग्य
कह्या छे, ते कया कया ? तेनां नाम कहे छे. एक (जिण के०) जिन तीर्थंक
र अरिहंत, बीजा (मुणि के०) मुनिराज साधु, त्रीजो (सुय के०) श्रुत
सिद्धांत प्रवचन अने चोथा (सिद्धा के०) सिद्ध भगवान् जे मोक्ष
प्राप्त थया ते जाणवा. ए चार वंदनीकनुं तेरमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल
१एए१ थया ॥ १३ ॥

हवे एक स्मरवा योग्यनुं चौदमुं द्वार कहे छे. (इह के०) ए श्रीजिन
शासन मांहे सम्यग्दृष्टि अधिष्ठायिक (सुराइ के०) देवताप्रमुख (सर
णिज्जा के०) स्मरणीय छे एटले स्मरवा योग्य जाणवा. ए स्मरवा योग्य
नुं चौदमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल १एए२ थया ॥ १४ ॥

हवे चार प्रकारना जिननुं पन्नरमुं द्वार कहे छे.

(चउहजिणा के०) चार प्रकारना जिन कह्या छे ते. कहे छे. एक (नाम के०) नामजिन, बीजा (ठवण के०) स्थापना जिन, त्रीजा (दव्व के०) द्रव्यजिन, चोथा (नाव के०) नावजिन ए चार (जिणनेएणं के०) जिनना नेदे करीने चार जिन जाणवा ॥ ५० ॥

हवे ए चार प्रकारना जिननुं स्वरूप चार निक्षेपे कहे छे.

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणंद पडिमाउ॥ दव्व जिणा जिणजीवा, नावजिणा समवसरणत्था॥ ५१॥ दारं॥ १५॥

अर्थः–प्रथम (जिणनामा के०) श्रीरुषनादिक जिननां जे नाम छे ते मने ते ते नामे बोलावीये छैयें तेने (नामजिणा के०) नाम थकी जिन कहीयें, (पुण के०) वली बीजा (जिणंदपडिमाउ के०) श्रीजिनेंद्रनी जे शाश्वति अशाश्वति प्रतिमाउ छे तथा पगलां छे ते सर्वने (ठवणजिणा के०) स्थापना जिन कहीयें, त्रीजा जेणे तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं छे एवा श्रीकृष्ण,श्रेणिकादिक ए सर्व तथा जे तेज नवमां तीर्थंकर पदवी पामशे पण दीक्षा लइने ज्यां सुधी केवलज्ञान नथी पाम्या त्यां सुधी तेपण (जिणजीवा के०) जिनना जीव कहेवाय तेने (दव्वजिणा के०) द्रव्यथकी जिन कहीयें. चोथा जे केवल ज्ञान पामीने (समवसरणत्था के०) श्रीसमवसरणने विषे स्थित थया, बेठा थका धर्मोपदेश आपे तेने (नावजिणा के०) नावथकी जिन जाणवा ॥ ५१ ॥ (दारं के०) ए चार प्रकारें जिनना नामनुं पन्नरमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल १७७६ थया ॥

हवे चार थोयोनुं शोलमुं द्वार कहे छे.

अहिगय जिण पढमथुई, बीया सव्वाण तइअ नाणस्स॥ वेयावच्च गराणउ, उवउगत्थं चउत्थ थुई ॥५२॥ दारं ॥१६॥

अर्थः–जेनी आगल देव वांदीयें एवी जे नामे मूलनायकनी प्रतिमा होय एटले प्रस्तुत अंगीकस्यो जे चोवीश जिन मांहेलो कोइ श्रीरुषनादिक एक जिन तेने (अहिगयजिण के०) अधिकृतजिन कहीयें तेनी (पढमथुई के०) प्रथम स्तुति ते एक जिननीज जाणवी. तथा (बीया

के०) बीजी स्तुति तो (सव्वाणं के०) सर्व तीर्थंकरोनी साधारण भक्ति रूप जाणवी. तथा (तइअ के०) त्रीजी स्तुति ते (नाणस्स के०) ज्ञाननी एटले श्रुत सिद्धांत प्रवचननी जाणवी. तथा श्रीजिनशासनना रखवाला (वेयावच्चगराण के०) वैयावृत्त्यना करनार एवा सम्यग्दृष्टि देवताउंनी (तु के०) वली (उवउंगबं के०) उपयोग मनःस्मरणने अर्थे (चउबथुई के०) चोथी स्तुति जाणवी ॥ ५२ ॥ ए चार थुइनुं शोलमुं द्वार कह्युं ॥ उत्तर बोल २००० थया ॥

हवे आठ निमिनुं सत्तरमुं द्वार कहे ढे.

पाव खवणत्र इरिआई, वंदणवत्तिआइ ढ निमित्ता ॥ पवयण सुर सरणबं, उस्सग्गो इअ निमित्तठ ॥ ५३ ॥ दारं ॥ १७ ॥

अर्थः—गमनागमनथी उपना जे (पाव के०) पाप ते (खवणत्र के०) खपाववानें अर्थें (इरिआई के०) इरियावहि प्रथम पडिक्कमवी ते प्रथम निमित्त जाणवुं. तथा श्रीतीर्थंकरने (वंदणवत्तिआइ के०) वंदणवत्तियादि (ढ के०) ढ (निमित्ता के०) निमित्तें काउस्सग्ग करवो, जेम के प्रथम वंदणवत्तिआए एटले श्रीजिनराजने वांदवाथी जे लाभ थाय, ते काउस्सग्गमां मुजने लाभ थाउ. बीजो पूअणवत्तिआए एटले केशर चंदनादिक धूप प्रमुखें परमेश्वरनें पूजवाथी जे लाभ थाय, ते मुजने काउस्सग्गमां लाभ थाउ. त्रीजो सक्कारवत्तिआए एटले सत्कार ते श्रीजिनेश्वरने आभरणादि चढाववाथी जे लाभ थाय, ते मुजने काउस्सग्गमां लाभ थाउ. चोथो समाणवत्तिआए एटले सन्मान ते श्रीजिनना स्तवनगुण कहेवाथी जे लाभ थाय, ते मुजने काउस्सग्गमां लाभ थाउ पांचमो बोहिलाभ वत्तिआए एटले आगले भवें समकेतनो लाभ थाय, ते निमित्तें काउस्सग्ग करुं. ढठुं निरुवसग्ग एटले निरुपसर्ग ते जन्म जरा मरणादि उपसर्ग टालवा निमित्तें काउस्सग्ग करुं ए ढ निमित्त अने एक प्रथम कह्युं एवं सात थयां. तथा आठमुं (पवयणसुर के०) प्रवचनना अधिष्ठायक सुर एटले देवता तेने (सरणबं के०) समरवाने अर्थें (उस्सग्गो के०) एक नवकारनो काउस्सग्ग चैत्यवंदनने विषे करवो (इअ के०) ए (निमित्तठ

के०) निमित्त आठ जाणवां ते देववंदनने विषे होय ए आठ निमित्तनुं सत्तरमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल २००८ थया ॥ ५३ ॥

हवे बार हेतुनुं अढारमुं द्वार कहे छे.

चउ तस्स उत्तरीकरण, पमुह सद्धाइ आय पण हेउ ॥ वेयावच्चगरताइं, तिन्नि इअ हेउ बारसगं ॥ ५४ ॥ दारं ॥ १८ ॥

अर्थः—तिहां प्रथम देव वांदतां पाप टले छे (तस्स के०) ते पाप टालवाना (उत्तरीकरण के०) उत्तरीकरण (पमुह के०) प्रमुख (चउ के०) चार ले ते कहे छे. एक तस्सउत्तरीकरणेणं एटले पापने आलोववे करीने अर्थात् पापकर्म निर्घातन करवे करी, बीजो पायच्छित्तकरणेणं एटले अनिहया पदथी उपनुं जे प्रायश्चित्त ते लेवे करी, त्रीजो विसोहिकरणेणं एटले राग द्वेषनुं टालवुं अतिचार टालवानी विशुद्धि करवे करी, चोथो विसल्ली करणेणं एटले माया मात्सर्यादि वर्जवे करी मन वचन कायानी निःशल्यत्व त्रिकाल अतीत अनागत वर्त्तमानने विषे अरिहंतादिक षट्पद साथें पापकर्म टालवे काउस्सग्गनुं फल आपे ए चार उत्तरीकरणादि निमित्त कह्यां तथा (सद्धाइआ के०) श्राद्धादिक (य के०) वली (पणहेउ के०) पांच हेतु छे तेनां नाम कहे छे, सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए एटले एक श्रद्धा, बीजी मेधा एटले बुद्धि, त्रीजी धृति एटले चित्तस्वस्थता, चोथी धारणा ते यथा किंचित् शिक्षा ग्रहणता पांचमी अनुपेक्षा ते, तदेकाग्रता, ए सर्व पंचे वानां वधते थके पांच हेतु जाणवा तथा (वेयावच्चगरत्ताइं के०) वेयावच्चकरत्वादिक वेआवच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिठ्ठिसमाहिगराणं ए (तिन्नि के०) त्रण हेतु करे ते कहे छे. एक वैयावच्चकर सम्यक्दृष्टि देव, बीजो संतिगराणं एटले सम्यक्दृष्टिने रोगादिकनी शांति करवे करीने, त्रीजो समाहिगराणं एटले सम्यक्दृष्टिने समाधि उपजाववे करीने ए त्रण हेतुयें देव संभारना एटले चार उत्तरीकरण तथा पांच श्रद्धादिक अने त्रण वैयावच्चकर (इअ के०) ए (बारसगं के०) द्वादशकं एटले बार (हेउ के०) हेतु चैत्यवंदनने विषे जाणवा एटले बार हेतुनुं अढारमुं द्वार पूरुं थयुं अने उत्तर बोल २०२० थया ॥ ५४ ॥

हवे शोल आगारनुं उगणीशमुं द्वार कहे छे.

अन्नछयाइ बारस, आगारा एवमाइया चउरो ॥ अगणि पणिंदि छिंदण, बोही खोभाइ मक्कोय ॥५५॥ दारं ॥१ए॥

अर्थः—(अन्नछयाइ बारस आगारा के०) अन्नछयादि बार आगार एटले अन्नछउससिएणंथी मांमीनें सुहुमेहिंदिछिसंचालेहिं पर्यंत बार आगार जाणवा. तेनां नाम कहे छे. पहेलो उंचो श्वास लेवे, बीजुं नीचो श्वास लेवे, त्रीजुं खांसी उधरस आवे, चोथुं छींक आवे, पांचमुं बगासुं आवे, छठुं उमकार ते ऊर्ध्ववात आवे, सातमुं अधोवात आवे, आठमुं जमरि आवे, नवमुं वमन पित्त मूर्छा आवे, दशमुं सूक्ष्म अंगफुरकणथी, अगीआरमुं खेलसिंघाण नाक मेल संचारथी, बारमुं दृष्टि प्रमुख संचारथी काउस्सग्ग न भांगे.

तथा (एवमाइया चउरो के०) एवमादिक चार आगार कहे छे एक (अगणि के०) अग्निनो उपद्रव उपनें थके तिहांथी पूंजतो अलगो जाय अथवा दीवा प्रमुखनी उजेई थातां तथा अग्निनो स्पर्श थतो होय तेवारें काउस्सगमांहे कपडाथी शरीर ढांके, अथवा पूंजतो अलगो जइ रहे, बीजुं (पणिंदिछिंदण के०) पंचेंद्रिछिंदन पंचेंद्रियनुं छेदेन थतुं होय अथवा मूषकादिक पंचेंद्रिय जीव, ते स्थापनाचार्य अने पोतानी वचमां जाता होय, तेवारें पूंजतो अलगो जइ रहे, तो काउस्सग्गभंग न थाय त्रीजुं (बोहिखोभाइ के०) बोधिक्षोभादि ते जिहां राजा अथवा चोरादिक मनुष्य तेना पराभवें करी पछी धर्मनी क्षोभणा थाय माटे काउस्सग्गमांहे तिहांथी अलगो जइ रहे तो काउस्सग्ग भंग न थाय, चोथुं (मक्कोअ के०) मक्क ते साप प्रमुखना मंकना भयें करी अथवा साप प्रमुख पासें आवतो होय तो तेना भयथी अलगुं जवुं पडे, तेथी काउस्सग्ग भंग न थाय ए शोल आगारनुं उगणीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल (२०३६) थया ॥ ५५ ॥

हवे काउस्सग्गना उगणीश दोष त्यागवा, तेनां नामनुं वीशमुं द्वार कहे छे.

घोडग लय खंभाई, मालु द्धी निअल सबरि खलिण वहू ॥
लंबुत्तर थण संजइ, भमुहंगुलि वायस कविछे ॥ ५६ ॥

अर्थः—प्रथम घोडानी परें एक पग ऊंचो राखे, वांको. पग राखे, ते (घोडग के०) घोटक दोष, बीजो जेम वायराथी वेलडी कंपे तेम शरीर ने धूणावे, ते (लय के०) लता दोष, त्रीजो थांना प्रमुखने उंठिंगे रहे, ते (खंनाई के०) स्तंनादि दोष, चोथो मेडा उपरने माले माथुं लगावी रहे ते (माल के०) माल दोष, पांचमो गाडानी उंधिनी परें अंगुठा तथा पाह्हानी मेलवी पग राखे, ते (उद्धी के०) उधि दोष, छठो नेगलमां पग नाख्यानी परें पग मोकला राखे, ते (नियल के०) निगड दोष, सातमो नागी निल्लडीनी परे गुह्यस्थानकें हाथ राखे ते (सबरि के०) शबरि दोष, आठमो घोडाना चोकडानी परें हाथ रजो हरणें राखे, ते (खलिण के०) खलिण दोष, नवमुं नवपरणीत वहूनी पेरें माथुं नीचुं राखे ते (वहू के०) वधूदोष, दशमो नाजनी उपरें अने ढीचणथी नीचे जानुं उपरें लांबु वस्त्र राखे ते (लंबुत्तर के०) लंबुत्तर दोष, ए दोष यति आश्रयी जाणवो. केमके मुंटीथी चार अंगुल नीचें अने ढीचणथी चार अंगुल उपर यतिने चोलपट पहेरवो कह्यो ले. अगीआरमुं मास म साना नयें अथवा अज्ञानथी लज्जाथी स्त्रीनी परें हैयुं ढांकी राखे, हृदय आह्वादे, ते (थण के०) स्तन दोष, बारमो शीतादिकने नयें साधवीनी परें बेहुखंना ढांकी राखे एटले समग्र शरीर आह्वादी राखे ते (संजइ के०) संयति दोष, तेरमो आलावोगणवाने अर्थे संख्या करवाने अंगुली तथा पांपणना चाला करे, ते (नमुहंगुलि के०) नमुहंगुली दोष, चउद मो वायसनी पेरें आंखना मोला फ़ेरवे, ते (वायस के०) वायस दोष, पंदरमो पहेरेला वस्त्र ते यूका तथा प्रस्वेदनें करी मलिन थवाना नयने लीधे कोठनी परें लुगडुं गोपवी राखे ते (कविठ्ठे के०) कपिठ्ठ दोष ॥ ५६ ॥

सिरकंप मूअ वारुणि, पेहत्ति चइज्ज दोस उस्सग्गे ॥ लंबुत्तर
थण संजइ, नदोस समणीण सवहु सड्ढीणं ॥५७॥ दारं॥२१॥

अर्थः—शोलमो यक्षावेशितनी परें माथुं धूणावे, ते (सिरकंप के०) शिरःकंप दोष, सत्तरमो मुंगानी पेरें हू हू करे,ते (मूअ के०) मूक दोष, अढारमो आलावो गणतो थको मदिरानी परे बडबडाट करे, ते (वारुणि के०) मदिरा दोष, उंगणीशमो वानरनी पेरें अरहुं परहुं जोवे, उष्ठ पुट

चलावे, ते (पेह के०) प्रेष्य दोष (इति के०) ए प्रकारें ए उंगणीश दोष ते (उस्सग्गो के०) काउस्सग्गने विषे जाणवा तेने (चइज्ज के०) छांमे. ए उंगणीश दोषमां केटलाएक लमूह अने अंगुली बें जूदा दोष करे छे, तेवारें वीश थाय, तथा एक (लंबुत्तर के०) लंबुत्तर, बीजो (थण के०) स्तन अने त्रीजो (संजइ के०) संयति ए त्रण (दोस के०) दोष ते (समणीण के०) श्रमणीने (न के०) न होय केमके एनुं वस्त्रावृत शरीर होय, पण एटलुं विशेष जे साध्वी प्रतिक्रमणादि क्रिया करते मस्तक उघाडुं राखे एटले शोल दोष साधवीने लागे. अने ए त्रण दोषने (वहू के०) वधू दोषें करी (स के०) सहित करीयें तेवारें लंबुत्तरादि चार दोष थाय. ते (सड्डीणं के०) श्राविकानें न होय, शेष पंदर दोष श्राविकानें लागे ए सर्व दोष टालीने काउस्सग्ग करवो एटले काउस्सग्गना दोषनुं वीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५५ थया ॥ ५७ ॥

हवे काउस्सग्गना प्रमाणनुं एकवीशमुं द्वार तथा स्तवननुं बावीशमुं द्वार कहेछे

इरि उस्सग्ग पमाणं, पणवीसुस्सास अठ सेसेसु ॥ दारं ॥२१॥
गंभीर महुर सद्दं, महत्थजुत्तं हवइ थुत्तं ॥ ५८ ॥ दारं ॥ २२ ॥

अर्थः—(इरिउस्सग्ग के०) इरियावहिना काउस्सग्गनुं (पमाणं के०) प्रमाण (पणवीसुस्सास के०) पच्चीश श्वासोच्छ्वासनुं जाणवुं. एटले संप्रदायें "चंदेसु निम्मलयरा" पर्यंत यावत् पच्चीश पदनुं काउस्सग्ग कराय छे, अने (सेसेसु के०) शेष काउस्सग्ग जे देव वांदता स्तुति काउस्सग्ग ते (अठ के०) आठ श्वासोच्छ्वास प्रमाण जाणवो. केम के संप्रदायें एक नवकारनी संपदा आठ छे माटे. ए काउस्सग्ग प्रमाणनुं एकवीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५६ थया.

हवे श्रीवीतरागनुं स्तवन केहवा प्रकारें कहेवुं तेनुं बावीशमुं द्वार कहे छे. (गंभीर के०) मेघनी पेरें गंभीर अने (महुरसद्दं के०) मधुर शब्द छे जिहां अने वली (महत्थजुत्तं के०) महा अर्थयुक्त भक्ति, ज्ञान, वैराग्य अने आत्मानंदादि दशायुक्त एवुं श्रीवीतरागनुं (थुत्त के०) स्तुत एटले स्तवन (हवइ के०) होय. ए स्तवन भणवानुं बावीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल२०५७ थया ॥ ५८ ॥

हवे चैत्यवंदन एक दिवसमां केटलीवार करवुं ? तेनुं त्रेवीशमुं द्वार कहे छे.

पडिकमणे चेइय जिमण, चरिम पडिक्कमण सुअण पडिबोहे ॥ चिइवंदण इअ जइणो, सत्तउ वेला अहोरत्ते ॥ ५९॥

अर्थः–एक (पडिकमणे के०) प्रजातनें पडिक्कमणे पच्चरकाण करतां देव वांदवाने विषे विशाललोचन कही चैत्यवंदन करे, बीजुं (चेइअ के०) चैत्यगृहमां जगवंत आगले चैत्यवंदन करे, त्रीजुं (जिमण के०) जमती वखत पच्चरकाण पारे, तेवारें चैत्यवंदन करे, चोथुं (चरिम के०)छेहलो जमीने उठ्या पछी एटले आहार करी रह्या पछी दिवसचरिम पच्चरकाण करतां चैत्यवंदन करे, पांचमुं (पडिक्कमणं के०) संध्याने पडिक्कमणे नमोस्तु वर्द्धमानादि चैत्यवंदन करे, छठुं (सुअण के०) सूती वखते शयन संथारा पोरिसी जणावतां चैत्यवंदन करे, सातमुं (पडिबोहे के०) पाछली रात्रे जाग्या पछी कुसुमिण डुसुमिण काउस्सग्ग कस्या पछी किरियानी वेलायें चैत्यवंदन करे, (इअ के०) ए कह्या जे (सत्तउवेला के०) सात वखतना (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करवां ते (अहोरत्ते के०) एक अहोरात्र मध्ये (जइणो के०) यतिने होय ॥ ५९ ॥

हवे श्रावकनें एक अहोरात्रमां केटलां चैत्यवंदन होय, ते कहें छे.

पडिक्कमिउ गिहिणोवि हु, सगवेला पंचवेल इअरस्स ॥
पूआसु ति संझासु अ, होइ ति वेला जहन्नेणं ॥ ६० ॥

अर्थः–एक प्रजाते अने बीजो सांझे ए बे वार (पडिकमिउ के०) पडिक्कमणुं करता एवा (गिहिणोवि के०) गृहस्थने पण (हु के०) निश्चें यतिनी पेरें (सगवेला के०) सातवार चैत्यवंदन थाय. तथा जे एक वार पडिक्कमणुं करता होय एवा गृहस्थने (पंचवेल के०) पांचवार चैत्यवंदन थाय तेमां एक पोरिसि सांजलतां, एक क्रिया करतां अने त्रण वार देव वांदता मली पांच थाय. अने तेथी (इअरस्स के०) इतर एटले जे पडिक्कमणुं नथी करता एवा गृहस्थने तो प्रजात, सांझ अने मध्यान्हे ए (तिसंझासु के०) त्रण संध्यायें (पूजासु के०) पूजाने विषे (जहन्नेणं के०) ए जघन्यथी पण गृहस्थने माटे (तिवेला के०) त्रणवार चै

त्यवंदना (होइ के०) होय ए सात प्रकारना चैत्यवंदननुं त्रेवीशमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल २००६४ थया ॥ ६० ॥

हवे ए पूर्वोक्त सर्वे बोल जो आशातनानो परिहार करे तो सफल थाय, माटे चोवीशमुं दश आशातनानुं द्वार कहे छे.

तंबोल पाण भोयण, वाणह मेहुन्न सुअण निठवणं ॥
मुत्तुच्चारं जूअं, वज्जे जिणनाह जगई ए ॥ ६१ ॥

अर्थः–प्रथम आशातना शब्दनो अर्थ करे छे. जे ज्ञान, दर्शन अनें चारित्रनो आय एटले लाभ तेनी शातना एटले खंडना करवी तेने आशातना कहीयें ते जिनघरमां न करवी ते आशातना जघन्यथी दश प्रकारें छे, तेनां नाम कहे छे. प्रथम (तंबोल के०) तांबूल ते सोपारी, नागरवल्लीना पान अने पंचसुगंधादिकनुं खावुं, बीजी (पाण के०) पाणी पीवुं, त्रीजी (भोयण के०) भोजन करवुं, चोथी (उवाणह के०) उपानह एटले मोजडी पगरखादिक पहेरवां, पांचमी (मेहुण के०) मैथुन ते कामचेष्टा करवी, (छठी सुअण के०) सुवुं ते शयन करवुं, सातमी (निठिवणं के०) थूंकवुं, श्लेष्म नाखवुं आठमी (मुत्त के०) मात्रा एटले लघुनीत करवी, नवमी (उच्चारं के०) उच्चार ते वडी नीतिनुं करवुं, दशमी (जूअं के०) जूवटे रमवुं, ए दश आशातना ते (जिणनाह के०) जिननाथ एटले भगवानना देरासरनी (जगईए के०) जगतीनेविषे एटले देरासरनी कोटडीमांहे पेसतां ए दशवानां (वज्जे के०) वर्जवां ए जघन्यथी दश आशातना महोटी छे तेनां नाम कह्यां ॥ ६१ ॥

हवे उत्कृष्टथी चोराशी आशातना त्यजवी जोइयें तेनां नाम इहां प्रसंगें लखीयें छैयें. १ खेलश्लेष्म, २ द्यूतादिक्रिडा, ३ कलह, ४ धनुर्वेदादिक कला, ५ कोगला नाखवा, ६ तांबूल पूगीफल पत्रादि भक्षण, ७ तांबूल खावानां कूचा, तथा उगार नाखवो, ८ गालो देवी, विरुद्ध बोलवुं, ए लघुनीत वडीनीत करवी वातनिर्गमनादि पवित्र करणादि, १० शरीर धोवन, ११ केश समारवा, १२ नख समारवा, १३ रुधिरादि नाखवां, १४ शेकेला धान्य प्रमुख खावां, १५ त्वचाचागादिक नाखवां, १६ औषधादिकें करी पित्त वमन करे, १७ वमन करे, १८ दंतधावनादि करे, १९ वीसा

मण करावे, २० बकरी, गज, अने अश्वादिकनुं दमन बंधन करें, २१ दांत, २२ आंख, २३ नख, २४ गंडस्थल, २५ नासिका, २६ कान, २७ मस्तका दिक, ते सर्वनो मेल ठांडे, २८ सूवे २९ मंत्र जूतादि ग्रह तथा राजादि कार्यना आलोच विचार करे, ३० वृद्ध पुरुषनो समुदाय तिहां आवी म ले, ३१ नामां लेखां करे, ३२ धनना जाग प्रमुख मांहोमांहे वेंचे, ३३ पोतानुं इव्यजंमार करी तिहां थापे, ३४ पग उपर पग चडावीने बेसे, ३५ ठाणां थापे, ३६ वस्त्र सुकवे, ३७ दाल ढंढणीयादिक उगवे, ३८ पा पड शालेवां करें, ३९ वडीआदि देंइ कचर चीजडी प्रमुख सर्व शाक जाति उगवे, ४० राजादिकना जयथी देरासर मध्यें नासीने बुपी रहे, ४१ शो कादिकें रुदन आक्रंद करे, ४२ स्त्री, जक्त, राज्य, देशादिकनी विकथा करे, ४३ शर, बाण, तथा बीजा पण अधिकरण शस्त्र घडे, ४४ गाय, बलद, प्रमुख थापे, ४५ टाढें पीड्यो अग्नि सेवे, ४६ अन्नादिकनुं रांधवुं करे, ४७ नाणादिक पारखे, ४८ अविधियें निसिही कह्या विना प्रवेश करे, ४९ बत्र, ५० उपानह, ५१ शस्त्र, ५२ चामर न मूके. एटले ए चार वाना साथे लइ प्रवेश करे, ५३ मननी एकाग्रता न करे, ५४ अ न्यंग एटले शरीरें तैलादिक चोपडे, ५५ सचित्त पुष्पफलादिक न मूके, ५६ अजीव वस्तु जे हार मुडादिक वस्त्रादिक ते बाहेर मूकी कुशोजावंत थइ देरासरमां प्रवेश करे, ५७ जगवंत दीठे अंजलि न जोडे, ५८ एक शाटक उत्तरासंग न करे ५९ मुकुट मस्तकें धरें, ६० मैली पाघडी उपर वस्त्र बो कानी घोस पेच प्रमुख न ठोडे, ६१ कुसुमना सेहरा, ठोगां प्रमुख माथाथी न मूके, ६२ होड पाडे, ६३ गेडीदडे रमत करे, ६४ प्राहुणादिकने जु हार करे, ६५ जांड चेष्टा, गाल; काख पूंठ वजावे, ६६ रेकार तुकारादि तिरस्कारनां वचन बोले, ६७ लेवा देवा आश्रयी धरणुं मांडे, ६८ रण संग्राम करे, ६९ वाल बूटा होय ते समा करे, जूआ करे, माथुं खणे, ७० पलांठी पग बांधे, ७१ चांखडीयें चडे, ७२ पग पसारी बेसे, ७३ पुड पुडी देवरावे, ७४ पगनो मेल जाटके, ७५ वस्त्रादिक जाटके, ७६ माकण यूकादिक वीणे, तथा तेने त्यांज नाखे, ७७ मैथुनक्रीडा करे, ७८ जमण करे, ७९ व्यापार क्रयविक्रय करे, ८० वैडुं करे, ८१ शय्या समारे, ८२ गुह्य लिंगादिक उघाडे, तथा समारे, ८३ बाहुयुद्ध करें तथा कुकडादिकना

शुद्ध करावे, ७४ वर्षाकालादिकने विषे प्रणालीथी पाणी संग्रहे अंघोल स्नान करे, तथा पाणी पीवाना जाजन मूके, ए उत्कृष्टथी चोराशी आशातना जिन जुवनमां वर्जवी.

हवे मध्यम बेतालीश आशातना वर्जवी तेनां नाम कहे ठे. १ मूत्र, २ पुरिष, ३ पाणी, ४ उपानह,५ शयन, ६ अशन,७ स्त्रीप्रसंग,८ तंबोल, ९ थुंकवुं, १० जूवटुं रमवुं,११ जूवटादिकनुं जोवुं, १२ पलांठी वालवी, १३ पग पसारवा, १४ परस्पर विवाद, १५ परिहास, १६ मत्सर, १७ सिंहासन परिजोग, १८ केश शरीर विजूषा, १९ ठत्र, २० खड्ग, २१ मुकुट, २२ चामरनुं राखवुं, २३ धरणुं करवुं, २४ हास्यादि विलास परिहास, २५ विटसाथें प्रसंग करवो, २६ मुखकोश न करवो, २७ मलिन शरीर राखे, २८ मलिन वस्त्र पेहेरे, २९ अविधीयें पूजा करे, ३० मननुं एकाग्र पणुं न करे, ३१ सचित्त ड्रव्य बाहेर न मूकी आवे, ३२ उत्तरासंग न करे, ३३ अंजलि न करे, ३४ अनिष्ट, ३५ हीन, कुसुमादि पूजोपकरण राखे, ३६ अनादर करे, ३७ जिनेश्वरना प्रत्यनीकने वारे नही, ३८ चैत्यड्रव्य खाय, ३९ चैत्यड्रव्यनी उपेक्षा करे, ४० ठती सामर्थ्यें पूजावंदनादिकें मंदता करे, ४१ देवड्रव्यादि जक्षक साथें व्यापार मित्राइ सगाइ करे, ४२ तेहवा वडेरानी मुख्यता करे, तथा तेनी आज्ञायें प्रवर्त्ते, ए बेंतालीश मध्यम आशातना वर्जवी. एटले ए चोवीशमुं आशातनानुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल २०७४ पूर्ण थया ॥

हवे देव वांदवानो विधि कहे ठे.

इरि नमुकार नमुत्थुण,अरिहंत थुई लोग सव थुइ पुरक ॥
थुइ सिद्धा वेआ थुइ, नमुठ जावंति थय जयवी ॥ ६७ ॥

अर्थः—प्रथम (इरि के०) इरियावहि संपूर्ण पडिक्कमि पठी चैत्यवंदननो आदेश मागी (नमुकार के०) नमस्कार कही पठी (नमुत्थुण के०) नमुत्थुणं कहे. पठी उनो थइ (अरिहंत के०) अरिहंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी एक तीर्थंकरनी (थुई के०) स्तुति कहे. पठी (लोग के०) लोगस्स कहीयें पठी (सवथुइ के०) सवलोए अरिहंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी सर्व तीर्थंकरनी बीजी स्तुति कहियें, पठी (पुरक

के०) पुक्करवरदी कही काउस्सग्ग करी श्री सिद्धांतनी त्रीजी (थुइ के०) स्तुति कहेवी पछी (सिद्धा के०) सिद्धाणं बुद्धाणं (.वेआ के०) वेयाव च्चगराणं इत्यादिक कही काउस्सग्ग करी अधिष्ठाइक देवोनी चोथी (थुइ के०) स्तुति कही पछी नीचे बेसीनें (नमुत्थु के०) नमुत्थुणं संपूर्ण क हीने (जावंति के०) जावंति चेइआइं जावंत केवि साहु कही नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कही (थय के०) स्तवन कहीने, संपूर्ण (जयवी के०) जयवीयराय कहीयें ए देव वांदवानो विधि कह्यो ॥ ६२॥

हवे यद्यपि कोइ प्राणी एटला बोल तथा एवो विधि न जाणतो होय तो पण आ कहेला आठ बोल तेमां होय तेने नक्तिवंत कहीयें. जेमाटे सं बोध प्रकरण मध्ये कह्युं छे ॥ नत्ति बहुमाणोवस्र,संजलण आसायणाइ प रिहारो ॥ पडिणीय संगवज्जण, सइ सामत्ते तउज्जुणणं ॥ १ ॥ विहिजुंजण मस्स वण, मवही वायाण विहि पडिसेहो ॥ सिद्धाए इय अडगुण, जुत्तो संपुस्र विहिजुत्तो ॥ २ ॥

ए बे गाथानो नावार्थ कहे छे. एक नक्ति ते अंतरंग राग, बीजुं बहु मान ते बाह्य लोकोपचार विनयादि गुण, त्रीजो वर्णवाद यशोवादनुं बो लवुं. चोथो आशातनादिकनो परिहार, पांचमो तेमना प्रत्यनीकनी साथे संग वर्जवो, छठो छति सामर्थ्यें विघ्ननुं टालवुं, सातमो आगलाने विधि मां जोडवुं, आठमो अवर्णवाद न सांनलवा पूर्वक अविधिनो निषेध क रवो अने विधिनो प्रतिसेवन करवो, एवा आठ गुण विशुद्ध युक्त ते सर्वो पाधि विशुद्ध संपूर्ण विधि युक्त कहीयें ॥ २ ॥

सव्वोवाहि विसुद्धं, एवं जो वंदए सया देवे ॥
देविंदविंद महिअं, परमपयं पावइ लहुसो ॥ ६३ ॥

अर्थः—एम (सव्वोवाहिविसुद्धं के०) सर्वोपाधि विशुद्ध जेम होय (ए वं के०) एम एटले सर्व श्रीजिनधर्म संबंधिनी चिंता तेणे करी निर्दोष प्रकारे शुद्ध श्रद्धायें करी (जो के०) जे नव्य प्राणी (देवे के०) श्रीदे वाधिदेवने (सया के०) सदा सर्वदा (वंदए के०) वांदे ते नव्यप्राणी नवनयरूप पद जिहां नथी एवो (परमपयं के०) परमपद एटले मोक्ष रूप पद ते प्रत्यें (लहुसो के०) शीघ्र उतावलो (पावइ के०) पामे. ते

परम पद कहेवो ले तोके (देविंदं के०) देवना इंद्र तेमना (विंद के०) समूह एटले इंद्रोने समूहे जेने (अहियं के०) अर्चित एटले पूज्युं एवो ले. एमां ग्रंथकर्त्ता श्रीदेवेंद्रसूरियें पोतानुं नाम पण सुचव्युं ले ए श्रीचैत्यवंदनज्ञाष्यनुं वार्त्तिक संक्षेपथी कह्युं, अने विस्तारथी तो श्रीआवश्यकनिर्युक्ति तथा प्रवचनसारोद्धारनी वृत्त्यादिकथी जाणवुं. इति श्रेयः ॥ इति श्री देववंदनज्ञाष्यं बालाबोधसहितं संपूर्णम् ॥ ६३ ॥

हवे ए श्रीदेवाधिदेवने विधि वंदवाना फलना कहेवावाला ते श्रीगुरु ले माटे तेमने पण ज्ञक्ति विनयें करी विधि पूर्वक वंदना करवा थकी सकल आगमना रहस्य पामीयें ए श्रीगुरुनें वांदवानां पण घणा फल आगम मांहे कह्या ले ॥ यडुक्तं ॥ वंदणएणं ज्ञंते जीवे किं जणइ, गोयमा वंदणएणं जीवे नीयागोयं खवेइ,उच्चागोयं णिबंधइ. साहग्गंचणं अपडिलेहियं आणाफलं निविसेइ दाहिण ज्ञावच जणय इति ॥ तेणे प्रसंगें आव्यो जे गुरुवंदनाधिकार ते हवे कहे ले.

अथ

बालावबोध सहित श्री गुरुवंदन ज्ञाष्य प्रारंज्ञः

गुरुवंदण मिह तिविहं, तं फिट्टा लोज्ञ बारसावत्तं ॥
सिर नमणाइसु पढमं, पुस्सं खमासमण डुगिबीअं ॥१॥

अर्थः—(अह के०) अथ शब्द ते मंगलाधिकारे ले,तथा प्रथम प्रारंज्ञने कारणे अथ शब्दें करी चैत्यवंदनज्ञाष्य कह्या पठी हवे गुरु वंदन ज्ञाष्य कहीयें लेयें (तं के०) ते (गुरुवंदणं के०) गुरुवंदन (तिविहं के०) त्रण प्रकारें ले तेमां पहेलुं (फिट्टा के०) फेटा वंदन, बीजुं (लोज्ञ के०) थोज्ञ वंदन, त्रीजुं(बारसावत्तं के०) द्वादशावर्त्त वंदन,तिहां (सिरनमणाइसु के०) मस्तक नमाडवादिकने विषे आदि शब्द थकी अंजलिकरण ते हाथ जोडवादिक जाणवा. ते (पढमं के०) पहेलुं फेटा वंदन जाणवुं. तथा (पुस्सखमासमणडुगि के०) पूर्ण पंचांग बे खमासमणा देवे करीने एटले बे हाथ, बे गुंठण अने एक मस्तक ए पांच अंग नमाववा रूप ते (बीयं के०) बीजुं थोज्ञवंदन जाणवुं ॥ १ ॥

इहां शिष्य पूछे छे के थोज वंदनें तथा द्वादशावर्त्त वंदने प्रथम एकवार वांदीने फरी बीजी वार शे हेतुयें वांदीयें छैयें? त्यां आचार्य उत्तर आपे छे.

जहदूउ रायाणं, नमिउं कज्जं निवेइउं पछा ॥
वीसज्जिउवि वंदिअ, गछइ एमेव इछ डुगं ॥ २ ॥

अर्थः—(जहदूउ के०) जेम दूत पुरुष छे ते (रायाणं के०) राजाने (नमिउं के०) नमिने (कज्जंनिविइउं के०) कार्य निवेदन करे वली (पछा के०) पाछो राजायें (वीसज्जिउवि के०) विसर्ज्यो थको पण (वंदिअ के०) वांदीने (गछइ के०) जाय (एमेव के०) एनी पेरे (इछ के०) इहां गुरुवंदनने विषे पण वंदननुं (डुगं के०) द्विक जाणवुं ॥ २ ॥ अने द्वादशावर्त्तवंदनें तो बेहु वांदणे मलीने आवश्यक आवर्त्तादि बोल नीपजे छे ते माटे बेहु वांदणानी जोडीयें एकज वंदन कहेवाय छे ॥

हवे वांदणा देवानुं कारण शुं ते कहे छे.

आयरस्सउ मूलं, विणउ सो गुणवउ अ पडिवत्ती ॥
सा य विहि वंदणाउ, विही इमो बारसावत्ते ॥ ३ ॥

अर्थः—जे माटे श्रीसर्वज्ञ प्रणीत जे (आयरस्स के०) आचार तेनो (उ के०) वली (मूलं के०) मूल जे छे ते (विणउ के०) विनय छे (सो के०) ते विनय केवीरीतें होय ते कहे छे. (गुणवउ के०) गुणवंत गुरुनी (अ के०) वली (पडिवत्ती के०) प्रतिपत्ति एटले सेवा करवी जाणवी (सा के०) ते नक्ति (च के०) वली (विहिवंदणाउ के०) विधियें करीने वांदवा थकी थाय ते (विहि के०) विधि (इमो के०) आ आगल (बारसावत्ते के०) द्वादशावर्त्त वंदनने विषे कहेशे ॥ ३ ॥

हवे ए त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन केम होय ते कहे छे.

तइयं तु छंदण डुगे, तछ मिहो आइमं सयल संघे ॥
बीयं तु दंसणीण य, पयछिआणं च तइयं तु ॥ ४ ॥

अर्थः—(तइयं के०) त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन ते (तु के०) वली (छंदणडुगे के०) बे वांदणा देवे करीने होय एटले बे वांदणा देवे करी थाय इहां छंदण शब्द वंदन वाचक जाणवो. (तछ के०) ते पूर्वोक्त त्रण वांदणा

मां (आइमं के०) आदिम एटले पहेलुं फेटावंदन जे छे ते साधु, साध्वी श्रावक अने श्राविका रूप चतुर्विध (सयलसंघे के०) समस्त श्रीसंघें म ली (मिहो के०) मिथो एटले मांहोमांहे परस्पर तेवा तेवा अवसरने विषे करवुं होय त्यारे थाय अने (बीयं के०) बीजुं जे थोजवंदन छे ते (तु के०) निश्चें वली सुसाधु एवा (दंसणीण के०) दर्शनीनेज अर्थें होय एटले एक गछगत, बीजो अनुयोगी, त्रीजो अनियतवासी, चोथो गुरुसेवी, पांचमो आयुक्त जे संयममार्गमां सावधान एवा गुणवंत यतिने ए वांदणुं देवाय, तथा (य के०) चकारथी, तथा विधिविशिष्ट कार्यने विषे लिंगमात्र धारी पण जो सम्यक्त्वदर्शनवंत होय तो ते पण छोजवंदने वंदनीय होय. तथा (तइयं के०) त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन जे छे ते (तु के०) वली आचार्य, उपाध्याय, गुणवंत गीतार्थादिक एवा (पयछिआ णं के०) पदप्रतिष्ठित जे होय तेमने (च के०) निश्चें होय ॥ ४ ॥

हवे ए वांदणानां पांच नाम छे, ते कहे छे.

वंदण चिइ किइ कम्मं, पूआकम्मं च विणयकम्मं च ॥
कायवं कस्स व के, ण वावि काहेव कइ खुत्तो ॥ ५ ॥

अर्थः—एक (वंदण के०) वंदन कर्म अने अजिवादन स्तुतिरूप, अर्हावन तकाय करवी, ते शरीर मस्तकादिके अवनत तथा कर्मथकी जलां कर्म बंधाय एटला माटे बीजुं (चिइ के०) चिति कर्म, त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म वांदणुं, (च के०) वली जला मन, वचन अने कायानी चेष्टानुं जे कर्म क रवुं ते माटे चोथुं (पूआकम्मं के०) पूजांकर्म कहीयें, तथा विनयनुं करवुं ते माटे पांचमुं (विणयकम्मं के०) विनयकर्म कहीयें, ए पांच प्रकारें वंदन (च के०) वली (कायवं के०) करवुं एटले पांच प्रकारें वांदणां देवां ते (कस्स के०) केने अर्थें देवा (व के०) वली (केणवावि के०) केहने वांदणां देवां, अपि शब्द निश्चयार्थमां छे. (काहेव के०) केवारें वांदणां देवां, (कइखुत्तो के०) केटली वार वांदणां आपीयें ॥ ५ ॥

कइउणयं कइसिरं, कइहि व आवस्सएहिं परिसुद्धं ॥
कइदोसविप्पमुक्कं, किइकम्मं कीस कीरइवा ॥ ६ ॥

अर्थः—वांदणाने विषे (कइउणयं के०) केटला अवनत करवा, (क

इसिरं के०) केटली वार मस्तक नमाडवुं, (कइहि के०) केटला (व के०) वली (आवस्सएहिं के०) आवश्यकें करीने.(परिसुद्ध के०) परिशुद्ध थको तथा (कइदोसविप्पमुक्कं के०) केटला दोषें करी विप्रमुक्त एटले रहित थके (कीस के०) किशा माटे (कीरइ के०) करी (किइकम्मं के०) कृतिकर्म वांदणां दीजे. वा शब्द पुनर्वाचक छे ॥ ६ ॥ ए पांचमी अने छठी बे गाथा आवश्यक निर्युक्तिमां कही छे ते इहां कही ॥

हवे त्रण गाथायें करी वंदनानां बावीश द्वार कहे छे.

मूलदार गाहा ॥ पण नाम पणाहरणा, अजुग्गपण जुग्गपण चउअदाया ॥ चउदाय पणनिसेहा, चउअणिसेह ठ कारणया ॥ ७ ॥ आवस्सय मुहणंतय, तणुपेह पणिस दोस बत्तीसा ॥ ठ गुण गुरु ठवण डुग्गह, डुछवीसरकर गुरु पणीसा ॥ ८ ॥ पय अडवन्न छठाणा, छ गुरु वयणा आसायण तित्तीसं ॥ डुविहि दुवीसदारेहिं, चउसया बाणउइठाणा ॥ ९ ॥

अर्थः—(मूलदारगाहा के०) मूलद्वारनी गाथाउ जाणवी. पहेलुं वांदणांनां (पणनाम के०) पांच नाम कहेशे, बीजुं वांदणांनां (पणाहरणा के०) पांच आहरण एटले वांदणांनां पांच उदाहरण दृष्टांत इव्य अने नावथी कहेशे, त्रीजुं वांदणां देवाने (अजुग्गपण के०) अयोग्य एवा पांच पासछादिक कहेशे, चोथुं वांदणां देवाने (जुग्गपण के०) योग्य एवा आचार्यादिक पांच कहेशे, पांचमुं जेनी पासें वांदणां न देवरावीयें एवा (चउअदाया के०) चार जण वांदणांना अदाता कहेशे, छठुं जेनी पासें वांदणां देवरावीयें एवा (चउदाय के०) चार वांदणांना दातार कहेशे, सातमुं (पणनिसेहा के०) पांच स्थानकें वांदणानो निषेध करवो एटले वांदणां न देवां ते कहेशे, आठमुं (चउअणिसेह के०) चार स्थानकें वांदणांनो अनिषेध करवो एटले चार स्थानकें वांदणां देवां ते कहेशे, नवमुं वांदणां देवानां (अठकारणया के०) आठ कारण कहेशे ॥ ७ ॥

दशमुं वांदणाने विषे (आवस्सय के०) आवश्यक साचववां,अग्यारमुं (मुहणंतय के०) मुखनंतक एटले मुहपत्तिनी पडिलेहणा करवी, बारमुं (तणुपेह के०) शरीरनी पडिलेहणा करवी ए त्रणे वानां (पणिस के०)

पच्चीश पच्चीश करवां ते कहेशे, पणिस शब्द सर्वने जोडवो. तेरमुं वांदणां देतां (दोसबत्तीसा के०) बत्रीश दोष टालवा ते कहेशे, चौदमुं वांदणा देतां (छगुण के०) छ गुण उपजे ते कहेशे, पन्नरमुं वांदणा देवामां साक्षात् गुरु न होय तेवारें सद्भाव अने असद्भाव रूप (गुरुठवण के०) गुरुनी स्थापना करवी ते कहेशे, शोलमुं वांदणा देतां (डुग्गह के०) बे अवग्रह साचववा ते कहेशे, सत्तरमुं वांदणाना सूत्रने विषे (डुछवीसरकर के०) बशेंने छवीश अक्षर छे तेमां (गुरुपणीसा के०) गुरु अक्षर पच्चीश छे ते कहेशे ८

अढारमुं वांदणानां सूत्राने विषे (पयअडवन्न के०) पद अठावन छे ते कहेशे, उंगणीशमुं वांदणां देतां शिष्यने प्रश्न पूछवालक्षण वीशामानां (छगाणा के०) छ स्थानक छे ते कहेशे, वीशमुं वांदणां देतां प्रश्नोत्तर रूप (छगुरुवयणा के०) छ गुरुनां वचन छे ते कहेशे, एकवीशमुं वांदणां देतां गुरुनी (आसायणतित्तीसं के०) तेत्रीश आशातना न करवी तेनां नाम कहेशे, बावीशमुं वांदणाने विषे (डुविहि के०) बे प्रकारनो विधि कहेशे. एम वांदणाना (डुवीसदारेहिं के०) बावीश द्वारें करीने सर्व मली (चउसयाबाणउइठाणा के०) चारसेंने बाणुं स्थानक थाय ॥ ९ ॥

अंक	मूलद्वारनां नाम.	उत्तर भेद.	शर वालो	अंक	मूलद्वारनां नाम.	उत्तर भेद.	शर वालो.
१	वंदननाम.	५	५	१२	शरीरपडिलेहण.	२५	१२०
२	दृष्टांत.	५	१०	१३	वांदणांना दोष.	३२	१५२
३	वांदवानेअयोग्य.	५	१५	१४	वांदणांना गुण.	६	१५८
४	वांदवानेयोग्य.	५	२०	१५	गुरु स्थापना.	१	१५९
५	वांदणांनाअदाता.	४	२४	१६	अवग्रह.	२	१६१
६	वांदणांनादाता.	४	२८	१७	अक्षरनी संख्या.	२२६	३८७
७	निषेधनां स्थानक.	५	३३	१८	पदनी संख्या.	५८	४४५
८	अनिषेधनांस्थानक	४	३७	१९	स्थानक.	६	४५१
९	वांदणांनां कारण.	८	४५	२०	वांदणांमांगुरुवचन.	६	४५७
१०	आवश्यक.	२५	७०	२१	गुरुनी आशातना.	३३	४९०
११	मुहपत्तिपडिलेहण.	२५	९५	२२	विधि.	२	४९२

हवे पूर्वोक्त बावीश द्वारमां पहेलुं पांच नामनुं द्वार कहे छे.

पडिदार गाहा ॥ वंदणयं चिइकम्मं, किइकम्मं विणयकम्म पूअ कम्मं ॥ गुरु वंदण पण नामा, दव्वे नावे दुहोहेणं ॥ १० ॥ दारं ॥ १ ॥

अर्थः—(पडिदारगाहा के०) प्रतिद्वारनी गाथा कहे छे. प्रथम (वंदणयं के०) वंदनकर्म ते अभिवादन स्तुति रूप जाणवुं. बीजुं (चिइकम्मं के०) चितिकर्म ते रजोहरणादि उपकरण विधि सहितपणे कुशलकर्मनुं करवुं जाणवुं. त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म ते शरीर मस्तकादिकें अवनमन करवुं. चोथुं (पूअकम्मं के०) पूजाकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने काय चेष्टा रूप जाणवुं. पांचमुं (विणयकम्म के०) विनयकर्म ते पूर्वोक्त चार प्रकारें विशेष उद्यमपणुं जाणवुं. ए (गुरुवंदण के०) गुरु वांदणांनां (पणनामा के०) पांच नाम ते वंदनानां पर्याय जाणवा. ए (दव्वेनावे के०) एक इव्यथकी वांदणां अने बीजी नावथकी वांदणां एम (डुह के०) बे प्रकारें (उहेण के०) उघेन एटले सामान्य प्रकारें जाणवां ॥ १० ॥

हवे पांच दृष्टांतोनुं बीजुं द्वार कहे छे.

सीयलय खुडुए वीर, कन्ह सेवग ङु पालए संबे ॥
पंचे ए दिठंता, किइकम्मे दव नावेहिं ॥ ११ ॥ दारं ॥ २ ॥

अर्थः—प्रथम वंदन कर्मउपर इव्यवंदन अने नाववंदन आश्रयी (सीयलय के०) शीतलाचार्यनो दृष्टांत, बीजा चितिकर्म उपर (खुडुए के०) खुल्लकाचार्यनो दृष्टांत जाणवो. त्रीजा कृतिकर्म उपर (वीरकन्ह के०) वीरा शालवीनो अने कृष्ण महाराजने दृष्टांत जाणवो. चोथा पूजाकर्म उपर (सेवग ङु के०) राजाना बे सेवकोनो दृष्टांत जाणवो. पांचमा विनयकर्म उपर (पालए संबे के०) श्रीकृष्णमहाराजना पुत्र पालक अने साम्बनो दृष्टांत जाणवो (ए के०) ए (पंचे के०) पांच (दिठंता के०) दृष्टांत ते (किइकम्मे के०) कृतिकर्म एटले वांदणाने विषे (दवनावेहिं के०) इव्य नावें करीने जाणवा ॥ ११ ॥ हवे ए पांच दृष्टांतोनी कथा कहे छे.

हस्तिणाउर नयरना वज्रसिंह राजानी सौनाग्यमंजरी राणीने शीतलनामा पुत्र हतो, अने शृंगारमंजरी नामे पुत्री हती. ते कंचनपुर नगरें विक्र

मसेन राजाने परणावी, अनुक्रमें शीतलपुत्र राजा थयो, तेणें धर्मघोष सूरि पासेंथी दीक्षा लीधी, पछी विज्ञात सिद्धांत गीतार्थ थइ, आचार्यपद पाम्या. हवे तेनी नगिनीनें चार पुत्र सकलकलामां निपुण थया जाणी तेमनी माता निरंतर पोताना पुत्र आगल नाइनी प्रशंसा करे अने कहे के धन्य कृतपुण्य पृथिवी मांहे एक तमारो मातुल ने, के जेणे राजनार गंमी दीक्षा लीधी? एवी प्रशंसा सांजली ते चारे पुत्र संवेग पणुं पाम्या. पछी स्थविर पासे दीक्षा लइ बहुश्रुत थइ गुरुने पूछी पोताना मामा शीतलाचार्यने एक पुरें आव्या सांजली तेने वांदवाने अर्थें गया. तहां जातां विकाल वेलायें गाम बाहेर एक देवलमां रह्या. मांहे पेसतां एक श्रावकने जणाव्युं के अमारा मातुलने कहेजो जे नाणेज साधु आव्या छे. हवे ते चारे नाणेजने रातें शुनध्यानथी केवलज्ञान उपज्युं. प्रनातें तेमनुं अनागमन जाणी मातुल आव्या, तेहने अनादर करता जाणी कषाय दंमकमां आवते दंमक थापी इरिया पथिका प्रतिक्रमी ड्व्यथी वंदनक कीधुं, तेवारें ते बोल्या अहो ड्व्यवंदने कषाय कंमक वधते वांद्या, परंतु नाववंदने कषायोपशांतियें वांदो, ते सांजली मामोजी बोल्या तमें केम जाण्युं? तेवारें नाणेजा बोल्या अमें अप्रतिपाती ज्ञाने करी जाण्युं. ते सांजली मामोजी मनमां विचारवा लाग्या के अहो में केवलीनी आशातना करी, एम विचारी कषायस्थानकथी निवर्त्त्या अने ते चारे केवलीने वांदवा लाग्या, अनुक्रमें चोथा केवलीने वांदतां मामाने पण केवलज्ञान उपनुं. ए शीतलाचार्यने प्रथम ड्व्यवंदन पछी नाववंदनकर्म थयुं. ए प्रथम उदाहरण॥

हवे बीजा चितिकर्म उपर कुल्लकनो दृष्टांत कहे छे. जेम एक कुल्लक नला लक्षणवालानें, आचार्यें अंत समयें पोताना पदें थाप्यो, गीतार्थ साधु पासें नणे, ते पण विशेषथी नक्ति साचवे, एकदा समयें मोहनीय कर्मना उदयथी नग्नपरिणामी थयो; पछी साधु निक्षायें गये थके बाहेर नूमिनेविषे निकल्यो पछी एक वनने विषे एक दिशें जातां थकां, तिलक, अशोक चंपकादि विविधवृक्ष तिहां हता तेम छतां एक शमी एटले खीजडीनो वृक्ष तेनुं कोइक पूजन करतो हतो ते देखी पूजक प्रत्यें पूछ्युं, के तमे ए कंटकवृक्षनें केम पूजो छो? तेणे कह्युं के अमारा वडिलोयें पूर्वे ए वृक्षोने पूज्युं छे माटे अमे पण पूजीये छैयें. ते वचन सांजलीने कुल्लकें विचार्युं जे आ

शमी एटले जांखरांना वृक्ष सरिखो हुं छुं; तेने उत्तम वृक्ष समान गुण वंत लोक पूजे छे. अने महारामां श्रमण पणुं नथी; मात्र रजोहरणादि चितिकर्मगुणे करी मुऊने पूजे छे, एम विचारी, पाछो आवी, साधुनी पासें आलोयणा लई, उजमाल थयो. एम एने पूर्वे द्रव्य चितिकर्म हतुं, पछी नावचितिकर्म उत्पन्न थयुं. ए वीजुं उदाहरण जाणवुं.

हवे त्रीजा कृतिकर्म उपर वीरो शालवी अने श्रीकृष्णनुं उदाहरण कहे छे. श्रीनेमिनाथ नगवान् द्वारिकायें समोसख्या तेवारें श्रीकृष्णें सर्वसाधुउने द्वादशावर्त वांदणे वांद्या, एने नावकृतिकर्म कहीयें, अने श्रीकृष्णने रुडुं मनववानें अर्थे वीरा शालवीयें पण वांद्या एने द्रव्यकृतिकर्म कहीयें. एना संबंधनो विस्तार आवश्यकवृत्तिथी जाणवो. ए त्रीजुं उदाहरण जाणवुं.

हवे चोथा पूजाकर्म उपर बे सेवकनो दृष्टांत कहे छे. जेम एक राजाना बे सेवक हता ते गामनी सीमा निमित्तें विवाद करता राजपंथें जातां हता, मार्गमां साधु देखीने प्रशस्त मन, वचन अनें कायायें करी एकें कह्युं के "साधौ दृष्टे ध्रुवासिद्धिः" एटले साधु दीठे छतें निश्चयें कार्यसिद्धि थाय, एमां संशय नथी, एम कही एकाग्र चित्तें साधुने वांद्या. अने बीजे सेवकें उलटी हांसी रूपें व्यवहार मात्रें तेने अवनमन कर्युं, पछी राजद्वारें गये थके पहेला सेवकनो जय थयो, अने बीजानो पराजय थयो एम एकनें द्रव्यथी पूजाकर्म अने बीजानें नावथी पूजाकर्म थयुं; ए चोथुं उदाहरण.

हवे पांचमा विनयकर्मने विषे पालक अनव्य अने सांबनो दृष्टांत कहे छे. श्रीनेमिनाथ नगवान् द्वारिका नगरीयें समोसख्या, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या के जे श्रीनेमीश्वर नगवाननें सर्वथी पहेलुं जई वंदन करशे, तेने महारो पट्ट तुरंगम विशेष आपीश, ते सांनली तुरंगमने लोनें प्रथम रात्रि छतां पण पालकें आवीने वांद्या, ते द्रव्यथकी वंदन जाणवुं. अने त्यां सांब कुमारें नावथकी वांद्या छे, ते नाववंदन जाणवुं. ए पांचमुं उदाहरण कह्युं. ए पांच दृष्टांतनुं बीजुं द्वार थयुं, उत्तर बोल दश थया ॥ ११ ॥

हवे पासबादिक पांच अवंदनिकनुं त्रीजुं द्वार कहे छे.

पासत्थो उस्सन्नो, कुसील संसत्तउ अहा छंदो ॥ दुग दुग ति दुगणेग विहा, अवंदणिज्जा जिण मयंमि ॥१२॥दारं॥३॥

अर्थः—जे ज्ञान,दर्शन अने चारित्रनी पासे रहे ते प्रथम (पासबो के०) पासबो जाणवो तथा जे साधु सामाचारीने विषे प्रमाद करे ते बीजो (उस्सन्नो के०) उस्सन्नो जाणवो. तथा जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी विराधना करे ते त्रीजो (कुसील के०) कुशीलउ जाणवो तथा जे वैरागी मले तो तेनी साथें पोते पण वैरागी जेवो बनी बेसे अने जो अनाचारी मले तो तेनी साथें पोते पण अनाचारी बनी बेसे ते चोथो (संसत्तउ के०) संसक्त जाणवो तथा जे श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा विना पोतानी इबायें प्रवर्त्ते, पोतानी इबायें प्ररूपणा करे ते पांचमो (अहाढंदो के०) यथाढंदो जाणवो ए पोताने ढंदे प्रवर्त्ते माटे एने ढंदो कहीयें. तिहां एक देशथी बीजो सर्वथी मली (डुग के०) बे जेद पासबाना, तथा एक देशथी बीजो सर्वथी मली (डुग के०) बे जेद उस्सन्नाना, तथा ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील अने चारित्रकुशील मली (ति के०) त्रणजेद कुशीलीयाना, तथा संक्लिष्ट चित्त अने असंक्लिष्ट चित्त मली (डुग के०) बे जेद संसक्तना, तथा (अणेगविहा के०) अनेक प्रकार, ढंदाना जाणवा, एटले यथाढंदा अनेक जेदना थाय ढे ए पासबादिक पांच जे कह्या ते (जिणमयंमि के०) श्रीजिनमतने विषे (अवंदणिज्जा के०) अवंदनीय जाणवा ॥ १२ ॥

हवे ए पांचेनुं कांइक विशेष स्वरूप लखीयें ढेयें. तिहां मिथ्यात्वादिक बंध हेतुरूप पास तेने विषे जे रहे, तेने पासबो कहीयें. अथवा ज्ञानादिकनें पोतानी पासें करी मिथ्यात्वादिक पासमां रहे एटले ज्ञानादिकने पासें राखे पण सेवे नही, अथवा पासनी परें पोतानुं पासुं मलिन राखे ते पासबो कहीयें. तेना बे जेद ढेः—एक देशपासबो अने बीजो सर्वपासबो. तेमां जे कारणविना शय्यातर पिंड, अन्याहृत एटले साहामो आण्यो पिंड, राज्यपिंड, नित्यपिंड अने अग्रपिंडादिक जुंजे तथा गाम, देश, कुल श्रावकनी ममता मांडे, जेम के "आ महारा वासित जाव्या ढे" ते कुलादिकनी निश्रायें विचरे, तथा गुर्वादिकने जे विशेष जक्तियोग्य रहस्यजूत थापना कुल ढे, ते कुलमांहे निष्कारणे प्रवेश करे, तथा "नित्यप्रत्यें तमने एटलुं देइशुं तमे नित्य आवजो" एवी रीतनी जे निमंत्रणा करे तेनी पासें ते पिंड लीये तेने नित्य पिंड कहिये. तथा जाजन मांहेथी वापस्या विना उदन जक्तादिकनी शिखा उपरितन जाग लक्षण लीये ते

ने अग्रपिंम कहियें. केटलाएक एम कहे ले के कारण विना प्रधान सरस आहार लीये तेनें अग्रपिंम कहियें. तथा बेतालीश दोष आहारना न राखे, वारंवार आहार लीये तथा जमणवार, विवाह अने प्राहुणामां शिखंमि जोतो फरे, आहारनी लालचें मुखें कहे. तिहां निमित्त दोष न होय, सूजतो होय ते माटे. तथा सूर्य आथमता उगताथी मांमी जमे,मांम लीये आहार न करे, सन्निधि राखे, पोतानी निश्रायें औषधादिक अलगुं गृहस्थने घरे मूकावे, इव्यादिक सहित विचरे, तथा ज्ञानइव्यादिक मिषें करी स्वनिश्रायें ज्ञानादि नंमारनां नाम लेई, पुस्तकादि संग्रहे, इव्यादि सहित विचरे,मुखें कहे अमें निर्ग्रंथ लैयें पूर्व साधु समान गर्व राखे. इत्यादिक अनेक प्रकारें साधु लक्षणथी विपरीत होय ते देश पासलो जाणवो.

तथा जे सर्वथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी अलगो रहे, केवल लिंगधारी, वेषविमंबक, गृहस्थाचार धारी होय, ते सर्वथी पासलो जाणवो.

बीजो जे क्रियामार्गने विषे शिथिलता करे, अथवा खेद पामे तेने उस्सन्नो कहीयें; तेना बे नेद ले. एक देशथी अवसन्नो अने बीजो सर्वथी अवसन्नो. तिहां जे आवश्यक,प्रतिक्रमण,देववंदनादि,सज्जाय ते पठन पाठनादि, पडिलेहण, मुखवस्त्रिका, वस्त्रपात्रादि, निक्षा ते गोचरी कालादि, ध्यान ते धर्मध्यानादि, अनक्तार्थ ते तप नियम अनिग्रहादि, आगमन ते बाहेरथी उपाश्रयमां प्रवेशलक्षण, निसिहिया ते पगपूंजवादि, निर्गमन ते प्रयोजनविना उपाश्रयथी बाहेर निकलवा लक्षण, स्थान ते कायोत्सर्गादि, निषीदन ते बेसवुं, तुयट्टण ते लग्वर्तन एटले शयन इत्यादिक, दशविध चक्रवाल साधु सामाचारी, तथा उघ पद विनाग सामाचारी प्रमुख विधि संयुक्त न करे, अथवा उली अधिकी करे अथवा कषाय कंमक सहित करे, अथवा राजवेठनी परें करे नय मानीने करे, तथा गुर्वादिकना वचन सांनले, डुमणो थइने वचन खंमन करे, आक्रोश करे, इत्यादिक लक्षणें करी देश अवसन्नो जाणवो.

अने सर्वथकी अवसन्नो तो चोमासा विना शेषकालें पाट, बाजोठ, निष्कारण संथारे सेवे, स्थापना पिंम जमे, संथारो पाथस्यो राखे, प्रानृतिकादि दोष जमे. इत्यादिक लक्षणें सर्व अवसन्नो जाणवो.

त्रीजो जेनुं कुत्सित, निंदनीय मांठुं शील एटलें आचार होय, तेने कु

शीन कहीयें. तेना त्रण नेद छे. ज्ञानकुशीन, दर्शनकुशीन, अने चारित्रकुशीन, तिहां ज्ञानकुशीन ते अकान, अविनय, अबहुमान, गुरुनिन्हवता, योग उपधान हीन, सूत्र, अर्थ अने तडुनय हीन, इत्यादिक आशातनायुक्त थको ज्ञान नणे तथा आजीविकाहेतें पठन पाठन संजलावबुं, लखवुं, लखाववुं, नंमार कराववा, नंदी समारचनादि स्वार्थना उपदेश देवा, तथा आजीविका हेतें धर्मकथा कहे, नणे,घरघर धर्म संजलाववा जाय, पोताना थवाने हेतें स्त्रीबालकादिकने नणावे, अनेरा ज्ञानना नंमार उलवे ज्ञानने उलवे, लखवां लखाववां, क्रयविक्रय पुस्तकादिकोनो करे, करावे, इत्यादिक लक्षणे ज्ञानकुशीन जाणवो.

बीजो दर्शनकुशीन ते शंका कांक्षा विचिकित्सा व्यापन्न, दर्शननिन्हव अहाछंदा, कुशीलिया वेषविडंबनादिक साथें परिचय करे, एटले तेनी साथे आलाप संलाप पठनादि करे ते दर्शनकुशीन जाणवो.

त्रीजो चारित्रकुशीन ते ज्योतिष. निमित्त, अक्षरकर्म, यंत्र, मंत्र, नूतकर्म, बलिपिंम, उच्चाटणी, दानादि, सौनाग्य दौर्नाग्यकारी, जडी, मूली, विद्यारोहणादिक, पादलेप, आंख अंजन, चूर्ण, स्वप्नविद्या, चिपुटीदान प्रमुख, अतीत अनागत वर्त्तमान निमित्तकथन, पोतानी जाति कुल विज्ञानादिक स्वार्थकार्यें प्रकाश करे, नख,केश, शरीर, शोना करे,वस्त्र पात्र दंमादिक बहुमूल्यवाला सुंदर सुकोमलनी वांछा करे, शिष्यादिक परिग्रहनी विशेष तीव्रता धरे, निष्कारण अपवाद पद सदूषण मार्ग प्रकाशे, तथा सेवे, इत्यादिक लक्षणें चारित्रकुशीन जाणवो.

चोथो संसक्त, ते पासछा अथवा संविज्ञादिक जन जेवानी साथें मले त्यां तेवो थई प्रवर्त्ते, अथवा मूलोत्तर गुण दोष सर्व एकठा प्रवर्त्तावे, जेम गायनी आगल सुंमलो मूक्यो होय तेमां सरस, नीरस, कपाशिया, खोल, घृत, डुग्धादिक एकठुं मेल्युं होय तो ते सर्वने एकठांज खाई जाय पण तेनुं विवेचन न करे. तेम ए पण गुण अने दोष सर्वने एकठा प्रवर्त्तावी देखाडे तेने संसक्तो कहीयें, ते एक संक्लिष्टचित्त संसक्तो अने बीजो असंक्लिष्टचित्तसंसक्तो एवा बे नेदें जाणवो.

तिहां जे प्राणातिपातादिक पांच आश्रवनो सेवनार, ऋद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव ए त्रण गारवें करी सहित, स्त्रीगृहादिक सेवनने

विषे प्रसक्त, अपध्यानशील, परगुणमत्सरी, इत्यादि गुण युक्त ते संक्लिष्ट चित्त संसक्तो जाणवो. तथा पोताना आत्माने जेवारें जेवो प्रसंग मले ते वारें तेवो थाय एटले प्रीयधर्मी साधु मले तेवारें साधुना आचार पाले अने अप्रियधर्मी पासत्थो मले तेवारें तेवो थाय लिंबूना पाणीनी पेरें त द्रूप थइ जाय ते असंक्लिष्टचित्तसंसक्तो जाणवो इति ॥

पांचमो यथाछंदो ते यथा रुचियें प्रवर्त्ते, यथा तथा लवे, उत्सूत्र नाषे, पोताना स्वार्थना उपदेश आपे, स्वमति विकल्पित करे, परजातिने विषे प्रवर्त्ते, पारकी तांत करे, उपकारी धर्माचार्यादिकनी हेलना करे, आचार्य उपाध्यायना अवर्णवाद बोले, जेनाथी ज्ञानादिक पामे तेवा बहुश्रुत नी निंदा करे, गारव प्रतिबंधि होय, कारणविना विगय खाय, इत्यादिक अनेक नेदें यथाछंदो जाणवो. ए पांचेनां विशेष लक्षण श्रीप्रवचनसारो द्धारवृत्ति तथा आवश्यकवृत्ति तथा उपदेशमालावृत्ति प्रमुख ग्रंथोथी जा णवा. ए पांचेनें अवंदनीय जाणवा. एमने वांदवाथी कर्मनिर्जरा न थाय, केवल क्लेश अनें कर्मबंध उपजे तथापि ए कहेलां लक्षणवालो जो ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना सहाय कारणे सेव्यो होय तो वंदनीय जाण वो. जे माटे श्रीआगममांहे कह्युं छे के पासत्थादिक चारित्रना असंनवी होय पण दर्शनना असंनवी न होय ते कारणे ते सेव्य जाणवो पण इ हां तो चारित्रीयो वंदनीय कह्यो छे ते अधिकार माटे चारित्रवंत ते वं द्य छे अन्यथा जो अचारित्रीयाने वंद्य कहीयें तो जेटला तेना प्रमादनां स्थानक छे ते सर्व अनुमोदनीय थाय तेथी तेनें वांदतो थको प्रवचन बाधाकारी थाय. ए रीतें वांदणा देवाने पासत्थादिक पांच अयोग्य तेमनुं त्रीजुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल पन्नर यथा ॥ १२ ॥

हवे पांच वांदवाने योग्य तेमनुं चोथुं द्वार कहे छे.

आयरिअ उवझाए, पवत्ति थेरे तहेव रायणिए ॥ किइ
कम्मनिज्जरठा, कायव मिमेसि पंचन्हं ॥ १३ ॥ दारं ॥ ४ ॥

अर्थः—पहेला ज्ञानादिक पांच आचारें करी युक्त ते (आयरिय के०) श्रीआचार्य कहीयें, बीजा (उवझाए के०) श्रीउपाध्यायजी, त्रीजा जे तप संयमने विषे प्रवर्त्तावे, गछनी चिंता करे ते (पवत्ति के०) प्रवर्त्तक

कहीयें, चोथा जे चारित्रथी पडता होय तेनें प्रतिबोध आपीने पाछा ठेकाणें आणे तेने (थेरे के०) थिविर कहीयें (तहेव के०) तथैव एट ले तेमज वली पांचमा गछने अर्थे क्षेत्र जोवा माटे विहार करे, सूत्र अर्थना जाण तेने (रायणिए के०) रत्नाधिक गणाधिप कहीयें, (इमे सिपंचन्हं के०) ए कह्या जे आचार्यादिक पांच जण तेने (किइकम्मं के०) कृतिकर्म एटले वांदणानुं कर्म (कायवं के०) करवुं एटले वांदणा दें वां ते केवल (निक्करछा के०) कर्मनिर्जराने अर्थे जाणवुं ॥ १३ ॥ ए आचार्यादिक पांचनुं कांइक विशेष स्वरूप नीचें लखीयें छैयें.

आचार्य ते सूत्र अने अर्थ उनयना वेत्ता, प्रशस्त समस्त लक्षणें लक्षि त, प्रतिरूपादि गुणयुक्त शरीर होय, जाति कुल गांनीर्य धैर्यादि अनेक गुणमणियुक्त, आठ प्रकारनी गणिसंपदायेंकरी युक्त, पंचाचार पालक, पलाववाने समर्थ. छत्रीश छत्रीशी गुणें करी बिराजमान, आर्य पुरु षें सेववा योग्य, गछमूलस्तंनजूत गछचिंतारहित अर्थनाषी, एटले जेमां गछचिंता न उपजे एवा अर्थ नाषे एवा गुण युक्त ते आचार्य जाणवा.

तथा उपाध्याय ते जेनी पासें अगीआर अंग,बार उपांग,चरणसित्तरी, करणसित्तरी नणीयें, आचार्यने युवराज समान, ज्ञान,दर्शन अने चारित्र रूप रत्नत्रयी युक्त,सूत्र अर्थना जाण, आचार्यने हितचिंतक,ते उपाध्याय.

तथा प्रवर्त्तक ते यथोचित प्रशस्त योग जे तप संयम तेने विषे साधुसमुदा यनें प्रवर्त्तावे,गछने योगक्षेम करवानी योग्यतानी संनालना करनार जाणवा.

तथा थिविर ते ज्ञानादिक गुणोने विषे सीदाता साधुने इहलोक तथा परलोकना अपाय दृष्टांत देखाडी संयममार्गमां स्थिर करे, ते स्थविर त्रण प्रकारें छे. एक शाठवर्षना ते वयःस्थविर, बीजा वीश वरसदीक्षा प र्याय जेने थया होय ते पर्याय स्थविर, त्रीजा जे निसिछादिक छेदग्रं थना रहस्य जाणे, जघन्यथी समवायांगादि श्रुत जाणे, ते श्रुत स्थविर पण इहांतो जेने आचार्यादिकें स्थविर कीधा होय ते स्थविर जाणवा.

तथा रत्नाधिक ते गछनें कार्यें शिष्य उपधि प्रमुख लाननें अर्थे विहारक रणशील सूत्रार्थवेत्ता एनुं गणावछेदक एवुं पण नाम कहीयें एवा गुणवंत ते पर्यायें ज्येष्ठ अथवा लघु होय तो पण तेने रत्नाधिक कहीयें. एटले पां च वंदनिकनुं चोथुं द्वार थयुं. उत्तर बोल वीश थया ॥

हवे चार जण पासें वांदणां न देवराववां तेनुं पांचमुं द्वार तथा चार जण पासें प्रायें वांदणां देवराववा तेनुं ठहुं द्वार ए बे द्वार साथें कहे ठे.

माय पिअ जिठ नाया, अनमावि तहेव सव्व रायणिए ॥ किइकम्म न कारिज्जा, चउसमणाई कुणंति पुणो ॥१४॥ दारं ॥५॥६॥

अर्थः—एक (माय के०) पोतानी माता, बीजो (पिअ के०) पोतानो पिता, त्रीजो (जिठनाया के०) पोतानो ज्येष्ठ नाइ एटले महोटो नाइ, चोथो (अनमावि के०) वयादिकें लघु होय एटले वय प्रमुखें तो यद्यपि पोताथी न्हानो होय तो पण (तहेव के०) तेमज ए त्रणेनी परें ते (सव्वरायणिए के०) सर्वरत्नाधिक एटले सघला पर्यायें करी ज्येष्ठ होय ज्ञान, दर्शन अने चारित्रें करी अधिक होय ए चारनी पासें प्रायें (किइकम्म के०) वांदणां देवराववानुं (न कारिज्जा के०) न करावे ए विधि साधुने जाणवो. अने गृहस्थ पासें तो वंदन देवरावे. ए पांचमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल चोवीश थया ॥

तथा (चउसमणाई के०) चार श्रमणादिक एटले साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चार जण ते कृतिकर्मने (पुणो के०) वली (कुणंति के०) करे एटले ए चार जन वांदणा आपे. ए ठहुं वांदणा देवा योग्य चार जण तेनुं द्वार थयुं. उत्तर बोल अठावीश थया ॥ १४ ॥

हवे पांच स्थानकें वांदणां न देवां तेनुं सातमुं द्वार कहे ठे.

विक्खित्त पराहुत्ते, पमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा ॥ आहारं नीहारं, कुणमाणे काउ कामे अ ॥१५॥ दारं ॥ ७ ॥

अर्थः— एक (विक्खित्त के०) विक्षिप्त गुरुथके एटले जेवारें धर्मकथा करवामां व्यग्रचित्त होय, बीजो कार्यादिकें करीने (पराहुत्ते के०) पराङ्मुख होय एटले संमुख बेठा न होय पण उपरांठा बेठा होय, त्रीजुं (पमत्ते के०) प्रमादी थका होय एटले क्रोधादिकें अथवा संथारवादिकें प्रमाद सेवता होय, निद्रालु थका होय, चोथुं (आहारं के०) आहार पांचमुं (नीहारं के०) नीहार एटले लघुनीति अथवा वडी नीति प्रत्यें (कुणमाणे के०) करता होय, अथवा (काउ के०) करवानी (कामे के०) कामना एटले वांठना करता होय (अ के०) वली करवा

जता होय एटले स्थानके (कयाइ के०) किंवारे पण गुरुने (मा वंदिज्जा के०) वांदवा. नही. आहीं माशब्द निषेधवाचक ले ॥ १५ ॥ ए सातमुं द्वार थयुं. उत्तरबोल तेत्रीश थया ॥

हवे चार स्थानकें वांदणां देवां तेनुं आठमुं द्वार कहे ले.

पसंते आसणत्थे अ, उवसंते उवठ्ठिए ॥ अणुन्नवित्तु मेहावी, किइकम्मं पउंजई ॥ १६ ॥ दारं ॥ ८ ॥

अर्थः—एक (पसंते के०) प्रशांतचित्त व्याक्षेपरहित गुरु होय, बीजुं (आसणत्थे के०) आसनस्थ एटले पोताने आसने बेठा होय, (अ के०) वली त्रीजुं (उवसंते के०) उपशांतचित्त एटले क्रोधादिकें रहित होय, चोथुं (उवठ्ठिए के०) उपस्थित होय एटले छंदेण इत्यादिक कहेवाने संमुख उजमाल थया होय, एवा गुरुआदिकने वांदणा देवानी (अणुन्नवि के०) अनुज्ञा मागीने (तु के०) वली वांदणा देवाना विधिना जाण एवा (मेहावी के०) मेधावी एटले पंमितजनो ते (किइकम्मं के०) कृतिकर्म एटले वांदणां देवा प्रत्यें (पउंजई के०) प्रयुंजे एटले उद्यम करे ॥ १६ ॥ ए आठमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल साडत्रीश थया ॥

हवे आठ कारणे वांदणां देवां तेनुं नवमुं द्वार कहे ले.

पडिक्कमणे सज्झाए, काउस्सग्गे वराह पाहुणए ॥ आलोयणसंवरणे, उत्तमट्ठे य वंदणयं ॥ १७ ॥ दारं ॥ ९ ॥

अर्थः—एक (पडिक्कमणे के०) प्रतिक्रमणने विषे सामान्य प्रकारें वांदणां देवाय, बीजा (सज्झाए के०) स्वाध्यायवाचनादि लक्षण तथा सज्झाय पढाववाने विषे विधिवांदणां देवाय, त्रीजा (काउस्सग्ग के०) पच्चरकाण करवाना कायोत्सर्गने विषे एटले आचाम्लादि योगादि पारणे परिमितविगय विसर्ज्जमणी विगयपरिभोगनी आज्ञा रूपें वांदणां देवाय, चोथा (अवराह के०) अपराध एटले गुरुनो विनय उलंघवा रूप पोतानो अपराध खमावतां वांदणां देवाय, पांचमा (पाहुणए के०) प्राहुणो महोटो यति आवे तेवारें तेमने वांदणां देवाय एटले महोटाना समागमने वांदणां देवाय. छठा गुरुनी पासें (आलोयण के०) आलोचना लेवानेअर्थें एटले अलोचना विहारादि समाचारी पदभिन्न हुंते थके वांद

णां देवाय, सातमा पच्चरकांण करतां अथवा मासखमणादिक विशेष तप रूप (संवरणे के०) संवरने विषे वांदणां देवाय आठमा (उत्तमट्ठे के०) उत्तमार्थें एटले अंतसमये अनशन करवाने विषे संलेषणाने विषे (य के०) वली वांदणां देवाय, अथवा वांदवुं थाय. ए आठ कारणे (वंदणयं के०) वांदणां देवाय, तेनुं नवमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल पिस्तालीश थया ॥ १७ ॥

हवे अवश्य सांचववा माटे आवश्यक कहीयें, ते वांदणा देतां पच्चीश आवश्यक सचवाय, तेनुं दशमुं द्वार कहे छे.

दोवणयं महाजाय, आवत्ता बार चउसिरतिगुत्तं ॥
डुपवेसिग निरकमणं, पणवीसावसय किइकम्मे ॥१८॥

अर्थः–(दोवणयं के०) वे अवनत वांदणाने विषे जाणवा एटले बे वार उपरितन शरीर नाग नमाडवो तिहां एकतो जेवारें " इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए" एम कहीने नमे तेवारें छंदेणनी अणुजाणह एटले आज्ञा मागतो शरीरनो उपरितन नाग नमाडे त्यारे गुरु छंदेण कहे. ए एक अवनत थयुं, एम बीजी वार वांदणा देतां बीजो अवनत थाय ए बे अवनत रूप बे आवश्यक थयां.

तथा (.अहाजाय के०) एक यथाजात एटले जे रूपें दीक्षानो जन्म थयो हतो अर्थात् रजोहरण, मुहपत्ति चोलपट्टमात्रपणे श्रमण थयो हतो तेटलाज नेला थई हाथ जोडे अथवा योनिथी बालक निकलते जेम रचितकर संपुट होय तेम करसंपुट कस्या हाथ जोडेलाने ललाटे लगाडे ते यथाजात कहीयें एम बे अवनत अने त्रीजुं यथाजात मली त्रण आवश्यक थयां.

हवे शरीरना व्यापार रूप (बार के०) बार (आवत्ता के०) आवर्त्त सूत्राजिधान गर्जित कायव्यापारविशेष जाणवां. तेमां प्रथम वांदणे छ आवर्त्त थाय, ते आवी रीतेंः–प्रथम त्रण आवर्त्त तो " अहो " " कायं " " काय " ए बे बे अक्षरें नीपजे एटले पोताना हाथनां तलां बे उंधा गुरु चरणे लगाडे तथा उत्तान हाथें पोतानो ललाटदेश फरसे अने " १ अहो २ कायं ३ काय संफासं " कहेतो मस्तक नमाडे तेवार पछी " खमणिज्जोथी मांमीने वइक्कंतो " पर्यंत यावत् कर संपुटे कहीने वली त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना कहे तेमां एक अक्षर गुरुचरणे हाथ

लगाडतां कहे,बीजो अक्षर उत्तान हाथे वचाले विशामा रूप कहे अने त्रीजो अक्षर ललाटदेशे हाथ लगाडतां कहे, जेम " ज त्ता जे " " ज व णि " " ज्जं च जे " एवा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना कहेतो खामेमि खमासमणो कही बीजी वार मस्तक नमाडे. ए रीतें ए प्रथम वांदणे ठ आवर्त्त थयां तेम वली बीजे वांदणे पण एज रीतें ठ आवर्त्त थाय, बे वार मली बार आवर्त्त रूप बार आवश्यक थाय. सर्वं मली पंदर थयां.

तथा (चउसिर के०) चतुःशिरः एटले चार वार शिर नमाडवुं तिहां पहेले वांदणे बे वार मस्तक नमाडवुं अने बीजे वांदणे पण बे वार मस्तक नमाडवुं मली चार वार शिर नमन थाय. एवं उगणीश आवश्यक थयां.

तथा (तिगुत्तं के०) त्रण गुप्ति ते मन, वचन अने काया ए त्रणने अन्यव्यापारथी गोपवी राखे ए त्रणने ड्व्यथी तथा जावथी अयत्नायें न प्रवर्त्तावे, एवं बावीश आवश्यक थयां.

तथा (डुपवेस के०) द्विप्रवेश एटले बे वार आवश्यकें बे वार गुरुनी आज्ञा मागी अवग्रहमांहे प्रवेश करवा रूप बे आवश्यक अने (इग निरकमणं के०) एक वार अवग्रहथी बाहेर निकले एटले पहेले वांदणे आज्ञा मागी निसीहि कहेतो पग पूंजतो थको एकवार अवग्रह मांहे प्रवेश करे अने पठी आवस्सियाए कहेतो पाठल पूंजतो एकवार पहेले वांदणे अवग्रहथी बाहेर निकले, अने बीजा वांदणामां प्रवेश करे पण फरी पाठो बाहेर निकले नही माटे बे वार पेसवुं अने एकवार निकलवुं मली त्रण आवश्यक थयां ते पूर्वोक्त.बावीश साथे मेलवतां (पणवीसा के०) पच्चीस (आवसय के०) आवश्यक ते (किइकम्मे के०) कृतिकर्म एटले वांदणांने विषे थाय ॥ १७ ॥

किइ कम्मंपि कुणंतो, न होइ किइकम्म निज्जरा जागी ॥
पणवीसामन्नयरं,साहु ठाणं विराहंतो ॥१९॥ दारं॥ १०॥

अर्थः—हवे ए (पणवीसां के०) पच्चीश आवश्यक जे ठे, तेमां (अन्नयरं के०) अनेरुं एक पण (ठाणं के०) स्थानक प्रत्यें (विराहंतो के०) विराधतो एवो जे (साहु के०) साधु तेमज साधवी,श्रावक,श्राविका होय, ते (किइकम्मंपिकुणंतो के०) कृतिकर्मने करतो ठतो पण एटले वांदणां

देतो छतो पण (किइकम्म के०) कृतिकर्म थकी जे कर्मपरिशाटनरूप (नि ज्जरा के०) निर्ज्जरा थाय तेनो (नागी के०) संविज्ञागी (न होइ के०) न थाय एटले ते वांदणांनुं जे निर्ज्जरारूप फल, ते न पामे ॥ १९ ॥ ए दशमुं द्वार थयुं उत्तर बोल सित्तेर थया ॥

यंत्र स्थापना.

अवनत नमवुं.	यथाजात मुद्रा.	आवर्त्त.	शिरो नमन.	गुप्ति.	प्रवेश.	निकलवुं.
२	१	१२	४	३	२	१

हवे मुहपत्तिनी पच्चीश पडिलेहणानुं अगीआरमुं द्वार कहे छे.

दिठि पडिलेह एगा, छ उद्धपप्फोडतिग ति अंतरिआ ॥
अरकोड पमज्जणया, नवनव मुहपत्ति पणवीसा ॥ २० ॥

अर्थः—प्रथम मुहपत्तिने पहेले पासें सूत्र अने बीजे पासें अर्थ तेनुं तत्त्व, सम्यक् प्रकारें हृदयने विषे धरुं एम चिंतवीने मुहपत्ति उखेली तेना बेहु पासां सर्वत्र दृष्टियें करी जोवां ते (दिठिपडिलेह के०) दृष्टि पडिले हणा (एगा के०) एक जाणवी. तेवार पछी (छ के०) छ (उद्धपप्फोड के०) उंचा पखोडा करवा एटले मुहपत्तिने फेरवी बे हाथें साहीने एकेका हाथें नचाववा रूप त्रण त्रण उंचा पखोडा करवा तिहां माबे हाथें करतां स म्यक्त्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने मिथ्यात्व मोहनीय ए त्रण मोहनीय परिहरुं एम चिंतवीयें तथा जमणे हाथें करतां कामराग, स्नेहराग अने दृष्टिराग ए त्रण राग परिहरुं एम चिंतवीयें ए छ खंखेरवा रूप छ पडिले हणा थइ तेनी साथें प्रथमनी एक दृष्टि पडिलहणा मेलवीयें तेवारें सात थाय.

तेवार पछी (तिग के०) त्रण (अरकोड के०) अरकोडा अने (ति के०) त्रण (पमज्जणया के०) प्रमार्ज्जना एटले पूंजवुं ते अनुक्रमे एक बीजा केडे त्रणवार (अंतरिआ के०) एकेकने अंतरे करवा एटले मुहपत्तियें एक पड वाली मुहपत्तिना त्रण वधूटक करी जमणा हाथनी अंगुलीना आंतरानी वचमां नरावीने त्रण अरकोडा पसली नरीयें त्रणवार मुह पत्ति उंची राखी माबा हाथना तलाने अण लागते खंखेरीयें पण हाथने तले लगाडीयें नही पछी त्रण प्रमार्ज्जना पशली मांहेथी घसी काढा

डीयें एम एकेकने आंतरें त्रणवार त्रण त्रण अरकोडा करवा अने त्रणवार त्रण प्रमार्ज्जना करबी एवीरीतें त्रणवार करतां (नव के०) नव अरकोडा खंखेरवा रूप थाय अने (नव के०) नव परकोडा प्रमार्ज्जना एटले पूंजवा रूप थाय मली अढार पडिलेहणा थाय तेनी साथें पूर्वोक्त सात मेलवीयें तेवारें सर्व मली (मुहपत्ति के०) मुहपत्तिनी पडिलेहणा (पणवीसा के०) पच्चीश थाय ॥ २० ॥ हवें अढार पडिलेहणा करता एकेका त्रिकें शुंशुं मनमां चिंतवियें ? ते कहे ले.

पहेला त्रण अरकोडामां सुदेव,सुगुरु अने सुधर्म ए त्रण तत्त्व आदरुं, पली त्रण प्रमार्ज्जनामां कुदेव कुगुरु अने कुधर्म ए त्रण परिहरुं, बीजा त्रण अरकोडामां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण आदरुं, पली त्रण प्रमार्ज्जनामां ज्ञानविराधना दर्शनविराधना अने चारित्रविराधना ए त्रण परिहरुं, त्रीजा त्रण अरकोडामां मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्ति आदरुं,पली त्रण प्रमार्ज्जनामां मनदंम, वचनदंम अने कायदंम ए त्रण दंम परिहरुं,एवी रीतें मनमां चिंतववुं ए क्रिया करवानी मुहपत्ति एक वेंतने चार अंगुल आत्म प्रमाणनी जोइयें अने रजोहरण तथा चरवलो बत्रीश अंगुलनो जोइयें तेमां चोवीश आंगुलनी दांमी अने आठ आंगुलनी दशी जोइयें अथवा न्यूनाधिक करी होय तोपण सरवाले बत्रीश अंगुल जोइयें ए पच्चीश पडिलेहणा स्त्री पुरुष बेहुयें करवी. ए अगीआरमुं द्वार थयुं अने उत्तर बोल पच्चाणुं थया ॥

हवे शरीरनी पच्चीश पडिलेहणानुं बारमुं द्वार कहे ले.

पायाहिणेण तिअ तिअ, वामेअर बाहु सीस मुह हिय
ए ॥ अंसुट्ठाहो पिठे, चउ लप्पय देह पणवीसा ॥ २१ ॥

अर्थः—(पायाहिणेण के०) प्रदक्षिणायें एटले प्रदक्षिणावर्त्तें करी एक (वाम के०) मावी (बाहु के०) बाहुयें अने बीजुं (इअर के०) इतर ते जमणी बाहुयें तथा त्रीजुं (सीस के०) मस्तकें, चोथुं (मुह के०) मुखें अने पांचमुं (हियए के०) हीयाने विषे ए पांच गमे (तिअतिअ के०) त्रण त्रण वार पडिलेहणा करवी एटले मुहपत्तिने वधूटकनी पेरे ग्रहण करीने वामभुजादिक पांच स्थानके फेरववी तेवारे पन्नर पडिलेहण थाय, अने (अं

सुक्काहो के०) अंसुट्ट एटले बे खंजानी उपर अने ते बे खंजानी अहो एट ले नीचे काखमां (पिठे के०) पिठ एटले वांसानी बाजुयें (चउ के०) चार पडिलेहण करवी एटले बे खंजा उपर अने बे काखने विषे एमज (ब प्पय के०) ब पडिलेहण बे पगनी उपर करवी तेमां त्रण वाम पगे अने त्रण दक्षिण पगे करता ब थाय एवी रीतें सर्व मली (देह के०) शरीरनी पडिलेहणा (पणवीसा के०) पच्चीश थाय ॥ २१ ॥

इहां यद्यपि श्रीआवश्यक वृत्ति तथा प्रवचनसारोद्धारादिकें पडिलेहणा नो विशेष विचार कह्यो नथी पण इहां परंपराथी संप्रदाय समाचारीयें स्त्रीनुं शरीर वस्त्रें आवृत होय माटे एने शरीरनी पडिलेहणा पच्चीशमां थी त्रण मस्तकनी,त्रण हृदयनी अने बे पासाना खंजानी चार,एवं दश प डिलेहणा न होय शेष पन्नर होय तथा वली साध्वीनें तो उघाडे माथे क्रि या करवानो व्यवहार छे माटे तेने मस्तकनी त्रण पडिलेहणा होय शेष सात न होय बाकी अढार पडिलेहणा होय.

ए पडिलेहणा जे छे ते यद्यपि जीव रक्षानी कारण नूत नव्य जीवनें छे एम तीर्थंकरनी आज्ञा छे तो पण मन रूप मांकडाने नियंत्रवा सारु बोल धारीयें ते यद्यपि आवश्यकवृत्ति तथा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथे कह्युं नथी तोपण अल्पमतिने मन स्थिर राखवा माटे "सुत्तब तत्तदिहि" इत्यादि पांच गाथानुं कुलक कह्युं छे, ते इहां वांदणामां अधिकार नथी तोपण ते पांच गाथानो अर्थ लखीयें छैये.

जमणा फेरथी मुहपत्तिने वधूटकनी पेरे ग्रहण करीने पडिलेहण क रीयें ते कहे छे. डाबा हाथनी नुजायें त्रणवार पुंजीयें त्यां हास्य, रति अने अरति ए त्रण परिहरुं एम चिंतवीयें. जमणा हाथनी नुजायें त्रण वार पुंजीयें त्यां नय, शोक अने छुगंछा ए त्रण परिहरुं एम चिंतवीयें. मस्तक त्रणवार पुंजीयें तेमां कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण माठी लेश्या छांडुं एम चिंतवियें. मुखनी त्रण पडिलेहण करीयें त्यां ऋद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव ए त्रण परिहरुं एम चिंतवीयें. हृदयनी त्रण पडिलेहणा करीयें त्यां मायाशल्य,नीयाणाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्य छांडुं एम चिंतवीयें. डाबा खंजा अने जमणा खंजानी नीचे उपर बे पासानी पडिलेहणा चार करीयें त्यां क्रोध,मान,माया अने लोन ए चार

कषायने ढांकुं एम चिंतवीयें. माबे जमणे पगे अनुक्रमे त्रण त्रण पडिलेहणा करीयें तिहां अनुक्रमें पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्प तिकाय अने त्रसकाय ए ब काय जीवोनी रक्षा करुं एम चिंतवीयें ॥

तथा वली पडिलेहणना अधिकार माटे वस्त्र,पात्र,पाट, बाजोठ, पाइया वाला पाटला,पाटली,थापनाना मबा,ढाकणां,अने भाजन प्रमुखनी पच्चीश पडिलेहण तथा कणदोरा, मांमा अने मांमीनी दश पडिलेहण तथा थाप नानी तेर, पाइयानी तेर इत्यादिक सर्व परंपरागतें जाणवी ॥

आवस्सएसु जह जह, कुणय पयत्तं अहीण मइरित्तं ॥
तिविह करणो व उत्तो, तह तह से निज्जरा होई ॥ २२ ॥

अर्थः—ए (आवस्सएसु के०) आवश्यकने विषे तथा मुहपत्ति अने श रीरनी पडिलेहणाने विषे (जहजह के०) जेम जेम उजमाल चित्त थको (पयत्तं के०) प्रयत्न एटले उद्यम प्रत्यें (अहीण के०) हीन नही परंतु जेम कह्यो बे तेमज करे पण तेथकी उंबो करे नही तेमज (अहिरित्तं के०) अतिरिक्त ते तेथकी जूदो एटले जेम हीन न करे तेम अधिक पण न करे एवी रीतें भली बुद्धियें सहित थको (तिविह करण के०) त्रिविध करण ते मन, वचन अने काया ए त्रण करणे करी (उवउत्तो के०) उपयुक्त थको एटले शुद्ध उपयोगी थयो थको एकाग्रचित्त बतो (कुणंइ के०) करे (तहतह के०) तेम तेम (से के०) ते उद्यम करनार पुरुषने (निज्जरा होई के०) विशेषे कर्मोनी निर्जरा थाय अने जो अविधियें प्रतिलेखना दिक करे तो ते ब कायनो विराधक कह्यो बे. एटले पडिलेहणानुं बारमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल एकशो वीश थया ॥ २२ ॥

हवे चार गाथायें करी बत्रीश दोष त्यागवानुं तेरमुं द्वार कहे बे.

दोस अणाढिअ थढिअ, पविद्ध परिपिंडिअं च ढो लगई ॥ अंकुस कछभ रिंगिअ, मछुवत्तं मणपउठं ॥ २३ ॥ वेइयबद्ध भयंतं, भय गारव मित्त कारणा तिन्नं ॥ पडिणीय रुठ तज्जिअ, सठ हीलिअ विप लिय चिअयं ॥ २४ ॥ दिठमदिठं सिंगं, कर तंमो

अण अणिह्णालिद्धं ॥ ऊणं उत्तर चूलिअ,. मूअं
ढढ्ढर चुडलिअं च ॥ २५ ॥ बत्तीस दोस परिसुद्धं,
किइकम्मं जो पउंजई गुरुणं ॥ सो पावइ निवाणं,
अचिरेण विमाणवासं वा ॥ २६ ॥ दारं ॥ १३ ॥

अर्थः—जे अनादर पणे संभ्रांत थको वांदे, ते पहेलो (अणाढिय के०) अनादृत (दोसं के०) दोष. तथा जे जात्यादिकें करी धीगो थको स्तब्ध पणुं राखतो वांदे, अथवा द्रव्य भावादिक चउभंगीयें करी स्तब्ध थको वांदे ते बीजो (थड्डिअ के०) स्तब्ध दोष. तथा जे वांदणां आपतो भाडु तनी परे तुरत नासे. अथवा वांदणां देतो अरहो परहो फरे ते त्रीजो (अपविद्ध के०) अपविद्ध दोष. तथा जे घणा साधु प्रत्ये एकज वांदणे वांदे अथवा आवर्त्त, व्यंजन, अने आलाप ए सर्व एकठा करे ते चोथो (परिपिंडियं के०) परिपिंडित दोष. (च के०) वली जे तीडनी परे उबल तो एटले उपडी उपडी विसंष्ठुल वांदे, ते पांचमो (ढोलगई के०) ढो लगति दोष. तथा जे अंकुशनी परें रजोहरणने बे हाथें ग्रहीने वांदे ते छहो (अंकुस के०) अंकुश दोष. तथा जे काछबानीपरे रिंगतो रिंगतो वांदे, ते सातमो (कछभरिंगीय के०) कछभरिंगित दोष. तथा जे उभो थइ बेसीने जल मांहेला माछलानी परें एकने वांदीने उतावलो छपी फरी बीजाने वांदे, अथवा पाछ प्रछन्न करे अथवा रेचकावर्त्तें अनुलोम प्रति लोम वांदे ते आठमो (मछुवत्त के०) मत्स्योद्धर्त दोष. तथा कोइ साधु पोताथी एकादि गुणे हीन होय ते दोषने मनमां चिंतवतो ईर्ष्यासहित थको वांदे ते नवमो (मणपउठं के०) मनःप्रदुष्ट दोष जाणवो ॥ १३ ॥

तथा जे बे ढींचणनी उपरें तथा हेठे हाथ राखीने अथवा बे हाथ विचा लें बे ढींचण राखीने अथवा बे हाथनी वचमां एक ढींचण राखीनें अथवा खोले हाथ मूकीनें वांदे, ते दशमो (वेइयबद्ध के०) वेदिकाबद्ध दोष जाणवो. तथा ए कांइक अमने भजशे एटले विद्यामंत्रादिक शीख वशे इत्यादिक लालचनी बुद्धियें वांदे,अथवा नही वांदीश तो रीश करशे एवुं जाणीने वांदे, ते अगीआरमो (भयंतं के०) भजंत दोष जाणवो.

तथा एमने नही वांदीश तो मुजने गछादिकथी बाहिर काढी मूकशे, अ थवा शापादिक आक्रोश करशे इत्यादिक नयें करी वांदे, ते बारमो (नय के०) नय दोष जाणवो. तथा जो हुं नली रीतें वांदीश तो सर्व एम जाणशे जे ए सामाचारीमां कुशल बे, माह्यो बे, विधिप्रवीण बे, एवी रीतें जाणपणाना गारवें करी वांदे, ते तेरमो (गारव के०) गारव दोष जाणवो. तथा एमनी साथे मह्यारे पूर्वे मित्राइ बे एवुं जाणी मित्रादि कनी अनुवृत्तियें वांदे ते चौदमो (मित्त के०) मित्र दोष जाणवो. तथा जे ज्ञानदर्शनादिक कारण विना बीजा अन्य कारण जे वस्त्रादिक पदा दिक मुजने देशे, एम उद्देशीने वांदे, ते पन्नरमो (कारणा के०) कारण दोष जाणवो. तथा जे चोरनी परे बानो रह्यो थको वांदे एटले परथी पोतानी आत्माने बानो राखे रखे कोइ मुजने उलखी लेशे तो माहारी लघुता थशे, एवी रीतें पोतानें बुपावतो वांदे, ते शोलमो (तिन्नं के०) स्तैन्यदोष जाणवो. तथा आहारादिकनी वेलायें प्रत्यनीकपणे अनवसरें वांदे, ते सत्तरमो (पडिणीय के०) प्रत्यनीक दोष जाणवो. तथा क्रोधें धमधम्यो थको वंदना करे, अथवा क्रोधांत प्रत्यें वांदे, ते अढारमो (रुठ के०) रुष्टदोष जाणवो. तथा जे घणीये वार वांद्या तो पण प्रसन्न थता नथी तेम कोपमां पण थता नथी काष्ठनी पेरें देखाय बे, एम तर्क्ज ना करतो वांदे, अथवा तर्क्जनी अंगुलियादिके तर्क्जना देतो थको वांदे एटले कहे के एने रूशेथी शुं ? अने तुठेथी पण शुं ? एम तर्क्जतो थको वांदे, ते उ गणीशमो (तक्किय के०) तर्क्जित दोष जाणवो. तथा जे मायादिक कपटें करी वांदे, अथवा ग्लानादिक व्यपदेश करी सम्यक् प्रकारें न वांदे ते वीशमो (सढ के०) शठ दोष जाणवो. तथा हे गणी, हे वाचक, तमने वांदवाथी शुं फल थाय ? एवी रीतें जात्यादिकनी हेलना करतो थको वांदे, ते एकवीशमो (हीलिय के०) हीलित दोष जाणवो. तथा अर्ध्दा वांदणा देइने वचमां वली देशकथादिक विकथाउ करतो करतो अनिमाने वांदे, ते बावीशमो (विपलियचिअयं के०) विपलितचित्तकं एटले विपलि यचित्त दोष जाणवो ॥ २४ ॥

जे मुंगो रही बानो मानो बेसे तेने कोइ बीजो जाणी जाय जे आ बा नो बेसी रह्यो बे तो वांदे तथा कोइ अपरनुं वचमां अंतर बते न वांदे ए

म दीतुं अणदीतुं करे एटले कोइयें दीतुं, कोइयें न दीतुं एम लाजतो थको अंधारामां वांदणां आपे, ते त्रेवीशमो (दिठमदिठं के०) दृष्टादृष्ट दोष जाणवो. तथा जे पोताना मस्तकने एक देशे करी एटले मस्तकनो एक पासुं गुरुने पगे लगाडे तथा मुद्राहीन पणे धर्मोपकरणादिक विपरीत पणे राखतो थतो वांदे ते चोवीशमो (सिंगं के०) शृंग दोष जाणवो. तथा जे राजादिकना कर वेठनी पेरे जाणीने वांदे पण कर्मनिर्जराने अर्थे वांदे नही ते पच्चीशमो (कर के०) कर दोष जाणवो. तथा जे गुरुने वांदणां दीधां विना बुटको नथी, केवारे एथी बुटशुं? एम चिंतवतो वांदे ते ठवीशमो (तं मोअण के०) तन्मोचन दोष जाणवो. तथा सत्तावीशमा आश्लिष्टाना श्लिष्टदोषनी चउभंगी थाय ते आवीरीतें के, हाथें करी रजोहरण अने मस्तक फरसे ए प्रथम भांगो ते शुद्ध जाणवो, तथा रजोहरणने हाथ लगाडे पण मस्तकें हाथ न लगाडे ए बीजो भांगो, तथा मस्तकें हाथ लगाडे पण रजोहरणे हाथ न लगाडे ते त्रीजो भांगो, तथा रजोहरण अने मस्तक बेहुने हाथ फरसे नही एटले लगाडे नही, आश्लेषे नही ते चोथो भंग जाणवो. ए चार भांगामां प्रथम भांगो शुद्ध ठे अने पाठला त्रण भांगा अशुद्ध दोषावतार जाणवा. ए त्रण भांगें करी वंदन करे ते सत्तावीशमो (अणिद्धणालिद्ध के०) आश्लिष्टानाश्लिष्ट दोष जाणवो. तथा जे आवश्यकादिकें पाठ आलावा असंपूर्ण कहेतो थको वांदे ते अठावीशमो (ऊणं के०) ऊण दोष जाणवो. तथा जे वांदणे वांदीने पठी महोटे शब्दे करी मत्थएण वंदामि एम कहे ते ओगणत्रीशमो (उत्तरचूलिअ के०) उत्तरचूलिका दोष जाणवो. तथा जे आलाप आवर्तादिकने मूकनी परें अणउच्चरतो वांदे, ते त्रीशमो (मूअं के०) मूकदोष जाणवो. तथा जे आलावाने अत्यंत मोहोटे स्वरें उच्चार करतो वांदे, ते एकत्रीशमो (ढढर के०) ढढर दोष जाणवो. तथा जे अंबुअडानी परें रजोहरण ठेहेडे ग्रहण करी रजोहरणने, भमाडतो थको वांदणा आपे ते (च के०) वली बत्रीशमो (चुडलियं के०) चुडलिक दोष जाणवो ॥ २५ ॥

ए पूर्वोक्त (बत्तीसदोस के०) बत्रीश दोष तेणेकरीने रहित थको (परिसुद्धं के०) परि शुद्ध निर्दोष पणे (कइकम्मं के०) कृतिकर्म जे वांदणा तेने (गुरूणं के०) गुरुना चरणप्रत्ये (जो के०) जे भव्यप्राणी (पउंजइ

के०) प्रयुंजे, एटले आपे छे (सो के०) ते प्राणी (अचिरेण के०) थोडा कालमां (निवाण के०) निर्वाण एटले कर्मरूपदावानलनो उपशम जे मोक्ष ते प्रत्यें (पावइ के०) पामे (वा के०) अथवा (विमाणवासं के०) वैमानिक देव पणाना वास प्रत्ये पामे ॥ २६ ॥ एटले ए तेरमुं बत्रीश दोष नुं द्वार पूरुं थयुं उत्तर बोल १५२ थया ॥

हवे वांदणा देतां छ गुण उपजे तेनुं चौदमुं द्वार कहे छे.

इह छच्च गुणा विणउ, वयारमाणाइभंग गुरुपूआ ॥ तिछ यराणय आणा, सुअधम्माराहणा किरिआ ॥२७॥दारं॥१४॥

अर्थः—(इह के०) ए वांदणाने विषे (छच्च के०) छ वली (गुणा के०) गुण उपजे ते कहे छे तेमां एक तो (विणउवयारं के०) विनयो पचार करवो ते गुण उपजे एटले जे विशेषेंकरी सर्वकर्मनो नाश करे तेने विनय कहीयें. तेहिज उपचार एटले आराधवानो प्रकार जाणवो. बीजो (माणाइभंग के०) पोताना अभिमानादिकनो भंग थाय एटले पोताना माननुं गालवुं थाय. त्रीजो (गुरुपूआ के०) गुरु जे पूज्यजन तेमनी पूजा सेवा भक्तिनुं साचववुं थाय. चोथो समस्त कल्याणनुं मूल रूप एवी (तिछयराणय के०) श्रीतीर्थंकर देवनी (आणा के०) आज्ञा तेनुं आराधन थाय एटले आज्ञानुं पालवुं थाय केमके भगवंते विनय मूल धर्म कह्यो छे, तथा पांचमो (सुयधम्माराहणा के०) श्रुतधर्मनी आराधना थाय केमके श्रुतज्ञान जे गुरु पासेथी भणवुं तेपण वंदन पूर्वक भणवुं कह्युं छे. तथा छठो गुण तो परंपरायें एथी (अकिरिआ के०) अक्रिया रूप फल एटले सिद्धपणुं पामीयें ए छ गुण वांदणा देवाथी उपजे तेनुं चोदमुं द्वार पूर्ण थयुं, उत्तर बोल १५८ थया ॥ २७ ॥

हवे त्रण गाथायें करी गुरु स्थापनानुं पन्नरमुं द्वार कहे छे.

गुरुगुणजुत्तं तु गुरुं, ठाविज्जा अहव तछ अरकाई ॥
अहवा नाणाइतिअं, ठविज्ज सरकं गुरुअभावे ॥२८॥
अरके वराडए वा,कठे पुछे अ चित्तकम्मे अ ॥ स
भ्भावमसभ्भावं, गुरुठवणा इत्तराव कहा ॥२९॥ गुरु

विरहंमी ठवणा,गुरुवएसोव दंसणहं च ॥ जिणवि
रहंमी जिणबिंब, सेवणा मंतणं सहलं ॥३०॥दारं॥१५॥

अर्थः–(गुरु के०) महोटा विशेष प्रतिरूपादि छत्रीश (गुणजुत्तं के०) गुणे करी युक्त एवा (तु के०) निश्चें (गुरुं के०) गुरुने (ठाविज्जा के०) स्थापन करीने तेनी आगल प्रतिक्रमणादि किरिया करीयें (अहव के०) अथवा (सरकं के०) साक्षात् पूर्वोक्त गुणयुक्त एवा (गुरुअजावे के०) गुरुनो अजाव छते (तह के०) तत्र एटले ते गुरुने स्थानकें (अरकाइ के०) अक्षादिक स्थापीने तेनी आगल क्रिया करीयें ते अक्षादिक स्था पनाचार्य न होय तो (नाणाइतियं के०) ज्ञानादिक त्रण एटले एक ज्ञान, बीजुं दर्शन, त्रीजुं चारित्र ए त्रणेना उपकरण जे पोथी नोकरवा ली प्रमुख छे तेने (ठविज्ज के०) स्थापीने तेनी आगल क्रिया करीयें. परंतु अगुरुने विषे गुरुबुद्धि आणीने तेनी आगल क्रिया करवी नहीं. केमके आगममां अगुरुने विषे जे गुरुबुद्धि आणवी तेने अत्यंत आक रो लोकोत्तर मिथ्यात्व कह्युं छे ॥ २८ ॥

हवे अक्षादिक ते कया ते कहे छे. एक (अरके के०) अक्ष ते चंदन प्र सिद्ध मालानी स्थापना जाणवी, तेना अजावे (वराडए के०) वराटके एटले त्रण लीटीना कोमानी स्थापना करवी, (वा के०) अथवा (कठे के०) काष्ट मांमा मामी प्रमुख चंदनादिकनी पाटी आदिकनी स्थापना करवी, (पुच्छे के०) पुस्तकनी स्थापना करवी, (अ के०) वली तेना अ जावें (चित्तकम्म के०) चित्रकर्म ते गुरुनी मूर्तिनां चित्राम आलेख, अ, थवा गुरुनी काष्ठनी प्रतिमा ए पाठ श्रीअनुयोगद्वार सूत्रथी लखीयें छैयें, “से किंतं ठवणाणुस्सा जस्सं वा अरके वा वराडए वा कठकम्मे वा पोछकम्मे वा लेपकम्मे वा चित्तकम्मे वा गंथिकम्मे वा वेढिकम्मे वा पूरिकम्मे वा सं घातिकम्मे वा एगे वा अणेगे वा सप्नाउ वा असप्नाउ वा ठवणा ठविज्जत्ति ॥ एवी रीतें गुरुनी स्थापना करवी. ते बे प्रकारें जाणवी ते कहे छे. (सप्नाव मसप्नावं के०) एक सद्भावस्थापना अने बीजी असद्भाव स्थापना तिहां गुरुनी मूर्त्ति तथा प्रतिमादिकनी आकार सहित जे स्थापना ते सद्भा व स्थापना जाणवी, अने आकारविना अक्षादिकनी जे स्थापना करवी ते

असद्भाव स्थापना जाणवी, वली (गुरुठवणा के०) गुरुनी स्थापना ते एक (इत्तर के०) इत्वर अने बीजी (जावकहा के०) यावत् कथिका तेमां इत्वर ते थोडा काल लगें स्थापना रहे जेम नोकरवाली अने पुस्तकादिकनी जे स्थापना छे ते स्थापना क्रिया करवाना वखतें थापे छे माटे ज्यां सुधी ते क्रिया करीयें तिहांसुधी ते स्थापना रहे जो दृष्टि तिहांनी तिहां राखीयें तो रहे नहीतो वली फरी बीजी स्थापना स्थापवी पडे, ते इत्वर कालनी स्थापना जाणवी अने बीजी यावत्कथिक स्थापना ते घणाकाल पर्यंत रहे ते प्रतिमादिक तथा अक्षादिकनी बे प्रकारनी स्थापना करीये छैयें. ए स्थापनानी आशातना पण गुर्वादिकनी पेरें टालवी ॥ २ए ॥

हवे स्थापना शा कारण माटें स्थापवी ते कहे छे. जेवारें साक्षात् गुणवंत (गुरुविरहंमि के०) गुरुनो विरह एटले अभाव होय तेवारें (गुरुवदेसोवदंसणछं के०) गुरूपदेशोपदर्शनने अर्थें एटले गुरुनो उपदेश देखाडवाने माटे (ठवणा के०) स्थापना स्थापवी जोइयें (च के०) इहां भावार्थ ए छे जे स्थापनानी आगल क्रिया करतां ते एवुं जाणे जे गुरुजं मुजने आदेश आपे छे ते म्हारे इछाकारि कही प्रमाण करवुं. केमके गुरुना अभावें जे धर्मानुष्ठान करवुं ते शून्यभाव गणाय. हवे दृष्टांत कहे छे. जेम (जिणविरहंमि के०) हमणा श्रीजिनेश्वरनो विरह छतां (जिणबिंब के०) श्रीतीर्थंकरना बिंब एटले प्रतिमानी (सेवण के०) सेवन करीने (आमंतणं के०) आमंत्रण करवुं. जे हे भगवंत तमे मुजनें संसार समुद्र थकी तारो, मोक्ष आपो इत्यादिक कहेवुं ते (सहलं के०) सफल थाय छे ए दृष्टांते इहां पण श्रीगुरुना विरहें गुरुनी थापना पण सफल होय छे ए गुरु स्थापनाना एकज बोलनुं पन्नरमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल १५ए थया ॥ ३० ॥

हवे बे प्रकारना अवग्रहनुं शोलमुं द्वार कहे छे.

चउदिसि गुरुग्गहो इह, अहुठ तेरस करे सपरपक्के ॥
अणणुन्नायस्ससया, न कप्पए तछ पविसेउ ॥३१॥ दारं ॥१६॥

अर्थः—(इह के०) ए श्रीजिनशासन मांहे (गुरुग्गहो के०) गुरु थकी अवग्रह (चउदिसि के०) चारे दिशाने विषे (सपरपक्के के०) स्व अने परपक्ष आश्रयी अनुक्रमें केटलो केटलो होय ते कहे छे. तिहां एक (अ

हुठ के०) साडा त्रण अने बीजो (तेरस के०) तेर (करे के०) हाथनुं जाणवुं. तेमां स्वपक्ष ते पोतामां साधु साधुमां अने बीजा श्रावक जाणवां तथा परपक्ष ते साधु अने साध्वी तथा श्राविका जाणवी तेमां साधु साधुने तथा श्रावकने मांहोमांहे साडा त्रण हाथ वेगलो अवग्रह होय अने गुर्वादिकथी साध्वी तथा श्राविकाने तेर हाथ वेगलो अवग्रह होय तेमज साध्वी तथा श्राविकाने मांहोमांहे साडा त्रण हाथनो अवग्रह होय (तब के०) तेटला अवग्रह मांहे (अणणुन्नायस्स के०) गुरुनी अनुज्ञा लीधा विना (सया के०) सदा निरंतर (पविसेउ के०) प्रवेश करवाने वली (नकप्पए के०) न कल्पे ए बे अवग्रहनुं शोलमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल १६१ थया ॥ ३१॥

हवे वांदणांना सूत्राना अक्षरनी संख्यानुं सत्तरमुं द्वार तथा पदनी संख्यानुं अढारमुं द्वार कहे छे.

पण तिग बारस डुग तिग, चउरो छठाण पय इगुणतीसं ॥ गुणतीस सेस आव,स्सयाइ सव पय अडवन्ना ॥३२॥ दारं ॥१७॥१८॥

अर्थः-प्रथम वंदनक सूत्रना अक्षर (२२६) छे तेमां लघु अक्षर (२०१) छे,अने गुरु अक्षर तो इच्छामिथी मांमीने वोसिरामि पर्यंत पच्चीश छे ते लखे.छे, च्छा ज्जा ग्ग ज्जो प्प क्कं त्ता र्क्कं क्क क्क त्ती न्न त्था क्क क्क क्क व्व व्व च्चो व्व म्मा क्क स्स क्क प्पा ए पचीश अक्षर गुरु जाणवा एटले सत्तरमुं वंदनक सूत्रना अक्षरोनुं द्वार थयुं. उत्तर बोल (३८७) थया.

हवे अढारमुं वंदनक सूत्रना पदनी संख्यानुं द्वार गाथाना अर्थ कहे छे. तिहां 'विभक्त्यंतं पदं' एटले विभक्ति-जेना अंतमां होय तेने पद कहीयें ते इहां वंदनक सूत्रना छ स्थानक मध्ये सर्व मली अठावन पदनी संख्या छे, तिहां प्रथम स्थानकमां इच्छामि, खमासमणो, वंदिउं. जावणिज्जाए, निसीहियाए ए (पण के०) पांच पद जाणवा.

तथा बीजा स्थानकमां अणुजाणह, मे, मिउग्गहं, ए (तिग के०) त्रण पद जाणवां, तथा त्रीजा स्थानक मध्ये निसीहि,अहो, कायं, कायसंफासं,खमणिज्जो, भे,किलामो,अप्पकिलंताणं, बहुसोभेण,भे,दिवसो, वइक्कंतो ए (बारस के०) बार पद जाणवां, तथा चोथा स्थानकमां जत्ता भे ए (डुग के०) बे पद जाणवां, तथा पांचमा स्थानकमां जवणिज्जं, च, भे

ए (तिग के०) त्रण पद जाणवां, तथा छठा स्थानकमां खामेमि, खमास मणो, देवसियं, वइक्कमं ए (चउरो के०) चार पद जाणवां, एम (छठाण के०) छ स्थानकने विषे (पय इगुणतीसं के०) उंगणत्रीश पद जाणवां.

तथा (सेस के०) शेष रह्या जे (गुणतीस के०) उंगणत्रीश पद ते (आवस्सियाइ के०)आवस्सिआएथी मांमीने वोसिरामि पर्यंत थाय तेवारे (सव्व के०) सर्वे मलीने (पय के०) पद (अडवन्ना के०) अठा वन्न थाय छे, हवे ए पाछला उंगणत्रीश पद कही देखाडे छे. आवस्सि याए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए मणडुक्कडाए वयडुक्कडाए कायडुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोनाए सव्वकालियाए सव्वमिछोवयाराए सव्वधम्माइक्कम्मणाए आसायणाए जो मे अइयारो कउ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि ए उंगणत्रीश पद थयां. आ ठेकाणे केट लाएक जंकिंचिमिछाए ए एक पद माने छे तथा केटलाएक आवस्सियाए अनिश्चित पद माटे नथी गणता. तेमाटे बहुश्रुत कहे ते प्रमाण जाणवुं. ए अठावन पदनुं अढारमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल ४४५ थया ॥ ३२ ॥

हवे वांदणाना दायकना स्थानकनुं उंगणीशमुं द्वार कहे छे.

इछाय अणुन्नवणा, अव्वाबाहं च जत्त जवणाय ॥ अवराह
खामणावि य, वंदण दायस्स छठाणा ॥३३॥ दारं ॥ १ए ॥

अर्थः-(इछाय के०) इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नि सीहिआए लगें पांच पदनुं प्रथम स्थानक जाणवुं, तथा (अणुन्नवणा के०) अणुजाणह मे मिउग्गहं ए त्रण पदनुं बीजुं स्थानक, तथा (अव्वा बाहं च के०) अव्याबाध एटले निराबाध पणुं पूछवा अर्थे निसीहिथी मां मीनें दिवसो वइक्कंतो पर्यंत बार पदोनुं त्रीजुं स्थानक जाणवुं, तथा (ज त्त के०) जत्ता ने ए बे पदोनुं चोथुं स्थानक, तथा (जवणाय के०) जवणिज्जं च ने ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक, तथा (अवराहखामणा के०) अपराधनुं खमाववुं एटले खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कम्मं ए चार पदोनुं छहुं स्थानक जाणवुं. अपिच एटले वली ए (वंदणदायस्स के०) वांदणानो देवावालो तेनां (छठाणा के०) छ स्थानक जाणवां

॥ ३३ ॥ ए ठ स्थानकनुं ओगणीशमुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल ४५१ थया.

हवे ए ठ स्थानकमां ठ गुरु वचन होय तेनुं वीशमुं द्वार कहे ठे.

ठंदेणणुजाणामि, तहत्ति तुप्भंपि वट्टए एवं ॥ अहम
वि खामेमि तुमं, वयणाई वंदणरिहस्स ॥ ३४ ॥

अर्थः—जिहां इन्नामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए एटलो पाठ शिष्य कहे तेवारे गुरु जो वांदणा देवरावे तो (ठंदेण के०) ठंदेण ए पाठ कहे अने वांदणा न देवरावे तो "तिविहेण" एवो पाठ कहे ए प्रथम गुरुवचन जाणवुं, तथा 'अणुजाणह मे मिउग्गहं' ए पाठ शिष्य कहे तेवारे गुरु कहे (अणुजाणामि के०) आज्ञा आपुं ठुं ए बीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा निसीहि इत्यादिक जेवारे शिष्य कहे, तेवारें गुरु कहे (तहत्ति के०) तथेति ए त्रीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जेवारें जत्ता ने इत्यादि शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे (तुप्भंपिवट्टए के०) तुमने काजें पण वर्त्ते ठे ए चोथुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जेवारें जवणिज्जं च ने शिष्य कहे तेवारे गुरु कहे (एवं के०) एमज, तुं पूठे ठे तेमज. ए पांचमुं गुरुवचन जाणवुं तथा जेवारे खामेमि खमासमणो शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे (अहमविखामेमितुमं के०) हुं पण खमावुं ठुं तुम प्रत्यें. ए ठहुं गुरुवचन जाणवुं ए ठ (वयणाइं के०) वचन ते (वंदण के०) वांदणा देवा योग्य (आरिहस्स के०) आचार्यादिकनां जाणवां, एटले वीशमुं ठ गुरुनां प्रतिवचननुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल ४५७ थया ॥३४॥

हवे त्रण गाथायें करी तेत्रीश आशातनानुं एकवीशमुं द्वार कहेठे. तिहां प्रथम आशातना शब्दनो अर्थ करे ठे. जिहां ज्ञान दर्शन अने चारित्र तेनो (आय के०) लाज थाय ते लाजने (शातना के०) पाडवुं नाश करवो तेने आशातना कहियें ते इहां शिष्यादिक जो अविनयथी प्रवर्त्तता होय,तोगुरु आदिकनी आशातना करे ते तेत्रीश प्रकारें ठे तेनां नाम गाथाना अर्थथी कहेठे.

पुरउ पक्खासन्ने, गंता चिठण निसिअणायमणे ॥ आलोय
ण पडिसुणणे,पुवालवणे अ आलोए ॥ ३५ ॥ तह उवदंस
निमंतण, खद्धा ययणे तहा अपडिसुणणे ॥ खद्धत्ति य त

ब्गए, किं तुम तब्जाय नो सुमणे ॥ ३६ ॥ नो सरसि कहं
ब्रित्ता, परिसंन्नित्ता अणुठियाइ कहे ॥ संथार पायघट्टण,
चिठ्ठु च्च समासणे आवि ॥ ३७ ॥ दारं ॥ ९१ ॥

अर्थः—प्रथम गुरुने (पुरउ के०) आगलें चालतां शिष्यने विनयन्नंगादिक लागे माटे ए अकारणे आशातना थाय परंतु जो मार्गादिकनी विषमता होय अथवा गुरुने मार्ग देखाडवा माटे जो गुरुथी आगल चालवुं पडे तो ते अकारणमां गणाय नही. बीजी (पक्ख के०) गुरुने पडखे बेहु पासें गमन करे गुरुनी बराबर चाले तो आशातना थाय, त्रीजी (आसन्ने गंता के०) एमज गुरुने आसन्ने एटले अडकतो गंता एटले चाले पब्वाडे ढूकडो चाले तो श्वास, ब्रींक, श्लेष्म, उथ्रसादि दोष रूप आशातना थाय, एम ए त्रण आशातना जेटले न्नूमिन्नागे गुरुनी सार्थे चालतां थकां थाय, तेटलेज न्नूमिन्नागें गुरुनी पासें (चिठणं के०) उन्नो रहेवा थकी पण पूर्वोक्त त्रण आशातना थाय. एम त्रणे स्थानके गुरुनी पासे (निसिअ णा के०) बेसता थकां पण पूर्वोक्त त्रण आशातना थाय एवं नव थइ. दशमी (आयमणे के०) आचमने एटले गुरुनी साथे उच्चार न्नूमियें गयां थकां शिष्य जो आचार्यथकी पहेला आचमन लीये अथवा गुरुनी पहेलां चलु करे अथवा हाथवाणी लीये तो आशातना थाय, अगीआरमी उच्चारादिक बहिर्दिशी गुर्वादिक साथे आव्या पबी गमणागमणाथी जो गुरुथकी प्रथम (आलोयण के०) आलोये, तो आशातना थाय, बारमी गुर्वादिक वडेरा तथा रत्नाधिक जे होय ते रात्रियें बोलावे जे कोण सूतो बे? कोण जागे बे? एम वचन सांन्नलतो जागतो थको पण (अपडिसुणणे के०) अण सांन्नलतानी पेरे पाबो प्रत्युत्तर नही आपे तो आशातना थाय, तेरमी गुरुआदिकने आलापवा बोलाववा योग्य एवा कोइ श्रावकादिक आव्या होय अथवा आवेला बे तेने आवर्जवा माटे गुरु बोलाव्यानी (पुव्वालवणेय के०) पूर्वेज पोते बोलावे तो आशातना थाय, (अ के०) वली चौदमी अशन पान खादिम स्वादिम ए चारे आहार रूप जे निक्षा लावी होय ते प्रथम कोइ बीजा शिष्यादिक आगल आलोईने पबी गुरु आगले (आलोए के०) आलोचे तो आशातना थाय ॥ ३५ ॥

पन्नरमी (तह के०) तेमज वली अशनादिक चार जे लाव्या होय ते प्रथम बीजा यतिने देखाडीने पछी गुरुने (उवदंस के०) देखाडे तो आशातना थाय, शोलमी तेमज अशनादिक चार लाव्या होय तेनी प्रथम बीजा यतिने निमंत्रणा करे के आ जात पाणी लेशो ? पछी गुरुने (निमंतण के०) निमंत्रणा करे तो आशातना थाय, सत्तरमी अशनादिक चार सूरि प्रमुख साथें निक्ष्यायें आणीने पछी गुरवादिकने पूछ्या विना जेनी साथे पोतानुं मन माने तेनें मधुर जाणीने (खद्ध के०) खवरावे तो आशातना लागे, अढारमी गुर्वादिक तथा रत्नाधिक साथें जमतो थको (आयणेण के०) अशनादिक स्निग्ध सरस होय ते पोतेंज वावरे, ते आशातना जाणवी. यदुक्तं दशाश्रुतस्कंध सूत्रे ॥ सहेअसणं वा राइणिए सेहिं जुंजमाणे तत्र सेहे खद्धं खद्धं कायं कायं उसढंउसढं मणुस्सं मणुस्सं मणामं मणामं निद्धंनिद्धं लुरकं लुरकं आहारित्ता हवइ आसायणा सेहस्सत्ता ॥ (तहा के०) तेमज उंगणीशमी गुरु जेवारें साद करे तेवारे (अपडिसुणणे के०) अप्रतिश्रवणे एटले अणसांजलतानी पेरें गुरुने पाछो जुवाब आपे नही ते आशातना जाणवी. ए आशातना पूर्वें कही छे, परंतु ते रात्रिसंबंधी शयन करवा पछीनी जाणवी,अने आ ते दिवससंबंधि धीठाइ पणे तथा अनाजोग पणे जाणवी. वीशमी रत्नाधिक तथा गुर्वादिक जेवारें साद करे तेवारे तेने (खद्धत्तिअ के०) खर एटले अत्यंत कर्कश मोटे स्वरें करी पडुत्तर घणा वाले, कहे के अरे जाइ खाधो रे जाइ खाधो केम केड मूकता नथी. इत्यादिक कठिण वचन बोले, अथवा आक्रोश गाढस्वरादिक गुरुने करावे, ते आशातना जाणवी, वली एकवीशमी गुर्वादिकें बोलाव्यो थको (तछगए के०) त्यांथीज एटले पोताने ठेकाणे बेठो थकोज उत्तर आपे, परंतु गुरुनी समीपे आवीने जबाब न आपे तो आशातना थाय, बावीशमी वली गुर्वादिकें बोलाव्यो थको कहे के (किं के०) शुं छे, ते (तुम के०) तमे कहो कोण कहेवरावे छे, शुं कहो छो इत्यादिक विनयहीन वचन बोले, ते आशातना जाणवी, तथा त्रेवीशमी वली गुर्वादिकें बोलाव्यो थको कहे के तूंज कां नथी करतो ? एवी रीतें पोताना पूज्यने एक वचनांत बोलावे अथवा कहे के तमे कोण थका मुजने प्रेरणा करो छो, इत्यादिक वचन कहे ते आशातना जाणवी, चोवीशमी

गुर्वादिक तथा रत्नाधिक शिष्यने कहे के तमे समर्थ बो, पर्यायें लघु बो, माटे वृद्धनुं तथा ग्लाननुं वैयावच्च करो तेवारें ते पाबो जबाब आपे के जो तमेज लान्न जाणो बो, तो तमे पोतें केम नथी करता? तथा तमारो बीजो पण शिष्यादिकनो बहु परिवार बे ते शुं लान्नो अर्थी नथी? तो तेमनी पासें करावो. तेवारें वली गुर्वादिक तेने कहे के हे शिष्य तमे आलसु न थाउ तेवारें वली गुरुने कहे के तमे शुं अमनेज दीठा बे. एवी रीतनां वचन बोलीने गुरुनी (तज्जाय के०) तर्जना करे ते आशातना जाणवी, पच्चीशमी गुर्वादिक धर्मकथा कहेतां होय तेवारें शिष्य डुमणो थाय परंतु (नोसुमणे के०) सुमनो न थाय, गुर्वादिकना गुणनी प्रशंसा करे नही अने कहे के तमे गृहस्थने विशेष प्रकारें समजावो बो कहो बो, तेरीतें अमने समजावता नथी अथवा गुर्वादिक तथा रत्नाधिकनो जे रागी होय तेने देखीने डुमणो थाय ते आशातना जाणवी ॥ ३६ ॥

बवीशमी जेवारें गुरु कथा करता होय तेवारे कहे के तमने ए अर्थ (नोसरसि के०) नथी सांनरतो? आ अमुकनो अर्थ एम न होय एवीरीतें कहेतां आशातना लागे. सत्तावीशमी गुर्वादिक कथा करतां होय तेनी वचमां पोतानुं माहापण जणाववाने अर्थें सन्य लोकने कहे के ए कथा हुं तमने पबी समजावीश एम कही (कहछित्ता के०) कथानो छेद करे ते आशातना जाणवी, अघावीशमी गुरु कथा कहेतां थकां होय अने तेने सन्य लोक हर्षवंत हृदयथी सांनलतां होय ते सन्यजनोने देखतां बतां गुरुने कहे के एवडी शी कथा कहो बो? हमणा निक्षानो अवसर बे, नोजनवेला पोरिसि वेला बे, एम कही ('परिसंनित्ता के०) परषदानो नंग करे तो आशातना थाय, उगणत्रीशमी गुर्वादिक धर्मकथा कही रह्या पबी पर्षदा (अणुठिआ के०) अणउठे थके तेज कथाने पोतानुं माहापण जणाववाने हेतुयें जे गुरुयें अर्थ कह्यो होय तेहिज अर्थ वली विशेषथी विस्तारी चर्ची देखाडीने (कही के०) कहे तो आशातना थाय, त्रीशमी (संथारपायघट्टण के०) गुरुनी शय्या तथा संथाराने पोताना पदादिके करी संघट्टे तेने खमावे नही तो आशातना थाय, इहां शय्या ते सर्वांग प्रमाण जाणवी, अने संथारो ते अढी हाथ प्रमाण जाणवो, अथवा शय्या तेउर्णादिवस्त्रमय जाणवी, अने संथारो ते दर्नादिक तृणमय जाण

वो. एकत्रीशमी गुरुनी शय्या संथारो तथा बेसणादिकने विषे (चिठ के०) तिष्ठेत् एटले बेसे, अथवा आलोटे असत्यशरीरनें अवयवे करी फरसे तो आशातना थाय, बत्रीशमी गुरुथी (उच्च के०) उंचे आसनें बेसे, अथ वा अधिक बेसणे बेसे तथा गुरु जेवा वस्त्र पहेरे ते थकी अधिक मूल्य वाला वस्त्रादिकनो परिनोग करे तो आशातना थाय, तेत्रीशमी (समा सणेयावि के०) गुरुने समान आसने बेसे, अथवा गुरुना जेवा वस्त्रा दिक होय तेवाज समान वस्त्रादिकनो परिनोग करे तो आशातना थाय ळे. इहां अपिशब्द निश्चयवाचक ळे, तथा गुरुने आगल अने पाछल तथा बे बाजुयें बेसवादिकनी आशातना तो पूर्वें कहेली ळे. ए तेत्रीश आशातना टालतो थको शिष्य विनयी कहेवाय, ते शिष्य वांदणा देवा देवरावावाने योग्य जाणवो, ए प्रवचनपात्र थाय ॥ ३७ ॥ ए तेत्रीश आशातनानुं एकवी शमुं द्वार संपूर्ण थयुं. सर्व बोल (४ए०) थया ॥

हवे बे विधिनुं बावीशमुं द्वार कहे ळे. एटले पडिक्कमणुं करवानी सा मग्रीना अनावें तथा बे प्रतिक्रमण करणादि पर्याप्तिने अनावें प्रनाते अ ने संध्यायें वांदणा बे देवां ते बेहु विधिनो अनुक्रम जाणवो, ते कहे ळे.

इरिया कुसुमिणुस्सग्गो, चिइवंदण पुत्ति वंदणालोयं ॥
वंदणं खामण वंदण, संवर चउ थोन्न दु सज्झाउ ॥३ए॥

अर्थः—तिहां प्रथम प्रनातनो वंदनक विधि कहे ळे. इहां पहेली १ (इ रिया के०) इरिया पथिकी प्रतिक्रमीने, पळी २ (कुसुमिणुस्सग्गो के०) कुसुमिण दुसुमिणि उन्नाविणी निमित्तें चार लोग्गस्सनो काउस्सग्ग करे, ते वार पळी ३ आदेश मागीने, (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करे, पळी ४ आदेश मागीनें, (पुत्ति के०) मुहपत्ति पडिलेहे, पळी (वंदण के०) वांदणा बे आपे, तेवार पळी ६ (आलोयं के०) राइयं आलोए, तेवार पळी ७ (वं दण के०) बे वांदणा आपे. पळी ८ (खामण के०) अप्पुठ्ठिमि अप्निं तर राइउं खामवुं, पळी ए (वंदण के०) बे वार वांदणा आपे, पळी १० (संवर के०) पच्चरकाण करे, पळी ११ (चउथोन्न के०) चार ख मासमण पूर्वक नगवन् आचार्यादिक चारने थोन्न वंदन करे, पळी १२ (दुसज्झाउ के०) सझायसंदिसाहुं, सझाय करुं ए बे खमासमणे बे आ

देश मागी सद्याय संदिसाउं सज्झाय करे. ए प्रभातवंदनविधि जाणवो ३७

हवे संध्यावंदनकविधि अथवा लघुप्रतिक्रमणविधि कहे छे.

इरिया चिइवंदण पु, त्ति वंदणं चरिमवंदणालोयं ॥ वंदणखा
मण चउछोभ, दिवसुस्सग्गो दुसद्याउ ॥३९॥ दारं ॥२२॥

अर्थः–प्रथम १ (इरिया के०) इरियावहि पडिक्कमीने पछी आदेश मागी २ (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करे,तेवार पछी ३ (पुत्ति के०) मुहपत्ति पडिलिहे, पछी ४ (वंदणं के०) बे वांदणा दीये, ते देइने पछी ५ (चरिम के०) दिवसचरिम पच्चरकाण करे पछी ६ (वंदण के०) बे वांदणा देइने ७ (आलोयं के०) देवसियंआलोए पछी ८ (वंदण के०) बे वांदणा देइने, ९ (खामण के०) देवसियं खामवुं करे पछी १० (चउछोभ के०) चार खमासमणा देइ भगवानादिक चारने वांदे. पछी आदेश मागीने ११ (दिवसुस्सग्गो के०) देवसियपायच्छित्तविसोहणढं चार लोगस्सनो काउसग्ग करीने आदेश मागीने १२ (दुसद्याउ के०) बे खमासणे सद्याय करे एटले एक खमासमणे सिद्याय संदिसाउं, बीजे खमासमणे सद्याय करुं इति संध्यावंदनविधि समाप्त. ए बावीशमुं द्वार प्राभातिकवंदन तथा संध्यावंदन मली बे विधिये करी बे प्रकारनुं कह्युं. उत्तर भेद ४९२ थया ॥३९॥

एयं किइकम्मविहिं, जुंजंता चरण करण माउत्तां ॥
साहू खवंति कम्मं, अणेगभवसंचियमणंतं ॥४०॥

अर्थः–(एयं के०) ए पूर्वे कही आव्या जे बोल तेणेकरी (किइकम्म के०) कृतिकर्म जे वांदणा तेनो जे (विहिं के०) विधि जे व्यवहार ते प्रत्यें (जुंजंता के०) प्रयुंजता थका (चरणकरणं के०) चरणसित्तरी अने करणसित्तरी तेना गुणेकरी (आउत्ता के०) आयुक्त एटले सहित थका एवा जे (साहू के०) साधु निर्ग्रंथ चारित्रीया ते (अणेगभव संचिय के०) अनेक भवना संचित एटले कोटी जन्मना उपार्जन करेलां अने जेहनो (अणंतं के०) दुरंत विपाक छे एटले अनंता काल पर्यंत भोगवाय एवां अछेद पणे रहेनारा जे कर्म अथवा अनंत कालनां उपार्जन करेला एवां जे (कम्मं के०) कर्म छे ते कर्मो प्रत्यें तुरत शीघ्रपणे (खवंति के०) क्षेपवी निराकरण करे, क्षय पमाडे ॥ ४० ॥

अप्पमइ नवबोहत्थं, नासियं विवरियं च जमिह मए ॥ तं सोहंतु गीयत्था, अणन्निनिवेसिअ मच्छरिणो ॥ ४१ ॥ इति वंदनकनाष्यं समाप्तम् ॥

अर्थः—वांदणानो विचार ते (अप्पमइ के०) अल्प छे मति जेहनी एवा जे (नव के०) नव्यप्राणी तेमना (बोहत्थं के०) बोध ज्ञानने अर्थे (नासियं के०) नाख्युं परंतु आवश्यक बृहद्वृत्त्यादिक ग्रंथने विषे एनो अत्यंत विस्तार छे त्यांथी विशेषें जोवुं, इहां संक्षेपथी कह्युं छे ते मांहे जे अनानोगे (विवरीअं के०) विपरीत पणे (च के०) वली (जं के०) जे (इह के०) ए नाष्य मांहे (मए के०) महाराथी कहेवाणुं होय (तं के०) तेने वली (अणन्निनिवेसि के०) अकदाग्रही एटले हठवादरहित एवा अने (अमच्छरिणो के०) मच्छरपणाना परिणामे रहित, गुणना रागी एवां जे (गीयत्था के०) गीतार्थ एटले गीतना अर्थ तेना जाण अर्थात् सूत्रार्थना जाण तथा निश्चय व्यवहारने विषे कुशल होय ते (सोहंतु के०) शोध जो, शुद्ध करजो. ए ४९२ बोलें करी श्रीगुरुने वांदणा देवानो विधि कह्यो ॥ आंहीं "इच्छामि खमासमणो वंदिउं जा वणिज्जाए निसीहिआए" इत्यादिक गुरुवंदन सूत्र जो पण ग्रंथकारें मूल पाठमां गाथा रूपें कह्युं नथी तो पण प्रसंगथी तेनो अर्थ लखवो जोइयें परंतु आ प्रतिक्रमणने विषे प्रथम सुगुरु वांदणामां ते अर्थ सविस्तर लखाइ गयेलो होवाथी आ ठेकाणे लख्यो नथी. इति श्री गुरुवंदनक नाष्य अर्थ सहित संपूर्ण ॥ ४१ ॥

हवे एवा गुणवंत गुरु प्रत्यें वांदणा देइने तेमना मुखथी यथाशक्तियें पच्चरकाण लेवुं, केमके 'ज्ञानस्य फलं विरतिः' एवुं वचन छे वली आगम मध्ये कह्युं छे के पच्चरकाणेणं नंते जीवे किं जणइ पच्चरकाणेण य आसव दाराइनिरुंनंति तेमाटे पच्चरकाण करवानो महोटो लान छे. ते पच्चरकाण शुं अने ते केटला प्रकारनां पच्चरकाणो छे, इत्यादिक जाणवा माटे त्रीजुं पच्चरकाण नाष्य कहे छे.

अथ

तृतीयपच्चरकाणनाष्यप्रारंनः ।

तिहां प्रथम पच्चरकाणनां नवद्वार एक गाथायें करी कहे ले.

दस पच्चरकाण चउविहि, आहार डुवीसगार अडुरुत्ता ॥
दस विगई तीस विगइ, गय डुहनंगा ठ सुद्धि फलं ॥ १ ॥

अर्थः—प्रथम (दसपच्चरकाण के०) पच्चरकाणनां दश नेद ले तेनुं द्वार कहेशे. बीजुं पच्चरकाण करवाने विषे पाठ विशेषरूप (चउविहि के०) चार प्रकारनो विधि ले तेनुं द्वार कहेशे, त्रीजुं चार प्रकारना (आहार के०) आहारना स्वरूपनुं द्वार कहेशे, चोथुं पच्चरकाणमां (अडुरुत्ता के०) अद्विरुक्त एटले बीजावारनां अण उच्चस्या अर्थात् एकवारें कह्या तेनां ते फरी जुदा जुदा पच्चरकाणमां आवे ते न लेवा एवा (डुवीसगार के०) बावीश आगारनुं द्वार कहेशे, पांचमुं (दसविगई के०) दश विकृति एटले दश विगयनी संख्यानुं द्वार कहेशे, लहुं (तीसविगइगय के०) त्रीशविकृतिगत एटले ल मूल विगयना त्रीश निवीयाता थाय तेनी संख्यानुं द्वार कहेशे, सातमुं एक मूल गुण पच्चरकाण तथा बीजुं उत्तर गुण पच्चरकाण एम (डुहनंगा के०) बे प्रकारना नांगा पच्चरकाणना थाय तेनुं द्वार कहेशे. आठमुं पच्चरकाणनी (ठ सुद्धि के०) ठ शुद्धिनुं स्वरूप निश्चेंथी कहेवुं तेनुं द्वार कहेशे, नवमुं पच्चरकाण कस्याथी इहलोक तथा परलोक मली बे ठेकाणे (फलं के०) फल थाय तेनुं द्वार कहेशे ॥ १ ॥ ए मूल नवद्वारना नाम कह्या. एना उत्तर द्वार आंहीं विवस्या नथी, पण ग्रंथांतरे नेवुं कह्या ले अने अहींपण सरवालो आपतां नेवुं थाय ले. ते आगल विस्तारें कहेशे.

इहां प्रथम पच्चरकाण शब्दनो अर्थ करे ले. तिहां एक प्रति, बीजुं आ, अने त्रीजुं आख्यान ए त्रण पद मलीने प्रत्याख्यान शब्द थयो ले. तेमां अविरतिपणानां स्वरूप प्रत्यें प्रति एटले प्रतिकूल पणे करी आ एटले आगार मर्यादा करणस्वरूपें करी आख्यान एटले कहेवुं कथन करवुं ते ले जेने विषे, तेने प्रत्याख्यान कहीयें.

अथवा प्रति एटले आत्मस्वरूप प्रत्यें आ एटले अभिव्यापीने करण एटले करवुं एटले अनाशंसा रूप गुण आत्माने उपजे एम करे तेनुं जे आख्यान एटले कथन रूप ते छे जेने विषे तेने प्रत्याख्यान कहीयें.

अथवा (प्रति के०) परलोकें (आ के०) क्रिया योगार्थें शुभाशुभ फल कथन रूप जेने विषे छे तेने प्रत्याख्यान कहीयें. एम घणा व्याख्यान छे.

ते प्रत्याख्यान एक मूलगुण रूप अने बीजुं उत्तर गुण रूप एवां बे भेदें छे तेमां मूलगुणनुं पच्चरकाण यतिने पंचमहाव्रतादि रूप छे अने उत्तर गुण प्रत्याख्यानतो यतिने पिंमविशुद्ध्यादिक छे. तथा श्रावकने मूल गुणनो तो पांच अणुव्रतादिकनुं छे. अने उत्तर गुणनो शिक्षाव्रतादिकनुं छे. तथा सामान्य प्रकारें जे अविरतिपणानुं प्रतिपक्ष ते सर्व पच्चरकाण कहीयें.

हवे प्रतिदिन उपयोगी पणा माटे उत्तरगुण प्रत्याख्यान दश प्रकारें होय, ते आ ग्रंथना प्रथम द्वारना भेद रूपे कहे छे.

अणागय मइक्कंतं, कोडीसहियं नियंटिअणगारं ॥
सागार निरवसेसं, परिमाणकडं सके अद्धा ॥ ७ ॥

अर्थः—प्रथम जे कारण विशेषे आगलथी करे पण ते दिवसें न करी शके ते (अणागयं के०) अनागत पच्चरकाण ते पर्युषणादिक पर्व आव्यानी पहेलांज एवुं विचारे जे गुरु, ग्लान, शिष्य अने तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च महारे करवुं पडशे तेवारें व्याकुलताने लीधे महाराथी अष्टम्यादिक तपश्चर्या थइ शकशे नही तो मने लाभनी हाणी थशे माटे ते पर्व आव्यानी पहेलांज गुरुपासें पच्चरकाण लइने तप करे ते अनागत भावीपच्चरकाण.

बीजुं (अइक्कंतं के०) अतिक्रांत पच्चरकाण ते पूर्वोक्त रीतें पर्युषणादिक पर्व अतिक्रम्या पछी तेहिज कार्यादिकने हेतुयें जे पाछलथी अष्टम्यादिक तप गुरुपासें पच्चरकाण लइने करे, तेने अतिक्रांत अतीत पच्चरकाण कहीयें.

त्रीजुं (कोडिसहियं के०) कोटिसहित पच्चरकाण ते प्रभातें उपवास प्रमुख व्रत करीने वली बीजा दिवसना प्रभात समये पण तेहिज उपवासादिकनुं पच्चरकाण करे एम छठ्ठादिकनी पण कोटि एटले संधि मेलवे एटले छठ्ठादि एक पच्चरकाण पूरण थयानी वखते बीजो पच्चरकाण पच्चरके एवा कोटिक्रमें जे तप करवुं ते कोटिसहित तप अथवा नीवी, एकाशनादि

कने विषे पच्चरकाण पाख्या पहेलां आंबिलादिक करवुं ते, एटले एकनो अंत अने बीजा पच्चरकाणनी आदि ते कोटिसहित पच्चरकाण जाणवुं.

चोथुं (नियंटि के०) नियंत्रित तप ते पुष्ट नीरोगी तथा ग्लान पणे होय तो पण एवुं चिंतवे जे अमुक दिवसें महारे अमुक छठ अठमादिक तप करवुं. पछी गमे तेवुं कारण उपजे तो पण ते निर्धारेला दिवसे ते तप अवश्य करे पण मूके नही एम नियत काले ते पच्चरकाण चौदपूर्वी दशपूर्वी, जिन कल्पीने विषे प्रथम वज्र ऋषभनाराच संहनन ने विषे हतुं. हमणा व्युत्सन्न थयुं छे. थिविर पण ते वेलायें ते तप करता हता, परंतु हमणा ते पच्चरकाण नथी. ए नियंत्रित पच्चरकाण जाणवुं.

पांचमुं (अणगारं के०) अनागार तप ते "अन्नछणाभोगेणं" तथा "सहसागारेणं" ए बे आगार तो सर्वत्र होयज छे परंतु महत्तरागारादिक आकार जे पच्चरकाणने विषे न होय ते आगाररहित पच्चरकाण कहियें. ए पण पहेला संघयणनी साथें व्युछेद थयुं.

छठुं (सागार के०) आगार सहित ते महत्तरागारादि आगारसहित पच्चरकाण करवुं ते आगार सहित पच्चरकाण जाणवुं.

सातमुं (निरवसेसं के०) निरवशेष तप ते समस्त अशनादिक चार आहार वस्तु अने अनाहार वस्तु प्रमुख सर्वनुं पच्चरकाण करीयें. चउ विहार प्रमुख करीयें अनशन करीयें ते निरवशेष पच्चरकाण जाणवुं.

आठमुं (परिमाणकडं के०) परिमाणकृत तप पच्चरकाण ते दातिनी संख्या करे तथा कवलनी संख्या करे तथा घरनी संख्या करे एटले दातिनुं परिमाण तेमज कोलीआनुं परिमाण तथा घरनुं परिमाण जे भिक्षादिके करवुं, अथवा मग अडद प्रमुख द्रव्यादिकें जे भिक्षानो परित्याग ते सर्व परिमाणकृत पच्चरकाण जाणवुं.

नवमुं (संके के०) सांकेतिक पच्चरकाण ते इहां (केत के०) गृह तेणे करी जे सहित वर्त्ते तेने गृहस्थ कहीयें ते संबंधी प्राये ए पच्चरकाण गृहस्थने होय अथवा (संकेत के०) चिन्ह जे अंगुष्ठादिक तेणे करी होय ते संकेत कहेवाय एटले कोइक श्रावक पोरिसी आदिक पच्चरकाण करीने बाहेर कोइ कामे अथवा खेत्रादिके गयो होय तिहां पोरिसीनो काल पूर्ण थयो अथवा घरमांज बेठो छे अने पोरिसीनो काल पूर्ण थयो

छे परंतु जोजन सामग्री तयार थइ नथी ते वखत विचार करे जे एटलो काल वचमां महारो अपच्चरकाण पणे रहेशे ते श्रावकने योग्य नथी. एम चिंतवी एक अंगुठ सहिअं पच्चरकामि एटले जिहां सुधी मुठमां अंगुठो राखुं त्यांसुधी महारे पच्चरकाणनी सीमा छे. एमज बीजुं मुठसिहियं पच्च रकामि एटले मुठ बांधी राखुं तिहांसुधी. त्रिजुं गंठसहियं पच्चरकामि एटले गांठ बांधी राखुं तिहांसुधी. चोथुं घरसहिअं पच्चरकामि. पांचमुं प्रस्वेदसहियं ते ज्यां सुधी अंगना परसेवाना बिंदु निकले, त्यां सुधी. छहुं उस्सासस हियं पच्चरकामि. सातमुं थिबुकसहियंपच्चरकामि एटले स्तिबुक ते ज्यां सुधी पाणीना बिंदूआ जाजनादिकें तथा करादिक सूके तिहां पर्यंत जाणवुं. आठमुं ज्योतिष्कसहियं पच्चरकामि एटले ज्योतिष्क दीवा प्रमुखनी ज्योति रहे तिहां सुधी संकेत करे ए आठ प्रकारे नवमुं सांकेतिक पच्चरकाण कहेवाय छे जेमाटे कह्युं छे के ॥ अंगुठ मुठी गंठी, घर सेउ उस्सास थिबुक जो इरको ॥ पच्चरकाण विचाले, किच्च मणजिग्गहे सुजियं ॥ १ ॥ तथा कोइ पोरिसी आदि पच्चरकाण न करे अने केवल अजिग्रहज करे तो गांठ प्रमुख न छोडे त्यां लगें पच्चरकाण तेने थाय तेथी ए पच्चरकाण जेम बीजा पच्च रकाणोनी वचमां थाय छे तेम अजिग्रहने विषे पण थाय छे, तथा साधुने पण कोइक स्थानके ज्यां सुधी मंमल्यादिकें गुर्वादिक न आव्या होय त्यां लगें अथवा सागारिकादिकनुं कांइ कारण होय तेवारें पण ए अजिग्रह संकेत पच्चरकाण थाय.

दशमुं (अद्धा के०) अद्धा ते काल मुहूर्त्त पौरुष्यादिक प्रमाणने पण उपचारथी जाणी लेवो. ते काल पच्चरकाण जाणवुं ॥ २ ॥

हवे पूर्वोक्त दश पच्चरकाण कह्यां तेमां छेहेलुं अद्धा पच्चरकाण कह्युं, तेनां दश जेद छे ते, एक गाथायें करी कहे छे.

नवकार सहिअ पोरिसि, पुरिमड्ढ गासणेगठाणे अ ॥
आयंबिल अप्रत्तठे, चरिमेअ अजिग्गहे विगई॥३॥दारं॥१॥

अर्थः—प्रथम (नवकारसहिय के०) नवकारसहित एटले नवकार कहीने पारीयें ते बे घडी प्रमाण नोकारसी पच्चरकाण कहीयें, बीजुं पो होर दिवससुधी पच्चरकाण ते (पोरिसि के०) पोरिसि कहीयें, एमां साड्ढ

पोरसी ते सार्द्ध एटले दोढ पोहोरनुं पच्चरकाण पण जाणवुं. त्रीजुं (पुरिमड्ढ के०) पुरिमार्द्ध, ते बे पोहोर प्रमाणनुं पच्चरकाण. चोथुं (एगासण के०) एकाशननुं पच्चरकाण अने पांचमुं (एगठाणे के०) एकलठाणुं. ए त्रणेनुं बे पोहोर प्रमाण पच्चरकाण जाणवुं. छठुं जिहां एक हाथ विना बीजुं अंग हाले नही ते (आयंबिल के०)आयंबिल पच्चरकाण. सातमुं(अभत्तठ्ठे के०) अभक्तार्थे एटले उपवासनुं पच्चरकाण. आठमुं (चरिमे अ के०) दिवसचरिम अथवा भवचरिमादिरूप जाणवुं. नवमुं (अभिग्गहे के०) अभिग्रह पच्चरकाण ते अमुक वस्तु तेवारेंज खाउं जेवारें अमुक करुं इत्यादिक अभिग्रह करे ते. तथा दशमुं (विगई के०) विगई निविगइनुं पच्चरकाण जाणवुं. ए दशें पच्चरकाणोने काळनी मुख्यता छे माटे अद्धा पच्चरकाण कहीयें॥३॥

इहां शिष्य पूछे छे के पोरिसी प्रमुखने काल पच्चरकाण कह्युं ते खरुं पण नोकारसीनुं कालमान न कह्युं माटे नोकारसी जे छे ते अभिग्रह पच्चरकाण कहेवाय पण काल पच्चरकाण थइ शके नही ?

गुरु उत्तर कहे छे. नवकारसहियं एमां सहित शब्द आव्यो माटे सहित शब्दें कालप्रमाण जाणवुं, अने अल्प आगार छे माटे अल्पकाल जाणवो.

तेवारें शिष्य पूछे छे के पोरिसी तो एक प्रहरकाल प्रमाण छे माटे ए नवकारसीने विषे मुहूर्त्तद्वयादिक काल केम न लीधो ? केमके मुहूर्त्त द्वयादिक काल पण पोरिसीथी अल्प छे माटे बे घडीनुंज मान शावास्ते लीधुं?

गुरु उत्तर करे छे के हे शिष्य तें कह्युं ते सत्य छे, परंतु सर्वथी स्तोक काल अद्धापच्चरकाणनो एक मुहूर्त्तज छे मुहूर्त्तद्धा अद्धा इति वचनात् तेमाटे एनुं एक मुहूर्त्तज कालमान जाणवुं.

हवे ए नवकारसी पच्चरकाण, सूर्योदय पहेलांज करवुं अने नमस्कारें करी पारवुं, अन्यथा भंग लागे, नोकारसी कस्या पछी आगल पोरिसी यादिक थाय, परंतु ते विना न थाय अने यद्यपि नोकारसी विना पोरिसीयादिक करे तो काल संकेत रूप जाणवो तथा वली वृद्ध संप्रदायें एम कहे छे जे नोकारसी पच्चरकाण जे छे ते रात्रें चउविहारादिक पच्चरकाणना तारण रूप छे एटले शिक्षा रूप छे इत्यादिक घणो विचार छे ते प्रवचनसारोद्धारग्रंथनी वृत्तिथी जाणवो. अहींआं विशेषें करी लख्यो नथी.

हवे पुरुष प्रमाण गयां जेहने विषे थाय ते पोरिसी जाणवी " आसा ढमासे डुपया" इत्यादिक पाठ श्रीउत्तराध्ययनादि सूत्रथी जाणवो.

ए रीतें नोकारसी, पोरिसी, दिननुं पूर्वार्द्ध ते पुरिमड्ढ, एकासण, एक लगाणुं, आयंबिल, उपवास, दिवसचरिम, अभिग्रह अने विगइ एवं दश पच्चरकाणना नामनुं ए प्रथमद्वार थयुं. उत्तर भेद दश थया ॥ ३ ॥

हवे बीजे द्वारें पच्चरकाण करवानो पाठरूप विधि चार प्रकारें कहे छे.

उग्गए सूरे अ नमो, पोरिसि पच्चरक उग्गए सूरे ॥
सूरे उग्गए पुरिमं, अभत्तठं पच्चरकाइत्ति ॥ ४ ॥

अर्थः—प्रथम नवकारसीनुं पच्चरकाण उच्चरीयें तेवारें (उगए सूरे के०) उग्गए सूरे (अ के०) वली (नमो के०) नमोकार सहिअं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नबणाभोगेणं सहस्सा गारेणं वोसिरइ ए उच्चार करवानो प्रथम विधि जाणवो.

बीजो (पोरिसि के०) पोरसिनुं (पच्चरक के०) (पच्चरकाण उच्चरीयें तेवारें (उग्गए सूरे के०) उग्गए सूरे पोरिसियं पच्चरकाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नबणाभोगेणं सहस्सागारेणं ए उच्चार करवानो बीजो विधि जाणवो.

त्रीजो पूरिमार्द्धनुं पच्चरकाण उच्चरीयें तेवारें (सूरेंउग्गएपुरिमं के०) सूरे उग्गए पुरिमड्ढं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं ए उच्चार करवानो त्रीजो विधि.

चोथो अभक्तार्थ एटले उपवासनुं पच्चरकाण उच्चरीयें तेवारें (अभ त्तठंपच्चरकाइ के०) अभत्तठं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं चउव्विहंपि आहारं (इति के०)एम उच्चार करीये ए चोथो विधि जाणवो.

अहींआ पुरिमार्द्ध ते दिवसनुं पूर्वार्द्ध समजवुं एटले नोकारसी आदि पच्चरकाण जो पूर्वें सूर्योदयथी न कर्युं होय तो पण पुरिमड्ढ थाय, एम उपवासादिक पण थाय. तथा सूर्योदयथी मांमीने यावत् आगला दिव सनो सूर्योदय थाय त्यां सुधी अभक्तार्थ एटले उपवासनुं पच्चरकाण कहेवाय छे, एम जणाववाने तथा रात्रीनो चउविहार कर्यो होय अने बीजे दिवसे एक उपवासनुं पच्चरकाण करे, तेहने चोथभत्तनुं पच्चरकाण थाय. तथा रात्रियें चउविहारनुं पचरकाण न कर्युं होय अने बीजे दिने उपवास करे,

तेने भजनछनुं पच्चक्काण कहीयें पण चोथभंगनुं पचक्काण न कहीयें. अने भजयकोटि एकासणादिकें तो चोथभंगनुं पच्चक्काण होयज. इत्यादिक जणाववा माटे चारे विधि देखाड्या ॥ ४ ॥

हवे बीजा पण चार विधि छे ते देखाडे छे.

भणइ गुरु सीसो पुण, पच्चक्कामित्ति एव वोसिरई ॥
उवउगिछ पमाणं, न पमाणं वंजणछलणा ॥ ५ ॥

अर्थः—प्रथम (गुरु के०) गुरु जे पच्चक्काणनो करावनार होय ते पच्चक्काइ एम (भणइ के०) भणे एटले कहे ए प्रथम विधि जाणवो. (पुण के०) वली (सीसो के०) शिष्य जे पच्चक्काणनो करनार होय ते (पच्चक्कामि के०) पच्चक्कामि (इति के०) एम कहे ए बीजो विधि जाणवो. अने (एव के०) एम संपूर्ण पच्चक्काणे, गुरु (वोसिरई के०) वोसिरई कहे ए त्रीजो विधि जाणवो अने शिष्य जे पच्चक्काणनो करनार होय ते वोसिरामि कहे ए चोथो विधि जाणवो. ए चार विधि कह्या.

(इछ के०) इहां पच्चक्काणने विषे करतां तथा करावतां थकां पोताना मननो जे (उवउग के०) उपयोग एटले मननी धारणा छे तेज (पमाणं के०) प्रमाण छे एटले मनमांहे जे पच्चक्काण धार्युं होय तेज प्रमाण छे. परंतु (वंजण के०) अक्षर तेनी (छलणा के०) छलना छें एटले स्खलना छे अर्थात् अनाभोगने लीधे धारेला त्रिविहार पच्चक्काणथी बीजो कोइ चउविहार पच्चक्काणनोज पाठ उच्चरीयें ते वंजण छलना जाणवी ते (न पमाणं के०) प्रमाण नथी ॥ ५ ॥

हवे तेहिज उच्चारनो विशेष विधि कहे छे.

पढमे ठाणे तेरस, बीए तिन्निउ तिगाइ तइअंमि ॥
पाणस्स चउछंमि, देसवगासाइ पंचमए ॥ ६

अर्थः—हवे एनां पांच स्थानक छे तेमां (पढमेठाणे के०) प्रथम स्थानकने विषे कालपच्चक्काणरूप नोकारसी प्रमुख (तेरस के०) तेर पच्चक्काण जाणवां, तेनां नाम आगली गाथायें कहेशे, तथा (बीए के०) बीजा स्थानकने विषे विगइ, नीवी अने आयंबिल ए (तिन्निउ के०) त्रण पच्चक्काण जाणवां. तथा (तइयंमि के०) त्रीजा स्थानकने विषे (तिगाइ

के०) त्रिकादिक एटले एकासण, बीयासणने एकलगणादिक ए त्रण पच्चरकाण जाणवां, तथा (चउडंमि के०) चोथा स्थानकने विषे (पाणस्स के०) पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा इत्यादि अचित्त पाणीना छ आगार जाणवां, तथा (पंचमए के०) पांचमा स्थानकने विषे (देसावगासाइ के०) देशावकाशकादि पच्चरकाण करवा जाणवां ॥ ६ ॥

ए पांचस्थानक मांहेला प्रथमादि स्थानकना पृथक् पृथक् नेद कहे छे.

नमु पोरिसिसड्ढा, पुरिमवड्ढ अंगुठ माइ अड तेर ॥ निवि
विगइ अंबिल तिय, तिय डु इगासण एगठाणाई ॥ ७ ॥

अर्थः–प्रथम स्थानके तेर नेदनां नाम कहे छे. एक (नमु के०) नमुकारसी, बीजुं (पोरिसि के०) पोरिसि, त्रीजो (सड्ढा के०) सार्द्धपोरिसि ते दोढ पहोर पर्यंत, चोथो (पुरिम के०) पुरिमड्ढ ते बे पोहोर, पांचमो (अवड्ढ के०) अवड्ढ ते त्रण पहोरनुं पच्चरकाण ए पांचनी साथें पूर्वोक्त (अंगुठमाइ के०) अंगुष्ठ सहितादिक (अड के०) आठ नेद मेलवीयें तेवारें (तेर के०) तेर नेद थाय. तथा बीजा स्थानकें एक (निवि के०) निवी, बीजो (विगइ के०) विगइ अने त्रीजो (अंबिल के०) आयंबिल ए (तिय के०) त्रण पच्चरकाण जाणवा, तथा त्रीजा स्थानकने विषे एक (डु के०) बेंआसणुं, बीजुं (इगासण के०) एकासणुं अने त्रीजुं (एगठाणाइ के०) एकलगणादिक ए (तिय के०) त्रण पच्चरकाण जाणवा ॥ ७ ॥

हवे वली प्रकारांतरें उपवासादिक विधियें उपवासने दिवसें
पांच स्थानक केवी रीतें करवां, ते कहे छे.

पढमंमि चउडाइ, तेरस बीयंमि तइय पाणस्स ॥
देसवगासं तुरिए, चरिमे जहसंनवं नेयं ॥ ८ ॥

अर्थः–(पढमंमि के०) पहेले स्थानके (चउडाइ के०) चोथादिक एटले एक उपवासथी मांमीने चोथ छठ इत्यादि यावत् चोत्रीश नक्त पर्यंत पच्चरकाण करवा, तथा (बीयंमि के०) बीजा स्थानकने विषे नोकारसी, पोरिसी, सार्द्धपोरिसी, पुरिमड्ढ, अवड्ढ अने गंठसहियं, मुठसहियं, अंगुठसहियं, घरसहियं, प्रस्वेदसहियं, श्वासोश्वाससहियं, जलबिंडु सहियं, दीपसहियं ए (तेरस के०) तेर पच्चरकाण मांहेलुं हर कोइ पच्च

ख्काण करवुं, तथा (तइय के०) त्रीजा स्थानकने विषे (पाणस्स के०) पाणीना छ आगारनुं पच्चख्काण करवुं तथा (तुरिए के०) चोथा स्थानकने विषे (देसावगासं के०) देसावगासिकनुं पच्चख्काण करवुं तथा पांचमा स्थानकने विषे (चरिमे के०) छेहेडानुं पच्चख्काण जे दिवसचरिमं एटले रात्रिनुं डुविहार, त्रिविहार, चउविहार, पाणहार प्रमुखनुं पच्चख्काण ते (जहसंभवं के०) यथासंभवे जे पोताने करवानी इछा होय ते यथाशक्तीयें करवुं तथा भवचरिमादि छे ते पण यथासंभवे करवुं एम (नेयं के०) जाणवुं ए पांच मांहेलुं जे कोइ करवुं ते पच्चख्काण कहीयें ॥ ८ ॥

वली ए पच्चख्काण करवाना पाठभेद विशेष कहे छे.

तह मझ पच्चख्काणे, सु नपिहु सूरुग्गयाइवोसिरइ ॥
करण विहीउ न भन्नइ, जहावसीयाई बिअछंदे ॥ ९ ॥

अर्थः–(तह के०) तथा ए पद विशेष देखाडवा वाची छे (मझपच्चख्काणेसु के०) मध्यना बे स्थानक जे विगइ, नीवी अने आयंबिलनुं तथा एकासण, बियासण अने एकलगणानुं ए बेना छ पच्चख्काणोने विषे पृथग् पृथग् पच्चख्काणे (सूरुग्गयाइ के०) सूरे उग्गे विगइउ पच्चख्काइ इत्यादिक पाठ (नपिहु के०) वारंवार न कहेवो एटले प्रथम जे पच्चख्काण मांमे, तिहां सूरेउग्गए कहेवो परंतु पच्चख्काण पच्चख्काण प्रत्ये न कहेवो, तेमज (वोसिरइ के०) वोसिरइ तथा वोसिरामि ए पाठ पण अंतने विषे एक वार कहीयें पण वारंवार न कहीयें ए (करणविहीउ के०) करवानो विधि एटले पूर्वाचार्य परंपरायें एमज केता आव्या छे करवानो एहज विधि छे. माटे महोटा पुरुष पण (भन्नए के०) नथी भणता. (जहा के०) जेम (आवसीयाई के०) आवस्सियाए ए पाठ (बियछंदे के०) बीजा वांदणाने विषे कहेता नथी ए पण पूर्वाचार्यनी परंपरा छे तेम ईहां पण जाणी लेवुं ॥ ९ ॥

तह तिविह पच्चख्काणे, भन्नंति अ पाणग छ आगारा ॥
डुविहाहारे अचित्त, भोइणो तहय फासु जले ॥ १० ॥

अर्थः–(तह के०) तेमज वली (तिविह पच्चख्काणे के०) त्रिविहारना

पच्चरकाणने विषे तथा एकासणादि पच्चरकाणे प्रासुक निर्जीव जलपान संबंधि (पाणग के०) पानक एटले पाणीना (ब आगारा के०) ब आगार (जन्नंति के०) जणे ने कहेबे. तेनां नाम कहे बे. पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अबेण वा, बहुलेवेण वा, ससिबेण वा, असिबेण वा ए ब आगारनां नाम जाणवां. तथा (डुविहाहारे के०) द्विविधाहार पच्चरकाणने विषे (अचित्तजोइणो के०) अचित्तजोजी होय सचित्तजोज्य परिहरे तेने तथा (तह्य के०) तेमज जे एकासणा बियासणाविना (फासुजले के०) फाशु पाणी लेतो होय एवा सचित्त परिहारीने पण पच्चरकाणने विषे पाणीना ब आगार कहेवा. ए प्रथम विकल्प.

तथा अचित्तजोजी होय अने फासु निर्जीव पाणी पीतो न होय तेने पाणस्सना आगार न कहेवा ए बीजो विकल्प तथा जे सचित्तजोजी होय पण फासु पाणी पीये बे तो तेने पाणस्सना आगार ब कहेवा ए त्रीजो विकल्प तथा सचित्तजोजी बे अने फासु पाणी पीतो नथी तो तेने पाणस्सना ब आगार न कहेवां तथा सचित्तजोजी बे अने केवल खादिम, अशन अने स्वादिम रूप त्रण आहारना पच्चरकाणने उद्देशें रात्रिप्रमुखें तिविहार करे बे, तिहां पण पाणस्सना आगार न कहेवां, ए चोथो विकल्प ए चारविकल्प आगारना कह्या, अहीं तथा शब्दथी विशेष जाणवुं ॥१०॥

इत्तुच्चिय खवणंबिल,निवियाइसु फासुयं चि य जलं तु ॥
सह्वावि पियंति तहा, पच्चरकंति य तिहाहारं ॥ ११ ॥

अर्थः-(इत्तुच्चिय के०) एटलाज माटे अचित्तजोजी होय तेने (खवण के०) क्षपण एटले उपवासने विषे (अंबिल के०) आयंबिलने विषे, तथा (निवियाइसु के०) निवि आदिक एटले निवि एकासणादिक त्रिविहार परच्चरकाण तथा आदिशब्दथी सचित्त परिहारने विषे (चिय के०) निश्चय थकी (फासुयं के०) फाशुक अचित्त (जलं के०) जल ते (तु के०) जेम यति प्राशुक निर्जीव पाणी पीये (तहा के०) तेनी परे (सह्वावि के०) श्रावक पण फाशुक पाणी (पियंति के०) पीये तेने पण एहिज आगार कहीयें, परंतु ते (अ के०) वली (तिहाहारं के०) तिविहार पच्चरकाण (पच्चरकंति के०) पच्चरके तेवारेंज होय पण डुविहारें न होय.

सचित्तनोजीने पण उपवास, आयंबिल, निंविनुं पच्चरकाण त्रिविहारे होय ते उष्ण पाणी पीये अने एकासणादि पच्चरकाणनो नियम नथी. ए मां तो डुविहार, त्रिविहार, चउविहार यथासंनवें होय ॥ ११ ॥

चउहाहारं तु नमो, रत्तिंपि मुणीण सेस तिह चउहा॥

निसि पोरिसि पुरिमे गा,सणाइ सड्डाण डुतिचउहा॥१२॥

अर्थः– (नमो के०) नोकारसीनुं पच्चरकाण तथा (रत्तिंपि के०) रात्रिनुं पच्चरकाण पण (मुणीण के०) मुनिने, यतिने (तु के०) वली नियमा (चउहाहारं के०) चउविहारोज होय अने (सेस के०) शेष पोरिसी आदिक पच्चरकाण ते मुनिने (तिहचउहा के०) त्रिविहारा तथा चउविहारा यथासंनवे होय, हवे श्रावक आश्रयी कहे छे. (निसि के०) रात्रिनुं पच्चरकाण, (पोरिसि के०) पोरिसीनुं पच्चरकाण, (पुरिम के०) पुरिमड्ढनुं पच्चरकाण अने (एगासणाइ के०) एकासणादिक पच्चरकाण जे छे ते (सड्डाण के०) श्रावकने अर्थें (डु ति चउहा के०) डुविहारें, तिविहारें अने चउविहारें ए त्रण प्रकारें यथायोग्यें होय तिहां नवकारसी अने पोरसीतो श्रावकने चउविहार पच्चरकाणेज होय, अने शेष पूरिमड्ढादि पच्चरकाण तथा रात्रिनुं दिवस चरिमादि पच्चरकाण ते डुविहार तिविहार अने चउविहारे यथायोग्यें होय, परंतु ग्रंथांतरें एटलो विशेष छे जे एकासणादि त्रिविहार पच्चरकाणीने रात्रें पाणहार होय अने डुविहार पच्चरकाणे एकासणादिकने विषे रात्रें चउविहार होय तथा केटलेएक स्थानकें श्रावकने पण पोरिसी तिविहारें बोली छे. अने डुविहार पच्चरकाणे रात्रें तिविहार होय परंतु ते कारणिक जाणवुं, व्यवहारें समजवुं नही. इत्यादि बीजी विशेष वात ग्रंथांतरथी जाणवी, एटले चार विधिनुं बीजुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल चौद थया ॥ १२ ॥

हवे चार प्रकारनां आहारनुं त्रीजुं द्वार कहे छे.

खुहपसम खमेगागी, आहारिव एइ देइ वा सायं॥

खुहिउ वि खिवइ कुठे, जं पंकुवमतमाहारो ॥१३॥

अर्थः–प्रथम सामान्य प्रकारें आहारनुं लक्षण कहे छे. जे (खुहपसम के०) क्षुधाने उपशमववाने अर्थे (खम के०) समर्थ होय एवो जे

(एगागी के०) एकाकी इव्य होय तथा वली (आहारिव के०) आहा रने विषे पण (एइ के०) एति एटले आवे एवा लवण हिंग्वादिक जे आ हारमांहे (सायं के०) स्वाद प्रत्यें (देइ के०) आपे ते, वली (जं के०) जे (पंकुवम के०) पंकोपम एटले कादवनी परें असार होय कादवनी उपमा धारण करे एवुं कादवसरखुं इव्य होय परंतु (खुहिउवि के०) क्षुधितोपि ए टले क्षुधित थको पण(कुठे के०) कोठामां उदरमां (खिवइ के०) क्षिपति एटले क्षेपवे छे तो (तं के०) ते सर्व (आहारो के०) आहार जाणवो ॥ १३ ॥

हवे ए आहारना मूल चार नेद छे ते कहे छे.

असणे मुग्गोयण स, तु मंम पय खजरब्ब कंदाई ॥
पाणे कंजिय जव कयर, कक्कोडोदगसुराइजलं ॥ १४ ॥

अर्थः—तिहां एक (असणे के०) अशन ते, आशु एटले शीघ्र जे क्षुधाने उपशमावी नाखे तेने अशन कहीयें,तेने विषे (मुग्ग के०) मगादिक सर्व कठोर जाति जाणवी. तथा (उयण के०) उदन ते चावल नात प्रमुख सर्व उदन जाति जाणवी. तथा (सत्तु के०) साथुउ (मंम के०) मांमा, रोटली, पक्वान्न, रोटला, पूडा प्रमुख. (पय के०) दूध, दही, घृत, तेल मारवण, विगयादि प्रमुख (खज्ज के०) खाजलां पक्वान्न खीर सुकुमारिका लापसी दहींथरां प्रमुख पक्वान्न. (रब्ब के०) राबडी घेंस प्रमुख (कंदाइ के०) कंदादिक ते सूरणकंदादिक जाणवा. तथा तेमज, तुलसी नागरवल्यादि पत्र विना सर्व जातना फल फूल पत्र सर्वकंद सर्व वनस्पतिविकार शाकादि कूल्लरी चूरिम पर्पिटिकादि सर्व वस्तुनी जाति अशन मांहे आवे, तथा लवण, हिंग, सूया, अजमो, विरयाली, धाणा दिके तल्यां एक वेसण पण अशनमां आवे,इत्यादि सर्व अशनजाति समजवी.

हवे बीजो (पाणे के०) पानने विषे तिहां जेने पीजीयें ते पाणी क हीयें तेमां अपकाय ते नदी, तलाव, इह, समुइ इत्यादि पाणीना आ श्रय संबंधि सर्व स्थलोनुं पाणी जाणवुं. तथा (कंजिय के०) कांजीनुं पाणी बासनी आब, तथा (जव के०) यवनुं धोयण, (कयर के०) केरनुं धोयण, आमलादिकनुं धोयण, डाक्नुं धोयण, तथा (कक्कडोदग के०) काकडी प्रमुख सर्व फलनां धोयणनुं उदक एटले पाणी, तथा

(सुराइजलं के०) सुरादि जल ते मदिरादिकनां पाणी जाणवा, ए अन्न द्रव्यमां भले ढे. एमां आदिशब्दथी डाक्षादिकना आसव, नालिकेरादिकना पाणी, इक्षुरस, सौवीर, तक्र ते बाश इत्यादि सर्व पदार्थ पाणीने विषे कल्पे ढे, तथापि इक्षुरस, तक्र ते बास अने मदिरादि तथा नालिकेरादिकनां जलने सांप्रत जीतव्यवहारें अशनमां गणीयें ढैयें ॥ १४ ॥

खाइमे नत्तोस फलाइ, साइमे सुंठि जीर अजमाइं ॥ महु गुड तंबोलाइ, अणाहारे मोय निंबाई ॥ १५ ॥ दारं ॥ ३ ॥

अर्थः—हवे त्रीजो खादिम आहार कहे ढे. (ख के०) आकाश एटले मुखनुं विवर कहीयें. तेने पूरवाने लगारेक नूख मात्र नांजे, पण अन्नादिकनी परें तृप्ति न करे, परंतु कांइएक अशनसमान थाय ते खादिम वस्तु कहीयें. ते (खाइमे के०) खादिमने विषे तिहां प्रथम (नत्तोस के०) नक्तोष एटले शेकेला धान्य चणा प्रमुख तथा अखोड सुखासिका सर्व जाणवा, तथा आंबा केलां प्रमुख सर्व (फलाइ के०) फलादिक जाणवां, तथा फलजातिनी सुखडी मेवा सर्व कयरी पाकादिकनी जाति, गुंदपाकादिक, डाक्ष, चारोली प्रमुख मेवा जातिनुं सर्व पक्कान्न तथा खांम शाकरादि तेना विकार जे खांम कातली प्रमुख ते सर्व खादिमने विषे लीधा कल्पे. परंतु जीतव्यवहारें प्रसिद्ध पणे अशन मध्ये लेपकृत्य उत्तम द्रव्यमां गण्या ढे, परंपरायें इत्यादिक सर्व खादिम "नत्तासं दंताइ, खजुर नालिकेर आइं दरकाइं ॥ कक्कडि अंबग फणसाइ, बहुविहं खाइमे नेयं ॥ १ ॥ इत्यादिक विचार सर्व प्रवचनसारोद्धार ग्रंथथी जाणवुं ॥ ए त्रीजो खादिम आहार कह्यो ॥

हवे चोथो (साइमे के०) स्वादिमने विषे शुं कल्पे? ते कहे ढे. तिहां प्रथम ते जे आस्वादें करी लइयें अथवा आहारादिक जे कीधां होय ते सर्व तेना स्वादमां विनाश पामे, लयलीन थाय ते स्वादिम कहीयें तेमां (सुंठि के०) सूंठ, (जीर के०) जीरुं, (अजमाइ के०) अजमादिक, आदि शब्दथकी पीपर, मरिच, हरडे, बेहेडां, आमलां मरी, पींपलीमूल, पीपल, अजमोद, आजो, काजो, काथो, कुलिंजर, कसेलो, कयसेलियो, मोथ, जेठीमध, पुष्करमूल, एलची, बाबची, चिणकबाब, कपूर, तज,

तमालपत्र, नागकेसर, केशर, जायफल, लविंग, हिंगुलाष्टक, हिंगुत्रेवीसो, संचल, सैंधव, यवखार, खयरसार, कोठवली, गोली सर्व जातिनी अशना दिमां न जले तेवी जाणवी, सर्व जातनां दातण, तुलसी पत्र, श्रीपत्र, खार, सोया, मेथी, गोमूत्रादिकना कीधा अन्नमेलादिकनी गोलीयो, चित्रो, पिंमार्थ. कोइएक तो पिंमार्थने खजुर कहे छे. परंतु ग्रंथांतरें एने सूर णादि कंदना खारचूंदा करे छे. तेने कहे छे. कर्पूर, कचूरो, त्रिगडु, पंच पटोल, बिडलवण, इत्यादिक अनेक जातिना स्वादिम आहार जाणवा.

तथा (महु के०) मधु एटले मध अने (गुड के०) गोल, खांम, साकर तथा (तंबोलाइ के०) तंबोलादिक ते विविध जातिनो तंबोल नाग रवेलीना पान तथा सोपारी प्रमुख ए पण स्वादिम जाणवा.

हवे अणाहार वस्तु कहे छे. जे पूर्वे कहेला चारे आहार मांहेला कोइ पण आहारमां न आवे, परंतु चउविहार उपवासें तथा रात्रिने चउ विहारें वावरी कल्पे, ते अणाहार वस्तु जाणवी. तेनां नाम कहे छे.

(अणाहारे के०) अनाहारने विषे कल्पे ते वस्तु कहे छे. (मोअ के०) लघु नीति जाणवी, अने (निंबाइ के०) निंबादिक ते निंबनी छाली पानडा प्रमुख पांचे अंग ए सर्व अनाहार वस्तु जाणवी,आदि शब्द थकी त्रिफला, कडू, किरियातुं, गलो,नाहि, धमासो, केरडामूल, बोरछालि मूल, बावलछालि, कंथेर मूल, चित्रो, खयरसार, सूखड, मलयागरु, अगरु, चीड, अंबर, कस्तूरी, राख, चूनो, रोहिणी वज, हलिद्द, पातली, आस गंधी, कुंदरु, चोपचीनी, रिंगणी, अफिणादिक सर्वजातिना विष, साजि खार, चूनो, जाको, उपलोट, गूगल, अतिविष, पूंयाड, एलीउ, चूणीफल सूरोखार, टंकणखार, गोमूत्र आदें देइने सर्व जातिना अनिष्ट मूत्र, चोल, मंजीठ, कणयरमूल, कुंआर, थोहर, अर्कादिक पंचकूल, खारो, फटकडी, चिनेड इत्यादिक वस्तु सर्व अनिष्ट स्वादवान् छे, अने इछा विना जे चीज मुखमां प्रक्षेप करीयें ते सर्व अणाहार जाणवुं. ए उपवासमां पण लेवी सूजे, अने आयंबिल मध्ये पाणहार पच्चख्काण कर्या पछी सूजे ए आहारनुं त्रीजुं द्वार थयुं उत्तर नेद अढार थया ॥ १५ ॥

हवे नवकारसी प्रमुखना आगारनी संख्यानुं चोथुं द्वार कहे छे.

दो नवकार छ पोरिसि, सग पुरिमड्ढे इगासणे अठ ॥
सत्तेगठाण अंबिल, अठ पण चउत्थि छ प्पाणे ॥१६॥

अर्थः–जे मूलगुण उत्तरगुण रूप पच्चख्काण राखवाने अर्थे वाडी रूप होय ते आगार जाणवा. तिहां अपवाद पदें द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावादिकें विचारता मूलगुण पच्चख्काणने विषे अन्नछणादिक चार आगार जाणवा. अने उत्तरगुण पच्चख्काणने विषे यथोक्त रीतें आगल कहेशे ते प्रमाणे सर्वत्र आगार जाणवा. ते सर्व मली एकवार उच्चख्यां थकां बावीश आगार थाय, यद्यपि अन्नछउससिएणादिक शोल आगार काउस्सग्गना छे तथा समकितना रायाभिउगेणादिक छ आगार छे तेमज एक चोलपट्टागारेणं छे, एवं सर्व मली ४५ आगार थाय छे, परंतु अहीं आं तो दश पच्चख्काणने विषे बावीश आगारनुंज काम छे माटे ते कहे छे.

(नवकार के०) नोकारसीना पच्चख्काणने विषे (दो के०) बे आगार जाणवा. (पोरिसि के०) पोरिसीना पच्चख्काणने विषे (छ के०) छ आगार, तेम सार्द्ध पोरिसिना पच्चख्काणे पण छ आगार, (पुरिमड्ढ के०) पुरिमार्द्ध ना पच्चख्काणने विषे (सग के०) सात आगार, (इगासणे के०) एकास णाना पच्चख्काणने विषे (अठ के०) आठ आगार, (एगठाण के०) ए कलगणाना पच्चख्काणने विषे (सत्त के०) सात आगार, (अंबिलअठ के०) आयंबिलना पच्चख्काणने बिषे आठ आगार जाणवा. (चउत्थि के०) चो थभक्तें एटले उपवासना पच्चख्काणने.विषे (पण के०) पांच आगार, (प्पा णे के०) पाणस्सना पच्चख्काणने विषे (छ के०) छ आगार जाणवा॥१६॥

चउ चरिमे चउभिग्गहि, पण पावरणे नवठ निव्वीए॥
आगारुक्खित्तविवेग, मुत्तु दव विगइ नियमिठ ॥ १७॥

अर्थः–(चरिमे के०) दिवसचरिमना पच्चख्काणने विषे (चउ के०) चार आगार जाणवा, (अभिग्गहि के०) अभिग्रहना पच्चख्काणनें विषे (चउ के०) चार आगार जाणवा, (पावरणे के०) प्रावरण एटले वस्त्र मूकवाना पच्चख्काणने विषे (पण के०) पांच आगार जाणवा, (नवठ

निव्वीए के०) निवीना पच्चरकाणने विषे नव आगार पण होय अने आठ आगार पण होय, तिहां जे पिंम अने द्रव्य रूप बेहु विगइनुं पच्चरकाण करे तेहने नव आगार जाणवा, अने जे एकली (दवविगइ के०) द्रव्यविगइमात्रनुं (नियमि के०) नियम करे तेने (उरिकत्तविवेग के०) उरिकत्तविवेगेणं ए (आगार के०) आगार तेने (मुत्तु के०) मूकीने बाकीना (अठ के०) आठ आगार होय ॥ १७ ॥ तेना यंत्रनी स्थापना आगल करी छे.

हवे प्रत्येक पच्चरकाण संबंधि आगारोनां नाम कही देखाडे छे.

अन्न सह उ नमुक्कारे, अन्न सह पच्छ दिसय साहु सव ॥
पोरिसि छ सड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढे सत्त समहत्तरा ॥ १८ ॥

अर्थः—(नमुक्कारे के०) नवकारसिना पच्चरकाणने विषे एक (अन्न के०) अन्नछणाजोगेणं, बीजो (सह के०) सहस्सागारेणं ए (दु के०) बे आगार जाणवा. तथा एक (अन्न के०) अन्नछणाजोगेणं, बीजो (सह के०) सहसागारेणं, त्रीजो (पछ के०) पछन्नकालेणं, चोथो (दिसय के०) दिसामोहेणं, पांचमो (साहु के०) साहुवयणेणं, छठो (सव के०) सवसमाहिवत्तियागारेणं ए (छ के०) छ आगार ते (पोरिसि के०) पोरिसीना पच्चरकाणने विषे जाणवा. तेमज (सड्ढपोरिसि के०) सार्ध पोरिसीना पच्चरकाणने विषे पण एहिज छ आगार जाणवा. तथा वली एज पोरिसिनां छ आगारने एक (महत्तरा के०) महत्तरागारेणं ए आगारें करी (स के०) सहित करीयें तेवारें (सत्त के०) सात आगार थाय. ते (पुरिमड्ढे के०) पुरिमड्ढ तथा अवड्ढना पच्चरकाणने विषे जाणवा ॥१८॥

हवे एकासणा तथा एकलगणानां आगार कहे छे.

अन्न सहस्सागारिय, आउंटण गुरुअ पारि मह सव ॥
एग बिआसणि अठउ, सग इगठाणे अउट विणा ॥१९॥

अर्थः—एक (अन्न के०) अन्नछणाजोगेणं, बीजो (सहस्सा के०) सहस्सागारेणं, त्रीजो (सागारिय के०) सागारिआगारेणं, चोथो (आउंटण के०) आउट्टणपसारेणं, पांचमो (गुरुअ के०) गुरुअब्भुठाणेणं, छठो (पारि के०) पारिठावणियागारेणं, सातमो (मह के०) महत्तरा

गारेणं, आठमुं, (सव्व के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए (अठ्ठ के०) आठ आगार ते (एगबिआसणि के०) एकासण अने बियासणना पच्चरकाणने विषे जाणवा. तथा एज आठमांथी एक (अउटविणा के०) आउंटणपसा रेणं ए आगारविना शेष एकासणाने विषे जे कह्या छे तेज (सग के०) सात आगार ते (इगठाणे के०)एकलठाणाना पच्चरकाणने विषे होय॥१ए॥जिहां जमणा हाथें जमे,मात्र कोळीया लेवानेज हाथ फेरवे, परंतु अंगोपांगनेतो खरज खणवादिकने कामे पण हलावे नही ते एकलठाणुं जाणवुं ॥ १ए॥

हवे विगइ, नीवि तथा आयंबिलना आगार कहे छे.

अन्न सह लेवा गिह, उक्खित्त पडुच्च पारि मह सव्व॥
विगइ निव्विगए नव, पडुच्च विणु अंबिले अठ ॥२०॥

अर्थः– एक (अन्न के०) अन्नबणाभोगेणं, बीजो (सह के०) सह स्सागारेणं, त्रीजो (लेवा के०) लेवालेवेणं, चोथो (गिह के०) गिहब संसठ्ठेणं, पांचमो (उक्खित्त के०) उक्खित्तविवेगेणं, छठ्ठो (पडुच्च के०) पडुच्चमक्खिएणं, सातमो (पारि के०) पारिठ्ठावणियागारेणं, आठमो (मह के०) महत्तरागारेणं, नवमो (सव्व के०) सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, ए (नव के०) नव आगार ते (विगइ के०) विगइ तथा (निव्विगए के०) निविगइ मळी बे पच्चरकाणने विषे जाणवा, तथा ए नवमांहेथी एक (पडुच्चविणु के०) पडुच्चमक्खिएणं ए आगार विना शेष (अठ के०) आठ आगार जे विगइ अने नीविना कह्या तेज (अंबिले के०) आयंबिलना पच्च रकाणने विषे जाणवा. जिहां आम्ल एटले खाटो चोथो रस तेहथी निव र्तवुं ते आयंबिल कहीयें तेना त्रण प्रकार छे एक उदन, बीजो कुल्माष, त्रीजो साथुआदिक ए त्रण भेदें छे. अथवा (आचम के०) उसामणनी पेरें जिहां अन्नादिक नीरस थइ निकळे तेने आयंबिल कहीयें ॥ २० ॥

हवे उपवासनां आगार कहे छे.

अन्न सह पारि मह सव्व, पंच खवणे छ पाणि लेवाई ॥
चउ चरिमंगुठ्ठाइ, भिग्गहि अन्न सह मह सव्वे ॥ २१ ॥

अर्थः–एक (अन्न के०) अन्नबणाभोगेणं, बीजो (सह के०) सहस्सागा रेणं, त्रीजो (पारि के०) पारिठ्ठावणियागारेणं, चोथो (मह के०) महत्तरा

गारेणं, पांचमो (सव्व के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए (पंच के०) पांच आगार (खवणे के०) उपवासना पच्चख्काणनेविषे जाणवा. तथा एमां अचित्त पाणी पीये माटे (पाणि के०) पाणस्सना पच्चख्काणने विषे लेवेणवा अलेवेणवा, अछेणवा बहुलेवेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा, ए (लेवाइ के०) लेपादिक (छ के०) छ आगार जाणवा, तथा एक (अन्न के०) अन्नछणाभोगेणं, बीजो (सह के०)सहस्सागारेणं, त्रीजो(मह के०) महत्तरागारेणं, चोथो (सव्व के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ए(चउ के०)चार आगार ते(चरिम के०)दिवस चरिमना पच्चख्काणने विषे तथा(अंगुठाइ निग्गहि के०) अंगुठमुठिसहियादिक अभिग्रहना पच्चख्काणने विषे जाणवा॥ २१ ॥

पच्चख्काणना आगारोनी संख्याना यंत्रनी स्थापना.

अंक.	पच्चख्काणनाम.	संख्या.	आगारोनां नाम.
१	नोकारसी.	२	अन्न० ॥ सह० ॥
२	पोरिसी.	६	अन्न०॥ सह०॥ पच्छन्न०॥ दिसामो०॥ साहु०॥ सव्व०
३	साढपोरिसी.	६	" " " " " "
४	पुरिमड्ढ.	७	अन्न० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० महत्त०॥
५	अवड्ढ.	७	" " " " " " "
६	एकासणुं.	८	अन्न०सह० सागा०आउं०गुरु०पारि० मह०सव्व०
७	बियासणुं.	८	" " " " " " " "
८	एकलठाणुं.	७	अन्न० सह० सागारि० गुरु० पारि० मह० सव्व०
९	नीवी.	९	अन्न० सहस्सा० लेवा०गिहत्थ०उक्खित्त०पडुच्च० पारि० महत्त० सव्व०
१०	विगइ.	९	(same as above)
११	आयंबिल.	८	अन्न०सह०लेवा०गिह०उक्खि०पारि०मह०सव्व०
१२	उपवास.	५	अन्न०सह०पारि०मह०सव्व०चोलपट्टागारयतिने.
१३	पाणहार.	६	लेवे० अले० अछे० बहु० ससित्थ० असित्थे०
१४	अभिग्रह संकेत	४	अन्न० सह० मह० सव्व०
१५	दिवसचरिमं.	४	" " " "
१६	भवचरिमं.	४	" " " "
१७	देसावगासिक.	४	" " " "
१८	समकेतना.	६	राया० घणा० बला० देवा० गुरुनि० वित्ति०

इहां उक्खित्तविवेगेणंए जे आगार छे ते आगार पिंम विगइ आश्रयी छे, ते पिंम विगय जणाववा माटे विगयना भेद कही देखाडे छे. परंतु विग यना भेदो कहेवानुं द्वार तो आगल आवशे हाल आंहीआंतो मात्र पिंम विगय उलखाववाने निमित्तेंज कहे छे.

दुद्ध महु मज्ज तिल्लं, चउरो दवविगइ चउर पिंमदवा ॥
घय गुल दहियं पिसियं, मरकण पक्कन्न दो पिंमा ॥२१॥

अर्थः—एक (दुद्ध के०) दुग्ध, बीजो (महु के०) मधु त्रीजो (मद्य के०) मद्य एटले मदिरा अने चोथो (तिल के०) तैल ए (चउरो के०) चार (दवविगइ के०) द्रव्य विगय छे ए चार ते ढीलुं विगय होय रस रूप होय, माटे एने रस विगय कहीयें अने एक (घय के०) घृत, बीजो (गुल के०) गोल, त्रीजो (दहियं के०) दधि एटले दही अने चोथो (पिसियं के०) पिशितं ते मांस ए (चउर के०) चार विगय जे छे ते (पिंमदवा के०) पिंमद्रव्य रूप रसरूप जाणवा. ए चार पिंम होय एनुं द्रव्य कोइ वेला द्रव्य होय, तथा कोइ वेला पिंम रूप थीणो पिंम होय, तथा एक (मरकण के०) माखण, बीजो (पक्कन्नं के०) पक्कान्न ए (दो के०) बे कडा विगय जाणवां ते स्वभावे करीने (पिंमा के०) पिंम रूप होय कठिन होय, माटे एने पिंमविगय कहीयें. ए दस वि गय कह्या. इहां उक्खित्तविवेगेणं ए आगार जे छे ते पिंम विगयनो छे ते ज णाववा माटे आ गाथा कही ॥ २१॥

हवे केटलाएक पच्चरकाण मांहोमांहे आगार तथा पाठ उच्चार विशेपें करी सरखा छे एटले तेना आगार पण मांहो मांहे सरखा छे, अने पाठ पण सरखो छे ते कहे छे.

पोरिसि सड्ढमवड्ढं, दुभत्त निविगइ पोरसाइ समा ॥
अंगुठ मुठि गंठी, सचित्त दवाइं भिग्गहिअं ॥ २२ ॥

अर्थः—(पोरसाइसमा के०) पोरिसि आदि देइने पच्चरकाण जे छे ते स रखा जाणवा, एटले एक पोरिसी अने बीजी (पोरिसिसड्ढ के०) सार्द्ध पो रिसि ए बे सरखा जाणवा एटले पोरिसीने सार्द्धपोरिसीना पच्चरकाणना पा

तनो उच्चार तथा आगार पण सरखा छे तेमज पुरिमड्ढ ने (अवड्ढ के०) अवड्ढनुं पच्चरकाण पण सरखुं जाणवुं, तथा एकासणुं अने (इग्गत्त के०) द्विगत्त एटले बीआसणानुं पच्चरकाण अने आगार पण सरखा जाणवा, तथा विगइ ने (निव्विगइ के०) नीविनुं पच्चरकाण अने आगार पण सरखा जाणवा तथा (अंगुठ के०) अंगुठसहियं, (मुठि के०) मुठिसहियं, (गंठी के०) गंठिसहियं, (सचित्तदव्वाइ के०) सचित्त द्रव्यादिकनुं पच्चरकाण एटले सचित्त द्रव्यादिक एटले सचित्त द्रव्यादिकना पच्चरकाण जे देसावगासिक तेमज दिवसचिरमादिना पच्चरकाण ए सर्व (अभिग्गहियं के०) अभिग्रह पच्चरकाण कहेवाय, तेनां पण मांहोमांहे पाठ तथा आगार सरखां जाणवां. परंतु कालप्रमाणादिकें तथा स्थानकें तो फेर फार होयज ॥ २३ ॥

हवे ए सर्व आगारोना अर्थ कहे छे.

विस्सरण मणाभोगो, सहस्सागारो सय मुहपवेसो ॥
पच्छन्नकाल मेहाई, दिसि विवज्जासु दिसिमोहो ॥ २४ ॥

अर्थः—जे (विस्सरण के०) विस्मरण थइ जाय ते (अणाभोगो के०) अनाभोगथी थाय एटले पच्चरकाणनो उपयोग अनाभोग थकी वीसरी जाय तेवारें अजाण पणे कांइ मुखमां प्रक्षेप करे तो तेथी पच्चरकाण भंग न थाय ए प्रथम अणाभोगेणं आगार कह्युं एनी साथें अन्नत्थ शब्द जोडीयें तेवारें अन्नत्थणाभोगेणं एवुं नाम थाय माटे तेनुं कारण समजवाने नीचें अर्थ लखीये छये. अन्नत्थणाभोगेणं एटले अन्यत्र अने अनाभोगात् तिहां अन्यत्र एटले जे आगार कह्या होय. ते आगार वर्जीने बीजा सर्वत्र स्थानकें पच्चरकाण पालवानी यत्ना राखवी. अन्नत्थ ए पद सर्वें आगारें जोडवुं, एम जाणवुं तथा अनाभोगात् एटले वीसरवाथकी अर्थात् पच्चरकाणनो उपयोग वीसरते अजाणतां कांइ मुखमां प्रक्षेप कराइ जाय पछी पच्चरकाण सांभरी आवे तेवारें तरत मुखथकी त्याग करे तेथी पच्चरकाण भंग थाय नही अथवा अजाणे मुखथकी हेठे उतर्युं पछी कालांतरें अथवा तुरत स्मरणमां आवे तोपण पच्चरकाणनो भंग थाय नही परंतु शुद्धव्यवहार छे तेथी फरी निःशंक न थाय ते माटे यथायोग्य प्राचश्चित्त लेवुं ए वात सर्व आगारोने विषे जाणवी माटे अहीं पीठिकारूपे लखी.

बीजो (सहसागारो के०) सहसात्कार तें (सयमुह् के०) पोतानी मेले आवी मुखमांहे (पवेसो के०) प्रवेश करे ते जाणवुं. एटले पच्चरकाण कीधुं ठे तेनो उपयोग तो वीसर्यो नथी पण कार्य करवाना प्रवर्त्तनयोग लक्षण सहसात्कारें स्वनावेंज पोताना मुखमां कांइ प्रवेश थइ जाय जेम दधि मथतां थकां ढांटो उडीने मुखमां पडी जाय अथवा अन्नादिकनो कण मुखमां पडी जाय तथा चउविहार उपवास होय अने वर्षाकालमां मेघनो ढांटो मुखमां पडी जाय तो पच्चरकाण नांगे नही.

त्रीजो (पन्नन्नकाल के०) प्रन्नन्नकाल ते कालनी प्रन्नन्नता जाणवी. जेम (मेहाइ के०) मेघादि एटले मेघना वादले करीने ढंकाइ गयेला सूर्यनी खबर न पडे तथा आदिशब्दथकी दिग्दाह, ग्रहादिक, रजोवृष्टि, पर्वत प्रमुख सर्व जाणी लेवुं. तिहां पर्वत अने वादला प्रमुखे अंतरिक्ष, सूर्य देखाय नही अथवा रज उडवे करी न देखाय तेवारें पोरिसीयादिकना कालनी खबर न पडतां अपूर्ण थयेलीने संपूर्ण थयेली जाणीने जमवा बेसी जाय तो पच्चरकाण नंग न थाय परंतु जाणवामां आवे तो पढी अर्धो जम्यो थको होय तो पण एमज बेशी रहे, अने पोरिसी आदि पूर्ण थाय पढी जमे तो नंग न थाय, परंतु हजी पूर्ण थइ नथी एवुं जाणवामां आवे तो पण पडखे नही अने जमे तो पच्चरकाण नंग थइ जाय ॥

चोथो (दिसिमोहो के०) दिसामोहेणंते (दिसिविवक्षासु के०) दिशिना विपर्यास पणा थकी जेवारें दिङ्मूढ थइजाय तेवारे पूर्वने पश्चिम करी जाणे अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे एम खबर न पडवाथी अपूर्ण पच्चरकाणे पण पूर्णकाल थयो जाणीजे जमे तो पच्चरकाण नंग नही अने दिङ्मोह मटी गया पढी जेवारे जाणवामां आवे तेवारें पूर्वनी पेठे अर्धो जम्यो थको होय तो पण पच्चरकाण पूर्ण थाय तिहांसुधी एमज बेशी रहे अने काल पूरो थया पढी जमे ॥ २४ ॥

साहुवयण उग्घाडा, पोरिसि तणु सुठया समाहित्ति ॥
संघाइ कज्ज महत्तर, गिहब बंदाइ सागारी ॥ २५ ॥

अर्थः—पांचमुं (उग्घाडापोरिसि के०) उग्घाड पोरिसी एवो (साहुवयण के०) साधुनुं वचन एटले बहुपडिपुण्णा पोरिसी एवुं सांजलीने जो

अपूर्ण पच्चरकाणे जमे तो पण पोरिसी नंग न थाय, पढी कोइकना क हेवा उपरथी जाणवामां आवे के हजी लगण पोरिसीनो काल पूर्ण थयो नथी तेवारें पूर्वोक्त रीतें अर्द्धनुक्त रहे अने पोरिसीनो काल पूर्ण थया पढी जमे ए साहुवयणेणं नामें आगार जाणवो.

बढो (तणु के०) शरीर तेनुं (सुब्या के०) स्वस्थता जे निराबाध पणुं तेने (समाहि के०) समाधि (इति के०) एम कहीयें एटला माटे ए सवसमाहिवत्तियागारेणं कहेवाय इहां तीव्रशूलादिक रोग उपने थके, आर्त्त रौड्नी सर्वथा निराझें जे शरीरनी स्वस्थता ते सर्व समाधि कहीयें तत्प्रात्ययिक जे कारण ते सर्वसमाधिवर्तिताकार कहीयें ते समाधिने निमित्तें जे औषध पथ्यादिकनी प्रवृत्तिने विषे अपूर्ण प्रत्याख्याने जमतां पण पच्चरकाण नंग थाय नही.

सातमुं (संघाइकज्ज के०) संघादिकनुं कोइ कार्य उपने थके वडेरानी आज्ञा पाले तेने (महत्तर के०) महत्तरागार कहीयें, ते आवीरीतें के जे पच्चरकाण कीधुं ढे तेनी अनुपालना थकी पण जो निर्ज्जरानी अपेक्षायें विचारीयें तो महोटुं निर्ज्जरा लान्न हेतु कार्य ढे, अने अन्य पुरुषांतरें ते कार्य असाध्य ढे, बीजा कोइ पुरुषथी थाय तेम नथी एवो कोइ संघनुं तथा आदि शब्द थकी चैत्य ग्लानादिकना कार्ये प्रयोजन ढे तेहिज आकार ते महत्तराकार कहीयें. तिहां अपूर्ण काले जमतां पच्चरकाण नंग न थाय.

आठमुं (गिहब के०) गृहस्थनी नजर पडे तथा (बंदाइ के०) सर्प बंदिवानादिकनी नजर पडे तेने (सागारि के०) सागारिआगारेणं कहीयें तिहां आगार एटले घर तेणे करी सहित ढे जे तेने सागारि कहीयें तेनी नजरे देखतां साधुने आहार करवुं कल्पे नही. केमके एथकी प्रवचनोपघातादिक बहु दोषनो संनव थाय माटे साधुने जमतां थकां जो सागारी आवी पडे अने ते जो चल होय एटले तरत जवावालो होय तो क्षणेक बेशी रहे अने तेने स्थिर रहेतो जाणे तो स्वाध्यायादिकना नंग पातक नय थकी अन्यत्र जइने तेहिज आसने जमे तो पच्चरकाण नंग न थाय. ए जेम गृहस्थने सागारी कहीयें तेमज जेहनी दृष्टें देखतां अन्न खाइयें ते पचे नही तेने पण सागारिक कहीयें तथा उपलक्षणे आदि शब्द थकी सर्प अग्नि प्रदीप, नरेली, पाणीनी रेल आवे तथा गृहपातादिक एटले घर पडतुं होय

ए आगार पण लेवा इत्यादिक उपद्रवोना कारणे अन्यस्थानके जइ ज मतां पण पच्चरकाण न्नंग न थाय ॥ १५ ॥

आउंटण मंगाणं, गुरु पाहुण साहु गुरु अनुघाणं ॥
परिठावण विहि गहि ए, जइण पावरण कडिपट्टो ॥ १६ ॥

अर्थः—नवमो (अंगाणं के०) पग प्रमुख अंग तेनु (आउंटण के०) आकुंचन एटले संकोचवुं तथा पसारवुं ते अणखमते करवुं पडे एटला माटे एने आउट्टणपसारेणं आगार कह्यीयें तेथी जमता थकां कांइक पोताना आसनादिक चलायमान थाय तो पच्चरकाण न्नंग न थाय.

दशमो (गुरु के०) पोताना दीक्षागुरु आवे अथवा कोइ महोटो (पाहुणसाहु के०) प्राहुणो साधु आवे थके जमतां उठवुं पडे तो (गुरुअनुघाणं के०) गुरुअप्रुघाणेणं आगार थाय एटले ते आवेला आचार्यादिक गुरुनुं विनयादिक करवा माटे अन्युबानादिक साचववा सारु उठवुं पडे, फरी तेमज बेसीने जमे तो पच्चरकाण न्नंग न थाय ॥

आगीआरमो (पारिठावण के०) जे अन्न परठवातुं होय ते (विहिगहिए के०) विधियें ग्रहण करेलुं होय ते उपवासादिक पच्चरकाणमां पण लेवुं पडे तेने पारिठावणियागारेणं कह्यीयें एटले जे विधियें करी निर्दोष पणे ग्रहण करयुं अने विधियें वहेंची आप्युं होय पछी अन्य साधुयें विधियें न्नुक्त करया थकी कांइक आहार उगर्यो ते पारिष्ठापन योग्य थयुं परंतु ते अधिक आहारने परठवतां दोष उपजे छे. एवुं जाणीने तेहवुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञायें आहारतां पच्चरकाण न्नंग न थाय. तिहां एटलो विशेष जे चउविहार उपवासमांहे पाणीनुं पारिठावणियागारेणं थाय तथा तिविहार उपवासना पच्चरकाणमां अन्नादिकनुं पारिठावणियागारेणं थाय, परंतु विगयादिकनुं पारिठावणियागारेणं न थाय अने बीजा सर्व पच्चरकाणोने विषे थाय ए आगार यतिने होय अने पाठ संलग्न माटे गृहस्थने पण पाठमां कहेवाय छे.

बारमो (जईण के०) यतिने अर्थें आगार जाणवो ते यतिने अर्थें (पावरण के०) प्रावरणना पच्चरकाणे (कडिपट्टो के०) चोलपट्ट तेहनो आगार जाणावो एटले वस्त्र मूकी नग्न थइ बेगे होय अने गृहस्थ आवे

एटले लज्जाने माटे उठीने चोलपट्ट पहेरे तेने चोलपट्टागारेणं कहीयें एथी पच्चरकाणभंग न थाय. ए आगार पण यतिने होय ॥ ३६ ॥

खरडिय लूहिअ मोवा, इ लेव संसठ मुच्चमंमाइ ॥ उक्खि
त्त पिंम विगई, णं मक्खियं अंगुलीहिं मणा ॥ ३७ ॥

अर्थः—तेरमो, प्रथम (खरडिय के०) खरड्यो होय अने पठी तेने (लूहिअ के०) लुंठी नाख्यो होय एटले खरड्यो ते लेप अने पठी लुंठ्युं ते अलेप एवो (मोवाइ के०) दोहेलो चाटुवो प्रमुख होय ते (लेव के०) लेवालेवण आगार जाणवो, एटले भोजननुं भाजन अथवा चाटुइ प्रमुख होय ते अकल्पनी एवा विगय अने शाक प्रमुख अन्नादिकें खरड्युं होय, पठी ते कडठी प्रमुखने लुंठीने अलेप कीधो होय तो पण कांइक विगयादिक अवयवना सद्भावे सहित ठे तेवा भाजने करी आयंबिलादिक पच्चरकाण वालाने जिमतां लेतां पच्चरकाण भंग थाय नही.

चौदमो गिहत्थसंसठेणं एटले भक्तदायक गृहस्थसंबंधि विगयादिकें व घारादिकें (संसठ के०) संसृष्ट एटले मिश्र कीधुं एवुं (मुच्च के०) शाकादिक केरंबादिक तथा (मंमाइ के०) मांमादिक ते लगारेक हाथें गोल प्रमुखें चोपड्या कीधा होय तेने गृहस्थसंसृष्ट कहीयें ते निविना पच्चरकाणे लेवा कल्पे तथा आयंबिलमां पण किंचिन्मात्र तैलादिकें स्निग्ध हाथे लगाडेला एवा मंमकादिक होय ते पण यतिने लेतां पच्चरकाण भंग न थाय.

पन्नरमो (पिंम विगइणं के०)· पिंमरूप विगयनुं (उक्खित्त के०) उत्क्षिप्त एटले पाठुं लेवुं एटला माटे एने उक्खित्तविवेगेणं नामे आगार कहीयें एटले ए भावजे मांमा प्रमुख अन्न तथा पूपिकादिक उपरे गोल प्रमुख तथा माखणादिक मूक्या होय ते फरी पाठा तेना उपरथी उपाडी पण लीधा होय एटले ए गोल माखणादिक जे पिंम विगय ठे ते एवी ठे के जे पदार्थ उपर राखेली होय तेने फरी जेवारे तेना उपरथी पाठी उद्धरी लइयें तेवारें ते निःशेषपणे एटले बधी पाठी लेवाइ शकाय नही कांइक पण रोटला प्रमुखने लागेली थकी रही जाय माटे जेना उपरथी पिंमविगइ अलगो करी लीधो होय एवा रोटला प्रमुखने विगइना पच्चरकाणवालो जो गृहस्थना घरथी वोहोरीने भुंजे तो पच्चरकाण भंग न थाय.

शोलमो (मक्खिअं के०) मसल्युं (अंगुलीहिं के०) अंगुलीयें करीने (मणा के०) लगारेक एटले ए भाव जे अंगुलीयें घृतादिक चोपडी ते अंगुलीए चोपडीने मांडा प्रमुख करे तेने पडुच्चमक्खिएणं कहीयें ते सर्व था रूक्ष एवा मंडकादिक होय तेने लगारेक स्नेहवंत सुकुमारता उपजा ववाने अर्थे लड्डुचूइ प्रमुख अंगुलीयें करी म्रक्षित कीधुं होय ते नीवि प च्चरकाणमां लेतां पच्चरकाण भंग न थाय परंतु घृतादिकनी धारायें करी म्र क्षित करे तो लेवुं कल्पे नही ए शोल आगार अशन आश्री कह्या ॥२७॥

हवे पाणस्सनां ब आगारनो अर्थ कहे छे.

लेवाडं आयमाइ, इअर सोवीरमछ मुसिणजलं ॥ धोअण बहुल ससिछं, उस्सेइम इअर सिछविणा ॥ २८ ॥ दारं ॥४॥

अर्थः—प्रथम (लेवाडं के०) लेप कृत पाणी ते कोने कहीयें के (आ यमाइ के०) आचाम्लादि उसामण आदि शब्द थकी आंबली तथा डाक्नुं पाण पण जाणवुं एटला माटे ए आगारनुं नाम लेवेणवा कहीयें.

बीजो (इअर के०) इतर एटले पूर्वोक्त लेप थकी उलटो अलेपकृत पाणी लेवुं ते माटे ए आगारनुं नाम अलेवेणवा जाणवुं. ते (सोवीरं के०) सौवीर कांजी धोयण आदि शब्दथी गफूल जरवाणी प्रमुख जाणवुं.

त्रीजो (अछं के०) अछ ते निर्मल पाणी (उसिणजलं के०) उष्ण पाणी एटले त्रिदंडोत्कालित उष्ण जल अथवा बीजो पण निर्मल पाणी नीतर्युं फलादिकनुं धोयण जाणवुं एटला माटे अछेणवा नाम कहीयें.

चोथो (धोयण के०) चोखा प्रमुखना धोयण प्रमुखनुं पाणी तेने (ब हुल के०) बहुलेप कहीये एटला माटे बहुलेवेणवा एवुं एनुं नाम छे ए तंडुलधावनादिक गंडुल पाणी जाणवुं.

पांचमो (ससिछं के०) सीथ सहित पाणी ते (उस्सेइम के०) आ टाथी खरड्या हाथनुं धोयण एटले उत्सेदिम एवुं पिष्टजलनुं नाम छे एटला माटे ससिछेणवा एवुं ए आगारनुं नाम छे.

छठो ए पूर्वोक्त पांचमां ससिछेण वा ए आगारथी (इअर के०) इतर ते आटावाला हाथनुं धोयण तेने वस्त्रादिके करी गल्युं होय तेथी ते (सिछवि णा के०) सीथ विनानुं जाणवुं, एटले अन्नादिक आटाना दाणाना स्वाद

विनानुं थाय एटला माटे तेनुं नाम असिढेणवा कहेवाय. ए ढ आगार पाणीना कह्या. तेनी साथें पूर्वे कहेला शोल आगार मेलवीयें तेवारे सर्व मली बावीश आगारोनी संख्या थाय ॥ २७ ॥

आंहीआं प्रत्येक आगारे वा शब्द मूकेलो ढे ते एक एकथी बीजा बीजामां विशेष देखाडवाने माटे ढे, एटले लेपथी अलेप विशेष, अलेपथी अढ विशेष, अढथी बहुलेप विशेष, बहुलेपथी ससिढ विशेष, ससिढथी असिढ विशेष जाणवो, परंतु लेपादिकनुं पाणी लीये तो पण उपवासादिकनो नंग थाय नही. इति नावः ॥ ए प्रकारें अपुनरुक्त एटले फरी न उच्चरीयें एवा बावीश आगारोना अर्थनुं व्याख्यान लेशथी देखाड्युं. ए आगारोना अर्थनुं चोथुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल चालीश थया ॥

हवे दशविगइना स्वरूपनुं पांचमुं द्वार कहे ढे.

पण चउ चउ चउ डु डुविह, ढ नरक डुद्धाइविगइ इगवीसं ॥
ति डु ति चउविह अनरका, चउ महुमाईविगइ बार ॥ ३ए ॥

अर्थः—जे इंडियादिकने पुष्ट करे, मन, वचन अने कायाना योगने अप्रशस्त विकार उपजावे, ते विगइ कहीयें, ते विगइ दश नेदें ढे तेमांथी चार विगइतो साधु अने श्रावक बेहुने अनक्ष्यज ढे नक्षण करवा योग्य नथी, अने ढ नक्ष्यविगइ साधु अने श्रावक बेहुने नक्ष्य करवा योग्य ढे माटे एने नक्ष्य विगय कहीयें तेना उत्तर नेद बार थाय ते कहे ढे.

प्रथम डुध विगइ (पण के०) मांच नेदे ढे, बीजी दधि विगइ (चउ के०) चार नेदे ढे, त्रीजी घृतविगइ (चउ के०) चार नेदें ढे, चोथी तेल विगइ (चउ के०) चार नेदे ढे, पाचमी गोल विगइ (डु के०) बे नेदें ढे, ढठी पक्वान्नविगइ (डुविह के०) द्विविध एटले बे नेदे ढे, ए (डुद्धाइ के०) डुग्धादिक (ढ के०) ढ (नरक के०) नक्षण करवा योग्य (विगइ के०) विगइ ढे तेना सर्व मली उत्तरनेद (इगवीसं के०) एकवीश थाय ढे.

हवे चार अनक्ष्य विगइना उत्तर नेद कहे ढे.प्रथम मधु विगइ (ति के०) त्रण नेदें ढे, बीजी मदिरा विगइ (डु के०) बे नेदें ढे, त्रीजी मांस विगइ (ति के०) त्रण नेदें ढे, चोथी माखणविगइ (चउविहं के०) चार नेदे ढे ए (महुमाइ के०) मधु आदिक (चउ के०) चार (अनरका के०)

अनक्ष्य (विगइ के०) विगइ छे, तेना सर्व मली उत्तर भेद (बार के०) बार थाय ते सर्वे नामपूर्वक आगल कहेशे ॥ २९ ॥

हवे प्रथम छ नक्ष्य विगइना एकवीश भेद व्यक्तें करी कहे छे.

खीर घय दहि अ तिल्लं, गुड पक्कन्नं छ नक्ख विगइन ॥
गो महिसी उंटि अय ए, लगाण पण दुद्ध अह चउरो ॥३०॥

अर्थः—प्रथम छ नक्ष्य विगयनां नाम कहे छे. एक (खीर के०) दूध, बीजो (घय के०) घृत, त्रीजो (दहि के०) दधि, (अ के०) वली चोथो (तिल्लं के०) तैल, पांचमो (गुड के०) गोल, छठो (पक्कन्नं के०) पकवान्न, ए (छ के०) छ (नक्खविगइउ के०) नक्ष्यविगइ जाणवा. एटले ए छ विगइ जे छे ते साधु तथा श्रावकने नक्षण करवा योग्य छे माटे एने नक्ष्य विगय कह्या, हवे ए छ नक्ष्य विगयनां उत्तर भेदनां नाम कहे छे.

तिहां प्रथम दूधविगयनुं नाम कह्युं छे माटे दूधना उत्तर भेद कही देखाडे छे. एक (गो के०) गायनुं दूध, बीजुं (महिसी के०) भेंसीनुं दूध, त्रीजुं (उंटि के०) उंटडीनुं दूध, चोथुं (अय के०) अजा एटले छालीनुं दूध, पांचमुं (एलगाण के०) एडका ते गाम्मरीनुं दूध ए (पण के०) पांच जातनां (दुद्ध के०) दूध ते सर्व विगई जाणवां, अने शेष मानुष्यणी तथा बीजा पशुआदिकनां जे खीर थाय छे ते विगइमां गणाय नही. (अह के०) अथ एटले हवे (चउरो के०) चार जातनुं घृत तथा चार जातनुं दही कहे छे ॥ ३० ॥

घय दहि आ उट्टिविणा, तिल सरिसव अयसि लट्ट तिल्ल चऊ ॥
दवगुड पिंमगुडादो, पक्कन्नं तिल्ल घय तलियं ॥ ३१ ॥ दारं ॥ ५ ॥

अर्थः—प्रथम (घय के०) घृत जाणवुं, बीजी (दहिआ के०) दधि जाणवुं, ए बे विगइना एक (उट्टिविणा के०) उंटडीना दूध विना बाकी चार चार भेद जाणवा. केमके उंटडीनुं दूध जमाय नही माटे ते विना बाकी चार, एक गायना दहीनुं घी, बीजु भेंसना दहीनुं घी, त्रीजुं छालीना दहीनुं घी, अने चोथुं गाम्मरना दहीनुं घी, ए चार भेद घृतना जाणवा तथा दहीना पण एज चार भेद, एक गायना दूधनुं दही, बीजुं भेंसना

दूधनुं दही, त्रीजुं गालीना दूधनुं दही अने चोथुं गाम्डरना दूधनुं दही ए चार दहीना नेद विगइरूप जाणवा.

हवे तेल विगयना चार नेद कहे छे. एक (तिल के०) तिलनुं तेल, बीजुं (सरिसव के०) शरशवनुं तेल, त्रीजुं (अयसि के०) अलसीनुं तेल अने चोथुं (लट्ट के०) काबरी कसुंबा धान्य खसखसना दाणानुं तेल, ए (तिल्ल के०) तेल विगइना (चउ के०) चार नेद विगइआता रूपें जाणवा. अने बीजा एरंम्डीयाना फूलां, दिम्डोल, मधुकफल, नालिकेर, खदिर, शिंश पादिक यावत् लाक्षापाकादिक सर्व जातिनां तेल ते नीविता जाणवा.

हवे गोल विगइना बे नेद कहे छे. एक (दवगुड के०) द्रव्यगोल ते ढीलो राबडीयो रसरूप गोल जाणवो,बीजो (पिंम्डगुडा के०) पिंम्ड रूप गोल ते कागो विविध जातिनो गोल जाणवो. ए (दो के०) बे प्रकारना गोल जाणवा.

हवे (पक्कन्नं के०) पक्कान्न विगइना बे नेद कहे छे, तेमां एक तो पूर्वे जे चार जातिनां तेल कह्यां छे, तेमां तल्युं होय तेने (तिल्लतलिय के०) तेलमां तलेलुं पक्कान्न कहीयें, बीजुं पूर्वे जे चार जातिनां घृत कह्यां छे, तेमां तल्युं होय तेने (घयतलियं के०) घृतमां तलेलुं पक्कान्न कहीयें. तलियं शब्द बे स्थानकें जोडवो. ए रीतें दूधनां पांच घृतनां चार,दहीनां चार तेलनां चार,गोलनां बे अने पक्कान्ननां बे,मली एकवीश नेद नक्ष्य विगयनां कह्या. ए विगयना नामनुं पांचमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तरबोल पच्चाश थया ॥ हवे ए नक्ष्य विगयना निवीयाता त्रीश कराय छे तेना नेदोनुं छहुं द्वार कहे छे.

पयसाडि खीर पेया,वलेहि दुध्धट्टि दुध्ध विगइगया ॥
दख्ख बहु अप्प तंडुल, तच्चुन्नंबिल सहिअ दुध्धे ॥३७॥

अर्थः—प्रथम दूधना पांच निवियाता थाय ते कहे छे. एक (दख्ख के०) डाख अने टोपरादिक नाखीने दूध रांध्युं होय तेने (पयसाडी के०) पयसाडी कहीयें,बीजुं (बहुतंडुल के०) घणा चोखा नाखीनें दूध रांध्युं होय तेने(खीर के०) खीर कहीयें,त्रीजुं (अप्पतंडुल के०) अल्पतंडुल एटले थोडा चोखा नाखीने दूध रांध्युं होय तेने (पेया के०) पेया कहीयें, चोथुं (तच्चुन्न के०) ते चोखाना चूर्णकरी सहित एटले ते चोखानो आटो लोक नाषायें फूकरणुं कहे छे, ते नाखीने, दूध पचाव्युं होय, रांध्युं होय

तेने (अवलेहि के०) अवलेहिका कहीयें, पांचमुं (अंबिलसहिअ के०) खाटो रस करी आढ़ कांजीप्रमुख खटासे सहित दुध उष्ण करे, अथवा ए लोक भाषायें दूधमां खटास होय तेमाटे एने फेदरी कहे छे अथवा त्रण दिवस प्रसूत गोदुग्ध बलही बलहटां ते (दुद्धट्टी के०) दुद्धट्टी कहीयें ए पांच (दुद्ध के०) दुग्धना (विगइगया के०) विकृतिगता एटले निवीआता जाणवा. भेदांतरें एनां पण बीजा भेदो थाय छे ॥ ३१ ॥

हवे घृतविगइ तथा दहीविगयना पांच पांच निवियाता कहे छे.

निब्भंजण वीसंदण, पक्कोसहि तरिय किट्टि पक्कघयं ॥ द
हिए करंब सिहरिणि, सलवण दहि घोल घोलवडा ॥३३॥

अर्थः—एक पक्वान्न तळ्या पछी उतर्युं जे बळेलुं घृत तेने (निब्भंजण के०) निब्भंजण एटले निर्भंजनघृत, पक्वाननुं तलण घृत कहीयें, बीजुं दहीनी तरी अने धान्यनी कणक बेहु एकठा मेलवीने नीपजाव्युं जे द्रव्य विशेष कुल्लरी इति भाषा सपादलक्ष देशप्रसिद्ध ते (वीसंदण के०) विसंदन एटले विस्पंदन कहीयें, त्रीजुं (पक्कोसहितरिय के०) पक्कौषधितरित एटले औषधिने घृत साथें पचावीयें तेनी उपर जे घृतनी तरिका वळे छे, एवुं कूरिया सरिखुं घृत पचीने थाय ते घीनी उपरली तरी कहीयें, चोथुं घृतनो मेल उतरे तेने (किट्टि के०) घृतनुं मेल कीटुं कहीयें,पांचमुं (पक्कघयं के०) पाकुं घृत ते औषधियें पचावेलुं घृत जाणवुं,खयर आमलादिक ब्राह्मी प्रमुख औषधियें करी पचाव्युं होय ते जाणवुं एना भेदांतर घणा थाय.

हवे दहीना पांच निवीयाता कहे छे. प्रथम (दहिए के०) दहीने विषे उदन एटले कूर एकठुं मेलवीने कीधुं ते दधि सीधोरो इत्यादि लोक भाषायें कहे छे, तेने (करंब के०) करंबो कहीयें, बीजुं खांड नाखीने हाथथी मथन करेलुं दही तथा खांडयुक्त बांधेलुं दही तेने (सिहरिणी के०) शिखरिणी कहीयें, त्रीजो लूणना कण नाखीने मथेलो वस्त्रें अणगळ्युं दही ते (सलवणदहि के०) लवणसहित दधि कहीयें, चोथुं लुगडाथी गळेलुं मथेलुं दही तेने (घोल के०) घोलेलो दही कहीयें, पांचमुं दहीना घोलयुक्त वटक करवां कांजीवडा, दहीवडा तथा दही गळीने तपावे पछी मांहे वडा नाखे तेने (घोलवडा के०) घोलवडा क

हीयें, इहां विवेकीने एटलुं विशेष के जिहां विदलयुक्त करवुं पडे तिहां दही तथा बास जे वडां मांहे नाखवी होय तेने उष्ण करी नाखीयें तेवारें श्रावकने नक्षण करवा योग्य थाय, अन्यथा घोलवडां बावीश अनक्ष्यमां गणाय ते नक्षण करवा योग्य नथी. अकल्पनीय जाणवा ॥३३॥

हवे तेल तथा गोल विगइना पांच पांच निवीआता कहे छे.

तिलकुट्टि निप्नंजण, पक्कतिल पक्कुसहितरिय तिल्ल मली ॥
सक्कर गुलवाणय पाय, खंम अधकढिय इक्खुरसो ॥ ३४ ॥

अर्थः–प्रथम (तिलकुट्टि के०) तिल तथा गोल कूटीने खांमीने एकठा करियें ते तिलवट कहीयें, बीजुं तल्या पक्वानथी उतरेलुं दाधेलुं बलेलुं तेल एटले पक्वाननुं तलण जाणवुं, अथवा कयरी प्रमुखादिकना सरसीयादिक तेल ते (निप्नंजण के०) निप्नंजण एटले निर्नंजन जाणवुं. त्रीजुं सर्व औषधवाला तेल एटले लाक्षादिक द्रव्यथी पकावेला तेलने (पक्कतिल के०) औषधपक्कतेल कहीयें, चोथुं तेलमांहे नारायणादिक औषधी पचाव्या पछी औषध उपर तरी वले ते (पक्कुसहितरिय के०) पक्कौषधिथी तरिततेल एटले पक्कौषधिथी वलेली तरि कहीयें, पांचमुं (तिल्लमली के०) तेलनी मली एटले तेलनुं मयल कीटी जाणवी. ए पांच नीवियाता तेलना जाणवा. एना पण नेदांतरें घणा नेद थाय.

हवे गोलना नीवियाता कहे छे. एक (सक्कर के०) साकर मिसरी, बीजो (गुलवाणिय के०) गोलवाणी तथा रांधेलुं गुलवाणु आखात्रीजें कराय छे ते देश प्रसिद्ध छे,त्रीजो (पाय के०) गुलनी पांति ते पाक गुड जेणे करी खाजादिक लेपीये छैयें एने मालवादिक देशने विषे काकबपांति एम नापायें कहे छे, चोथो (खंम के०) खांमनी सर्वजाति,पांचमो (अधकढिय इक्खुरसो के०) अर्द्धो काढेलो इक्षु एटले सेलडी तेनो रस,ए पांच नीवियाता गोलना जाणवा. एना पण नेदांतर घणा थाय छे ॥ ३४ ॥

हवे कडाविगइना पांच नीवीयाता कहे छे.

पूरिअ तव पूआ बिय,पूअ तन्नेह तुरिय घाणाइ ॥ गुल
हाणी जल लप्पसि, य पंचमो पूत्तिकय पूउ ॥ ३५ ॥

अर्थः–(पूरिअतवपूआ के०) पूस्रो एटले ढाक्यो सर्व तावडो छे जेणे

एवा पूडला उपर (बीअपूअ के०) बीजो पुडलो तरी काढीयें ते बीजो पूडलो नीवीयातो जाणवो, एटले घृतादिकें पूरित एवो जे तवो तेने विषे एक पूपें करी पूर्यो समस्त तवो तेहमां एकवार तली वली तेहिज पूपिका दिक.पर्पटकादिकें अपूरित स्नेह एवा तवामां बीजी वार तथा त्रीजीवार क्षेपवीने तरी काढीयें जे पक्वान्न ते निवीआतुं जाणवुं.

बीजुं (तन्नेह के०) तेथी अन्य एटले त्रण घाण तली काढया पछी उपरां त बीजुं घृत क्षेपव्युं नथी एवुं जे तवा मांहेलुं मुलगुं घृत तेहिज त्रण घा णनां तलण मांहे तल्या जे अने (तुरिअघाणाइ के०) चोथा घाणुआदिक ते सर्व बीजुं नीवीआतुं जाणवुं, तथा त्रीजुं (गुलहाणी के०) गोलधाणी करवी ते त्रीजुं निवीआतुं जाणवुं.

चोथुं सुकुमारिकादिक काढया पछी एटले पक्वान्न तली काढया पछी उद्धृत जे घृतादिक एटले वधेलुं जे घृतादिक तेणेकरी खरडेलो जे तवो तेने विषे पाणी साथें रांधी एवी जे लापसी गहुनुं उरण गोलनुं पाणी घृतादिकें भेलीने सीजवे छे, एने मरुदेशे प्रसिद्ध पणे लापसी तथा लहगटु कहे छे ते (जल लप्पसिअं के०) जललापसी निवीआतुं जाणवुं. एटले तावडीनी चीगट टालवा सारु मांहे लोट नाखी पाणीसाथें लापसी करीयें ते जाणवी. (पं चमो के०) पांचमुं (पुत्तिकयपूउ के०) पोतकृत पूडलो ते घृत तेलें खर डेला एवा स्नेहदिग्ध तवाने विषे गुडादिकनुं पोतुं आपी गल्या पुडा करे छे एटले पक्वान्न तल्या पछी खरड्या तावडा मांहे गोलादिकनुं पोतु देइने पुडलो साजवीयें ते निवीआतुं जाणवुं ॥ ए छ भक्ष्यविगयना त्रीश निवीआता कह्या.

जिहां घी अने तेलमां पाणीनो भाग आवे ते नीवियाता तल्या चि णादि सर्व जाणवा, अने जे कडाह मांहेथी घी तथा तेल उपरें फरी वले नही, चिलमिलाट न थाय एवुं तलेलुं होय ते पण विगयातुं नही कहेवाय इत्यादिक परंपरागत लेवानो विचार बहु प्रकारें छे, ते गच्छसमाचारीगत प्रसंगथी योगादिकमांहे कल्पाकल्प विभागें लखीयें छैयें.

लहचूई, पूपिकादि, पोतकृत पूपक, वेढमीतद्दिनकृत, करंब, घोल, फूल, वघारित पूरण, वघारिका, पटीरडी, मथित अगलित तक्रादिक, कस्मिन्नपियोगे कोइ योगने विषे न कल्पे अनेरी योगविना निवीमां कल्पे.

लहिगटुं, गोग्रा, वघारिक वडां, घारवडां,साज्यपक्व खीचडी, सेवतिका,

वघारित चणकादिक, उत्तराध्ययन योगने विषे आचारांग मध्यगत सप्तस प्तकाध्ययनने विषे चमरोद्देशक अनुज्ञायावत् भगवतीयोगने विषे न कल्पे, बीजा सर्व योगमध्ये कल्पे.

अने पढोगरी, फूंकरणुं, उकलधुं, वासी करंब, तिलवटी, कुल्लरि, निवी यातां, विगइ, गांठीयानाधारा, दलिया, गुंदविना मगीयादि, औषधादि, मोदक, पेटक, खंभा, सितावर, सोलां, वासी, गुंडपाक, गुदपाक, विगर तल्यां कांकरियां, अनुत्कालित इक्षुरस, दिनत्रयावधि प्रसूत गोदूग्ध, बलहट्टी, अंगाराथी उतारी आज्यादि मिश्रित खीचडी तथा सेवइका पाछला दिवसनी पचावेली तिलवटी, पर्पटकादि, गुडादिकेमिश्रित न करेली तिलवटी, इत्यादिक नीवीआतां श्रीआवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययनादि सर्व योगने विषे प्रायें कल्पे. एवो विचार प्रसंगथी जाणवा माटे लख्यो छे ॥ ३५ ॥

हवे गिहत्थसंसठेणं ए आगारथकी नीवीनां पच्चरकाणमांहे जे नीवीयाता साधुने कल्पे, ते संसृष्ट द्रव्य कहीयें ते संसृष्ट द्रव्य जाणवाने कहे छे.

दुद्ध दही चउरंगुल, दव गुड घय तिल्ल एग भत्तुवरिं ॥
पिंडगुल मरकणाणं, अद्दामलयं य संसठं ॥ ३६ ॥

अर्थः—(दुद्ध के०) दुग्ध अने (दही के०) दधि मांहे कूर प्रमुख नाखीयें एटले दूधदहीमिश्रित कूरादिक होय, ते जो दूध तथा दही कूरथी (चउरंगुल के०) चार अंगुल उपरें चडे तेने संसृष्ट द्रव्य कहीयें, ते नीवीयातुं नीवीमां कल्पे एटले भात रोटी उपर दूध दही चार अंगुल प्रमाण उंचुं चड्युं होय तो नीवी प्रमुख मांहे साधुने कल्पे अने चार अंगुलथी अधिक पांच आदिक अंगुलना प्रारंभथी जेवारे उंचुं चडे तेवारें ते विगइ जाणवुं. माटे ते न कल्पे.

अने (दवगुड के०) द्रव्यगोल एटले ढीलो नरम गोल अने (घय के०) घृत (तिल्ल के०) तेल ए त्रणे ज्यांसुधी (भत्तुवरिं के०) भक्त जे भात अथवा रोटी ते उपरें (एग के०) एक अंगुल प्रमाण उंचा चढ्या होय त्यां सुधी संसृष्ट द्रव्य कहेवाय एटले नीवीयातो कहेवाय ते लेवुं कल्पे अने बीजा अंगुलथी प्रारंभीने उंचा चडता देखाय तेवारें विकृतद्रव्य एटले विगय द्रव्य जाणवा ते लेवा कल्पे नही.

(पिंमगुल के०) पिंमगोल एटले कागो गोलं साथे (मरकणाणं के०) मसल्युं जे चूरमो प्रमुख ते मांहे (अद्दामलयं के०) आर्द्रम्लक एटले शण पीलूना महोर ते समान न्हाना कणीयाना जेवा प्रमाणवाला एवा गोलना बहु खंम रहे तो पण तेने (च के०) वली (संसठं के०) संसृष्ट द्रव्य कहीयें ते नीवीयाता मांहे लेवा कल्पे परंतु एथी महोटा खंम गोलना रहे तो ते विकृतिगत जाणवा ते कल्पे नही ॥ ३६ ॥

हवे वली एहिज नीवीयातानुं स्वरूप दर्शाववा कांइक विशेष कहे ले.

दव्वहयविगइ विगइ, गयं पुणो तेण तं हयं दव्वं ॥
उद्धरिए तत्तमिय, उक्किठ दव्वं इमं चन्ने ॥ ३७ ॥

अर्थः—(दव्व के०) द्रव्य जे कलमशालि चोखा प्रमुख तेणे (हय के०) हणी निर्वीर्य करी एवी जे क्षीरादिक (विगइ के०) विगइ तथा कणिका दिकें हणी एवी जे घृतादिक विगइ तेने (विगइगयं के०) विकृतिगत एटले नीवीयातुं कहीयें (तेण के०) ते कारण माटे (पुणो के०) वली ते तंडुला दिकें हण्युं एवुं जे विकृतिगत (तं के०) तेने (हयं दव्वं के०) हत द्रव्य कहीयें. तथा सूखडी तावडा मांहेथी (उद्धरिए के०) उद्धस्या पली एटले सुखडी काहाडी लीधा पली उगस्युं जे घृत (तत् के०) ते टाहाडो थया पली तेमां लोट नाखीने हलावीयें (तम्मिय के०) ते घृत तावडो हेंगे उतस्या पली (उक्किठ दव्वं के०) उत्कृष्ट द्रव्य कहेवाय एटले विगय जाणवुं (इमं चन्ने के०) एम अनेरा आचार्य कहे ले. इति गाथार्थः ॥ ३७ ॥

इहां भावार्थ ए ले जे अन्न प्रमुख द्रव्यें विगइना पुजल हण्या तेवारें विगयनो स्वाद फरी गयो तेथी ते नीवीयातुं कहेवाय परंतु विगइ तथा नि वृत्तिक न कहेवाय एटला माटे ते नीवीना पच्चरकाण वालाने लेवी कल्पे.

अने सुकुमारिकादिक सुखडीने तावडा मांहेथी काढ्या पली उगस्युं जे घृतादिक तेने विषे चूला उपर छते अग्निसंयोगथी तपे थके तेमांहे क्षेपव्युं जे कणिकादिक दल प्रमुख तेने उत्कृष्ट द्रव्य कहीयें ते विकृतिग त जाणवुं. ते केम के चूरिम पूर्वें कडाह विगइ थई भग्न कणिका कीधी ते उष्ण घृत गोल परस्परें द्रव्य हत थइने पली ते कणिका क्षेप करी मोदक बांध्या एवुं जे चूरिमादिक ते विकृतिगत जाणवुं, पण विगय समजवी

नही. एनुं नाम उत्कृष्ट द्रव्य जाणवुं. एम केटलाक आचार्य कहे छे. नामां तरे गीतार्थाभिप्रायें तो एम के जो चुल्हाना माथाथी उतस्या पछी शीत थया केडे जे कणिकादिक क्षेपवीयें ते तथाविध पाकाभावथी विकृतिगत कहीयें अन्यथा परिपक्व विशेष थये द्रव्यगत कहीये पण विगइ तथा निर्विकृतिक न कहीयें एवुं व्याख्यान प्रवचनसारोद्धार वृत्तिना अभिप्रायथी लख्युं छे पण तिहां एम कह्युं छे जे सुधियें भलीपरें विचारवुं,जे माटे निर्विकृतिक अनेक भेदें छे ते बहु श्रुतनी आचरणा परंपराथी जाणवां ॥३७॥

हवे केटलाएक वस्तुनां नाम उत्तम द्रव्य कह्यां छे ते देखाडे छे.

तिल सकुलि वरसोलाई, रायणंबाइ दरकवाणाई ॥
मोलि तिल्लाईआ, सरसुत्तम दव्व लेवकडा ॥ ३८ ॥

अर्थः—(तिल के०) तेलथी नीपनी एवी (सकुलि के०) तिल सांकली तथा खारक, टोपरा, सिंघोडा प्रमुख नाहोलाना हारडा तेने (वरसोलाइ के०) वरसोलां कहीये अने आदि शब्द थकी साकर खांडना विकार साकरीया पापड, नालिकेर, खांड, कातली, पाक, सर्व मेवा प्रमुख, राजदना आदिक, तथा (रायण के०) रायण (अंबाइ के०) आंबादिक एटले आम्रादिक फल सर्व अचित्त कर्यां पाकादिकें नीपजाव्यां मधुकादिकना, नालिकेरादिकनां, (दरकवाणाइ के०) द्राखवाणी प्रमुख,नालेरवाणी प्रमुख (मोलीतिल्लाईया के०) मोली तेल आदि शब्द थकी नालिकेर शरशव प्रमुखनो तेल एरंड प्रमुखनुं तेल जाणवुं अखोडादिक मेवा हलवा प्रमुख ए सर्व (सरसुत्तमदव्व के०) सरस उत्तम द्रव्य कहीयें तथा एने (लेवकडा के०) लेपकृत पण कहीयें ए नीवीमां कल्पनीय जाणवा ॥ ३८ ॥

हवे ए सर्व पदार्थ कारणे लेवां कल्पे, पण सहज पणे रसगृध्रताए लेवा कल्पे नही ते कहे छे.

विगइगया संसठ्ठा, उत्तमदव्वाइ निव्विगइयंमि ॥
कारणजायं मुत्तुं, कप्पंति न भुत्तुं जं वुत्तं ॥३९॥

अर्थः—एक (विगइगया के०) विकृतिगता एटले दूध प्रमुख विगइथी उत्पन्न थया जे नीवीयाता जे संख्यायें त्रीश पूर्वे कह्या छे ते,बीजा (संसठ्ठा के०)संसृष्ट द्रव्य जे करंबादिक, मगदल, पापडी, पिंडादिक, त्रीजा (उत्तम

दव्वाइ के०) उत्तम द्रव्यादिक ते तिलसांकरी, साकर, मेवादिक सरसोत्तम द्रव्य जे पूर्वे कही आव्या ते ए त्रण प्रकारनी वस्तु ते (निव्विगइयंमि के०) नीवीना पच्चरकाणने विषे कोइ (कारणजायं के०) कारणजातं एटले पुष्टालंबन विशेष प्रयोजन रूप वातादिक कारण (मुत्तुं के०) मूकीने, साधुने (ज़ुत्तुं के०) जोगववुं लेवुं (न के०) नही (कप्पंति के०) कल्पे जेने जावजीव सुधी ब विगयना पच्चरकाण होय, किंवा तथाविध विशेष तपें उजमाल होय, किंवा वैयावच्च करवाने उजमाल होय, ज्ञानादिकनो उद्यमी होय तेवारें शरीरें ग्लानादिक निमित्ते औषधादिक कारणे लेवा कल्पे, अन्यथा कारणविना लेवा कल्पे नही (जं के०) जेमाटे (वुत्तं के०) कह्युं बे ते आगली गाथायें कहे बे॥ ३ए ॥

विगइं विगइ जीउ, विगइगयं जो अ जुंजए साहू ॥
विगइ विगई सहावा, विगई विगइं बला नेइ ॥ ४० ॥

अर्थः—(विगइं के०) दूध प्रमुख जे विगइ बे ते प्रत्यें अने (विगइगयं के०) विकृत गत जे क्षीरादिक त्रिविध द्रव्य नीवीयाता कह्या बे ते प्रत्यें (विगइ के०) विगति एटले विरुद्धगति ते नरक, तिर्यंच, कुदेव, कुमाणसत्व रूप जे माठी गतिउ बे तेना थकी (जीउ के०) जीती रावतो एटले बीहतो अथवा संयम ते गति अने तेनो प्रतिपक्षी जे असंयम ते विगति जाणवी तेवी विरूद्धगति थकी बीहतो एवो (जो के०) जे (अ के०) वली (साहू के०)साधु ते (जुंजए के०) जुंजे एटले खाय ते साधुने (विगइ के०) विगइ ते (विगइं के०) विगति जे नरकादिकनी विरुद्धगति तेने विषे (बला के०) बलात्कारें एटले ते साधु जो पण डुर्गतिमां जवाने नथी वांबतो तोपण बलात्कारें तेने माठी गति प्रत्यें (नेइ के०) पोहोंचाडे. ते (विगइ के०) विगइ कहेवी बे तोके (विगइसहावा के०) विकृतिस्वजाव, एटले विकार उपजाववानो स्वजाव बे जेने एवी बे. केमके ए विकृत ते अवश्य शब्दादिक कामजोगने वधारे एवी बे माटे कारण विना विगयादिक न लेवा, अने श्रावकने पण निवी प्रमुखने पच्चरकाणे कोइ महोटा कारण विना तथा विशेष तप विना नीविता लेवा कल्पे नही. एनो विस्तार श्रीआवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिथी तथा प्रवचनसारोद्धारनी

वृत्तिआदिक ग्रंथथी जाणवो. आंहीं संक्षेप मात्र लख्यो छे ॥ ४० ॥

हवे चार अजक्ष्य विगय छे, तेना उत्तर जेद कहे छे.

कुत्तिय मच्छिय जामर, महु तिहा कठ पिठ मद्य ऊहा ॥ जलथल खग मंस तिहा, घयव्व मक्कण चउ अजक्खा ॥४१॥ दारं ॥६॥

अर्थः—तिहां प्रथम मधुविगयना जेद कहे छे. एक (कुत्तिय के०) कुतां बगतरां जंगल मध्ये थाय छे तथा वर्षाकालें विशेष थाय छे तेहनुं मध,बीजुं (मच्छिय के०) माखीनुं मध, अने त्रीजुं (जामर के०) जमरानुं मध, एवं (तिहा के०) त्रण प्रकारनुं (महु के०) मधु एटले मध जाणवुं तथा एक (कठ के०) काष्ठ ते धावडी प्रमुख कावथी महुडादिकथी नीपन्युं मद्य, बीजुं (पिठ के०) पिष्ट ते ज्वारी प्रमुखना आटादिकथी नीपनी मदिरा ए (मद्य के०) मद्य एटले मदिरा ते (ऊहा के०) बे प्रकारनुं जाणवुं. हवे मांसना जेद कहे छे. एक (जल के०) जलचर जीव जे मत्स्यादिक तेनुं,बीजो (थल के०) थलचर जीव जे द्विपदचतुष्पदादिक तेनुं, त्रीजो (खग के०) खेचर जीव जे पक्षीयादिक तेनुं, ए (तिहा के०) त्रिधा एटले त्रण प्रकारनुं (मंस के०) मांस जाणवु तथा (घयव्व के०) घृतवत् एटले जेम घृत, गाय जेस गांमरी अने छाली ए चार प्रकारें कह्युं तेम (मक्कण के०) माखण पण एहज चार प्रकारनुं जाणवुं, पण एटलो विशेष छे जे माखण छे ते सर्व चारे प्रकारनुं अजक्ष्यज छे अने घृत चारे प्रकारनुं जक्ष्य विगयमां कह्युं छे जेमाटे बोज थइ खटासें चलित रसपणुं पामीये एवी एक मदिरा,बीजुं छासथी बाहेर नीकळ्युं एवुं माखण, त्रीजुं जीवित शरीरथी अलगुं थयुं एवुं मांस रुधिर ते पण एमज जाणवुं, तथा चोथुं मधुपुडाथी उपन्युं मधु ए चारे पदार्थोने विषे अंतर मुहूर्त्त मध्ये असंख्याता बे इंड्रिय जीव उपजे तेमां मांसपेशी मध्ये तो पक्क तथा अपक्क तथा अग्नि उपरें पच्यमान एवो थको पण तें मांहे असंख्य बेंड्रिय तथा पंचेंड्रिय तथा निगोद जीव अनंता पण पोते पोतानी मेले उपजता कह्यां छे,तेमाटे ए चार विगय जे छे,ते सर्वथा अजक्ष्य वर्जनीय,कही छे ए त्रीश निविगइनुं छहुं द्वार पूर्ण थयुं उत्तर बोल ८० थया॥४१॥

हवे पच्चक्खाणना बे जांगानुं सातमुं द्वार कहे छे.

पच्चक्खाण बे जेदें छे एक मूलगुणरूप अने बीजुं उत्तर गुण रूप तिहां

साधुने मूलगुण ते पांच महाव्रत अने उत्तरगुण ते पिंमविशुद्ध्यादिक जाणवा, तथा श्रावकने मूलगुण ते पांच अणुव्रत अने उत्तरगुण ते त्रणगुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत जाणवा,तिहां सर्व पच्चरकाणादिक तेहना ज्ञांगा जे रीतें थाय, ते रीतें कहे ठे.

तेमां सर्व उत्तर गुण पच्चरकाण अनागतादिक दश प्रकारें पूर्वें कह्या, अने देशोत्तर गुण पच्चरकाण सात प्रकारें ते त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत मली थाय, तथा वली एक इत्वर अने बीजो यावत्कथिक ए बे ज्ञेदें उत्तरगुण प्रत्याख्यान तेमां साधुने इत्वरगुण पच्चरकाण ते कांइक अज्ञिग्रहादिक जाणवा अने यावत्कथिक ते पिंमविशुध्यादिक तथा अज्ञियंत्रितादिक जे दुर्जिक्षादिकें पण अजग्न होय ज्ञंग न थाय ते सर्व यावत्कथिक जाणवा अने श्रावकने तो इत्वर ते चार शिक्षाव्रतादिक ठे अने यावत्कथिक त्रण गुणव्रतादिकठे. ते श्रावक बे ज्ञेदे ठे,एक अविरति सम्यक्दृष्टि ते केवल सम्यक्दर्शन युक्त कृष्ण श्रेणिकादिकनी परे जाणवा अने बीजा विरति सम्यक्दृष्टि ते वली बे ज्ञेदे एक साज्ञिग्रही अने बीजा निरज्ञिग्रही.

ते वली विज्ञज्यमान थकां आठ ज्ञेदें थाय, ते केवी रीतें तोके एक दुविध त्रिविध, बीजो द्विविध द्विविध, त्रीजो द्विविध एकविध, चोथो एकविध त्रिविध, पांचमो एकविध द्विविध, ठठो एकविध एकविध, ए ठ ज्ञांगा पांच व्रत आश्री थाय अने कोइएक उत्तरगुण मांहेलुं कोइएक व्रत लीये ते सातमो ज्ञांगो जाणवो, अने आठमो ज्ञांगो कोइ नियम मात्र नज लीये ते जाणवो. एरीतें पूर्वोक्त पांच अणुव्रतादिकने तेना ठ ज्ञांगे गुणीयें तेवारें त्रीश ज्ञंग थाय तेनी साथे एक उत्तरगुणनो ज्ञांगो मेलवीयें तेवारें एकत्रीश ज्ञंग थाय तेनी साथे वली कोइ नियम मात्र व्रत न लीये तेनो एक ज्ञांगो मेलवीयें तेवारें बत्रीश ज्ञेदें श्रावक सम्यक्दर्शनी शंका कांक्षादि रहित अमूढदृष्टि पणे जाणवा. इत्यादिक ज्ञेदनी वक्तव्यता बहु ठे, पण इहां मुख्यतायें उगणपच्चाश ज्ञांगा थाय ते ज्ञांगा गाथाना अर्थें कहे ठे.

मण वयण काय मणवय,मणतणु वयतणु तिजोगि सग सत्त॥
कर कारणुमइ डुति जुय, तिकालि सीयाल ज्ञंगसयं ॥४७॥

अर्थः—एक प्राणातिपातादिकने (मण के०) मने करी न करुं,बीजो (व

यण के०) वचने करी न करुं, त्रीजो (काय के०) कायायें करी न करुं, चोथो (मणवय के०) मन अने वचने करी न करुं, पांचमो (मणतणु के०) मन अने कायायें करी न करुं, छठुं (वयतणु के०) वचन अने कायायें करी न करुं, सातमो (तिजोगि के०) मन, वचन अने काया ए त्रणे योगें करी न करुं, ए एक संयोगी (सग के०) सात नंगा थया.

ते सात नंगा (कर के०) करवा आश्रयी जाणवा तेमज (सत के०) सात नंगा (कार के०) करावना आश्रयी जाणवा अने सात नंगा (अणुमइ के०) अनुमति आपवाना एटले अनुमोदन देवाना पण जाणवा.

ते आवीरीते के प्राणातिपातादिक ने एक मनेकरी न करावुं, बीजो वचने करी न करावुं, त्रीजो कायायें करी न करावुं, चोथो मन अने वचने करी न करावुं, पांचमो मन अने कायायें करी न करावुं, छठो वचन अने कायायें करी न करावुं, सातमो मन, वचन अने कायायें करी न करावुं, ए सात करावववाना नांगा कह्या हवे सात अनुमोदवाना कहे छे. एक प्राणातिपातादिकने मने करी न अनुमोडुं, बीजो वचने करी न अनुमोडुं, त्रीजो कायायें करी न अनुमोडुं, चोथो मन अने वचने करी न अनुमोडुं, पांचमो मन अने कायायें करी न अनुमोडुं, छठो वचन अने कायायें करी न अनुमोडुं, सातमो मन, वचन अने कायायें करी न अनुमोडुं, ए सात नंगा अनुमोदन देवा आश्री कह्या एम सात करवाना, सात करावववाना अने सात अनुमोदवाना मली एकवीश नांगा थया.

हवे (डु ति जुअ के०) द्विक त्रिक योग सहित सात सात नांगा करीयें ते आवीरीतें के एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं न करावुं, बीजो वचने करी न करुं न करावुं, त्रीजो कायायें करी न करुं न करावुं, चोथो मन अने वचने करी न करुं न करावुं, पांचमो मन अने कायायें करी न करुं न करावुं, छठो वचन अने कायायें करी न करुं न करावुं, सातमुं मन, वचन अने काया ए त्रणे करी न करुं, न करावुं, ए करवा करावववा आश्री सात नेद कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न अनुमोडुं, बीजो वचने करी न करुं, न अनुमोडुं, त्रीजो कायायें करी न करुं, न अनुमोडुं, चोथुं मन अने वचनें करी न करुं न

अनुमोडुं, पांचमो मन अने कायायें करी न करुं न अनुमोडुं, ढठुं वचन अने कायायें करी न करुं, न अनुमोडुं, सातमो मन वचन अने काया ए त्रणे करी न करुं, न अनुमोडुं, ए सात नंग न करवा तथा न अनुमोदवा आश्री कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मनेकरी न करावुं, न अनुमोडुं, बीजो वचने करी न करावुं, न अनुमोडुं, त्रीजो कायायें करी न करावुं, न अनुमोडुं, चोथो मने करी वचनें करी न करावुं, न अनुमोडुं, पांचमो मने करी कायायें करी न करावुं, न अनुमोडुं, ढठो वचने करी कायायें करी न करावुं, न अनुमोडुं, सातमो मन, वचन अने कायायें करी न करावुं, न अनुमोडुं ए न कराववा न अनुमोदवा आश्री सात नंग कह्या. एम सात न करवा न कराववा आश्री अने सात न करवा न अनुमोदवा आश्री तथा सात न कराववा न अनुमोदवा आश्री. एवं सर्व मली द्विक संयोगें एकवीश नंग थया तेनी साथे पूर्वोक्त एक संयोगना एकवीश मेलवतां बेंतालीश नांगा थया.

हवे त्रिक संयोगें सात नंग थाय ते कहे ढे. एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न करावुं, अने न अनुमोडुं, बीजो वचने करी न करुं, न करावुं, अने न अनुमोडुं, त्रीजो कायायें करी न करुं, न करावुं, अने न अनुमोडुं, चोथो मन अने वचने करी न करुं, न करावुं, अने न अनुमोडुं, पांचमो मन अने कायायें करी न करुं, न करावुं, अने न अनुमोडुं, ढठो वचन अने कायायें करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोडुं, सातमुं मन, वचन अने कायायें करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोडुं, ए त्रिक संयोगी सात नांगा थया ते पूर्वोक्त बेंतालीश साथें मेलवतां सर्व मली उगणपचाश नांगा रूप ते अणुव्रत, गुणव्रत अने अनिग्रहादिकना नेद उपजे तेने (तिकालि के०) त्रण काल ते अतीत, अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणकाले करी गुणीयें तेवारें (सीयाल नंगसयं के०) एकशोने सडतालीश (१४७) नांगा थाय माटे जे एटला नांगा जाणे ते पच्चख्काणनो कुशल कहीयें. यडुक्तं ॥ सीयालंनंगसयं, जस्स विसुद्धिए होइ उवलद्धं ॥ सो खलु पच्चख्काणे, कुसलो सेसा अकुसलाय ॥१॥ इति ॥ एना विशेषें नांगा षट्नंगीना श्रावकना व्रत संबंधि थाय ते कहे ढे. गाथा ॥ तेरसकोडी सयाइं, चुलसीइं जुयाइं बारसय लरका ॥ सत्तासीइ सहस्सा, दाय

सया तह ऊरुग्रहिया ॥ १ ॥ तेरशें कोडाकोडी, चोरासी कोडी, बार लाख सत्यासी हजार बशेंने बे थाय. एमज नवजंगीना नवाणु हजार नवशे ने नवाणु कोडी, उपर नवाणुं लाख नवाणुं हजार नवशें ने नवाणुं एटला जांगा थाय ए ए ए ए ए ए ए ए एमज एकवीश जंगी तथा उगणपचाश जंगीना विशेष जांगा थाय, ते सर्वे आवश्यकवृहद्वृत्तिथी, तथा दीपिकाथी तथा प्रवचनसारोद्धारवृत्तिथी, तथा श्रावकव्रतजंग प्रकरण वृत्तिथी, तथा देवकुलिका थकी जाणवा. ते पच्चरकाणनो कुशल होय तेणे विचारवा.

हवे ए पच्चरकाणनुंज स्वरूप कहे ले.

एयं च उत्तकाले, सयं च मण वयण तणूहिं पालणियं ॥ जा
णगजाणग पासि,त्ति जंग चउगे तिसुअणुमा ॥४३॥ दारं ॥७॥

अर्थः—(एयं च के०) ए पूर्वोक्त वली (उत्तकाले के०) उक्तकाल जे पोरिसीयादिक काल प्रमाण रूप ते (सयंच के०) पोतानी मेलें जेवीरीतें बोल्युं होय यथोक्तरूपें जे जंगादिकें लीधुं होय ते जंगादिकें (मणवयणतणूहिं के०) मन, वचन अने कायायें करी (पालणियं के०) पालवा योग्य ते (जाणगजाणगपासि के०) जाणगजाणग पासें करी एटले जाण अजाण्या पासें करे (इत्ति के०) एम (जंगचउगे के०) जंगचतुष्के एटले चार जांगाने विषे करे तेमां (तिसुअणुमा के०) पहेला त्रण जांगाने विषे अनुज्ञा एटले आज्ञा ले एटले ए पच्चरकाणने करवा करावबा रूप चउजंगी थाय ते कहे ले. एक पच्चरकाणनो करनार शिष्य पण जाण होय अने बीजो पच्चरकाण करावनार गुरु पण जाण होय ए प्रथम जंग शुद्ध जाणवो. बीजो पच्चरकाण करावनार गुरु जाण होय अने पच्चरकाण करनार शिष्य अजाण होय ए बीजो जांगो पण शुद्ध जाणवो. त्रीजो पच्चरकाण करनार शिष्य जाण होय अने पच्चरकाणनो करावनार गुरु अजाण होय ए त्रीजो जांगो पण शुद्ध जाणवो. चोथो पच्चरकाण करनार शिष्य अने पच्चरकाण करावनार गुरु ए बेहु अजाण होय ते चोथो जांगो अशुद्ध जाणवो एरीतें चार जांगा मांहेथी त्रण जांगे पच्चरकाण करवानी आज्ञा ले, अने चोथा जांगाने विषे आज्ञा नथी ॥ ए मूलगुण, उत्तर गुण रूप पच्चरकाणनुं सातमुं द्वार थयुं. उत्तर जेद व्यासी थया ॥ ४३ ॥

हवे पूर्वोक्त नंगादिकें विचारीने पण जेम संयमयोग हीन थाय नही, तेरीतें पञ्चरकाण कीधुं थकुं पण ठ प्रकारनी शुद्धियें करी सफल थाय माटे पञ्चरकाणनी ठ विशुद्धिनुं आठमुं द्वार कहे ठे.

फासिय पालिय सोहिय, तिरिय किट्टिय आराहिय ठ सुद्धं ॥
पञ्चरकाणं फासिय, विहिणोचिय कालि जं पत्तं ॥ ४४ ॥

अर्थः–एक (फासिय के०) फासित एटले पञ्चरकाण फरश्युं, बीजुं (पालिय के०) पालित एटले पञ्चरकाण पाल्युं, त्रीजुं (सोहिय के०) शोनित एटले पञ्चरकाण शोनाव्युं, चोथुं (तिरिय के०) तीर्ण एटले पञ्चरकाण तीर्युं, पांचमुं (किट्टिय के०) कीर्त्तित एटले पञ्चरकाण कीर्त्युं, ठहुं (आराहिय के०) आराधित एटले पञ्चरकाण आराध्युं ए (ठ सुद्ध के०) ठ प्रकारे शुद्ध करी शुद्ध एवुं (पञ्चरकाणं के०) पञ्चरकाण, फलदायक होय. हवे ए ठ विशुद्धिनां अर्थ कहे ठे.

तिहां प्रथम सम्यक् प्रकारें (विहिणोचियकालि के०) विधियें करी उचित कालें एटले उचित वेलायें (जं पत्तं के०) जे पञ्चरकाण प्राप्त थयुं एटले सूर्योदयथी पहेलां पञ्चरकाण उचितकालें जे पाम्युं एटले जे पञ्चरकाण कीधुं ते यावन्मात्र जेटला काल लगण ग्रहण कर्युं, तावन्मात्र तेटला काल लगें पोहोचाडवुं तेने (फासिय के०) फरश्युं कहीयें ॥४४॥

पालिय पुणपुण सरियं, सोहिय गुरुदत्त सेस नोयणउ ॥
तिरिय समहिय कालो, किट्टिय नोयण समय सरणे ॥४५॥

अर्थः–बीजुं ज्यां लगें पञ्चरकाण पुरुं न थाय तिहां लगे (पुणपुण के०) वारंवार उपयोग देइने सावधानतायें (सरियं के०) संनार्युं जे महारे अमुक पञ्चरकाण आजे ठे, एवीरीते पञ्चरकाणने स्मरणमां राखवुं ते (पालिय के०) पाल्युं कहीयें.

त्रीजुं (सोहिय के०) शोनित एटले शोनाव्युं, ते आहारादिक लाव्या होइयें ते प्रथम (गुरुदत्त के०) गुर्वादिकने निमंत्री आपीने पठी (सेस के०) शेष रह्युं होय जे (नोयणउ के०) नोजन तेने पोतें लेवा थकी एटले पञ्चरकाण कीधुं ठे ते पूरण थया पठी ते वस्तु लावी पहेला गुरुने आपी पठी

पोतें वावरे ते (सोहियं के०) पच्चरकाण सोनाव्युं कहीयें. चोथुं (समहि यकालो के०) समधिककाल ते पच्चरकाणनो काल पूर्ण थया पछी पण थो डोसो अधिक काल लगे पडखीने सत्तुर करीने पछी पच्चरकाण पारे, तेने (तिरिअ के०) पच्चरकाण तिरित एटले तीर्युं कहीयें. पांचमुं (जोयणस मय के०) जोजनना समयने विषे जोजननी वेलायें (सरणे के०) संजा रवुं जे फलाणुं अमुक पच्चरकाण हतुं ते आज महारुं पूर्ण थयुं छे. हवे अ शन करुं? आरोगुं? निस्तारुं? इत्यादिक विनय जाषा साचवीने जमवुं, तेने (किट्टिय के०) पच्चरकाण कीर्त्युं कहीयें ॥ ४५ ॥

इअ पढिअरिअं आरा, हियं तु अहवा छ सुद्धि सद्दहणा ॥
जाणण विणयणु जावण, अणुपालण जावसुद्धत्ति ॥४६॥दारं॥८॥

अर्थः—छठुं (इअ के०) ए सर्व प्रकारें करी (पडियरियं के०) प्रतिचर्युं एटले आचर्युं जे पच्चरकाण एटले ए सर्व प्रकारें संपूर्ण निश्चायें पमाइथुं निराशंस पणे श्रीजिनाज्ञा पालन पूर्वक संयमयात्रा निर्वाहक षट्कारण साधन पूर्वक अप्रमादपणे महोटा कर्मक्षयने कारणे थयुं तेने (आराहि यं के०) आराधितं एटले आराध्युं कहीयें (अहवा के०) अथवा प्र कारांतरें करी (तु के०) वली पण पच्चरकाणनी (छसुद्धि के०) छ शुद्धि प्रकारांतरें बीजी छे ते कहे छे. प्रथम सम्यग्दर्शनी, श्रद्धावंतना मु खथी पच्चखाण करवुं अने निःशंकता आचारयुक्त शुद्ध सद्दहणा पूर्वक क रवुं एटले करेला पच्चरकाण उपर शुद्ध जाव होय ते (सद्दहणा के०) सद्द हणा शुद्धि जाणवी, बीजी पच्चरकाणने द्रव्य क्षेत्र, काल अने जावथी जाणीने तथा मूल उत्तर गुणे जेद जंगादिकें जाणीने वली जाणनी पासें पच्चरकाण करे ते (जाणण के०) जाणवापणुं ए बीजो अधि कार शुद्ध जाणवो. त्रीजी सुज्ञानादिक आचारसंयुक्त अतिचार अविधि रहित गुरुनीपासे वांदणा देवा प्रमुख विनय साचवीनें पच्चरकाण करवुं, ते (विणय के०) विनय शुद्धि जाणवी. चोथी गुर्वादिक कहेतां होय ते प्रत्यें आगारादिकनुं पोतें जांखवुं एटले गुरु पच्चरकाण करावे, अने पाछलथी पोते आगार उच्चरे ते (अणुजासण के०) अनुजाषण शुद्धि जाणवी. पांचमी निराशंस पणे रुडीरीतें पाले जो विषम जय कष्ट आवी उपजे

तो पण दृढ रहे परंतु पच्चरकाण नंग न करे पच्चरकाणथी चूके नही ते (अणुपालण के०.) अनुपालणा शुद्धि जाणवी. छठी पूर्वोक्त सर्वप्रकार थी निर्जरा रूप इहलोक परलोकनी वांछारहित पणे आशंकादि दोषे करी रहित ते (नावसुद्धित्ति के०) नावशुद्धि छे इत्ति एटले एम जाणवुं ए छ शुद्धि पण समस्त सर्वे पच्चरकाणोने विषे जाणवी एम नंगादि विशुद्धिना विस्तारना बीजक ग्रंथांतरथी जाणवां. एटले ए आठमुं छ शुद्धिनुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल अडासी थया ॥ ४६ ॥

हवे पच्चरकाणनुं फल बे प्रकारें थाय तेनुं नवमुं द्वार कहे छे.

पच्चरकाणस्स फलं, इह परलोएय होइ डुविहं तु ॥

इहलोए धम्मिल्लाइ, दामन्नगमाइ परलोए ॥४७॥दारं॥ए॥

अर्थः—(पच्चरकाणस्सफलं के०) पच्चरकाणनुं फल ते (इहपरलोएय के०) इह लोक तथा परलोक आश्री (डुविहं तु के०) वे प्रकारनुं वली (होइ के०) होय, तेमां कोइएक प्राणीने इहलोके एज नवमां तुरत फल थाय, अने कोइ एकने परलोकें एटले परनवे फल थाय, तिहां (इहलोए के०) आ लोक आश्रयी तो (धम्मिल्लाइ के०) धम्मिलादिकनो दृष्टांत वसुदेवहिंम ग्रंथथी जाणवो, एटले धम्मिल्लें उत्तरगुण पच्चरकाण चारित्र रूप छ महीना पर्यंत आयंबिल प्रमुख तप कर्युं तेथी तेहीज नवें घणी लब्धि उपनी, शरीरना मलमूत्र सर्व औषधरूप थयां, राजसंपदा नोगवी मोक्षपदवी पाम्यो, अने (परलोए के०) परलोकने विषे एटले परनवमां (दामन्नगमाइ के०) दामन्नकादि प्रमुखना एटले दामनक नामे व्यवहारीयाना बेटानो दृष्टांत श्रीआवश्यकनिर्युक्तिप्रमुख ग्रंथ थकी जाणवो. एटले पच्चरकाण फलनुं नवमु द्वार थयुं. उत्तर बोल नेवुं थया ॥ ४७ ॥

एमां आ नव आश्रयी पच्चरकाणना फलसंबंधि धम्मिल्लकुमारादिकनो दृष्टांत कह्यो छे तेनी कथा संक्षेपथी लखवी जोइयें, परंतु ए धम्मिल्लनो रास छपाइ गयो छे तेमां एमनी संपूर्ण कथा घणा सज्जनोने वांचवामां आवी गयेली छे, माटे आंही लखी नथी, जे सज्जनोनें वांचवानी अनिलाषा होय तेमणें रास वांची लेवो.

अने परनवें दामन्नगादिकने फल थयुं छे ते दामन्नकनो दृष्टांत संक्षेप

मात्रें लखीयें ढैयें:—राजपुर नगरें एक कुलगर रहेतो हतो तेनो जिनदास श्रावक मित्र हतो तेना संगतथी कोइक दिवसें साधु पासें गयो, त्यां मत्स्य ना मांसनो नियम लीधो, अनुक्रमें डुर्भिक्ष थयुं तेवारे घणा लोक मत्स्या हारी थके शालिकादि पुरुषें बलात्कारें इह समीपे आण्यो, तिहां ते जाल मां नाखेला मत्स्यने जोईने मूकी आपे एम त्रण दिवस सुधी बलात्कार कराव्यो, तेवारें एक मत्स्यनी पांख त्रूटी देखी बलात्कारें तेथी निवर्त्त्यो, पढी अणसण लेइ मरण पामी राजगृह नगरें शेठनो पुत्र थयो, दामन्नक नाम दीधुं, ते आठ वर्षनो थयो तेवारें तेनुं कुल मरकीना रोगथी मरण पाम्युं, उ ञ्छिन्न थयुं, तेवारे ते दामन्नक कोइ सागरदत्त व्यवहारीने घरे डुःखित थको रह्यो. एकदा साधुनुं युगल जिक्षाने अर्थे ते व्यवहारीने घेर आव्युं, तिहां ते बालकने देखीने परस्परे साधु बोल्या जे ए बालक ए घरनो स्वामी थ शे, ते प्रछन्न प्रवृत्ति घरना अधीशें जाणी तेवारें अमर्ष पणे करी ते बाल कने मारवा जणी अंत्यजने आप्यो, तेणे अजिज्ञान देखाडवा निमित्तें तेनी टची अंगुली ढेदी परं तेने निर्विषय जय देखाडी परहो काढयो, पढी ते बालक अनुक्रमे नाशे थको ते शेठनुं जिहां गोकुल ढे ते ग्रामें आव्यो. तिहां ते गोकुलना स्वामीयें तेने स्वरूपवान् विनीत देखी पुत्र पणे थाप्यो. यौवन पाम्यो पढी अनुक्रमें केटला एक वर्षांतरें तिहां सागरदत्त शेठ आ व्या, तेणें तेने देखीने उलख्यो तेवारें कोइ कार्यनुं निमित्त करी लेख लखी ने आप्यो, तेमां शेठे पोताना पुत्रने लख्युं जे एने विष आपजो. एवो लेख आपी पोताने नगरे मोकल्यो, ते श्रांत थयो थको उद्यान मांहे कामदेवना प्रासादे आवी सूतो, तिहां वरार्थिनी एवी शेठनी पुत्री काम देव पूजवा आवी, तिहां तेणें तेने सूतो देखी कागलमां पोताना पिताना अक्षर देखी कागल वांच्यो, तेमां विष देवानुं लख्युं जोइने पोतानुं नाम विषा ढे तेथी तेनी इछक थइ मनमां विचार्युं जे महारा पितायें सुंदर स्वरूपवान् जाणी वर मोकल्यो ढे, पण विष देजो एवुं लख्युं ढे ते महारा पिता कागल लखतां जूला ढे विषाने स्थानके विष लखाइ गयुं ढे, अने कामदेवें पण महारा उपर प्रसन्न थइने ए वर मुजने आप्यो माटे काग लमां विष लख्युं हतुं तिहां विषा देजो एम कन्यायें अंजनशलाकायें ल खीनें पाढो लेख तेने ठेकाणे मूकी दीधो अनुक्रमें ते घेर आव्यो, तिहां त

रत लग्न लेइ कन्या परणावीने जामाता कीधो एवी वात सांजलीने शेठ घरे आव्यो क्रोधाध्मांत थको कहेवा लागो जे मातृपूजन निमित्तें पाणि ग्रहण मंगलिक वधाववा नणी जमाइने मोकलो अने शेठे मारवा सारु अंत्यजने संकेत कराव्यो हतो हवे ते मातृपूजन निमित्तें जाय एटलामां विकालवेला जाणी नवपरणित हतो माटे शेठनो पुत्र कहेवा लाग्यो के तमारी वती हुं मातृपूजन करवा जाउं बुं एम कही ते गयो एटलामां वच्चे रस्तामां अंत्यजें तेनो संकेत जाणी ते शेठना पुत्रने जमाइ समजी मारी नाख्यो. नवितव्यताथी बलवत्तर कोइ नथी. पठी ते पुत्रमरणनुं वृत्तांत सांजलीने हृदयस्फोट थइ शेठ पण मरण पाम्यो अनुक्रमें घरनो स्वामी दामन्नक थयो. रुषिनाषित वचन अन्यथा न थाय.

अनुक्रमें एकदा पाठले पोहोरे पाहरी देतो तेणे एक मंगल पाठक गाथा कही तद्यथा ॥ अणुपुंखमावहंतावि, अन्नञा तस्स बहु गुणा हुंति ॥ सुह डुरककम्म पुडंतो, जस्स कयंतो वहइ परकं ॥१॥ ए गाथानुं अर्थ सांजली एक लक्नुं दान दीधुं,एम त्रणवार गाथा सांजली त्रण लक्ष दान दीधुं. राजायें ते वात सांजलीने पोतानीपासें तेडाव्यो पठी सर्व वीतक वात राजा आगल कही, राजा हर्ष पाम्यो थको तेने नगर शेठनी पदवीयें थाप्यो. एकदा गुरु आव्या सांजली वांदवा गयो, तिहां धर्मदेशना सांजली अने पुरातन नव मत्स्य मांस पच्चरकाणादिक सर्व सांजर्युं बोधिलान पाम्यो, धर्मानुष्ठान साचवी देवलोक गयो तिहांथी महाविदेहमां सुकुलमां उपजसे, तिहां बोधिलान पामी चारित्र लही केवल ज्ञान पामी परंपरायें मोक्ष सुख पामशे, अने केटलाएक तेहिज नवे सिद्धि पामे. ए बे प्रकारें फलनुं नवमुं द्वार थयुं ॥

एटले सर्व मूलगुण प्रत्याख्यान सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान तथा अनिग्रहादिक देश उत्तरगुण पण होय अने श्रावकनें देश मूलगुण प्रत्याख्यान ते अणुव्रत तथा देश उत्तर गुणप्रत्याख्यान ते गुणव्रत अने शिक्षाव्रत जाणवां ते वली बे बे नेदें एक इत्वर ते अल्पकालि अनागतादि पच्चरकाण मूल उत्तर गुणपच्चरकाण अने देश उत्तरगुण पच्चरकाण ते शिक्षाव्रतादि तथा देशे मूलगुण पच्चरकाण अने सर्वेथी उत्तरगुणपच्चरकाण अने मूलगुण क्रिया रूपें एवुं पच्चरकाण धम्मिल्लादिकने जाणवुं. इत्यादिक पच्चरकाणना नंग विकल्प

घणा छे, ते गुरुना विनयथी जाणीयें माटे यथागृहीत जंगें पच्चरकाण आराधवां तेनुं गमन संपूर्णद्वारायें कहे छे ॥ ४७ ॥

हवे ग्रंथ समाप्ति अर्थें गाथा कहे छे.

पच्चरकाणमिणं से, विऊण जावेण जिणवरुद्दिहं ॥
पत्ता अणंत जीवा, सासय सुरकं आणाबाहं ॥४८॥

॥ इति प्रत्यारव्यानजाष्यं संपूर्णम् ॥

अर्थः—(पच्चरकाणं के०) पच्चरकाण ते (इणं के०) ए यथोक्त कह्युं ते प्रत्यें (जावेण के०) जावे करीने एटले जावसहित, श्रद्धायें करी निःशंकित सम्यग्दर्शन सहित जे रीतें (जिणवर के०) जिनेश्वर जगवानें ज्ञान क्रियासहित उजयनयसम्मत (उद्दिहं के०) कह्युं छे, प्रकाश्युं छे ते प्रकारें एवा गुणधारण रूप पच्चरकाणने (सेविऊण के०) सेवीने, आदरीने, पालीने त्रिकालापेक्षायें (अणंत जीवा के०) अनंत जीव जव्यप्राणी ते (सासयसुरकं के०) शाश्वता सुख (अणाबाहं के०) अनाबाध अव्याबाध निराबाध, एटले नथी कोइ बाधा जिहां एवुं जे मोक्ष स्थानक ते प्रत्यें (पत्ता के०) पाम्या, पामे छे, अने पामशे ॥ ४८ ॥

ए अर्थ संक्षेप मात्रथी लख्यो छे, वली जे विशेषार्थीना खपी होय तेणें आवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्ति, प्रवचनसारोद्धार वृत्ति, कल्पाकल्पशतक प्रकरण, इत्यादि ग्रंथ जोवा. आ बालावबोध श्रीज्ञानविमल सूरि महाराजें करेलो हतो पण तेनुं लखाण संकोचमां होवाने लीधे बीजी केटली एक टबा प्रमुखनी प्रतो साथें मेलवी पदोनां अर्थ कांइक खोलासा पूर्वक लखेला छे, तथापि महारी मंदमतिने लीधे तथा छापवानी उतावलने लीधे जे जूलो रही गयेलीउ होय ते चतुर पुरुषोये शोधीने वांचवी. हुं महाराथी थयली अशुद्धतानुं मिच्छामिडुक्कड सर्वे वांचनार साहेबोनी साथे करुं छुं. इति प्रत्यरव्यानजाष्यं बालावबोधसहितं समाप्तम् ॥ शुजंजवतु ॥

॥ इति जाष्यत्रयं बालावबोध सहितं समाप्तम् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनानि लिख्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंमण, प्रवर गुणगणनूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्झरावली नमे अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंमरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडी पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृंगसिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडीनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी वस्या रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही, विमल गिरिवर तो परं ॥ नहिं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंमण, दुःखविहंमण ध्याइयें ॥ निजशुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योतिने पाइयें॥७॥जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपदस्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥८॥इति॥१॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय चैत्यवंदनं ॥

॥ श्री शत्रुंजय सिद्ध खेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ नाव धरीने जे चडे, तेने नव पार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय॥पूर्वे नवाणुं रिखनदेव, ज्यां ठविआ प्रनु पाय ॥२॥ सूरजकुंम सोहामणो,कविड जक्ष अनिराम ॥ नानिराया कुलमंमणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥३॥इति॥२॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदनं ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ शत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्री अजित नाथ, आबु रिखन जुहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरें, जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं, नरतें नरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैनारकगिरि ऊपरें, श्री वीरजिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजीयो, नामें देव सुपास ॥ रिखन कहे जिन समरतां, पोहोचे मननी आस ॥ ५ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चोवीश जिननुं चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रन ने वासुपूज्य, दोय राता कहीएं ॥ चंद्रप्रन ने सुविधिनाथ, दो

उज्ज्वल लहीएं ॥ १ ॥ मल्लीनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरख्या॥मुनि सुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा॥२॥शोले जिन कंचन समा ए, एवां जिन चोवीश॥धीरविमल पंमित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य॥३॥इति॥४॥

॥ अथ श्रीचोविश जिन समकितनवगणतीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, नव तेर कहीजें ॥ शांतितणा नव बार सार, नव नव नेम लहीजें ॥ १ ॥ दश नव पासजिणंदने, सत्तावीश श्री वीर ॥ शेष तीर्थंकर त्रिहुं नवें, पाम्या नवजल तीर ॥ २ ॥ ज्यांथी समकित फरसीयुं, त्यांथी गणीएं तेह ॥ धीरविमल पंमित तणो, ज्ञानविमल गुण गेह ॥ ३ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ चउदशें बावन गणधरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणुं ठेक ॥ दोय अधिक इग सय गणा, शोल अधिक शत एक ॥ १ ॥ शत सुमति ने गणधरा, एकसय अधिका सात ॥ पंचाणुं त्राणुं तथा, अडसी इगसी व्रात ॥ २ ॥ छोहोंतेर छाशठ सगवन, पंचास तेंतालीश ॥ छत्तिस पणतिस कुंथुने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवीस अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिखनादिक चोवीशना, एक सहस सय चार ॥ अधिकेरा बावन कह्या, सर्व मली गणधार ॥ ५ ॥ अक्षय पद वरिया सवेए, सादि अनंत निवास ॥ करिएं शुन चित्त वंदना, जब लग घटमां शास ॥ ६ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ पंच परमेष्ठि चैत्यवंदनं ॥

॥ बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें नावें ॥ सिद्ध आठ गुण समरतां, डुःख दोहग जावे ॥ १ ॥ आचारज गुण छत्रीस, पंचवीश उवझाय ॥ सत्तावीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टोत्तर सय गुण मली ए, एम समरो नवकार ॥ धीरविमल पंमित तणो, नय प्रणमे नित सार॥३॥इति॥७॥

॥ अथ सीमंधरजिन चैत्यवंदनं ॥

॥ श्री सीमंधर वीतराग, त्रिनुवन तुमें उपगारी ॥ श्री श्रेयांसपिताकुलें, बहु शोना तुमारी॥१॥ धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणें जायो जयकारी ॥ वृषन लंबनें विराजमान, वंदे नर नारी ॥ २ ॥ धनुष पांचशें देहडी ए, सोहीयें सोवन वान ॥ कीर्त्तिविजय उवझायनो, विनय धरे तुम ध्यान ॥३॥

॥ अथ सीमंधर जिन चैत्यवंदनं ॥

॥ सीमंधर परमातमा, शिव सुखना दाता ॥ पुख्कलवइ विजयें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगिणी, नयरीयें शोहे ॥ श्रीश्रेयांस राजा तिहां, नवियणनां मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकी राणी मात ॥ कुंथु अर जिन अंतरे, श्री सीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रजु जनमीया, वली यौवन पावे ॥ मात पिता हरखें करी, रूकमिणी परणावे ॥ ४ ॥ नोगवी सुख संसारनां, संजम मन लावे ॥ मुनिसुव्रत नमि अंतरें, दीक्षा प्रजु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नाण ॥ रिखन लंबनें शोनता, सर्व नावना जाण ॥ ६ ॥ चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एकशो कोड ॥ त्रण जुवनमां जोयतां, नहीं कोय एहनी जोड ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रजुजीनो परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदयपेढाल जिनांतरें ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जस विजय गुरु प्रणमतां, शुनवंछित फल लीध ॥ ९ ॥ ९ ॥

॥ अथ सीमंधरचैत्यवंदनं ॥

॥ श्रीसीमंधर जगधणी, आ नरतें आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल नक्त तुमो धणी ए, जो होवे अपनाथ ॥ नवो नव हुं बुं ताहरो, नहीं मेहेलुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग बंमी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेवीने, शिव रमणी वरीशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजनें घणो ए, पूरो सीमंधरदेव ॥ इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव ॥ ४ ॥

॥ अथ वीश स्थानकनुं चैत्यवंदन ॥

॥ पेहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ नमो थेराणं पांचमे, पाठक गुण बहे ॥ नमो लोए सवसाहूणं, जे बे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन नावो ॥ विनय करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंनवयधारिणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चउदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तिबस्स जाणी ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमतां होय सुखखाणी ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वीसथानकतपना काउस्सगनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पंदर पिसतालीशनो, बत्रीशनो करीयें ॥. दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग्ग मन धरीये ॥ १ ॥ पंच सडसठ दश वली, सीत्तेर नव पणवीश ॥ बार अडवीस लोगस्स तणो, काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर इगवन, द्वादश ने पंच ॥ एणी परें काउस्सग्ग जो करे, तो जाये नव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणी लेजो वीश ॥ वीश थानक एम जाणीयें. संक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥ नाव धरी मनमां घणो ए, जो एकपद आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज कारज साधे ॥ ५ ॥

॥ अथ रोहिणीतप चैत्यवंदनं ॥

॥ रोहिणी तप आराधीयें, श्रीश्री वासुपूज्य ॥ डुःख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पेहेला कीजें वासखेप, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हें करी धोतीआं, मन वच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ नावें नावना नावीयें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहुं कालें लेइ धूप दीप, प्रनु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी नक्तिशुं, अविचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जिननो कीजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइयें, जिम नावे संताप ॥ ५ ॥ कोड कोड गुण फल दीये, उत्तर उत्तर नेद ॥ मान कहे ए विध करो, ज्युं होवे नवनो छेद ॥ ६ ॥ १३ ॥

॥ अथ विचरता जिननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन वीश ॥ रिखनादिक वली वंदीयें, संपइ जिन चोवीश ॥ १ ॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वलि सार ॥ समेतशिखर ए पंचतीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥ ऊर्ध्व लोकें जिनहर नमुं, ते चोराशी लाख ॥ सहस सत्ताणुं उपरें, त्रेवीश जिनवर नांख ॥ ३ ॥ एक शो बावन कोड वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस चुम्माली सात शें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिननवन नमुं, सात कोड बोहोंतेर लाख ॥ तेरशें कोड नेव्याशी कोड, शाठ लाख चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषमां वली ए, जिन नवन अपार ॥ ते नवि नित्य वंदन करो, जेम पामो नवपार ॥ ६ ॥ तिर्छा लोकें शाश्वतां, श्रीजिननुवन विशाल ॥ बत्रीशशें ने उंगणशाठ, वंडुं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें वीश मनोहार ॥ जिनपडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य

करुं जुंहार ॥ ८ ॥ त्रण भुवनमांही वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय पद दातार ॥ ९ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ दुविध धर्म जिणें उपदिश्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजें जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमति जिनें, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष. तेहनें भवि तजीयें ॥ मुज परें शीतल जिन कहे, बीजदिन शिव भजीयें ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासुपूज्य परें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीयें ॥ अर जिन बीज दिनें चवी, एम जन आगल कहीयें ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीयें, एम जिन कल्याण ॥ बीजदिनें केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें ए, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेग वीरजिन, भांखे भविजन आगें ॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो भली भातसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणें, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुसुमउपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो सासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोडी वरसां लगें, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुभदृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो भावशुं, टाले भव फेरो ॥ ८ ॥ एणी पेरें पंचमी आराहीये ए, आणी भाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदी आठमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि

आठमे, संजव चवि आयो ॥ १ ॥ चउतर वदनी आठमें, जनम्या रुषज जिणंद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव शुदि आठम दिनें, आठ कर्म कयां दूर ॥ अजिनंदन चोथा प्रजु, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिणंद ॥ आठ जाति कलशें करी, नवरावे सुरविंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रत स्वामी ॥ नेम आषाढ शुदि आठमें, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमें, नमि जन्म्या जग जाण ॥ तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥ जाद्रवा वदि आठमदिनें, चविया स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तमपद पद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रजु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्विज यज्ञ ॥ इंद्रजूति आदें मल्या, एकादश विप्र ॥ २ ॥ एकादशमे चउ गुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदीयें, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्ली जन्म अर मल्ली पास, वर चरण विलासी ॥ रुषज अजित सुमति नमी, मल्ली घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिववास पास, जवजवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वरनाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें, एकादश पाठां ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी, मसी कागल काठां ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत छांमवां ए, वहो पडिमां अगीयार ॥ खिमाविजय जिन शासनें, सफल करो अवतार ॥ ९ ॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकरनी राशिउनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष छे, कुंथु अजित वृष जाति ॥ संजव अजिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रज नेम वीर, पास सुपास तुला ए ॥ शशी वृश्चिक धन रुषजदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने ए, बारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी, सुखीया श्री शुजवीर ॥ ३ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेश्वर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जग गुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अविकार सार, करुणारससिंधु ॥ जगतीजन आधार एक, निःकारण बंधु ॥२॥ गुण अनंत प्रजु ताहराए, कि मही कल्या न जाए ॥ राम प्रजु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय॥३॥२०

॥ अथ श्रीजिनपूजानुं चैत्यवंदन ॥

॥ निजरूपें जिननाथके, इव्यें पण तिमही ॥ नाम थापना जेदथी, प्रगट जगमांही ॥ १ ॥ अध्यातमथी जोडीयें, निखेपा चार ॥ तो प्रजुरूप समान जाव, पामे निरधार ॥ २ ॥ पावन आतमनें करे ए, जन्म जरादि दूर ॥ ते प्रजु पूजा ध्यानथी, राम कहे सुख पूर ॥ ३ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ श्री चंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन.

॥ अरिहंत नमो जगवंत नमो, परमेसर जिन राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमें पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रजु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुयण जवियणजण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ललि ललि पाय नमुं हुं जावे, कर जोडीनें त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तूं जग जन सज्जन, नयनानंदन देव नमो॥सकल सुरासुर नर वर नायक,सारे अहोनिश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तूं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तूं निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत जविने हितवत्सल, तुंही कृपारससिंधु नमो ॥ अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शें दर्शित, लोकालोकस्वजाव नमो ॥ नाशितसकलकलंकक लुषगण, डुरित उपद्रवजाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार जावोदधितारण, तूं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीउ अनुपम दानेसर, ज्ञान विमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वर पार्श्वजिन छंद ॥

॥ सेवो पास संखेसरो मन्न शुद्धें, नमो नाथ निश्चें करी एक बुद्धें ॥ देवी देवलां अन्यने शुं नमो छो, अहो जव्यलोको जुला कां जमो छो ॥ १ ॥

त्रिलोकना नाथने शुं तजो छो, पड्या पाशमां नूतने कां नजो छो ॥ सुरधेनु छंमी अजा शुं अजो छो, महा पंथ मूकी कुपंथें व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणि काचमाटें, ग्रहे कोण रासनने हस्ति साटें ॥ सुर डुम उपाडी कुण आक वावे, महा मूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं, किहां केशरी ने किहां ते कुरंगं ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एकचित्तें प्रनु पास सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्नावती प्राणनाथं, सहू जीवने जे करे छे सनाथं ॥ महा तत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेनां डुःख दारिद्र दूरें पलावे ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने वृथा कां गमो छो, कुशीलें करी देहनें कां दमो छो ॥ नही मुक्तिवासं विना वीतरागं, नजो नगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न नांखे सदा हेत आणी, दयानाव कीजें प्रनु दास जाणी ॥ आज माह्यरे मोतीडे मेह वुठा, प्रनु पास संखेश्वरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ कल्याणकेलिसदनाय नमोनमस्ते, श्रीमत्सरोजवदनाय नमोनमस्ते ॥ रागारिवारकदनाय नमोनमस्ते, वज्राजिरामरदनाय नमोनमस्ते ॥ १ ॥ अंनोधराजकरणाय न० ॥ लोकातिरिक्तवरणाय न० ॥ संसारवार्धितरणाय न० ॥ त्रैलोक्यसारशरणाय न० ॥ २ ॥ सन्निर्मितांघ्रिमहनाय न० ॥ रागोरुदारुदहनाय न० ॥ विध्वस्तकृत्स्नकुहनाय न० ॥ पुण्यडुमालिगहनाय न० ॥ ३ ॥ संसारतापशमनाय न० ॥ निर्दाहृयदाहृयदमनाय न० ॥ सुव्यक्तमुक्तिगमनाय न० ॥ रूपाजिनूतकमनाय न० ॥ ४ ॥ पापौघपांसुपवनाय न० ॥ सेवापरत्रिनुवनाय न० ॥ क्रोधाशुशुक्षणिवनाय न० ॥ संसृत्युदन्वदवनाय न० ॥ ५ ॥ नेत्राजिनूतकमलाय न० ॥ शक्रार्चितांघ्रियमलाय न० ॥ निर्नाशिताखिलमलाय न० ॥ पद्मोल्लसत्परिमलाय न० ॥ ६ ॥ श्री अश्वसेनतनयाय न० ॥ सर्वाद्नुतैकविनयाय न० ॥ विख्यातनिश्चितनयाय न० ॥ निर्णीतनूर्युपनयाय न० ॥ ७ ॥ श्रीसंघहर्षसुविनेयकधर्मसिंह, पादारविंदमधुलिण्मुनिरत्नसिंहः ॥ पार्श्वप्रनोर्नगवतः परमं पवित्रं, स्तोत्रं चकार जनताजिमतार्थसिद्ध्यै ॥८॥

॥ अथ श्री महावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधने मन्नथी दूर वारो ॥

संतोष वृत्ति धरो चितमांहिं, राग द्वेषथी दूर थाउं उछाहिं ॥ १ ॥ पड्या मोह ना पासमां जेह प्राणी,शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैनमार्ग छंडी भुला कां भमो छो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो, सलोभी समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अन्य थी शुं रमो छो, नदी गंग मूकी गलीमां पडो छो ॥३॥ केइ देव हाथें असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंडमाला ॥ केइ देव उत्संगें राखे छे वामा, केइ देव साथें रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जापमाला, केइ मांसभक्षी महाविकराला ॥ केइ योगिणी भोगिणी भोग रागें, केइ रुद्रणी छागनो होम मागे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिनां सु खने केम चाखे ॥ जदा लोभना थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंदुउ मन्न भाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश राखे, तेह पिंडने मन्नशुं लेय चाखे ॥ दीन हीननी भीड ते केम भांजे, फुटो ढोल होये कहो के म वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता भजो मोक्षदाता, अलोभी प्रभुने भजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंड शुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि शुं जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म एकत्व भू लो भमे छे ॥ कीहां सर्षवा ने कीहां मेरु धीरं,कीहां कायरा ने कीहां शूरवी रं ॥ ए ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंभखंडं, किहां कोद्रवा ने कीहां खीर मंडं ॥ कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां छागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां रंकनारी कीहां राय राणी ॥ कीहां नारकी ने कीहां देव भोगी, कीहां इंद्र देही कीहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्म धारी, नमो वीर स्वामी भजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वा मी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठ शुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंभ रोषी, सजो पुण्य पोषी भजो ते अ रोषी ॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आशधारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तुहीं तुहीं तुहीं प्रभु परम रागी,भव फेरनी श्रृंखला मोह भांगी ॥ १४ ॥ मानियें वीरजी अर्ज छे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउ गुरु आज मेरो, विवेकें लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य,गौतम नाम जपो निशदिश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरिवर चढे मनवांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामें नावे ढूकडा ॥ भूत प्रेत नवि खंभे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय, गौतम नामें वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामें जयजयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनवंछित कापड तंबोल ॥ घरचुं घरणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरुसमान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पोहोंचे वंछित कोड ॥ महीयल माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारनो छंद ॥

॥ दुहा ॥ वंछित पूरे विविध परें, श्री जिन शासन सार ॥ निश्चे श्री नवकार नित्य, जपतां जयजयकार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयं मुख वदे, पंच परमेष्ठि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरया संपत्ति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सद्गुरु भाषित सार ॥ सो भवियां मन शुद्धशुं, नित्य जपीयें नवकार ॥ ४ ॥ छंद ॥ नवकारथकी श्रीपाल नरेशर,पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ शमशान विषे शिवनाम कुमरनें, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता नरक निवारे, पामे भवनो पार ॥ सो भवियां भत्तें चोखें चित्तें, नित्य जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वडशाखा शिंके बेसि, हेठल कुंभ हुताश ॥ तस्करने मंत्र समर्प्यो श्रावकें, ऊड्यो ते आकाश ॥ विधिरीतें जपंता विषधर विष टाले, ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर दुष्ट

विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नव लाख जपंतां थाये जिनवर, इस्यो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शिख्यो मुनिवर पासें, महामंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते राजसिंह पृथिवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले ॥ दीठो श्रीपासकुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार ॥सो० ॥ ए ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रिय संयोग ॥ इण ध्यानथकी कष्ट टल्युं उंबरनुं, रक्तपित्तनो रोग ॥ निश्चेंशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्मतणो आधार ॥ सो० ॥१० ॥ घरमांहि कृष्ण भुजंगम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रभावें हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी ग्रहीनें, पाडी बाण प्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर, भवदुःख भंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबलें कादव काढयां, शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देवलोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही, विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आद्य न जाणे, एम भांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें, समरे संपति थाय ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंडरगिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधरने एक मोर ॥ सद् गुरु सन्मुख विधें समरंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलि कारोपण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी रिद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवार्या, सुरें करी मनोहार ॥सो०॥ १६ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सज्झाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित ॥ पंच प्रमाद विषय तजो पंचह, पालो पंचाचार ॥सो०॥ ॥१७॥ कलश ॥छप्पय॥ नित्य जपीयें नवकार, सारसंपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो, एम जपे श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य गणीजें ॥ श्री उवझाय सुसाधु, पंचपरमेष्ठी थुणी जें ॥ नवकार सार संसार छे, कुशल लाभ वाचक कहे ॥ एक चित्तें आराधतां, विविध ऋद्धि वंछित लहे॥ १८॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजियें ए ॥ प्रजातें उठी मांगलिक कामें, शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी जरतनी बेहेनडी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामें रुषजसुता ए ॥ अंक स्वरूपी त्रिजुवन मांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३॥ चंदनबाला बालपणाथी,शीयलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी,राजिमती नेम वल्लजा ए ॥ जोबन वेशें कामनें जीत्यो, संयम लेइ देव डुल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांमव नारी, डुपद तनया वखाणीएं ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां, शीयलमहिमा तस जाणीएं ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी प्रणालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुरजुवनें जस गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची, राची नही विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे.ए ॥ ९॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सती सुजद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंमित, शिवा शिवपदगामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थइयें,बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांमुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांमव माता दसेदसारनी, बेहेन पतिव्रता पद्मिनी ए ॥ १३॥ शीयलवती नामें शीलव्रतधारिणी, त्रिविधें तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिसण डुरित निकंदीयें ए ॥ १४॥ निषिधा नगरी नलह नरिंदनी,दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिजुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५॥ अनंग अजीता जगजन पूजिता, पुष्फचूलाने प्रजावती ए ॥ विश्वविख्याता कामितदाता, शोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६॥ वीरें जांखी शास्त्रें साखी, उदयरतन जांखे मुदा ए ॥ वाहाणुं वातां जे नर जणशे, ते लेशे सुख संपदा ए ॥ १७॥ इति ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नूपति शोहे क्षत्रियकुंमें, तस घेर त्रिशला कामिनी ए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक ॥ जामिनी मध्ये शोजतां रे, सुपन देखे बाल ॥ मयगल वृषन ने केसरी, कमला कुसुमनी माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्मसर जलनिधि उत्तम, अमरविमान अनूप ॥ रत्ननो अंबार उज्ज्वल, वन्हि निर्धूमज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत ॥ चउद सुपन सूचित विश्वपूजित, सकल सुख दातार ॥ मंगल पेहेलुं बोली एं ए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुनूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथवी नामें नार ॥ इंद्रनूति आदें थ ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणें आदर्युं, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें स मे तिहां समोसर्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेहनो सांजली, लीधो संजम जार ॥ अगीयार गणधर थापीया, श्री वीरें तेणी वार ॥ इंद्रनूति गुरुजगतें थयो. महा लब्धिनो जंमार ॥ मंगल बीजुं बोलीयें, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पामली पुरवरें, सकमाल नामें मं त्रीसरू ए ॥ लाउलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहु सुख करू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोम णि, थूलिजद्र जग विख्यात ॥ मोहवशें वेश्यामंदिर, वस्या वर्षेज बार ॥ जोग जली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्याआवासें रह्यो निश्चल, म ग्यो नहीं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार ॥ मंगल त्रीजुं बोलीएं, श्री थूलिजद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेम मणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजें जगे ए ॥ सुरपतिनिर्मित त्रण गढ शोजित, मध्ये सिंहासन जगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ जगमगे जिन सिंहासने ए, वा जित्र कोडा कोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बेहु कर जोड ॥ प्रातिहा रज आठशुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शोजे श्री जगवंत ॥ सुर नर किन्नर मानवी, बेठी ते पर्षदा बार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप जावना रे, टाले सघलां

कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्री जिनधर्म ॥ ए चार मंगल गावशे जे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोडि मंगल पामशे, उदयरत्न जांखे एम ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री वीतरागाष्टकं ॥ जुजंगप्रयात छंदः ॥

॥ शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, न देवो न बंधुर्न कर्म न कर्त्ता ॥ न अंगं न संगं न चेष्टा न कामं, चिदानंदरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ न बंधो न मोक्षो न रागादि लोकं, न योगं न जोगं न व्याधिर्न शोकं ॥ न क्रोधं न मानं न माया न लोजं ॥ चि० ॥ २ ॥ न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिव्हा, न चक्षुर्न कर्णं न वक्रं न निज्ञा ॥ न स्वामी न जृत्यं न देवो न मर्त्यं ॥ चि० ॥ ३ ॥ न जन्मं न मृत्युर्न मोदं न चिंता, न कुज्ञो न जीतो न कश्यं न तुंज्ञा ॥ न स्वेदं न खेदं न वर्णं न मुज्ञा ॥ चि० ॥ ॥ ४ ॥ त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वनाथं, हृषीकेश विध्वस्त कर्मारिजालं, न पुण्यं न पापं न चाक्षादि प्रायं ॥ चि० ॥ ५ ॥ न बालो न वृद्धो न तुष्टो न मूढो, न खेदं न जेदं न मूर्त्तिर्न मेहा ॥ न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तंज्ञा ॥ चि० ॥ ६ ॥ न आद्यं न मध्यं न अंतं न मन्या, न ड्रव्यं न क्षेत्रं न कालो न जावा ॥ न गुरुर्न शिष्यो न हीनं न दीनं ॥ चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञान रूपं स्वयं तत्त्व वेदी,न पूर्णं न शून्यं न चैत्य स्वरूपी ॥ न चान्योऽन्य जिन्नं न परमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥ आत्माराममगुणाकरं गुणनिधिं चैतन्यरत्नाकरं, सर्वे जूतगतागते सुखडुःखे ज्ञाते त्वया सर्वगे ॥ त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा, ध्यायंति योगीश्वरा, वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं श्रीमान् हृदान्युद्यतं ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ स्तुतयो लिख्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम श्री सीमंधरजिन थोय ॥

॥ सीमंधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥ अरिहंत सकलनी, जाव धरी करुं सेव ॥ सकल आगम पारग, गणधर जांखित वाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ए थोय चार वखत पण कहेवाय छे.

॥ अथ सीमंधर जिननी थोय ॥

॥ श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसा जी ॥ कुंथु अर जिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परशंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरी दीक्षा, शिक्षा जगत निरासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रजु, जाशे शिववहू

पासें जी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलियां, इग सय सठि उक्किठा जी ॥ चउ अड अड मली मध्यम कालें, वीश जिनेश्वर दिठा जी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु, धायइ पुस्कर मोझारें जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगें, प्रवचन सार उद्धारें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्तें जी ॥ अर्थनिदेशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरवयुत रचियां, गणधर लब्धि विकसियां जी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षर पदना रसियां जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगी, विविध भंग व्रतधारी जी ॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारी जी ॥ पंचांगुली सूरि शासन देवी, देती तस जश ऋद्धि जी ॥ श्रीशुभवीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमां सिद्धि जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति प्रारंभः ॥

॥ आदि जिनवर राया जास सोवन्न काया, मरुदेवी माया धोरी लंछन पाया ॥ जगत स्थिति निपाया शुद्ध चारित्र पाया, केवल सिरिराया मोक्ष नगरें सधाया ॥ १ ॥ सवि जन सुखकारि मोह मिथ्या निवारी, डुरगति डुःख भारी शोक संताप वारी ॥ श्रेणि क्षपक सुधारी केवलानंतधारी, नमियें नर नारी जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समवसरण बेठा लागे जे जिन मीठा, करे गणप पइठा इंद्र चंद्रादि दिठा ॥ द्वादशांगी वरिठा गुंथता टाले रिठा, भविजन होय हिठा देखि पुण्यें गरिठा ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता जेह ऋद्धे महंता, जेह सुजनसंता टालियें मुझ चिंता ॥ जिनवर सेवंतां विघ्न वारे डुरंता, जिन उत्तम थुणंता पद्मनें सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शाश्वतजिन स्तुति ॥

॥ ऋषभ चंद्रानन वंदन कीजें, वारिखेण डुःख वारे जी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणमो, शाश्वत नाम ए चारे जी ॥ भरतादिक खेत्रें मली होवे, चार नाम चित्त धारे जी ॥ तेणें चारे ए शाश्वत जिनवर, नमीयें नित्य सवारें जी ॥ १ ॥ ऊर्ध्व अधो तीर्छे लोकें थइ, कोडी पन्नरशें जाणो जी ॥ उपर कोडी बेंतालीश प्रणमो, अडवन्न लख मन आणो जी ॥ बत्रीश सहस एंशी ते उपर, बिंब तणो परिमाणो जी ॥ असंख्यात व्यंतर ज्योतिषीमां, प्रणमुं ते सुविहाणो जी ॥ २ ॥ रायपश्रेणी जीवाभिगमें, भगवती सूत्रें भांखी जी ॥ जंबूद्वीपपन्नत्ती ठाणांगें, विवरीने घणुं दाखी जी ॥ वलीय

अ शाश्वती ज्ञाता कल्पमां, व्यवहार प्रमुखें आखी जी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहां बहु सूत्र बे साखी जी ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाथी आराधक, ईशानइंद्र कहाया जी ॥ तिम सूरियाज्ञ प्रमुख बहु सुरवर, देवी तणा समुदाया जी ॥ नंदीसर अठाइ महोत्सव, करे अति हर्ष जराया जी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दिवसें, पद्मविजय नमे पाया जी ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रस्तुति ॥

॥ जिन शासन वंबित, पूरण देव रसाल ॥ जावें जवि जणीयें, सिद्धचक्र गुण माल ॥ त्रिहुं कालें एहनी, पूजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमर पद, सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध वंदो, आचारिज उवज्झाय, मुनि दरिशण नाण, चरण तप ए समुदाय ॥ ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥ ए ध्यानें जविनां, जव कोटि डुःख जाय ॥ २॥ आसो चैत्रीमां, शुदि सातमथी सार ॥ पूनम लगें कीजें, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साडा चार ॥ एकाशी आंबिल तप, आगमने अनुसार ॥ ३ ॥ सिद्धचक्रनो सेवक, श्री विमलेसर देव ॥ श्रीपाल तणी परें, सुख पूरे स्वयमेव ॥ डुःख दोहग नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्रीसुमति सुगुरुनो, राम कहे नित्यमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ अरिहंत नमो वलि सिद्ध नमो, आचारजवाचक साहु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो तप, ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥ १ ॥ अरिहंत अनंत थया थाशे, वलि जाव निरेकेपें गुण गाशे ॥ पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं ॥ २ ॥ बरिपाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परें जव तरशे ॥ सिद्ध चक्रने कुण आवे तोलें, एहवा जिन आगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साढाचारे वरसें तप पूरूं, ए कर्म विदारण तप शूरूं ॥ सिद्धचक्र मनमंदिर थापो, नयविमलेसर वर आपो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीज तिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सु विशेष ॥ राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्रविमानें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चंदन, शीतल शीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमतिजिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म

ज्ञान निर्वाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजें, डुविध धर्म जगवंत ॥ जेम विमला कमला, विउल नयनविकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां निश्चय व्यवहार ॥ बीजें सवि कीजें, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केशरी, सरस सुगंध शरीर ॥ कर जोडी बीजें, हुं प्रणमुं तस पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेम जिणंद तो ॥ श्यामवरण तन शोजतुं ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रजु आयुखुं ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेलें हणि ए, पोहोता मुक्ति महंत तो ॥१॥ अष्टापद आदि जिन ए, पहोता मुक्तिमोझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावा पुरी नगरीमां वलि ए, श्री वीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हूवा ए, जांखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए, कीजें तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जक्ष जलो ए, देवीश्री अंबिका नाम तो ॥ शासन सांनिध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां काम तो ॥ तपगछनायक गुण निलो ए, श्री विजयसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखजदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥४॥ इति श्री पंचमीस्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरि सुरराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे जिनराज जी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधे जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगल कमला वाधे जी ॥१॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापदपरें बलीया जी ॥ आठमे आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥ अष्टमी गतिपरें पहोता जिनवर, फरस आठ नहिं अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे, समवसरण जिन राजे जी ॥ आठडे आठ शो आगम जांखी, जवि मन संशय जांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारें,

जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव जवफल लीजें जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजें जी ॥ आगमनुं तप करतां लीजें, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोड कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अतिरूअडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व मोहोटुं, कहो मुझशुं नेम ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणां, एकशोने पंचाश ॥ तेणें कारण ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनशुं रंग ॥ २ ॥ अगीआर अंग लखावियें, अगीयार पाठां सार ॥ अगिआर कवली विंटणां, ठवणी पूंजणी सार ॥ चाबखी चंगी विविधरंगी, शास्त्र तणे अनुसार ॥ एकादशी एम ऊजवो, जेम पामियें जवपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुकोमल काय ॥ जुजदंम चंम अखंम जेहनें, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वसी, गणि हर्ष पंमित शिष्य ॥ शासन देवी विघन निवारो, संघ तणां निशदिश ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनी ॥

॥ पूछे गौतम वीरजिणंदा, समवसरण बेठा सुखकंदा, पूजित अमर सूरिंदा ॥ केम निकाचे पद जिनचंदा, किण विध तप करतां जवफंदा, टाले डुरितह दंदा ॥ तव जांखे प्रजुजी गतनिंदा, सुण गौतम वसुजूतिनंदा, निर्मल तप अरविंदा ॥ वीश थानक तप करत महिंदा, जिम तारक समुदायें वृंदा, तिम ए सवि तप इंदा ॥ १ ॥ प्रथम पदें अरिहंत नमीजें, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज थेर ठविजें ॥ उपाध्यायने साधु ग्रहीजें, नाणदंसण पद विनय वहीजें, अगीआरमे चारित्र लीजें ॥ बंजवयधारीणं गणीजें, किरियाणं तवस्स करीजें, गोयम जिणाणं लहीजें ॥ चारित्र नाण श्रुत तिब्बस्स कीजें, त्रीजे जव तप करत सुणीजें, ए सवि जिन तप लीजें ॥ २ ॥ आदि नमो पद सघले ठवीश, बार पन्नर बार वली छत्रीश, दश पणवीश सगवीश ॥ पांचने सडशठ तेर गणीश, सत्तर नव कि

रिया पच्चवीश, बार अठावीश चउवीश ॥ सीत्तेर इगवन्न पीस्तालीश, पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश, नोकरवाली वीश ॥ एक एक पदें उपवासज वीश, मास खटें एक उली करीश, इम सिद्धांत जगीश ॥ ३ ॥ शक्तें ए कासणुं तिविहार, छठ अठम मास खमण उदार, पडिक्कमणां दोय वार ॥ इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक पद आराधन भव पार, उजमणुं वि विध प्रकार ॥ मातंग यक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाइ शासन रखवाल, सं घविघन अपहार ॥ खिमाविजय जस उपर प्यार, शुभ भवियण धर्मी आधार, वीरविजय जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पर्युषण स्तुति ॥

॥ सत्तरभेदी जिनपूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजें जी ॥ ढोल ददा मा भेरी नफेरी, झल्लरी नाद सुणीजें जी ॥ वीरजिन आगल भावना भा वी, मानवभव फल लीजें जी ॥ पर्व पंजूसण पूर्व पुण्यें, आव्यां इम जा णीजें जी ॥१॥ मास पास वली दसम डुवालस, चत्तारी अठ कीजें जी ॥ उपर वली दश दोय करीने, जिन चोवीश पूजीजें जी ॥ वडा कल्पनो छठ करीने, वीर वखाण सुणीजें जी ॥ पडवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मं गल वरतीजें जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगें अमर पलावी, अठमनुं तप कीजें जी ॥ नागकेतुनी परें केवल लहीयें, जो शुभ भावें रहीयें जी ॥ तेलाधर दिन त्रण्य कल्याणक, गणधर वाद वदीजें जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, ऋषभ चरित्र सुणीजें जी ॥ ३ ॥ बारशें सूत्रने सामाचारी, संवत्सरी पडिक्कमियें जी ॥ चैत्यप्रवाडी विधिशुं कीजें,सकल जंतुने खामी जें जी ॥ पारणाने दिन सामीवत्सल; कीजें अधिक वडाइ जी ॥ मानवि जय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइ जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणीतपनी स्तुति ॥

॥ नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे, अहोरत पोषध करी शुभ भावें, च उविहार मन लावे ॥ वासुपूज्यनी भक्ति कीजें, गणणुं पण तस नाम जपी जें, वरस सत्तावीश लीजें ॥ थोडी शक्तें वरस ते सात, जाव जीव अथवा विख्यात, तप करी करो कर्म घात ॥ निजशक्ति उजमणुं आवे, वासुपू ज्यनुं बिंब भरावे, लाल मणिमय ठावे ॥ १ ॥ इम अतीत अने वर्त्तमा न, अनागत वंदो जिन बहुमान, कीजें तस गुण गान ॥ तपकारकनी

भक्ति आदरीयें, साधर्मिक वछली संघनी करियें, धर्म करी भव तरीयें ॥ रोग सोग रोहिणी नपें जाय, संकट टले तसु जस बहु थाय, तस सुर नर गुण गाय ॥ नीराशंस पणे तप एह, शंका रहित पणे करो तेह ॥ नवनिधि होय जिम गेह ॥ २ ॥ उपधान थानक जिनकल्याण, सिद्धचक्र शत्रुंजय जाण, पंचमी तप मन आण ॥ पडिमातप रोहिणी सुखकार, कनकावली रत्नावली सार, मुक्तावली मनोहार ॥ आगम चउदशने वर्द्धमान, इत्यादिक तपमांहे प्रधान, रोहिणी तप बहु मान ॥ इणीपरें भांखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अमिय समाणी, सूत्रें तेह गुथाणी ॥३॥ चंमा जक्खणी यक्ष कुमार, वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावण हार ॥ रोहिणीतप करता जिन जेह, इह नव परभव सुख लहे तेह, अनुक्रमें भवनो छेह ॥ आचारी पंमित उपकारी, सत्य वचन भांखे सुखकारी, कपूरविजय व्रत धारी ॥ खिमाविजय शिष्य जिन गुरु राय, तस शिष्य गुरु मुज उत्तम थाय, पद्मविजय गुण गाय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवनोनो समुदाय लिख्यते ॥

॥ तत्र श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुस्कलवइ विजयें जयो रे,नयरी पुंमरीगिणी सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, रायश्रेयांस कुमार ॥ जिणंदराय ॥ धरज्यो धर्म सनेह ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मोहोटा न्हाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वासियें रे, छाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमें छो महाराज ॥ मुजशुं अंतर किम करो रे, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुकमिणी कंत ॥ वाचकजस एम वीनवे रे, भयभंजन भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासें जाजो ॥ मुज विनतडी, प्रेम

धरीने एणी परें तुमें संजलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्य जुवननो नायक छे, जस चोशठ इंड्र पायक छे, नाण दरिसण जेहनें खायक छे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे, पुंमरीगिणि नगरीनो राया छे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदामांहि बिराजे छे, जस चोत्रीश अतिशय छाजे छे, गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे छे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ नविजननें ते पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण शोहे छे, रूप देखी नविजन मोहे छे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीउं छुं, पण नरतमां दूरें वसीउं छुं, माहामोहराय कर फसीउं छुं ॥ सुणो० ॥५॥ पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयो छे, पण कांइक मुजथी मरीयो छे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाउं शूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सुणो० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे रूषन समोसस्या, नला गुण नस्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गयारे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरोरे ॥ नरतें नराव्यां बिंब ॥ ती०॥ आबु चौमुख अतिनलो, त्रिजुवन तिलो रे ॥ विमल वसे वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलीयामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावा पुरी, रूद्धें नरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, डुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिरनंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेश्वरो पंचासरो रे, फलोधी थंनणपास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अजावरो, अमीऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाइ जादवो, गोडिस्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन नलां रे ॥ रुचक कुंमलें चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ आखडीयें रे में आज शत्रुंजय दीठो रे, सवा लाख टकानो दाहाडो रे, लागे मुने मीठो रे ॥ सफल थयो रे माहारा मननो उमाहो, वाहाला मारा नवनो संशय नांग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रनुजीने लाग्यो रे ॥ शत्रुंजय दीठो रे ॥१॥ ए आंकणी ॥ मानव नवनो लाहो लीजें ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजें रे ॥ सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षिणा दीजें रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥ डुधडे पखालीने केशरें घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वर पूज्या रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणें जोतां, पाप मेवासी धूज्या रे ॥ शत्रुं० ॥ ३ ॥ श्री मुख सौधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीर जिणंद एम बोले रे ॥ त्रण्य नुवनमां तीरथ महोटुं, नहिं कोइ शत्रुंजय तोलें रे ॥ शत्रुं० ॥ ४ ॥ इंइसरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो काह्यर काढी, सूरजकुंममां नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्धक्षेत्रें ॥ वा० ॥ साधु अनंता सिद्धा रे ॥ ते माटे ए तीरथ महोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ नानि राया सुत नयणें जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठा रे ॥ उदय रत्न कहे आज म्हारे पोतें, श्री आदीसर तूठा रे ॥ शत्रुं० ॥ सवा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ विमलाचल नित्य वंदीयें, कीजें एहनी सेवा ॥ मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरुफल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्ज्वल जिनगृहमंमली, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानुं हिमगिरि विच्रमें, आई अंबरगंगा ॥ वि० ॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नहीं, ए तीरथ तोलें ॥ एम श्रीमुख हरि आगलें, श्रीसीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सघलां तीरथ कखां, जात्रा फल कहीयें ॥ तेहथी ए गिरि नेटतां, शतगणुं फल लहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥ ॥ देशी लालननी ॥

॥ सिद्धगिरि ध्यावो नविका, सिद्धगिरि ध्यावो ॥ घेर बेठां पण बहु फल पावो नविका, बहु फल पावो ॥ ए आंकणी ॥ नंदीसर जात्रायें जे फल होवे, तेथी बमणेरुं फल पुंमरगिरि होवे ॥ न० ॥ पुं० ॥ १ ॥ तिगणुं रुचकगिरि चोगणुं गजदंता, तेथी बमणेरुं फल जंबु महंता ॥ न० ॥

जं० ॥ खटगणुं धातकी चैत्य जुहारें, बत्रीश गणेरुं फल पुस्कल विहारे ॥ ज० ॥ पु० ॥ २ ॥ तेथी तेरशगणुं फल मेरु चैत्य जूहारें, सहस गणेरुं फल समेतशिखरे ॥ ज० ॥ स० ॥ लाख गणेरुं फल अंजन गिरि जूहारें, दश लाख गणेरुं फल अष्टापद गिरनारें ॥ ज० ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोडि गणेरुं फल श्री सिद्धाचल नेटें, जेम रे अनादिनां डुरित उमेटें ॥ ज० ॥ डु० ॥ जाव अनंतें अनंत फल पावे, ज्ञान विमल सूरि एम गुण गावे ॥ ज० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर गिरिनुं स्तवन ॥ क्रीडा करी घेर आवियो ॥ ए देशी ॥

॥ समेत शिखर जिन वंदियें, महोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे जव तणो, तीरथ कहियें तेह रे ॥ स० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगें, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्मप्रजु शिव सुख वख्या, त्रणशें अड अणगार रे ॥ स० ॥ २ ॥ पांचशें मुनिपरिवारशुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंद्प्रजु श्रेयांस लगें, साथें सहस मुणिंद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ब हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सीद्धां रे ॥ सात सहसशुं चउदमा, निज कारज वर कीधां रे ॥ ॥ स० ॥ ४ ॥ एकशो आठशुं धर्मजी, नवशेंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथु अर एक सहसशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांच शुं, मुनि नमि एक हजार रे ॥ तेत्रीश मुनियुत पासजी, वरिया शिव सुख सार रे ॥ स० ॥६॥ सत्तावीश सहस त्रणशें, उपर उंगणपंचाश रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वास रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणें गिरि, सिद्धा अणसण लेई रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीनें, पास शामलनुं चेइरे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समेत शिखरजीनुं स्तवन ॥

॥ जइ पूजो लाल, समेत शिखरगिरि उपर पासजी शामला ॥ जिन ज क्ति लाल, करतां जिनपद पावे टले जव आमला ॥ ए आंकणी ॥ बरी पाली दर्शन करियें, जव जव संचित पातक हरियें, निज आतम पुण्यरसें जरि यें ॥ जइ० ॥ १ ॥ ए गिरिवर नित्य सेवा कीजें, जिम शिव सुखडां करमां लीजें, चिदानंद सुधारस नित्य पीजें ॥ जइ० ॥ २ ॥ जिहां शिवरमणी वरवा आव्या, अजितादिक वीशे जिनराया, बहु मुनिवर युत शिव वधू पाया ॥ जइ० ॥ ३ ॥ तेणें ए उत्तम गिरि जाणो, करो सेवा आतम

करी साणो, ए फरी फरी नहीं आवे टाणो ॥ ज६० ॥ ४ ॥ तुमें धन कण कंचननी माया, करतां अशुचि कीनी काया, किम तरशो विण ए गिरिराया ॥ ज६० ॥ ५ ॥ एम शुनमति वचन सुणी ताजां, ए नजो जगगुरु आतम राजा, गिरि फरसे धरी मन शुचि माजा ॥ ज६० ॥ ६ ॥ संवत सररिषि गज चंद समे, फागुणशुदि त्रीज बुधवार गमे, गिरि दर्शन करतां चित्त रमे ॥ ज६० ॥ ७ ॥ प्रजु पद पद्म तणी सेवा, करतां नित्य लहियें शिव मेवा, कहे रूपविजय मुज ते देवा ॥ ज६० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनार नूषण नेमनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ गो वाछरडां चारवां,आहिरनो अवतार ॥ रूडुं गोकुलीयुं ॥ ए देशी ॥

॥ राजुल उनी मालीये, जंपे जोडी हाथ ॥ साहेब शामलीया ॥ कामणगारा कंथजी, उरा आवो नाथ ॥ सा० ॥ १ ॥ मुख मटकालुं ताहरुं, अणिआलां लोचन्न ॥ सा० ॥ मोहनगारी मूरतें, मोह्युं माहरुं मन्न ॥ सा० ॥ २ ॥ वाहाला केम रह्या वेगला, तोरण उना आय ॥ सा० ॥ पूरव पुण्यें में लह्यो, एवो आज बनाव ॥ सा० ॥ ३ ॥ एहवे सहु पशुयें मली, कीधो सबलो शोर ॥ सा० ॥ छोडावी पाछा वल्या, राजुल चित्तडुं चोर ॥ सा० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे जइ,सहस पुरुष संघात ॥ सा० ॥ सर्व विरति नारी वरी, आपण सरखी जात ॥ सा० ॥ ५ ॥ पंचावनमे दाहाडले, पाम्या केवल नाण ॥ सा० ॥ लोकालोकप्रकाश तुं, जाणी उग्यो नाण ॥ सा० ॥ ६ ॥ राजुल आवी रंगशुं,लागी प्रजुने पाय ॥ सा० ॥ मुजने मूकी एकली, केम शिवमंदिर जाय ॥ सा० ॥ ७ ॥ वीतराग नावें वस्या, संजम लइ जिनहाथ ॥ सा० ॥ शिवमंदिर नेलां थयां, अविचल बेहुनो साथ ॥ सा० ॥ ८ ॥ वाचक रामविजय कहे, सुण स्वामी अरदास ॥ सा० ॥ राजुल जेम तारी तुमें, तेम तारो हुं दास ॥ सा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापदजीनुं स्तवन ॥ कुंअर गंनारो नजरें ॥ देखतां जी ॥ ए देशी ॥

॥ चउ अठ दस दोय वंदीयें जी, वर्त्तमान जगदीश रे ॥ अष्टापद गिरि ऊपरें जी, नमतां वाधे जगीश रे ॥ च० ॥ १ ॥ नरत नरतपति जिन मुखेंजी, उच्चरियां व्रत बार रे ॥ दर्शन शुद्धिने कारणें जी, चोवीश प्रजुनो विहार रे ॥ च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्युं जी, योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान नरावीयां जी, बिंब स्वपर उपगार रे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजि

तादिक चउ दाहिणें जी, पश्चिमे पउमाइ आठ रे ॥ अनंत आदें दश उत्तरें जी, पूर्वें रिखन्न वीर पाठ रे ॥ च० ॥ ४ ॥ रिखन्न अजित पूर्वें रह्या जी, ए पण आगम पाठ रे ॥ आत्म शक्तें करे जातरा जी, ते नवि मुक्ति वरे हणी आठ रे ॥ च० ॥ ५ ॥ देखो अचंनो श्री सिद्धाचलें जी, हुवा असंख्य उद्धार रे ॥ आज दिनें पण इणें गिरि जी, ऊगमग चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सरपिणी लगें जी, देवमहिमा गुण दाखि रे ॥ सिंहनि षद्यादिक थिरपणे जी, वसुदेव हिंम्नी शाख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जिन मुख में सुण्युं जी, इणे विधें पाठ पठाय रे ॥ श्री शुन्नवीर वचन रसें जी, गायो रिखन्न शिव ठाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीआबुजीनुं स्तवन ॥ चित्त चेतो रे ॥ ए देशी ॥

॥ आदि जिणेसर पूजतां, दुःख मेटो रे ॥ आबु गढ दृढ चित्त ॥ नवि जइ नेटो रे ॥ देलवाडे देहरां नमी ॥ दु० ॥ चार परिमित नित्य ॥ न० ॥ ॥ १ ॥ वीश गज बल पदमावती ॥ दु० ॥ चक्केसरी द्रव्य आण ॥ न० ॥ शंख दिए अंबी सुरि ॥ दु० ॥ पंच कोश वहे बाण ॥ न० ॥ २ ॥ बार पातसा जींतीने ॥ दु० ॥ विमल मंत्री आल्हाद ॥ न० ॥ द्रव्य नरी धरती कीयो ॥ दु० ॥ रूषन्न देव प्रासाद ॥ न० ३ ॥ बिहुंतर अधिका आठशें ॥ दु० ॥ बिंब प्रमाण कहाय ॥ न० ॥ पन्नरशें कारीगरें ॥ दु० ॥ वर्ष त्रिकें ते थाय ॥ न० ॥ ४ ॥ द्रव्य अनुपम खरचियुं ॥ दु० ॥ लाख त्रेपन बार कोड ॥ न० ॥ संवत दश अठ्याशीयें ॥ दु० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होड ॥ न० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखडा ॥ दु० ॥ लाख अढार प्रमाण ॥ न० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ दु० ॥ ए दोइ कांता जाण ॥ न० ॥ ६ ॥ मूल नायक नेमीसरु ॥ दु० ॥ चारशें अडशठ बिंब ॥ न० ॥ रूषन्न धातुमइ देहरे ॥ दु० ॥ एकशो पीस्तालीश बिंब ॥ न० ॥ ७ ॥ चौमुख चैत्य जूहारियें ॥ दु० ॥ काउस्सग्गीया गुणवंत ॥न०॥ बाणुं मित तेहमां कहुं ॥ दु० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ ८ ॥ अचल गढें प्रन्नुजी घणा ॥ दु० ॥ जात्रा करो हुशियार ॥ न० ॥ कोडितपें फल जे लहे ॥ दु० ॥ ते प्रन्नु नक्ति विचार ॥ न० ॥ ए ॥ सालंबन निरालंबनें ॥ दु० ॥ प्रन्नु ध्यानें नव पार ॥ न० ॥ मंगललीला पामियें ॥ दु० ॥ वीरविजय जय कार ॥ न० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अर्बुदगिरिनुं स्तवन ॥

॥ चालो चालो ने राज, गिरिधर रमवा जइयें.॥ ए देशी ॥

॥ आवो आवो ने राज, श्री अर्बुद गिरि जइयें ॥ श्री जिनवरनी नक्ति करीने, आतम निर्मल थइयें ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥ विमलवसहिना प्रथम जिणेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुमवर, कंठें टोम्डर ठवीयें ॥ आ० ॥१॥ जमणे पासें लूणगवसहि, श्री नेमीसर नमीयें ॥ राजिमती वर नयणें निरखी, डुःख दोहग सवि गमीयें ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री रूषज जिनेश्वर, रैवतनेम समरीयें ॥ अर्बुद गिरिनी यात्रा करतां, चिहुं तीर्थ चित्त धरीयें ॥ आ० ॥ ३ ॥ मंम्डप मंम्डप विविध कोरणी, निरखी हियडे ठरीयें ॥ श्रीजिनवरनां बिंब निहाली, नर जव सफलो करीयें ॥ आ० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी, अशुज कर्म सवि हरीयें ॥ पास शांति निरखी जब नयणें, मन मोह्युं रुंगरीये ॥ आ० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां उजम वाधे, जेम घोडे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी केसर, पाप पम्डल सवि हरीयें॥आ०॥६॥एकज ध्यानें प्रजुने ध्यातां,मन मांहि नवि म्डरीयें ॥ ज्ञानविमल कहे प्रजु सुपसायें, सकल संघ सुख करीयें ॥ आ० ॥७ ॥

॥ अथ श्री राणकपूरजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री राणकपूर रलीयामणुं रे ॥ लाल ॥ श्री आदीसर देव ॥ मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे ॥ ला० ॥ नीरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ चउ विश मंम्डप चिहुं दिशें रे ॥ला० ॥ चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिजुवन दीपक देहरुं रे ॥ ला० ॥ समोवड नही संसार ॥ म०॥ श्री० ॥ २॥ देहरी चोराशी दीपती रे ॥ला० ॥ मांम्ड्यो अष्टापद मेर ॥म० ॥ नलें जुहार्यां नों यरां रे ॥ ला० ॥ सूतां उठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुं रे ॥ ला० ॥ मोटो देश मेवाड ॥ म० ॥ लरक नवाणुं लगावीया रे ॥ला० ॥ धन्न धरणें पोरवाड ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतर वसइ खांतशुं रे ॥ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे ॥ला० ॥ जोतां पातक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे ॥ला० ॥ आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर तणी रे ॥ला० ॥ दूरें गयुं डुःख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोल ने ञोंतेर रे ॥ ला० ॥ मागशिर मास मोझार ॥ म०॥ राणकपुरें यात्रा करी रे ॥ला०॥ समयसुंदर सुखकार ॥म०॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्त न ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निजगुरु पाय ॥ आछे लाल ॥ सिद्ध चक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्धचक्र आधार, नवि उतरे नव पार ॥ आ० ॥ ते नणी नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जस गुण अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समस्यां संकट उपशमे जी ॥ लहियें वंछित जोग, पामी सवि संजोग ॥ आ० ॥ सुर नर आवी बहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट निवारें एह, रोगरहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणा सुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालनें जी ॥३॥ ए सम अवर नहीं कोय, सेवे ते सुखीउ होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी जी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणुं दोय वार ॥ आ० ॥ देववंदन त्रण टंकनां जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण वार, गरणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल पणे जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सांनिध्य करे तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें नणे जी ॥५॥ ए सेवो निश दीस, कहीयें वीसवा वीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न, एहनां कीजें यत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नहीं एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेसर जक्ष, होजो मुऊ परतक्ष ॥ आ०॥ हुं किंकर छुं ताहरो जी ॥ पाम्यो तुंहीज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करुं छुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहीयें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मीविजय गुरु राय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुज लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संनवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांनलो रे, संनव अरज हमारी ॥ नवोनव हुं नम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरय निगोदमां रे, तिहां हुं बहु नव नमीउ ॥ तुम विना छुःख सह्यां रे, अहोनिश क्रोधें धमधमियो ॥ सा० ॥ १ ॥ इंद्रिय वश पड्यो रे, पाल्यां व्रत नवि सुसें ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंशे ॥ व्रत चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठडी रे, तिहां में हइडलुं खोल्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाल्युं ॥ श्री जिन आणशुं रे, में नवि संजम पाल्युं ॥ मधुकर तणी परें रे, शुद्ध न आहार गवेस्यो ॥ रसना लालचें रे, नीरस

पिंम जवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नर जव दोहिलो रे, पामि मोह वश पडी यो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुऊ मन तिहां जइ अडिउं ॥ काम न को सखां रे, पापें पिंम में जरीउं ॥ सुध बुद्ध नवि रही रे, तेणें नवि आतम तरीउं ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचें रे, में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मली तो नवि रही राखी ॥ जे जन अनिलखे रे, ते तो तेहथी नासे ॥ तृणसम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ सा० ॥ ५ ॥ धन धन ते नरा रे, एहनो मोह विबोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोडी ॥ अनद्दय ते में जख्यां रे, रात्रिनोजन कीधां ॥ व्रत ब नवि पालि यां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत जव हुं जम्यो रे, जम तां साहिब मलियो ॥ तुम विना कोण दिये रे, बोध रयण मुऊ बलियो ॥ संजव आपजो रे, चरण कमल तुम सेवा ॥ नय एम वीनवे रे, सुणजो देवाधिदेवा ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरजीनुं स्तवन ॥

॥ सहजानंदी शीतल सुख जोगी तो, हरि दुःख हरियें सतावरी ॥ केशर चंदन घोली पूजो रें कुसुमें ॥ अमृतवेलिना वैरीनी बेटी तो, कंत हार तेहनो अरि ॥ के० ॥ १ ॥ तेहना स्वामिनी कांतानुं नाम तो, एक वरणें लक्ष्ण जरी ॥ के० ॥ ते धुर थापीने आगल ठवियें तो, उष्माण चंइक खंधारी ॥ के० ॥ २॥ फरसनो वरण ते नयन प्रमाणे तो, मात्रा सुंदर शिर धरी ॥ के० ॥ वीसराज सुत दाहक नामें तो, तिगवरणादि दूरें करी ॥ ॥ के० ॥ ३ ॥ एकवीशमे फरसे धर्मी करण तो, अर्थानिध ते सम हरी ॥ ॥ के० ॥ अंतस्थें बीजो स्वर टाली तो, शिवगामी गति आचरी ॥ के० ॥ ॥ ४ ॥ वीश फरस वली संयम माने तो, आदिकरण धरी दिल धरी ॥ के०॥ ईणें नामें जिनवर नित्य ध्याउं तो, जिनहर जिनकुं परिहरी ॥ के० ॥ ॥ ५ ॥ त्र्यंबकें दाह्यो वृष जन बोले तो, वात ए दिलमें न उतरी ॥ के० ॥ अज ईश्वर पण सीतानी आगें तो, जास विवश नटता धरी ॥ के० ॥ ६ ॥ ते जिन तस्कर तूं जिन राजा तो, हरि प्रणमे तुज पाउं परी ॥ के०॥ बाल पणे उपगारें हरिपति, सेवन ठल लंबन हरि ॥ के० ॥ ७ ॥ प्रजु प्रत्य यक जशलीहोत रहियें तो, जव जवमां नही शली कली ॥ के० ॥ मन मंदिर महाराज पधारे तो, हरि उदयें न विजावरी ॥ के० ॥ ८ ॥ सा

रंगमां संपा जीउं फरकत, ध्यान अनुजव लेहरी ॥ के० ॥ श्री शुजवीर विजय शिववहूने तो, घर तेडंतां दोय घरी ॥ के० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरजीनुं स्तवन ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांजलीने आव्यो हुं तीरें,जनम मरण दुःख वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे ठे राज, अमने शिवसुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोनां मनवंछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एहवुं बिरुद ठे राज तुमारुं, केम राखो ठो दूरो ॥ से०॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ से० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही ठे, प्रत्यक्ष दरिसण दीजें ॥ धुंआडे धीजुं नही साहिब, पेट पड्यां पतीजें ॥ से० ॥ ४ ॥ श्री शंखेश्वर मंमण साहिब, वीनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया कर मुजने, जवसायरथी तारो ॥ से० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ सजनी मोरी पास जिणेसर पूजो रे ॥ स०॥ जगमां देव न दूजो रे ॥ स० ॥ सारंग पुर शणगार रे ॥ स० ॥ पूजा दोय प्रकार रे ॥ १ ॥ स० ॥ जिनपडिमा जयकार रे ॥ स०॥ वारी जाउं वार हजार रे ॥ ए आंकणी ॥ ॥ स०॥ गणधर सूत्रें वखाणी रे ॥ स०॥ सिद्धनी उपमा आणी रे ॥ स०॥ समकितनी वृद्धिकारी रे ॥ स० ॥ ते केम जाशे निवारी रे ॥ स० ॥ २ ॥ ॥ स० ॥ जगवइ अंगें धारो रे ॥ स०॥ चारण मुनि अधिकारो रे ॥ स०॥ जिनपडिमा जिनसरखी रें ॥ स० ॥ सूत्र उववाई निरखी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ॥ स० ॥ रायपसेणी जांखी रे ॥ स० ॥ जीवाजिगमें दाखी रे ॥ स० ॥ व्यवहारें पण आखी रे ॥ स० ॥ शुद्धि पडिमा साखी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ ॥ स० ॥ जंबूपन्नत्ति ठाणांग रे ॥ स० ॥ बोले दशमुं अंग रे ॥ स० ॥ माहानिशीथें विचारो रे ॥ स० ॥ पूजानो अधिकारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥ सातमे अंगें विख्यात रे ॥ स० ॥ आणंद श्रावक वात रे ॥ स० ॥ अनउत्थी पडिमा वारी रे ॥ स० ॥ सूधा समकित धारी रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स०॥ ज्ञाता पाठ देखावे रे ॥ स०॥ कुमति जरम न जावे रे ॥ स० ॥ एम अनेक सूत्र साख रे ॥ स० ॥ कहो हवे केहनो वांक रे ॥ स० ॥ ७ ॥ स०॥ अर्चा अरोचक थाशे रे ॥ स० ॥ नव दंमकमां जाशे रे ॥ स० ॥ जीव

करम वश जाणो रे ॥ स० ॥ कुण डुमक कुण राणो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ स० ॥ जिनवर सेवा सारो रे ॥ स० ॥ विषय करो परिहारो रे ॥ स० ॥ सेवा अबंधक नाव रे ॥ स० ॥ नवजल तरवा नाव रे ॥ स० ॥ ए ॥ स० ॥ मणि ज्योत प्रनु साचो रे ॥ स० ॥ जेहवो हीरो जाचो रे ॥ स० ॥ शंका मन नवि लावो रे ॥ स० ॥ शुं काचुं केहेवरावो रे ॥ स० ॥१०॥ इति॥

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ वाल्हाजीनी वाटडी अमें जोतां रे ॥ ए देशी ॥

॥ जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर अवतारी रे, गौतम पमुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही वीरजी जयकारी रे ॥ अंतरंग रिपुने त्रासे रे, तप कोपाटोपें वासे रे, लह्युं केवल नाण उल्लासें ॥ २ ॥ स० ॥ कटि लंकें वाद वदाय रे, पण जिनसाथें न घटाय रे, तेणें हरिलंछन प्रनु पाय ॥ स० ॥ ३ ॥ सवि सुरवहू थेइ थेइ कारा रे, जलपंकजनी परें न्यारा रे, तजी तृष्णा नोग विकारा ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रनुदेशना अमृत धारा रे, जिनधर्मे विषे रथकारा रे, जेणे तार्या मेघ कुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने केवल आली रे, वर्या स्वांतियें शिव वरमाली रे, करे उत्तम लोक दीवाली ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अलब्ब निवारी रे, शुन सज्जनने उपगारी रे, कहे वीर विनु हितकारी ॥ स० ॥७॥ इति समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीनी जन्म कुंमलीनुं स्तवन ॥ देशी केरबानी ॥

॥ सेवधी संचउ घेरियां, अलबेले सांइ, क्युंरे लगाउ अति बेरियां ॥ ए आंकणी० ॥ दीये बिनां न चले, ढोरु न पिठे वले, बाबत आप उछेरियां ॥ अलबे० ॥ क्युं० ॥ नाग्य अतुल बली, मागत अटकली, जन्म बलि ग्रह चारीयां ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ १ ॥ संवत पास ईश, दो शत अडतालीश ॥ उज्ज्वल चैतर तेरशें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ शाठ घडी न कणी, उत्तरा फाल गुणी, मंगल वार निशावशें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ २ ॥ सिद्धि योग बडी, प न्नर चारें चरी, वेला मुहूर्त्त त्रेवीशमे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ लग्न मकर वहे, स्वामी जनम लहे, जीव सुखी सहु ते समे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ त्रिशला राणीयें जायो, देव देवीयें गायो, सुत सिद्धारथ नृपको ॥ अ० ॥ मंगल केतु लग्नें, रवि बुध चोथे नवने, दशमे शनिश्चर उच्चको ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ॥ ४ ॥ पंचमें जीव राहु, सातमे वेद साहु, केंद्र नुवन ग्रह मंमली ॥ अ०॥

॥ क्युं० ॥ नाग्य नुवन शशी, शुक्र संतान बसी, मेघ धुआ एक वीजली ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ५ ॥ चंड्दिशा विपाकी, मास नुवन बाकी, जन्म दिशा शनी संजमी ॥ अ० ॥ गुरु महादिशामें, केवल ज्ञान पामे, तामुख बानी मेरे दिल रमी ॥ अ० ॥ क्यु० ॥ ६ ॥ थावर विगलमें, काल अनंत नमे, मेंत्री निकलीया साथमें ॥ अ० ॥ नारक तिरि गति, सुख न एक रति, काल निगमियो अनाथमें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ७ ॥ बहोत में नाच नचे, चिहुगति चोक बिचे, नेक न मेलिए नाथ जी ॥ अ० ॥ पोतप्रकाश दिए, आश निराश किये, अलग किया में आजथी ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ८ ॥ मानव गए लही, तुम सन्मुख रही, बेर बेर शिव मागते ॥ अ० ॥ बात न उर कहुं, लीए बिना न रहुं, बाल हठ्यो रस लागते ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ए ॥ नाथ नजर करी, बेर न एकघडी, सदा मगन सुख लेहेरसें ॥ अ० ॥ मंगल तुरवरा, गावत अपछरा, श्री शुनवीर प्रभु महेरसें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ १० ॥

॥ अथ श्री सिद्ध नगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोना रे शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥ सिद्ध जगत शिर शोनता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मी लीलानी लेहेरमां, सुखिया छे शिव गाम ॥ सि० ॥ १ ॥ महानंद अमृतपद नमो, सिद्धिकैवल्य नाम, अपुनर्नव ब्रह्मपद वली, अक्षय सुख विशराम ॥ सि० ॥ २ ॥ संश्रेय निश्रेय अक्षरा, दुःख समस्तनो हाए ॥ निवृत्ति अपवर्गता, मोक्ष मुक्ति निरवाण ॥ सि० ॥ ३ ॥ अचल महोदय पद लह्युं, जोतां जगतना गठ ॥ निज निज रूपें रे जूजूआ, वीत्यां कर्म ते आठ ॥ सि० ॥ ४ ॥ अगुरु लघु अवगाहना, नामें विकसे वदन्न ॥ श्री शुनवीरने वंदतां, रहियें सुखमां मगन्न ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वर्द्धमान स्वामीजीनुं स्तवन ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ गीरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिन राया रे ॥ सुणतां श्रवणे अमी फरे, माहरी निर्मल थाये काया रे ॥ गी० ॥ १ ॥ तुम गुण गण गंगाजलें ॥ हुं फीली निर्मल थाउं रे ॥ अवर न धंधो आदरुं, निश दिन तोरा गुण गाउं रे ॥ गी० ॥ २ ॥ फील्या जे गंगाजलें, ते छीलरजल नवि पेसे रे ॥ जे मालती फूलें मोहीआ, ते बावल जइ नवि बेसे रे ॥ गी० ॥ ॥ ३ ॥ एम अमें तुम गुण गोठशुं ॥ रंगें राच्याने वली माच्या रे ॥ ते किम पर सुर आदरुं, जे परनारी वश राच्या रे ॥ गी० ॥ ४ ॥ तूं गति तूं मति आ

शरो, तूं आलंबन मुज प्यारो रे ॥ वाचक जस कहे माहरे, तूं जीवन जीव आधारो रे ॥ गी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समकितनुं स्तवन ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ते मुज मिछामि डुक्कडं ए देशी ॥

॥ सांजल रे तुं प्राणीया, सद्गुरु उपदेशो ॥ मानव जव दोहिलो लह्यो, उत्तमकुल एसो ॥ १ ॥ सां० ॥ देवतत्त्व नवि उंलख्यो, गुरुतत्त्व न जाण्यो ॥ धर्मतत्त्व नवि सर्दह्यो, हियडे ज्ञान न आण्यो ॥२॥ सा० ॥ मिथ्यात्वी सुर जिन प्रत्यें, सरखा करी जाण्या ॥ गुण अवगुण नवि उंलख्या, वयणें वखाण्या ॥ ३ ॥ सां० ॥ देव थया मोहें ग्रह्या, पासें रहे नारी ॥ कामतणे वशें जे पड्या, अवगुण अधिकारी ॥ ४ ॥ सां०॥ केइ क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ के कोईथी बीहता, हथीयार सवाह्या ॥५॥ सां० ॥ क्रूर नजर जेहनी घणुं, देखंतां मरीयें ॥ मुड़ा जेहनी एहवी, तेहथी शुं तरीयें ॥ ६ ॥ सां० ॥ आठ कम्म सांकल जड्यां, जमें जवही मऊारो ॥ जनम मरण जव देखीयें, पाम्या नहीं पारो ॥७॥ सां० ॥ देव थइ नाटक करे, नाचे जण जण आगें ॥ वेष करी राधा कृष्णनो, वली जिक्षा मागे ॥ ८ ॥ सां० ॥ मुखें करी वाये वांसली, पेहेरे तन वाघा ॥ जावतां जोजन करे, एहवा जम लागा ॥ ९ ॥ सां० ॥ देखो दैत्य संहारवा, थयो उद्यमवंतो ॥ हरि हिरणाकश मारीयो, नरसिंह बलवंतो ॥१०॥ सां० ॥ मछ कछ अवतार लइ, सहु असुर विदाख्या ॥ दशअवतारें जूजूआ, दश दैत्य संहाख्या ॥ ११ ॥ सां० ॥ माने मूढ मिथ्यामति, एहवा पण देवो ॥ फरी फरी अवतार ले, देखो कर्मनी टेवो ॥ १२ ॥ सां० ॥ स्वामी सोहे जेहवो, तेहवो परिवारो ॥ एम जाणीने परिहरो, जिन हर्ष विचारो ॥ १३ ॥ सां० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ उंधव माधवने केहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ जगनायक जिनराजने, दाखवियें सही देव ॥ मूकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥ १ ॥ ज० ॥ क्रोध मान माया नहीं, नहीं लोज अज्ञान ॥ रति अरति वेदे नहीं, जांज्या मद थान ॥ २ ॥ ज० ॥ निड़ा शोक चोरी नहीं, नहीं वयण अलीक ॥ मछर जय वध प्राणनो, न करे तेहेकीक ॥ ३ ॥ ज० ॥ प्रेम क्रीडा न करे कदी, नहीं नारी प्रसंग ॥ हा

स्यादिक अढार. ए, नहीं जेहनें अंग ॥ ४ ॥ जं० ॥ पद्मासन पूरी करी, बेग अरिहंत ॥ निश्चल लोयण तेहनां, नासाग्र रहंत ॥ ५ ॥ ज० ॥ जिनमुद्रा जिनराजनी, दीठा परम उल्लास ॥ समकित थाये निर्मलुं, तपे ज्ञान उजास ॥ ६ ॥ ज० ॥ गति आ गति सहु जीवनी, देखे लोका लोकं ॥ मनःपर्याय सवी तणा, केवलज्ञान आलोक ॥ ७ ॥ ज० ॥ मूर्त्ति श्रीजिनराजनी, समता भंमार ॥ शीतल नयण सुहामणां, नहीं वांक ल गार ॥ ८ ॥ ज० ॥ हसत वदन हरखे हैयुं, देखी श्री जिनराय ॥ सुंदर बबि प्रज्जु देहनी, शोजा वरणी न जाय ॥ ए ॥ ज० ॥ अवर तणी एहवी बबि, किहां एम दीसंत ॥ देवतत्त्व ए जाणीयें, जिनहर्ष कहंत ॥ १० ॥ ज० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जत्तणीनी देशी ॥

॥ श्री जिनवर प्रवचन नांख्या, जे कुगुरु तणा गुण दाख्या ॥ पासबादिक पांचे इ, पाप श्रमण कह्या साचे इ ॥ १ ॥ गृहीना मंदिरथी आणी, आहार करे नात पाणी ॥ सुए उंघे निश दीस, परमादी विशवा वीश ॥ २ ॥ किरिया न करे किणि वार, पडिक्कमणुं सांऊ सवार ॥ न करे पच्चरकाण सद्याय, विकथा करतां दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दूध दहीं अप्रमाण, खाए न करे पच्चरकाण ॥ ज्ञान दर्शन ने चारित्र, मूकी दीधां सुपवित्र ॥ ४ ॥ सुविहित मुनि सामाचारी, पाले नहीं ते अणगारी ॥ आहारना दोष बायाल, टाले नहीं किणही काल ॥ ५ ॥ धब धब धसमसतो चाले, काचे जलें देह पखाले ॥ अर्चा रचना वंदावे, वस्त्रादिक शोजा बनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वली ऊाऊा राखे, वली वली अधिकाने धाखे ॥ माठी करणी जे कहीये, ते सघली जिणमें लहियें ॥ ७ ॥ एहवा जे कुगुरु आरंजी, मुनि साधु कहेवाये दंजी ॥ किम कम्म प्रशंसा करीयें, जवजव गृहमां अवतरियें ॥ ८ ॥ लोहानी नावा तोले, जवसायरमां जे बोले ॥ जिनहर्ष जलो अहि कालो, पण कुगुरुनी संगति टालो ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी करजोडी आगल रही ॥ ए देशी ॥

॥ गुण गिरुआ गुरु उलखो, हियडे सुमति विचारी रे ॥ गुरु सुपरीक्षा दोहिली, जूल पडे नर नारी रे ॥ १ ॥ गु० ॥ पांचे इंद्रिय वश करे, पांच महाव्रत पाले रे ॥ चार कषाय तजी जेणें, पांचे किरिया टाले रे ॥ २ ॥ गु० ॥ पांच समिति सुमता रहे, तिन गुपति जे धारे रे ॥ दोष बेंतालीश टालीने,

पाणी जात आहारे रे ॥ ३ ॥ गु० ॥ ममता छांमी देहनी, निर्लोजी निर्मायी रे॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चिंते न कांइ रे ॥ ४ ॥ गु० ॥ धर्मतणा उपगरण धरे, संजम पालवा काजें रे ॥ जूमि जोई पगलां जरे, लोक वि रोधथी लाजें रे ॥ ५ ॥ गु० ॥ पडिलेहण निरतिविधें, करे प्रमाद निवा री रे ॥ कालें शुद्ध क्रिया करे, इछा जोग निवारी रे ॥ ६ ॥ गु० ॥ वस्त्रा दिक शुद्ध एषणी, ले देखी सुविशेषें रे ॥ काल प्रमाणें खप करे, दूषण टल तां देखे रे ॥ ७ ॥ गु० ॥ कुरकी संबल जे कह्यां, सन्निध्य केमही न राखे रे ॥ दे उपदेश यथास्थितें, सत्यवचन मुख जांखे रे ॥ ८ ॥ गु० ॥ तन मेहेलां मन ऊजलां, तप करी खीणी देही रे ॥ बंधन बे लेदी करी, विचरे जन निःसनेही रे ॥ ए ॥ गु० ॥ एहवा गुरु जोई करी, आदरीयें शुज जावें रे ॥ बीजुं तत्त्व सुगुरु तणुं, ए जिन हर्ष कहावे रे ॥ १० ॥ गु० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ कर्म न बूटे रे प्राणीआ ॥ ए देशी ॥

॥ जवसायर तरवा जणी, धर्म करे हो सारंज ॥ पत्थर नावें रे बेसीने, तरवो समुद्र डुलंज ॥ १ ॥ ज० ॥ आपे गोकुल गायनां, आपे कन्या रे दान ॥ आपे खेत्र पुण्यार्थे, ब्राह्मणने देइ मान ॥ २ ॥ ज० ॥ लूंटावे घाणी वली, पृथिवी दान सुप्रेम ॥ गोला कलशा रे मोरीया, आपे हल तिल हे म ॥ ३ ॥ ज० ॥ वली खणावे रे खांतशुं, कूआ सुंदर वाव ॥ पुष्करि णी करणी जली, सरवर सखर तलाव ॥ ४ ॥ ज० ॥ कंद मूल मूके नहीं, अग्यारशनें हो दीस ॥ आरंज ते दिन अति घणो, धर्म कीहां जगदीश ॥ ५ ॥ ज० ॥ याग करे होमे तिहां, घोडा नर ने रे छाग ॥ होमे जलचर मींमकां, धर्म किहां वीतराग ॥ ६ ॥ ज० ॥ करे सदाए रे नोरतां, जीवत णा आरंज ॥ हणे महिष ने बोकडा, जेहथी नरक सुलंज ॥ ७ ॥ ज० ॥ सारे सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वजनां रे सराध ॥ तेडी पोषे रे कागडा, देखो एह उपाध ॥ ८ ॥ ज० ॥ तीरथ जाय गोदावरी, गंगा गया प्रयाग ॥ न्हाये अ णगल नीरमें, धर्म तणो नहीं लाग ॥ ए ॥ ज० ॥ इत्यादिक करणी करे, परजव सुखने रे काज ॥ कहे जिनहर्ष मले नहीं, एहथी शिवपुर राज ॥ १० ॥ ज० ॥

॥ ढाल छठी ॥ रे जाया तुऊ विण घडी रे छ मास ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म खरो जिनवर तणो जी, शिव सुखनो दातार ॥ श्री जिनराजें प्रका शीयो जी, जेहना चार प्रकार ॥ १ ॥ जविक जन, ज्ञान विचारी रे जोय ॥

दुर्गति पडता जीवने जी, धारे ते धर्म होय ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पंच महाव्रत साधुनां जी, दशविध धर्म विचार ॥ हित करीने जिनवर कह्यां जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ २ ॥ ज० ॥ पंचुंबर चारे विगय जी, विष सहु माटी रे हीम ॥ रात्रिभोजनने कह्यां जी, बहु बीजांनो नीम ॥ ३ ॥ ज० ॥ घोलवडां वली रींगणां जी, अनंत काय बत्रीश ॥ अणजाण्यां फल फूलडां जी, संधाणां निश दीस ॥ ४ ॥ ज० ॥ चलित अन्न वाशी थयुं जी, तुह सहु फल दक्ष ॥ धर्मी नर खाये नहीं जी, ए बावीश अनक्ष्य ॥ ५॥ ज० ॥ न करे निर्द्धंधस पणे जी, घरना आरंन धीर ॥ जीवतणी जयणा घणी जी, न पिये अणगल नीर ॥ ६ ॥ ज० ॥ गृत परें पाणी वावरे जी, बीये करंतां पाप ॥ सामायिक व्रत पोषधें जी, टाले नवना ताप ॥ ७ ॥ ज० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी जी, सेवा नक्ति सदीव ॥ धर्मशास्त्र सुणतां थकां जी, समजे कोमल जीव ॥ ८ ॥ ज० ॥ मास मासने आंतरे जी, कुश अग्र नुंजे वाल ॥ कला न पोहोंचे शोलमी जी, श्री जिनधर्म विशाल ॥ ए ॥ ज० ॥ जिनधर्म मुक्तिपुरी दीये जी, चउगति नमण मिथ्यात्व ॥ एम जिनहर्षप्रकाशियें जी, त्रीजुं तत्त्व विख्यात ॥ १० ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ मधुकर आज रहो रे मत चलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिन धर्म आराधियें जी, करी निज समकित शुद्ध ॥ नवियण ॥ तप जप किरिया कीधलीजी, लेखे पडे विशुद्ध ॥ १ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ कंचन कशी कशी लीजीयें जी, नाणुं लीजें परीख ॥ ज० ॥ देव धर्म गुरु जोइनें जी आदरियें सुणी शीख ॥ २ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने जी, परहरियें विष जेम ॥ ज० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनें जी, ग्रहीयें अमृत तेम ॥ ३ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ मूल धर्म तो जिन कह्यो जी, समकित सुरतरु एह ॥ ज० ॥ नवनव सुख संपत्तिथकी जी, समकितशुं धरी नेह ॥ ४ ॥ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ सत्तरसें बत्रीशसमे जी, नन शुदि दशमी दीस ॥ ज० ॥ समकित सीत्तरी ए रची जी, पुर पाटण सुजगीश ॥ ५ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ जणजो गुणजो नावशुं जी, लेशो अविचल श्रेय ॥ ज० ॥ शांतिहर्ष वाचक तणो जी, कहे जिनहर्ष विनेय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ इति समकित सित्तरी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंन ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सहगुरु सा

मिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं पाय ॥१॥ त्रिजुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंजीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर.॥ २ ॥ एक दिन वीरजिणंदने, चरणे करी प्रणाम ॥ जविक जीवना हित जणी, पूछे गौतम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अरिहंत ॥ सूधा स रस तव वचन रस, जांखे श्री जगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत धरीयें गुरु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिरावियें, पापस्थान अढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुजकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मन आणि ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुजगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जिम पामो जवपार ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ए छिंमि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा इह जव परजवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी ॥ वीर वदे एम वाणी रे ॥ प्रा० ॥ गुरु उलवीयें नहिं गुरु विनयें. कालें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधां, जणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव परजव वलिय जवोजवें, मिछाडुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजे, नवि परमंत अजिलाख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे ॥५॥ प्रा० ॥ स० ॥ मूढपणुं छंमो परशंसा, गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्में करी थिरता, जक्ति प्रजावना करीयें रे ॥६॥ प्रा० ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ इव्य देवको जे वणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥आजव०॥ मिछा०॥८॥प्रा०॥चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ साधुतणे धर्में परमादें, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्में सामायिक, पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे,

प्रवचनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मह्लोल्युं जेह ॥ आ नव० ॥ मिच्छा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारें नेदें तप नवि कीधुं, बते योगें निज शक्तें ॥ धर्में मन वच काया वीरज, नवि फोरविउं नगतें रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें इणी परें, विविध विराध्या जेह ॥ आ नव० ॥ मिच्छा० ॥१३॥ प्रा०॥ चा०॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा, अतिचार आलोइयें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइयें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनसपति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए ॥ करि करसण आरंन, खेत्र जे खेडीयां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आरंन अनेक, टांकां नोंयरां ॥ मेडी माल चणावीआ ए ॥ लिंपण धुंपण काज, एणी परें परपरें ॥ पृथिवीकाय विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयण नाह्ण पाणी, फीलण अपकाय ॥ बोती धोती करी दूह्व्यां ए ॥ नाठीगर कुंनार, लोह सोवनगरा ॥ नाडनुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकणकाजें, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवती ए ॥ एणी परें कर्मादान, परें परें, केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चूंटीयां ए ॥ पोंह्क पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ बेद्यां बुंद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसी ने एरंम, घाणी घालीनें ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुं मांहि, पीली शेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंड्रिय जीव, ह्ण्या ह्णावीया ॥ ह्णतां जे अनुमोदीया ए ॥ आनव परनव जेह ॥ वलि० ॥ ते मुऊं० ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीयां कीडा, गाडर गंमोला, इयल पूरा अलशीयां ए ॥ वाला जलो चूडेल, विचलित रसतणा ॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बेइंड्रिय जीव ॥ जेमें दूह्व्या ॥ ते मुऊ० ॥ उद्देही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहीयां घीमेल, कानखजूरडा ॥ गींगोडा धनेरीयां ए ॥ एम तेइंड्रिय जीव, जे में डुह्व्या ॥ तें मुऊ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर मांस, मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलिया वडा ए ॥ ढींकण वींबु तीड, नमरा नमरीयो ॥ कोंता बग खड मांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंड्रिय जीव ॥ जे में दू० ॥ ते मुऊ० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूह्व्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या

पंखी जीव, पाडी पासमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव ॥ जे मेंदुहव्या ॥ ते मुझ० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाणी वाणी हितकरी जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोभ भय हासथी जी, बोल्यां वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछामिदुक्कड आज ॥ तुम साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारुं काज रे ॥ जिनजी ॥ मि०॥ ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचनां जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी ॥ घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० ॥२॥मि०॥ परिग्रहनी ममता करी जी, भव भव मेली आथ ॥ जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि०॥३॥ मि०॥ रयणी भोजन जे कर्यां जी, कीधां भक्ष्य अभक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ विसारीयां जी, वली भांग्यां पच्चरकाण ॥ कपट हेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मि० ॥ त्रण ढाल आठे दुहे जी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ मि० ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ य थाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा०॥ पालो निरतिचार तो ॥१॥ व्रत लीधां संभारी यें ॥ सा०॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिवगति आराधन तणो॥ सा०॥ ए बीजो अधिकार तो ॥२॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा०॥ योनि चोराशी लाख तो ॥ मन शुद्धें करो खामणां ॥सा०॥ कोइशुं रोष न राख तो ॥३॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा०॥ कीजें जन्म पवित्र तो ॥४॥ सामी संघ खमावियें ॥ सा०॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमियें अने खमावियें ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥ सा०॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा०॥ धन मूर्छा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीयें ॥ सा०॥ कूडां न दीजें आल तो ॥ रति अरति मिथ्या तजो ॥सा०॥ माया मोस जंजाल तो ॥८॥ त्रिविध

त्रिविध वोसिरावियें ॥ सा० ॥ पापस्थान अढार तो ॥ शिवगति अराधना तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ए॥

॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए देशी ॥

॥ जनम जरा मरणें करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्यां कर्म सहु अनुनवें ए, कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध जगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार ॥ तो ॥ ३ ॥ आ नव परजव जे कस्यां ए, पापकर्म केइ लाख तो ॥ आत्मसाखें निंदीयें ए, पडिक्कमीयें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्ताविआं ए, जे नांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशें ए, वली उथाप्यां सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथीआर तो ॥ जव जव मेली मूकीआं ए, करतां जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीनें पोषिआं ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमांतर पोहोता पछी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ जव परजव जे कस्यां ए, एम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविधें त्रिविधें वोसरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ डुःकृत निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए छठो अधिकार तो ॥ए॥

॥ ढाल छही ॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्यां डुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ जुगतें जिनवर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते खेत्र ॥ ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवझायनें, दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारंवार ॥ शिवगति आराधनतणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ जाव जलो मन आणीयें, चित्त आणी ठाम ॥ समता जावें जावीयें, ए आतम राम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख डुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, जोगवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्य काम ॥ छारि उपर ते लींपणुं, झांखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥

जाव जली परें जावीयें. ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो अधिकार ॥ ५० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि ऊपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करिय संलेषण सार ॥ अणसण आदरीयें, पच्चरकी चार आहार ॥ लज्जुता सवि मूकी, छांमी ममता अंग ॥ ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीउ रंक ॥ डुलहो ए वली वली, आणसणनो परिणाम ॥ एथी पामीजें, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धना शालि जद, खंधो मेघकुमार ॥ अणसण आराधी, पाम्या जवनो पार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारें, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाए, डुर्गति दोष विकार ॥ सुपरें ए समरो, चजद पूरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरें जातां, जो पामे नवकार ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मंत्र न कोई सार ॥ इह जवने परजवें, सुख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुउ जील जीलडी, राजा राणी थाय ॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं, पाम्या बे सुरजोग ॥ एक जवथी लेशे, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली, मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरें योगी,सोवन पुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारें, वीर जिणेसर जांख्यो ॥ आराधन केरो विधि जेणें चित्तमां राख्यो ॥ तेणें पाप पखाली, जवजय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो जवि जावशुं ए ॥ए देशी ॥

॥ सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनीतलें तुमें अवतस्या ए, करवा अम उपगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहेतां न लहुं पार तो ॥ तुम चरणें आव्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥ आश करीने आवीउ ए, तुम चरणें महाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज०॥ कर्म अलूजण आकरां ए, जन्म मरण जंजाल तो ॥ हुं बुं एहथी उजग्यो

ए, गोडव देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नागं दुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ नवनव विनय तुमारडो ए, नाव नक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीयें ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण सुगति कारण, दुःखनिवारण जग जयो ॥ श्री वीर जिनवर चरण थुणतां, अधिक मन उलट थयो ॥१॥ श्री विजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इणे जगें ॥ तप गह्रपति श्रीविजयप्रन सूरि, सूरि तेजें जगमगे ॥२॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय सुरगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक विनयविजयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सइसत्तर संवत उगणत्रीशें, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी विजय कारण, किउ गुण अन्यास ए ॥ ४॥ नरनव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लीलविलास ए ॥ निर्जरा हेतें तवन रचियुं, नामें पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्री वीरजिन आराधना रूप पुण्य प्रकाशस्तवन संपूर्ण ॥ श्लोक संख्या ॥१२७॥

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन ॥

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ ए देशी ॥ सुत सिद्धारथ नूपनो रे, सिद्धारथ नगवान ॥ बारह परखदा आगलें रे, नांखे श्री वर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ नविय ण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान नगति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वडूं रे ॥ जिणथी दंसण होय रे ॥ २ ॥ न० ॥ ज्ञानें चारित्र गुण वधे रे, ज्ञानें उद्योत सहाय ॥ ज्ञानें थिविरपणुं लहे रे, आचारज उवजाय रे ॥ ३ ॥ न० ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वन्हि जेम इंधण दहे रे, दणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ४ ॥ न० ॥ प्रथम ज्ञान पढें दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणंग पग थालीयें रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ५ ॥ न० ॥ मइ सुअ उहि मणपज्जवा रे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक ठे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ६॥ न० ॥ तेहनां साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ न० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, नणतां करे अंतराय ॥ अंधा बेहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुला थाय रे ॥ ८ ॥ न० ॥ नणतां गुणतां न आवडे रे, न मले वल्लन चीज ॥ गुण

मंजरी वरदत्त परें रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ए ॥ ज० ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना जरतमां रे, नयर पदम पुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति निदान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें जणवा मूकिउ रें, आठ वरस जब हुंत रे ॥ २ ॥ ॥ प्रा० ॥ पंमित यत्न करे घणो रे, छात्र जणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवडे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ कोढें व्यापी देहडी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥ ॥ प्रा० ॥ कपूरतिलका गेहिनी रे, शीलें शोजित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटडी रे, मुंगी रोगें व्यंग रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ शोल वरषनी सा थइ रे, पामी यौवन वेश ॥ डुर्जग पण परणे नहीं रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणें अवसरें उद्यानमां रे, विजयसेन गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक नृपालने रे, दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेन्या सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयन वदन मुदा रे, नहि प्रमाद प्रवेश रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परजवें रे, मूरख परआधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसे डुःखीया दीन रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार संसारमां रे, ज्ञान परम सुखहेत ॥ ज्ञान विना जग जीवडा रे, न लहे तत्त्व संकेत रे ॥ ११ प्रा० ॥ श्रेष्ठी पूछे मुणिंदने रे, जांखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीमां ॥

॥ धातकी खंमना जरतमां, खेटक नयर सुठाम ॥ व्यवहारी जिन देव छे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासें शीखवा, तातें मूक्या कुमार ॥ २ ॥ बाल स्वजावें रामतें, करतां दहाडा जाय ॥ पंमित मारे त्यारें, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥

सुंदरी सुखिणी. शीखवे, नणवानुं नहीं काम ॥ पंम्यो आवे तेडवा, तो त
स हणज्यो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खडिया लेखणा, बाली कीधां राख ॥ शठ
ने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने झाख ॥ ५ ॥ पाडापरें मोहोटा थया, क
न्या न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥
त्रटकी जांखे जामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छे
सहु कोय ॥ ७ ॥ रेरे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली
कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी तत
खेव ॥ ए तुज बेटी उपनी. ज्ञानविराधन हेव ॥ ए ॥ मूर्छागत गुणमं
जरी, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दीवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि
॥१०॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो,
साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥
नमो नाणस्स गणणुं गणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मु
ख, जपियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइयें, धान्य फलादि उदार ॥
॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवट तणो, साथिउं मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी
शके, तेणिविधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौजाग्य पंचमी, उज्ज्वल
कार्त्तिक मास ॥ जावज्जीव लगें सेवीयें, उजमणा विधि खास ॥१५॥इति॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमां ॥

॥ ढाल ॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां॥चाबखी दोरा रे, पाटी पाट
ला वरतणां ॥ मसी कागल रे, कांबी खडीआ लेखणी ॥ कवली झाबली
रे, चंदुआ झरमर पुंजणी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ प्रासाद प्रतिमा तास जूखण,
केसरचंदन झाबली ॥ वासकूंपि वालाकूंची, अंगलुहणां छाबडी ॥ कलश
थाली मंगलदीवो, आरतिने धूपणां ॥ चरवला मुहपत्ती सामीवछल, नो
करवाली थापना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणनां साधन जे
कह्यां ॥ तप संयुत रे, गुणमंजरीएं सद्दह्यां ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुंअरनें अं
ग रे ॥ रोग उपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥३॥ त्रुटक ॥ मुनिराज जासे
जंबु द्वीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नंदन, वसुसार
वसुदेव नाम ए ॥ वनमांहे रमतां दोय बंधव, पुण्ययोगें गुरु मल्या ॥ वै
राग्य पामी जोग वामी, धर्म धामि संचर्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ लघु बांधव रे,
गुणवंत गुरु पदवी लहे ॥ पणसय मुनिनी रे, सारण वारण नितु दिए ॥

कर्मयोगें रे, अशुन्न उदय थयो अन्यदा ॥ संथारे रे, पोरिसी न्नणी पोढयो य दा ॥५॥ त्रुटक ॥ सर्वघाति निंद व्यापी, साधु मागे वायणां ॥ उंबमां अंत राय थातां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या न्नूतडो ॥ पुण्य अमृत ढोली नाख्युं, नखो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥ श्रुत अन्यासो रे, तो एवडो संताप रे ॥ मुज बांधव रे, न्नोयण सयण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुण मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ बार वासर कोइ मुनिनें, वायणा दीधी न हीं ॥ अशुन्न ध्यानें आयु पूरी, नृप तुज नंदन सही ॥ ज्ञानविराधन मूढ जडपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्धबांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ढाल ॥ वरदत्तने रे, जातिसमरण ऊपनुं ॥ न्नव दीठो रे, गुरु प्र णमी कहे शुन्नमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय दीवडो ॥ गुण अवगुण रे, न्नासन जे जग परवडो ॥ ए ॥ त्रु० ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञा न कहो केम आवडे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावडे ॥ नृप पन्नणे पुत्रने प्रन्नु, तपनी शक्ति न एवडी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आ राधो, संपदा ल्यो बेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सद्गुरु वयण सुधारसें रे, न्नेदी साते धात ॥ तपशुं रंग लागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोगमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसर्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कन्यासहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नृपें कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि नूप ॥ त० ॥ न्नीम कांति गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, न्नोगवे न्नोग अखंम ॥ त० ॥ वरसें व रसें उजवे रे, पंचमी तेज प्रचंम ॥ त० ॥ ४ ॥ नुक्तन्नोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावे नि ज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ साधवी रे, वैजयंतें दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अ मरसेन राजा घरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्षण लक्षित रायनें रे, पुण्ये कीधो न्नेट ॥ त० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, शो कन्या न्नरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥

तिहां पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित नूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य उदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार महाव्रत चोंपशुं रे, श्रीजिनवरने पास ॥ त० ॥ केवलधर मुक्ति गयो रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणीविजय शुनापुरी रे, जंबु विदेह मजार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमंजरीनो जीव ॥ त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशें वरसें राजवी रे, सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवल ज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमीतप महिमा विषे रे, नांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहने तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ ढाल उठी ॥ करकंडुने करुं वंदणा ॥ ए देशी ॥

॥ चोवीश दंमक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चोवीशमो जिनचंद रे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणत स्वर्गथी ॥ हुं० ॥ त्रिशला उरसुखकंद रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ महावीरनें करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पंचम नाण विलास रे ॥ हुं० ॥ महानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ अपराधी पण उद्धर्यो ॥ हुं० ॥ चंमकोशिउ साप रे ॥ हुं० ॥ यज्ञ करंता बांजणा ॥ हुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ ॥ हुं० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं० ॥ रिखनदत्त वली विप्र रे ॥ हुं० ॥ व्याशी दिवस संबंधथी ॥ हुं० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ कर्म रोगने टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हुं० ॥ आदर्यो में आशा धरी ॥ हुं० ॥ मुज उपर हित आणि रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजयसिंह सूरि सनो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पन्यास रे ॥ हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि ॥ हुं० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्यें ॥ हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज हजो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ कलश ॥ इय वीर नायक विश्वनायक, सिद्धिदायक संस्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोमर, गुंथी निज कंठें ठव्यो ॥ पुण्य पाटण खेत्रमांहें, सत्तर त्राणुं संवत्सरें ॥ श्री पार्श्व जन्म कल्याण दिवसें, सकल नवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति श्रीपंचमीदिनस्तवनं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ आदिजिणंद अरिहंत जी ॥ प्रजु अमने रे ॥ तुमें द्यो दरिसन महारा ज ॥ शुं कहुं तुमने रे ॥ आठ पहोरमां एक घडी ॥ प्र० ॥ लाग्युं तमारुं ध्यान ॥ शुं० ॥ १ ॥ मधुकरने मन मालती ॥ प्र० ॥ जिम मोराने मन मेह ॥ शुं० ॥ सीताने मन रामजी ॥ प्र०॥ तेम वाध्यो तुमशुं नेह ॥ शुं०॥ ॥ २ ॥ रोहिणीने मन चंदजी ॥ प्र० ॥ वली रेवायें गजराज ॥ शुं० ॥ समय समय प्रजु सांजरे ॥ प्र० ॥ मनडामां महाराज ॥ शुं० ॥ ३ ॥ निःस्नेही थइ नवि बूटीये ॥ प्र० ॥ करुणानंद कहाउ ॥ शुं० ॥ गुण अवगुण जोता रखे ॥ प्र० ॥ तो तारक केम कहाउ ॥ शुं० ॥ ४ ॥ रढ लागी प्रजु रूपनी ॥ प्र० ॥ मुने न गमे बीजी वात ॥ शुं०॥ वाह्ये वात बने नहीं ॥प्र०॥ मलीयें मूकी भ्रांत ॥ शुं० ॥ ५ ॥ सेवे चिंतामणि फले ॥ प्र० ॥ तूंतो त्रिजुवननाथ ॥ शुं० ॥ शो वातें ठेडुं नहीं ॥ प्र० ॥ हवे आव्या मुज हाथ ॥ शुं० ॥ ६ ॥ मुहनी वात मूको परी ॥ प्र० ॥ जिम जाणो तिम तार ॥ शुं० ॥ सद्गुरु सुंदर कविरायनो ॥ प्र० ॥ पद्मने प्रजुशुं प्यार ॥शुं० ॥७॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

॥ अवसर पामीने रे, कीजें नव आंबिलनी उली ॥ उली करतां आपद जाये, रुद्धिसिद्धि लहियें बहुली ॥ अ० ॥ १ ॥ आशोने चैत्रें आदरशुं, सातमथी संजाली रे ॥ आलस मेहेली आंबिल करशो, तस घर नित्य दीवाली ॥ अ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी थाते, प्रेमेशुं पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जप माली ॥ अ० ॥ ३ ॥ देहेरे जइने देव जुहारो, आदेसर अरिहंत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, जावेशुं जगवंत ॥ अ०॥ ४ ॥ बे टंकें पडिक्कमणुं बोल्युं, देव वंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी परें समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी अंतर जामी, आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वादपंथें संचरतां, आवे जवनो अंत ॥ अ०॥ ६॥ सत्तर चोराणुयें शुदि चैत्रीयें, बारशें बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशें, जे नर नारी चाले रे ॥ जवनी जावठ ते जांजीने, मुक्तिपुरीमां माले ॥ अ०॥८॥

॥ अथ पूजाविधि आश्रयी श्रीसुविधिजिन स्तवन ॥

॥ चोपाइनी देशीमां ॥ सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय जय का

र ॥ पूजानी विधि धारो सही,श्रीजगवंतें शास्त्रें कही ॥१॥ पूर्व सन्मुख स्नान आदरो,पश्चिमदिशि.रही दातण करो ॥ उत्तरें वस्त्र पहेरो सही, पूजो उत्तर पूरव मुख रही ॥ २ ॥ घरमां पेसतां वामें जाग, देरासर करवानो लाग ॥ दोढ हात जूमिथि कीजीयें, उंचुं नीचुं सहुथी वरजीयें ॥ ३ ॥ पूरव उत्तर मुख पूजा जाण, बीजी दिशें हुए करतां हाण ॥ नवांग पूजानो विधि एह, विधि करतां होय निर्मल देह ॥ ४ ॥ पग जंघाने हाथ बे तणी, खंजा मस्तकनी पांचमी जणी ॥ जाल कंठ हृदय ए जाण, उदरें नवमुं तिलक वखाण ॥ ५ ॥ चंदन विण पूजा नवि होय, वासपूजा प्रजातें जोय ॥ कुसुमपूजा मध्यान्हें करो, साजे धूप दीप आदरो ॥ ६ ॥ धूप उखेवो डाबे पास, जमणे पासें दीप प्रकाश ॥ ढोणुं आंगल मूको सही,चैत्यवंदन करो दक्षिण रही ॥ ७ ॥ हाथथकी जे जूमियें पडे, पग लागे मलीन आजडे ॥ मस्तकथी उंचुं परिहरो, नाजीथकी नीचुं मत करो ॥ ८ ॥ कीडे खाधुं तजीयें फूल, एम फलादिक ढोइयें अमूल ॥ फूल पांखडी नवि छेदीयें, कलिका कहिये नवि जेदीयें ॥ ९ ॥ गंध धूप आखे आणीयें, फूल दीप बलि फल जाणीयें ॥ पाणी आठमुं सुंदर सही, आठ प्रकारी पूजा कही ॥ १० ॥ शांति कारण उज्ज्वल वस्त्र, लाज कारणें पीत पवित्र ॥ वयरी जींपवा पहेरो श्याम, रातुं वस्त्र ते मंगल काम ॥ ११ ॥ पंच वरण वस्त्रें होय सिद्ध, खंडित सांध्या वस्त्र निषिद्ध ॥ पद्मासनने मौनें रही, मुखकोश पूजाविधि कही ॥ १२ ॥ ए विधि पूजा कीजें सदा, जिम पामीजें सुखसंपदा ॥ आनंदविमल पंडितनो दास, प्रीतिविजय प्रणमे उल्लास ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टापद तीर्थ स्तवन ॥

॥ तीरथ अष्टापद नित्य नमीयें, ज्यां जिनवर चउवीश जी ॥ मणिमय बिंब जराव्यां जरतें, ते वंदूं नित्य दीस जी ॥ ती० ॥ १ ॥ निजनिज देह प्रमाणें मूरति, दीठडे मनडुं मोहे जी ॥ चत्तारि अठ दस दोय इणी परे, जिन चोवीशे सोहे जी ॥ ती० ॥ २ ॥ बत्रीस कोशनो पर्वत उंचो, आठ तिहां पावडीयो जी॥ एकेकी चउकोश प्रमाणे, नवि जाये कोइ चडीयो जी॥ ती० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी चडीया लब्धें, वांद्या जिन चोवीश जी ॥ जगचिंतामणि स्तवन त्यां कीधुं, पूगी मननी जगीश जी ॥ ती० ॥ ४ ॥ तद्भवमोक्षगामी जे मानव, ए तीरथनें वांदे जी ॥ जंघा विद्याचारण वांदे, तेतो लब्धि

प्रसादें जी ॥ ती०॥ ५ ॥ शाठ सहस सुत सगर चक्रीना, ए तीरथ सेवंता जी ॥ बारमां देवलोकें ते पोहोता, लेहेशे सुख अनंतां. जी ॥ ती० ॥ ६ ॥ कंचनमय प्रासाद इहां ठे, वंदन करवा योग्य जी ॥ ए अधिकार ठे आवश्यकसूत्रें, जो जो दइ उपयोग जी ॥ ती० ॥ ७ ॥ जिहां आदेसर मुक्तें पोहोता, अविचल तीरथ एह जी ॥ जशवंतसागर शिष्य पयंपे, जिनेंद्र वधते नेह जी ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति अष्टापदस्तवन ॥

॥ अथ समेत शिखर गिरिनुं स्तवन ॥ क्रीडा करी घरे आवियो ॥ ए देशी ॥

॥ समेत शिखर जिन वंदियें, महोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे नव तणो, तीरथ कहियें तेह रे ॥ समे० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगें, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्मप्रन्न शिवसुख वस्या, त्रणशें अड अणगार रे ॥ समे० ॥ २ ॥ पांचशें मुनि परिवारशुं, श्रीसुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रन्न श्रेयांस लगें, साथें सहस मुणिंद रे ॥ समे० ॥ ३ ॥ ठ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सिद्धा रे ॥ सात सहस्सशुं चौदमां, निज कारज वर कीधां रे ॥ समे० ॥ ४ ॥ एक शो आठशुं धर्मजी, नवशेंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथु अर एक सहस्सशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ समे० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांचशुं, मुनि नमि एक हजार रे ॥ तेत्रीश मुनियुत पासजी, वरिया शिवसुख सार रे ॥ समे० ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस्स त्रणशें, उपर उंगण पंचाश रे ॥ जिन परिकर बीजा केई, पाम्या शिवपुर वास रे ॥ समे० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन इणें गिरि, सिद्धा अणशण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीयें, पास सामलनुं चेइ रे ॥ समे० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समवसरणनुं स्तवन ॥ एक वार गोकुल आवजो ॥ गोविंदजी ए देशी ॥

॥ एक वार वच्छदेश आवजो, जिणंद जी ॥ एक वार वच्छदेश आवजो ॥ दर्शन नयन ठहरावजो ॥ जिणंद जी, एक वार वच्छदेश आवजो ॥ जयंतीने पाय नमावजो ॥ जि० ॥ एक०॥ वली समोसरण देखावजो ॥ जि०॥ एक० ॥ ए आंकणी ॥ समोवसरण शोन्ना जे दीठी, ऊणऊण सांन्नरी आवशें ॥ जि०॥ एक०॥ नूतल सुगंधि जल वर्षावे, फूलना पगर न्नरावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ १॥ कनक रतननो पीठ करीने, त्रिगडानी शोन्ना रचा

वशें ॥ जि० ॥ एक० ॥ रूपानो गढने कनक कोशीशां, वच्चें रतन जडाव
शे ॥ जि० ॥ एक० ॥ २ ॥ रतनगढें मणिनां कोशीशां, जगमग ज्योति
दीपावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चार डुवारें एंशी हजारा, शिव सोपान चढा
वजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ३ ॥ देव चार कर आयुध धारी, द्वारें खडा करे
चाकरी ॥ जि० ॥ एक० ॥ दूर पासथी एक समयें वंदे, जरंतीने लघु लोक
री ॥ जि० ॥ एक० ॥४॥ सहस्र योजन ध्वज चार ते उंचा, तोरण चउ आठ
वावडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ मंगल आठ ने धूप घटाडी, फूलमाल कर पूत
ली ॥ जि० ॥ एक० ॥ ५ ॥ आठ सुरी बीजे गढद्वारें, रत्न गढे चउ दे
वता ॥ जि० ॥ एक० ॥ जातिवैर बंम्भी पशु पंखी, तुज पद कमलने सेवता
॥ जि० ॥ एक० ॥ ६ ॥ पंचवरणमयी जल थल केरां, फूल अमर वरसा
वता ॥ जि० ॥ एक० ॥ परखदा सात ते ऊपर बेसे, मुनि नर नारी देवता
॥ जि० ॥ एक० ॥ ७ ॥ आवश्यक टीकायें पण उत्तर, थाये न कुसुम कि
लामणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ साधवी वैमानिकनी देवी, उभी सुणे दोय तु
रणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ ८ ॥ बत्रीश धनुष अशोक ते उंचो, चामर छत्र ध
रावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चउमुख रयण सिंहासन बेसी, अमृत वयण
सुणावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ९ ॥ धर्मचक्र नामंमल तेजें, मिथ्या तिमिर
हरावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ गणधर वाणी जब अमे सुणीयें, तब देव
छंदे सुहावजो ॥ जिणं० ॥ एक० ॥१०॥ देवतासुर कवि साचुं बोले, जिहां
जाशो तिहां आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ रंभादिक अपछरनी टोली, वंदी
नमी गुण गावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ ११ ॥ अंतरजामी दूरें विचारो, मुज
चित्त लीनुं ज्ञानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ हृदयथकी जो दूरें जाउ, तो कौ
तुक अमें मानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ १२ ॥ सुलसादिक नव जिनपद
दीधुं, अमशुं अंतर एवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वीतराग जो नाम धरावोतो,
सहुने सरिखा तेवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १३ ॥ ज्ञाननजरथी वात विचा
रो, रागदशा अम रूअडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ सेवक रागें साहेब रीजे, धन
धन त्रिशला मावडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ १४ ॥ तुज विण सुरपति सघला
तूसे, पण अमें आमण दूमणा ॥ जि० ॥ एक० ॥ श्रीशुभवीर हजूरें रहे
तां, उत्सव रंग वधामणां ॥ जि० ॥ एक० ॥ १५ ॥ इति समवसरणस्तवनं ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥ रासडाना रागमां ॥

॥ रुपैय्यो ते आलुं रोकडो, माह्रा वालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनडुं ते म्हारुं मोकले, म्हारा वालाजी रे ॥ ससिह्र साथें संदेश, जइने कहेजो म्हारा वालाजी रे ॥ ए आंकणी ॥ भरतना भक्तने तारवा ॥ म्हा० ॥ एकवार आवोने आ देश ॥ जइ० ॥ १ ॥ प्रभुजी वसो पुष्कला वती ॥ म्हा० ॥ महाविदेह खेत्र मझार ॥ जइ० ॥ पुरी राजें पुंमरीगिणी ॥ म्हा० ॥ जिहां प्रभुनो अवतार ॥ जइ० २ ॥ श्रीसीमंधर साहेबा ॥ मा० ॥ विचरंता वीतराग ॥ जइ० ॥ पडिबोहो बहु प्राणीने ॥ म्हा० ॥ तेहनो पामे कोण ताग ॥ जइ० ॥ ३ ॥ मन जाणे उडी मलुं ॥ म्हा० ॥ पण पोतें नहीं पांख ॥ जइ० ॥ भगवंत तुम जोवा भणी ॥ म्हा० ॥ अल जो धरे छे आंख ॥ जइ० ॥ ४ ॥ डुर्गम म्होटा मूंगरा ॥ म्हा० ॥ नदी नालानो नहीं पार ॥ जइ० ॥ घाटीनी आंटी घणी ॥ म्हा० ॥ अटवी पंथ अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोडी सोनैये काशीदी ॥ म्हा० ॥ करनारो नहीं कोय ॥ जइ० ॥ कागलीउं केम मोकलुं ॥ म्हा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ० ॥ ६ ॥ लखुं जे जे लेखमां ॥ म्हा० ॥ लाख गमे अभिलाष ॥ जइ० ॥ तमें लेजामां ते लहो ॥ म्हा० ॥ मुझ मन पूरे छे साख ॥ जइ० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूपना ॥ म्हा० ॥ जगमां तुमें छो जाण ॥ जइ० ॥ जाण आगें शुं जणावीयें ॥ म्हा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ जइ० ॥ ८ ॥ वाचक उदयनी वीनति ॥ म्हा० ॥ ससिह्र कह्या संदेश ॥ जइ० ॥ मानी लेजो माह्ररी ॥ म्हा० ॥ वस्ति दूर विदेश ॥ ज० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥ मधुकरनी देशीमां ॥

॥ काया पामी अति कूडी, पांख नहीं रे आवुं उडी, लब्धि नहीं कोये रूडी रे ॥ श्रीयुगमंधरने केजो ॥ १ ॥ के दधिसुत वीनतडी सुणजो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ए आंकणी ॥ तुम सेवामांहे सुर कोडी, ते इहां आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडी रे ॥ श्रीयुग० ॥ २ ॥ डुखम समयमां इणें भरतें, अतिशय नाणी नवि वरते, कहीयें कहो कोण सांभलते रे ॥ श्रीयुग० ॥ ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें, नयणां दरिसण नवि पामे, एतो झगडा नो ठामें रे ॥ श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकडलीनी परें डुःख सहेवुं, प्रभु विना कोण आगल कहेवुं रे ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ म्होटा

मेल करी आपे, बेहुने तोल करी थापें, सज्जन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो थावे, केवल नाण जुगल पावे, तो सवि वात बनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥ गजलंछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पंमित जिनविजयें गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ए ॥ इति युगमंधरजिन स्तवनं ॥

॥ अथ नेमिजिनस्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ जइने रहेजो मह्यारा वालाजी रे, श्रीगिरनारने गोंख ॥ जइने० ॥ अमें पण तिहां आवशुं ॥ माह्यारा० ॥ जिहारें पामीशुं जोख ॥ जइ० ॥ ॥१॥ जान लेइ जूने गढें ॥ माह्या० ॥ आव्या तोरण आप ॥ जइ० ॥ पशुआं पेखी पाछा वल्या ॥ माह्या० ॥ जातां न दीधो जबाप ॥ जइ० ॥ २ ॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ माह्या० ॥ जोतां नहीं मले जोड ॥ जइ० ॥ बोल्या अणबोल्या करो ॥ माह्या० ॥ ए वातें तमनें खोड ॥ जइ० ॥ ३ ॥ हुं रागी तुं वैरागीउं ॥ माह्या० ॥ जगमां जाणे सहु कोय ॥ जइ० ॥ रागी तो लागी रहे ॥ माह्या० ॥ वैरागी रागी न होय ॥ जइ० ॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं ॥ माह्या० ॥ सघला मेहेली सवाद ॥ जइ० ॥ मोहनीयाने जइ मली ॥ माह्या० ॥ महोटा साथें श्यो वाद ॥ जइ० ॥ ५ ॥ गढतो एक गिरनार छे ॥ माह्या० ॥ निरतो छे एक श्री नेम ॥ जइ० ॥ रमणी एक राजीमती ॥ माह्या० ॥ पूरो पाल्यो जेणें प्रेम ॥ जइ० ॥ ६ ॥ वाचक उदयनी वंदना ॥ माह्या० ॥ मानी लेजो महाराज ॥ जइ० ॥ नेम राजुल मुक्तें मल्या ॥ माह्या० ॥ सार्यां आतमकाज ॥ जइ० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ बीजनुं स्तवन ॥ फतमल पाणीडाने जाय ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहंकरु जी ॥ बीज तिथि गुण गेह, आदरो नवियण सुंदरू जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जी ॥ माहा शुदि बीजें जाण, जन्म अनिनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुन्न गण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र वदिनी हो बीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी

जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजें वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवल नाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित रूप रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नीर, समकित छोड प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी अहो वाड, पच्चरकाण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुभव रूप, उतरे चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारस वारी, पान करी सुख लीजीएं जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस किजीएं जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधा सनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीयें जी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वच कायायें कीजीयें जी ॥ १२ ॥ उजमणुं शुभ चित्त, करी धरीयें संयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ इणि विध करियें हो बीज, राग ने द्वेष दूरें करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञान ने पछी क्रिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्र मां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि छे असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदें मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपार रे ॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेद रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो ॥ दीपे रे त्यां देश म

गध सहुमां शिरें रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो ॥ राजे रे त्यां श्रेणिक. गाजे गजपरें रे लो ॥ १ ॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विचरंता तिहां आवी वीर समोसस्या रे लो ॥ हां० ॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सूधा रे तप संयम शिय लें अलंकस्या रे लो ॥ २ ॥ हां०॥ फूल्या रस नर फूल्या अंब कदंब जो ॥ जाणुं रे गुण शील वन हसि रोमंचीउ रे लो ॥ हां०॥ वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो ॥ वासें रे परिमल चिहुं पासे संचिउ रे लो ॥ ३ ॥ हां ०॥ देव चतुर्विध आवे कोडा कोड जो ॥ त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लो ॥हां०॥ चोशठ सुरपति सेवे होडाहोड जो ॥ आगें रे रस लागे इंड्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां०॥ मणिमय हेम सिंहासन बेठा आप जो ॥ ढाले रे सुर चामर मणि रत्नें जड्यां रे लो ॥ हां० ॥ सुणतां दुंदुभि नाद टले सवि ताप जो ॥ वरसे रे सुर फूल सरस जानू अड्यां रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥ताजे तेजे गाजे घन जेम लुंब जो ॥ राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां०॥ निरखी हरखी आवे जनमन लुंब जो ॥ पोषे रे रस न पडे घोषें जर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो ॥ आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० ॥ दइ प्रद क्षिणा वंदि बेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे जायगें रे लो ॥ ७ ॥ हां० ॥ त्रिभुवन नायक लायक तव जगवंत जो ॥ आणी रे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जंत जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिनवर एम उपदिशे,सांजलो चतुर सुजाण रे ॥ मोहनी निंद मां कां पडो,उंलखो धर्मनां ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे ॥ बापडा पंच परमादथी, कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥ २ ॥ करी शको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश ॥ सर्वकालें करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व षटनां कह्यां, फल घणां आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारें आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परजव तणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणि एह आराधतां, प्राणियो

सगति जाय रे ॥वि०॥५॥ तेहवें अष्टमी फल तिहां,पूछे गौतम स्वाम रे ॥ नविक जीव जाणवा कारणें, कहे वीर प्रजु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लान होय आठ पडिहारनो, आठ पवयण फल होय रे ॥ नाश आठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि०॥ ८ ॥आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजितनुं जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजव तणुं एह तिथें, अनिनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्तिदिन जाण रे ॥ पास जिन एह तिथें सिद्धला, सातमा जिन चवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउं, दंम वीरज लही मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा नणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिन तणां केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वली घणा संयमी, पामशे पद निर्वाण रे ॥ वि०॥ १२ ॥ धर्मवासित पशु पंखियां, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारि जीव पोसो करे, जेहने धर्म अन्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ नांखियो वीरें आगम तणो, नविकहित एह अधिकार रे ॥ जिनमुखें उच्चरे प्राणिया, पामशे नव तणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोड रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोड रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ कलश ॥ एम त्रिजग नासण अचल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी, संथूण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगें नणो रंगें, स्तवन ए आगम तणो ॥ जे नविक नावें सुणे गावे, कांति सुख पावे घणो ॥ १६ ॥ श्लोक संख्या ॥ ४३ ॥

॥ अथ एकादशीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसस्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोडशुं परिवस्या ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, नक्ति गुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंन परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय

बताव, जिम वरे शिववधू कंतजो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशोनें पंचाश, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रें त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां कल्याण, विवरी कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्लीजन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवीशि, मांहे कल्याण कह्यां वली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढ शो जप माला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥८॥ नरपति दाहिण धातकीखंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अनिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शियल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नूषणचीवर धरी ॥ नरपति जाए नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥११॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायिक पोषध वरे ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलायें अनुसरे ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधु तणारी ॥ विनयें वीनवे शेठ, मुनिवर करी करुणा री ॥ १ ॥ दाखवो मुज दिन एक, थोडो पुण्य कीयो री ॥ वाधे जिम वडबीज, शुन्न अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि नासे महा नाग्य, पावन पर्व घणां री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास अग्यार लगें री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तपशुं वगे री ॥ ४ ॥ सांनलि सद्गुरु वेण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी उजविय, आरण स्वर्ग वश्यो री ॥५॥ एकवीश सागर आय, पाली पुण्य वसे री ॥ सांनल केशवराय, आगल जेह थशे री ॥ ६ ॥ सोरी पुरमां शेठ, समृद्धदत्त वडो री ॥ प्रीतिमती प्रिया तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित शुन्न स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शकुनें री ॥ ८ ॥ नालनिक्षेप निधान, नूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्नदोहद अनुनाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ९ ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक नण्यो री ॥ यौवनवय अगीआर, रूपवती परण्यो री ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चरकाण धरे री ॥ अगीआर कंचन कोड, नायक पुण्य नरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार,

तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रत शेठ, जातिस्मरण लहे री ॥१२॥ जिनप्रत्यय मुनि शाख, नक्कें तप उच्चरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पोहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुतें पोसह लीधो, सुव्रत शेठें अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लूंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासन नक्कें देवी शक्कें, थंजाणा ते बापडा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नूप आगल धस्या रांकडा जी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ नेटणां जी ॥ गयने प्रणमी चोर मूकावी, शेठें कीधां पारणां जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरो जी ॥ शेठ जी पोसह समरस बेठा, लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, उगरी सौ प्रशंसा करे जी ॥ हरखे शेठजी तप उजमणुं, प्रेमदा सार्थे आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो नार नलावी, संवेगी शिर से हरो जी ॥ चउनाणी विजयशेखर सूरि, पासें तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय छठ सो अठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि,देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगें वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्में नडीउं पापें जडीउं, सुर कहे जाउ औषध नणी जी ॥ साधु न जाये रोष नराये, पाटु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥ ए ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जितपद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए, धन्य धन्य यादव वंश ॥ जिहां प्रनु अवतस्या ए ॥ मुज मनमानस हंस,जयो जिन नेमने ए ॥१॥ धन्य शिवादेवी मावडी ए, समुद्र विजय धन्य तात ॥ सुजात जगतगुरु ए, रत्न त्रयी अव दात ॥ जयो० ॥२॥ चरण विराधी उपन्यो ए, हुं नवमो वासु देव ॥जयो०॥ तिणें मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तो पण हुं न करी शकुं ए, डुष्ट कर्मनो नेय ॥ जयो० ॥ ४ ॥ पण शरणुं बलियातणुं ए, कीजें सीजे काज ॥ ज० ॥ एहवां वचनने सांजली ए, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आराध ॥ ज० ॥ थाश

जिनवर बारमो ए, जावि चोवीशियें लह ॥ जयो० ॥ ६ ॥ कलश ॥ इय नेमि जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल मंमणो ॥ बाण नंद मुनि चंद वरसें, राजनगरें संथुण्यो ॥ संवेगरंग तरंग जलनिधि, सत्यविजय गुरु अनुसरी ॥ कपूरविजय कवि, क्षमाविजय गणि, जिनविजय जयसिरि वरी ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवीरप्रजुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ जाव दया सागर प्रजु रें, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रजु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारो रे, हवे इण जरतमां ॥ कोण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणा रे जीव ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणो बाल ज्युं रे, अरहो परहो अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख उपजे रे, ते विण केम रहेवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जव समुद्रनो रे, जवअडवि सब्रवाह ॥ ते परमेश्वर विण मले रे, केम वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधार छे रे, अहो जिनमुद्रा सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि जीवनें रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो जवि जना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारज मुनि रे, सहुने एणी परें सिद्धि ॥ जव जव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीध रे ॥ वीर० ॥ ए ॥

॥ अथ आंबील तप आश्चर्यी श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ जीहो कुंअर बेग गोंखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमुं दिन प्रत्यें जिनपति ॥ लाला ॥ शिव सुखकारी अशेष ॥ जीहो आशोई चैत्री जणी ॥ लाला ॥ अठाई विशेष ॥ १ ॥ जवि कजन, जिनवर जग जयकार ॥ जीहो जिहां नवपद आधार ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधवा ॥ लाला ॥ नंदीसर सुर जाय ॥ जीहो जीवाजिगममांहे कह्युं ॥ ला० ॥ करे अड दिन महिमाय ॥ २ ॥ ज० ॥ जीहो नवपद केरा यंत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा कीजें रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ ला० ॥ नासे पापनो व्याप ॥ ३ ॥ ज० ॥ जीहो अरिहंत सिद्ध आचारजा ॥ ला० ॥ उवज्झाय साधु ए पंच ॥ जीहो दंसण नाण

चरित्र तवो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपंच ॥ ४ ॥ न० ॥ जीहो ए नव पद आराधतां ॥ ला० ॥ चंपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखीयो थयो ॥ ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ ५ ॥ न० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालवधुर उजेणीयें रे लो, राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुणी नर ॥ सुरसुंदरी मयणासुंदरी रे लो, बे पुत्री तस बाल रे ॥ सु० ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीयें रे लो, जेम होय सुखनी माल रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ पेहेली मिथ्या श्रुतभणी रे लो, बीजी जिन सिद्धांत रे ॥ सु० ॥ बुद्धि परीक्षा अवसरें रे लो, पूछी समस्या तुरंत रे ॥ सु० ॥ २ ॥ श्री० ॥ तूठो नृप वर आपवा रे लो, पेहेली करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥ बीजी कर्म प्रमाणथी रे लो, कोप्यो ते तव नृपभाण रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ कुष्ठी वर परणावियो रे लो, मयणा वरे धरी नेह रे ॥ सु० ॥ रामा हजीय विचारीयें रे लो, सुंदरी विणसे तुज देह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ सिद्धचक्र प्रभावथी रे लो, नीरोगी थयो जेह रे ॥ सु० ॥ पुण्यपसायें कमला लही रे लो, वाध्यो घणो ससनेह रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ माउले वात ते जव लही रे लो, वंदवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु० ॥ निज घर तेडी आवियो रे लो, आपे निज आवास रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे लो, हुं जावुं परदेश रे ॥ सु० ॥ माल मता बहु लावशुं रे लो, पूरशुं तुम तणी खांत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अवधि करी एक वरसनी रे लो, चाल्यो नृप परदेश रे ॥ सु० ॥ शेठ धवल साथें चल्यो रे लो, जलपंथें सुविशेष रे ॥ सु० ॥ ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ परणी बब्बर पति सुता रे, धवल मूकाव्यो ज्यांह ॥ जिनहर बार उघाडते रे, कनककेतु बीजी त्यांह ॥ १ ॥ चतुर नर, श्री श्रीपाल चरित्र ॥ ए आंकणी ॥ परणी वस्तुपालनी रे, समुद्र तटें आवंत ॥ मकरकेतु नृपसुता रे, वीणा वादे रीझंत ॥ च० ॥ २ ॥ पांचमी त्रैलोक्यसुंदरी रे, परणी कुब्जा रूप ॥ छठी समस्या पूरती रे, पंच सखीशुं अनूप ॥ च० ॥ ॥ ३ ॥ राधा वेधी सातमी रे, आठमी विष उतार ॥ परणी आव्यो निज घरें रे, साथें बहु परिवार ॥ च० ॥ ४ ॥ प्रजापालें सांभली रे, परदल

केरी वात ॥ खंधें कुहाडो लेइ करी रे, मयणा हुइ विख्यात ॥ च० ॥ ५ ॥ चंपाराज्य लेइ करी रे, जोगवी कामित जोग ॥ धर्म आराधी अवतर्यो रे, पोहोतो नवमे सुरलोग ॥ च० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ एम महिमा सिद्धचक्रनो, सुणि आराधे सुविवेक ॥ मोरे लाल ॥ १ ॥ श्री सिद्ध चक्र आराधीयें ॥ ए आंकणी ॥ अडदल कमलनी थापना, मध्यें अरिहंत उदार ॥ मो० ॥ चिहुं दिशें सिद्धादिक चक्र, वक्र दिशें तुं गुण धार ॥ मो० ॥ २ ॥ श्री० ॥ बे पडिक्कमणा जंत्रनी, पूजा देव वंदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन सविशेषथी, पंचामृत कीजें पखाल ॥ मो० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ जूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रुंधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥ गुरु वैय्यावच्च कीजीयें, धरो सद्दहणाजोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ गुरु पडिलाजी पारीयें, सामीवच्छल पण होय ॥ मो० ॥ उजमणां पण नव नवां, फल धान्य रयणादिक ढोय ॥ मो० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ इह जव सवि सुख संपदा, परजवें सवि सुख थाय ॥ मो० ॥ पंमित शांति विजय तणो, कहे मानविजय उवझाय ॥ मो० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणीतपनुं स्तवन ॥

॥ हांरे मारे वासुपूज्यनो नंदन, मघवा नाम जो ॥ राणी तेहनी कमला, पंकजलोयणी रे लो ॥ हांरे मारे आठ पुत्रने, उपर पुत्री एक जो ॥ मात पिताने वाहाली, नामें रोहिणी रे लो ॥ १ ॥ हांरे मारे देखी योवन, वय निजपुत्री जूप जो ॥ स्वयंवर मंमप मांमि, नृप तेडाविया रे लो ॥ हांरे मारे अंग वंग ने, मरुधर केरा राय जो ॥ चतुरंगी फोजाथी चंपायें, आविया रे लो ॥ २ ॥ हांरे मारे पूरव जवना रागें, रोहिणी ताम जो ॥ जूप अशोकने कंठें, वरमाला धरे रे लो ॥ हांरे मारे गज रथ घोडा, दान अने बहु मान जो ॥ देइ वोलावी बेटी, बहु आमंबरें रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे रोहिणी राणी, जोगवतां सुख जोग जो ॥ आठ पुत्रने पुत्री चार, सोहामणी रे लो ॥ हांरे मारे आठमा पुत्रनुं, लोकपाल छे नाम जो ॥ ते खोले लेइ बेठी, गोंखे जामिनी रे लो ॥ ४ ॥ हांरे मारे एहवे कोइक, नगर वणिकनो पुत्र जो ॥ आयुःक्षये थी बालक, मरण दशा लहे रे लो ॥ हांरे मारे मात पितादिक, सहु तेनो परिवार जो ॥ रडतो पडतो गोंख तले, थइने वहे रे लो ॥ ५ ॥ हांरे मारे ते

देखी अति हरखी, रोहिणी ताम जो ॥ पिउने नांखे ए नाटक, कुण जातनुं रे लो ॥ हांरे मारे दीप कहे ए, पूरव पुण्य संकेत जो ॥ जन्मथकी नवि दीठुं डुःख, केइ जातनुं रे लो ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ पिउ कहे जोबन मदमाती, सहुने सरखी आशा ॥ ए बालकना डुःख थी रोवे, तुऊने होवे तमासा ॥ बोलो बोल विचारी राज, एम केम कीजें हांसी ॥ १ ॥ तव राणीने रीश करी खोलेथी, पुत्रने खूंची लीधो ॥ रोहिणी राणी नजरें जोतां, गोंखथी नाखी दीधो ॥ बो० ॥२॥ ते देखी सहु अंतेउरमां, सऊनें पोकार ते कीधो ॥ रोहिणी एम जाणे जे बालक, को इकें रमवा लीधो ॥ बो० ॥ ३ ॥ नगर तणे रखवाले देवें, अधर ग्रह्यो तिहां आवी ॥ सोनाने सिंहासण थाप्यो,आनूषण पेहेरावी ॥ बो० ॥४॥ नगरलोक सहु नाग्य वखाणे, राजा विस्मय थावे ॥ दीप कहे जस पुण्य सखाइ, तिहां सहु नव निधि थावे ॥ बो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ रूडो मास वसंत ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन वासुपूज्य जिनवरना, अंतेवासी मुनिराज वाला ॥ रूपकुंनने सुवर्णकुंनजी, चउ ज्ञानी नव ऊहाज वाला ॥ १ ॥ रोहिणी तप फल जग जयवंतुं ॥ ए आंकणी ॥ पाउ धार्या प्रनु नयर समीपें, हरख्यो रोहिणी कंत वाला ॥ सहु परिवारशुं पदजुग वंदे,निसुण्यो धर्म एकंत वाला ॥रो०॥२॥ कर जोडी नृप पूछे गुरुने, रोहिणी पुण्यप्रबंध वाला ॥ शुं कीधुं प्रनु सुकृत एणें, नांखो ते सयल संबंध वाला ॥ रो० ॥ ३ ॥ गुरु कहे पूर्वे नवमां कीधुं, रोहिणी तप गुणखाण वाला ॥ तेथी जन्मथकी नवि दीठुं सुख डुःख जाण अजाण वाला ॥ रो० ॥ ४ ॥ नांखशे गुरु हवे पूर्व नवनो, रोहिणीनो अधिकार वाला ॥ दीप कहे सुणजो एक चित्तें, कर्म प्रपंच विचार वाला ॥ रो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ गुरु कहे जंबू खेत्र नरतमां, सिद्धपुर नगर मऊार रे ॥ पृथिवीपाल नरेसर राजा, सिद्धमती तस नार ॥ राजन सुणजो रे ॥ कांइपूरव नव अधिकार, दिलमां धरजो रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एक दिन आव्या चंइ उद्यानें, राणी ने वली राय रे ॥ खेले क्रीडा नव नव नातें, जोजो कर्म नि

ढाल ॥ रा०॥२॥ एहवे कोइक मुनि तिहां आव्यो, गुणसागर तस नाम रे ॥ राजा ते मुनिवरने देखी, राणीने कहे ताम ॥ रा० ॥ ३ ॥ कहो ए मुनिने व होरावो, जे होय सुजतो आहार रे ॥ निसुणी राणीने मुनि उपर, उपनो क्रोध अपार ॥ रा० ॥ ४ ॥ विषयथकी अंतराय थयो ते, मनमां बहु दुःख लावे रे ॥ रीशें बलती कडवुं तुंबडुं, ते मुनिने वहोरावे ॥ रा० ॥ ५ ॥ मुनिने आहारथकी विष व्याप्युं, कालधर्म तिहां कीधो रे ॥ राजायें राणीने ततक्षण, देशनिकालो दीधो ॥ रा० ॥ ६ ॥ सातमे दिन मुनि ह त्यापापें, गलत कोढ थयो अंगें रे ॥ काल करीने छठी नरकें, उपनी पाप प्रसंगें ॥ रा० ॥ ७ ॥ नारकीने तिर्यंच तणा नव, नटकी काल अनंत रे ॥ दीप कहे हवे धर्मजोगनो, कहीशुं सरस वृत्तंत ॥ रा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ ते राणी मुनि पापथी ॥ केशरीया लाल ॥ फरती नवचक्र फेर रे ॥ केश रीया लाल ॥ तारा नयरमां उपनी ॥ के० ॥ वनमित्र शेठने घेर रे ॥ के० ॥ ॥ १ ॥ जूउ जूउ कर्म विटंबना ॥ के० ॥ धनवती कुखें उपनी ॥ के० ॥ दुर्गं धा तस नाम रे ॥ के० ॥ नगर वणिकना पुत्रने ॥ के० ॥ परणावी बहु मान रे ॥ के० ॥ २ ॥ जू० ॥ सुखशय्यानी उपरें ॥ के० ॥ आवी कंतनी पास रे ॥ के० ॥ बहु दुर्गंधता उछली ॥ के० ॥ स्वामी पाम्यो त्रास रे ॥ ॥ के० ॥ ३ ॥ जू० ॥ मूकी परदेशें गयो ॥ के० ॥ जुउ जुउ कर्म स्वनाव रे ॥ के० ॥ एक दिन कन्यानो पिता ॥ के० ॥ ज्ञानीने पूछे नाव रे ॥ के० ॥ ४ ॥ जू० ॥ ज्ञानीएं पूर्वनव कह्यो ॥ के० ॥ नांख्यो सहु अवदात रे ॥ के० ॥ फरी पूछे गुरु रायने ॥ के० ॥ केम होवे सुख शात रे ॥ के०॥ ॥ ५ ॥ जू० ॥ गुरु कहे रोहिणीतप करो ॥ के० ॥ सात वर्ष सात मास रे ॥ के० ॥ रोहिणी नक्षत्रने दिनें ॥ के० ॥ चोविहारो उपवास रे ॥ के० ॥ ६ ॥ जू० ॥ वासुपूज्य नगवंतनी ॥ के० ॥ पूजा करो शुन नाव रे ॥ के० ॥ एम ए तप आराधतां ॥ के० ॥ प्रगटे शुद्ध स्वनाव रे ॥ के० ॥ ७ ॥ जू० ॥ करजो तप पूरण थये ॥ के० ॥ उजमणुं नली नात रे ॥ के० ॥ तेथी एक नव आंतरे ॥ के० ॥ लेशो ज्योति महांत रे ॥ के० ॥ ८ ॥ जू० ॥ एम मुनि मुखथी सांनली ॥ के०॥ आराधी ते सार रे ॥ के० ॥ ए तारी राणी थई ॥ के० ॥ रोहिणी नामें नार रे ॥ के० ॥

॥ ए ॥ जू० ॥ इम निसुणी हरख्यां सहु ॥ के० ॥ रोहिणीने वली राय रे ॥ के०॥ दीप कहे मुनि कुंजने ॥ के०॥ प्रणमी थानक जाय रें ॥१०॥ जू०॥

॥ ढाल ७ठी ॥

॥ एक दिन वासुपूज्यजी ए, समोसख्या जिनराज ॥ नमो जिन राजने रे ॥ रायने रोहिणी हरखीआं ए, सीधां सघलां काज ॥ न० ॥ १ ॥ बहु परिवारशुं आवीयां ए, वंदे प्रजुना पाय ॥न०॥ प्रजुमुखथी वाणी सुणीए, आणंद अंग न माय ॥ न० ॥ २ ॥ रायने रोहिणी बेहु जणां ए, लीधो संजम खास ॥न०॥ धन्य धन्य संजमधर मुनि ए,सुर नर जेहना दास ॥न०॥ ॥ ३ ॥ तप तपी केवल लही ए, ताख्यां बहु नर नार ॥ न०॥ शिवपद अविचल पद लह्युं ए, पाम्या जवनो पार ॥ न० ॥ ४ ॥ एम जे रोहिणी तप करे ए, रोहिणीनी परें तेह ॥ न० ॥ मंगलमाला ते लहे ए, वली अजरामर गेह ॥ न० ॥ ५ ॥ धन्य वासुपूज्यना तीर्थने ए, धन्य धन्य रोहिणी नार ॥ न० ॥ ए तप जे जावें करे ए, पामे ते जय जय कार ॥ न० ॥ ६ ॥ संवत अढार ठगणशाठनो ए, उज्ज्वल जाद्रव मास ॥ न० ॥ दीपविजयें तस गाइयो ए, करी खंजात चोमास ॥ न० ॥ ७ ॥ कलश ॥ वासुपूज्य जगनाथ साहेब, तास तीर्थें ए थयां ॥ चार पुत्रने आठ पुत्रीथी, दंपती मुगतें गयां ॥ तपगछ विजयाणंद पटधर, विजय देवेंद्र सूरीसरु ॥ तास राज्यें तवन कीधुं, सकल संघ सोहंकरु ॥ सकल पंमितप्रवर जूषण, प्रेम रत्न गुरु ध्याइया ॥ कवि दीपविजयें पुण्य हेतें, रोहिणी गुण गाइया ॥ १ ॥

॥ अथ श्री विनयविजयजी कृत आदिजिनने विनति ॥

॥ पामी सुगुरु पसाय रे, शत्रुंजय धणी ॥ श्रीरिसहेसर वीनवुं ए ॥ १ ॥ त्रिजुवननायक देव रे, सेवक वीनति ॥ आदीश्वर अवधारीयें ए ॥ २ ॥ शरणें आव्यो स्वामी रे, हुं संसारमां ॥ विरुए वैरीयें नड्यो ए ॥ ३ ॥ तार तार मुज तात रे, वात किशी कहुं ॥ जव जव ए जावठ तणी ए ॥ ४ ॥ जन्म मरण जंजाल रे, बाल तरुणपणुं ॥ वली वली जरा दहे घणुं ए ॥ ५ ॥ केमे न आव्यो पार रे, सार हवे स्वामी ॥ श्यें न करो एक माहरी ए ॥ ६ ॥ ताख्या तुमें अनंत रे, संत सुगुण वली ॥ अपराधी पण उद्धख्या ए ॥ ७ ॥ तो एक दीनदयाल रे, बाल दयामणो ॥ हुं शा माटे वीसख्यो ए ॥ ८ ॥ जे गिरुआ गुणवंत रे, तारो तेहने ॥ ते मांहे अचरि

ज कीश्युं ए ॥ ए ॥ जे मुज सरिखो दीन रे, तेह्ने तारतां ॥ जग विस्तरशे यश घणो ए ॥ १० ॥ आपद पडियो आज रे, राज तुमारडे ॥ चरणे हुं आव्यो वही ए ॥ ११ ॥ मुज सरिखो कोइ दीन रे, तुज सरिखो प्रजु ॥ जोतां जग लाजे नहीं ए ॥ १२ ॥ तोये करुणासिंधु रे, बंधु जुवन त णा ॥ न घटे तुम उवेखवुं ए ॥ १३ ॥ तारणहारो कोइ रे, जो बीजो हुवे ॥ तो तुम्हने शाने कहुं ए ॥ १४ ॥ तुंहिज तारीश नेट रे, पहिला ने पढें ॥ तो एवडी गाढिम कीशी ए ॥ १५ ॥ आवी लाग्यो पाय रे, ते केम बोडशे ॥ मन मनाव्या विण हवे ए ॥ १६ ॥ सेवक करे पोकार रे, बाहिर रह्या जस ॥ तो साहिब शोजा कीसी ए ॥ १७ ॥ अतुलि बल अ रिहंत रे, जगने तारवा ॥ समरथ बो स्वामी तुमें ए ॥ १८ ॥ शुं आवे बे जोर रे, मुजने तारतां ॥ के धन बेसे बे किश्युं ए ॥ १९ ॥ केहेशो तुमें जिणंद रे, जक्ति नथी तेहवी ॥ तो ते जक्ति मुजने दीयो ए ॥ २० ॥ व ली केहेशो जगवंत रे, नहीं तुज योग्यता ॥ हमणां मुक्ति जावा तणी ए ॥ २१ ॥ योग्यता ते पण नाथ रे, तुमहीज आपशो ॥ तो ते मुजने दी जियें ए ॥ २२ ॥ वली कहेशो जगदीश रे, कर्म घणां ताहरे ॥ तो तेहज टालो परां ए ॥ २३ ॥ कर्म अमारां आज रे, जगपति वारवा ॥ वली कोण बीजो आवशे ए ॥ २४ ॥ वली जाणो अरिहंत रे, एह्ने वीनति ॥ करतां आवडती नथी ए ॥ २५ ॥ तो तेहीज माहाराज रे, मुजने शीख वो ॥ जेम ते विधिशुं वीनवुं ए ॥ २६ ॥ माय ताय विण कोण रे, प्रेमें शीखवे ॥ बालकने कहो बोलवुं ए ॥ २७ ॥ जो मुज जाणो देव रे, एह अपावन ॥ खरड्यो बे कलिकादवें ए ॥ २८ ॥ केम लेउं उत्संग रे, अंग जर्युं एहनुं ॥ विषय कषाय अशुचिशुं ए ॥ २९ ॥ तो मुज करो पवित्र रे, कहो कोण पुत्रने ॥ विण मावित्र पखालशे ए ॥ ३० ॥ कृपा करी मु ज देव रे, इहां लगें आणीयो ॥ नरक निगोदादिकथकी ए ॥ ३१ ॥ आ व्यो हवे हजूर रे, उजो थइ रह्यो ॥ सामुं श्ये जूउ नहीं ए ॥ ३२ ॥ आ डो मांमी आज रे, बेठो बारणें ॥ मावित्र तुमें मनावशो ए ॥ ३३ ॥ तुमें बो दयासमुद्र रे, तो मुजने देखी ॥ दया नथी श्ये आणता ए ॥ ३४ ॥ उवेखश्यो अरिहंत रे, जो आणी वेला ॥ तो मह्यारी शी परें थशे ए ॥३५॥ उजा बे अनेक रे, मोहादिक वैरी ॥ बल जुए बे माहरां ए ॥ ३६ ॥

तेहने वारो वेगें रे, देव दया करी ॥ वली वली शुं वीनवुं ए ॥ ३७ ॥ म
रुदेवी निजमाय रे, वेगें मोकली ॥ गज बेसारी मुक्तिमां ए ॥ ३८ ॥ नर
तेसर निज नंद रे, कीधो केवली ॥ आरीसा अवलोकतां ए ॥ ३९ ॥ अ
ठाणुं निज पुत्र रे, प्रतिबोध्या प्रेमें ॥ जुऊ करंता वारीया ॥ ए ॥ ४० ॥
बाहुबलने नेट रे, नाण केवल तमें ॥ सामी साह्मुं मोकल्युं ए ॥ ४१ ॥
इत्यादिक अवदात रे, सघला तुम तणा ॥ हुं जाणुं छुं मूलगा ए ॥ ४२ ॥
माहारी वेला आज रे, मौन करी बेठा ॥ उत्तर शें आपो नहीं ए ॥४३॥ वीत
राग अरिहंत रे,समता सागरु ॥ माहारां ताहारां शुं करो ए ॥४४॥ एक वार म
हाराज रे, मुजने स्वमुखें ॥ बोलावो सेवक कही ए ॥ ४५ ॥ एटले सिद्धां का
ज रे, सघलां माहरां ॥ मनना मनोरथ सवि फल्या ए ॥ ४६ ॥ खमजो मुज
अपराध रे, आसंगो करी ॥ असमंजस जे वीनव्युं ए ॥ ४७ ॥ अवसर पा
मी आज रे, जो नवि वीनवुं ॥ तो पछतावो मन रहे ए ॥ ४८ ॥ त्रिभुव
न तारणहार रे, पुण्यें माहरे ॥ आवी एकांतें मल्या ए ॥ ४९ ॥ बाल
क बोले बोल रे, जे अविगतपणे ॥ माय तायने ते रुचे ए ॥ ५० ॥ न
यणें निरख्यो नाथ रे, नाभि नरिंदनो ॥ नंदन नंदनवन जिस्यो ए ॥५१॥
मरुदेवी उरहंस रे,वंश इरकागनो ॥ सोहाकर शोहामणो ए ॥ ५२ ॥
माय ताय प्रभु मित्र रे, बंधव माहरो ॥ जीव जीवन तुं वालहो ए ॥५३॥
अवर न को आधार रे, एणें जग तुज विना ॥ त्राण शरण तुं मुज धणी
ए ॥ ५४ ॥ वलि वलि करुं प्रणाम रे, चरणे तुम तणे ॥ परमेश्वर सन्मुख
जुउ ए ॥ ५५ ॥ भव भव तुम पाय सेव रे, सेवकने देजो ॥ हुं मागुं छुं एट
लुं ए ॥ ५६ ॥ श्री किर्त्तिविजय उवझाय रे,सेवक एणि परें॥विनय विनय करी
वीनवे ए ॥५७॥ इति श्री आदि जिन विनतिः समाप्ता ॥ श्लोक संख्या ॥४८॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामीनो रास प्रारंभः ॥

॥ भाषा ॥ वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कय वासो ॥ पणमवि पभ
णिशुं सामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मण तणु वयण एकंत करवि, निसु
णो भो भवियां ॥ जिम निवसे तुम्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥
जंबूदीव सिरि भरह खित्त,खोणीतल मंमण ॥ मगधदेस सेणिय नरीसर, रिउ
दल बल खंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां जणगुणसज्जा॥ विप्प वसे
वसुभूइ तब, जसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंदभूइ, भूवलय

पसिद्धो ॥ चउदह विद्याविविह रूव, नारीरस विद्धो ॥ विनय विवेक वि चार सार, गुणगणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूपें रंजावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण, विपंकज जल पाडिय ॥ तेजें ताराचंद सूर, आकास नमाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेल्हिउ नि रधाडिय ॥ धीरमें मेरु गंनीर सिंधु, चंगमचयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरु वम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल नीत इब, गुण मेल्हा संचिय ॥ अहवा निश्चें पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिअ ॥ रंना पउमा गौरी गंगा, रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउ ॥ पंचसया गुणपात्र ग्रात्र. हींमे परवरिउ ॥ करे निरंत र यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण छल होशे चरम नाण, दंसण ह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु छंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह नरह वासंमि, खो णीतल मंम्हणो ॥ मगध देस सेणिय नरेसर, वरगुव्वर गाम तिहां ॥ विप्प वसे वसुनूइ सुंदर, तसु नज्जा पुहवी सयल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विद्यानिलउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ नाषा ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चउव्विह संघपइठा जाणी ॥ पावापुर सा मी संपत्तो, चउव्विह देवनिकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामति खीजें ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासण वइठो, तत खिण मोह दिगंतें पइठो ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देवडुंदुहि आकाशें वाजी, धर्म नरेसर आविउ गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंद जसु मागे सेवा ॥ चा मर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहि जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसनर नरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहे झलझलकं ता, गयण विमाणें रण रणकंता ॥ पेखवि इंदनूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समवसरण पोहता गहगहता ॥ तो अनिमानें गोयम जंपे, इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढ लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मूं आगल कोइ जाण नणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ ॥ वस्तु छंद ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न ॥ पावा पुरिसुरम

तेहने वारो वेगें रे, देव दया करी ॥ वली वली शुं वीनवुं ए ॥ ३७ ॥ मरुदेवी निजमाय रे, वेगें मोकली ॥ गज बेसारी मुक्तिमां ए ॥ ३८ ॥ जरतेसर निज नंद रे, कीधो केवली ॥ आरीसा अवलोकतां ए ॥ ३ए ॥ अठाणुं निज पुत्र रे, प्रतिबोध्या प्रेमें ॥ जुऊ करंता वारीया ॥ ए ॥ ४० ॥ बाहुबलने नेट रे, नाण केवल तमें ॥ सामी साहामुं मोकल्युं ए ॥ ४१ ॥ इत्यादिक अवदात रे, सघला तुम तणा ॥ हुं जाणुं बुं मूलगा ए ॥ ४२ ॥ माहारी वेला आज रे, मौन करी बेठा ॥ उत्तर शें आपो नहीं ए ॥४३॥ वीतराग अरिहंत रे,समता सागरु ॥ माहारां ताहारां शुं करो ए ॥४४॥ एक वार महाराज रे, मुजनें स्वमुखें ॥ बोलावो सेवक कही ए ॥ ४५ ॥ एटले सिद्धां काज रे, सघलां माहरां ॥ मनना मनोरथ सवि फल्या ए ॥ ४६ ॥ खमजो मुज अपराध रे, आसंगो करी ॥ असमंजस जे वीनव्युं ए ॥ ४७ ॥ अवसर पामी आज रे, जो नवि वीनवुं ॥ तो पबतावो मन रहे ए ॥ ४८ ॥ त्रिभुवन तारणहार रे, पुण्यें माहरे ॥ आवी एकांतें मल्या ए ॥ ४ए ॥ बालक बोले बोल रे, जे अविगतपणे ॥ माय तायने ते रुचे ए ॥ ५० ॥ नयणें निरख्यो नाथ रे, नाभि नरिंदनो ॥ नंदन नंदनवन जिस्यो ए ॥५१॥ मरुदेवी उरहंस रे,वंश इक्खागनो ॥ सोहाकर शोहामणो ए ॥ ५२ ॥ माय ताय प्रभु मित्र रे, बंधव माहरो ॥ जीव जीवन तुं वालहो ए ॥५३॥ अवर न को आधार रे, एणें जग तुज विना ॥ त्राण शरण तुं मुज धणी ए ॥ ५४ ॥ वलि वलि करुं प्रणाम रे, चरणे तुम तणे ॥ परमेश्वर सन्मुख जुउ ए ॥ ५५ ॥ जव जव तुम पाय सेव रे, सेवकने देजो ॥ हुं मागुं बुं एटलुं ए ॥ ५६ ॥ श्री कित्तिविजय उवज्झाय रे,सेवक एणि परें॥विनय विनय करी वीनवे ए ॥५७॥ इति श्री आदि दिन विनतिः समाप्ता ॥ श्लोक संख्या ॥४८॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामीनो रास प्रारंभः ॥

॥ भाषा ॥ वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कय वासो ॥ पणमवि पभणिशुं सामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मण तणु वयण एकंत करवि, निसुणो भो भवियां ॥ जिम निवसे तुम्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त,खोणीतल मंमण ॥ मगधदेस सेणिय नरीसर, रिउ दल बल खंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां जणगुणसज्जा॥ विप्प वसे वसुभूइ तब, जसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंदभूइ, भूवलय

पसिद्धो ॥ चउदह विद्याविविह रूव, नारीरस विद्धो ॥ विनय विवेक वि चार सार, गुणगणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूपें रंजावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण, विपंकज जल पाडिय ॥ तेजें ताराचंद सूर, आकास जमाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेल्हिउ नि रधाडिय ॥ धीरमें मेरु गंजीर सिंधु, चंगमचयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरु वम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल जीत इछ, गुण मेल्हा संचिय ॥ अहवा निश्चें पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिअ ॥ रंजा पउमा गौरी गंगा, रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउ ॥ पंचसया गुणपात्र छात्र, हींमे परवरिउ ॥ करे निरंत र यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण छल होशे चरम नाण, दंसण ह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु छंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह जरह वासंमि, खो णीतल मंमणो ॥ मगध देस सेणिय नरेसर, वरगुव्वर गाम तिहां ॥ विप्प वसे वसुजूइ सुंदर, तसु जज्जा पुहवी सयल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विद्यानिलउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ जाषा ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चउव्विह संघपइठा जाणी ॥ पावापुर सा मी संपत्तो, चउव्विह देवनिकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामति खीजें ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहासण वइठो, तत खिण मोह दिगंतें पइठो ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देवडुंडुहि आकाशें वाजी, धर्म नरेसर आविउ गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंद जसु मागे सेवा ॥ चा मर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहि जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसजर जरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहे जलजलकं ता, गयण विमाणें रण रणकंता ॥ पेखवि इंदजूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समवसरण पोहता गहगहता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढ लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मूं आगल कोइ जाण जणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ ॥ वस्तु छंद ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न ॥ पावा पुरिसुरम

ह्यि पत्तनाह संसार तारणं ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुरककारण ॥ जिणवर जग उद्धोय करे तेजें करि दिनकार ॥ सिंहा सण सामिय ठविउ हुउ सुजय जयकार ॥ १६ ॥ नाषा ॥ तो चढि उ घणमाण गजें, इंदनूइ नूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउ, क वण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन नूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंन तो ॥ दहदिसि देखे विबुधवहू, आवंती सुररंन तो ॥ १७ ॥ मणिम य तोरण दंम धजा, कोसीसें नव घाट तो ॥ वैर विवर्जित जंतुगण, प्राती हारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंडाणीराय तो ॥ चित्तें चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रनुपाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सम वीर जिण, पेखवी रूप विसाल तो ॥ एह असंनव संनव ए, साचो ए इंद जाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंदनूई नामेण तो ॥ श्रीमुख संसय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल्हि मद ठेली करे, नगतें नामे सीस तो ॥ पंचसयाशुं व्रत लिउ ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिनूइ आवेइं तो ॥ नाम लेइ आनाष करे, तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणि अनुक्रमें गणहररयण, थाप्या वीर इ ग्यार तो ॥ तो उपदेशें नुवन गुरु, संजमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवा सें पारणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संजम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ठंद ॥ इंदनूई इंदनूई चढिय बहुमा न ॥ हुंकारो करि संचरिउ समवसरण पुहतो तुरंतो ॥ इह संसा सा मि सवे. चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ .बोधबीज सज्झाय मने, गोयम नवह विरत्त ॥ दिरक लेइ सिरका सहिय, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ नाषा ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलिमां पुस्य नरो ॥ दीठ गोय म सामि, जो नियनयणें अमिय नरो ॥ सिरिगोयम गणहार, पंच सया मुनि परवरिय ॥ नूमिय करय विहार, नवियां जन पडिबोह करे ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा उपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूठे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजें दिरक, तिहां तिहां के वल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोयम दीजे दान इम ॥ गुरु उपर गुरुनत्ति, सामीय गोयम उपनिय ॥ इण ठल केवल नाण, राग ज राखे रंगनरें ॥ २४ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउवीस जिण ॥

आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सोइ मुनि ॥ इअ देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिउ ॥ तापस पन्नरस एण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तव सोसिय निय अंग, अम्ह शक्ति नवि उपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढिउ वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस धज वड सहिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर नरहेसर महिअ ॥ निय निय काय प्रमाण, चउ दिसि संठिअ जिणहबिंब ॥ पण मवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तीर्यक् जूंनक देव तिहां ॥ प्रति बोधे पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन नणी ॥ वलता गोयम सामी, सवि ता पस प्रतिबोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया सुन नाव, उज्जल नरिउ खीरमीसें ॥ साचा गुरु संजोग, कवल ते केवल रूप हुउ ॥ २९ ॥ पंचसया जिणनाह, समवसरण प्राकार त्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंतो घण मेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु बंद ॥ इणे अनुक्रमें इणे अनुक्रमें नाण संपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय हरिय डुरिय जिणनाह वंदइ ॥ जाणवि जग गुरु वयण तिह नाण अप्पाण निंदइ ॥ चरम जिणेसर इम नणइ गोयम म करिस खेउ ॥ बेह जइ आपण सही होशुं तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥ नाषा ॥ सामिउ ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउ ए नरहवासंमि, वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायक मल संघें सहिअ ॥ आविउ ए नयणाणंद, नयर पावापुरिसुर महिय ॥ ३२ ॥ पेखिउ ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देवि, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकास, पेखवि जाणिय जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद नेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि, आप कन्हे हुं टालिउ ए ॥ जाणंतो ए तिहु अणनाह, लोक विवहार न पालिउ ए ॥ अति नलुं ए कीधेलुं सामि, जाणिउं केवल मागशे ए ॥ चिंतविउं ए बालक जेम, अहवा केडें लागशे

ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, जगतें नोलो नोलविउ ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लालिउ ए ॥ इण समे ए गोयमचित्त, राग वैरागें वालिउ ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो कलट. रहेतो रागें साहिउ ए ॥ केवलु ए नाण उप्पन्न. गोयम सेहेजें उमाहिउ ए ॥ तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण. नवियण नव इम निस्तरे ए ॥ ॥ ३६ ॥ वस्तु बंद ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पंचास ॥ गिहिवासें संवसिय तीस वरिस संजम विनूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण बार वरिस तिहुयण नमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं ठविअ बाणवइ वरिसाउ ॥ सामी गोयम गुण निलो होशे शिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ नाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल बहके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें फलके, तिम गोयम सौनाग्य निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी नाखा, जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम नूमिपति नुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धें गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुरतरु सारे वंबिय काज, कामकुंन सवि वश हुउ ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहेलो पनणीजें, मायाबीज श्रवण निसुणीजें, श्रीमती शोना संनवे ए ॥ देवह धुरि अरिहंत नमीजें, विनयपहु उवज्झाय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश देशांतर कांइ नमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्रह ततखण सिझे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें,

किउं कवित उपगार करो ॥ आदेहिं मंगल एह पन्नणीजें, परव महोत्सव पहिलो लीजें, ऋध्धि वृध्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन्य माता जिणें उयरें धरिया, धन्य पिता जिण कुल अवतरिया, धन्य सह गुरु जिणें दिख्खिया ए ॥ विनयवंत विद्यानंमार, जस गुण कोइ न लप्ने पार, विद्यावंत गुरु वीनवे ए ॥ गौतम स्वामीनो रास नणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, ऋध्धि वृध्धि कल्याण करे ॥ ४६ ॥ इतिश्री गौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ अथ दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ प्रन्नु कंठें ठवि फूलनी माला ॥ ए देशी ॥

॥ रमती ऋमती अमुन साहेली, बेहु मली लीजीयें एक ताली रे ॥ सखि आज अनोपम दीवाली ॥ लील विलासें पूरण मासें, पोष दशम निशि रढीयाली रे ॥ स० ॥१॥ पशु पंखी वसीआं वनवासें, ते पण सुखी यां समकाली रे ॥ स० ॥ एणी रात्रें घेर घेर उत्सव होशे, सुखीयां जगत मां नर नारी रे ॥ स० ॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखा जोगें, जन्म्या प्रन्नु जी जयकारी रे ॥ स० ॥ साते नरकें थयां अजवालां, थावरने पण सुखकारी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ माता नमी आवे दिगकुमरी, अधोलोकनी वस नारी रे ॥ स० ॥ सूती घर ईशानें करती, जोजन एक अशुचि टाली रे ॥स०॥४॥ ऊर्ध्व लोकनी आठज कुमरी, वरसावे जल कुसुमाली रे ॥स०॥ पूरव रुचक आठ दर्पण धरती, दक्षिणनी अड कलशाली रे ॥स०॥५॥ अड पश्चिमनी पंखा धरती, उत्तर आठ चमर ढाली रे ॥ स०॥ विदिशीनी चउ दीपक धरती, रुचक द्वीपनी चउ बाली रे ॥ स० ॥६॥ केलतणां घर त्रणें करीने, मर्दन स्नान अलंकारी रे ॥ स० ॥ रक्षा पोटली बांधी बेहुने, मंदिर मेहेल्यां शणगारी रे ॥ स० ॥ ७ ॥ प्रन्नु मुख कमलें अमरी नमरी, रास रमंती लटकाली रे ॥ स० ॥ प्रन्नु माता तुं जगतनी माता, जन दीपकनी करनारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ माजी तुज नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपगारी रे ॥ स० ॥ छप्पन दिगकुमरी गुण गाती, श्री शुन्नवीर वचन शाली रे ॥ स० ॥ ए ॥

॥ अथ आमलकी क्रीडानुं स्तवन ॥

॥ आव्यो आषाढो मास, नाव्यो धूतारो रे ॥ ए देशी ॥

॥ माता त्रिशला नंदकुमार, जगतनो दीवो रे ॥ मारा प्राण तणो आधा

र, वीर घणुं जीवो रे ॥ ए आंकणी ॥ आमलकी क्रीडायें रमतां, हाखो सुर प्रभु पामी रे ॥ सुणजोने स्वामी आतमरामी, वात कहुं शिर नामी रे ॥ वीर घणुं जीवो रे ॥ १ ॥ मा० ॥ सौधर्मा सुरलोकें रेहेतां, अमो मिथ्यात नराणा रे ॥ नागदेवनी पूजा करतां, शिर न धरी प्रभु आणा रे ॥ वि० ॥ २ ॥ मा० ॥ एक दिन इंद्र सनामां बेठां, सोहमपति एम बोले रे ॥ धैरजबल त्रिभुवननुं नावे, त्रिशला बालक तोलें रे ॥ वी० ॥३॥ मा० ॥ साचुं साचुं सहु सुर बोल्या, पण में वात न मानी रे ॥ फणिधरने लघु बालक रूपें, रमत रमीयो ठानी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ मा० ॥ वर्द्धमान तुम धैरज मोटुं, बलमां पण नही काचुं रे ॥ गिरुआना गुण गिरुआ गावे, हवे में जाण्युं साचुं रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ मा० ॥ एकज मुष्टिप्रहारें मारुं, मिथ्यात नागुं जाय रे ॥ केवल प्रगटे मोहरायने, रेहेवानुं नही थाय रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ मा० ॥ आजथकी तुं साहेब मारो, हुं बुं सेवक ताहरो रे ॥ खिण एक स्वामी गुण न विसारुं, प्राणथकी तुं प्यारो रे ॥ वी० ॥ ॥ ७ ॥ मा० ॥ मोह हरावे समकित पावे, ते सुर सरग सधावे रे ॥ महावीर प्रभु नाम धरावे, इंद्रसना गुण गावे रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ मा० ॥ प्रभु मलपता निज घेर आवे, सरखा मित्र सोहावे रे ॥ श्री शुनवीरनुं मुखडुं देखी, माताजी सुख पावे रे ॥ वी० ॥ ए ॥ इति स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमिनाथनुं स्तवन ॥ आवो हरि कुंकुमने पगले ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो सखि सज्जन ना विसरे ॥ आठ नवंतर नेहनी वाही, नवमे केम विछडे ॥ सु० ॥ नेह विलुध्धा आ डुनीयामां, झंपापात करे ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ घर छंडी परदेशें फरतां, पूरण प्रेमें ठरे ॥ सु० ॥ जान सजी करी जादव आए, नयनसें नयन मले ॥सु०॥२॥ तोरण देख गये गिरनारे, चारित्र लेइ विचरे ॥ सु० ॥ डुःखण नरियां डुर्जन लोकां, दयिता दोष नरे ॥सु०॥३॥ माता शिवा सुत सांजल सज्जन, साचा एम ठरे ॥ सु० ॥ तोरण आवी मुज समजावी, संजम शान करे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राजुल रागविरागें रेहेतां, ग्यान वधाइ वरे ॥ सु० ॥ प्रीतम पासें संजम वासें, पातक दूर हरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सहसावनकी कुंज गलनमें, ज्ञानसें ध्यान धरे ॥ सु० ॥ केवल पामी शिवगति गामी, आ संसार तरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ नेम जिनेश्वर सुखसझायें, पोढीया शिवनगरें ॥ सु० ॥ श्री शुनवीर अखंम स

नेही, कीर्त्ति जग पसरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति श्री नेमिनाथस्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री नेमीनाथनुं स्तवन ॥

॥ सुण गोवालणी, गोरसडावाली रे उन्नी रेहेने ॥ ए देशी ॥

॥ शामलीआ लाल, तोरणथी रथ फेर्यो कारण कोहोने ॥ गुण गुरुवा लाल, मुजने मूकी चाल्या दरिसन द्योने ॥ ए आंकणी ॥ प्रनु हुं बुं नारी तमारी, तुमें ठो प्रीत मूकी अमारी, तुमें संजमस्त्री मनमां धारी ॥ शा० ॥ गु० ॥ १ तुम पशुआ उपर कृपा आणी, तुमें मारी वात को नव जाणी, तुमें विण परणुं नही को प्राणी ॥ शा० ॥ गु० ॥ २ ॥ आठ नवानी प्रीतडी, मूकीने चाल्या रोतडी, नही सज्जननी ए रीतडी ॥ शा० ॥ गु० ॥ ३ ॥ नवि कीधो हाथ उपर हाथे, तो कर मूकावुं हुं माथे, पण जावुं प्रनुजीनी साथें ॥ शा० ॥ गु० ॥ ४ ॥ एम कही प्रनु हाथे व्रत लीधो, पोतानो कारज सवि कीधो, पकड्यो मारग एणें शिव सीधो ॥ शा० ॥ गु० ॥ ५ ॥ चोपन दिन प्रनुजीएं तप करीउं, पण पोतें केवल वर धरीउं, पणसत बत्रीशशुं शिव वरीउं ॥ शा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ एम त्रण कल्याणक गिरनारें, पाम्या ते जिन उत्तम तारे, जो पद पद्म तस शिर धारे ॥ शा० ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलनुं स्तवन ॥ सेत्तुंगर तुं शीदनें आव्यो ॥ ए देशी ॥

॥ आवो गिरि सिद्धाचल जइयें, पाप हरी निरमल थइयें, कुमति कदाग्रहने तजीयें ॥ आवो गिरि सिद्धाचल जइयें ॥ १ ॥ तारण तीरथ दो कहीएं, थावर जंगमने लहिएं, लोकोत्तरने नित्य नजीयें ॥ प्रा० ॥ २ ॥ पद अणवाणे पन्न चरियें, पुण्य घणो लाजें नरीयें, सिद्ध अनंता कांकरीयें ॥ आ० ॥ ३ ॥ सोना रूपाने फूलें, मुक्ताफल अमुलक मूलें, पूजीने नाम नही नूले ॥ आ० ॥ ४ ॥ चडीयें गिरिवर अनुकरमें, अंतर ध्यान रसें रमीएं, मरुदेवा नंदनने नमीयें ॥ आ० ॥ ५ ॥ रायण हेठल जिन राया, पूर्वे नवाणुं इहां आव्या, लली लली तस प्रणमुं पाया ॥ आ० ॥ ६ ॥ सूरज कुंममां जलें नाहाशुं, पेरण क्षीरोदक आवुं, आंगी रची जिन गुण गाशुं ॥ आ० ॥ ७ ॥ तीरथ दरशनें फरीयें, जोग उपाधि दूरें करीयें, लाज अनंतो एणें गिरियें ॥ आ० ॥ ८ ॥ गाम बगोदरेथी आवे, शंघवी शंघवण मन नावे, जिन गुण माला कंठें गावे ॥ आ० ॥ए॥ उगणीश

बीजोत्तर वरषें, फागण पोसंनी ८७ दिवसें, जिनवर भेटी मन उल्लसे ॥ आ०॥१०॥ देवकीनंदन अनुसरीयें, उलखा जोले जल भरीयें, सिद्ध शिला काउस्सग्ग धरीयें ॥ आ० ॥११॥ भावें डुंगर चित्त लाया, सिद्ध वडनी शीतल छाया, जाणुं मावडली माया ॥ आ० ॥ १२॥ विमलाचल फरसे प्राणी, जीव भविक होवे नाणी, रिखभ कहे वरे शिवराणी ॥ आ० ॥ १३ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ श्रीसिद्धाचल मंमण स्वामीरे, जगजीवन अंतर जामी रे, एतो प्रणमुं हुं शिर नामी ॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करीयें रे ॥ करियें तो भवजल तरियें ॥ जात्री० ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेश्वरराया रे, जिहां पूर्व नवाणुं आया रे, प्रभु समवसर्या सुखदाया ॥ जात्री० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दीन वखाणुं रे, पांच कोडी पुंमरिक जाणुं रे, जे पाम्या पद निरवाणुं ॥ जात्री० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख सातें रे, बे कोडी साधु संघातें रे, एतो पहोता पद लोकांतें ॥ जात्री० ॥ ४ ॥ काति पूनमें करमने तोडी रे, जिहां सिद्धा मुनि दश कोडी रे, तेतो वंदो बे कर जोडी ॥ जात्री० ॥ ॥ ५ ॥ एम भरतेसरने पाटें रे, असंख्याता मुनिवाटें रे, पाम्या मुगति रमणी ए वाटें ॥ जात्री० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवार रे, थावच्चा सुत सुखकार रे, सयपंच सेलग अणगार ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ वली देवकीसुत सुजगीस रे, सिद्धा बहु जादव वंश रे, ते प्रणमो रे मन हंस ॥ जात्री० ॥ ८ ॥ पांचे पांमव एणें गिरि आव्या रे, सिद्धा नव नारद ऋषि राया रे, वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥ जात्री० ॥ ए ॥ ए तीरथ महिमावंत रे, जिहां सिद्धा साधु अनंत रे, इम भांखे श्रीभगवंत ॥ जात्री० ॥ १० ॥ उज्ज्वलगिरि समो नहीं कोय रे, तीरथ सघला मे जोय रे, जे फरस्यां पाप न होय ॥ जात्री० ॥११॥ एकल आहारी (१) सचित्त परिहारी(२) रे, पदचारीने (३) भूमि संथारी (४) रे, शुद्ध समकित(५)ने ब्रह्मचारी (६) ॥ जात्री०॥१२॥ एम छहरी जे नर पाले रे, बहुदान सुपात्रें आले रे, ते जनम मरण भय टाले ॥ जात्री० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य तेह नर नारी रे, भेटे विमलाचल एक तारी रे, जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जात्री० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद्रसूरि सुपसायें रे, जिनहर्ष होय उछायें रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ जात्री० ॥ १५ ॥

॥ अथ सीताजीनी सद्याय प्रारंभ ॥

॥ जनकसुता हुं नाम धरावुं, राम छे अंतरजामी ॥ पालव अमारो मेलने पापी, कुलने लागे छे खामी ॥ अडशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ० ॥ माहारो नाहलीउं डुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ अ० ॥ माहारुं मन मांहेथी अकुलाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठाम तजे जो, पत्थर पंकज ऊगे ॥ जो जलधि मर्यादा मूके, पांगलो अंबर पूगे ॥ अ०॥ २ ॥ तो पण तुं सांभलने रावण, निश्चय शील न खंडुं ॥ प्राण अमारो परलोक जाय, तो पण सत्य न छंडुं ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुण मणिधरना मणि लेवाने, हैडे घाले हाम ॥ सती संघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ अ०॥४॥ परदारानो संग करीने, आखो कोण उग रियो ॥ छंडुं तो तुं जोय आलोची, सही तुज दाहाडो फरियो ॥ अ० ॥ ॥ ५ ॥ जनकसुता हुं जग सहु जाणे, भामंडल छे भाइ ॥ दशरथ नंदन शिर छे स्वामी, लखमण करशे लडाइ ॥ अ० ॥ ६ ॥ हुं धणीयाती पीउ गुणराती, हाथ छे महारे गाती ॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलुं, कां कुलें वाये छे काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन कहे धन्य ए अबला, सीता जेहनुं नाम ॥ सतीयांमांहे शिरोमणि कहीयें, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥अ०॥८॥

॥ अथ आयंबिल तपमां आहार लेवाना विधिनो स्वाध्याय ॥
प्रारंभः ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ समरी श्रुतदेवी शारदा, सरस वचन वर आपो सदा ॥ आंबिल तपनो महिमा घणो, भविजन भावथकी ते सुणो ॥ १ ॥ विगय सकलनो जिहां परिहार, अशनमांहे पण भेद विचार ॥ विदल सर्व तिल तूअर विना, अलसी कोद्रव कांगनी मना ॥ २ ॥ खडधान्य पूंहक डुकट फल सर्व, व र्जीजें आंबिलने पर्व ॥ उसामण परें जो जल भले, तो आंबिल अंबिल रस टले ॥ ३ ॥ बिडलवण शूंठ मिरचने सुआ, मेथी संचल रामठ कह्या ॥ अजमादिक भेला रंधाय, तो आंबिलमां लेवा थाय ॥ ४ ॥ जीरुं भले ते जे वडी कही, ते सूजे पण जीरुं नही ॥ गोमूत्र विना अछे अणाहार, ते सवि लेवानो व्यवहार ॥ ५ ॥ सात जाति जे तंडुल तणी, ते सूजती आंबि लमां भणी ॥ शेकेल धान्य अपक्की दाल, मांडा खाखर लेवा टाल ॥ ६ ॥ हलदर लविंग पिंपर पींपली, हरडे सैंधव वेशण वली ॥ खादिम स्वादिम

जे कहेवाय, ते आंबिलमां नवि लेवाय ॥ ७ ॥ उत्कृष्ट विधें उष्णजल नीर, जघन्य विधें कांजीनुं नीर ॥ एम निर्दूषण आंबिल करे, मुख धोवण दातण नवि करे ॥ ८ ॥ जे निर्दूषण लिये आहार, उदननो तेने व्यवहार ॥ आटो लिगट पाणी विनुं, ते पण आंबिलमां सूजतुं ॥ ए ॥ अशठ गीतारथ अण मत्सरी, जे जे विधि बोले ते खरी ॥ लाभालाभ विचारे जेह, विधि गीतारथ कहियें तेह ॥१०॥ आंबिल तप उत्कृष्टुं कह्युं, विघ्न विदारण कारण लह्युं ॥ वाचक कीर्त्तिविजय सुपसाय, भांखे विनय विजय उवझाय ॥ ११ ॥ इति आंबिल तपनी स्वाध्याय ॥

॥ अथ चेतन शिखामणनी सझाय ॥

॥ चेतन अब कछु चेतीयें, ज्ञान नयन उघाडी ॥ समता सहजपणुं भजो, तजो ममता नारी ॥ चे० ॥ १ ॥ या दुनीयां हे बाउरी, जेसी बाजीगर बाजी ॥ साथ कीसीके नां चले, ज्युं कुलटा नारी ॥ चे० ॥ २ ॥ माया तरुछाया परें, न रहे थिरकारी ॥ जानत हे दिलमें जनी, पण करत बिगारी ॥ चे० ॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोणशुं यारी ॥ पलटे एकण पलकमें, ज्युं घन अंधीयारी ॥ चे० ॥ ४॥ परमातम अविचल भजो, चिदानंद आकारी ॥ नय कहे नियत सदा करो, सब जन सुखकारी ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्मबोधनी सझाय ॥

॥ हो सुण आतमा मत,पड मोह पंजर मांहे॥माया जाल रे॥ धन राज्य जोबन रूप रामा, सुत सुता घरबार रे ॥ हुकम होदा हाथी घोडा, कारिमो परिवार ॥ माया जाल रे ॥ हो० ॥ १ ॥ अतुलबल हरि चक्री रामा, तुं जो ऊर्जित मदमत्त रे ॥ क्रूर जमबल निकट आवे, गलित जावे सत्त ॥ माया० ॥ हो० ॥ २ ॥ पुहवीने जे छत्र परें करे, मेरुनो करे दंम रे ॥ ते पण गया हाथ घसता, मूकी सर्व अखंम ॥ मा० ॥ हो० ॥ ३ ॥ जे तखत बेसी हुकम करता, पेहेरी नवला वेश रे ॥ पाघ सेहेरा धरत टेढा, मरी गया जमदेश ॥ मा० ॥ हो० ॥ ४ ॥ मुख तंबोल ने अधर राता, करत नव नवा खेल रे ॥ तेह नर बल पुण्य घाठे, करत परघर टेल ॥ मा० ॥ हो० ॥ ५ ॥ भज सदा भगवंत चेतन, सेव गुरुपदपद्म रे ॥ रूप कहे कर धर्मकरणी, पामे शाश्वत सद्म ॥ मा० ॥ हो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ सांजल सयणानी सञ्चाय ॥

॥ सांजल सयणा साची सुणावुं, पूरव पुण्यें तुं पाम्यो रे जाइ ॥ नरक निगोदमां जमतां नरजव, तें निःफल केम वाम्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे जाइ ॥ मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दज घरमां बांध्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कूहाडे कापी, धंतुरो घेर धारे रे जाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, काग उडामण मारे रे जाइ ॥ सां० ॥ ३॥ एम जाणी जावा नवि दीजें, नर नारी नर जवनें रे जाइ ॥ उलखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मननें रे जाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विजाव परजावमां जजीयें, रमण स्वजावमां करीयें रे जाइ ॥ उत्तमपदपद्मने अवलंबी, जवियण जव जल तरीयें रे जाइ ॥ सां० ॥ ५ ॥ इति आत्महित सञ्चाय ॥

॥ अथ जोबन अस्थिरनी सञ्चाय ॥ राग प्रजाती ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घडी घडी घडीयालां वाजे, तोही न जागे तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे ॥ आवी अवधें उशंके नहीं, लखपतिने लेती रे ॥ जो०॥ २ ॥ मालें बेठो मोज करे छे, खांतें जोवे खेती रे ॥ जमरो न मरो ताणी लेशे,गोफण गोला सेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजानें शरणें जाउं, जोरालो को न जेथी रे ॥ डुनीयामां दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दंत पड्या ने मोसो थयो, काज सर्युं नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें वातो केती रे ॥ जो० ॥५॥

॥ अथ निंदावारक सञ्चाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणें अवगुणें सहु जर्या रे, केहनां नलीयां चुए केहेनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहु

को तणो रे, जेह्मां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ धोबीडानी सज्झाय ॥

॥ धोबीडा तुं धोजे मननुं धोतीयुं रे, रखे राखतो मेल लगार रे ॥ एणे रे मेलें जग मेलो कस्यो रे, विण धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥ १ ॥ जिनशासन सरोवर शोहामणुं रे, समकित तणी रूडी पाल रे ॥ दानादिक चार बारणां रे, मांही नव तत्त्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥ २ ॥ तिहां फीले मुनिवर हंसला रे, पीये छे तप जप नीर रे ॥ शम दम आदें जे शील रे, तिहां खाले आपणुं चीर रे ॥ धो० ॥ ३ ॥ तपवजे तप तडके करी रे, जालवजे नव तत्त्व वाड रे ॥ छांटा उमाडे पाप अढारना रे, एम उजलुं होशे ततकाल रे ॥ धो० ॥ ४ ॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे, रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चें पवित्रपणुं राखजे रे, पछें आपणी नीमी संजाल रे ॥ धो०॥५॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, चल मेलीने संकेल रे ॥ समय सुंदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृतवेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥

॥ अथ ढंढण रुषिजिनी सज्झाय ॥

॥ ढंढण रुषिजीने वंदणा ॥ हुं वारी लाल ॥ उत्कृष्टो अणगार रे॥ हुं वारी लाल ॥ अभिग्रह लीधो आकरो ॥ हुं वारी०॥ लब्धें लेशुं आहार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ ढं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥ हुं०॥ न मले शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ न लीए मूल असूझतो ॥ हुं० ॥ पींजर हूवो गात रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एह्में ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखीउ ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेम जिणंद रे ॥हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन्य जादव कुल चंद रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥४॥ गलीआरें मुनिवर मल्या ॥ हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखीने ॥ हुं० ॥ आव्यो जाव विशेष रे हुं० ॥ ढं० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोदक छे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ रुषिजी लेइ आवीया ॥ हुं० ॥ प्रजुजी पास विशुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ॥ ६ ॥ मुजलब्धें मोदक मिल्या ॥ हुं० ॥ पूछे छे कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ लब्धि नही वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्ध निहाल रे ॥ हुं० ॥

॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नही ॥ ढुं० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ ढुं० ॥ ईंट निंजाडे जाइने ॥ ढुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ ढुं० ॥ ढं० ॥ ८ ॥ आवी सूधी जावना ॥ ढुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ ढुं० ॥ ढंढण रुषि मुगतें गया ॥ ढुं० ॥ कहे जिनहर्ष सुजाण रे ॥ ढुं० ॥ ढं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मुहपत्तीना पच्चाश बोलनी सप्ताय ॥

॥ ढाल ॥ सिरि जंबू रे, विनयजक्ति शिर नामिने ॥ करजोडी रे, पूछे सोहम स्वामीने ॥ जगवंता रे, कहो शिवकांता केम मले ॥ कहे सोहम रे, मिथ्या च्रम दूरें टले ॥ त्रुटक॥ दूरें टले विष गरल ईहा, उन्नय मारग अनुसरी ॥ एक ज्ञान दूजी करत क्रिया, अजेदारोपण करी ॥ जिम पंगु दर्शित चरण कर्षित, अंध बिहुं निज पुर गया ॥ तिम सत्त्व सजतां तत्त्व जजतां, जविक केइ सुखिया थया ॥१ ॥ ढाल ॥ वैकल्यज्युं रे, कष्ट ने करवुं सोहिलुं ॥ पण जंबू रे, जाण पणुं जग दोहिलुं ॥ तेणें जाणी रे, आवश्यक किरिया करो ॥ उपगरणे रे, रजहरणो मुहपत्ती धरो ॥ त्रुटक ॥ मुहपत्ती श्वेतें मानोपेतें; शोल निज अंगुल जरी ॥ दोय हाथ काली द्दग निहाली, दृष्टि पडिलेहण करी॥ त्यां सूत्र अर्थ सुतत्त्व करीने, सद्दहुं एम जावियें ॥ नचा वञ्चा रूप तिग तिग, पखोडा षट लावियें ॥ २ ॥ ढाल ॥ समकित मोहनी रे, मिश्र मिथ्यात्वने परिहरुं ॥ काम राग रे, स्नेह दृष्टि राग संहरुं ॥ ए साते रे, बोल कह्या हवे आगले ॥ अंगुलि वच्चें रे, त्रण वधूटक कर तलें ॥ त्रुटक ॥ करतलें वामे अंजलि धरि, अखोडा नव कीजियें ॥ प्रमार्जन नव त्यमज करियें, तिग तिगंतर लीजियें ॥ सुदेव सुगुरु सुधर्म आदरुं, प्रतिपक्खी परिहरुं ॥ वलि ज्ञान दर्शन चरण आदरुं, विराधक त्रिक अपहरुं ॥ ३ ॥ ॥ ढाल ॥ मनोगुप्ति रे, वचन कायगुप्ति जजुं ॥ मनोदंम रे, वचन काय दंमने तजुं ॥ पचवीश रे, बोल ए मुहपत्तीना लह्या ॥ हवे अंगना रे, परिहरुं एम सघला कह्या ॥ त्रुटक ॥ कह्या वधूटक करि परस्पर, वाम हाथें त्रिक करो ॥ हास्य रतिने अरति डंमी, इतर कर त्रिक अनुसरो ॥ जय शोक डुगंछा तजीने, पयाहिणो आचरो ॥ कृष्ण लेश्या नील कापोत, ललाटें त्रिक परिहरो ॥ ४ ॥ ढाल ॥ रस गारव रे, रुद्धि शाता गारवा ॥ मुख हैडे रे, त्रण त्रण एम धारवा ॥ माया शल्य रे, नियाण मिथ्यात्व टालियें ॥ वाम खंधें रे, क्रोध मान दोय गालियें ॥ त्रुटक ॥ गालीयें माया लोज द

हिण, खंध ऊर्ध्व अधो मली ॥ त्रिक वाम पादें पुढवीने अप, वली तेउनी रक्षा करी ॥ जमणे पगे अण वाउ वणसइ, त्रसकायनी रक्षा करुं ॥ पंचाश बोलें पडिलेहण, करत ज्ञानी नव हरुं ॥ ५ ॥ ढाल ॥ एह मांहेथी रे, चालीश बोल ते नारीने ॥ शीश हृदयना रे, खंध बोल दश वारीने ॥ इणविधिश्युं रे, पडिलेहणथी शिव लह्यो ॥ अवधि करी रे, 'उकायनो विराधक कह्यो ॥ त्रुटक ॥ कह्यो किंचित् आवश्यकथी, तथा प्रवचन सारथी ॥ नावना चेतन पावना कही, गुरु वचन अनुसारथी ॥ शिव लहे जंबू रहे जो शुन्न, वीरविजयनी वाणीएं ॥ मन मांकडुं वनवास रमतुं, वश करी करी घर आणिएं ॥ ६ ॥ इति सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ काया उपर सज्झाय ॥

॥ काया रे वाडी कारमी, सीचंतां रे शूके ॥ उंठ कोडि रोमावली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ १ ॥ काया माया कारमी, जोवंतां जाशे ॥ मारग लेजो मोक्षनो, जीवडो सुख पाशे ॥ का० ॥ २ ॥ अरिहंत आंबो मोरीयो, सामायिक थाणे ॥ मंत्र नवकार संनारजो, समकित शुद्ध गणे ॥ का० ॥ ॥ ३ ॥ वाडी करो विरतां तणी, सवि लोन्न निवारो ॥ शील संयम दोनुं एकठा, नली पेरें पालो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच पुरुष देशावरी, बेठा इण माली ॥ फल चूंटीने चोरीयां, न करी रखवाली ॥ का० ॥ ५ ॥ इण वाडी एक शूडलो, सुख पिंजर बेठो ॥ बहुत जतन करी राखीउ, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥ ६ ॥ कां नोलपणे नव हारियो, मत मोडी संनाली ॥ रत्न चिंतामणि सारिखी, कांइ गांठ न वाली ॥ का० ॥ ७ ॥ रत्न तिलक सेवक नणे, सुणजो वनमाली ॥ वाड नली परें पालजो, करजो ढंग वाली ॥ का० ॥ ८ ॥

॥ अथ वणझारानी सज्झाय ॥

॥ नरनव नयर सोहामणुं ॥ वणझारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्तावन संवर तणी ॥ व० ॥ पोठी नरजे उदार ॥ अ० ॥ १ ॥ शुन्न परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जावा नणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥ २ ॥ क्रोध दावानल उलवे ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उलंघजे हलवें करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंशजाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाडी मनोरथ नट

तणी ॥ व०॥ पूरणनुं नही काम ॥ अ०॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥व०॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ० ॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजे रे स्थान ॥अ०॥ ५ ॥ एम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोंचजे शिव पुर वास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे भावना ॥ व० ॥ पोतें भर्या गुण राश ॥ अ० ॥ ६ ॥ खायक भावें ते थशे ॥ व० ॥ लाभ होशे ते अपार ॥अ०॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारंवार ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सोदागरनी सच्चाय ॥

॥ लावो लावोने राज, मोंघा मुलनां मोती ॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर बे, दिलकी बात हमेरी ॥ तें सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोसम आये माल सवाया, रतन पुरीमां गया ॥ सु० ॥ १ ॥ तिनुं दलालकुं हर समझाया, जिनसें बहोत न फाया ॥ पांचुं दीवानुं पाकं जडाया, एककुं चोकी बिठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देखकर माल विहरणां, चुआ कटे न युं धरनां ॥ दोनुं दगाबाजी दूर करनां, दीपकी ज्योतें फिरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ उरदिन वली मेहेलमें रहनां, बंदरकुं न हलानां ॥ दश सहेरसें दोस्तिहिं करना, उनसें चित्त मिलानां ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ जनहर तजनां जिनवर भजनां, सजना जिनकुं दलाइ ॥ नवसर हार गलेमें रखनां, जखनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुगट चमर ढोलाइ, अम घर रंग वधाइ ॥ श्रीशुभवीर विजय घर जाइ, होत सताबी सगाइ ॥ सु० ॥ ६ ॥

॥ अथ आपस्वभावनी सच्चाय ॥

॥ आप स्वभावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहेनां ॥ जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नही केरा कोइ नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पास, अवर सबे अनेरा ॥ आ०॥ २ ॥ वपु विनाशी तूं अविनाशी, अब हे इनकुं विलासी ॥ वपु संघ जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूरी करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ कबहींक काजी कबहींक पाजी कबहिंक हुआ अपभ्राजी ॥ कब

ठींक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुजलकी बाजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥७॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री शोल सतीयोनी सज्झाय ॥

॥ शोल सतीनां लीजें नाम, जेथी मन वंछित शुज काम ॥ नक्ति जाव अति आणी घणो, जाव धरीने जवियण सुणो ॥ १ ॥ ब्राह्मी चंदन बाला नाम, राजिमती झैपदी अनिराम ॥ कौशल्या ने मृगावती, सुलसा सीता ए महासती ॥ २ ॥ सती सुनद्रा सोहामणी, पोल उघाडी चंपा तणी ॥ शिवा नाम जपो जगवती, जगीश आपे कुंती सती ॥ ३ ॥ शीलवती शीलें शोजती, नजो जावें ए निर्मल मती ॥ दमयंती ने चूला सती, प्रजावती ने पद्मावती ॥ ४ ॥ शोल सतीनां नाम उदार, जणतां गणतां शिव सुखकार ॥ शाकिनी डाकिनी व्यंतर जेह, सति नामें न पराजवे तेह ॥५॥ आधि व्याधि सवि जाये रोग, मन गमता सवि पामे जोग ॥ संकट विकट जाए सवि दूर, तिमिर समूह ज्यम उगे सूर॥६॥राज ऋद्धि घरें होए बहु, राय राणा ते माने सहु॥ वाचक धर्मविजय गुरुराय, रत्नविजय जावें गुण गाय॥७॥

॥ अथ आत्मशिक्षा सद्याय ॥ राग रामग्री ॥

॥ आतमरामें रे मुनि रमे, चित्तविचारीने जोय रे ॥ ताहारुं दीसे नवि कोय रे, सहु स्वारथी मल्युं जोय रे, जन्म मरण करे लोय रे, पूठें सब मली रोय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि कारमुं, कूडो कुटुंब परिवार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे,. धर्म विण नही कोइ आधार रे, जिणें पामे जवपार रे ॥ आ० ॥ २॥ अनंत कलेवर मूकीयां, तें कीयां सगपण अनंत रे ॥ जव उद्वेगें रे तुं जम्यो, तोही न आव्यो तुज अंत रे॥ चेतो हृदयमां संत रे॥ आ० ॥ ३ ॥ जोग अनंता तें जोगव्या, देव मणुअ गतिमांहे रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे जीवडो, हजी तुज वांछा छे त्यांहि रे, आण संतोष चित्तमांहि रे ॥ आ० ॥ ४॥ ध्यान करो रे आतम तणुं परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबंध तुज को नही, शुद्ध निश्चय इम धारी रे, इणविध निज चित्त ठारी रे, मणिचंद्र आतम तारी रे॥ आ० ॥ ५॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनी सद्याय ॥

॥ श्रीसीमंधर साहेब आगें ॥ ए देशी ॥ अरिहंत पहेले थानक गणी

यें, बीजे पद सिद्धाणं ॥ त्रीजे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थेराणं रे ॥ भविया ॥ वीश थानक तप कीजें ॥ ठली वीश करीजें रे ॥ भ० ॥ गणणुं एह गणीजे रे ॥ भ० ॥ जिम जिनपद पामीजे रे ॥ भ० ॥ नर भव लाहो लीजे रे ॥ भ० ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उवजाय ठठे सव्वसाहूणं, सातमे आठमे नाण ॥ नवमे दंसण दसमे विणयस्स, चारित्र अगियारमे जाण रे ॥ भ० ॥ वी० ॥ २ ॥ बारमे बंभवयधारीणं, तेरस मे किरियाणं ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमें नमो जिणाणं रे ॥ भ० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीयें, अढारसमे नाणस्स ॥ उगणीशमे नमो सुयस्स संभारो, वीशमे नमो तिब्वस्स रे ॥ भ० ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देववंदन, गणणुं दोय हजार ॥ संघ विनय बुध शिष्य सुदर्शन, जंपे एह विचार रे ॥ भ० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयलविषे शिखामणनी सज्झाय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, बारी ठे डुर्गति तणी ॥ ठांम संगत रे मूरख तुं परस्त्री तणी ॥ जीव भोला रे, फोला तेहशुं म म करे ॥ शीख मानी रे, ठानी वात तुं परिहरे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जो वात करीश परनारी सार्थे, लोक सहु हेरे अठे ॥ राय रांक थइने रव्या रानें, सुखें नही बेसे पठे ॥ ए मदनमाती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलुं तो वलि सुख देखाडे, पठे पठाडे भामिनी ॥ २ ॥ ढाल ॥ कर पगना रे, नयण वयण चाला करे ॥ बोलावी रे, नरने लेइ धाइ परे ॥ भोलावी रे, हाव भाव देखाडशे ॥ पगें लागी रे, मरकलडे मन पाडशे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ ए पास पाडे धन गमाडे, मान खंभे लीलठी॥ बोलंती रूडी चित्त कूडी, कूड कपटनी कोथली ॥ ए नर अमूलक व्यसन पडिउ, पठे न पोसाये पायको ॥ दीवान दंभे मान खंभे, मार सहे पठे रायको ॥ ४ ॥ ढाल ॥ ठांमी लेशे रे, वेश्याना लंपट नरा ॥ सहु सधवा रे, विधवा दासी दूरे करा ॥ जा नाशी रे, रूप देखी जीव एह तणुं ॥ भजो रही रे, एह साहामुं म म जो घणुं ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ घणुं म जोइश एह सामुं, कुलस्त्री दीठे नवि गमे ॥ जिम शुनी पूठें श्वान हींमे, तिम परनारी पूठें कां भमे ॥ जिम बिलाडो दूध देखे, मोंले मांग न देख ए ॥ परनार पेख्यो पुरुष पापी, किस्यो भय न लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फूल वेणी रे, शिर सिंदूर सेंथो भस्यो ॥ ते दे

खी रे, फट मूरख मन कां कह्यो ॥ देखी टीलां रे, ढीलां इंद्रिय करी गह गह्यो ॥ शिर राखडी रे, आंख देइ तुं कां रह्यो ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ कां रह्यो मूरख आंख देइ, शणगार नार इणें धर्या ॥ ए जली जीहा, आखें पी हा, कान कूपा मल नर्या ॥ नारी अग्नि पुरुष माखण, बोल बोलतां विगरे ॥ स्त्री देहमां शुं सार दीठो, मूढ मद्दिश्रां कां करे ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इंद्रिय वाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिउ ॥ माने नरगह रे, सरग करी विष व्यापीउ ॥ कां नूलो रे, शणगार देखी एहनां ॥ जाणो प्राणी रे, ए छे डुःखनी अंगना ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ अंगना तुं छोडी छोकरे, जश कीर्ति सघ ले लहे ॥ कुशीलनुं जो नाम लिए को, परलोक डुर्गति डुःख सहे ॥ विजयनद बोले नवि मोले, शीयलथकी जे नरवरा ॥ तस पायें ला गुं सेवा मागुं, जे जगमांहे जयकरा ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिननी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तुमारी, तोरा चरणकमलकी में जाउं बलि हारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजिके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनम चंदा ॥ जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष्य सोवनमय काया, मृगलंछन प्रनुचरण सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ती प्रनु पांचमा सोहे, सोलमा जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ४ ॥ मंगल आरती तोरी कीजें, जन्म जन्मनो लाहो लीजें ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति शांतिजिन आरती ॥

॥ अथ श्री आदिजिन आरती ॥

॥ अपछरा करती आरति जिन आगें ॥ हांरे जिन आगें रे जिन आगें, हांरे एतो अविचल सुखडां मागे ॥ हांरे नानी नंदन पास॥अपछरा करती आरती जिन आगें ॥ १ ॥ ता थेइ नाटक नाचती पाय ठमके ॥ हांरे दोय चरणे झांझर झमके ॥ हांरे सोवन घूघरी घमके ॥ हांरे लेती फूदडी बाल ॥ ॥अ०॥२॥ताल मृदंगने वांशली डफ वेणा ॥ हांरे रूडा गावंती स्वर झीणा॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणा ॥ हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवा मातने प्रनु जाया ॥ हांरे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हांरे में तो पूरव पुण्यें पाया ॥ हांरे देख्यो तोरो देदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजी वन परमेश्वर प्रनु प्यारो ॥ हांरे प्रनु सेवक हुं छुं तारो ॥ हांरे नवो न

वनां डुःखडां वारो ॥ हांरे तुमें दीन दयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो ॥ हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखीउं करजो ॥ हांरे जाणी पोतानो बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ जिन नव अंग पूजानां दोहा लिख्यंते ॥

॥ जल नरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥ रुषन चरण अंगूठडो, दायक नवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बलें काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरश्या वरशी दान ॥ करकांमे प्रनु पूजना, पूजो नवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयुं दोय अंसथी, देखी वीर्य अनंत ॥ नुजाबलें नवजल तर्यां, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ सिद्ध शिला गुण उजली, लोकांते नगवंत ॥ वसिया तेणें कारण नवि, शिरशीखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकर पद पुण्यथी, तिहुअण जन सेवंत ॥ त्रिनुवन तिलक समा प्रनु, नाल तिलक जयवंत ॥ ६ ॥ शोल पहोर प्रनु देशना, कंठविवर वर्त्तुल ॥ मधुरध्वनि सुर नर सुणे, तेणें गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम बलें, बाल्या राग ने रोष ॥ हीम दहे वन खंमने, हृदय तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विशराम ॥ नानि कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वनां, तेणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागथी, कहे शुन वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्री नव अंग पूजानां दोहा ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथनी आरती ॥

॥ आरति कीजें पास कुंवरकी, जन्म मरण नय हर जिनवरकी ॥ नयरी वणारसी जन्म कहावे, वामा मात प्रनु हुलरावे ॥ आ० ॥ १ ॥ यौवन वन फल नोगि जणावे, नारी प्रनावती सती परणावे ॥ काय निरोग नोग विलसावे, पुरिसादाणी बिरुद धरावे ॥ आ० ॥ २ ॥ ज्ञान विलोकी कमठ हरावे, गहन दहनथी फणी निकसावे ॥ सेवक मुख नवकार सुणावे, धरणराय पदवी निपजावे ॥ आ० ॥ ३ ॥ क्रोधी कमठ हठ तप लय लावे, जिन दर्शनसें सुरगति पावे ॥ नोग संयोग वियोग बनावे, संयम श्री आतम परणावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान लेहरियां काउस्सग्ग नावे, स्वामिकूं वड लय तव गावे ॥ मेघमालि जलधर वरसावे, जब नासा नर नर जल लावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तव धरणेंद्रासन कंपावे, पद्मावति

सार्थे त्यां आवे ॥ नाथ उरध सिर फणिकुं धरावे, जई अपराधी देव मरावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ सांई शरण लहि समकित पावे, फणिपति नाटक विधि विरचावे ॥ प्रभु चरणे नमि गेह सधावे, जगदीश्वर घनघाति हरावे ॥ आ०॥ ॥ ७ ॥ साकारें केवल झुग पावे, धर्म कही जिननाम खपावे ॥ भूतल विचरी मोक्ष सिधावे, अगुरु लघु गुण प्रभु निपजावे ॥ आ० ॥ ८ ॥ आरति गतकी आरति गावे, श्रोता वक्ता रति उतरावे ॥ मनमोहन प्रभु पास कहावे, श्रीशुभवीर ते शीश नमावे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ चारो मंगल चार, आज महारे चारो मंगल चार ॥ देख्यो दरस स रस जिनजीको, शोभा सुंदर सार ॥ आज० ॥ १ ॥ छिनुं छिनुं जन मन मोहन अरचो, घसी केसर घनसार ॥ आ० ॥ २ ॥ विविध जातिके पुष्प मंगावो, सफल करो अवतार ॥ आ०॥ ३ ॥ धूप उखेवोने करो आरति, मुख बोलो जयकार ॥ आ० ॥ ४ ॥ समवसरण आदीसर पूजो, चोमुख प्रतिमा चार ॥आ०॥५॥ हैये धरी भाव भावना भावो, जिम पामो भवपार ॥ आ०॥ ६ ॥ सकलसंघ सेवक जिनजीको, आनंदघन उपगार ॥ आ०॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीपांच कारणनुं स्तवन ॥

॥ दोहा.॥ सिद्धारथसुत वंदीएं, जगदीपक जिनराज ॥ वस्तुतत्व सवि जाणीएं, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकलवस्तु विख्यात ॥ सप्तभंगरचना विना, बंध न बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे गम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३॥ अंध पुरुषें एह गज, ग्रही अवयव एकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकलनयें करी, जुगतियोग शुद्ध बोध ॥ धन्य जिन शासन जगजयो, जिहां नही किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग आशावरी ॥

॥ श्रीजिनशासन जगजयकारी, स्याद्वादशुद्धरूप रे ॥ नयएकांत मिथ्यात निवारण, अकल अभंग अनूप रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ कहे एक कालतणें वश, सकल जगत गति होय रे ॥ कालें ऊपजे कालें विणसे, अवर न कारण कोय रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ कालें गर्भ धरे जगवनिता, कालें जनमे पुत रे ॥ कालें बोले कालें चाले, कालें जाले घरसूत रे

॥ श्री० ॥ ३ ॥ कालें दूधथकी दही थाये, कालें फल परिपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपाए, कालें सहु थाये खाक रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनचोवीशे बारे चक्रवर्त्ती, वासुदेव बलदेव रे ॥ काले कवलित कोई दीसे, जसु करता सुरसेव रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरा, हए जूईजुई नात रे ॥ षटऋतु कालविशेष विचारो, निन्न निन्न दिन रात रे ॥ श्री०॥ ६ ॥ कालें बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ वृद्धपण वली पली वपु अतिदुर्बल, शक्ति नहीं लवलेश रे ॥श्री०॥७॥ इति कालविवादः ॥

॥ ढाल बीजी ॥ गिरुआ गुणवीरजी ॥ ए देशी ॥

॥ तव स्वनाववादी वदे जी, काल किस्युं करे रंक ॥ वस्तुस्वनावें नीपजे जी, विणसे तिमज निशंक ॥ सुविवेक विचारी जूउ, जूउ वस्तुस्वनाव ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हते योग जोबनवती जी, वांजणी न जणे बाल ॥ मूछ नहीं महिलामुखें जी, करतल उगे न वाल ॥ सु० ॥ २ ॥ विणस्वनाव नवि नीपजे जी, केम पदारथ कोय ॥ अंब न लागे लींबडे जी, बाग वसंतें जोय ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोरपिछ कुण चीतरे जी, कुण करे संध्यारंग ॥ अंग विविध सवि जीवनां जी, सुंदरनयन कुरंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ कांटा बोर बबुलनां जी, कोणें अणीयालां कीध ॥ रूपरंग गुण जूजुआ जी, तरु फल फूल प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ५ ॥ विषधर मस्तक नित्य वसे जी, मणि हरे विष ततकाल ॥ पर्वत थिर चल वायरो जी, उर्ध्व अग्निनी झाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मछ तुंब जलमां तरे जी, बूडे काग पहाण ॥ पंखिजात गयणे फिरे जी, इणि परे सयल विन्नाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वायु सुंठथी उपशमे जी, हरडे करे विरेच ॥ सीझ नहीं कण कांगडुं जी, शक्तिस्वनाव अनेक ॥ सु० ॥ ८ ॥ देशविशेषें काष्ठनां जी, नुयमां थाय पहाण ॥ शंख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्रस्वनाव प्रमाण ॥ सु० ॥ ए ॥ रवि तातो शशि शीतलो जी, नव्यादिकबहुनाव ॥ हए इव्य आप आपणा जी, न तजे कोय स्वनाव ॥सु०॥ १०॥ इति स्वनाववादः॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ कपूर होए अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ काल किश्युं करे बापडो जी, वस्तु स्वनाव अकज्ज ॥ जो नवि होये नवितव्यता जी, तो किम सीझे कज्ज रे ॥ प्राणी म करो मन जंजाल, नावी नाव निहाल रे ॥ प्राणी० ॥ म० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जलनिधि तरे जंगल फरे जी, कोड जतन करे कोय ॥ अणनावी होवे नहीं जी, नावि होय

ते होय रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आंबे मोर वसंतमां जी, फाले फाले केइ लाख ॥ केई खर्चा केइ खाखटी जी, केइ आंधा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ बाउल जिम जवितव्यता जी, जिण जिण दिसि ऊजाय ॥ परवश मन माणस तणुं जी, तृण जिम पूंठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ नियतिवशें विणचिंतव्युं जी, आवी मले तत्काल ॥ वरसा सोनुं चिंतव्युं जी, नियंति करे विसराल रे ॥ प्रा० ॥ ५॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणां जी, नयण हणे गोवाल ॥ दोय सहस्स जस देवता जी, देह तणा रखवाल रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कोकूहो कोयल करे जी, किम राखी शके प्राण ॥ आहेडी शरताकीयो जी, उपर जमे शींचाण रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ आहेडी नागें फश्यो जी, बाण लाग्यो शींचाण ॥ कोकूहो ऊडी गयो जी, जूउ जूउ नियत प्रमाण रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ शस्त्र हण्यां संग्राममां जी, रानें पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांथी मानवी जी, राख्या ही न रहंत रे ॥ प्रा०॥ ९ ॥ इति जवितव्यतावादःकथितः ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग मारुणी ॥ मनोहर हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ काल स्वजाव नियतमति कूडी, कर्म करे ते थाय ॥ कर्में निरय तिरिय नर सुरगति जी, जीव जवंतरे जाय, चेत न चेतियें रे ॥ १॥ कर्मसमो नहीं कोइ ॥ चेतन०॥ ए आंकणी ॥ कर्में राम वस्या वनवासें, सीता पामे आल ॥ कर्में लंकापति रावणनुं, राजी थयुं विसराल ॥ चे० ॥ २ ॥ कर्में कीडी कर्में कुंजर, कर्में नर गुणवंत ॥ कर्में रोग शोग दुख पीडित, जनम जाय विलपंत ॥ चे० ॥ ३ ॥ कर्में वरस लगें रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्में वीरने जूउ योगमां रे, खीला रोप्या कन्न ॥ चे० ॥ ४ ॥ कर्में एक सुखपालें बेसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय रथ चढयां चतुर नर, एक आगल उजाय ॥ चे० ॥ ५ ॥ उद्यम मानी अंध तणी परें, जग हींफे हाहूतो ॥ करम बली ते लहे सकल फल, सुख जर सेजें सूतो रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ उंदर एकें कीधो उद्यम, करंफीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवस नो जूख्यो, नाग रह्यो दुःख फोले रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ विवर करी मूषक तस मुखमां, दियें आपणो देह ॥ माग लही वन नाग पधारया, कर्म मर्म जूउ एह ॥ चे० ॥ ८ ॥ इति कर्म विवादः कथितः ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे उद्यमवादी जणे ए, ए च्यारे असमर्थ तो ॥ सकल पदारथ सा

धवा ए, एक उद्यम समरथ तो ॥ उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीझे काज तो ॥ रामें रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज तो ॥ २ ॥ करम नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो ॥ देउल वाघ मुखें पंखीयां ए, पिउ पेसंता जाय तो ॥ ३ ॥ विण उद्यम किम निकले ए, तिल मांहेथी तेल तो॥ उद्यमथी उंची चढे ए, जुउ एकेंद्रिय वेल तो ॥४॥ उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीजे काज तो ॥ ते फिरि उद्यमथी हुवे ए,जो नवि आवे वाज तो ॥ ५ ॥ उद्यम करी उंख्या विनाए, नवि रंधाये अन्न तो ॥ आवी न पडे कोलीउ ए, मुखमां पखे जतन्न तो ॥ ६ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यमें कीधां कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलें ए. जुउ कर्मनो मर्म तो ॥ ७ ॥ दृढप्रहारी हत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो ॥ उद्यमथी षटमालमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ८ ॥ टीपे टीपे सर जरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो ॥ गिरि जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाल तो ॥ ९ ॥ उद्यमथी जल बिंदुउ ए, करे पाखाणमां गाम तो ॥ उद्यमथी विद्या जणे ए, उद्यम जोडे दाम तो ॥ १० ॥ इति उद्यमविवादः ॥

॥ ढाल ७मी ॥ ए छंमी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ए पांचे नयवाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे ॥ अमिय सरस जिन वाणी सुणीनें, आनंद अंग न मावे रे प्राणी ॥ समकित मति मन आणो, नय एकांत म ताणो रे प्राणी ॥ ते मिथ्यामति जाणो रे प्राणी॥ स० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिल्या विण, कोई काज न सीझे ॥ अंगुलियोगें करतणी परें, जे बूझे ते रीझे रे प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह आणी कोई एकने, एहमां दीजें वडाई ॥ पण सेना मिलि सकल रणांगण, जींते सुजट लडाइ रे प्राणी ॥ सम० ॥ ३ ॥ तंतु स्वजावें पट उपजावे, काल क्रमें रे वणाए ॥ जवितव्यता होय तो निपजे, नहीं तो विघन घणांए रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतुवाय उद्यम जोक्तादिक, जाग्य सकल सहकारी ॥ इम पांचे मलि सकल पदारथ, उत्पत्ति जुउ विचारी रे प्राणी ॥ सम० ॥ ५ ॥ नियतिवशें हलुकरमो थइने, निगोदथकी निकलीयो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पामी, सद्गुरुने जई मलियो रे ॥ प्राणी ॥ सम० ॥६॥ जव थितिनो परिपाक थयो तव, पंमितवीर्य उल्लसिउ ॥ जव्य स्वजावें शिवगति पामी, शिवपुर जइने वसीउ रे प्राणी ॥ सम०॥७॥ वर्द्धमान

जिन इणि परें विनयें, शासन नायक गायो ॥ संघ सकल सुख होये जेह थी, स्यादवादरस पायो रें प्राणी ॥ सम० ॥ ८ ॥ कलश ॥ इय धर्म नायक मुक्ति दायक, वीरजिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर सवंत वन्हि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सूरिंद पटधर, श्रीविजय प्रज्ञमुणिंद ए ॥ श्री कीर्त्तिविजय वाचक शिष्य इणिपरें, विनय कहे आणंद ए ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ सामयिकना बत्रीश दोषनी सज्झाय ॥

॥ चोपाई ॥ शुज गुरु चरणें नामी शीश, समायिकनां दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मननां दश दोष, डुशमन देखी धरतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक अविवेकें करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उद्वेग इछे यश घणो, न करे विनय वडेरा तणो ॥ २ ॥ जय आणे चिंते व्यापार, फल संशय नी आणां सार ॥ हवे वचननां दोष निवार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥ ३ ॥ लइ कुंची जा घर उघाड, मुखे लवी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथा ने हास्य अपार, ए दश दोष वचननां वार ॥ काया केरां दूषण बार, चपलासन जोवे दिशि चार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोडे उंचे हाथ ॥ पग लांबे बेसे अविनीत, उठिंगण ल्ये थांजो जींत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग ऊपर चढावे पाय ॥ अति उघाडुं मेले अंग, ढांके तेम वली अंग उपंग ॥ ७ ॥ निद्रायें रस फल निर्गमे, करहा कंटक तरुएं नमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक करजो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुजवरी वचन पालती. स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ए ॥ इति सामायिक बत्रीश दोष स्वाध्याय ॥

॥ इति श्रीश्रावकस्य दैवसिकादिकपंचप्रतिक्रमण सूत्राणि सार्थानि, स्तवनसज्झायस्तुत्यादि सहितानिच समाप्तानि ॥